



اس كتاب كے جملہ حقوق بين تاج عثانی مالك مكتبہ فيض القرآن ديو بند كے نام محفوظ ہيں اور حكومت مند سے رجسٹر ڈ ہیں

تام كتاب فيض المشكوة شرح اردوم فكوة شريف جلد يجم

شارح : مفتى حارث عبدالرجيم فاروقى قاسمى صاحب

بابتمام : تاج عثانی ابن مشهودا قبال عثانی"

مطبوعه :

كېپيوٹركتابت د درائنگ : شادكېپيوٹرمكتبه فيض القرآن ديوبند



Ph.No.01336-222401 (Mob.)09897576186 مكتبه فيض القرآن نزدمسجر چهند ديو بندشلع سهارن پور (يوپي)

فيض المسلم

﴿شرح اردومسلم شريف ﴾

مشاد س: مولا نااخلاق احركر مي قاسي ندوي

فیض سیرین می تغییر فیض الا ما مین اورفیض المشکوة کی انتهائی مقولیت کے بعد هنید میں المعسلم شرح اردو مسلم مشروحات مشروف کا اہم اور قیمتی اضافہ ہور ہاہے، جس کے بارے میں اعتاد کے ساتھ کہا جا سکتا ہے کہ ابتک کی اردو شروحات میں بہتر ترین اضافہ ہے۔

﴿خصوصيات فيض المسلم﴾

(١) عربي عبارت براعراب لكائے كئے بين، تاكماردو دان طبقه عى برآسانى براء سكے۔

(۲) منخویع حدیث عنوان کے تحت محاح سند کا اہتمام باب کی تعین کے ساتھ کیا گیا ہے تا کہ باسانی ان کتابوں کی طرف رسائی ہو سکے۔

- (٣) حل نغات عنوان كے تحت مشكل عربي الفاظ كا آسان اردوتر جمد پيش كيا كيا ہے۔
- (س) تحقیق رجال عنوان می فدکوره صدیث کےراوی کی ممل معلومات تحریر کی گئے ہے۔
 - (۵) توجمه حديث انتائي آسان اردو اورسليس اندازيس بيان كيا كياب-
- (٢) خلاصة حديث عنوان لگاكر حديث كا خلاص مختفر اور داضح اس طرز برتحرير ب كه عوام اورطلبار به آسانی مقصد حديث كسي منزحديث يس دعوتي بهلوكوا جا كركرنے كى كوشش كى تى ب
- (2) كلمات حديث كى منشويع عنوان كے تحت كمل بحث، اختلافی مسائل اوران كے دلل جوابات اس انداز من پیش كيے مجئے بین كه كہيں كوئی تفتی ندرہ جائے۔
 - (٨) استنباط مسائل كعنوان مين مديث شريف سه واضح مون والم مسائل كا بخو بي ذكركيا كياب

جمله علمی دینی کتب ملنے کا پته

مكتبه فيض القرآن نزدمسجد چهد ديوبند شلع سهار نيور (يو بي) پن٢٥٥٥٢٢

Mobile No.09897576186, Phone No.01336-222401

فهرست مضامين فيض المشكوة جلدينجم

| 31. | A. A | 30. | A | 31. | |
|-----------|--|------------|---------------------------------|------------|---|
| مؤثبر | مضائين | مؤثبر | مضاجن | سؤبر | مغاجن |
| ro | مشركون كاللبيه | m | مشرق دالول كاميقات | # | كناب المناسك |
| 70 | والما أحدة العداع | rs | المرموان كاميقات | н | القصيل الأول |
| m | عجة الوداع كالنعبيل | ra | كهال ساحرام بالدمنا أفعل ب | " | ع كتى دفد فرض ب |
| m | احرام کے لمریقے | PY | المُصل الثالث | 11" | ب عبرعل |
| ro | فج قران كالغوى متى | 74 | دوران فج سوال شکرے | 11" | الشك لي ح كرف والكي سعادت |
| ۳٦ | في كرمين عن عروكرة | 74 | مورتون كاجهاد | 11" | 334. |
| ۳٦ | تبديل احرام كے تھم رِمحاب كاترود | 12 | مج نه كرنے والول كے ليے وعيد | 10" | دمغمان عماعم سيكاثواب |
| M | محابے تردد پآپ کی بڑی | 12 | هاتی کا حبثیت | H | કાઇ રોક |
| r/A | باب دخول مكة والطواف | 1/2 | الله کے وقو د | IÓ | ئى بىل |
| r/A | مكسكاعظ ومخرج | t/A | ما می کی تدرو مزانت | 14 | دومر سے کی طرف سے ج کرنا |
| رم | سے میں داخل ہونے اور نکلنے کا طریقہ | #A | دوران سفر مرنے والے حاجی کا تھم | 14 | عودت كافيرمرم كساته عج ك لي جانا |
| 79 | طواف کے لیے طہارت | 79 | واب الاحدام والتكبية | 14 | مورتون کا جهاد |
| ۵۰ | طواف شرق | . 14 | القصيل الاول | 14 | تجامورت کے لیے سز کامد |
| ۵۰ | مفامروه كدرميان سعى | 19 | احرام بين خوشبولگانا | IA | مواتيت فج |
| ۵۱ | حجراسود كاامتلام | 1 9 | تلبيد وتلبيد | 19 | ذات مرق |
| ۵ŧ | حجراسود کا یوسہ | 79 | تبيرب کے | 14 | آپ کے فج وعمرے کی تعداد |
| ۵۱ | احلام دکن بحانی | r. | تلبييكا ذكر | r • | ح جے کہا ہے جا |
| or | سواري برطواف كرفي كاستله | ۳. | البيكاعم | r • | الخصل الثانى |
| or | لمريق احتلام | n | فج کے اقسام | ۲۰ | ع ایک مرتبرفرض ب |
| or | حجرا مودكوج سنخاطريت | rr | \$ 3.0 | rı | عج ندكرنے والے كے ليےوعيد |
| or | حائضه طواف وستى ندكرك | rr | احرام کے کیڑے | rr | اسلام شراصرورت |
| or | مشرك كے ليے طواف | rr | تلبيد كالذكره | rr | ع في الغورواجب ب يابالتراخي |
| | الفصيل الثابني | rr | تلبيه يش آواز بلندكرنا | rr | でくとしんずいのかき |
| ۳۵ | خان كعبركود كجدكر باتعدافها نا | ۳۳ | لبيك كمني والي ك فعنيات | rr | مج كثرائد |
| ۵۳ | سى كددوران كعبدد كيدكر باتحوافهانا | m | احرام کے لیےدورکعت | rr | حاجئ كالل كى علامت م |
| ۵۵ | نماز وطواف يمل مماثلت | P M | مبيرك بعددعا | rr | باب كالمرفء عن كرنا |
| ۵۵ | حجرامود کی حقیقت | rr | تية الوداع كيموقع برآب كااعلان | riv | عج بدل كالحريقه |
| | para di mala dan suma ni dan di kana di ana di ang | | | | الکار کار کار او ایجا به جمع با بیما به بیما به داخل در سیاد دا |

جلدينجم

| - | | *** | | | |
|-------|--------------------------------|----------|----------------------------------|-------------------|-----------------------------------|
| سؤنبر | مغباجن | مزبر | مغماجن | الخبر | مغايمن |
| Ar | نح کا لمریت | ۷٠ | عدر كى وجد عروافد بهلے جانا | 10 | فراسود کی کوای |
| AF | شدابه ک دراد کی ا | ۷٠ | کاریاں کہاں ہے لے | ΤĠ | فجرا سوداور مقام إبراتيم جند كي |
| AF | بدى كالوشع كالحم | ۷.1 | آب کی فرف سے ایک ایم اطلاع | ra | علام وطواف كي فعنيات |
| ٨٣ | مرى كـ در معدش كوتكليف بهنهانا | 41 | عرفداور حردافه سعدواكل كادتت | 04 | كنين كدرميال دعا |
| ۸۳ | بادبدك كانتم | ۷٢ | رى كامسنون وتت | 06 | س کا بھم |
| ٨٣ | قربان ك كوشت كاستم | 25 | むんといんこん | ۵۸ | سی کیے کرے |
| PA | به ک کا کوشت | 24 | عره عن تبير موقف كب كر | ۵۸ | طواف جمل اضطهاع |
| PA | بدى كاكوشت تقسيم كر: | 25 | عرفات وحردلف كدرميان كبيل نامم ا | 99 | طواف کی ایک سنت |
| 14 | واسالحلق | 45 | عرفات مين جمع بين المصلا تمن | ٩۵ | احكام دكنين كحاليميت |
| | مرمنڈانے کابیان | 40 | وانب رمي الجمار | 4+ | عذركي وجست طواف كأتحم |
| 14 | سرمندًا الفل ب | 40 | سواري سے دي كرنا | 4+ | بوسه كدات معزت عركا نط |
| A2 | آپ افعر کرانا | 40 | رمی کا طریقه | 7. | رکن یمانی پدعا کرنا |
| ۸۸ | مرمند انے والے کے لیے دعا | 40 | رمی جمره کا د تت | 71 | طواف کے دوران ذکر کی فضیلت |
| ۸۸ | تفرے ملق افغل ب | 41 | ری کے وقت کیا کے | , 1 11 | The said and bed |
| ۸۸ | مرمنذانے کا لمریقہ | 24 | سات تفری کاسم | Yr | حرفدش وتوف |
| A9 | ملق كے بعد خوشبولگانا | 44 | سواری سے دمی کرنا | 717 | يهم وندكي فنسيلت |
| A9 | نحرك دن عبرك نمازكهال يزه | 44 | مى اورسى ذكرالله كي درائع بي | 41- | امام كموقف عدور بس مغمرنا |
| 4. | المورت كاسر منذانا | 44 | منى بين فرن ك مكه تعين كرة | 45 | بوراع فدمونف ہے |
| 4- | مورت بال كتروائ | ۷۸ | جارات کے پاس وقوف | 100 | حرفسكا خطب |
| 96 | | 4۸ | ياب العدى | 417 | ا يوم عرف کى دعا |
| 41 | انعال في عن تقديم وتاخير | 4 | اشعارة تقليدكرنا | Ala | ا شيطان کی حالت زار |
| 97 | ج مِن جُوثِي موثى غلطيول كائكم | 49 | مرف بدی ہمیجنا | AP | يهم و في كانسيات |
| 91" | ايك آدى كاسوال | 49 | دور مال المرف عقرباني | 44 | مرفات مي د تونسكاتكم |
| 95" | كى نوگور) كاسوال كرنا | ^- | آپ کاندین کی طرف سے قربانی کرنا | 44 | عرف كرن الإكادعا كاتبول مونا |
| | <u> بايد خطية يوم الدِّه</u> | ۸- | مِل سيخ والما كم المحمم | 72 | باب الدفع من عرفة |
| 45 | مدمساؤاه النَّش من مالتمديد | ^- | دەرىك درىي سىدى بىجا | 44 | عرفات سے آپ کی دانہی |
| 41 | قربانی کدن فلیہ | ΛI | بدی که داری | AF | عال بمن المانية pe |
| 10 | ري کا بقداء کون کرے | ΛI | مِي رسواد اونے کے لیے ہدایت | Ar . | آبلیدگری کی در در جود را در تا |
| 10 | ری جرات کی ترتیب مناهده شد | ۸۱ | قريب الركبدى كانتم | 44 | مرداند عمل جمع بين المسلا تين |
| 97 | ک میں بھی اس | ۸۲ | مِی بم صے | 19 | آب فے کافادکودات ہے۔۔۔۔۔۔ |

قرست مفايمن عنعن المعلكوة والمعلكوة

| مؤنبر | مضاجن | مؤثير | مِعَاضِ . | موتبر | مضاجن |
|---------|--------------------------------|--------|--------------------------------------|-------|----------------------------------|
| INC | كعبه يحلوكرن والكاشاني | li+ | عرم كے ليے بين الكوان | < 41 | آپ کل دحوم ک |
| 11/2 | دومرى ملامت | a 10 | ورش کینا لکوانا | 94 | آپ كا طواف دواع |
| 172 | دميماكاد | , 111 | موند بي المالات | 44 | يم زوركاب فظرى الاكمال يدى؟ |
| 1174 | كمة كمرمدكي لغيلت | 111" | المرامج وحتنب الصيد | 44 | العميا |
| IFA | ارض كعبدكي فعيلت | ur | مرم فكارے اجتاب كرے | . 94 | طوائدوداع كي بعدرواكي |
| IPA | کے یس کی کاخوان بہانا | 101' . | دنني كى متدل مديث | 99 | طواف دواع كاسم |
| 114 | وم کی بے ومتی کا نقسان | ПP | محرم كن جانورول كومارسكاب | 99 | عذركي حالت يسطواف وداع |
| | واسر حرم المدينة | . 111" | عرم کے لیے تکلیف دہ جانور کا مارنا | fee | قربانى كدن آپ كالعيحت |
| 11% | جو سما الله تعالى | 1110 | محرم کے لیے فکار کا گوشت استعال کرنا | 1+1 | 275-100 |
| {}*** | الفصيل الأول | چ ۱۱۱۳ | 20012 | - 1-1 | طواف زيارت كاوتت |
| 11% | الرم مديد كا عدود | 116 | ورعد عكومارنا | 1+1 | طواف زيارت عن رال |
| m | 417824 | HIT S | : Sove | 157 | محرم كم في حلال مون كاوت |
| la.k | مديد يسمم معيبت كوفت مركزا | 110 3 | عرم نے لیے بو کا شکار منوع ہے | 1-1" | آپ کاری کے کی کیفیت |
| IPP. | مدينك لييآب كادعا | 110 | 4-1176 | .1-1" | عدر كسب جرات عى تقديم وتاخير |
| IPP . | مديند كى حرمت كا تذكره | 114 | عرم ك ليد وكاركا كوشت كمانا | 1-4 | e-mallation laude |
| IPP | سعدين وقاص كاليك واقعه | II q | واسالاجمعاد ونوشالحو | 1+1" | محرم کے لیے سلاموا کیٹرا |
| Halla . | خين كآب وجوا | IIA | دات بی کماتھاصار | 1-1" | ティックライン |
| 110 | مے کے تعلق سے ایک خواب | 119 | مصرك ليطن ياتمركرانا | 1-1" | جد بهنے والے عرم كا واقعه |
| 120 | الميخ عند لكل | 919 | قربانی کے بعد طلق کرے | 1-0 | مالت الرام عن لكال |
| 154 | بي كان أير | 184 | احساری صورت میں کیا کرے | 1-0 | とうしいしょうからしてい |
| IPT | الشكاطرف عدينانام | 177 | مرض مجی احساد کاسب ہے | 1-0 | ميوند آپ کالاح کرنا |
| IFY | مریخ کاخصوصیت | IPP | محصر بدى كى محى تضاكرے | 1+4 | र को हार है |
| 172 | مے کے تعلق سے تیامت کی نشانی | 1991 | عذر بحى احسار كاسبب | 144 | مرم کے لیے سیکی کمنجوانا |
| 172 . | られご かり かいこう | irr | قج كادكن امظم | - 1% | عرم کے لیے رسانانا |
| 174 | حرين شريعين عروجال ذاهل شبهوكا | IPP | واست و و کا جر سما الله و دال | 104 | محرم کے لیے چمتری استعال کرنا . |
| IPA | الل ديد عفر عبد كام ا | HAIR . | وم كمدكي لغنيلت | 1.4 | وتت سے مہلے مرمنڈانے والے کی جزا |
| IFA | مدين سات المامية | 170 | بح عن النماء | I+A | はならかとししからとりだい |
| IPA | احديما لى لمنسيلت | IPS | とうびられなりつ | 1+4 | مالت اوام على يدوكا لمريت |
| IP4 | احد پھاڑے آپ کی میت | 1174 | tack とろうしい | 1+9 | مالحادام مى كل لكان |
| 179 | النميل الكتي | IFY | كورج والمرف والسائد المحدمد | #+ | سلي موئ كرس بدن بدالنا |

| | - ; : | | : گذیر فرنده در خود در هور در مان نو بدو با داخیر و دری و در | | |
|-------|--|---------|--|--------|---|
| مؤثير | مغايمن | المرابر | مضاعن | المذير | مضائمن مضائم |
| 170 | معرست الويكرا وركمال أقتوى | 161 | ابرسيزا | | بمدينكا فبوت |
| 140 | بالدام كماني يكاد | 101 | سيكل ك اجرت كاسم | 10% | يخ كور دنت كافي والي |
| 14.4 | حرام ال معلانظول شعوكي | 101 | لى كاخرىدوفروفت | In- | نام وج عمد فكار |
| IAA. | Mahalla Halmallah | 101 | خولنا كى فريد فروشت | 100 | ين شرق والول كم ليسعادت |
| IYY | القميل الأول | 107 | جملة حرام اشيار كي خوارت حرام | IM | يدب عافر في ويان موكا |
| יוו | موالمات شري تن كرن والي كسي | ior | مردارى يربى كاعم | IM | پ نجرت کے لیے دید پندکیا |
| 144 | معاملات شرفري اور كواست اختيار كرنا | 105 | قمين كلب | ' IM | لفصل الثالث |
| 144 | زم خولی کی فعیلت | 101 | خون کی خرید فروشت | IM | بال عدية كالفاعت |
| 144 | فتم كهاكر بال فروفت كرنا محروم | 101 | حرام اشياه كانحم | IPT | ریخ کے تعلق سے آپ کی دھا |
| 174 | الفصل الثلنى | 100 | يبودك حيله سازى | IPY | زجن جم سكونت كي فعنيلت |
| 174 | المانت واراور حوالى يستدتاجر | 100 | سیکل لگانے کی اباحث | Inter | روضة المبركي زيارت |
| AFI | تبارت كيساته مدقد وخرات كاعم | iaa | المميل الكنى | 165 | ميناء آپ كاكمال تعلق |
| AFI | تاجروں کی اقسام | 100 | كسب معاش كمافعيلت | ماماا | وادى مختق مى فمازى فىنىلىت |
| IĀV | <u> باینان</u> | 104 | الباحرام عندالله مقبول فين ب | الماما | ومُثِنَا النَّهُ عِنْ اللَّهُ عِنْ اللَّهُ عِنْ اللَّهُ عِنْ اللَّهُ عِنْ اللَّهُ عِنْ اللَّهُ عِنْ |
| ITA | الفصل الأوَّل | 104 | حرام خوری کا تھم | IMM | فزيد وفروعت كاقسام |
| AYI | خريد وفروشت عي المتياد | - 104 | حرام فوری سے کیوں شعد عر محروم ہوگا؟ | 100 | اكرتجادت كواهتيارندكيا كميا |
| 144 | مجوث اور فريب دى سے بركت ديس | 104 | تغوى ادر پر بيز كارى | 100 | ادراس کی اقدام |
| 144 | مرورت كوانت اختياركا مونا | IDA | فيكى اورمعصيت كى شفاخت | IPT | كا شرمى اورامطلاحى حتى |
| 1,44 | الفصل الثلنى | 109 | تغوى اورورع كالحصول | IPY | مقتدكة كاركن |
| 144 | تنارنى معالمات شرفريقين كى | 104 | شراب اورلعنت | 10.4 | كمسيدمعاش |
| 144 | تريداداور بالع كدرم إن دواداري | 171- | شراب نورى كالحكم | IPY | كسيدمعاش اوركسب حلال |
| 14. | الفصل الثالث | 14+ | ميكلى كاجرت محروه | 16% | حوق الضاور حوق السباد |
| 14+ | والمرافزة والمرا | 14+ | المعاني اجتدام | 172 | فنزا أغضب فظفي الخلال |
| 14. | القصل الأول | 141 | گانے والی اعلی فرید کرنا بھی حرام ہے | 102 | الفصل الأوّل |
| 14. | سودى معاملات حرام يي | 141 | الفميل الثالث | 11% | استة دسيع بازدك كمائى احتيادكن |
| 12. | سودکی ورمت | 141 | كسب طال قرض ب | 10% | انسالون كيليح معاشيات |
| 141 | ر با (سود کی اقتمام) | IAN | الم معقر آن كي اجرت طال ب | IPA. | كسيطال علطوب ب |
| 141 | ایم جش اشیاد کے باہی جادلہ دیجارت | 141- | حيد مداور بالدول كمانى | IM | المحدوث لي |
| 141 | سوناور جاعرا کے باہم لین دین کا تھم صرف بٹ اسمال مالک | 1717 | ودور وفيد كالماكم والماكم | ım [| درع ادرتنون |
| 147 | بم عنى اشياء كاج دله بمايركره | 17/ | عادمة ربيده ال كالدي نك مائة | 10+ | ك كالريد فروف و |

فيرست مفاجن طبيض المصشكوة

۸

جلابنجم

| جدوله مين | الترام التلاول الرحية في منها إلى الترام الواجع في منها إلى الترام في منها إلى الترام ال | | 10 to | | |
|-------------|--|-------|---|------|-------------------------------------|
| 13 | مغاين | مونبر | مغماجن | سؤبر | مغماجن |
| Pas | محنت كادكر اواكرأني | IAO | تهارتی قافلے آمے معلملاقات | 127 | حمر القدرج ول كتاوله ش |
| Pes | كياما كم كاتبت مفرد كرنادرست ب | 1A1 | منذى ادر بازاريس لاياجات | 128 | جيداوردى بم من اشياء كاجادله كى |
| 10-1 | القصل الثالث | YAI | درمیان مقدیمی فریداری ندکی جائے | 127 | اكرايك بن عود |
| rei | ذخيره اندوزي كانتصال | IAZ | اقوال نقهاه اور نداهب كالنعيل | 147 | اگر دود کا وحت سے پیا ہے تو |
| 141 | كيا الكارك ليكوف ت ع | IAA | اجری معالمہ کرنا ترام ہے | 141 | ہم جن اشیار کا تفاوت کے ساتھ لین |
| rer | بالب الافلام والانظار | 144 | فريب دي كما تهموالمدكرنا وام ب | izr | سونے کی خربید افر دفت کا مئلہ |
| 14 1 | القصل الأول | PAI | حيوان برائي جماع كرائي بويناجا ترجيس | 125 | تغ مرف کا ایک مثلہ |
| r=r | جوهم مفلس قرار ديا كميا؟ | IA9 | تالاب ادر كنوي دفيره كاپان فروخت | 125 | القصل الثاني |
| P* P* | مفلس کی رعایت کرنا | 1/19 | فريب دينااورعيب جميا كرفروشت كرنا | 145 | سود کے بارے می آپ کی پیٹر کوئی |
| 1-1- | معاف كرف كايزااجرب | 19+ | الغصىل الثانى | 144 | علف البس اشياء كيد ليد على كا |
| r-0 | مقروش كومبلت دينا | 19- | انگوری فرونتکی تیمری کے بعد | 125 | رطب ویابس محلول کے باہمی لین |
| r-0 | قرض كى ادا يحكى بحسن وخو بي مو | 191 | أكرمال موجود ندموتون | 121 | زعمه جانوراور كوشت كالط |
| r-4 | تفاضا كرتي بوئ مخت كفتكوكرنا | 191 | قرض كے ساتھ مقد كا كرنا | 120 | الفصل الثالث |
| 14-A | قرضي بلاوجها خركرة | 191 | الفصل الثالث | 120 | سودى معاملات أدهار كياتو؟ |
| r44 | سفادش كرف يرقر ضد معاف كرنا | 190" | عائب | 124 | سود پرعذاب قبرا درعذاب أخرت |
| Y-4 | مقروض کی نماز جنازه | 190" | الشميل الأول | 121 | سودي آيت كي تغيير جمل ب |
| r-A | ادا لیکی قرض کی نیت | 1917 | ورخت کی فرد خیل کے ساتھ چیل داخل ہیں | 124 | مقروض سے بدریجی قبول ندکیاجائے |
| r-A | حقوق العباد كأتقم | 191" | عقيد تف كے ساتھ شرط كا مونا | 122 | وسالت مندر عندا من البدو |
| ri• | الفصل الثانى | 190 | الغصىل الثاني | IZA | القصل الأول |
| m. | مغلن کے لیے آپ کا عم | 194 | الغصىل الثالث | 124 | جن معاملات كوناجا زُر قرارد يا كميا |
| rı• | مقروض ميت معلّق رجناب | 194 | واب السلم والرهن | 149 | عرابااور فدابب فقهاد خلاصة بحث |
| m. | مقروض مدوز قیامت کیا شکایت کرے گا؟ | 194 | الغميل الأول | 1/4 | राग्रेज |
| MI | بلاعدرتا خحركرن والا | 192 | عقيتنكم | IAI | ميلول كا كاكاكب موسكتى ي |
| rır | جوفض مقروض نداو | 19A | الغميل الثانى | IAI | ملارحتمر |
| 717" | مقروض موكرموت بزى معصيت ب | 190 | كميال اورعزان كأحكم | IAI | النعيل نداهب بجلوں كى تط ك |
| mm | القصيل الثالث | 194 | الفصيل الثالث | IAT | ایک سےذا کدمال کے لیے فروفت کرنا |
| nr | آپ نے بذائے تو دخریداری فرمائی | 199 | عاميد الاجتكار | IAT | رواعت يمن فدكوره مسئلة ثاني |
| חר | آپ نے جی قرض لیا | 199 | ا حکاراوراس کا تھم | IAP | مقدق كي بعد تريدار كا تبديان م |
| nr | تا فجربونے برنسیلت | 199 | النجيل الأولُ | IAF | خريدكده فتى يرتبنه وف يرتعز ف كرنا |
| 716 | قرض كادا كل عدم | r | النمسل الثانى | IAO | تجارتی اموال کوشمر کی منڈی میں |

| جلاجم |
|-------|
|-------|

| | | - | | | and the same of th |
|-------|--|------------|---|-------|--|
| مؤثير | ملاين | مؤبر | مغايمن | مؤثر | مغماجين |
| 17% | النمبل الثالث | FTL | نتسان يونجانالم ب | rio | قرضكا وجست كعدكا واغله |
| m | مقدم ادمت مباحب | m | المُميل الثالث | rn, | and all and the last |
| m | Sales Minate | rm. | ذعن بهامباند تبذكرن يرويد | YIY | الفصل الأول |
| rra | اجاده كابياك ِ | rm | ذعن برعامبان بشداكر يتيلهو | PIN | ٹر کے شروع ہے |
| m | النمسل الأول | m | ماب الشيئة | m | حغراستهانصادكاايثاد |
| 12.4 | اجاره جائزے | FTP | ي شخسكابيان | 114 | القصل الثانى |
| la.d | معراستوانيا وكرام ادركر ول كالدانا | 179 | الغصل الأول | n4 | اگر شرکاء نے خیانت کی |
| 11% | اجرت ندیج جانے کوھی | 83.4 | و محد ادر تتيم | 114 | المانت كى ادائيكى واجب |
| HY- | جائززلخد يراجرت أينا | 77. | حَلِّ شَعْد برائع بِرُول | nz | 26230 |
| ויוו | القمبل الثانى | *** | 360.2 | nz | الخصل الثالث |
| m | ناجائززتي | PPT | اكرداست بس اختلاف مو | ηL | يكت كام إب متوى وتي |
| PHY. | اجرت وتت بدى جائے | 277 | الذميل الثانى | NΑ | المسالفست والجدمة |
| m | النمبل الثالث | PP | جائنداد کی فرونتگی مناسب نہیں | MV | الفصل الأولُ |
| m | حطرت موی اوراجرت بهام کرنا | rri | پروس بھی سبب برائے محکمت | 17A | ضسب کی سزا |
| H- | كياتعليم القرآن ياجرت مباحب؟ | FPY | و محصد کس شی می ہے؟ | P19 | بلااجازت دوده فكالناجى فعسب |
| Hele | باب احبار المُغَاثِ والشُّر ب | rrr | مَفَادِعَامَّةُ كُنْتَصَالَ بِيونِ فِي تَا بَكُلَ حَرَام بِ | 1719 | نتسان کا بعلہ |
| Hala | مغرز عن كوز عده كرف اور باني | PPP | الفصيل الثالث | PP. | كى كال رالما تدركاوام |
| th. | احياء اموات عمى نقبارك اقوال | - | المن شعند كس بي ا | m | آپ نے محل ماری اشیاء لی جی |
| mo | النمبل الأول | Manh. | ينب المصالات والمنادعة | TTT | النمىل الثلثى |
| HT'A | احیاد آس وقت محتر ہے زیر تع | labora. | عقد باخبانی اور کاشکاری کابیان | PTT . | الجرزين كأسحم |
| mo | بان کا تعلیم در سرختان | B-B-L- | حرارعت اور کراه ارض کی تنصیل | m | المبيلاس كماتحوى طالب |
| PTT | یان کے مطلق ہدایت م | \$ PTY | الفصل الأول | m | ادنی هئی مجمی ضب ہے |
| PTZ | تن على يدهيد شديد | ab.la | ارض خیبر پرمقد ہونا پرائے سرادعت د. | m. | ایتافسیشدهال اگر |
| HYZ | الفصل الثانى | ror | کایرودرستگل ا | FFIF | لى بولى فى كودائيس كرناموكا |
| HTZ. | امالدكرنة كالمحم | rro | مى خاص جكى پيدادار كيسا تو عقد كر: فعد سريد ماندور | מרו | ا گرخیوان میافتسان میو نجامو |
| FTTA | خاداض کاصلیہ دھر در اور مصر | PPTY | أفعل بكذعن بغيراجرت | ms | غيراهتيارى تتسان برضمان يبل |
| PPR | زین اور پایات کاتسطیه در دوست کرا | PPTY | زعن عارية بديا مروع المراجع | arri | خرورت شديده كوت - |
| - Had | مارد الاس کے لیے مارد الاس کے لیکھ | rrz. | اكرواش جادے الح مدق | P7'1 | الركر قالم المستشعود |
| PD+ | 15/15/15/15/15/15/15/15/15/15/15/15/15/1 | PPZ. | النسان اللاتي | 444 | مارية الاحتاكي عادرة الخبر |
| 70. | حرل مناهد خرودی ہے۔ معالم | 772 | فسي كده زين بكاشت كمنا | PT/L | مخبل عامل ب |

1/12

جلدينجم

| 31 | As b. | 26 | , d i 4 . | 32 | ي د رهـ |
|---------------|-------------------------------------|--------------|------------------------------|------------|-------------------------------|
| مغربر | مناجن | موربر | مغاجن | مؤثير | |
| mr. | الدو كر لي ال | 242 | ناحق پرفهاد معدنا جائزے | ומיו | إِنْ كَانِيَ عِمْ |
| re r | الاعراث عمدالد (۱۷) کی م | ryr | آپ تلک کاست | roi | اكركوني فتنسان ماهونها إجائ |
| NLP | آزادشه فلام كامراث | ** | 76.34 | ror | الفصل الثالث |
| 120 | اكر كمنى كاوارث معلوم شادو | 8.AL. | لتغكاجان | 107 | مك اورا ^م كما تحم |
| rz6 | قرضك اوالحك مقدم | #'YI" | القميل الأول | rar | ideal inde |
| rz.0 | الا عراف ك لي العلال على عادل الع | 3.44. | لتلكايحم | ror: | مطيات اور ۾ ايا کايان |
| 121 | آيت بمراث كاداقعه نزول | 2,11.2 | كفظه عيمض امكام | mr | القميل الأول |
| 127 | بمراث كما يك صورت | FYO | الشير كبغراته | ror | وقف ادراس كاعم |
| 744 | ميراكمية (داداكي ميراث) | 440 | حرم ثرييب كالتعا | rap | عرف اوراس كاحكام |
| 12A | مده (دادی) کا حم | PYY | الفصل الثانى | 100 | ال معيلية خاص كى ميراث |
| 124 | معله وعداودجراث | 844 | ورفست برميل كاسحم؟ | moo. | اكرتاحيات ى وياجائة |
| 124 | أكركوني فتضم كسكة ربيد مسلمان موا | 142 | اگرا لک آبائ | 100 | القصل الثاني . |
| m. | كيا آزادفلام وارث موكا ٢ | P12 | اگردیت نثر فساوی | 79.1 | القصل الثالث |
| r^ • | معلة ولار | 1472 | لتدريكواه اوناضرورى ب | 194 | ال ك عاضت ك جائ |
| 174 - | القمعل الثالث | PYA | اكرده في احتير بو | וימו | - |
| m. | كذشة فليمهنده بمراث كأظم | PYA | 1 | יימי | القصل الأول |
| 954 | المويكى كراني عمرات | APN | فرائش كاميان | Pen | <u> نوشیوکا صلی</u> د |
| 951 | علم الغرائض كالعليم ك تاكيد | P74 | الفصيل الأول | 194 | بديد سه کروانه کل ليما |
| 1751 | فاسط المساوا | 774 | قرضياه وكمتيع بمراث | MAZ | اولادسب بمايمي |
| 1941 | دمسيون كابيان | # Z • | فوالقروش مقدم مول ع | MA | الفصل الثانى |
| mr | الغميل الأول | 14. | المدكااخلاف سيبحهان ب | MA | بهركسة كالعد |
| MY | الإيران | 14.0 | آزادشده فلام کی میراث | 794 | دالبی کی طرح مواسب فیس |
| mr | ایک تبائی تک ویت کرمکا ہے | 72.0 | مامون ک براث مامون ک براث | 1954 | بربيكا بلدعا بحل معدب |
| mr | القمبل الثانى | 121 | القصل الثانى | l.A. | بالايريام |
| יאמ | وادث کے لیے دمیت ٹیل | 721 | الحكاف لمعال وجدراث بكسب | PY+ | احمان كرفية والمسكد في وعاكرة |
| ma | وراه دکویز د بهدوسیّت نشسان یکونهان | 124 | الكراث عرم | 1979 | عشرامه مهاجرین کانیگار ک |
| mo | القصل الثالث | 1661 | وادى كى مراث | 14.1 | بدیدگایگت ماری ساد |
| m۵ | ومتيعه اورتقوى | 727 | Caepholeonkand | rar | كول در حرال |
| <i>1</i> 75.1 | ايدال واساكاكم | REF | طلسكاحم | FIF | عمال می پواتوسی |
| MY | المام كال ندي جائد يديد | PLP | ق براه امول سكر لي | P'YP": | القصل الكائث |

كتاب المناسك

معنى:المناسك:منسك كى جمع عبمعن قربانى، نسك (ن) نسكا قربانى كار قربانى كعلاوه عج وايام عج كى مادت كے لئے مى استعال موتا ب_)

. اصطلاحى صعنى: تخصوص ايام بس بخصوص مقامات بي جا كخصوص كام كرنا" وشرعا زيارة مكان مخصوص، في زمن من معصوص بفعل منحصوص "(ورعار:٣٢٩/٣).

] هي تين فرض بين: (١) احرام بالدهمنا (٢) وتوف عرف (٣) طواف زيارت. " فوصه علاقة: الاحوام والوقوف بعرفة.....وطواف الزيارة " (درعار٣١٨/٣)_

[() وقوف مزدلفيه (٢) سعى بين السفا والمروو (٣) رى جمار (٣) طواف وداع (٥) أكلل با تعر (٢) ميعات ے احرام بائد منا(٤) غروب تک عرف میں رہنا(٨) طواف کی ابتداء جراسود کے برایرے گزرنا(٩) واتیں

مرف ہے طواف کرنا (۱۰) غیر معذور کے لیے چل کرطواف کرنا (۱۱) یا کی کی حالت میں طواف کرنا (۱۲) سنز چمیانا (۱۳) صفا سے سعی شروع كرنا (١٣) قارن اور متمتع كيلي قرباني كرنا (١٥) ترتيب كاخيال ركهنا (١٦) طواف زيارت كا ايام نحر مس كرنا- وواجهة يعف وعشرون وقوف جمع وهوالمزدلقةوالسعي بين الصفاوالمروة، ورمي الجمار، وطواف الصدر، والحلق والقصر، وانشاء الاحرام من الميقات، ومرالوقوف بعرفة الى الغروب، والبداء ة بالطواف من الحجر الاسود و التيامن فيه، والنمشي فيه لمن ليس له عذر، والطهارة فيه، وسترالعورة، بداءة السعى بين الصفا والمروة من الصفاء وذبح الشاة للقارن والمتمتع، والترتيب الآتيوفعل طواف الافي ايام النحر"(درمغتار ٣٦٩/٣-٣٢٣).

ان كے علادہ ج كے جتنے افعال ميں وہ يا توسنن ميں يا آ داب ميں، جو مج كرنے والے كو برى آسانى كے ساته يا چل جاياكرتي بي، "وغيرها سنن واداب" (در مختار٣٧٣/٣).

وه كتمنى دفعه فرض هي الله وسَلمَ الله وسَلمَ الله وسَلَمَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ اللهُ النَّاسُ! قَدْ فُرِضَ عَلَيْكُمُ الْحَجُّ فَحَجُوا ۖ فَقَالَ رَجُلَّ: أَكُلُّ عَامِ يَا رَسُوْلَ اللَّهِ ؟ فَسَكَتَ حَعَىٰ قَالَهَا فَلَاثًا ۖ فَقَالَ: لَوْ قُلَتُ: نعم الْوَجَهَتْ وَلَمَااسْتَطَعْتُمْ ثُمُّ قَالَ: ذَرُولِيَّ مَا تَرَكْتُكُمْ فَانْمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ بِكُثْرَةِ سُوالِهِمْ وَاغْتِلَاقِهِمْ عَلَىٰ الْبِيَاتِهِمْ فَإِذَا الْمَرْتُكُمْ بِشَيْقٌ فَاتُوا مِنْهُ مَا اسْتَطَعْتُمْ وإِذَا لَهَيْتُكُمْ عَن شَهْيُ فَلَعُوهُ. روَاهُ مَسْلِمٌ.

حل لفلت:الحج:حج(ن)حجاً تصدر تا، ذروني:وذر (ش)وذرا چوژنا، هلك: هلك (ش) هلاكاً قابوتا. قوجمه: حفرت الوبريه وضى الله عند عدوايت ب كرجم على في ماد عددميان تقريرك بوع فرمايا: اع لوكواتم يرج فرض كيا كياب، الليح لوك كرو، تواكية دى في كها" يارسول الله" كيابرسال فرض هيد الوساق الموق رب يهال كك كداس في يتن مرحد كها و آب فرمايا: اكريس بال كهدد يتا ، توبرسال فرض موجا تا اورتم لوك اداكر في يرقا ورثيس موسكة منه ، مرآب نے فرمانی جب تک عل تم او کول کو جموار و اس تم مجی بھے جمور دو!اس لیے کہ جواوک تم سے پہلے کزرے ہیں وہ اوک زیادہ سوال كرف اورائ انبياء سے الحكاف كى بنياد ير بلاك ہو كے اس ليے جب يس كى جز كا حكم دول واس كوانجام دوجهال تك مكن بوء اور

جب كى چز ئے مع كرون تورك جاك

فلاصة حديث ال مديث ريف كاظامه يب كرج زندكي من ايك بى دفعة رض بـ

کلمات صدیث کی تشری خطبنا رسول الله صلی الله علیه وسلم فی جناب نی کریم علی نے معزات محلبهٔ کرام کلمات صدیث کی تشریک علم الله علیه وسلم فی ایرتقریرایک عام تقریری ، ای دوران کلمات صدیث کی ایرتقریرایک عام تقریری ، ای دوران

آب بيم ات محابر ام كوفر ضيت على ان علنا او خطب لنا عام فرض الحج فيه او ذكر لنا في النا خطبة له" (مرقات ٢٦٣/٥)، قد فرض عليكم الحج فحجوا: لين ٩ هش جبولله على الناس حج البيت: آيت نازل بوكي تو جناب ني كريم على فرضية كرام كوفرضيت في سه آكاه كيا"وقال ابن الهمام فرضية المحج كانت سنة تسع" (مرفات ٢٦٣/٥)، فقال رجل: رجل عمراد مضرت اقرع بن حابس رضى الله عندين، اكل عام رسول الله: يعنى معرت اقرع بن حابس منى الله عند في جناب بى كريم على الله يه يوجها كديد في زندكي من ايك بى مرتبة فرض ب يابرسال كرنا بزر عا؟ يه سوال ان کااس بنیاد پرتھا کہ تمام اعمال بار بار کے جاتے ہیں،ایے بی ج بھی ایک مل ہے جے بار بارکیا جانا جا ہے "انعا صدر هذا السوال عنه لان الحج في تعارفهم هو القصد بعد القصد فكانت الصيغة موهمة للتكرار والا ظهر ان مبنى السوال قياصة على سائر الا عمال من الصلاة والصوم وزكاة الاموال"(مرقات ٢٦٢/٥)، فسكت: لين جناب بي كريم دہرایا،فقال لو قلت نعم لوجبت : یعن ان کارسوال چول کرنا مناسب تھا؛ اس لیے جناب نی کریم عظی میلے تو خاموش رہ تا کدوہ سجهم ائي بلين جب جناب بي كريم عظف نه ديكما كرجواب مرتك كے بغيرده مانے كے ليے تيار نبيل بي تو آپ نے مرت جواب ديية موسة فرماياه الريس بال كهدديما توجرسال في كرنا فرض موجاتا ، ولمها استطعتم: حس كا نتيجديد موتا كه برآ دمي برسال في ادا كرفى مت بيس كرياتا، فهم قال فرونى ما توكتكم: يعنى بحرجناب ني كريم علي في الطور الفيحت كفرمايا كرتم الوكول كوجتنابتايا جائے استے بی برعمل کرلیا کرو، باقی ادھر ادھر زیادہ ہوچے یا چھمت کیا کرو، فانما هلك من كان قبلكم بكثرة السوال اليني يهود ونساری ای طرح سے زیادہ سوالات کرنے کی بنیاد پر ہلاک ہوگئے"کسوال الرؤیتوالکلام وقصة البقرة" (موقات ٢٦٣/٥)، واختلافهم على انبياء هم: ليني يهود دنصاري كيسوال يران كانبياء في راسته بتايا توعمل كرفي ك بجائے خیلے بہانے کرنے لگے،جن سے معزات انبیاء کرام سے اختلاف کی بیملکی تھی:اس لیےدولوگ ہلاک کردیے گئے۔ موال: موال سيب كرجب أدى يرج فرض موكياتواب في الفورج كرنا ضروري بي يجمة اخريمي كيا جاسكا ب؟ جواب: جواب ال كابيب كراحتياط كا تقاضريب كرة وى يرجب في فرض موجائ اوركى طرح كى كوئى ركاوث ندموتوفى الفوراى مال فح كر لے جيما كه حفرت امام ابو يوسف عليه الرحمه كا مملك ہے" و حاصله ان و جوبه على الفور للاحتياط" (ددالمعار: ١١٥١/٣)،البة معرت الم محمد عليه الرحمة كا مملك يه ب كدع كرف كا پختداداده بوادراس كا انديشدند بوكه في اس ب

جُمُوثُ مِائِكُمُ لَوْتَا تَحْرَى كُوْبِائْشَ ہِے"قال المصنف ويتعين اشهر البحج من العام الاول عند ابى يوسف خلاف لمحمد اي لا بدعند ابي يوسف: أن يؤدي الحج في العام الأول اجتياطًا احترازًا عن الفوات فأن الحيوة الى العام الثاني موهوم،وعند محمد يترخص أبه ان يوخر الى العام الآخر بشرط ان لا يفوت منه "(نور الانوار /٥٩). ﴿سب سے بھتر عمل﴾

﴿ مديث تمبر ٢٣٩٤ ﴾ وعنه قالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَليْهِ وَسَلَّمَ أَيُّ الْعَمَلِ افْصَلُ؟ قَالَ: إيْمَانَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ قِيْلَ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: الجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ قِيْلَ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: حَجٌّ مَبْرُورٌ. منفقٌ عَليْهِ. حل الفات: العمل: كام بن العمال، المجهاد: اعلاء كلمة الله ك لي جل كرنا، جهد: (ف) جهداً بهت وحش كرنا، صبيل:

راست جمع مبل معبرود: بور (س) بوراً تول كرنا_

قوجمه: ان سے دوایت ہے کہ جناب ٹی کریم ﷺ سے بوجھا کیا، کونماعمل سب سے اچھا ہے؟ آپ نے فرمایا: الله اوراس کے رسول برايمان ، كها كيا چركونسا؟ آپ نے فرمايا: جهادفي مبيل الله ، كها كيا بحركونسا؟ آپ نے فرمايا: جي مبرور۔

خلاصة عديث ال عديث شريف كا ظامديب كرسب بهترين عمل ايمان ب،اس ك بعدجها دادر كمرج مبردر-

ای العمل افضل: افضل: افضل الاعمال کے الملے میں مختلف احادیث منقول ہیں، کی حدیث میں کی ملکو کی است حدیث کی تشری افضل کہا گیا ہے اور کسی میں دوسرے مل کو، ان تمام میں مطابقت یوں پیدا کی جاتی ہے کہ بیا اختلاف

ساملین کے احوال مختلف ہونے کی بنیاد برہے۔

الايمان بالله ورسوله: ايمان تام بي تقديل في الايمان هو التصديق القلبي" (مرقات ٢٦٥/٥)، الجهاد في سبيل الله: چاد سراد جهاد فالص ب جومرف اور صرف الله ك ليه و "والمواد به الجهاد المخالص" (مرقات ٢٦٥/٥٠)، حج مبرور: ج عمرادوه ج بوبارگاه الى من معول مو

﴿اللَّهُ كَمِ لَيْ هُجَ كَرِنْ وَالَّهِ كَيْ سَعَادَتَ ﴾

﴿ مِدِيثُ نُمِر ٢٣٩٨ ﴾ وعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ حَجَّ لِلَّهِ فَلَمْ يَرْفَتُ وَلَمْ يَفْسُقْ رَجَعَ كَيَوْمِ رَلَكَتْهُ أَمُّهُ. مَتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل لغلت: حج: حج (ن) حجاً اراده كرناميرفت: رفث (س) رفعاً في كرناميفسق: فسق (ن) فسقاً بركار مونا-قرجمه: ان سےروایت ہے کہ جناب نی کریم عظاف نے فرمایا جس فخص نے تج کیا اور نداس نے جمبستری کی اور ندکوئی گناه کیا تووہ الياوق عجياكال كال فالكوآن بى جناع-

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيب كه خلوس كساته في كرف والے كنابول سے پاك بوجاتے ہيں۔

وعند: یعنی بردایت حفرت ابد بریره رضی الله عند سے دوایت بعن حج لله: یعن جم فض فظوم کمات حدیث کی تشریح کی در جماع کرنا مراد به ولم

یفسق: مراد گناه کبیره کرنااور گناه مغیره پرامرار کرنا ہے۔

﴿حج کا ثمرہ ﴾ ﴿ صِرِيتُ بُهِ ٢٣٩٩ ﴾ وعَنْه قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْعُمْرَةُ إِلَى الْعُمْرَةِ كَفَّارَةٌ لِمَا بَيْنَهُمَا، والحَجُّ الْمَبْرُورُ لَيْسَ لَه جَزَاءٌ إلَّا الْجَنَّةُ. مُتفقٌ عَلَيْهِ.

حل لفات: العمرة: طواف اورسي كانام عروب يح عمرات، المبرور: بر (س) برأ تول كرنا-قوجمه: ان سے روایت ہے کہ جتاب نی کریم عظف نے فرمایا: ایک عمره دوسرے عرب تک کفاره ہے ان گنامول کے لیے جوان

دونوں کےدرمیان مول ،اورج معبول کا بدلہ بی جنت ہے۔

فلامة حديث ال مديث شريف كاخلامه بيب كه ما جي سيد مع جنت جائكا۔

وعده: لين بيروايت حفرت الو بريره رضى الله عنه ب وايت ب العمرة الى العمرة كفارة الما تحديث كي تشري كالمرة كفارة الما بينهما: لين آدى جب باربارعمره كرتا ب اوراس درميان من كي جموع حمو المراق عن المراق عن المراق عن المراق المراق

م الم الووه عرب كى بركت س معاف بوجايا كرتے بي ، والحج المبرود ليس له جزاء الا الجنة : يعنى حل تخص كا حج معبول موجائے وہ سردھے جنت جائے گا۔

﴿رمضان میں عمریے کا ثواب﴾

﴿ مِدِيثُ بُهِ ﴿ ١٣٠ ﴾ وعَن ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسَلَّمَ: إنّ عُمْرَةَ فِي رَمَضَانَ تَعْدِلُ حَجَّةً. مُتفقٌ عَلَيْهِ.

حل الغامة: عمرة: طواف اورسى كانام بي جمع عمرات، رمضان: قمرى ميني كانوال مهينة جمع رمضانات.

قوجمه: حضرت ابن عباس رضى الله عنهما سے روایت ہے کہ جناب نی کریم عظاف نے قرمایا کدرمضان میں عمرہ کرنے کا تواب جے کے

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصديب كدرمضان من عمره كرف كاثواب بهت زياده بـ

ان عموة في رمضان تعدل حجة: يعنى رمضان تريف بس كي جانے والے عمرے كا تواب جج كمات حديث كي تشريح كا تواب جج

خنابالغ کا حچہ

﴿ صريت بْسِرا ٢٣٠﴾ وعَنْهُ قَالَ: إنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَقِيَ رَكْبًا بِالرَّوْحَاءِ ' فَقَالَ: مَنِ الْقَوْمُ؟ قَالُوْا: المُسْلِمُونَ ۖ فَقَالُوْا: مَنْ انْتَ؟ قَالَ: رَسُولُ اَللَّهِ * فَرَفَعَتْ إِلَيْهِ امْرَأَ ةٌ صَبِياً * فَقَالَتْ: الِهِلَا حَجٍّ؟ قَالَ: نَعَمُ إِوَلَكِ أَجُرٌ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل الغامة: ركبا: اسم جمع بمعنى اونث يا كلور ول كسوار، صبيا: بي جمعى صبيان

قوجهه: ان مدوايت بكر جناب ني كريم علي كي مقام روحاريس ايك قافي ما قات بوئي ، تو آب نے يو حجمانم كون لوگ مو؟ان لوكول في جواب ديا: بهم مسلمان بين، ان لوكول في كها: آپكون بين؟ آپ فرمايا: بين رسول الله بول، اخت مين ايك مورت نے ایک بچے کوآپ کی خدمت میں پیش کرتے ہوئے کہا: کیااس کیلئے جے ہے؟ آپ نے فرمایا: ہاں! اور تیرے لیے اجر ہے۔ خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلامه يه كه بجدا كرج كرفي والكوبهي ج كاثواب ماياب

کلمات صدیث کی تشریح آدی کی جماعت کورکب کہتے ہیں الکی ناب ہرسواری کے لیےرکب کا استعال ہوتا ہے،الروحاء:

مدین منورہ ہے ٣٦ یا ١٣٠ میل کے فاصلے پر ایک جکہ کا نام ہے"موضع منِ اعمال الفرع علی نحو من اربعین میلا من المدينة، وفي كتاب مسلم سنة واللاين ميلا منها" (مرقات ٢٦٦/٥)، ممكن ٢٥٠ مروالي تعداد ش قعركا عتبارندكيا كيامو، فقال من القوم: يحى جتاب في كريم على في ان لوكون سه يوجها كرتم كون لوك بو؟ قالوا المسلمون: يعن ال جماحت في جتاب في كريم على أو كرا من المت النع: اس كه بعدان لوكون في جها كرآب كون في الم جتاب في كريم على كوجها كرآب كون في الم المن المن النع النع: اس كه بعدان لوكون في جها كرآب كون في الم جتاب في كريم على في المراك مول بول بول بول المول المول

رحج بدل

﴿ مِدِيثُ بِمِ ٢٣٠٢﴾ وعَنْهُ قَالَ: إِنَّ امْرَأَ ةُ مِنْ خَفْعَمٍ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللّهِ ! إِنَّ قَرِيْطَةَ اللَّهِ عَلَىٰ عِبَادِه فِيْ الحَجِّ إِذْرَكَتْ ابِيْ هَيْحًا كَبِيْراً لَا يَنْبُتُ عَلَى الرَّاحِلَةِ ٱلْمَاجِجُ عَنْهُ ؟ قَالَ: نَعَمْ ا وَذَالِكَ فِي حَجَّةِ الْمَاجَجُ عَنْهُ ؟ قَالَ: نَعَمْ ا وَذَالِكَ فِي حَجَّةِ الْمَاجَجُ عَنْهُ ؟ قَالَ: نَعَمْ ا وَذَالِكَ فِي حَجَّةِ الْمَوْدَاعِ. مُطْقً عَلَيْهِ.

حل اخات: ادر کت: ادر ک افعال) اپ وقت پر پنجاء الوداع: ودع (ف)ودعاً رفست کرنا۔ قو جهد: ان سے دوایت ہے کہ قبلہ عم کی ایک حورت نے عرض کیا یارسول اللہ! بندوں پراللہ کا ایک فریف جج بھی ہے، اور مرے والد محرّم کو بردا بوڑھا یا ہے وہ سواری پر تھیک سے بیٹے بھی تہیں اکیا بیں ان کی جانب سے جج کردوں؟ آپ نے فرمایا: بال ایہ جمت

فلاصة عديث ال مديث شريف كاخلاصهيب كرج بدل كياجاسكاب-

اهر كت ابى شيخا كبير على الدوكت ابى شيخا كبوا: ين مير والدمر م براي وقت مل في فرض بوا ب كه وه كافى المرات حديث كالشرك يور عبو يك بين الا ينب على الواحلة اورات بور عبو يك بين كه وه موارى برفيك عبير بحي بين الفاحج عند، قال نعم: ين ان بور عصابي براس وقت في فرض بواكروه كافى بور عبو يك ته اورات بور عكروه في كروه في كروه في المرابي في المرابي في المرابي في المرابي في المرابي بين على المرابي بين بين بين المحج على الزمن والمشيخ العاجز عن المحج بنفسه، وهو قول المشافعي رحمه المله (مرقات ١٦/٤)، يكن حضرت الم اعظم عليه الرحم كاكبنا بكر وجوب في المنافعي رحمه المله (مرقات ١٦/٤)، يكن حضرت الم اعظم عليه الرحم كاكبنا بكر وجوب في المنافع عليه المراك على من استطاع المه سبيلاء فيد الايجاب به والمعجز لازم مع هذه الامور لا الاستطاعة (مرقات ١٦/٤)، اوراس مد يث شريف من في بدل كانذكره بوده في أن احج عنه في المحديث المنافع عنه المحديث المنافع عنه المحج عنه المحديث من المنافع وهو عاجزاً يصح منى ان احج عنه تبرعاً (مرقات ١٥/١٤)، افاحج عنه المحديث عن المحديث المحديث المنافع عنه المحديث من المنافع عنه المحديث عنه المحديث عنه المحديث عنه المحديث المحديث المرقات المحديث المنافع عنه المحديث عنه المحديث المنافع عنه المحديث عنه المحديث عنه المحديث عنه المحديث عنه المحديث المحديث المنافع عنه المحديث عنه المحديث عنه المحديث عنه المحديث عنه المحديث المحديث المحديث المنافع عنه المحديث المحد

شرالط ج بدل کی چیشرطی ہیں(۱) آمر پر ج فرض ہو چکا ہو(۲)وہ ہید کیلئے ج کرنے سے عاج ہوگیا ہو(۳) ج کی شرالط ج بدل دیت آمری طرف سے کی جائے (۳) عاجزیاوارٹ ج کرنے کا تھم دے(۵) امور ج کرنے کی المیت رکھتا ہو

"والمركبة منهما كحج الفرض تقبل النيابة عند العجز فقط، لكن بشرط دوام العجز الى الموت ويشرط نية الحج عنه اي عن الامر وبشرط الآمر به يشترط لصحة النيابة اهلية المامور لصحة الافعال"(دريخار١٣/٣-١٠)_ عج بدل كسليط من جويد علوي المركي يمل مولى بركم ماموركا يمل حج كيا موا مونا ضرورى ب،اس كى كوكى اصل بين ألم فوع عليه اى على ان الشرط هو الاهليةد ون اشتراط ان يكون المامور قد حج عن نفسه"(رد المحار١٦/٣)

﴿دوسریے کی طرف سپے ھچ کرنا ﴾

﴿ صريت بْرِيِّ ١٣٠٠﴾ وَعَنَّهُ قَالَ: أَتِي رَجُلُ إِلَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ' فَقَالَ: إِنَّ الْحَتِي نَذَرَتْ انْ تُحُجُّ وَأَنَّهَا مَالَتُ ۚ فَقَالَ النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَو كَانَ عَلَيْهَا دَيْنَ ٱكُنْتَ قَاضِيَهُ؟ قَالَ: نَعَمْ؟ قَالَ: فَاقْضِ دَيْنَ اللَّهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِالْقَضَاءِ. مُتَفَقَّ عَلَيْهِ.

حل لغات: نلوت: نلو (ن) نلواً غيرواجب وايخ اوبرواجب كرنا، دين:قرض جع ديون

قوجعه: ان سے دوایت ہے کہ ایک آدی نے آکر جناب نی کریم تھے ہے وض کیا کہ میری بہن نے ج کرنے کی نذر نانی تھی ہیکن ان كى موت موكى ، توجناب ئي كريم على فرمايا: اكراس يرقرض موتاتوتم ادائيس كرتي ماس في كبا: بان! آپ فرمايا: الله كا قرض اداكر: اس ليے كدوه ادا يكى كازياده فق دام بـــ

فلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصهيب كدومرك كاطرف سي حج كياجا سكاب

ان اختی نذرت ان تحج وانها مانت: لین زمان بیوت بس ایک مورت نے ج کی نذر مانی؛ کمات حدیث کی تشری کی نفر مانی؛ کمات حدیث کی تشری کی نفر مانی؛ کمات حدیث کی تشری کی کاریم میلان ہے ہے۔

بوجها كهاب كياكياجائكا؟ توآب فرماياكمان كالمرف سع حكم دياجائد

﴿عورت کا غیر محرم کے ساتھ حج کے لیے جانا﴾

﴿ مِدِيثُ بُهِ ٣٣٠﴾ وعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا يَخْلُونُ رَجُلٌ بِإِمْرَأَ قِ وَلَا تُسَافِرَكُ امْرًا ةً إلَّا وَمَعَهَا مَحْرَمٌ ' فَقَالَ رَجُلِّ: يَارَسُولَ اللَّهِ! ٱكْتُسِبْتُ فِي غَزْوَةٍ كَذَا وَكَذَا وَخَرَجَتِ امْرَأْ لِيْ حَاجَّةً * قَالَ: إِنْهَبْ فَاحْجُجْ مَعَ امْرَأَ لِكَ. مُتفَقَّ عَلَيْهِ.

حل فغلت: يخلون: خلّ (ن) خلوة تنهائي ش ملنا، غزوة الزائي جمع غزوات.

قوجمه: ان سے روایت ہے کہ جناب نی کریم سالنے نے فرمایا: کوئی آ دی کسی عورت سے تنہائی میں نہ ملے اور کوئی عورت محرم کے بغیر سنرندكرے، تواليك آدى نے عرض كيا: يارسول الله! فلال غزوے ميں ميرانام لكھا جاچكا ہے اور ميرى بيوى جج كے ليے جارہى ہے، آپ نفرمایا: جا دانی بوی کے ساتھ ج کرو۔

خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلامه يه به كورت عج كريتوا پي محرم كے ساتھ جائے ،ورند مج موتوف كرد ،

وعنه: یعنی بیروایت حفرت ابن عباس رضی الله عنها سے دوایت ہے، لا یعلون رجل بامواقد کمات حدیث کی تشریح مراد بیا ہے کہ کوئی کی اجبی عورت سے تنهائی میں نہ لے، ولا تسافون اموا ة الا ومعها

معرم: یکن کے کرکاویٹریا اس سے زیادہ کی مسافت کا سنر محرم کے بغیر نہ کرے" قال: ابن الهمام فی الصحیحین: لا تسافر
امر اق ثلاثا الا و معها فو معرم" (مرقات ۲۲۸/۵)، اس روایت کی بنیاد پر دهرت امام عظم اورامام اتھ بن عنبل علیما الرحم کا کہنا ہے
کہ م کے بغیر عورت کا جج نیس ہے! لیکن دهرت امام الک علیہ الرحم کا کہنا ہے کہ عورت کی جماعت ل جائے قوجا سمی ہورات کی محامت ل جائے تو جائے ہی ان دهرات کی جماعت الرحم کا مسلک ہے ہے کہ ایک بھی تقد عورت کے کے لیای کے ماتھ واسمی ہورات کی میں ان دهرات کی بات تیاں پر موقوف ہے ، کوئی روایت دلیل میں نہیں ہے۔قال: ابن الملك فیه دلیل علی عدم لزوم المحیح علیها اذ لم یکن معها محرم، و بھذا قال ابو حنیفة و أحمد، و قال مالک رحمه الله تعالی یلزمها إذا كان معها جماعة النساء، و قال الشافعی رحمه الله یلزمها إذا كان معها امرا ق ثقة" (مرقات ۲۸۸/۷)، و خوجت امراتی حاجة النے: میں تو غزوے میں جانے کے لیے تیار ہوں اور میری یوی تج میں جائے ہی تیار ہوں اور میری یوی تج میں جائے ہی تیار ہوں اور میری یوی تج میں جائے ہی تیار ہوں اور میری یوی تج میں جائے ہی تیار ہوں اور میری یوی تج میں جائے کے لیے تیار ہی کرایا کی جراب نی کریم علی تیار ہوں اور میری یوی تی کرایا کی کرایا کی ان میا کان میا کہ تیار ہوں اور میری یوی تی کرایا گئی تیوی کے ساتھ جا و اور تی کرو۔

﴿عورتونِ كَا جِهَادِهِ

﴿ صِرِيثُ مُبِرِهِ ٢٣٠٩﴾ وعَن عَائِشَة قَالَتُ: اسْتَاذَنْتُ النَّبِيُّ صِلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الجِهَادِ ۚ فَقَالَ: جِهَادُكُنَّ الحَجُّ. مُتفَقَّ عَلَيْهِ.

حل الفات: النبى: خداكة اصد بح البياء، جهاد: اعلائكمة الله كي بنك كرنا، جهد (ف) جهداً بهت كوشش كرنا . قوجهه: حفرت عاكثر منى الله عنها سے روايت بكريس نے جناب بى كريم علي سے جهادي جائى والے كى اجازت چابى تو آپ نے فرمایا كرتم سب كاجهاد ج بے۔

خلاصة حديث ال حديث كاخلاصه يه كرورتون كوجهادكا الواب جج من ال جاتاب

كلمات حديث كي تشريح فقال جهادكن الحج: يعنى عورتوں پرجهاؤيس ب؛ بلك اگراستطاعت بينوان كے ليے ج بـ

﴿تَنَاهَا عَوْرَتَ كَے لَيے سَفَرَ كَى حَدِيَ

﴿ وَمَدِيثُ مُهِرَا ٢٣٠﴾ وعَن أَبِي هُوَيْوَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تُسَافِرُ إِمْوَأَ ةُ مَسِيْرةَ يَوْمِ وَلَيْلَةٍ إِلَّا وَمَعَهَا ذُوْ مَحْرَمٍ. مُتفَقَّ عَلَيْهِ.

حل لفات:مسيرة: سافت،سار (ض) مسيرة جانا چلنا،يوم: دن جمع ايام.

قوجمه: حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ جناب نبی کریم ﷺ نے فرمایا: کوئی عورت محرم کے بغیر ایک ون اور ایک رات کی مسافت کا سفرند کرے۔

خلاصة حدیث اس حدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ فتنے کا ندیشہ ہوتو تھوڑی دور کا بھی سفر بلامحرم مطے کرنا درست نہیں ہے۔

کلمات حدیث کی تشریک اورای می دودن کے الفاظ بھی آئے ہیں، اوراس روایت میں ایک دن اور ایک رات کا لفظ ہے،

ان تمام روائوں كا حاصل يد ب كرتمور كى دور كے ليے بھى بغير محرم كے سفر كرنا جائز نبيس بي ادل الجمع فكانه اشار ان مثل هذا في قلة الزمن لا يحل لها لسفر مع غير محرم فكيف بما زاد؟" (فتح الملهم ٢٤٥/٣)، اورية ماند چول كرفت وفسادكا ب

اس ليے عورتوں كو محرم كي بغير سنركرنے سے خاص طور پر بچنا جا ہے، روز مره كے حالات اور پيش آمده حوادثات كى بنياد پرفتو كى بحى اى قول پر ہے "و في رد المحتار وروى عن ابى حنيفة و ابى يوسف كر اهة خروجها و حلمها مسيرة يوم و احد ينبغى ان يكون الفتوى عليه لفساد الزمان "رفتح المهلم ٣٤١/٣)

﴿مواقيت حج﴾

﴿ وَدِيثُ مُرِكِ ٢٣٠ ﴾ وعَن ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: وَقُتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ الأَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَالْعُلِ الْمُحِيْنَةِ وَالْعُلِ الْمُحَنِّقَةِ وَالْعُلِ الْجُحْفَةَ وَالْعُلِ الْجَدِ قَرْنَ الْمَنَازِلِ وَالْعُلِ الْيَمَنِ يَلَمُلَمَ، فَهُنَّ لَهُنَّ، وَلِمَنْ أَتَىٰ عَلَيْهِنَّ مِنْ عَيْرٍ الْعَلْمِنَ لَهُلَهِ وَكَذَاكَ وَكَذَاكَ وَكَذَاكَ وَكَذَاكَ وَكَذَاكَ وَكَذَاكَ وَكُذَاكَ وَكُونَا وَالْعُمْرَةَ وَلَا عَنْ عُنْ وَلَوْلَالْهُ وَلَا لَاللَّهُ عَلَى اللَّهُ مَا الْعُلْمُ وَلَا عَنْ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ وَلَا عَلَى اللّهُ اللّ

حل لفات: المدينة: شررتم مدن، العمرة: طواف وسعى كانام عروب جع عمرات

خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلاصه بيه به كه بيه مقامات ہيں ، آ دمی جنب حج وعمرہ كا ارادہ كرے تو ان مقامات ميں سے خلاصة حديث جبال سے موقع ملے وہيں سے احرام ہاندھ لے۔

کلمات حدیث کی تشری کے العل المدینة ذالحلیفة: مدین موره ہے ٢ میل (تقریباً ۹ رکلومیٹر) کے فاصلے پرایک مقام کانام کلمات حدیث کی تشریح کے اور یہاں سے مکہ مرمہ کی دوری ۱۰ امر طنے (۱۲۰ میل) ہے "ذو الحلیفة مکان علی

ستة اميال من المدينة وعشو مواحل من مكة "(در مختار ١٩٠٣)، لاهل المدينة ذالحليفة على فرسخين (٢٠مار) من المدينة، قال المطيبي رحمه الله: وعشو مواحل من مكة "(مرقات ١٩٠٨)، ١٧٠١مر مل كو حاب عقر با ٢٥٨ ركل من المدينة، قال المطيبي رحمه الله: وعشو مواحل من مكة "(مرقات ١٩٠٤)، ١٧٠١مر مل كو حاب عقر با ٢٥٨ ركل مير سنة بين المراب المراب المراب كاريون على دوري ١٩٠٠م ركلوم مراك على بيران المراب كاريون بين بعض لي دوري ١٩٠٠م ركلوم من المراب كاريون بين بعض لي مراك على بيران كرت ترجي من بعض لي دوران المراب كاريون بين بعض دفعا المينا با با ما المراب كاريون من المراب كاريون بين بعض المراب كاريون بين المراب كارون كارب بين المراب كارون كارب بين المراب كاريون بين المراب كاريون بين المراب كاريون بين المراب كارون المراب كارون بين المراب بين المراب كارون بين بين المراب كارون بين المراب كارون بين المراب كارون بين المراب كارون بين المراب كارون

(۱) آفاقتی: یدوه لوگ بین، جوان مقامات سے باہر کے باشندہ بین، ان کے لیے تو یمی جگہیں میقات بین الکیا اگران

مقامات کے علاوہ کی دومرے رائے ہے آئی توان مقامات کے محاذات سے احرام ہاندھیں۔

(۲) ملى: بدوه لوگ بين جوان مقامات اور حدود حرم كورميان رجة بين، ان كے ليے الى تمام زين ميقات بين، فج وعمره كے رميان سے چاہيں احرام با عرصين "ميقاته الحل الذي بين المواقيت والحوم" (در مختار ٣٨٣/٣)-

(٣) حوجى: يدوه لوگ بين جوحدوو قرم كم باشند بين، ان كے ليے ج كى ميقات بورا قرم باور مرے كے ليے ميقات مل بے جہاں سے ميولت بوا قرام با ندھ لين اليكن عليم سے اقرام با ندھنا افضل بي والميقات لمن بمكة يعنى من داخل الحرم للحج المحرم و اللعمرة المحل" (در مختار ٣٨٣/٣)۔

﴿ذَاتُ عَرِقَ﴾

﴿ صِدِيثُ مُهِرُ ٢٣٠٨﴾ وعَنْ جَابِرِ عَنْ رَسُولِ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مُهَلُّ اهْلِ الْمَدِيْنَةِ مِنْ ذِى الْحُكَيْفَةِ وَالطّرِيْقُ الآخَوُ الجُحْفَةُ وَمُهَلُّ اهْلِ الْعِراقِ مِنْ ذَاتِ عِرْقٍ وَمُهَلُّ أَهْلِ نَجْدٍ قَرْنٌ وَمُهَلُّ أَهْلِ الْعِراقِ مِنْ ذَاتِ عِرْقٍ وَمُهَلُّ أَهْلِ الْعَراقِ مِنْ ذَاتِ عِرْقٍ وَمُهَلُّ أَهْلِ نَجْدٍ قَرْنٌ وَمُهَلُّ أَهْلِ الْيَمَنْ يَلَمْلُمُ. وَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل مفات: الطویق: راسته جمع طرق ،المدینة: شهر جمع مدن ،مهل: اهل (افعال) الملبی: تلبید کوفت آواز بلند کرنا-قو جمه: حفرت جابر رضی الله عنه ب روایت ہے کہ جناب نبی کریم علی نے فرمایا: الل مدینه کی میقات ذوالحلیفة اور دوسرے رائے ہے جمفہ ہے ، اہل عراق کی میقات ذات عرق ہے ، اہل نجد کی میقات قرن المنازل اور اہل یمن کی میقات پلملم ہے ۔ خلاصة حدیث اس حدیث شریف کا خلاصہ ہے کہ ذات عرق ایک مقام ہے جو اہل عراق کی میقات ہے۔

ومهل اهل العواق من ذات عوق: ذات عرق كرمه بورط كل مسانت پرايك جكه كانام كلمات حديث كي تشريح بي ايك جكه كانام كلمات حديث كي تشريح بي الله عوالل عراق كي ميقات بي على مو حلتين من مكة "(مرقات ١٤١/٥)-

﴿ آپ کے حج وعمریے کی تعدادہ

خلاصة حديث جناب ني كريم علية ني كل مرعم عيد المحيث الموذى تعده كمبيون من اكدوى المجيش

اعتمر رسول الله صلّی الله علیه وسلّم اربع عمر الغ: لین جناب نی کریم بیلی نے کا میں الله علیه وسلّم اربع عمر الغ: لین جناب نی کریم بیلی نے کلمات حدیث کی تشریک کلم میرون میں کے اس کے کرنا جالمیت میں کفار و مشرکین ذی تعدہ میں کیا کرتے تھے اور اس کو گناہ بجھتے تھے ،ای نظر نے کی تردید جناب نی کریم بیلی نے ذی تعدہ میں متعدد عمر کے کردی تقال العلماء: وانعا اعتمر النبی صلی الله علیه وسلم هذه العمد فی ذی القعدة لفضیلة هذا

الشهر، ولمخالفة الجاهلية في ذالك فانهم كانوا يرونه من افجر الفجور" (فتح الملهم٣١٣/١٣)،عمرة من الحديبية لى ذى القعدة: مرادوه عره بكرجاب بي كريم على المصر عرب كانيت سديد منوره سے فكا اليكن ذى تعده كے مهينے ميں مشرکین مکہنے آپ کومع اصحاب کے حدیب میں روک دیا اور آ کے نہ جانے دیا اور بات چندمعاہرے پرختم ہوئی جوملح حدیب کے نام ے مشہورے ،اس وقت آپ عمر وتون کر سے ، مرآپ کی نیت کا اعتبار کرتے ہوئے اس کو بھی ایک عمر و کہد یا گیا ہے 'افد احوم بھا من ذي الحليفة محمول على انه هم بالدخول محرما بها الا انه عليه الصلاة والسلام صد عنه واحصر منه ففي الجملة اطلاق العمرة عليها مع عدم افعالها باعتبار النية" (فتح الملهم٣١٣/٣)، وعمرة من العام المقبل في ذي القعده: ال منع نامه من ايك بات به بحي هي كم سلمان اس سال لوث جائيس الحلي سال آكر جوعبادت كرنا جا بيس كريس ،اس بات كي بنیاد پر جناب نی کریم ﷺ نے اگلے سال ذی تعدہ کے مہینے میں مکہ جا کرعمرہ کیا،ای کوعمرة القصار کہا جاتا ہے وہی عمرة القضاء" (مرقات ١٥/١٥١)، وعمرة من الجعرانة حيث قسم غنائم حنين الغ: فتح مُدك بعد جناب تي كريم علي كوجب الم ہوازن کی ریشہ دوانیوں کاعلم ہواتو آپ مع اصحاب کے اس شرکو دہانے کے لیے لکلے؛ چناں چدمقام حنین میں مقابلہ ہوا،مسلمانوں کی جیت ہوئی، وہاں جو مال غنیمت ہاتھ لگا اس کو مقام ھر اندمیں لا کر تقسیم فر مایا، ھر اندہی میں آپ نے عشار کی نماز پڑھی ،اس کے بعد کے كے ليے لكے، فحرى نماز كے ميں يزهى، عمره كيا بھرآپ واپس موئ، يهى عمرة بعر اندے، و عموة مع حجته: يعنى بيد جناب بى كريم عَلَيْهُ كَا يُوتِمَا عُره ؟ يَحِد آبِ نَے جَد الوداع كماتھ كيا تھا"اى مقرونة مع حجة" (مرقات ١٢٥١٥)-

وحج سے پھلے آپ کے عمریے¢

﴿ صريتُ بُهُمُ ٢٣٦﴾ وعَنِ الْبَوَاءِ بْنِ عَاذِبٍ قَالَ: اعْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلَّمَ فِي ذِى الْقَعْدَةِ قَبْلَ أَن يُحُجُّ مَرَّتَيْنِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُ.

حل فغات:قبل: پہلے بی ظرف زمان ہے، یحج: حج (ن) حجاً ارادہ کرنا۔

توجمه: حفرت براه بن عاذب وضى الله عندسدوايت ب كريم الله في كريم الله في الله الله الله عند الم مبينول ميل وعمر الم يستع خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يب كه جناب ني كريم علية نے جے سے پہلے كمه جاكردوم تنه عمره كيے إلى ـ

کلمات صدیث کی تشری اعتمر رسول الله صلی الله علیه وسلم فی ذی قعدة قبل ان یحج مرتین: اس سے بہلی صدیث کی تشریح کے سے بہتے ہوئیں کہ یہ صدیث جج سے بہلے تین عمرے کے سے بہتے بحب کہ یہ صدیث جج سے پہلے آپ کے عمرے کی تعداد دو بتار ہی ہے،ان دونوں حدیثوں کے تضاد کو یوں دور بیجیے کے صلح حدیدیہ کے موقع پراگر چہ بظاہر آپ نے

عمره نیس کیا تھا؛لیکن اللہ تعالی نے تھم دیا تھا کہ آپ احرام سے باہر آجائے آپ کوعمرہ کا تواب حاصل ہو گیا، کوآپ علی نے عمرہ کے افعال ادانہیں کیے ہیں؛لہذا جس روایت میں جے سے پہلے عمرے کی تعداد تین بتائی گئی ہے اس میں اس عمرہ سے مرادعمرہ کا تواب ہے،

اس اعتبارے تین عمرے تاریے گئے ہیں، اورجس روایت میں جے سے پہلے عمرہ کی تعداد دوبتائی گئی ہے اس کی مرادیہ ہے کہ اگر چہ آپ کو الواب تنن عمرے کے ملے ہیں الیکن طاہری طور پرعمرے آپ نے دوہی کیے ہیں۔

الفصل الثاني

﴿حج ایک مرتبہ فرض ھے﴾

﴿ وَدِيثُ مُرِا ٢٣١﴾ عَن ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ! إِنَّ اللَّهَ

كُتَبَ عَلَيْكُمُ الْحَجُّ ۚ فَقَامَ الأَفْرَعُ بْنُ حَابِسٍ فَقَالَ: الْجِي كُلُّ عَامِ يَا رَسُوْلَ اللّهِ؟ قَالَ: لَوْ قُلْتُهَا نَعَمْ! لَوَجَهَتْ وَلُوْوَجَهَتْ لَمْ تَعْمَلُوْا بِهَا وَلَمْ تَسْتَطِيْغُوا، وَالْحَجُّ مَرُّةً فَمَنْ زَادَ فَتَطَوَّعٌ. زَوَاهُ احْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ وَالذَّارِمِيُّ.

حل لفات:عام: مال يم اعوام

ان الله كتب عليكم الحج: يعنى جب ج فرض بوالوجناب بى كريم عظف نے مسلمانوں كواس كلمات حديث كي تشريح كا الله كتب عليكم اللحج: يعنى جب ج فرض بوالوجناب بى كريم عظف نے مسلمانوں كواس

جناب نی کریم عظی سے پوچھا کرج ایک بی مرتبہ فرض ہے یابار بار فرض ہے؟ قال لو قلتھا نعم لو جبت النے: لیمن جناب نی کریم عظی کے دیا ہے۔ اس کی بیاب کی کریم عظی کو یہ پوچھا کہ بی اس لیے آپ نے فدکورہ بالا با تیں کہیں، جس کا مقصد یہ ہے کہ اس طرح بات پر بات پوچھا نہیں کرتے، شریعت نے جننا کہا ہے اس پڑمل کرے، آگے کی نہ سوچے، فعن زاد فتطوع: مرادیہ ہے کہ جج تو صرف ایک بی مرتبہ فرض ہے جو لوگ ایک سے زیادہ جج کریں گے، یہ ان کے لیے ٹو افل میں شار ہوں گے۔

وهج نه کر نے والے کے لیے وعید ﴾

﴿ صِدِيثُ بُهِ اللّهِ وَلَمْ يَحُجُ فَلَا عَلَيْهِ أَن يَّمُوْتَ يَهُوْدِيا أَوْ نَصْلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: مَنْ مَلَكَ زَادَ وَرَاحِلةً تُبَلّغُهُ إِلَىٰ بَيْتِ اللّهِ وَلَمْ يَحُجُ فَلَا عَلَيْهِ أَن يُمُوْتَ يَهُوْدِيا أَوْ نَصْرَانِيا وَذَالِكَ أَنَّ اللّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَىٰ يَقُوْلُ: وَلِلّهِ عَلَى النّامِي حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا. رَوَاهُ التَّوْمِذِي وَقَالَ: هذَا حَدِيْتُ عَوِيْتِ وَفِي إِسْنَادِهُ مَقَالً، وَهِلَالُ بْنُ عَبْدٍ مَجْهُوْلٌ، وَالْحَارِثَ يُضَعَّفُ فِي الْحَدِيْثِ.

حل لغلت: زاد: توشير ازودة، راحلة: سوارى جمع اراحل، سبيلا: راسترجع سبل

قر جمه: حطرت على رضى الله عند بروايت ب كرجم الله في كريم علية فرمايا: جوفس ات توشي ما لك موكرجواس كوبيت الله تك كنها د بداور الله عند الله تك كنها د بداور الله تعالى به كروه يهودى موكر يا نفرانى موكر مرب الله تعالى ك قول "ولله على النّاس حج المبيت من استطاع اليه سبيلا" كي وجدت ب.

اس مدیث شریف کا خلامہ بہے کہ جو تف ج فرض ہونے کے باد جود ج نہ کرے تو بہت مکن ہے کہ اس کی موت خلاصہ حذیث المید ہے۔ اس کی موت یہود ہوں یا نفر انیت پر ہو، جوایک بہت بڑاالمید ہے۔

من ملك زاد وراحلة تبلغه الى بيت الله: مراديب كه جوفض في كرنے كى استطاعت كلمات حديث كى تشریح كے الله عليه ان يموت يهو ديا او نصرانياً: نيني اگروه في كے فرض نه بونے كا اعتقاد ركمتا

تما تودا قطاس کی موت حالت كفر می ہوگی الكن اكر فرضيت كا اقرار تو تما الكن اس نے بخ نبيس كيا تو يبود ب وهمرانيت سے مشاببت كا تعلق كناه سے موكا ملى الكفر ان اعتقد عدم الوجوب، وفي العصيان ان اعتقد الوجوب" (مرقات ١٤٣٥٥)- ﴿اسلام میں صرورت﴾

﴿ صِدِيثُ تُبِر ٢٣١٣﴾ وعَنِ ابْنِ عَبَّاسَ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا صَوُّوْرَةَ فِي الإشلام. رَوَاهُ ابْوِدَاوْدُ.

حل المفات: صرورة: والخفس جو تكان ندكر عياج ندكر عاد جمع دولول كي ليمستعمل بـ

قوجعه: حضرت ابن عباس رضى الله عنها الدوايت بكريم على في خرمايا: اسلام ش صرورت نبيس ب_

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيب كدج فرض مونے كے باوجود فج ندر نابياسلام كاطر يقتبين بـ

کل ت حدیث کی تشری فرخ ہونے کے باوجود تج نہ کر ہے تو وہ کامل مسلمان نہیں ہے۔ فرخ ہونے کے باوجود تج نہ کر ہے تو وہ کامل مسلمان نہیں ہے۔

رجج فی الفور واجب ھے یا بالتراخی کے

﴿ صِدِيثُ مُبِرُ ٢٣١١﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ أَرَادَ الْحَبِّ فَلْيُعَجِّلُ. رَوَاه أَبُوْدَاؤِدَ والدَّارِمِيُّ.

حل الفات: اراد: اراد (افعال) اراده كرنا ، فليعجل: عجل تفعيل) جلري كرنا

توجمه معرت ابن عبال سے روایت ب کہ جناب ہی کریم علیہ نے فرمایا: جو میں ج کاارادہ رکھاس کوجلدی کرنی جاہے۔ خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يه ب كما وي كونج كرفي مي جلدى كرتى جا يد

کلمات صدیث کی تشریح اداد المحج فلیعجل: اس مدیث شریف سے احناف کے نتوے کی تائید ہوتی ہے، اس کی کلمات صدیث کی تشریک ہائید ہوتی ہے، اس کی کلمات صدیث کے ذیل میں دیکھی جاسکتے ہے۔ اُ

< هج وعمره ساتھ کرنے کا حکم ﴾

﴿ مِدِيثُ بُهِ ٢٣١٥﴾ وعَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تَابِعُوْا بَيْنَ المَعَجّ وَالْعُمْرَة؛ فَإِنَّهُمَا يَنْفِيَانُ الْفَقُرَ وَالدُّنُوبَ؛ كُمَا يَنْفِي الْكِيْرُ خَبَكَ الْحَدِيْدِ وَاللَّحَبِ وَالْفِضَّةِ، وَلَيْسَ لِلْحَجَّةِ الْمَبْرُوْرَةِ قَوَابٌ إِلَّا الْجَنَّةُ. رَوَاهُ التَّرمِذِي ْ وَالنَّسَائِيُّ، وَرَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَةَ عَنْ عُمَرَ إِلَىٰ قُولِه خَبَّتُ الْحَدِيْدِ.

حل لغات: العمرة: طوا ف وسمى كا نام عمره بين عمرات، ينفيان: نفى (ش) نفياً تا يود يونا، اللنوب: يم يدنب كي يمعنى مناه، الكير: بمثى جمع اكيار ؛ المجنة: باغ جمع جنات، المبرور: شبه مجموث اور خبا ثت سه فالى

ترجمه: حضرت ابن عباس رضى الله عنها الدوايت ب كرجم على الله في المرجم على الدرج وعره دونون ساته كرو اس لي كريم دونوں گناہ اور فقرایے خم کردیتے ہیں؛ جیے بعثی لوہے، سونے اور چاندی کے میل کو ختم کردیتی ہے اور جی مقبول کا بدلہ ہی جنت ہے۔ خلاصة حديث أس مدعث شريف كاخلامه يه المحكمة وعمره دولول ايك بى زمانے مل كرے۔

كلمات مديث كي تشريح المعوا بين الحج والعمرة المخ: مراديب كدفي قران كرب ياج وعرودولول ايك عن داخين كلمات مديث كي تشريح كرب أى قاربوا بينهما اما بالقران او بفعل احدهما بعد الآخو" (مرقات ١٤٥/٥) فانهماينفيان الفقر: مراد ظاہرى اور باطنى دونوں فقر بيں ايعنى الله تعالى اس كو مال دے دے يا بير كماس كا دل عن كردے "وهو يحتمل الفقر الظاهر بحصول غني اليد والفقر الباطن بحصول غني القلب" (مرقات ١٤٥/٥) والذنوب: تثييدك لحاظ سے"اللنوب" سے گناہ كبيره مراد لے ليا جائے توكوئى حرج كى بات نہونى جاہے؛ البت حقوق العباداس سے متنتى مول كے "قيل المراد بها الصغائر ولكن يأبا ، قوله كما ينفي الكير" (مرتات ٢٥٥/٥)_

خ حج کے شرانطہ

﴿ صِدِيثُ مِهِ ٢٣١٧﴾ وعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إلى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ا مَا يُوجِبُ الْحَجِّ؟ قَالَ: الزَّادُ وَالرَّاحِلَةُ. رَوَاهُ التَّرْمِلِيُّ وابْنُ مَاجَةَ.

حل الفات: الزاد: توشر أزودة ، الراحلة: سوارى جمح اراحل

توجمه: حضرت ابن عمرض الله عنها سدوايت إكرايك آدى في جناب ني كريم على سا كروض كيانيارسول الله! كون ى چيز ج كوواجب كرتى ہے؟ آپ نے فرما يا: توشداورسوارى _

ا خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيب كروشه اورسواري ع كے ليے بنيادى ضروريات ميں سے ہيں۔

ما يوجب الحج: يعنى وجوب ج كثرا لط كيابي ؟ قال الزاد والراحلة: يعنى جس كے پاس يہ كمات حديث كي تشريح ووچزیں ہوں اس پرنج فرض ہے۔

﴿حاجئی کامل کی علامت﴾

﴿ حديث بمرك ٢٣١ ﴾ وعَنْهُ قَالَ: سَأَلَ رَجُلٌ رَسُولَ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَفَالَ: مَا الْحَاجُ؟ قَالَ: الشَّمِثُ التَّفِلُ ۚ فَقَامَ آخَرُ ۚ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ! أَيُّ الْحَجِّ افْضَلُ؟ قَالَ: الْعَجُّ وَالثُّجُّ فَقَامَ آخَرُ ۚ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ! مَا السَّبِيْلُ؟ قَالَ: زَادٌ وَرَاحِلَةٌ. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ وَرَوَى ابْنُ مَاجَةَ فِي سُنَيه إلَّا أَنَّهُ لَمْ يَذْكُر الْفَصْلَ الْأَخِيْرَ.

حل اخلت: الحاج: مقامات مقدسه كي زيارت كرني والي ،اسم جع ب،الشعث :غبار آلود بال دالا ،شعث (س)شعثاً الشعر بالوں كا غبار آلود مونا منفل:ميغدمغت،تفل (س) تيل وخوشبوندلكانيكى وجدس بدبودار مونا،العج:عج(ن)عجاً آواز بلند كرنا والشج: ثبج (ن) لجوجاء بها بهانا والسيل: راستجعسل-

ترجمه: ان سروایت م کدایک آوی نے جناب نی کریم علیہ سے پوچستے ہوئے کہا: حای کاس کون لوگ میں؟ آپ نے فرمایا: غبارة الودسراور بإكنده بال ووسرے في كمرے موكركها: يارسول الله! كون سائج انسل بي؟ آپ في قرمايا: بلندة واز سے لبيك كهنا اور قربانی کاجون بہانا، تیسرے نے کھرے ہوکر کہا: یارسول اللہ! سبیل کیا ہے؟ آپ نے فرمایا: توشداورسواری۔

فلاصة حديث المن حديث شريف كاخلاصه يه به كرسفر جي عشق ومبت كامظهر ب؛ ال ليم آدى خلوص وللبيت كے ساتھ شاہ راو خلاصة خلاصة من الله على الله على

وعنه: ایعن بیروایت حفرت ابن عمر منی الدعنما المحج: مرادیب که حاتی کال کمات حدیث کی تشری کی صفت و کیفیت کیا مون؟ قال الشعث التفل: مرادید به که عبادت مین اس قدر جمه وقت

متنزق ربتا موكدوه الين برن كى ركموالى ندكر يا تامو" و حاصله تارك الزينة" (مرقات ١٤١/٥)،اى المحج الهضل: في سلمل عج مرادبیں ہے؛ بلکداس کا ایک عمل مراد ہے ایعنی فج میں ارکان کے بعد کون ساعمل ایا ہے جس کا تواب بہت زیادہ ہے، قال العج والعج: يعنى زياده عزياده تلبيد يرصنااور قربانى كرنامها السبيل: يعن قرآن كريم من جو"من استطاع اليه مسيلا" آيا ب، تواس سيل عيام ادب الا زاد وراحلة: آب فرمايا: السبيل عمرادوشاورسوارى ب-

﴿ بِهِ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمُ ۚ فَقَالَ: يَا رَبُّولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمُ ۚ فَقَالَ: يَا رَبُّولَ اللَّهِ! إِنَّ ابِي شَيْخٌ كَبِيْرٌ لَا يَسْتَطِيْعُ الْحَجِّ رَلَا الْعُمْرَةَ وَلَا الظُّفْنَ ۚ قَالَ: حُجَّ عَنْ أَبِيْكَ وَاغْتَمِرْ. رَوَاهُ الترمِذِي وَأَبُودَاوْدَ وَالنَّسَائِي وَقَالَ التَّزْمِذِي: هَلَا حَدِيثَ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

حل لفات:شيخ: يورُحاجُع شيوخ، كبير: براجُع كبار ،الظعن:ظعن(ن) ظعناً كوچ كرناب

قوجمه: حفرت ابورزين على سيروايت بكرانبول في جناب بي كريم علي كي خدمت من آكرع في كياكه يارسول الله! مرر والدصاحب بوے بوڑ سے ہیں، ج وعرے کی طاقت نہیں رکھتے اور نہ کوج کرنے کی، آپ نے فرمایا: اینے باپ کی طرف سے ج وعمر ہ کر۔ خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلامه بيب كه معذور آدى كي طرف سے دوسر المحض ج كرسكا ہے۔

كلمات حديث كي تشري و لا المعموة العن في المعموة العني في المعال المناس كريكة ، و لا المظعن العني في الممات حديث كي تشري و المناس المعني المعن

فرمایا: تواین والدمحرم کی طرف سے ج بھی کر فے اور عمرہ بھی کر لے، ان کوٹو اب ل جائے گا۔

﴿حج بدل کا طریقه ﴾

﴿ مِدِيثُ بِمِ ٢٣١٩ ﴾ وعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِنَّ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَصَلَّمَ سَعِعَ رَجُلًا يَقُولُ: لَبَيْكَ عَنْ شُبُوْمَةَ ، قَالَ: مَنْ شُبُومَةً؟ قَالَ: اخْ لِي أَوْقَرِيْبُ لِيْ ۚ قَالَ: أَحَجَجْتَ عَن نَفْسِكَ؟ قَالَ: لاَ ، قَالَ: حُجَّ مَنْ نَفسِكَ ثُمَّ حُجَّ عَنْ شَبْرُمَةً. رَواهُ الشَّاقِعِيُّ وأَبُودَاؤَدَ وابْنُ مَاجَةً.

حل لفلت: رجلا: آوي جمع رجال، نفسك: دَات جُعْ نفوس_

قوجهد: حضرت ابن عباس رضى الله عنها سے روایت ہے کہ جناب نی کریم سکتے نے ایک آدمی کو کہتے ہوئے سنا"لمبیك عن هبوهة" آپ نے یو چھاشرمہ کون ہے؟ کہا: میرا بھائی ہے یا قریبی رشتہ دار ہے،آپ نے فرمایا: کیا تو نے اپی طرف سے جج کرلیا ہے؟ انہوں نے کہا جیس او آپ نے فرمایا: پہلے اپنی طرف سے ج کر، پر شرمہ کی طرف سے۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يه ب كم ستحب اور بهتر طريقه يه ب كداري بهلا إلى طرف س عج كرد،اس ك بعددومرے کی طرف سے جج بدل کرے۔

عج عن نفسك ثم حج عن شهرمة: ال روايت كى بنياد پر حفزت امام ثافتى اور امام احمطيا الرحمة كا كمات حديث كى تشرق كالرحمة كم كما كم يك بدل كے ليے مامور كا بہلے اپنى طرف سے جج كرنا ضرورى ہے؛ ليكن حفزت امام ا مقم اورامام ما لک علیماالرحمه کا کہنا ہے کہ جج بدل کے لیے مامور کا پہلے اپن طرف سے جج کرنا ضروری میں ہے؛ بلکہ پہلے اپن طرف سے ج كي بغير بحى دومر ، كى طرف ، ح كيا جا مكا ب "واليه ذهب الاوزاعي والشافعي واحمد.....وذهب مالك والثوري واصحاب ابي حنيفة رحمهم الله الي انه يحج"(مرقات١٤٤/٥)، ثم فرع عليه اي على ان الشرط هو الاهلية دون اشتراط ان يكون المامور قد حج عن نفسه"(ردالمحتار ٢١/٤)- جواب: ان حفرات کے استدلال کا جواب ہے کہ بدرواہت اس قائل نہیں ہے کہ اس موجوب ٹابت ہو سکے؛ بلکا اس سے زیادہ استجاب کا جوت ہوسکا ہے؛ اس لیے کہ اس صدیث شریف کی سند شل ایک راوی ہیں سعید بن ائی عروب، وہ اس روایت کو بھرہ میں جب بیان کرتے تھے، تو حفرت ابن عباس کا قول قرار دیتے تھے، اور جب کوفے میں بیان کرتے تھے تو اس کی سند مرفوع کر دیتے تھے؛ جس کی وجہ سے اس روایت میں ضعف آگیا ہے' لان ابن المفلس ذکو فی کتابه ان بعض العلماء صنعف هذا الحدیث بان سعید بن ابی عروبة کان یحدث به بالبصرة فیجعل هذا الکلام من قول ابن عباس شم کان بالکوفة لسندہ الی النبی صلی اللّه علیه وسلّم" (مرقات ۱۳۵۷)۔

﴿مشرق والوں کی میقات﴾

﴿ مِدِيثُ بُهِ ٢٣٢﴾ وعَنه قَالَ: وَقُتَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَهْلِ الْمَشْرِقِ العَقِيْقَ. روّاهُ التَّرْمِلِيُّ وَابُودَاؤَدَ.

حل اخلت: وقت: وقت (تفعیل) وقت مقرد کرنا اور بھی جگہ کے لیے بھی آتا ہے۔ قوجهد: ان سے دوایت ہے کہ جناب ہی کریم عظافہ نے الل شرق کے لیے "العقیق "میقات مقردی ہے۔ خلاصۂ حدیث اس مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کھیتی نامی جگہ بھی ایک میقات ہے۔

وعنه: لین برحدیث عفرت این عباس رضی الله فنها سروی به المهشوق العقیق: مرادوه کلمات حدیث کی نشرت ایک جیس ایر مکرمه کی شرق جانب کے علاقوں میں رہے ہیں، اور فیق ایک جگه کا نام ہے جوذات عرق کے محاذات میں واقع ہے۔

﴿ اهل عراق کی میقات﴾

﴿ مديث مُهِر ٢٣٣٢﴾ وعَن عَامِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَتَ الْأَهْلِ العِرَاقِ ذَاتَ عِرْقٍ. رَوَاهُ آبُودَاؤَدَ وَالنَّسَائِيُّ.

حل لغات: وقت: وقت (تفعيل) وتت مقرر كرنا-

قوجمه: حضرت عائشرض الله عنها بدوايت بكر جناب في كريم الله في الل عراق كي ليه ذات عرق عميقات مقررى ب-خلاصة حديث ال مديث شريف كا خلاصه بيب كم الل عراق كي لي "ذات عرق" ميقات ب-

وقت لاهل العراق ذات عرق: لينى جناب نى كريم على فالمشرق كي ليه دوميقاتي كلمات حديث كي تشريح مراح إلى مراح بالمراح بالمر

الفنل ب، موقع ندموتواس سے آ مے بور کروات عرق می ضروراحرام باندھ لیں ؛احرام باعد مع بغیراس مقام سے آ مے ند بوحیس -

﴿كِمَانُ سِي احرامِ بِانْدَهُنَا انْصُلُ هِي﴾

﴿ مَدَى ثَهِ رَا اللّهِ مَا مَا مَلَمَةَ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ يَقُولُ: مَنْ أَهَلَ بِحَجّهِ إِذْ عُمْرَةٍ مِنَ الْمَسْجِدِ الأَلْعَى إلى الْمَسْجِدِ الحَرَامِ عُفِرَلَه مَا تَقَلّمَ مِنْ ذَلبِه ومَا تَأْخُرَ أَوْ وَجَبّتْ لَهُ الْجَنّةُ. رَوَاهُ أَبُوْ دَاؤَدَ وَابْنُ مَاجَةً.

حل اخات: اهل: اهل (افعال) لبيد كوفت آواز بلندكرنا ،المسجد : مجده كرن كام كري مساجد

قوجمه: حفرت ام سلمرض الشعنها سے روایت ہے کہ میں نے جناب نی کریم میانی کو کہتے ہوئے سنا کہ جس تخص نے حج وعرہ کے لیے مجداتصیٰ ہے مجدرام کااحرام باعد حا،اس کے اسکے اور پچھلے کناہ معاف ہوجا کیں گے، یاریفر مایا کہاس کے لیے جنت واجب ہوگی۔ فلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصيب كرآدى حم عجتنى دورى يراحرام باندها تابى الجهاب

من اهل بحجة او عموة: مرادج وعمره كياحرام باعدهناهن المسجد الاقصى: مراددر كلمات حديث كاتشرك درازمقامات بين جهال ساحرام باعدها جاك خانة كعب كين سي مين و

محسبتکی نشانیاں طاہر ہونے سکے، اور مجد اتھیٰ کی تخصیص اس کی ا فضلیت کی وجہ سے کی گئی ہے "غفولہ ما تقدم من ذنبه وماتانو : مرادمفارُ وكمارُ دونول طرح كماه بين،او وجبت له المجنة : لعنى ابتدائى مرحلي من جنت واجب بوجائى _

الغصل الشالث

﴿دوران هج سوال نه کریے﴾

﴿ صِدِيثُ نُمِرُ ٢٣٢٣﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ الْهُلُ اليِّمَنِ يَخُجُونَ فَلا يَتَزَوَّدُونَ وَيَقُولُونَ نَحْنُ الْمُتَوَكِّلُونَ فَإِذَا قَلِيمُوا مَكَّةً سَأَلُوا النَّاسَ فَانْزَلَ اللَّهُ تَعَالَىٰ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّفُوىٰ. رَوَاهُ

حل لغلت: يتزودون: تزود (تفعل) لوشه لينا ، الواد : توشه تح ازودة ـ

عوجمه: حضرت ابن عباس رضى الله عنهما الدوايت بكرابل يمن في توكرتے تنے؛ ليكن زادِ راه نبيس لاتے تنے، اور كہتے تنے بم لوك توكل كرنے والوں ميں بيں بحرجب كم يكرمه يہني لوكوں سے سوال شروع كردية ، تو الله تعالى في بير آيت نازل كى "و نذو دو ١ فان خير الزاد التقوى"_

فلاصة حديث الم حديث شريف كا خلاصه بيب كرآدى ج كوجائة وضروريات كرمامان ساتھ لے كرجائے ؟ تاكر ج كے دوران دست بوال دراز كرنے سے بچے۔

لوكول نے ليائ نبيں ہے، تووه لوك كيتے كہم متوكلين بن سے بين، فاذا قدموا مكة سألوا الناس بيكن ان كى حالت يقى كدوه

﴿عورتوں کا جماد﴾

﴿ مِدِيثُ مُرِ ٢٣٢٣﴾ وعَن عَائِشَةَ قَالَتُ: يَا رَسُولَ اللّهِ! عَلَى النِّسَاءِ جِهَادٌ؟ قَالَ: نَعَمُ! عَلَيَهِنَّ جِهَادٌ لَا قِتَالَ فِيهِ: الحَجُّ والعُمْرَةُ. رَوَاهُ ابْنَ مَاجَةً.

حل لغات:جهاد: اعلائ كلية الله كالي جنك،جهد (ك) جهداً بهت وحش كرنا_

قوجعه: حضرت عائشرض الله عنها سے روایت ہے کہ میں نے کہا: یا رسول الله! کیا عوراتوں پر جہاد ہے؟ آپ نے قربایا: بال! ان پر الياجهاد بحن من قال جيس به وه ج وعروب

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يه ب كرورت كوجها دكا تواب ج اور عمره من ل جايا كرتاب-

قلت يا رسول الله على النساء جهاد: ير معرت عائشرض الله على النساء جهاد: يرمعرت عائشرض الله على الله على اجمل ہے کانہوں نے جناب نی کریم مالانا سے رہ جما کہ کیا حورت کے لیے جہاؤیس ہے؟ قال:

نعم اعليه بجهاد لا قتال فيه: جناب ني كريم منطقة نے ان كو بتايا كه بال مورت كے ليے جباد بي كين ايسا جباد بي كراس ش قال ئیس ہے،المحیح و المصمو **ة : لینی وہ جہاد جج اورعمرہ ہے؛ لینی حج وعمرہ میں ج**ہاد کی *طرح ہی سفر کرنا ہ*ضروری سامان ڈھونا ،اال خاندادرشہر والول سے دور ہوجائے کی پریشانی ہے: اس لیے ج وعرے کو جہاد کہا کیا ہے۔

خِمج نه کرنے والوں کے لیے ومیدہ

﴿ صريتُ بِهِ ٢٣٢٥ ﴾ وعَن أبِي أَمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ لَمْ يَمْنَعْهُ مِنَ الْحَجّ حَاجَةٌ ظَاهِرَةٌ أَوْسُلُطَانًا جَائِرٌ أَو مَرَضٌ حَابِسٌ فَمَاتَ وَلَمْ يَحُجُّ فَلْيَمُتْ إِنْ شَاءَ يَهُوْدِياً وَإِنْ شَاءَ نَصْرَانِيا. رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ.

حل الفات: يمنعه: منع (ف)منعاً روكنا منع كرتاء حاجة بغرورت جمع حاجات، صلطان: بادراه جمع صلاطين، جائو: جار (ن) جوراً عليه ظلم كرنا، موض: يهاري جمع امراض ـ

موجمه: حضرت ابوا مامدرض الله عند بروايت بكرجناب ني كريم على نفرمايا كدجس مخص كوظا برى ضرورت مظالم بادشاه اور خطرناک مرض نے مجے سے نہیں روکا اور وہ رجے کیے بغیر مرکمیا ہتو اس کو اختیار ہے کہ یہودی ہوکر مرے یا تصرانی ہوکر۔

خلاصة حديث اس حديث شريف كآخلاصه بيب كه بلاكي وجهك جج ترك كرف والي يح في فوره بالاوعدب-

کمات صدیث کی تشریک (مرقات ۱۷۵۹/۵)، او مسلطان جالو: یعنی ایما بادشاه بی کریونج کریوالوں کو قید کر ایما اور میال کردیا

ہویااسباب انوادیتامو؛ توایسے مالات ش عج فرض جیں ہے،او موض حابس : یعنی ایسام ض کرآ دی سفرندکر سکے توج فرض نہیں ہے۔

﴿حاجی کی حیثیت﴾

﴿ مديثُ بُر ٢٣٣٦ ﴾ وعَن أبِي هُوَيْوَةً عَنِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ قَالَ: الحَاجُ وَالعُمَّارُ وَفَلُهُ اللَّهِ إِنَّ دَعَوْهُ اجَابَهِمْ وَإِن اسْتَغْفُرُوهُ غَفَرَلَهُمْ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ.

حل الفات: وفد: وولوك جوا كشي كي جكرما تي جمع وفود، دعوه: دعا (ن) دعوة بلانا-

قوجهه: حضرت الوجريره رضى الله عند بروايت ب كه جناب ني كريم على في فرمايا كدرج وعره كرف وال الله كمهمان میں،اگریاوگ دعا کریں تو اللہ تعالی قبول کرے گا اورا گراستغفار کریں تو اللہ تعالی ان کی مغفرت کرے گا۔

خلاصة حديث صديث شريف كاخلاصريب كما في الله كمرين حاضري دية بي اسلة بيسب الله عمان بي-

الحاج والعمار: مرادوه لوگ بین جوج ادر عمره کرنے کے لیے کم کرمہ جاتے بین موفد الله: مراد کمات حدیث کی تشریح الله عمران بین ان دعوه اجابهم: ادر چون کرمہان کی فرمائش قبول کی جاتی ہیں اس لیے اللہ

تعالی ان کی دعا کو بھی قبول کرتا ہےاور بخشش بھی کرتا ہے۔

﴿اللَّهُ كَيْ وَفُودَ ﴾

﴿ مِدِيثُ بِرِ٢٣٢٤ ﴾ وعَنه قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: وَقُدُاللّهِ لَلاَلَّةُ: العَاذِي

فيض المشكوة جلد بنجم والحَاجُ والمُعْتَمِرُ . رَوَاهُ النَّسَالِيُّ والبَيْهَةِيُّ فِي شُعَبِ الإَيْمَانِ .

حل لفات: وفد: وولوك جواكشاكي جكه جاكس بجع وفود.

قوجمه: ان سے روایت ہے کہ یس نے جناب نی کریم ملك كو كہتے ہوئے سنا كراللہ كے وفود تين بين: (۱) عازى (۲) مايى (٣)عمره كرتے والے_

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلامه بيه كرالله كي يتين وفود بير.

کلمات صدیث کی تشریح کا اللہ کے لئے کفار سے جہاد کرتے ہیں۔ کلمات صدیث کی تشریح کے کفار سے جہاد کرتے ہیں۔

﴿حاجى كى قدر و منزلت﴾

﴿ مِدِيثُ مُبِر ٢٣٢٨ ﴾ وعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : إذَا لَقِيْتَ الحَاجُ فَسَلُّمْ عَلَيْهِ وَصَافِحَةً وَمُرَّهُ أَن يُسْتَغْفِرَلَكَ قَبْلَ أَن يُدْخُلَ بَيْتَهُ فَإِنَّهُ مَغْفُورٌ لَهُ. رَواهُ أَحْمَدُ.

حل الخات: الحاج: مقامات مقدسه كي زيادت كرف واله، اسم جمع ب، صافحه: صافح (مفاعليه) معما في كرنا

قوجعه: حفرت ابن عررض الدعنما سے دوایت ہے کہ جناب نی کریم تلک نے فرمایا کہ جب حاجی سے ملوتو ، ان کوسلام کرو،معما فی كرواوران كبوكة تهار _ لياستغفاركري،اب كمردافل مونے سے پہلے؛اس ليے كدوهاس وقت تك مخفور موتے ہيں۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلامه يب كرما في كآمريان سے معاور دعا كے ليے كم

كلمات حديث كي تشريح اذا لقيت المحاج الغ: يعنى جب حاجى اورمعمر داليس آئة وان عناص طور بر ما ادران ع وعاك لي كي الله إن يدخل بيعه النع: مراديب كد كمركرستى مي لك كر خفلت ك شكار بو

نے سے پہلے پہلے۔

﴿دوران سفر مرنے والے عامی کا حکم﴾

﴿ صِلَيَكُ بُهِ ٢٣٢٩﴾ وعَنْ أَبِي هُوَيْوَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ خَوَجَ حَاجَاً أَوْ مُغْتَمِراً اوْغَازِياً ثُمَّ مَاتَ فِي طَرِيْقِه كَتَبَ اللَّهُ لَه الجُرالْقَازِيْ وَالنَّحَاجُ والمُغْتَمَرِ. رَوَاهُ البَيْهَقِيُّ فِي خُعَبِ الإيْمَانِ.

حل لفلت: خوج: خوج (ن)خووجاً لكنا طريق: راسته تع طوق ـ

قوجمه: حعرت الديريره رضى الله عندس روايت ب كدجناب في كريم علي نفرمايا كدجوه في عمره ياجهاد ك ليه تكلا إليكن رائے شاس کی موت ہوگی ، تواللہ تعالی اس کوغازی ، حالی اور عمرہ کرنے والے کا تواب عنامت کرتا ہے۔

خلاصة حديث حديث شريف كاخلاصريب كه كم كرمدة بي عيل ماى كاموت موجائ ، تواس كوج كالوابل ما تاب

الله له اجوالفازى الخ : يعنى وه جس مقعد ك لي لكا تما ، الله تعالى اس كواس كا أواب د عديما ب

ياب الإهرام والتلبية

المصل الاول

﴿ احرام میں خوشبولگانا ﴾

﴿ صريت نبر ٢٣٣ ﴾ عَن عَائِشَةَ قَالَتْ: كُنْتُ أُطَيَّبُ رَسُولَ اللَّهَ صَلَّى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لإخرَامِه قَبْلَ أَن يُحَرَّمَ وَلِحِلَّهُ قَبْلَ أَن يُطُوف بِالبَيْتِ بِطِيبِ فِيهِ مِسْكَ كَأَنَى أَنْظُرُ إلى وبِيْصِ الطَّيْبِ فِي مَفَارِقِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مُحْرِمٌ. مُتَفَقَّ عَلَيْهِ.

حل نظات: مسك: كتورى بحم مسك مانظر: نظ (ن) نظراً و يكنا ، الطيب : فوشبوج اطياب ، و بيص : و بَصَ (ض) و بصا جكنا توجمه: حضرت عائشرض الله عنها سے روایت ہے ہمیں احرام بائد سے سے پہلے جناب نی کریم عظا کواحرام کے لیے اور طال ہونے کے کیے خاند کعب کا طواف کرنے سے پہلے ایس خوشبولگاتی تھی جس میں مفک ہوتا تھا ؟ کویا کدمیں جناب نی کریم علا کی مانگ من خوشبوكي جك و كيدري مول ؛ حالال كرآب محرم تهـ

خلاصة حديث أوى احرام بيليا ورحلال مونے سے بہلے رق جمرات كے بعد خوشبول اسكا ب-

کلات حدیث کی تشری کا فیل ان یطوف بالبیت: طواف سے مراد"طواف افاضه" ب: یعنی رمی جمرات کے بعد چول که

جماع اوردواع جماع کےعلاوہ تمام چیزیں حلال موجایا کرتی ہیں ؛اس لیےاب خوشبولگانے میں بھی حرج نہیں ہے۔

﴿تلبيد وتلبيه ﴾

﴿ وَدِيثُ بُهِ ٢٣٣١﴾ وَعِنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُهِلُّ مُلَبِّداً يَقُولُ: لَبَيْكَ اللَّهُمَّ لَبَيْكَ، لَبَيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَيْكَ، إِنَّ الحَمْدَ وَالنَّعْمَةَ لَكَ وَالمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَا يَزِيْدُ عَلَىٰ هُوْلاءِ الْكَلِمَاتِ. مُتَّفَّقٌ عَلَيْهِ.

حل الفات: ملبدا: لَبُدُ (تفعيل) مي چيز كروريع سے بالول كو الى الله النعمة فعت جمع انعامات ـ توجمه : حفرت ابن عررض الله حنما سے روایت ہے کہ میں نے جناب ہی کریم عظا کوتلبیدی حالت میں بلندآ واز سے کہتے ہوئے سَا"لبيك، اللَّهم لبّيك، لبّيك لا شريكِ لك لبّيك، ان الحمد والنعمة لك والملك لا شريك لك"^{يع}َىٰ آپان کلمات ہے زیادہ نہیں کہتے تھے۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه يه كداحرام كدوران بالول كوآبس من چيكالين كالخبائش ب-

کلمات حدیث کی تشری آپ نورے تلبیہ پڑھے، ملبدا: یعنی عرم گوند، مہدی یا تعلی وغیرہ سے سرے بالوں کو اللہ اللہ میں ملاکر چیکا دے؛ تاکی بال جمر نے نہ پائے، لا یزید علی ہولاء الکلمات: یعنی جناب

نى كريم الله اكثر تلبيه من اس مديث شريف من ذكوركلمات بى كت تع اليكن بعض دفعه اس سے محدزياده محى كرديا كرتے تع "وهو محمول على الغالب على سياتي في الفصل الثاني عن ابن عمر مرفوعاً" (مرقات ١٣٨٣/٥)_

وتلبيه كب كھے

﴿ مديث مُبر ٢٣٣٣ ﴾ وعَنْد قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا آدْ عَلَ رِجْلَةً فِي الْعَرْذِ

وَاسْتُوتْ بِهِ نَاقَتُهُ قَائِمَةً آهَلُ مِنْ عِنْدِ مَسْجِدِ ذِي الْحُلَيْفَةِ. مُتَفَقَّ عَلَيْهِ.

حل لغات:رجل: ﷺ ارجل،الغوز: ركاب ﴿ عُروز ــ

قوجمه: ان سےروایت ہے کہ جناب ہی کریم ماللہ جب اپنا پیررکاب میں ڈالے اور اوٹنی آپ کو لے کر کھڑی ہوئی ، تب آپ نے معرون الحليفة كے ياس تلبيه كما۔

خلاصة حديث البعديث شريف كاخلاصه بيب كرآدى جهال ساحرام باند معدوي سيلبية شروع كرد__

وعنه: یعنی بردایت مفرت این عرض الند عنها سروایت به فی الغوز: وه آئی طقه جوزین من الند عنها سروایت به فاقته دونول طرف لنکا رہتا ہے اور سوار اس پر پاؤل رکھ کر سواری پر پڑھتا ہے"استوت به فاقته

قائمة اهل من عند ذى المحليفة" إس مديث شريف سي تويه معلوم موريا ب كه جب آب في اونث كي چيم يرجيمني كااراده كياتب آپ نے تلبیہ پڑھا، دومری روایت میں ہے کہ احرام کے لیے بنیع تقل دو رکعت نماز پڑھی، اس کے بعد لبیک کہا، ادرایک تیسری روایت میں ہے کہ جناب نی کریم علی مقام بیدار میں پنج جب آپ نے لیک کہا، اس تضادکواس طرح دور کیا جا تا ہے کہ آپ نے پہلے دورکعت نماز پڑھی اس کے فور اُبعد ملبیہ کہا، پھر جب اونٹ پرسوار ہونے لگے تب بھی آپ نے تلبیہ کہا، اور جب آپ مقام بیدار پہنچاتو پھر آپ نے وہاں بھی تکبید کہا، اور تلبید کا تکرارتو ہوتا ہی رہتا ہے وقد جمع ابن القیم فی زاد المعاد بینها بقوله اهل فی مصلاه قم ركب ناقته فاهل ايضا ثم اهل لما استقبلت به البيداء" (مرقات ١٨٣/٥)-

﴿تلبيه كا ذكرهِ

﴿ حَدِيثُ مُبِر ٢٣٣٣﴾ وِعَن أَبِى سَعِيْدِ النُّحَدْدِي قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى الْلَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَصْرُخُ بِالْحَجِّ صُرَاحاً. روَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: خرجنا: خوج (ن) خووجاً لكنا، صوخ (ن) صواخا خت فيتخار

توجمه: حفرت ابوسعید خدری رضی الله عندے روایت ہے کہ ہم لوگ جناب نی کریم عظام کے ساتھ جے کے لیے زور سے تلبیہ کہتے

خلاصة حديث الصحديث شريف كاخلاصه يهاكة دى دور سالبيه برهـ

ذكرالحج؛ لانه الاصل والمقصود الاعظم" (مرقات ١٨٤/٥)

﴿تلبيه كا حكم﴾

﴿ حديث تُمِر ٢٣٣٣﴾ وُعَن أنَّسٍ قَالَ: كُنَّتُ رَدِيْفَ أَبِي طَلْحَةَ وَإِنَّهُمْ لَيَصْرُخُونَ بِهِمَا جَمِيْعاً الْحَجُّ وَالْغُمْرَةِ. رَواهُ البُخَارِيُ.

حل لفات: ديف: سوارك يتي سوار بون والاجمع رُدَفاء، ليصوخون: صوخ (ن) صواخاً تحت يُحَار قر جمہ: حضرت انس رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ میں سواری پر حضرت ابوطلحہ کے پیچے بیٹھا ہوا تھا اور وہ لوگ جج وعمرہ دونوں کے کے **جلاتے تھے**۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كالحلامه يب كتبيه بلندآ وازب برمني من كوئى حرج نيس ب-

کنت ر دیف ابی طلحہ: یعن دعرت انس رضی اللہ عنہ واری پر معرت ابوالد کے بیچے بیٹے ہوئے کمات حدیث کی تشریح کے اللہ ایعن دعرات معلیہ کرام جج قران کی نیت کرے دور

زور _ تلتی و هدا بدل علی ان القران افضل و به قلنا؛ لانه ببعد مخالفة الصحابة رضی الله عنهم للنبی صلی الله علیه و سلم الله علیه اول الوهلة "(در قات ۱۸۳/۵).

وحج کے اقسام ک

﴿ صريت تُهِرِ ٢٣٣٥﴾ وعَنْ عَائِشَة قَالَتُ: خَرَجْنَا مَعُ رَسُولُ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ، فَمِنَّامَنْ أَهَلَّ بِعُمْرَةٍ وَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِللّهِ عَلَى اللّهِ صلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسُلّمَ اللّهِ عَلَى إِللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ بِالْحَجِّ، وَأَهَلُ رَسُولُ اللّهِ صلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ بِالْحَجِّ، فَأَمَّا مَنْ أَهَلُ بِالْحَجِّ أَوْ جَمَعَ الْحَجِّ وَالْعُمْرَةَ فَلَمْ يَعِلُوا حَتَى كَانَ يَوْمَ النَّحْدِ. مُتَّفِقٌ عَلَيْهِ.

حل الفات: فحل: حل (ض)حلاً الوجل الرام ع لكانا

قوجهد: حضرت عائشرض الله عنها سے روایت ہے کہ ہم جناب نی کریم علیہ کے ساتھ ججۃ الوداع کے سال نکلے تو ہم سے بعض فے صرف ج کا احرام فیصلے کے ساتھ ججۃ الوداع کے سال نکلے تو ہم سے بعض نے صرف ج کا احرام باندھا، تو میں سے بعض نے صرف ج کا احرام باندھا، تو جن اورجن لوگوں نے جج وعمره دونون کا احرام باندھاتھا، وہ لوگ باندھا، تو اوگ قربانی کے دن وال ہوئے۔ اورجن لوگوں نے جج وعمره دونون کا احرام باندھاتھا، وہ لوگ قربانی کے دن وال ہوئے۔

ال مدیث شریف کا خلامہ یہ ہے کہ احرام کے مختف طریقے ہیں ؛ اس لیے جس انداز ہیں احرام باندھے گا ای خلاصۂ حدیث شریف پڑل ہوجائے۔

فمنا من اهل بعمرة: لين بعض حضرات في مرف عرب كااحرام باندها؛ تا كه عره كرف ك بعد كلمات جديث كي تشريح كالرام بانده كرج كامور كلمات جديث كي تشريح كالرام بانده كرج كامور

انجام دس، اس کو ج تمتع کہا جاتا ہے، و منامن اهل بالحج: دوسری صورت بہے کہ آدی صرف ج کا حرام یا ندھے، اس کو ج افراد کہا جاتا ہے، و الله صلى الله عليه و سلّم: اس حدیث شریف ہے بہ بات واضح بوری ہے کہ جتاب نی کریم الله ہے نے ج الله الله صلى الله علیه و سلّم: اس حدیث شریف ہے بہ بات واضح بوری ہے کہ جتاب نی کریم الله نے نے ج الزاد کیا تھا؛ لیکن دوسری می کے روای و سے با چاتا ہے کہ آپ نے ج قران کیا تھا اور ج قران کی افضل ہے" باب القران لحدیث الله قات من دبی و انا بالعقیق فقال یا آل محمد اهلو بحجة و عمرة معاً "(درمنحتار: ۵۵۳/۳)۔

سوال: جبرد آغوں سے یہ بات واضح ہے کہ جناب نی کریم علقہ نے جج قران کیا تھا، تو بعض رواغوں میں ج افراد کا تذکرہ کیے

ملاہے،اس کی کیاہ جہے؟ جواب: جواب یہ ہے کہ جناب ٹی کر یم ملک نے توج قران ہی کی نیت کی تھی اور تلبیہ می آپ ای حساب پڑھتے تے بکین کمی کمی تلبیہ مرف ج یامرف عمرے کا تذکرہ کرلیا کرتے تے ہوجس راوی نے جیسا سنادیا بی قبل کردیا،ای بنیاد پردوانتوں میں قدرے اختلاف ہوگیا ہے 'قال المخطابی یحتمل ان یکون باعضهم سمعه یقول لیك بحجة و حقی علیه قوله و عمرة فحكی اله كان مفراداً، وسمعه اخر يقول: لبيك بحجة وعمرة فقال كان قاراناً، ولا تنكر الزيادات في الاخبار" (مرقات٥/٥١١)

وحج نبی پ

﴿ مديث تبرا ٣٣٣ ﴾ وعَنِ ابْنِ عُمَرَ لَمَتَّعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَجَّةِ الوَدَاعِ بِالعُمْرَةِ إلىٰ الحَجِّ بَدَّا فَاهَلَّ بِالْعُمْرَةِ ثُمَّ اهَلَّ بِالْحَجِّ. مُتَّفَقَ عَلَيْهِ.

حل لفات: المتع: المتع (تفعل) جميمة كرنا،بدا:بدا (ن) بدو أشروع كرنا-

قوجمه: حضرت ابن عررض الدعنمات دوايت ب كه جناب ني كريم علية في حجة الوداع شعره كوج سه الكرتمتع كيا؛ باي طوركه عرے کے احرام سے شروع کیا، گرآپ نے فی کا احرام باندھا۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلامديب كدمج متع كيا جاسكا بـ

كلمات مديث كي تشريح المعتمع رسول الله صلى الله عليه وسلم الخ: الروايت من جوافظ تمتع باس سالغوى تتع مرادب، ورندتو حقيقتايدج قرال ب"من روى المتمتع اداد المتمتع الملغوى" (مرقات ٥٥/٥)

الفصل الشائب

﴿ اهرام کے کیڑیے ﴾

﴿ مديث نبر ٢٣٣٧ ﴾ عَن زَيْدِ بْنِ قَابِتِ أَنَّه رَأَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَجَرُّدَ لِإِهْلَالِهِ وَاغْتَسَلَ. رَوَاهُ التَّرْمِلِيِّ وَالدَّارِمِيُّ.

حل لفات: تجود: جود (س) جوداً، جوّد (تفعیل) کیڑے اتار نا۔

قوجمه: حضرت زيد بن ثابت رضى الله عنه سے روايت ب كه انہول نے جناب نبى كريم علي كود يكها كه آپ احرام كے ليے نظم موے اورانبول نے احرام باندھا۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه بيب كهاحرام كے ليعسل كرنے كے بعد بغير سلے ہوئے كيڑے ہے۔

کلمات حدیث کی تشریکی است مدیث کی تشریخ این بریم علی نے سلے ہوئے کیڑے اتارے بسل فرمایا، است حدیث کی تشریکی است مدیث کی تشریخ این بغیر سلے ہوئے کیڑے پہنے "ای عن المخیط ولیس از ارأو رداء" (مرقات ۱۸۷/۵)

واغتسل: یعن احرام کے لیے سل کرناست ہے"ای للاحرام وهو من سنته علیه السلام" (مرقات ۱۸۱۵)۔

وتلبيد كاتذكره

﴿ صَرَيَتُ بُمِ ٢٣٣٨ ﴾ وعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَبَّدَ رَأْسَهُ بِالغِسْلِ. رَواهُ أَبُودَاؤَدَ. حل لغات:لبد:لبد(ض)لبداً شعره ليس دار چزست اين بالول كوچيكانا

قوجهد: حفرت ابن عمرض الله عنهاے روایت ہے کہ جناب بی کریم ماللہ نے سے این سرے بالوں کو جمایا۔ **خلاصة حديث** احرام كونت محرم ليس دار چيز سے اپنے سركے بالوں كو جمالے؛ تاكه بال ثوث كر كرنے سے تحفوظ ہوجائے۔

کلمات حدیث کی تشریح کید رأسه: مرادیه به که حالت احرام مین سرک بالون کوٹو شنے سے تحفوظ کرنے کیلئے ، گوندوغیرہ لگاکر جمالینے کی اجازت ہے، ہالعسل: ہالکسر مرادوہ لیس دار چیز ہیں جن سے سرکی تلبید کی جاسکے۔

ختلیمه میس آواز بلند کرنای

﴿ وديث بُر ٢٣٣٩ ﴾ وعَن حَلَّادِ بُنِ السَّائِبِ عَن أَبِيْهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَانِي جِيْرِيْلُ فَامَرَنِيْ انْ آمُرَ أَصْحَابِيْ أَنْ يُرْفَعُوا أَصْوَاتَهُمْ بِالإَهْلَالِ أَوِ التَّلْبِيَةِ.رَوَاهُ مَالِكٌ وَالتَّرْمِذِيُّ وَٱبُودَاوَدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِمِيُّ.

معل دفات: يرفعوا: رفع (ف) وفعا باندكرنا، اصوات: جمع ب صوت كيمعن آواز_

ترجمہ: حصرت خلاد بن سائب رضی اللہ عند اپنے والدمحتر م سے روایت کرتے ہیں کہ جناب نی کریم علی نے فرمایا کہ جریل نے میرے باس آ کرکہا کہ میں اپنے اصحاب کو عکم دون کہ دہ لوگ لبسیہ میں آ واز بلند کریں۔

قُلا صد حديث أس مديث شريف كاخلاصهيب كتلبيد ورس يرها جائد

کمات مدیث کی تشری خلاد بن المسائب عن ابیه: خلاد بن المسائب عن ابیه المن المسائب عن ابیه المن المسائب بن المسائب عن ابیه: خلاد بن المسائب عن ابیه: خلاد بن المسائب عن ابیه: خلاد بن المسائب بن الم

مراد حم استجالي ب"اى اهو استحباب" (مرقات ١٨٦/٥)-

ذلبیک کھنے والے کی فضیلت ہ

﴿ صريتُ مُبر ٣٣٣﴾ وعَن سَهْلِ بِنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَامِنْ مُسْلِمٍ يُلَبَّى إِلَّا لَهَىٰ مَن ۚ عَنْ يَمِيْنِهِ وشِمَالِهِ مِنْ حَجَرٍ أَوْ شَجَرٍ أَوْ مَدَرٍ حَتَىٰ تَنْقَطِعَ الأَرْضُ مِنْ هَهُنَاوِهُهُنَا:رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةً.

حل نفات: يمينه: بركت وقوت جمع أيّمان، شماله: بايال جمع شمائل، حجر: بقرجع احجار، المدر: مثى كالرحيلا-قوجمه: حضرت بهل بن معدرض الله عند بروايت م كه جناب ني كريم عَلَيْ في مايا كه جب كوئي مسلمان لبيك كهتام، تواس كواكي اوربائين زين ك ترى حصة ك؛ خواه بقر مول كدونت يامنى ك دُهيل مب لبيك كبت بي -

خلاصة حديث إس حديث شريف كاخلاصه يه كم تلبيد كمني والى تقليدكرت موع دنيا كى برچيز تلبيد كهنا شروع كردي ب-

ما من مسلم یلبی الا لبی الخ: اس مدیث شریف کی مرادید ب کرتلبید کینوالی موافقت می دنیا کی کمات حدیث کی الشرک مروفقت می دنیا کی کمات حدیث کی الشرک مروفات ۱۸۵/۵ مروفات ۱۸۸/۵ مروفات ۱۸۵/۵ مروفات ۱۸۵ مروفات ۱۸۵/۵ مروفات ۱۸۵ مروفات ۱۸۵/۵ مروفات ۱۸۵/۵ مروفات ۱۸۵/۵ مروفات ۱۸۵/۵ مروفات ۱۸۵ مروفات ۱۸۵/۵ مروفات ۱۸

خادرام کے لیے دورکعت

﴿ حديث بْمِر ٢٣٣١﴾ وعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْكُعُ بِذِى الْحُلَيْفَةِ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ إِذَا اسْتَوَتْ بِهِ النَّاقَةُ قَائِمَةً عِنْدَ مُسْجِدِ ذِي الْحُلَيْفَةِ أَهَلَّ بِهِوْلاَءِ الْكَلِمَاتِ وَيَقُولُ :لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَيْكَ لَبَيْكَ وَسَعْدَ يْكَ وَالْحَيْرُ فِي يَدَيْكَ لَيُنْكَ وَالرُّعْبَاءُ إِلَيْكَ وَالعَمَلُ. مُتفَقّ عَلَيْه وَلَفَظُه لِمُسْلِم.

حل نفات: يركع: ركع (ف)ركوعاً جَمَانا سعد : خُوْلَ بَحْق بِهِع اسعد ، الرغباء : رغب (س) رغباً ورغباء عاج ي ظاهري كرنا قوجعه: معرت ابن عمر منى الله عنها سے روایت ب كرجناب ني كريم علي ذوالحليد ميں دوركعت نماز يرص تے اور جب آپ كى اؤتنى مجدزى الحليمة كے ياس آپ كولے كر كورى موتى ، تو آپ ان كلمات كراتھ لبيك كتے "لبيك اللهم لبيك لبيك وسعديك والخير في يديك لبيك والرغباء اليك والعمل"_ خلاصة حديث أس مديث شريف كاخلامديد بكراحرام كونت دوركعت فماز برهناسنت ب-

یو کع بدی الحلیفة رکعتین: مرادنماز پڑھناہ؛ بینی احرام کے وقت دورکعت نماز پڑھناسنت کمات حدیث کی تشریح کے اور جیسے بی نماز نتم ہوسرے کیڑا ہٹا دے اور نورا تلبیہ پڑھے ،اهل بھؤلاء الکلمات: یعنی

جناب عبكريم متلك بلندآواز عليد كت "اى رفع صوله" (مرقات ١٨٤/٥)، يقول لبيك الني يهال تو تلبيان الفاظش ب اورمشہور جوتلبیہ ہے اس کے الفاظ دوسرے ہیں ؛اس کی دجہ یہ ہے کہ اصل تلبیہ تو وہی ہے جومشہور ہے ؛ اس لیے کہ وہ جتاب نی کریم الفاظ ملتے ہیں،جس ش کوئی قباحت نہیں ہے، (مرقات ۱۸۷/۵)۔

<u> دتاییه کے بعد دعای</u>

﴿ مديث بْم ٢٣٣٢ ﴾ وعَن عُمَارَةَ بْنِ خُزَيْمة بْنِ ثَابِتٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّه كَانَ إِذَا فَرَغَ مِنْ تَلْبِيَتِه سَأَلَ اللَّهَ رِضُوانَهُ والجنَّةَ واسْتَعْفَاهُ بِرَحَمَتِه مِنَ النَّارِ. روَاهُ الشَّافِعِيُّ.

حل لفات: فوغ:فوغ (ف،ك)فواغاً كام عالى بوناء المجنة: باغ جمّ جنات

توجمه: حضرت عماره بن فزيمه بن ثابت رضى الله عنهائ والدمحترم سدوايت كرت بين كه جناب ني كريم عظي جب تلبيه س فارغ ہوتے تو اللہ تعالی سے اس کی رضا مندی ، جنت اور اس کی رحمت کے ذریعے دوز خ سے معافی جا بچے۔

خلاصة حديث أحديث أحديث الفاصريب كآدى جب احرام كى نمازے فارغ بوكر تلبيد برا هي واس كے بعد دعام مى كرے

کلمات حدیث کی تشریح اسال الله رضوانه: مراو دنیا اور عقبی می الله تعالی کی رضامندی مراو ہے، و الجنة: مراد وہ جنت کلمات حدیث کی تشریح کے اللہ تعالی نے وعدہ کیا ہے؛ یعن جب مرضی مولی ال گئی تو اب جنت کا بھی سوال کر لیا

گیا، و استعفاه: مراداستغفار ہے؛ اس لیے کہ بعض روایتوں میں لفظ استغفار کی صراحت مل جاتی ہے، ہو حصته: مراد محض الله تعالی کی رحمت ب"ای بسبب رحمته تعالیٰ لا بکسب نفسه" (مرقات ۱۸۸/۵)، من الناد: مرادعداب دوز شهر

الفصل الثالث

<u> جحجة الوداع كے موقع بر آپ كا اعلان ي</u>

﴿ مديث بْبِر٣٣٣﴾ وَعَنْ جَابِرِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا أَرَادَ الْحَجَّ اَذَنَ فِي النَّاسِ فَاجْتَمِعُوا فَلَمَّا أَتَى الْبَيْدَاءَ أَحْرَمَ. رَوَاهُ الْبُحَارِيّ.

حل لفات: اداد: راد(ن) روداً اراده كرناء الناس: آدى جمع اناس .

قرجمه: حضرت جابروض الله عند بروايت م كه جناب ني كريم الله في في كاراده فرمايا تو آپ في لوگون مي اعلان كيا: چنال چہلوگ جمع ہو گئے ، جب آپ بیدار پنچیقو آپ نے احرام باندھا۔

خلاصة حديث أبين في على اعلان كراياتا كدلوك مجهج كرتا بواد كيوكر في كرن كاطريقة كيديس

کلمات حدیث کی تشریح کا علان فرمادی الله علیه وسلم المحج: جناب بی کریم عظی کوید مدایت می کدآپ لوگوں میں اللہ علیہ وسلم المحج: جناب بی کریم علی نے تج کا ارادہ فرمایا تو آپ نے لوگوں میں

وكا اعلان كراديا" لقوله تعالى: واذن في الناس بالحج الأية" (مرقات ١٨٩/٥)، فاجتمعوا: لعن جتاب ي كريم علي كاعلان س كر حضرات صحاب كرام مدينه منوره على جمع موسكة وفلها اللي البيداء: بدؤ والحليفة عن اس تخصوص جكه كانام ب، جهال جناب في كريم غے نے اور ام با تدحاتھا۔

<u> دمشرکوں کا تلبیه ب</u>ہ

﴿ مديث بْرِ٣٣٣٧ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسِ قَالَ: كَانَ الْمُشْرِكُونَ يَقُولُونَ لَبُيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ فَيَقُولُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيْلَكُمْ قَدٍ قَدٍ إِلَّا شَرِيْكًا هُوَ لَكَ تَمْلِكُهُ وَمَا مَلَكَ يَقُولُونَ حَلَّا وَهُمْ يَطُوفُونَ

حل لغات: المشركون: يمع بمشوك كي معنى فداك ماته شريك كرف والا ، البيت: كمريح بيوت. توجهه: حعرت ابن عباس رضى الدعنها سے روایت ب كمشركين تلبيديس يد البيك لا شويك لك" كت سے بتو جناب ني كريم يكاف فريات ،افسوس تمير إبس كربس كر بمرمشركيين بيكمات "الاشريكا هو لك تملكه وما ملك" كيت اورطواف كرت -

اں صدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ شرکین نے چوں کہ عبادتوں میں ملاوٹ کرڈ الی تھی ؛ جس کا نتیجہ بیتھا کہ تلبیہ خلاصة حديث المجى محفوظ ندتها، توجهال تك تلبيد فيك تقامشركين جب اس كو پڑھتے توجناب ني كريم عظف ان كود بيں رو كنے ك

كُوْسُ كَرِيِّةِ الْمُروولُوكُ مانتے نبیں اور تلبیہ میں بھی بعض شركيه کلمات پڑھ وُ التے۔

كُنْ المشركون يقولون لبيك لا شريك لك: لين في كردوران مشركين بحى تلبيه يزهة تخير الوجب وه الوكس الا شريك لك الك كانتك وكني توجناب الى كريم منطقة ان الوكول كوروكة كربس

کرو اور میں تک یردمو،چوں کہ تلبیہ کی اصل میں ہے،آ کے جوتم لوگ پڑھتے ہو،وہ غلط ہے، یقو لون ھذا وھم یطوفون بالبيت: يعنى شركين ماني نبيس" الاشريكا هو لك تملكه وماملك" شركيكمات يزعة اورطواف كرتـ-

دياب قصة حجة الهداعة الفصل الاول

<u> دحمة الوداع كي تفصيل ۽</u>

﴿ حديث بْمِر ٢٣٣٥﴾ عَنْ جَابِرٍ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَكَتَ بِالْعَدِيْنَةِ تِسْعَ سِيْنَ لَمْ يَحُجَّ، ثُمَّ آذًَنَ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ فِي الْعَاشِرَةِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَاجَّ، فَقَلِمَ الْمَدِيْنَةَ بَشُرٌ كَثِيْرٌ فَخَرَجْنَا مَعَةً حَتَّى إِذَا أَتَيْنَا ذَاالْحُلَيْفةِ، فَوَلَدَتْ أَسْمَاءُ بِنْتُ عُمَيْسِ مُحَمَّدَ بْنَ أَبِي بَكْرٍ، فَأَرْسَلَتْ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، كَيْفَ أَصْنَعُ؟فَالَ: اغْتِسَلِى وَّاسْتَثْفِرِى بِغُوْبِ وَاَخُرِمِيْ، فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ، ثُمَّ رَكِبَ الْقَصْوَاءَ حَتَّى إِذًا اسْتَوَثُّ بِهِ نَاقَتُهُ عَلَى الْبَيْدَاءِ، آهَلُ بِالتَّوْجِيْدِ: لَبَيْكَ اللَّهُمَّ لَبَيْكَ لَبَيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنَّغْمَةَ لُّكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ، قَالَ جَابِرٌ: لَسْنَا نَثْوِي إِلَّا الْحَجُّ لَسْنَا نَعْرِفُ الْعُمْرَةَ حَتَّى إِذَا ٱتَيْنَا الْبَيْتَ مَعَهُ اسْتَلَمَ الرُّكُنَ، فَطَافَ سَبْعاً، فَرَمَلَ ثَلَاثاً وَمَشْىَ ٱرْبَعاً، ثُمَّ تَقَدَّمَ إلى مَقام إبْرَاهِيْمَ، فَقَرَأَ وَاتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيْمَ مُصَلِّي فَصَلَّى رَكَعَتَيْنِ فَجَعَلَ الْمَقَامَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْبَيْتِ، وَفِي دِوَايَةٍ: أَنَّهُ قَرَأً فِي الرَّكَعَتَيْنِ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ وَقُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُوْنَ، ثُمَّ رَجَعَ إِلَى الرُّكْنِ، فَاسْتَلَمَهُ، ثُمَّ خَرَجَ مِنَ الْبَابِ إِلَى الصَّفَاء

فَلَمَّا دَنَا مِنَ الصَّفَاء قَرَأً: إِنَّ الصُّفَا وَالْمَرُوةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ، أَبْدَأُ بِمَا بَدَأُ اللَّهُ بِهِ فَبَدَأُ بِالصَّفَاء فَرَقِيَ عَلَيْهِ حَتَّى رَأَى الْبَيْتَ، فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ، فَوَحَّدَ اللَّهَ وَكَبَّرَهُ، وَقَالَ: لَا إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لَا إِلَّهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ اَنْجَزَ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبَّدَهُ وَهَزَمَ الْآخْزَابَ وَحْدَهُ، ثُمَّ دَعَا بَيْنَ ذَلِكَ، قَالَ: مِثْلَ هَلَاا ثَلَاثُ مَرَّاتٍ، ثُمَّ نَزَلَ وَمَشَى إلى الْمَرْوَةِ حَتَّى انْصَبَّتْ قَدَمَاهُ فِي بَطْنِ الْوَادِي، ثُمُّ سَعَى حَتَّى إِذَا صَعِدَ تَا مَشَى حَتَّى أَتَى الْمَرْوَةَ، فَفَعَلَ عَلَى الْمَرْوَةِ كَمَا فَعَلَ عَلَى الصَّفَا خَتْى إِذَا كَانَ آخِرُ طَوَافٍ عَلَى الْمَرْوَةِ نَادِى وَهُوَ عَلَى الْمَرْوَةِ وَالنَّاسُ تَحْتَهُ، فَقَالَ: لَوْ أَنِّي اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَذْبَرْتُ لَمْ اَسُقِ الْهَذَى وَجَعَلْتُهَا عُمْرَةً فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ لَيْسَ مَعَهُ هَدْىٌ فَلْيَجِلُّ وَلْيَجْعَلَهَا عُمْرَةً، فَقَامَ سُرَاقَةُ بْنِ مَالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ، فَقَالَ: يَارَسُولَ اللَّهِ! الِعَامِنَا هَلَاا أَمْ لِآبَدِ؟ فَشَبَّكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَصَابِعَهُ وَاحِدَةً فِي الْآخُراي، وَقَالَ: دَحَلَتِ الْعُمْرَةُ فِيْ الْحَجِّ مَوَّتَيْنِ لَا بَلْ لِآبَدٍ ابَدٍ وَقَدِمَ عَلِيٌّ مِنَ الْيَمَنِ بِبَدْنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لَهُ:مَاذًا قُلْتَ حِيْنَ فَرَضَّتَ الْحَجِّ؟ قَالَ: قُلْتُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أُهِلَّ بِمَا اَهَلَّ بِهِ رَسُولُكَ، قَالَ: فَإِنَّ مَعِيَ الْهَدْيَ فَلَا تَجِلُّ، قَالَ: فَكَانَ جَمَاعَةُ الْهَدْيِ الَّذِي قَدِمُ بِهِ عَلِيٌّ مِنَ الْيَمَنِ وَالَّذِي آتِي بِهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِائَةً، قَالَ: فَحَلَّ النَّاسُ كُلُّهُمْ وَقَصَّرُوا إِلَّا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَنْ كَانَ مَعَهُ هَدْي، فَلَمَّا كَانَ يَوْمَ التَّرْوِيْةِ تَوَجَّهُوا إِلَى مِنِي، فَأَهَلُوا بِالْحَجِّ وَرَكِبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَصَلَّى بِهَا الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ وَالْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ وَالْفَجَرَ، ثُمَّ مَكَّتَ قَلِيلًا حَتَّى طَلَعَتِ الشَّمْسُ وَامَرَ بِقُبَّةٍ مِنْ شَعَرٍ تُصْرَبُ لَهُ بِنَمِرَةً، فَسَارَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَاتَشُكُّ قُرَيْشٌ إِلَّا انَّهُ وَاقِفْ عِنْدَ الْمَشْعَرُ الْحَرَامِ كُمَّا كَانَتْ قُرَيْشٌ تَصْنَعُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، فَأَجَازَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أَتَى عَرَفَةً، فَوَجَدَ الْقُبَّةَ قَدْ ضُرِبَتْ لَهُ بِنَمِرَةً، فَنَزَلَ بِهَا حَتَّى إِذَا زِأَغَتِ الشَّمْسُ اَمَرَ بِالْقَصْوَاءِ فَرُحِلَتْ لَهُ، فَاتَىٰ بَطْنَ الْوَادِي، فَخَطَبُ النَّاسَ، وَفَالَ: إنَّ دِمَانَكُمْ وَامُوا لَكُمْ حَرَامٌ عَلَيْكُمْ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا فِي شَهْرِكُمْ هَٰذَا فِيْ بَلَدِكُمْ هَٰذَا أَلَا كُلُّ شَيْءٍ مِنْ أَمْرِ الْجَاهِلِيَّةِ تَحْتَ قَلَمَيَّ مَوْضُوعٌ وَدِمَاءُ الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوْعَةٌ وَإِنَّ أَوَّلَ دَمِ أَضَعُ مِنْ دِمَالِنَا دَمُ بْنِ رَبِيْعَةً بْنِ الْحَارِثِ وَكَانَ مُسْتَرْضَعاً فِي بَنِي سَعْدٍ فَقَتَلَهُ هُذَيْلٌ ورَبَاالْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوعٌ وَأَوَّلُ رِباً أَضَعُ مِنْ رِبَانارَبا عَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، فَإِنَّهُ مَوْضُوعٌ كُلُّهُ، فَاتَّقُوْ اللَّهَ فِي النَّسَاءِ، فَإِنَّكُمْ اَحَلْتُمُوْهُنَّ بِاَمَّانِ اللَّهِ وَاسْتَحْلَلْتُمْ فُرُوْجَهُنَّ بِكَلِمَةِ اللَّهِ وَلَكُمْ عَلَيْهِنَّ اَنْ لَا يُوْطِيْنَ فُرُشَكُمْ أَحَداً تَكُرُهُوْنَهُ فَاِنْ فَعَلْنَ ذَلِكَ فَاضْرِبُوْهُنَّ ضَوْباً غَيْرَ مُبَرَّحٍ وَلَهُنَّ عَلَيْكُمْ رِزْقُهُنَّ وُ كِسُوتَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَقَدْ تَرَكَّتُ فِيكُمْ مَالَنْ تَضِلُوا بَغْدَهُ إِنَّ اغْتَصَمْتُمْ بِهِ كِئَّابُ اللَّهِ وَٱنْتُمْ تُسْلَلُونَ عَنَّىٰ، فَمَا ٱنْتُمْ قَاتِلُوْنَ؟ قَالُوْا: نَشْهَدُ ٱنَّكَ قَدْ بَلَغْتَ وَٱذَّيْتَ وَنَصَحْتَ، فَقَالَ بِإصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ يَرْفَعُهَا إِلَى السَّمَاءِ وَيَنْكُتُهَا إِلَى النَّاسِ اَللَّهُمَّ اَشْهَدْ اَللَّهُمَّ اَشْهَدْ ثَلَاتَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ اَذُنَ بِلاَلْ، ثُمَّ اقَامَ، فَصَلَّى الظُّهْرَ، ثُمَّ أَقَامَ، فَصَلَّى الْعَصْرَ وَلَمْ يُصَلِّ بَيْنَهُمَا شَيْئًا، ثُمَّ رَكِبَ حَتَّى أَنَى الْمَوْقِفَ، فَجَعَلَ بَطْنَ نَاقَتِه الْقَصْوَاءِ إِلَى الصَّخَرَاتِ وَجَعَلَ حَبْلَ الْمُشَاةِ بَيْنَ يَدَيْهِ وَاسْتَقَبَلَ الْقِبْلَةَ، فَلَمْ يَزَلَ وَاقِفاً حَتَّى غَرَبَتِ الشُّمْسُ وَذَهَبَتِ الصُّفْرَةُ قَلِيُّلا حَنَّى غَابَ الْقُرْصُ وَارْدَفَ أَسَامَةَ وَدَفَعَ حَتَّى أَتَى المُزْدَلِفَة، فَصَلَّى بِهَا الْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ بِاَذَانِ وَاحِدُو إِلَّامَتُيْنِ وَلَمْ يُسَبِّحُ بَيْنَهُمَا شَيْنًا، ثُمَّ اضْطَجَعَ حَتَى طَلَعَ الْفَجْرَ، فَصَلَّى الْفَجْرَ حِيْنَ تَبَيَّنَ لَهُ الصَّبِحُ بِاَذَانِ وَإِقَامَةٍ، ثُمَّ رَكِبَ الْقَصْوَاءَ حَتَّى أَتَى الْمَشْعَرَ الْحَرَامَ، فَاسْتَقْبَلَ

القِبْلَةَ، فَدَعَاهُ وَكَبُّرَهُ وَهَلَلَهُ وَوَحُدَهُ، فَلَمْ يَزُلْ وَاقِفاً حَتَى اسْفَرَ جِدًّا، فَدَفَعَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ وَارْدَفَ الْفَصْلَ بْنَ عَبَّاسٍ حَتَى آتَى بَطْنَ مُحَسِّرٍ، فَحَرُّقَ قَلِيْلًا، ثُمَّ سَلَكَ الطَّرِيْقَ الْوُسْطَى الَّتِيْ تَخْرُجُ عَلَى الْجَمْرَةِ الْتَيْ عِنْدُ السَّجَرَةِ، فَرَمَاهَا بِسَبْعِ حَصَيَاتٍ يُكَبُّرُ مَعَ كُلَّ حَصَاةٍ مِنْهَا مِثْلَ حَصَى الْخَدْفِ رَمِّى مِنْ بَطْنِ الْوَادِى، ثُمَّ انْصَرَفَ إلى الْمَنْحَوِ، فَنَحَرَقَلَالًا وَسِتَيْنَ بَدَنَة بِيدِهِ، فَمُ اعْصَرَفَ إلى الْمَنْحَوِ، فَنَحَرَقَالَالًا وَسِتَيْنَ بَدَنَة بِيدِهِ، ثُمَّ اعْطَى عَلِيًّا، فَنَحَومَا غَبَرَ وَاشْرَكَهُ فِى هَذْيِهِ، ثُمَّ امْرَ مِنْ كُلُّ بَدَنَةٍ بِضَعَةٍ، فَجَعَلَتْ فِى قِدْرٍ، فَطُبِحَتْ فَلَيْعَ مِنْ بَطْنِ الْوَادِى، ثُمَّ امْرَ مِنْ كُلُّ بَدَنَةٍ بِضَعَةٍ، فَجَعَلَتْ فِى قِدْرٍ، فَطُبِحَتْ فَلَا عَلَى عَلِيًّا فَنَحُومَا غَبَرَ وَاشْرَكَهُ فِى هَذْيِهِ، ثُمَّ امْرَ مِنْ كُلُّ بَدَنَةٍ بِضَعَةٍ، فَجَعَلَتْ فِى قِدْرٍ، فَطُبِحَتْ فَلَيْعَ مَنْ لَاللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ، فَافَاضَ إلى الْبَيْتِ، فَلَكُمْ مَنْ لَحْمِهَا وَشَرِبًا مِنْ مَوقِهَا ثُمَّ رَكِبَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ، فَافَاضَ إلى الْبَيْتِ، فَصَلَى بِمَكُةَ الطُّهُورَ، فَأَتَى عَلَى بَيْعَ عَبْدِ الْمُطُلِبِ يَسْقُونَ عَلَى زَمْزَمَ، فَقَالَ: الْإِيْعُوا بَنِى عَبْدِ الْمُطُلِبِ، فَلَولُوهُ وَلُوا فَشَرِبَ مِنْهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل الفات: بشو: أنسان مذكروم و نث ، واحد جن سب كے ليمستعمل به ، استفوى: استفوى (استفعال) كيرُ كالنكوث كنا ، الفصواء : بالفتح والضم دونول طرح سے پڑھا جاتا ہے ، رمل: رمل (ن) رملًا كندموں كو بلاتے ہوئے چانا ، رقى: رقى: رقى (س) رقية بها رُح حتا ، انصب (انعال عليه) الرنا ، مكث : مكث (ن) مكثا ركنا ، واغت : واغ (ض) ويعا الشمس سورج كا وُحلنا ، بوح : بوح (س) بوحاً نثان كا فا بر بونا ۔

توجعه: حضرت جابرض الندعت بي دوايت بكر جناب بي كريم سطفه مديد منوره مين نوسال رب؛ كين آپ نے كوئى جنين كيا ، پهر واجه بي كرا الله على خوابش اور آرزو ميتى كداس مبارك سفر مين آپ كے ساتھ ره كرآپ كى پورى پورى كرے اور آپ كنش قدم بر بطي ، خوابش اور آرزو ميتى كداس مبارك سفر مين آپ كے ساتھ ره كرآپ كى پورى پورى كرے اور آپ كنش قدم بر بطي ، (حضرت جابر كمتے بين كہ پورو الله على اور الله عليه أيا ورسول الله عليه كى قيادت ميں) يہ پورا قافله مدينت روانه بوكر ذو المحليم آيا كواس دن يہيں قيام كيا ، يہاں پرو في كرايك واقعد پين آيا كرا سار بنت عميس (جوابو برصد بين كى بيوى تعيس ، اوروه بحى اس قافله مين عمل كيا تحسل كروں؟ آپ نے فر بايا كدائى حالت ميں الى برك ما الله عليه نے دو باخت كرايا كدائى حالت ميں عمل كيا كروں؟ آپ نے فر بايا كدائى حالت ميں احرام كے لئے مسل كريس ، اور جس طرح عور تين الى صالت ميں كيڑ ہے كانگوٹ استعال كريں ، اوراحرام با عرص لين ، پھررسول الله عليه نے ذوالحليم كى مجد ميں آخرى نماز (خلم كى) پڑھى ، پھر آپ بائى ناقة قصواء پرسوار ہوئے ؛ يہاں تك كدآپ كى او ثنى آپ كو لے كر بيداء كے ميدان ميں كمڑى ہوئى تو آپ نے بلند آواز سے آپ بائى ناقة قصواء پرسوار ہوئے ؛ يہاں تك كدآپ كى او ثنى آپ كو لے كر بيداء كے ميدان ميں كمڑى ہوئى تو آپ نيك المك لا شريك لك المنات كلائى المك كورى الملك لا شريك لك الك المنات كے بالمات كے المال كالمك لا شريك لك المنات كے المحمد و النعمة لك و الملك لا شريك لك المك "

اسود کی طرف واپس آئے اور پھراس کا استلام کیا، پھرایک دروازہ ہے (سعی کیے) مفایہاڑی کی طرف چلے گئے،اوراس کے بالکل قریب بھی کرآپ مطاقہ نے یہ آیت تلاوت فرمائی،ان الصفاو المعروۃ من شعائو الله" (بلا شبصفااورمروہ الله کشعائر میں ہ ہیں جن کے درمیان سمی کا تھم ہے) اس کے بعد آپ مطاف نے فرمایا:''میں اس صفاے سی شروع کرتا ہوں جس کا ذکر اللہ تعالی نے اس آیت میں پہلے کیا ہے''۔

چناں چرآپ ﷺ پہلے مفارِآئے اور اس مدتک اس کی بلندی پر چ سے کہ بیت اللہ آپ ﷺ کی نظر کے سامنے آمیاء اس وقت آپ ملاف تاللہ کی طرف رخ کرے کمڑے ہو گئے اور اللہ کی تو حید اور تجمیر وتمید میں مصروف ہو گئے ، آپ علی نے کہا" لا الله الا الله وحده لا شريك له،له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير،لا اله الا الله وحده انجزو عده ونصر عبدہ وهزم الاحزاب وحدہ" (اللہ كے سواكوئى عبادت اور برستش كے لائق نبيس ،وبى تنها معبود وما لك بے كوئى اس كاشريك ساجھی نہیں،ساری کا نتات پرای کی فرماں روائی ہے،اور حمد وستائش اس کا حق ہے، وہ ہر چیز پر قادر ہے، وہی تنہا ما لک ومعبود ہے،اس نے (کمہ پراور سارے عرب پرافتد ار بخشنے اور اپنے دین کوسر بلند کرنے کا) اپنا وعدہ پورا فرمادیا، اپنے بندے کی اس نے بھر پور مدد فرمائی ،اور كفروشرك كے تشكرول كواس نے تنها اى نے تشكست كى) آپ علق نے تين دفعه يد كلمات فرمائے اوران كے درميان ميں دعا ما تلی ،اس کے بعد آپ عظف اتر کے مرده کی طرف چلے ؛ کہاں تک کہ جب آپ عظف کے قدم وادی کے نشیب میں پنچ تو آپ عظفے کم دوڑ کے چلے، پھر جب آپ نشیب سے ادیر آ گئے تو پھر اپنی عام رفتار کے مطابق طلے؛ یہاں تک کہ مروہ بہاڑی برآ گئے اور یہاں آپ تلك نے بالك وہى كيا جومفا پركيا تھا؛ يهال تك كه جب آپ الله آخرى جيرابوراكر كے مروه پر بنجے، آپ الله نے اپنے رفقار محلية كرام كومخاطب كرك فرمايا: أكريميلے سے ميرے خيال ميں وہ بات آجاتي جو بعد ميں آئي توميں قرباني كے جانور مديند سے ساتھ ندلا تا اور اس طواف وسی کوجو میں نے کیا ہے محرہ بنا دیتا ہتو اب میں تم لوگوں سے کہنا ہوں کہتم میں سے جن کے ساتھ قربانی کے جانورنہیں آئے ہیں دہ اپنااحرام فتم کردیں اور اب تک جوطواف وسعی انہوں نے کی اس کوعمرہ بنادیں، آپ کابدار شادین کرسراقہ بن مالک نے عرض کیا: یارسول الله! کیائی میم کداشرج (ج کے مہینوں) میں عمرہ کیا جائے خاص اس سال کے لیے ہے یا بمیشہ کے لیے یہی محم ہے؟ آپ نے اين ايك العمرة في العليال دوسر عاته كي الليول من وال كرفر ما يك "دخلت العمرة في الحج لا بل لا بدابد" (عمره ج من دافل ہوگیا، خاص ای سال کے لیے بیں بلکہ ہمیشہ بیشہ کے لیے)۔

 آنخفرت ملی الله علیه وسلم کے ساتھ آئے تھے اور ۳۷ رفعرت علی بین سے لائے تھے)، حفرت جابات نے بیان کیا کہ جناب نی کریم ملکافٹ کی ہدایت کے مطابق تمام ان محابہ نے احرام فتم کر دیا جوقر بانی کے جانور ساتھ نہیں لائے تھے اور صفا مروہ کی سعی سے فارغ ہونے کے بعدا ہے سروں کے بال ترشوا کے وہ سب حلال ہو مجے اور جوطواف وسعی انہوں نے کتھی اس کو مستقل عمرہ قرار دے ویا، بس جناب نی کریم ملکافے اور وہ محابہ حالت احرام میں دہ جوابی قربانیاں ساتھ لائے تھے۔

مجرجب يوم الترويي (يعنى ٨رذى الحبكادن) موالوسب لوكمنى جانے كے (اور جوسحابدرسول الله صلى الله عليه وسلم كے ظلم سے مفامردہ کی سعی کر کے اینا احرام ختم کر بچے تھے اور حلال ہو گئے تھے) انہوں نے جج کا احرام با غدها، اور جناب نی کریم ﷺ اپی ناقد پر سوار ہوکر منی کو چلے ، پھروہاں پہنچ کرآپ نے (اور محابہ کرام نے مسجد خف میں)ظہر ،عصر مغرب،عشاء اور لجر پانجوں نمازیں پڑھیں، چر فجر کی نماز کے بعد تھوڑی دیرآپ مظافی منی میں اور مخبرے، یہاں تک کہ جب سورج نکل آیا تو آپ سی علاق عرفات کی طرف روانہ ہوئے، اورآپ نے علم دیا تھا کہ صوف کا بنا ہوا خیمہ آپ عظافہ کے لیے غرہ میں نصب کیا جائے (غرہ دراصل وہ جگہ ہے جہاں سے آ مے عرفات کا میدان شروع ہوتا ہے) آپ تالئے کے خاندان قریش کے لوگوں کواس کا یقین تھا اور اس کے بارے میں کوئی شک وشبہ نہیں تھا کہ آپ عظی دمشعر حرام " کے پاس قیام کریں گے جیمیا کہ قریش زمانہ جاہیت میں کیا کرتے تھے (لیکن آپ نے ایسانہیں کیا ؛ بلكه) آپ عظی مشرحرام كے حدود سے آ كے بور سے عرف بن كئے اور آپ نے ديكھا كد (آپ كى بداے كے مطابق) نمره ميں آپ كا فيمنسب كرديا كياج توآب فظف ال فيمري الرصح؛ يهال تك كرجب آفاب وحل مياتو آب من في الناف التصوار بركاوا کے کا محم دیا؛ چنال چاس پر کیاواکس دیا گیا،آپ ای آپ ای پرسوار موکروادی (وادی عرفه) کے درمیان آئے اور آپ ایک نے اونٹی کی پشت ہی پرے لوگوں کوخطبدد یا جس میں فرمایا کہ لوگوا تمہارے خون اور تمہارے مال تم پرحرام ہیں (یعنی ناحق سی کا خون کرنا اور ناجا تز طريق بركى كامال ليناتمبار _ ليے ميش ميش كے ليے وام ب) بالكل اى طرح جس طرح كرآج يوم العرف كدون ذى المجد ك اس مبارک مینے میں اپنے اس مقدی شہر کے میں (تم ناحق کس کا خون کرنا اور کس کا مال لیناحرام جانے ہو) ،خوب ذہن تشیس کرلوکہ جالمیت کی ساری چزی (بعنی اسلام کی روشی کے دور سے پہلے تار کی اور گرائی کے زمانہ کی ساری با تمی اور سارے قصافتم ہیں)، میرے دونوں قدموں کے یہجے دنن اور پامال ہیں، (میں ان کے خاتمہ اور منسوخ کا اعلان کرتا ہوں) اور زمان جا ہلیت کے خون بھی ختم ہیں معاف ہیں؛ یعنی اب کوئی مسلمان زمانہ جا ہلیت کے کسی خون کا بدلائہیں نے کا ،ادرسب سے پہلے میں اپنے محران کے ایک خون ربید بن الحارث بن عبد المطلب کے فرزند کے خون کے فتم اور معاف کے جانے کا اعلان کرتا ہوں، جو قبیلہ فی سعد کے ایک محریس دود در سے کے لیے رہے تھے،ان کو تبیلہ مربل کے آدمیوں نے قبل کردیا تھا، ہذیل سے اس خون کا بدلہ لیما ابھی باتی تھا؛ لیکن اب میں اسيخ فاندان كي طرف سے اعلان كرتا موں كراب يدقص تم ، بدلنبس ليا جائے كا) اور زمان جا بليت كے سارے مودى مطالبات (جوكس ے کسی کے ذمہ باتی میں وہ سب میمی) ختم اور سوخت ہیں، (اب کوئی مسلمان کسی سے اپنا سودی مطالبہ و مسول بیس کرے گا) اور اس باب م بھی میں سب سے پہلے اسینے خاندان کے سودی مطالبات میں سے اپنے چیا عباس بن عبدالمطلب کے سودی مطالبات کے فتم اور سودت ہونے کا اعلان کرتا ہوں (اب وہ کسی سے اپنا سودی مطالبہ وصول نیس کریں مے)ان کے سارے سودی مطالبات آج فتم کر دیے گئے ،اوراے لوگو احورتوں کے حقوق اوران کے ساتھ برتاؤ کے بارے می خداے ڈرو اس لیے کہتم نے ان کواللہ کی امانت کے طور پرلیا ہے، اور اللہ کے معم اور اس کے قانون سے ان کے ساتھ تہ تہارے لیے حلال ہوا ہے، اور تمہارا خاص تی ان پریہ ہے کہ جس آدى كا كمريس آنا اور تمهارى جكداور تمهار بسرى بينمناتم كو پندند بوده اس كواس كاموقع شدي اليكن اگرده بينظى كري آوتم (عميد

اورآئندہ سدباب کے لیے اگر پچھیمزادینا مناسب اور مفید مجھوتو) ان کوکوئی خفیف سی سزادے سکتے ہو،اوران کا خاص حق تم پر میہ کے کہ ایے مقدوراور حیثیت کےمطابق ان کے کھانے پہنے کا ہندوبست کرو،اور میں تنہارے لیے وہ سامان ہدایت چھوڑ رہا ہوں کہ اگرتم اس ے دابستہ رہاوراس کی میردی کرتے رہے تو پھر بھی تم مراہ نہ ہو ہے وہ ہے'' کتاب اللہ''،اور قیامت کے دن اللہ تعالیٰ کی طرف سے تم ہے میرے متعلق پوچھاجائے گا(کہ میں نے تم کواللہ کی ہدایت اوراس کے احکام پہنچائے یانہیں) تو بتاؤ ا کہ وہال تم کیا کہو گے اور کیا جواب دو کے؟ حاضرین نے عرض کیا کہ ہم گوائی دیتے ہیں اور قیامت کے دن بھی گوائی دیں کے کہ آپ عظف نے اللہ تعالی کا پیغام اوراس کے احکام ہم کو پہنچادے اور رہنمائی اور تبلیغ کاحق اداکر دیا اور نصیحت و خیرخواہی میں کوئی دقیقد اٹھانے رکھا، اس پرآ پ مالی نے اپنی اعصيف شهادت آسان كي طرف اشحات موسة اورلوكول كم محمع كي طرف اس ساشاره كرت موسة تمن وفعه فرمايا"اللهم اشهدا اللهم اشهدا االلهم اشهدا" يعني اسالله إنو كواه ره كهيس في تيرا پيغام اور تير احكام تير بندول تك پنجاد اور تير ب بندے اقرار کررہے ہیں،اس کے بعد (آپ ﷺ کے علم سے) حضرت بلال نے اذان دی پھرا قامت کی،اورآپ ﷺ نے ظہری نماز پڑھائی،اس کے بعد پھر بلال نے اقامت کبی اور آپ عظامے نے عصر کی نماز پڑھائی،اوران دونوں نمازوں کے درمیان آپ نے اورکوئی نمازنیں پڑھی۔

پر (جب آپ عظی ظهروعمری نماز ایک ساتھ بلافعل پڑھ چکوتو اپنی ناقد پرسوار ہوکر آپ علی میدان عرفات میں خاص وتوف کی جگہ پرتشریف لائے اور اپنی ناقد قصوار کارخ آپ عظاف نے اس طرف کردیا جدهر پھرکی بوی بوی چٹائیں ہیں اور پیدل مجمع آپ اللہ نے اپنے سامنے کرلیا اور آپ مالئے تبلہ روہو مے اور وہیں کھڑے رہے یہاں تک کہ خروب آفاب کا وقت آ حمیا ،اور (شام کے آخری وقت میں فضا جوزرد ہوتی ہے وہ) زردی بھی ختم ہوگی، اور آفاب بالکل ڈوب کیا، تو آپ عظا (عرفات سے مزدلفہ کے ليے)روانہ ہوئ، اور اسامہ بن زیرگوآپ عظی نے اپنی ناقہ پراپ سیجے سوار کرلیا تھا، اور جناب نی کریم علی آ کے برجے یہاں تک كرآب علا علا في المراد او فن كولام كوكيني يهال تك كداس كامركباد الم كالحد عدا الكرار الم علا في دائع المحد ے اشارہ فرماتے ہوئے ارشاد فرمایا: اے لوگو! وقار وتمکنت سے چلو، جب کسی او کچی جگہ پر چڑھتے تو اوٹنی کی لگام قدرے ڈھیلے کر دية؛ تاكهوه اونچائى پر ج هے، يهال تك كرآب عظف مردلفدآ كے (جوعرفات سے تقريباً تين ميل ہے) يهال پنج كرآب على نے مغرب اورعشار کی نمازیں ایک ساتھ پڑھیں ،ایک آزان اور دوا قامتوں کے ساتھ (لینی از ان ایک بی وفعہ کی گئی اور اقامت مغرب کے لیے الگ کی گئی اورعشا کے لیے الگ کی گئی) اور ان دونوں نمازوں کے درمیان بھی آپ نے سنت یانفل کی رکعتیں بالکل نہیں پڑھیں،اس کے بعد آپ ﷺ لیٹ کے،اور لیٹے رہے، یہاں تک کرمیج صادق ہوگی اور نجر کا وقت آگیا، تو آپ سال نے میج صادق کے ظاہر ہوتے ہی اذان اور اقامت کے ساتھ نماز فجر اواکی ،اس کے بعد آپ علی مشحر حرام کے پاس آئے (رائح قول کے مطابق سایک بلند ٹیلہ ساتھا، مزدلفہ کے حدود میں اب بھی یمی صورت ہے اور وہاں نشانی کے طور پر ایک عمارت بنادی گئی ہے) یہاں آ کرآپ میان قبلہ رو کھڑے ہوئے اور دعا اور اللہ کی تلبیر وہلیل اور تو حید وتبحید میں مشغول رہے ، یہاں تک کہ خوب اجالا ہو گیا ، پھر طلوع آفآب ے ذرا پہلے آپ علی و ہاں سے تی کے لیے روانہ ہو گئے اور اس وقت آپ علی نے اپنی ناقد کے پیچے فعل بن عباس کوسوار کرلیا اور چلدے ادروہ اچھے بال کورے اور خوبصورت تھے، جب آپ علاقے آ کے بر صفر کھے ورتی آپ کے سامنے کر دری تھیں فضل بن عبال کی نظران کی طرف چل می تو جناب بی کریم میلانے نے اپنے ہاتھ کوفعل بن عبال کے چیرے پرد کھا(تا کہ کی جانب سے وسوسہ دل میں نہ آجائے) بفتل بن عماس اپنے چیرے کو دوسری جانب کر کے پھر انہیں دیکھنے لگے، جناب نی کریم ﷺ نے اپنے دست برک کودوسری جانب سے قصل بن عباس کے چہرے پر کھ دیا جھنل بن عباس دوسری جانب چہرہ چیر کرد کینے گئے: یہاں تک کہ جب وادی محشر کے دوسیان پنچے ہو آپ علاقتے نے اونئی کی رفار پکھ تیز کردی پھراس سے لال کراس دوسیان والے راستہ سے چلے جو برے برائی محشر کے دوسیان پنچے ہو آپ علاقتے نے اونئی کی رفار پکھ تیز کردی پھراس سے لال کراس دوسیان والے راستہ سے چلے جو برن میں ہرایک کے ساتھ آپ علاقتے تھے، یہ سنگ ریزے 'فذف کے شکر یزون' کی طرح کے تھے (پین چھوٹے چھوٹے برن میں ہرایک کے ساتھ آپ علاقتے ہے جس کہ بین کہ ریزے 'فذف کے شکر یزون' کی طرح کے تھے (پین چھوٹے چھوٹے برن میں ہرایک کے ساتھ آٹ بھی جاتے ہیں جو تربا ہے اور اس رک کر قربان گاہ کی طرح کے تھر بین ہوں کے برائ میں کہ برائ ہوں نے ہوں کہ بریزے کے دہاں ہو تھیں ہوں کہ برائ ہوں نے کہ برائ ہوں نے ساتھ آئے نے ان کوا پی ہر بائی میں شرک ہر برائی ہوں نے کہ برائ ہوں نے ان کوا پی ہو بائی ان ہوں نے کہ برائ ہوں نے ان کوا پی ہر بائی میں ہر برائی ہوں نے کہ برائ ہوں نے ان میں کے گوشت کا ایک ہان ہوں نے کہ برائ ہوں نے ان کوا ہو کہ برائ ہوں نے اس میں ہو کہ ہو کہ ہو کہ ہو کہ ان ہوں نے کہ برائ ہوں نے ان کوا پی ہو کہ ہو کہ ہو کہ ان ہو کہ ان ہو کہ کہ ہو کہ کہ ہو کہ ہ

اس مدیث ایک فاصدیہ کے جناب بی کریم مظافہ نے اپنی پوری زندگی میں صرف ایک فی کیا ہے،اور خلاصة صدیث ایک فی عبادت کا خلاصة مدیث کا خریقہ سکھانا

قا؛ اسلیے جناب ٹی کریم عظی نے اعلان کرایا کہ میں فج کرنا جا ہتا ہوں؛ اس لیے جن لوگوں کو فی کرنا ہے وہ میرے ساتھ ہوجا کیں تاکہ فج کرنے کا طریقہ سیکھیں؛ چناں چہ آپ کے ساتھ ایک لاکھیں بڑار صحلہ کرام نے فی کرکے فی کرنے کا طریقہ سیکھ لیا۔

مکٹ بالمدینة تسع سنین لم یحج: جناب نی کریم عَلَیْ نے مدید منورہ عمی او سال کمات حدیث کی تشریح کا اور ایکن آپ نے اس لم عرصے میں کوئی مج نہیں کیا تھا؛ چوں کدان دنوں مج فرض ہوانہ ی کمات حدیث کی الناس بالحج فی العاشر: یعنی توس سال کرایں کرای کے تعین اور کا سال

قا: اس ليه آپ قر جي المال الماري الماري الماري الماري الله الماري الماري الماري المحج في المعاشر: الين الوي الماري الماري الله على الناس بالمحج في المعاشر: المن الماري الله على الماري الله على الماري الله على الماري الله الماري الماري

ہوب واحومی: یعنی جناب نی کریم ملا نے بیتم بتایا کہتم عسل کرو، نگوٹ باندھ اوادراحرام باندھ کرجے ادا کرو،اس صورت میں مجی حج اس لیے ہوجا تا ہے کہ افعال حج اداکرنے کے لیے طہارت ضروری نہیں ہے بصرف طواف زیارت ایسارکن ہے ؛ جس کی ادا تکی كے ليے طہارت شرط ہے تو مجوري ميں طواف زيادت مؤخرى ماسكتى ہے: اس ليے جيش اور نفاس كى شكار ورتي افعال جج اداكرنے ك بعد طواف زیارت کے لیے پاکی کے ایام تک رکی رہیں، جب وہ پاک ہو جائیں تو طواف زیارت کر کے اپنا اپنا جج مکمل کر لي "وواجباته.... والطهارة عن الحدث" (شامي ٥٣٤/٣)، فصلى رسول اللَّه صلى اللَّه عليه وسلَّم في المسجد: مكن بكد والحليد من كوئى مجد مو، جهال جناب ني كريم ملك في دوركعت" صلاة احرام" براى جوسنت ب، بعض لوكول نے اس كا افكاركرتے ہوئے كہا ہے كہ جناب نى كريم علاق نے جودوركعت نماز يرحى ہے دہ" صلاق احرام" نبيس؛ بلك وہ تو نماز تلمبر تھی ،ان لوگوں سے بھی کہا جائے گا کہ آپ نے ہر جگہ تمام کتوبہ نمازیں جماعت سے پڑھیں تو ذوالحلیفہ میں آپ نے کس مجبوری کی بنیاد پر دو رکعت نما زظیر کی تنها پرهی؟ وه تنها پرهی جانے والی نماز ظهر کی نبیں؛ بلکه ده دو رکعت نماز "صلاة احرام" متی علی البيداء: ذوالحليف كحدود ي بيداراس خاص مقام كانام بجبال جناب ني كريم علية في احرام باندها تفاء اهل بالتوحيد العن جناب نی کریم تالئے نے بلندا واز سے تلبیہ پڑھی،قال ابن حجرای احرم رافعا صوته"(مرقات ۱۹۱/۵) قال جابر لمسناننوی الا المحج، لسنا نعوف العموة: حضرت جابرض الله عنديه كهدب بي كدور جابليت بي بم لوك اشهر ج بس عمره كرنا كناه يجيح تے اس کے ہم اوگ اس زمانے میں جب فج کرتے تو صرف فج کی نیت کرتے عمرے کی نیت ندکرتے الیکن جناب نی کریم سکانے نے ہم لوگوں کو بتایا کہ جے کے ساتھ عمرے کی جمی نبیت کی جاستی ہے؛اس لیے جولوگ نج قران کرنا جا ہیں دوج قران کر سکتے ہیں، معرت جاروش الله عندك بدالفاظ بتاريج بيل كرجناب ني كريم علية كاج " ج قران" تفاجيد كي كرمعزات محله كرام في مجما كدجاليت ي جوج كراته عمره بين كياجاتا تعاوه فلط تحا" حتى إذا البينا البيت معد يعنى يد عفرات سنركمل كرك اب بيت الله اللي كاور بیت الله کے اندر باب السلام سے واظل ہوئے ، و استلم الوکن: یعن جراسود کا پوسدلیا، فومل ٹلاٹاً و مشی اربعاً: یعن آپ نے طواف زیارت اس طور پرکیا کہ پہلے تین چکر میں قدرے اکثر کر چلے اور باقی جار چکروں میں معتدل جال سے جلے ، فو مل ای اسوع يهز منكبيه (ثلاثاً)اى ثلاث مرات من الاشواط السبعة (ومشى) اى على السكون (اربعاً) اى فى اربع عوات "(موقات ٢٩٢/٥)، ثم تقلم الى مقام ابواهيم النع: لين طواف ك بعد جناب أي كريم علي في مقام إبرائيم ش آكردو ركعت تماز ردهي جواس آيت كي بنياد پر واجب بي "ثم صلى شفعا في وقت مباح يجب بالجيم على الصحيح (در معتاد ۵۱۲/۳)، شم خوج من الباب الى الصفا الغ: يعنى جب جتاب ني كريم عظية طواف اورنماذ ، وارغ بو كاتواب مى ین السفا والروه کے لیے نکلے اور صفا ومروه کے درمیان سمی کی الوانی استقبلت من امری ما استدبوت لم اسق الهدی وجعلتها عموة:بيالك حقيقت بكر جناب في كريم علي ني في مره دونون كالرام ماته ماته باعرها تها، نيز آب ماته عي بدى ع جانور مى كرآئ تن الله الهات المراكرة ك بعداح ام ونين كول كة تع البذاك ي معرات محله كرام فرمايا كرجولوك الين ساتھ مدى كے جانورنيس لےكرآئے ہيں وہ اب احرام كول كتے ہيں ،اور پر بعد ميں تج كا احرام بائد هر تج كري خص ج تن كت يل موقال دخلت العمرة في الحج موتين الغ:مرادع قران ع: يعنى في قران مرف اى مال ك لينس ب؛ لم كرج قران قيامت تك كيا جاسك ب "معناه جواز القران" (مركات ١٩٦/٥) ، حين لموضت المعج: مراداح ام باين جب معرت على رضى الله مندج كے ليے يمن سے آئے بھوجتاب بى كريم كلے نے ان سے يوچھا كرآب كا احرام كيما ب قال فلت

اللهم انى اهل بما اهل به رسولك الغ: مراديب كرجوآب كااترام بواى اترام مراجى باقوجناب في كريم اللهم اللهم انى اهل بما اهل به رسولك الغ: مراديب كرجوآب كااترام بهواي الترام مراجى فرمایا کہ آپ ابھی طال نہیں ہو سکتے ؛اس کے ج کرنے تک احرام ہی کی حالت میں رہیں، قال فحل الناس کلهم وقصروا الع: يعنى جناب ني كريم علي كايرار المن كان منكم ليس معه هدى فليحل" ن كربه عجاج كرام في عمره مل كرنے كے بعد احرام كھول ديا؛ كرجناب ني كريم مكافئة اوروولوگ جن كے ساتھ بدى كے جانور تيے احرام عى يس رہے، فلما كان يوم النروية الغ: مراداً مُعُوي ذي الحبيب، ترويدوي عشتق بجس كمعنى آتے بي فوروكر كے، اور چول كدان ايام بس حضرت ابراہیم علیدالعسلاة والسلام نے معرت اساعیل کوقربان کرنے کے سلسلے میں غور واکر کیا تھا؛ اس لیے اس کو ہوم النزور کہا جاتا يُ 'وهو اليوم الثامن من ذي الحجه...... لان الخليل تروى فيه اي تفكر في ذبح استعمل'' (مرقات ۲۹۸/۵)، توجهو ۱ المي مني: لين افوس ذي الحد، اب ج كافعال شروع بول كوتسب لوك مني كاورجن لوكول في احرام كمول وياتفا ال لوكول في احرام با ندها، وركب النبي صلى الله عليه وسلّم فصلى بها: يعن جناب أي كريم عليه ادنى برسوار ہوكر مكه كرمدے منى محك ، وہال قيام كيا اور سجد خف يس كمل أيك دن كى پانچ نمازيں برحيس ، لم مكث قليلا حتى طلعت الشمس النع: یعن مجد فیف می نماز پڑھنے کے بعد جناب ہی کریم مان مسلوم میں بیٹے رہے جب مورج طلوع مو کیا تو آپ نے وادی تر و (عرفات میں ایک جگہ کا ہے) میں ایسا فیمدنسب کرنے کا تھم دیا جو بالوں کا بنا ہوا ہو، اس کے بعد آپ منی سے مرفات کے ليرواندبوك ،المشعر الحوام: ﴿ وَلَقَرْشُ آيك بِهَا وُكَانَام هِ ، فَا جَازَ رَسُولَ الله صلى الله عليه وسلم حتى الى عوفة النع: لین جناب ٹی کریم مسلف من سے جل کرسید مع مرفد پہنچ اور درمیان جس کہیں مشہرے نہیں ؛ مالال کر قریش کو یہ بیتین تھا کہ جناب ني كريم المنظام عرام من ضرور تفهري مع اس لي كدوه لوك وبال ايام جالميت من تفهراكرت تع اليكن آب في وبال قيام الس كيا اورسيد صعرفات كافي مح جهال آپ كے ليے بہلے اى سے خير نعب تفاء آپ دہاں دو پير وصلے كر رك رہے ، حتى إذا ذاغت الشمس امر بالقصواء الغ: جب دوبهروهل في لوآب فصواركوتياد كرفكاهم ديا؛ چنال چدجب تعوار تيار بوكي لو آب اس پرسوار موکر يطن وادى يس پنچ اورايك بلخ خطبه ديا،الى الصنعوات:مرادجل رحت بے جوميدان عرفات كرتقريا وسط ين واقع ب، حتى غوبت الشمس وذهبت الصفرة فليلاً حتى غاب القرص الخ براديب كرآب غروب آقاب تك میدان مرفات میں مغیرے رہے،اس کے بعد جلدی جل کر مزدلفہ پنچے،آپ نے مغرب وصفار کی نماز ایک ساتھ پڑھی، تم اضطجع حتى طلع الفجو الغ: جناب ني كريم علية في مغرب وعثار كي نماز عن فارغ مون كي بعد مودلف يل رات كوآ رام فرمایا اورجب فجر کاوقت مواتو آپ نے فجر کی تماز پڑھی ، ام رکب القصواء حتی الی المشعر الحوام النج: فجر کی تماز کے بعد آپ مشرح ام س آئے اور دریک دعا کرتے رہے، جب مورج تطفیکا وقت ہواتو آپ تی کے لیےدوان مو سے۔

واحرام كم طريقه

﴿ مِدِيثُ مِهِ ٢٣٣٧ ﴾ وَعَنْ عَالِشَةَ قَالَتُ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ فَمِنَّا مَنْ اَهَلَ بِمُمْرَةٍ وَمِنًّا مَنْ اَهَلَ بِحَجِّ، فَلَمَّا قَدِمْنَا مَكَّةَ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ اَهَلَّ بِمُمْرَةٍ وَلَمْ يُهْدِ قَلْيَحْلِلْ وَمَنْ اخْرَمَ بِمُمْرَةٍ وَأَهْدَى فَلْيُهِلَّ بِالْحَجِّ مَعَ الْعُمْرَةِ ثُمَّ لَا يَحِلُّ حَتَّى يَحِلُّ مِنْهُمَا، وَفِيْ رِوَايَةٍ: فَلَايَجِلُ حَتَّى يَجِلُ بَنَجِرٍ هَذْيَهِ وَمَنْ أَهَلُ بِحَجَّ فَلَيْعِمٌ حَجَّةً، قَالَتْ: فَجِعْتُ وَلَمْ آطُفْ بِالْبَيْتِ وَلَا بَيْنَ الصُّفَا وَالْمَرْوَةِ فَلَمْ أَزَلْ خَالِطًا حَتَّى كَانَ يَوْمُ عَرَفَةَ وَلَمْ أَهْلِلْ إِلَّا بِمُمْرَةٍ، فَامَرُنِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ انْ اَنْقُصَ رَأْسِي وَامْتَشِطَ وَأُهِلَّ بِالْحَجِّ وَٱتَّرُكَ الْعُمْرَةَ فَفَعَلْتُ حَتَّى فَظَيْتُ حَجِّى يَعَتْ مَعِى عَبْدَ الرُّحْمَٰنِ بَنِ ابِي بَكْرٍ، وَأَمَرَنِي أَنْ أَعْتُمِوَ مَكَانَ عُمْرَتِي مِنَ التَّنْعِيْم، قَالَتْ: فَطَافَ الَّذِيْنَ كَانُوا اَهَلُوا بِالْمُمْرَةِ بِالْبَيْتِ وَبَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، ثُمَّ حَلُوا، ثُمَّ طَاقُوا طَوَافاً بَعْدَ أَنْ رَجَعُوا مِنْ مِنِي وَأَمَّا الَّذِينَ جَمَعُوا الْحَجِّ وَالْعُمْرَةَ، فَإِنَّمَا طَافُوا طَوَافاً وَاحِدًا. مُتَّفَقّ عَلَيْهِ.

حل لفات:قلمنا:قَلِمُ(س)قدوماً جاناـ

قوجمه: معرت عائشرض الله عنها سے روایت ب كه بم ججة الوداع ميں جناب ني كريم عظف كيماتھ فكلے، بم مي سے وہ لوگ بھي تع جنهول نے مرف عرب کااحرام با ندھا،اوروہ لوگ بھی تھے جنہول نے صرف حج کااحرام باندھا،تو جب ہم مکہ کرمہ پہنچ تو جناب ہی كريم الله في الماكم جس محض في عمر كااحرام باندها بادرها كاورا كي ساته مرى نبيس ب، وه حلال جوجائه ، اورجس مخض في عمر كا احرام باندها ہے ادراس کے ساتھ مدی ہے؛ تو وہ عرے کے ساتھ جج کا احرام باندھ لے، پھر جب تک ان دونوں سے فارغ ندہوجائے اس وتت تک احرام ند کھو لے ،اورایک روایت میں ہے کہ جب تک اپنی ہدی کی قربانی سے فارغ ند ہوجائے احرام ند کھو لے ،اورجس مخص نے جج کا احرام با تدهاہے وہ اپناجے بورا کرے ،حضرت عائشے کہا کہ میں حاکصہ تھی ؛ اس لیے میں نے نہ بی طواف کیا اور نہ ہی مفامروه کی سی کی میں حالت جیش میں تھی کہ حرف کا دن آئیا، چوں کہ میں نے صرف عمرے کا احرام باند حاقفا ؟ اس کیے جناب نی کریم تعلق نے فرمایا کہ میں سر کھول کر تنگھی کرلول اور جج کا احرام باندھ کرعمرہ چھوڑ دوں؛ چنال چدمیں نے ایسا ہی کیا؛ یہاں تک کہ میں نے اپنا ج پورا کیا، او آپ نے میرے ساتھ عبد الرشن بن ابو برکو بھیج کر جھے تھم دیا کہ بیں مقام تعقیم سے احرام باندھ کرعرے کی قضا کروں ،حضرت عائشہ نے کہا: جن لوگوں نے صرف عمرے کا احرام ہا ندھا تھا ،انہوں نے خانۂ کعبہ کا طواف کیا اور صفا مروہ کی سعی کی پھر <u> ملال ہو گئے ، پھر نی سے لوشنے کے بعد ایک طواف کیا اور جن لوگوں نے حج قر ان کیا ان لوگوں نے صرف ایک طواف کیا۔</u>

اس مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ احرام ہا ندھنے کے مختف طریقے ہیں،ان میں ہے جس طریقے کے مطابق احرام ہا ندھنا چاہے ہا ندھ سکتا ہے،شریعت میں اس کی مخاتش ہے۔

کمات حدیث کی تفری ایمون اور یا تو صحابہ کرام کی جماعت ہے یا عورتوں کی مخصوص جماعت مراد ہفمنامن اهل بعد یشر کی تفری اور تج افراد کا احرام ہے،و منا من اهل بحج: مراد حج قران کا احرام ہے، مقوون بعمرة (مرقات ٢٥٠٦) من اهل بعمرة ولم يهد الخ: ليني جناب ني كريم على في ان لوكون علم جنبول في مرف عرب كا احرام باعماتها كراكرة بالوكول كرساته مرى فين بي عروهمل كرك طال بوجائي، ومن احرم بعموة واهدى المع: يعنى جن لوگوں کے ساتھ بری ہے وہ نج قران کی نیت کرلیں"والمعنی فلیدخل الحج فی العموة لیکون قارناً" (مرقات ٢٠٧/٥) قالت فعضت ولم أطف البيت: يعنى معرت عائشهمد يقدمنى الله عنها في ومرف عرب ى كااترام باندها تعانااس ليے قاعدے كے مطابق عمرے كاكام كمل كرنے كے بعدوہ بحى طال ہوجاتى ؛ليكن خانة كعبركا طواف كرنے سے بہلے بى ان كويش المياجس كى وجد عود نى عمر ع كاموركوانجام د ي كى اورنه بى طلال بوكى، والا بين المصفا والمعروة: مقامروه ك درمان می کے لیے طہادت تو شرطانی ہے الین چول کہ معرت عائش مدیقدر می اللہ عنہائے طواف بی نہیں کیا تھا، جس کے بعدی منا مرده كل سى كى جاكتى ہے "اى ولم اسع بينهما اذلا يصح السمى الا بعد الطواف والافالحيض لا يمنع السعى" (مرقات ١/٥ ٣٠١)، فلم ازل حائصة حتى كان يوم عرفة الخ: حضرت عاكثرمد يقدرش الدعنهاكبتي بي كه بجے يوم عرفہ تک یض آتا رہا جس کی بنیاد پر بیل عمرہ نہ کرکی تو جناب ہی کریم بھاتھ نے جھے عمرہ کے بغیری اجرام کول کرج کے لیے اجرام بائد صفحات حتی قصیت حجی: لین دعرت عائشہ معربی الله عنها نے ایسانی کیا کہ عمر کا اجرام کول کرج کا اجرام بائد صااور نج کیا، بھٹ معی عبد الوحین بن ابی بکو النے: یعنی دعرت عائشہ ملد بقدرض الله عنها نج سے قارغ ہوگئی تو ان کے ساتھ عبد الرحمٰ بی برکو بھیجاتا کہ وہ عمر سے کی قضا کر سین بیاں چانہوں نے مقام عظم سے عمر سے کا اجرام بائد صااور عمر سے کی قضا کی مقالت فطاف المذین کانو ا اہلو ا بالعمر ۃ المنع: دعرت عائشہ صدیقہ رضی الله عنه فرماتی ہیں کہ جن لوگوں نے مرف عرسے کا اجرام بائد عاقوان لوگوں نے ایک مرتبہ خان کو جب کا اجرام ساتھ ساتھ بائد حاقان لوگوں نے مرف کیا ہوا ما اللہ ین جمعوا المحیح و العمر ۃ المنع: لیمن بورنہ تو قارن کے لیے بھی دوطواف ہیں "ان المنبی صلی الله علیه و سلم ایک طواف کیا ، یہاں طواف طوافین و سعی سعیین (برقات ۵/۱۰۰)۔

کان قارناً فطاف طوافین و سعی سعیین (برقات ۵/۱۰۰)۔

دحج قران کا لغوی معنی ک

﴿ مديث بُبِرِ ٢٣٢٧ ﴾ وَعَنْ عَبْدِ اللّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: تَمَتَّعَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَسَاقَ مَعَهُ الْهَدْى مِنْ ذِى الْحُلَيْفَةِ وَبَدَاءَ فَاهَلُ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَكَانَ مِنْ النَّامِ مَنْ الْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَكَانَ مِنْ النَّامِ مَنْ الْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَكَانَ مِنْ النَّامِ مَنْ الْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ وَلَيْهُمْ مَنْ لَمْ يَهُو مَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ وَلَيْهُمْ مَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ مَكُة وَاللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَمَنْ لَمْ يَحِلُ مِنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَمَلْ لَمْ يَجِدُ هَذَيّاء فَلَيْطُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَا وَالْمَوْوَةِ وَمَنْ لَمْ يَجِدُ هَذَيّاء فَلَيْطُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَا وَالْمَوْوَةِ وَمَنْ لَمْ يَجِدُ هَذَيًا ، فَلَيْطُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَة وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَة وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَ وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهُ وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ مَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ مَنْ النَالِ مَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ مَنْ اللّهُ عَلَى وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ مَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ مَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ مَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ مَنْ النَّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ عَلْهُ وَلْ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهُ وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَ الللهُ عَلَيْهِ وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهُ وَاللّمُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّمَ اللّهُ عَلَيْهُ الللهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلْهُ الللهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللهُ اللهُ عَلَى الله

حل اخات: الهدى: جَع ہے هدیدتی بمعنی قربانی کاوہ جانور جوحرم میں بھیجا جائے ، خب: خب زن) خبنا جوش مارتا۔

تو جعد: حضرت عبداللہ بن عرضی اللہ عنہا ہے روایت ہے کہ جناب نی کر یم عظائے نے جہتا اوداع میں عمرہ کوئے ہے ملاکر ج تشخ کیا تعا
اور ذوائحلیفہ سے قربانی کا جانور راتھ لے لیا تھا، نیز آپ نے پہلے عمرے کا احرام با ندھا پھر تی کا، چناں چہلوگوں نے بھی جناب نی کر یم عظاف کی معیت میں عمرے کے ساتھ بدی تھی اور بعض وہ تے جن کے ساتھ بدی تھی اور بعض وہ تے جن کے ساتھ بدی تھی اور بعض وہ تے جن کے ساتھ بدی تی موسب جن کے ساتھ بدی تھی ہوگ تھی اور بعض وہ تے جن کے ساتھ بدی تی سے وہ سب خانہ کھیا گئی کرنے ہے ہوگ بھی اور بال کو اکر طال ہوجا تیں ، پھر تی کا احرام با ندھیں اور قربانی کریں ، جوقربانی ندکر سیل وہ تی کہ ایا م میں تین مور نہائی کریں ، جوقربانی ندکر سیل وہ تی اور کو بوسر دیا پھر اور کہ بوسر دیا پھر اور کہ بوسر دیا پھر اور کو بوسر دیا پھر اور کو بوسر دیا پھر اور کو بوسر دیا پھر اور کی مور بال کو اکر سات دوزے رکھیں ، آپ نے مکہ کر مدجاتے ہی طواف کیا ، اس طور پر کہ سب ہے پہلے جمراسود کو بوسر دیا پھر میں مرتبہ اکر کر طے اور جارم رتبہ ہوسے آپ خانہ کھیا گئات سے فارغ ہوئے تو آپ نے مقام ایرائیم کے پائی دو

رکعت نماز پڑھی پیرآپ نے سلام پھیرااور دہاں ہے چل کرصفا پنچ اور صفامروہ کے سات چکر لگائے ، پھرآپ نے اجتناب کرنے والی چے وں کو طال نیس سجما ؛ یہاں تک کہ جب آپ نے ج کرلیا ،قربانی کے دن قربانی کی اور طواف افاضہ کرلیا تو چرآپ نے اجتناب کی جانے والی چیز وں کوملال سمجما اور جولوگ بدی ساتھ میں نے گئے تھے انہوں نے ایبائی کیا جیسا کہ جناب ٹی کریم عظاف نے کیا۔

اس مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ جج قران کی ایک حیثیت تمتع کی بھی ہے؛ اس لیے اس مدیث شریف میں خلاصہ مدیث اس کے اس مدیث شریف میں خلاصہ مدیث میں جناب نی کریم میں ہے کہ جج کوئی تمتع کہ دیا میا ہے ورنہ تو آپ کا جج '' جج قران' بی تھا۔

کلمات حدیث کی تشریکی قائده الله علیه وسلم کا الله علی کا الله علیه وسلم کا الله علیه و الله وسلم کا الله علیه و الله وسلم کا الله علیه و الله وسلم کا الله وسلم کا الله وسلم کا الله و الله وسلم کا الله و الله وسلم کا الله وسلم کا

لياس مديث شريف يس افوي معنى كا عنباركرت موع جناب ني كريم على كي قران كو" ج تمتع" كهدديا كياب" قيل المعواد التمتع اللغوى وهو القران آخراً"(مرقات٤٠/٥) افتمتع الناس مع النبي صلى الله عليه وسلم الخ: حضرات محلبً كرام توجناب ني كريم على كر ليق ك شيدائي تتے بتونى كريم على نے جيها احرام باندها ويها بى حضرات محلب كرام نے احرام باعرما، ثم لیهل مالحج ولیهد: ج قران کرنے والوں کے لیے بیضروری ہے کہ جب جے سے فارغ ہو جا عیں تو ایک قربانی إلطور شرانك كرين وذبح للقران وهو دم شكر "(در مختار ٥٥٨/٣)، فمن لم يجد هديا فليصم الخ: يعن قارن قرباني ندكر سكے تواس كے ليے يہ ہدايت ہے كہوہ قربانى كے بجائے ايام جج يعنى ٩٠٨٠ رذى الحجركوروزه ركھے، مجبورى ميں ان ايام سے پہلے مجى ركم وأسكت بين اورسات روز العدش ركم وان عجز صام ثلالة ايام آخرها يوم عرفة، بان يصوم السابع والثامن والتاسع قال في شرح اللباب لكن إن كان يضعفه ذالك عن الخروج الى عرفات والعقوف والدعوات فالمستحب تقديمه على هذه الايام وسبعة بعد تمام ايام حجه" (فتارئ شامي ٥٥٨/٣)_

<u> دج کے مغینے میں عمرہ کرنا ک</u>

﴿ وديث بُمِر ٢٣٢٨﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: طَذِهِ عُمْرَةٌ اسْتَمْتَعْنَا بِهَا فَمَنْ لَمْ يَكُنْ عِنْدَهُ ٱلْهَدَّى، فَلَّيَحِلُّ الْحِلُّ كُلَّهَ فَإِنَّ الْعُمْرَةَ قَدْ دَخَلَتْ فِي الْحَجِّ إلى يَوْمِ الْقِيَامَةِ.

حل اخلت: الهدى: جمع بهدينك بمعن قرباني كاوه جانور جورم مس بهيجاجائي

قوجعه: حضرت ابن عباس رضى الله عنها سے روایت ہے کہ جناب نی کریم عظافے نے فرمایا: بیروہ عمرہ ہے جس سے ہم نے فاکدہ اعمایا ہے، اوجن کے پاس مدی ہیں ہے وہ پورے طور پر حلال ہوجا کیں ؛ اس لیے کہ ج کے مہینے میں عمرہ کرنا قیا مت تک جائز ہوگیا۔ خلاصة حديث ال مديث تريف كاخلاصه يب كرج كماته عمره كرناجا تزاوركارثواب بـ

كلمات حديث كي تشريح هذه عمرة استمتعنا بها: يهال بحي تمتع عمرادلغوى معنى -

<u> دوهذا الياب خال عن الفصل الثاني ه</u> الفصل الثالث

﴿ تبديل احرام كي حكم ب صحابه كا ترددي ومنابه كا ترددي وصحابه كا ترددي وصحاب الله في نَاسٍ مَعِيَ قَالَ: اَهْلَلْنَا اَصْحَابُ

مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْحَجِّ خَالِصًا وَحَدَهُ، قَالَ عَطَاءٌ: قَالَ جَابِرٌ: فَقَدِمَ النَّبَيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ ، سَلَّمَ صُهْحَ رَابِعَةٍ مَضَتْ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ، فَأَمَرَنَا أَنْ نَجِلٌ، قَالَ عَطَاءً: قَالَ: جِلُوا وَأَصِيبُوا النَّسَاءَ، قَالَ عَطَاءٌ: وَلَمْ يَعْزِمُ عَلَيْهِمْ وَلَكِنْ أَحَلُّهُنَّ لَهُمْ، فَقُلْنَا: لَمَّا لَمْ يَكُنْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ عَرَفَةَ إِلَّا خَمْسٌ آمَرَنَا أَنْ نُفْضِي إلى نِسَاءِ مَا فَنَأْتِي عَرَفَةَ تَقْطُرُ مَلَا كِيْرُنَا الْمَنِيُّ، قَالَ: يَقُولُ جَابِرٌ بِيَدِهِ كَأَنَّى أَنْظُرُ إلى قَوْلِهِ بِيَدِه يُحَرِّكُهَا، قَالَ: فَقَامُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْنَا أَفَقَالَ: قَدْ عَلِمْتُمْ أَنَّى أَتَقَاكُمْ لِلَّهِ وَأَصْدَفُكُمْ وَأَبَرَّكُمْ وَلَوْلَا هَدْيَ لَحَلَلْتُ كَمَا تَجَلُونَ وَلَوْ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَااسْتَدْبَرْتُ لَمْ اَسُقِ الْهَدْيَ، فَجِلُوا فَحَلَلْنَا وَسَمِعْنَا وَاطَعْنَا، قَالَ عَطَاءٌ: قَالَ جَابِرٌ: فَقِيمَ عَلِيٌّ مِنْ سِعَالِتِهِ، فَقَالَ: بِمَ ٱهْلَلْتَ؟ قَالَ: بِمَا اَهَلُ بِهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ غَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ رَسَلَّمَ: فَأَهْدِ وَامْكُتْ حَرَامًا، قَالَ: وَاهْدَى لَهُ عَلِيٌّ هَدْيًا، فَقَالَ سُرَأُقَةُ بْنِ مَالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ: يَارَسُولَ اللَّهِ الْعَامِنَا هٰذَا أَمْ لِآبَدٍ؟ قَالَ: لِآبَدٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل ففات: يعزم: عَزَمَ (ض)عزماً واجب بوناً مفكث (ن) مَكْنا كُمْمِرنا.

قد جمه : حضرت عطا سے روایت ہے کہ میں نے بہت سے تمریک مجلس لوگوں کے ساتھ جابر بن عبداللہ سے کہتے ہوئے سنا کہ جناب نى كريم عظف كاصحاب في صرف في كااترام باندها تما معطا كت بين كه جابر في كها كد جناب نى كريم عظفة ذى الحجدى چوكى تارى کو کم مرمہ پنچاتو ہم نوگوں کو حکم دیا کہ ہم لوگ حلا اُل ہوجا میں ،عطا کہتے ہیں کہ آپ نے فرمایا کہ آپ لوگ حلال ہوجا دادر ورت کے یاں جا و ،عطا کہتے میں کہ آپ نے عورت کی مقاربت کو واجب تونہیں کیا الیکن طال ضرور کر دیا تھا ،تو ہم لوگوں نے کہا کہ ہارے اور عرف کے درمیان صرف یانج ون ہیں ،اورآپ نے جمیں تھم ویا کہ ہم اپنی عورتوں سے جماع کریں ؟ کویا ہم عرفداس حال میں جا کیں کہ ہارے مضوتاس سے منی فیک رہی ہو،عطا کہتے ہیں کہ جابرنے اپنے ہاتھ سے اشارہ کیا کویا کدان کے ہاتھ کا اشارہ میری نظرول میں مجررہا ہے، جابر کتے ہیں تو جناب نی کریم عللے مارے درمیان خطبدیے کے لیے کھڑے ہوئے! چنال چرآ پ نے فرمایا: آپ لوگ جانے ہیں کہ میں اللہ سے آپ لوگوں کے مقابلے میں زیادہ ڈرتا ہوں، آپ لوگوں سے زیادہ سچا اور آپ لوگوں سے زیادہ نیکو کار ہوں، اگر میرے ساتھ بدی شہوتی ، تو میں بھی آپ لوگوں ی طرح طال ہوجاتا ، اگر جھے یہ بات پہلے معلوم ہوتی جو بعد میں معلوم ہوئی ہے، تو میں ہدی ساتھ ندانا تا؛ اس لیے آپ لوگ حلال ہوجائیں؛ چنال چہ ہم لوگ حلال ہو گئے ، آپ کی باتوں کو سنا اور اطاعت کی معطا كت بي كدجابر ن كها: جب على اسيخ كام سه واليس آئ ، تو آب ن ان سه يوجها كرآب ن كيما احرام باندها ب؟ انهول ف كها كرجياجناب ني كريم عظة في احرام باعدها بي توجناب ني كريم عظة في فرمايا، تو آب قرباني كري اور حالت احرام بي من وين جابر كيت ين حفرت على آپ كے ليے بدى لے كرآئے تھے سراقد بن مالك بن معمم نے كہا: يارسول الله! بيمرف اى سال كے ليے ے ایمیش کے لیے؟ آپ نے فرمایا: ہمیش کے لیے ہے۔

اں مدیث شریف کا خلاصہ بیہ کہ جناب ٹی کریم علیہ کی بعث اس لیے ہوئی تھی کہ آپ امت کومل کر کے خلاصۂ حدیث وکل کر کے خلاصۂ حدیث وکل میں؛ چناں چہ آپ نے مل کر کے دکھایا اور امت نے عمل کیا! لیکن یہاں کی مجبوری کی وجہ سے جناب نی كريم على الرام بين كمول يائي : جس كى وجه عظرات محله كرام كور در بوا بمرجب ان حظرات كواس كى حقيقت كاعلم بوكيا توان

حضرات نے قابل دیداطاعت وفرمایرداری کا شوت دیا۔

عن عطاء: حضرت عطاء المحديث على المرحمة بن مشهورادر جليل القدر تابعي بن بهالحج خالصا و حده العلام على المرات حديث كي تشريح المرات على الله عند في الله

بہت سے وہ فیاج کرام بھی تنے جنہوں نے جج قران کا احرام باندھا تھا! اسلئے کہ خود جناب نی کریم میکھیے نے جج قران کا احرام باندھا تھا، فقدم الدی صلی الله علیه وسلم النع: یعن جب برحفرات مکمرم با کی کے ادرطواف وسی سے فارغ ہو گئے ، تو جناب نی كريم تلك ني مرذى الحجر وفر ما ياكرة بالوك طلال موجائين احتى كرة بالوك الني الني عورتول ي محمل سكت بين، فقلنا لممالم يكن بيننا وبين عرفة الا حمس النع: يعنى ال حفرات كوطال مون كيك كهنا بزاتعب لكا، تو ال حفرات في جناب في كريم الله ال در فواست كى يارسول الله اعرفد كے دن ميں اب مرف يا في دن بين السلئے ہم اوكول كو بھى آپ كى طرح احرام كى حالت بى ميں رہے ديا جائے، فقام الدی صلی الله علیه وسلّم فینا الغ: یعنی جناب نی کریم ﷺ کوحفرات محلبه کرام کے تر دد کاعلم ہوا اتو آپ نے ۔ ایک جامع تقریر کی جسکی بنیاد پر حفرات محلبه کرام کی سوچ میں تبدیلی آئی اوران حضرات نے قابلِ دیدا طاعت وفر مابرداری کا ثبوت دیا۔

﴿صحابه کے تردد پر آپ کی برھمی﴾

﴿ صِينَ مُبر ٢٢٥﴾ وَعَنْ عَاتِشَةَ انَّهَاقَالَتْ: قَدِمَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِآرْبَعِ مَضَيْنِ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ أَوْ خَمْسٍ، فَدَخَلَ عَلَيُّ وَهُوَ غَصْبَانُ، فَقُلْتُ: مَنْ أَغْضَبَكَ يَارَسُوْلَ اللَّهِ؟ أَدْخَلَهُ النَّارُ، قَالَ: اَوَمَا شَعَرْتِ آنَّى اَمَوْتُ النَّاسَ بِاَمْرٍ، فَإِذَاهُمْ يَتَرَدُّدُوْنَ وَلَوْ اَنَّى اَسْتَقْبَلْتُ مِنْ اَمْرِى مَااسْتَدْبَرْتُ مَا سُقْتُ الْهَدْيَ مَعِي حَتَّى اشْتَرِيَّةُ ثُمَّ أَحِلَّ كَمَاحَلُوْا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لغلت: الناد: آك جمَّع نِيْرَ ان مشعوت : شَعَوَ (ن) شَعْو أَجَا ثَا بُحُول كرنا_

قر جمه: حضرت عائشهمديقه رضي الله عنها سے روايت ہے كہ جناب نبي كريم عنظ ذى الحبرى چوكلى يا يانجويں تاريخ كوميرے پاس عصے کی حالت میں تشریف لائے تو میں نے عرض کیا: یارسول اللہ! کس نے آپ کوغصہ دلایا اللہ اسے دوزخ میں ڈالے؟ آپ نے فرمایا: کیا جمہیں معلوم نہیں کہ میں نے بعض لوگوں کو ایک تھم دیا بلیکن وہ لوگ متر دد ہیں ، اگر مجھے میہ بات پہلے معلوم ہوتی جو بعد میں معلوم ہوتی ہے، تو میں اپنے ساتھ مدی نہ لاتا ، پھر میں ان ہی لوگوں کی طرح حلال ہوجا تا اور جانور بہیں خرید کر قربانی کر ڈ التا۔

فلاصة حديث ال حديث شريف كاخلاصه بيب كه جناب ني كريم على ناراض ضرور بوئے تقے ، مگر آپ بعد ميں راضى بمى ملاصة حديث اور معزات محابة كرام في مل كرك دكھايا بھى۔

انی اموت الناس: یہال"الناس" سے بعض لوگ مراد بیں؛ اس لیے کہ بہت سے وہ صحابہ تھے کمات حدیث کی تشریح کے جنہوں نے جج قران کا احرام باندھا تھا، ہامو: وہ تھم تھا جے سے پہلے ہی عمرہ کر کے حلال ہونے کا۔

حباب دخول مكة والطواف

الفصل الأول

﴿مِكه كَا مَدْخُلُ وَمَخْرِجٍ ﴾

﴿ مديث مُبرا ٢٣٥ ﴾ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: إِنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ لَايَقْدِمُ مَكَّةَ إِلَّا بَاتَ بِلِي طُوِي حَتَّى يُصْبِحَ وَيَهْتَسِلَ وَيُصَلِّىَ فَيَدْخُلَ مَكَّةَ نَهَاراً وَإِذَا نَفَرَ مِنْهَا مَرَّ بِذِى طُوِىً وَبَاتَ بِهَا حَتَّى يُصْبِحَ، وَيَذْكُرُ انْ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَفْعَلُ ذَلِكَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل لفات: يصبح: أَصْبَحَ (افعال) من كونت من داخل بوتا، لَفَرَ (ض) نَفْر أَمْتَمْ قَ بوتا ـ قوجمه: حضرت نافع سے روایت ہے کہ ابن عمر جب مجھی مکہ آتے تو ذی طوی میں رات گزارتے، اور جب مبح ہوتی تو عسل کر کے نماز پڑھتے پھر دن کو محے میں داخل ہوتے ،اور جب مکہ سے واپس ہوتے ،اس وقت بھی ذی طوی سے گزرتے اور میج تک وہیں رہے ، نیز حضرت ابن عمر بیان کرتے ہیں کہ جناب نی کر یم متالغے ایسانی کیا کرتے۔

فلاصة حديث المديث شريف كاخلاصه بيب كه مكه كرمه من آدى دن كونت من داخل مو؛ تاكه بيت الله نظر آئ؛ اس ليد خلاصة حديث كم بيت الله يرجم كما نظر برت وقت كي دعا قبول مواكرتي بـــ

کلمات حدیث کی تشریک عن نافع: برحضرت این عمرض الدعنها کے آزاد کردہ غلام بیں ،بلدی طوی: صدود حرم میں ایک جگه کا تام ہے، فید خل مکہ نہارا: مکہ کرمہ میں دن کے دقت داخل ہوئے میں حکمت بیہے کہ بیت اللہ

پرنگاہ پڑے اور آدی دعا کرے؛ اس لیے کہ بیت اللہ پر بہلی نگاہ پڑتے وقت کی جانے والی دعا قبول ہوا کرتی ہے، و بات بھا حتی
یصبح: لیحنی جناب نی کریم علی جب مکہ مرمہ ہے والی ہوتے توضیح تک مقام ذی طوی میں قیام فرماتے ؟ تا کرسپ لوگ یہاں جمع
ہوجا کیں اور ساتھ ساتھ چلیں "انتظار اً لا صحابه و اهتماماً لجمع اسبابه" (مرقات ۱۲/۵)۔

﴿مکے میں داخل هونے اور نکلنے کا طریقہ ﴾

﴿ مديث بْمِر ٢٣٥٢﴾ وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: إِنَّ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ لَمَّا جَاءَ إِلَى مَكَّةَ دَخَلَهَا مِنْ اَعْلَاهَا وَخَرَجَ مِنْ اَسْفَلِهَا. مُتَفَقَّ عَلَيْهِ.

حل لفات: دخلها: دُخَلُ (ن) دُ حُو لاً واخل بونار

قرجمہ: حضرت عائشرض اللہ عنہاے روایت ہے کہ جناب نی کریم علی جب کہ آئے تو اس کے بلند حصے کی طرف سے داخل موے ،اوراس کی شیمی کی جانب سے نکلے۔

ال مدیث شریف کا خلاصہ بہ ہے کہ مکہ کمرمہ یس جب داخل ہوتو ذی طوی کی طرف سے داخل ہوجو باند حصہ ہے، خلاصۂ حدیث اور جب نظاتو اس کے مقابل دوسری جانب سے نکلے جونشیب ہے۔

دخلها من اعلاها: مرادمقام ذی طوی کی طرف سے دافل ہونا ہے؛ اس لیے کہ یہ مکر مرکا بلندهمہ کلمات حدیث کی تشریح میں اصفلها: مراداس کے مقابل دوسری طرف کا حصہ ہے؛ اس لیے کہ دہ حصہ دوسری جانب سے نشیب مانا جاتا ہے، اور پہلی والی حدیث میں جوذی طوی کی طرف سے نظنے کا تذکرہ ہے، اس کی حقیقت سے سے کہ

حصد دوسری جانب نے نشیب مانا جاتا ہے، اور پہلی والی حدیث میں جوذی طوی کی طرف سے نظنے کا تذکرہ ہے، اس کی حقیقت ہے کہ جناب نبی کریم ﷺ حقیقت میں ہونہ کی حقیقت ہے کہ جناب نبی کریم ﷺ حقیقت میں تو کہ مرمہ کے نشیب والے جصے ہے، ان نظامے تھے؛ کیکن مدید میں جناب نبی کریم ﷺ کے دخول وخردے کوذی طوی ہی کی طرف سے متابا کیا ہے۔
میں جناب نبی کریم عقائقہ کے دخول وخردے کوذی طوی ہی کی طرف سے بتایا کیا ہے۔

﴿طواف کے لیے طھارت﴾

﴿ صريت بْهِ ١٣٥٣ ﴾ وَعَنْ عُرُوةَ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: قَدْ حَجَّ النَّبِيُّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَمَلَمَ فَآخَبَرَتَنَى عَائِشَةُ اللهُ عَلَيْهِ وَمَلَمَ فَآخَبَرَتَنَى عَائِشَةُ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ وَمَلَمَ فَآخَبَرَتَنِي عَائِشَةُ اللهُ اَوْلَ شَيْءٌ بَدَاً بِهِ حِيْنَ قَلِمَ مَكُةَ اللهُ تَوَضَّأَ لُمُ طَاقَ بِالْبَيْتِ ، لُمْ لَمْ تَكُنْ عُمْرَةً ، لُمْ عَمْرُ ، لُمْ عُمْرَهُ ، لُمْ عُمْرَةً ، لُمْ عُمْرَهُ ، لُمْ عُمْرًا وَ اللّهُ عُمْرًا وَاللّهُ مُ اللّهُ عُمْرَهُ ، لُمْ عُمْرُهُ ، لُمْ عُمْرُهُ ، لُمْ عُمْرًا وَلِكُمْ مُعُمْرُهُ ، لُمْ عُمْرُهُ ، لُمْ عُمْرُهُ ، لُمْ عُمْرًا وَلَالِكُ . مُتَفَقَ عَلَيْهِ .

حل لغات:بدا:بدَأَ (ف)بدواً شروع كرتا،البيت: كم جمع بيوت-توجمه: حفرت عروه كن زير عدوات م كرجناب بي كريم علية في كياب، چنال چدعا كشرف يحص تاليا كرآب في كم جا كرسب سے بہلے جوكام كيا ہے وہ يہ ہے كہ آپ نے وضوكيا اور آپ نے طواف كيا اليكن عمر وكمل ميں ہوا، بھر الوبكر نے جي كيا تو بہلى چیز جس سے انہوں نے شروع کیاوہ بیت اللہ کا طواف تھا؛ لیکن عمر الممل نہیں ہوا، پھر عمر اور عثمان نے ابیا ہی کیا۔ خلاصة عديث اس مديث شريف كاخلاصه يب كهطواف كي ليطهارت واجب ب،اس كاخيال رب-

انه توضا: مرادیہ کہ جناب نی کریم اللہ نے دضوی تجدیدی؛ اسلے کہ آپ نے دی طوی میں آو کیا ہی کمات حدیث کی تشریح کی اوضو فرمایا"ای جدد

الوضوء" (مرقات ٣١٢/٥)، طاف بالبيت: بيطواف عمر عاطواف تما؛ اسلت كرآب تو قارن تع"اى طواف العمرة لكونه قارناً" (مرفات ١١٣/٥)، ثم لم تكن عمرة: مراديب كرعمره لمل بيل مواتها؛ اسك كرصرف طواف وسعى بى آپ نے كيے تھے ،عمره ك دوسرے اعمال باتی تھے، اور ان اعمال کوقار ن ہونے کی بنیاد پر جج کرنے سے پہلے کرنہیں سکتے تھے؛ اسلئے آپ کاعمر و کمل نہ ہوسکا تھا۔

خطواف میں رمل ک

﴿ مِدِيثُ مِهِ ٢٣٥٣ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا طَافَ فِي الْحَجِّ أَوِ الْعُمْرَةِ أَوَّلَ مَا يَقْدَمُ سَعَى ثَلَالَةَ أَطُوافٍ وَمَشَى أَرْبَعَةً ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ يَطُوفُ بَيْنَ الصَّفَا وْالْمَرْوَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل لفات:سعى:سَعىٰ(ف)سعياً دورُ نا_

قوجهد: خعرت ابن عمرض الله عنها عدوايت بكر جناب في كريم ملك جب حج ياعرك طواف كرت تويملي تمن شوط مس اكر كريطة اورباتى مارشوط ميس آستد يطنة ، كاردوركعت نمازير معة اورصفا مروه كى سى كرت.

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه بيب كدج وعره كطواف يس رال كاخيال رب

سجد سجدتین: بر دورکعت سنت طواف ب،طواف کے بعددورکعت نماز پرهنی چاہیے برسنت ہے۔

خِصفا مروہ کیے درمیان سعی

﴿ حديث تُمِر ٢٣٥٥﴾ وَعَنْهُ قَالَ: رَمَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْحَجَوِ إِلَى الْحَجَوِ ثَلَاثاً وَمَشْى أَرْبَعًا وَكَانَ يُسْعَى بِبَطْنِ الْمَسِيْلِ إِذَا طَافَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لغات: الحجر: كَمُرجَع احجار ، مشى: مشى (ض) مشياً چانا ، بطن: پيث جمع بطون ـ

توجمه: ان سے دوایت ہے کہ جناب ہی کر یم سالتے نے پھر سے پھر تک تین مرتبدرال کیا اور جار مرتبدآ ہت چلے، اور صفا مروه کا طواف كرتے تقے تو بطن ميل ميں دوڑتے تقے۔

خلاصة حديث: الحج وعمره كے ليے صفامروه كاطواف ضروري باورميلين اخطرين مين ذراتيز دوڑے۔

کلمات مدیث کی تشریح فلالاً: عجر سے مراد مجراسود ہے۔

خ عجر اسود کا استلام ک

﴿ صريت تَبِر ٢٣٥٧ ﴾ وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا قَلِمَ مَكَّةَ آتَى الْحَجَرَ فَاسْتَلَمَهُ ثُمَّ مَشْلَى عَلَىٰ يَمِيْنِهِ فَرَمَلَ لَلَالاً وَمَشْلَى أَرْبَعا . رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل ففات:قدم:قَلِمُ (س)قدوماً آنا،فاستلمه:استلم (استقعال) بوسدينا-

قوجعه: حفرت جابروض الله عند بوايت بكر بناب في كريم عليه جب كمه آئي الوجر اسود كي باس آكراس كو يوسدد يا اور اس كدائي جانب ساكر كرتين چكرنگائ اور جارا كست سـ

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يه كهبيت الله كاطواف كرتے وقت جراسودكو بوسدد --

كلمات حديث كي تشريح التي المحجو: حجرب مراد حجراسودب، فاستلمه: يعنى اس يقركو چهوكراس كوچوما-

خ حجر اسود کا بوسه ﴾

﴿ صِرِيثَ مِبْرِ ١٣٥٤ ﴾ وَعَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ عَرَبِيٌّ قَالَ: سَأَلَ رَجُلُّ ابْنَ عُمَرَ عَنِ اسْتِلَامِ الْحَجَرِ، فَقَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَلِمُهُ وَيُقَبِّلُهُ. رَوَاهُ الْبُحَارِئُ.

حل لغات: استلام: استلم (استفعال) بوسدينا-

قوجمه: حضرت زبير بن عربي سے دوايت بے كمايك آدى نے حضرت ابن عمر سے جمرا سودكو بوسدد ين كے سلسلے بيل يو مجما تو انہول نے جواب دیا کہ میں نے جناب نی کریم ماللہ کواے ہاتھ لگاتے اور چوہتے ہوئے دیکھاہے۔

فلاصة عديث اس مديث شريف كاخلاصه يب كه جراسودكو بوسد يناازروئ شرع ثابت ب-

مال رجل ابن عمر عن استلام الحجر: مرادبيه كداس آدى في صفرت ابن عمرض الدهم المحجر: مرادبيه كداس آدى في صفرت ابن عمرض الدهم المات حديث كالشرك من الدهم المات حديث كالشرك من المدينا كيا مي المدينا كيا مي المات حديث كالمرس في جناب المناسبة عن المناسبة المناسبة

ني كريم الله كوبوردية موے ديكما بال لي بوسد يناچا ہے-

﴿استلام رکن یمانی﴾

﴿ وَمِدِ يَثْ يُهِ ٢٣٥٨ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: لَمْ أَرَاالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَصَلَّمَ يَسْعَلِمُ مِنَ الْبَيْتِ إِلَّا الوُّكْنَيْنِ الْيَمَانِيِّيْنِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل الغات: يستلم: استلم (استقعال) يوسددينا، البيت: كم جمع بيوت.

قرجمه: حضرت این عمروشی الله عنما سے روایت ہے کہ میں نے جناب نی کر یم ماللے کو صرف رکشن بمانین کا استلام کرتے ہوئے

اس مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ دونوں رکن بمانی کا استلام کرے۔

﴿سواری پر طواف کرنے کا مسئله ﴾

﴿ صِدِيثُ بِهِ ١٣٥٩ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عِبَّاسٍ قَالَ: طَافَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ عَلَىٰ بَعِيْرٍ يَسْتَلِمُ الرُّكْنَ بِمِحْجَنِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل نفات: بعير: اوْتَنْ جِمْ بعر ان، بمحجن: ثير همروالا وْ تدار

قوجعه: معزت ابن عباس رضی الله عنهما سروایت ب که جناب نی کریم الله نے جمت الوداع کے موقع میں اونٹی پرسوار ہو کرطواف کیا اور مجن کے ذریعے سے جمر اسود کا بوسر لیا۔

خلاصة حديث كاس مديث شريف كاخلاصه يه بحبوري كرونت سواري پرسوار به وكرطواف كياجا سكتاب_

کلمات حدیث کی تشریکی النبی صلی الله علیه وسلّم فی حجة الوداع علی البعیر: طواف کے لیے پیدل والم تعدیث کی تشریکی الله علیه وسلّم فی حجة الوداع علی البعیر: طواف کے لیے پیدل واجب ہے؛ لیکن جناب نی کریم علی کے بعیر

تحى، آپ پيرل طواف كرتے لوگ آپكوند كي پاتے اور اس تح كا متعمدلوگول كومنا مك تج سكھانا تھا؛ اسلے آپ نے سوارى پرطواف كيا تاكد آپ كود كيوكر طواف كرنے كا طريقة سيكوليس" و هذا في طواف الافاضة اما الخصوصية او لعذر به فان المشى في الطواف عندنا و اجب وقال الطيبى رحمه الله انما طاف راكبا مع ان المشى افضل ليراه الناس اللهم و ذالك لاز دحامهم و كثرتهم" (مرقات ١٥/٥)، يستلم الركن بمحجن: ليني آپ نے جم اسود كا استلام عصارت اثراده كركيا۔

وطريق استلام

﴿ صِدِيثَ بْهِرُ ٢٣٦ ﴾ وَعَنْهُ: أَنَّ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَافَ بِالْبَيْتِ عَلَى بَعِيْرِ كُلَمًّا اَتَى عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَافَ بِالْبَيْتِ عَلَى بَعِيْرِ كُلَمًّا اَتَى عَلَى الرُّكُنِ أَشَادَ إِلَيْهِ بِشَىءٍ فِيْ يَلِهِ وَكَبُّرَ. رَوَاهُ الْبُحَارِئُ.

حل لغات: البيت: كمرجم بيوت، بعير: اوْتَى جُعْ بُعْرَ ان ـ

قوجمہ: ان سے روایت ہے کہ جناب نی کریم عظیمہ نے خانہ کعبہ کاطواف اوٹنی پرسوار ہوکر کیا، جب آپ جراسود کے سامنے آتے تو ایک چیز سے جوآپ کے ہاتھ میں تھی ،اس کی طرف اشارہ کرتے اور اللہ اکبر کہتے۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يب كددور ساشاره كرنے ساستام كامقعد ماصل بوجاتا ب_

كمات حديث كاتشرك وعنه: يعنى يروايت حفرت ابن عبائ سروايت ب، اتى على الوكن: كن سراد تجرامود ب

﴿ حَجر اسود کو چومنے کا طریقہ ﴾

﴿ صريت تمبر ٢٣١١﴾ وَعَنْ أَبِي الطَّفَيْلِ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَطُوث بِالْبَيْتِ وَيَسْتَلِمُ الرُّكُنَ بِمِحْجَنٍ مَعَهُ وَيُقَبِّلُ الْمِحْجَنَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لغات: يستلم: استلم (استفعال) بوسد ينا ، محجن: ثير حر والا دُندا

قوجمه: حفرت الواطفيل رضى الله عنه سدوايت بكر من في جناب في كريم علي كوفائه كعبه كاطواف كرتے ديكها كرآب مجن سے جراسود كي طرف اثاره كرتے اوراس كوچو متے ـ

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلامه يه كدور سائاره كركے جومنے ساتلام كامتعمد حاصل موجاتا ہے۔

كلمات حديث كي تشري الركن: ركن عمراد جراسود -

﴿ هَانْضُهُ طُوافٌ وَسَعَى نَهُ كَرِيهِ ﴾

﴿ مديث بُمر ٢٣ ٢٣٧ ﴾ وَعَنْ عَالِشَة قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ النِّي صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ لَا تَذْكُرُ إِلّا الْحَجُ، فَلَمُّا كُنّا بِسَرِفَ طَمِفْتُ فَلَحَلَ النّبِي صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَآنَا آبْكِيْ، فَقَالَ. لَعَلكِ نَفِسْت ؟ قُلْتُ: نَعَمْ! قَالَ: قَالَ ذَلِكَ شَيْءً كَتَبَهُ اللّهُ عَلَى بَنَاتِ آدَمَ، فَافْعَلِيْ مَايَفْعَلُ الْحَاجُ غَيْرَ آنَ لَا تَطُوْفِي بِالْبَيْتِ حَتَى تَطْهُرِيْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل لغلت: طمشت: طَمَتُ (ن)طمنا المرأة حاكنه بوناء كتبه، كُتُبَ (ن) كتابةً لكمنار

قو جعه : حفرت عائش صدیقہ رضی اللہ عنہا ہے روایت ہے کہ ہم جناب نی کریم علی ہے ہم راہ صرف نج کے ارادہ سے نکلے ، جب ہم مقام سرف میں پنچے تو میں حاکھہ ہوگئ ، اور جناب نی کریم تلک میرے پاس اس حال میں تشریف لائے کہ میں رور ہی تھی ، تو آپ نے فرمایا کہ شایوتم حاکھہ ہوگئ ہو؟ میں نے کہا: بی ہاں ، آپ نے فرمایا: بیا بیک ایک چیز ہے جے اللہ تعالی نے آدم کی بیٹیوں کے لیے مقرر کردیا ہے ؛ اس لیے تم دی افعال کروجو جی حکر ہے ہیں ، بس خانہ کعبر کا طواف نہ کروجب تک کہ پاک نہ ہوجا کہ۔

ال حدیث اس حدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ ج کے دوران بیش آجائے تو گھرانے کی ضرورت نبیل ہے، طواف کے علاوہ خلاصہ حدیث الحج کے تمام امورانجام دیتی رہے، جب پاک ہوجائے بعد میں طواف کرے۔

کلمات حدیث کی تعریک منابید میں سرف فی کا تذکرہ کرتے نےاس کا یہ مطلب نہیں ہے کہ احرام میں عمرہ کلمات حدیث کی تشریک مثال نہ تھا، بے فک احرام میں عمرہ شامل تھا؛ گر جوت شکی سے نبی شکی لازم نہیں آتی ہے، اس تاعد ہے کی رو سے یہاں آگر صرف فی کا تذکرہ کیا ہے، تو تحض عمرے کا تذکرہ نہ کرنے ہے عمرے کی نبی لازم نہیں آتی ہے "فلما کنا ہسوف: یہ کہ کرمہ سے چھیل کی دوری پر ایک مقام کا نام ہے، طعنت: اس کے معنی حین آنے کے آتے ہیں، فافعلی ما یفعل المحاج: فی کے دوران تجاج میں کے لیے پاکی شرط اور المحاج: فی کے دوران تجاج میں المحاج نام کے کہ کہ ان افعال کوانجام دیتا ہے، بی طواف نہیں کرتا ہے؛ اس لیے کہ طواف

ومشرک کے لیے طواف

﴿ مديث بْهِ ٣٣١٣﴾ وَعَنْ أَبِى هُرَيْرَةَ قَالَ: بَعَثَنِي أَبُوْبَكُو فِي الْحَجَّةِ الَّتِيْ آمَرَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهَا قَبْلَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ يَوْمَ النَّحْوِ فِيْ رَهْطٍ آمَرَهُ أَنْ يُؤَذِّنَ فِي النَّاسِ آلَا لَايَحُجُّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكُ وَلَا يَطُوْفَنَ بِالْبَيْتِ عُرْيَانً. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل لفات: رهط: تنن عدال تك كي جماعت تع أرهط

كے ليے پاكى داجب ہے، جبتم پاك ہوجا و تو بعد ميں طواف كراوج ممل ہوجائے كا۔

من جمع : حضرت الو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ ابو بکرنے جمعے جمۃ الوداع سے پہلے اس ج میں جس میں جناب نی کریم علاق نے ان کوامیر ج بنا کر بھیجا تھا، اس جماعت کے ساتھ بھیجا کہ لوگوں میں ساعلان کردیں کہ اس سال کے بعد مشرکین شرج کریں، اور شکوئی پر ہند طواف کرے۔

خلاصة فديث مدعث شريف كاظامه يب كرفح ايك عبادت بجس كيلة ايمان شرطب اس ليمشركين اب في ذكري-

امره النبي صلى الله عليه وسلّم عليها قبل حجة الوداع: يعنى جناب ني كريم عليه في كلّ عليه كلّم عليها قبل حجة الوداع: يعنى جناب ني كريم عليه في كلّم الله عليه وسلّم عليها قبل حجة الوداع عنار بمل الله عليه الله عنه الله عن

برایت کی گئی کروہاں پراعلان کرادی کی اب کوئی مشرک جج نہیں کرے گا ، فی دھط امرہ ان ہؤ فن فی الناس النے: چناں چاک سے کم کی تھیل کے لیے انہوں نے جماعت تھکیل دی ، جس میں حضرت ابو ہریرہ بھی تے ، اس سے مقصد برتھا کہ جب زیادہ لوگ اعلان کرنے والے ہوں گر ، تو ہما لوگوں کو اس کا علم ہوجائے گا اورفت بازلوگوں کا عذر بھی فتم ہوجائے گا ، و لا بطوفن بالبیت عوبان : لیمن زانہ جاہلیت میں ایک رسم بیتی کہ لوگ اس گمان سے نظے ہو کر فائ کہ حبر کا طواف کرتے ہے کہ ہم ان کیر ول میں گناہ کرتے ہیں ؛ اس لیے ان کیر وں کو پین کرطواف کریں یہ بری ہے ادر نی ہے ؛ اس لیے وہ لوگ نظے ہی طواف کرتے تھے ، شریعت اسلامیہ نے اس فتح رسم یا بندی لگادی۔

الغصل الثاني

﴿خَانَةُ كَعَبُهُ كُودُ بِكُمْ كُرُ هَاتُمُ الْمَانَا﴾

﴿ مديث مُبِر ٢٣٢٣﴾ عَنِ الْمُهَاجِرِ الْمَكَى قَالَ : سُئِلَ جَابِرٌ عَنِ الرَّجُلِ يَرِى الْبَيْتَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ، فَقَالَ: قَدْحَجَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَلَمْ نَكُنْ نَفْعَلُهُ. رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ وَابُوْدَاوُّدَ.

حل لفلت: البيت: كمرتِّع بيوت، يرفع: رَفّعُ (ف) رفعاً المحانات

موجهد: مهاجر کی سے روایت ہے کہ حضرت جابڑے خاند کعبدد کھے کر ہاتھ اٹھانے والے فض کے بارے میں پوچھا کیا، تو انہول نے جواب دیا کہ ہم نے جناب نی کریم ملک کے ساتھ ج کیا ہے؛ لیکن ہم لوگوں نے ایسا نہیں کیا تھا۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلامه يه كه فان كعبكود كيدر ما تعزيس الحانا جا يـــ

کراس طرح باتحا تحا تحا تحا تحا تحر علی الله علی الله علی الله الله علیه و مشروع ام لا" (مرقات ۱۹۸۵)، فقال قد حججنا مع النبی صلی الله علیه و سلم فلم نکن نفعله: مرادیب کراس آدی کایر طریقه شروع نیس بسیسی قول کرمطابق خاد کوید پر بهای نگاه پرت و دست محلی الله و سلم فلم نکن نفعله: مرادیب کراس آدی کایر فی بدیه عند رؤیة البیت، وقیل: یرفع، قال القاری فی شرحه: ای لا یرفع و فو حال دعاء ه، لانه لم یذکر فی المشاهیر من کتب اصحابنا بل قال السروجی الملعب تو که و صرح الطحاوی بانه یکره عند المتنا الثلالة" رفتاوی شامی ۵۰۳/۳)

﴿سعی کے دوران کعبه دیکھ کر هاتھ اٹھانا﴾

﴿ صِدِيثُ بِهِ ١٣٧٥﴾ وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: الْقَبَلَ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَذَحَلَ مَكَةَ قَالْمَهَا إِلَى الْمُحَجِرِ فَاسْتَلَمَةً، ثُمَّ طَافَ بِالْبَيْتِ، ثُمَّ آتَى الصَّفَا، فَعَلَاهُ حَتَى يَنْظُرَ إِلَى الْبَيْتِ، فَرَفَعَ يَدَيْهِ، فَجَعَلَ يَلْكُرُ اللَّهَ مَا شَاءً وَيَدْعُوا. رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُد.

حل لفات: فلحل: دَخَلَ (ن) دُخُولًا وأقل موناء المعجر: كَالْرَجْعَ أَحْجَلا_

توجمه : حفرت الديريه وشي الدعد عدوايت بكر جناب بي كريم تلك جل كركدات الوجراسود كياطرف بوسكر يوسد يا الجر

آب نے خاند کعب کا طواف کیا، محرصفا آکراس کی بلندی پر چھے یہاں تک کہ خاند کعب نظر آیا ہو آپ نے ہاتھ اٹھا کرجس طرح جاہا ذكراور دعاكرتي رہے۔

قلاصة حديث إسى بين السفاوالمروه كدوران جب فانه كعب نظرات ، توماته الماكركثرت عد كراورخوب دعاكرني عابي-

مم الى الصفا فعلاه النع: لعن جناب ي كريم علية في على واهل موت بي يبل طواف كياء وورکعت"صلاة طواف" برحی اورسی کے لیے چلے گئے،جب مفایہاڑی کی بلندی پر جڑھے اور

وہاں سے خانہ کھی نظر آیا تو آپ نے ذکراور دعا کی۔

﴿نَمَازُ وَطُوافَ مِينَ مَمَاثُلُتَ﴾

﴿ صِرِينَ تُمِرِ ٢٣ ٢٣ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسِ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَالَ: الطُّوَافَ حَوْلَ الْبَيْتِ مِثْلَ الصَّلَاةِ إِلَّا ٱنَّكُمْ تَتَكُلُّمُونَ فِيهِ فَمَنْ تَكُلُّمَ فِيهِ فَلَا يَتَكُلُّمَنَّ اللَّهِ خَيْرِ. رَوَاهُ التَّرْمِذِي وَالنَّسَائِي وَالدَّادِمِي وَذَكَرَ التَّرْمِذِيُّ جَمَاعَةً وَقَفُوهُ عَلَى ابْنِ عَبَّاسٍ.

حل لغات:مثل تغير جم امثال.

و توجعه: حطرت ابن عباس وضي الله عنها سے دوايت ہے كه جناب في كريم تكافئة نے فرمايا كدخانة كعبر كرد طواف كرنا نماز كے ما نغر ہے،الا بدکرتم طواف میں بولتے ہو،تو جوطواف میں بات کرے اس کواچھی باتیں کرنی جا ہے۔

فلاصة حديث طواف كى بوى اجميت ب، كى وجهيك جناب نى كريم تان في المطواف حول البيت مثل الصلاة".

قال الطواف حول البيت: لين الطواف سراد فانة كعبكا طواف بن السفا كانشر من الطواف بن السفا والمروة" (مرقات ١٨/٥)، مثل الصلاة الغ: به

تشبيدو ابمي ہے؛ يعنى جس طرح سے نماز كا تواب بهت زيادہ ب،ايے بى طواف كا تواب بى بهت زيادہ ہے؛ جي جمعہ كے خطبے كونماز تجيدري كي بي تو وبال بحي مراد تواب عي ب، ندكه وه يودوشرا نظامرادين جونماز كي ليي سي ها هي قائمة مقام ركعتين الاصح لاذكر الزيلعي،بل كشطرها في الثواب"(درمختار ٢٣/٣)الا الكم تتكلمون فيه فمن تكلم فيه فلا يتكلمن الابعديو"مراديه بكدذكركر على تفكوبو ، دغوى باتس ندمول ، دغوى باتس كرنا مكرد وتحريى ب-

وحمر اسود کی حقیقت ہ

﴿ مِدِيثُ يُهِرِكُ ٢٣٧ ﴾ وَعَنْدُ قَالَ: قَالَ زَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَوْلَ الْحَجَرُ الْآسُودُ مِنَ الْجَنَّةِ وَهُوَ ٱشَدُّ بَيَاضًا مِنَ اللَّهَنِ فَسَوَّدَتُهُ حَطَايَا بَيْ آدَمَ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّرْمِلِيُّ وَقَالَ: طلَّا حَلِيْتُ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

حل لفات: الحجر: يُرْجَعُ احجار ، اللبن: دوده مُعُ الْبَان.

قرجمه: ان عددات بكرجناب في كريم الله في المرايا: جراسود جنت سارًا باورده دوده سيمي زياده سفيد تا الكن يى آدم کے گناہوں نے اس کوسیاہ کردیا ہے۔

خلاصة حديث المحديث مريف كاخلامه يب كرجراسودي كنامول كوجذب كرن كاملاحت إدوه جذب كرتاب

وهو اشد بياضا من اللبن الين جراسود جند عاراتماس وتت بر الكل من اللبن الين جمر الكل منيد كار القاال وتت بير الكل منيد تامفسودته خطایا بنی آدم: یکن چل کراس پارش کنامول کے جذب کرنے کی صلاحیت ہے

جس کی وجہ پر پھر لوگوں کے گنا ہوں کو جذب کرتے کرتے کا لا ہو گیا ہے۔

خ عمر اسود کی گواهی پ

حل لغات: يوم: ون يح ايام، يبصر البصر (افعال) د يكنا، لسان: زيان جع السند

خلاصة حديث جوبمى فخص اخلاص كے ساتھ جراسودكو چو مے كا، قيامت كے دن اس فخص كے تن ميس كوائى دے كا۔

كلمات حديث كانشرت قيامت كون الدوايت حفرت ابن عباس رضى الدعنها عمروى ب، ليبعثنه الله يوم القيامة بعني كلمات حديث كانشرت قيامت كون به

بقراللدتعالی کے دربار میں خلوس سے چومنے دالون کے حق میں کواہی دےگا۔

﴿ عمر اسود اور مقام ابراهیم جنت کے یاقوت هیں ﴾

﴿ حَدِيثُ مُهِ ٢٣ ٢٩﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَقَالَ: سَمِغْتُ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ يَقُولُ: إِنَّ الرَّحُنَ وَالْمَقَامَ يَاقُوْتَتَانَ مِنْ يَاقُوْتِ الْجَنَّةِ طَمَسَ اللَّهُ نُوْرَهُمَا وَلَوْ لَمْ يَطْمِسْ نُوْرَهُمَا لَآخَاءَ أَمَّابَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ. رَوَاةَ التَّرْمِذِيُ.

حل المفات: يافولتان: ياقوت كاحثنيه بها يك بيش قيمت پقر، جمع يو افيت، طمس: طمس (ض) طمساً بنور بهونا۔ قو جهد: حضرت ابن عمرض الندعنها سے روایت ہے کہ میں نے جناب نبی کر یم آلفظہ کو کہتے ہوئے سنا کہ جمرا سوداور مقام ابراہیم جنت کے یاقو توں میں سے دویا توت جیں بلیکن اللہ تعالی نے ان دونوں کے نور کو اٹھا لیا، اگر ان دونوں کا نور نہیں اٹھا تا، تو بید دونوں مشرق ومغرب کی تمام چیزوں کوروش کردیتے۔

ال مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ جنت کی تمام چیزوں ٹی بڑی چک ہے، ایک بھی چیز آ جائے تو پوری دنیا خلاصة حدیث روشن موجائے گی، اس بنیاد پر ججر اسود اور مقام ابراہیم کی وجہ سے پوری دنیاروشن موجاتی ؛ لیکن اللہ تعالی نے ان

كلمات حديث كي تشريح ان الوكن: ركن عمراد جراسود بي العجو الاسود" (موقات ١٥٠٥)، والمقام: يدوه بنتي پتر كلمات حديث كي مطاف من مشرق

كيلرف مبراور ممثرم كورميان أيك جالى دارقبه مل محفوظ ب، طمس الله نورهما: يعنى ان دونول پيترول كوركوسل كرف مل حكمت بيسيم كرايمان فيب پردسي و لعل المحكمة في طمسهما ليكون الايمان غيبيا لا عينيا" (مرقات ١٥٠٥).

﴿ استلام وطواف كى فضيلت ﴾ ﴿ صريث ْبر ٤٣٧٤ ﴾ وَعَنْ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرانُ ابْنَ عُمَرَكَانَ يُزَاحِمُ عَلَى الرُّكْنَيْنِ زِحَاماً مَارَأَيْتُ اَحَداً مِنْ أَضْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ يُزَاحِمُ عَلَيْهِ، قَالَ: إِنَّ الْحَلَّ، فَالِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ يُوَاحِمُ عَلَيْهِ، قَالَ: إِنَّ الْحَقَلَ، فَالِّي سَمِعْتُ وَسُولَ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلِمَ يَقُولُ: مِنْ طَافَ بِهِلَا الْبَيْتِ أَسُبُوعًا، فَأَحْصَاهُ كَانَ كَعِنْقِ رَقْبَةٍ، وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: لَا يَطَعُ قَدْماً وَلَا يَرْفَعُ أَخْرِى إِلَّاحَطُ اللهُ عَنْهُ بِهَا خَسَنَةً. وَوَاهُ التَّوْمِلِيُّكَ.

حل الخات: یز احم: زَحَمَ (ف) زحماً بھیر کرتا، المخطابا: جمع ہے خطینة کی بھن گناو، البیت: کم جمع بیوت۔
قد جعهد: حفرت عبیدین عیرے دوایت ہے کہ ابن عمر دونوں رکنوں کو ہاتھ لگانے میں جس طرح سبقت کرتے کہ میں نے جناب نی کریم سیافت کرتے ہوئے کہ سبقت کرتے نہیں دیکھا، نیز وہ کہتے اگر میں یہ کروں تو بجھے مت دوکو؛ اس لیے کہ بیل نے جناب نی کریم سیافت کو کہتے ہوئے ساہے کہ جونعی بیل نے جناب نی کریم سیافت کو کہتے ہوئے سنا ہے کہ ان دونوں کو چھونا گنا ہوں کے لیے گفارہ ہے، میل نے کہتے ہوئے سنا ہے کہ جونعی فات کھیا کا سات طواف کرے اس کی حفاظ عت کرتے ہوئے ، تو اس کو خلام آزاد کرنے کے برابر ٹو اب ملک ہے، نیز میں نے کہتے ہوئے سنا ہے کہ وہ وہ سات کی دوہ ایک قدم کے کردوم اقدم نین اٹھا تا کہ اللہ تعالی اس کے گناہ کو منادیا ہے اور اس کے لیے نیکیاں لکھ دیتا ہے۔

علا صریح دیث آس حدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ فضائل کے حصول میں آدی کو بڑھ چڑھ کر حصہ لینا جا ہے۔

عبید بن عمیر: ان کی پیرائش جناب نی کریم الله کے زمانے میں بوچکی تھی پیض او گون کا کہنا ہے کمات حدیث کی تشریح کا کہنا ہے کمات حدیث کی تشریح کے ان کی صحابیت میں اختلاف

ہے؛ البتہ تابعہ ہونے میں سب کا اتفاق ہے، علی الر کنین: مراد جراسوداور رکن یمانی ہے، کفار قلل خطاب خطاسے مراد کناه صغیره بیں ؛ یعنی طوائ کے دوران جراسود کا استلام کرنے سے گناو صغیرہ ختم ہوجاتے ہیں۔

خرکنین کے درمیان دعاہ

﴿ صَرِيتُ بُهِ اللَّهِ كَانُ عَبْدِ اللَّهِ بُنِ السَّائِبِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ الْلَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: مَا بَيْنَ الرُّكْنَيْنِ رَبُّنَا آتِنَا فِيْ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِيْ الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَلِنَا عَذَابَ النَّادِ. زَوَاهُ أَبُوْدَاؤُدَ.

حل مفات: رب: بالنهارجع أرْبَاب، حَسَنَةً: الهمائي جَعْ حَسَنَاتُ ، النَّارُ: آك جَعْ لِيْوَان _

قر جمع: حضرت عبدالله بن السائب رضى الله عند بروايت ب كهيل في جناب في كريم الله كودونول ركول كروميان كيت موسك الانتواب المناد".

اس مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ آدمی جراسوداور رکن یمانی کے درمیان دعا کرے، خاص طور سے اس مدیث خلاصہ حدیث مریف علاقہ کا طریقہ ہے۔ شریف میں ذکورد عاکو پڑھے، یہ جناب نی کریم علقہ کا طریقہ ہے۔

كلمات مديث كي تشريح الوكنين: ركنين عمراو جراسوداوركن يمانى --

وسعی کا حکم ہ

﴿ مديث تبر ١٣٤٧ ﴾ وَعَنْ صَفِيَّة بِنْتِ شَيْبَةُ قَالَتْ: اَخْبَرَتُنَى بِنْتُ ابِى تُجْرَاةَ قَالَتْ: دَخَلْتُ مَعْ بِسْوَةٍ مِنْ فُرْيَشٍ دَارَآلِ ابِي حُسَيْنٍ نَنْظُرُ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَسْعَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَوْوَةِ فَرَاثَتُهُ يَسْعَى وَإِنَّ مِنْزَرَةُ لَيَدُورُ مِنْ شِلَةِ السَّعِي، وَسَبِعْتُهُ يَقُولُ: اسْعَوْا قَإِنَّ اللّهَ كَتَبَ عَلَيْكُمْ السَّعْي. وَرَاهُ فِيْ شَرْح السُّنَّةِ، وَرَوَى احْمَدُ مَعَ إِخْتِلَالِ.

حل اغلت: دار: كر بح ديار معتور: تهيند ج مازر _

توجمه : معزت مغيد بنت شيب دوايت ب كد جميع بنت تجرات نے بتايا كديس قريش كي مورتوں كے ساتھ آل ابوسين كر كئي ؟ تا كريم جناب ني كريم علية كوديكسين،ال وقت آپ صفامروه كي سعى كرر ب تنے، چنال چديل نے و كھا كرآپ دوڑر ب تھاور آپ کی شدت دوڑ کی وجہ ہے آپ کا تہبند محوم رہا تھا، نیز میں نے آپ کو کہتے ہوئے سنا کہ آپ لوگ سمی سیجیے؛ اس لیے کہ اللہ تعالیٰ نے آب لوگوں برستی کوواجب کیاہے۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يه كد"سعى بين الصفا والمروة" واجب -

كلمات حديث كي تشريح صفيه بنت شيبه: ان كامحابيت ش كلام ب، البتة تابعيت ش وثوق ب، ننظر الى دسول الله كلمات حديث كي تشريح عليه وسلم الغ: يرعورتس جناب ني كريم عليه كود يعض الله عليه وسلم الغ: يرعورتس جناب ني كريم عليه كود يعض الله عليه وسلم الغ: يرعورتس جناب ني كريم عليه كود يعض الله عليه وسلم الغ: يرعورتس جناب ني كريم عليه كود يعض الله عليه وسلم الغ

وكيوكرافعال عج يادوس ماموريكيس "لنستفيلمن علمه وبركته" (موقات ٣٢٢/٥)، فوأيته يسعى وان منزره لميلور: مرادير ے كرآب سى كے دوران تيز دوڑ رہے تھے، فان الله كتب عليكم السعى بمفامروه كى سى واجب ب يداحناف كا مسلك ہے؛ کیکن حضرات ائمہ ثلاثہ کے نزدیک فرض ہے، بیرحضرات حدیث باب سے استدلال کرتے ہیں، حضرات احتاف مجمی اس روایت سے استدلال کرتے ہیں بھروہ کہتے ہیں کہ بیعدیث شریف جوت کے اعتبارے قطعی نہیں بلکے فنی ہے؛ اس کیے اس مدیث شریف ہے زياده سے زياده د چوپ کا اٹيات تو ہوسکتا ہے ، فرض کانيش " قال الطيبي رحمه الله اي فرحن فدل على ان السمي فرحن ومن لم يستع بطل حجه عند الشافعي و مَالك واحمد رحمهم الله تعالىٰ وقال ابو حتيقة وحمه الله السعي واجب لان الحفيث ظني"(مرقات17/57)_

﴿ مَدِيثَ بُهِ اللهِ مِنْ عَبْدِ اللهِ بَنِ عَبْدِ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ﴿ مَدِيثَ بُهِ مَا لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْعَى بَيْنَ الصُّفَا وَالْمَرْوَةِ عَلَى بَعِيْرٍ لَا ضَرْبَ وَلَا طَرْدَ وَلَا إِلَيْكَ اِلَيْكَ. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ. حل لفات: بعير :ادُنْي جُع بعران ،طود: طَوَدَ (ن)طود أدوركرنار

توجمه: حضرت قدامد بن ميدالله بن عماروس الله عندسے روايت ب كه يس في جناب بى كريم على كومفامروه كي سوارى ير كرتي موئ ويكماء نددوركرنا تحااورند موجو

خلاصة حديث اس مدعث شريف كاخلامه بيسه كم مجبوري من سواري پرسوار موكرسي كى جاسكتى ب

کمات حدیث کی تشریخ است دیکھے: (سواری پرطواف کرنے کا طریقہ)۔ تصیلات دیکھے: (سواری پرطواف کرنے کا طریقہ)۔

﴿طواف میں اضطباع ی

﴿ مديث نمر ١٣٤٣ ﴾ وَعَنْ يَعْلَى بْنِ أُمَيَّةَ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَمَلَّمَ طَافَ بِالْبَيْتِ مُصْطَيِعاً بِبُرْدٍ اخْطِرَ. رَوَاهُ التَّرْمِلِيُّ وَٱبُودَازُّدَ وَابْنُ مَاجَةَ وَاللَّادِمِيُّ.

حل منات:مصطبعا:اصطبع (التعال) بازوظا بركرنا ،وا من بقل سے جادركونكال كريا تي كا عرص يد النا ،بود: جادر جمار د قوجعه: حفرت يعلى بن اميرض الله عند عددايت ب كريم تلك في خاريك طواف اس حال بس كياك آب بز

وادر اضطهاع كي اوسة تق

فلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه بيب كرطواف كدوران اضطباع متحب ب-

إلى يك اطاف بالبيت مضطيعاً: بإدراور من كالك طريقة ووب جومام طور يرد يكف عل آتاب كه اوڑ سے دالے کے دولوں موٹ سے جادر کے اندر ہوتے ہیں،اور ایک طریقہ تو ہے کہ دایاں موٹ ما بابرراء اوروا الى بقل سيجا دركونكال كرياكس كنده يروال إن البود احدر ووجا دركمل سزنتى بكداس جادرش سزدهاديال تمیر"ای فیه شطوط شعشر"(مرفات ۱۳۲۳).

﴿طواف کی ایک سنت﴾

﴿ وَمِدِيثُ بِمِهِ ١١٤٤ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابَهُ اغْتَمَرُوا مِنَ الْجَعَّرَالَةِ فَرَمَلُوا بِالْبَيْتِ قَلَالًا وَجَعَلُوا أَرْدِيَتُهُمْ تَحْتَ ابَاطِهِمْ ثُمَّ فَلَفُوهَا عَلَى عَوَاتِقِهِمْ الْيُسْرِي. رَوَاهُ أَبُودَاؤُد.

حل فغات: رملوا: رَمَلُ (ن)رملاً كنرول كو بلات بوئ چانا،اردية: يح برداءكى بمعنى جادر،اباط: يح بابطك بمن بخل،عواتق:جمع ہےعاتق کی بمتی کدرما۔

قد جمه : حضرت این عباس رضی الله حنها سے روایت ہے کہ جناب نی کر یم تلک اور آپ کے اصحاب نے جرائ سے عمرہ کیا ، توطواف می تین مرتبدرل کیااورا پی ما درکوبغل کے بیجے سے نکال کرایئے کندموں پروال لیا۔

خلاصة عديث ال مديث شريف كاخلاصهيب كماواف بس دلست ب-

كلمات مديث كي تشريح الجعوانة: ميتات في وعروش بايك بجوكم كرد ساس وياده قريب بعوملوا بالبيت اللاقاً: مرادشروع كي تمن چكرين ؛ لين اضطباع شروع كي تمن چكرول على سنت ب-

الغصل الثالث

﴿استلام رکنین کی اهمیت﴾

﴿ مِدِيثُ نُمِرِ ٢١/٤ ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَوَ قَالَ: مَاتَوَكُمًا اسْعِلَامَ هَلَيْنِ الرُّكُنَيْنِ الْيَمَالِيُّ وَالْحَجَرِ فِي شِلَّةٍ وَلَارَخَاءٍ مُنْذُ رَأَيْتُ رَشُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْعَلِمُهُمَا مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَلِيْ دِوَايَةٍ لَهُمَا: قَالَ نَافِعٌ: رَأَيْتُ ابْنَ عُمَرَ يَسْتَلِمُ الْحَجَرَ بِيَدِهِ ثُمُّ قَبَّلَ يَدَهُ وَقَالَ مَا تَرَكْتُهُ مُنْذُ رَأَيْتُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَغْمَلُهُ.

حل لفات: المحبر: المرجع احجار، وعاء: قرافي-

توجعه: حفرت ابن عروض الله منها عدوايت به كه بم في ان دولون ركون اليني ركن يماني اور جراسود كا استلام ند بعير من جهوز ا ن چیزی، جب سے می نے جناب نی کریم کا کا استام کرتے دیکھا ہے۔

فلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يب كرجراسودادركن يمانى كاستلام كياجانا جا ي-

الى شدة و الارعاء: مرادايه بميز بوياند بودول مالول شي معرات محلية كرام جراسوداددكن كمات حديث كي تشريح كالم جراسوداددكن على تشريح كالم جراسوداددكن

ፋ عذر کی وجه سے طواف کاحکم 🦫

﴿ مِدِيثُ مُرِكِ ٢٢٤٧ ﴾ وَعَنْ أُمُّ سَلَمَة قَالَتْ: شَكُوتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّى اَشْتَكِي، فَقَالَ: طُوْفِيْ مِنْ وَرَاءِ النَّاسِ وَالْبَ رَاكِبَةً، فَعُلْفُتُ وَرَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَصَلَّمَ يُصَلَّى إلى جَسْبِ الْهَيْتِ يَقْرُأُ بِالطُّوْرِ وَكِتَابِ مُسْطُورٍ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل الفات: شُكُوْتُ: شكلى (ن)شكايةُ شكايت كرنا، اشتكى (التعال) يمار بونا_

قوجمه: حفرت امسلم سے روایت ہے کہ یس نے جناب نی کر یم اللے سے شکایت کی کہ یس بار ہوں ، تو آپ نے فر مایا: تم لوگوں ے بیجے سواری پرطواف کرلو، چنال چہ میں نے طواف کیا ،اور جناب نی کریم اللے بیت اللہ کے پہلو میں سورہ طور کی تلاوت کرتے

فلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه بيب كهندركي وجه سواري برطواف كياجا سكتاب-

ى تعديم الشكوت الى رسول الله صلى الله عليه وسلّم انى اشتكى الغ: ام المؤمنين معرت امسله رضی الله عنها جے کے دوران بار ہو کئیں، تو انہوں نے جناب نی کریم سی کے کہا کہ یارسول اللہ! میں بار ہوگئی ہوں، پیدل طواف نہیں کرسکتی، اب میں کیا کروں؟ تو آپ نے فرمایا کہ پیدل کے بجائے طواف کرنے والوں کے بیجے میں سواری پرطواف کرلو؛ چنال چدانہوں نے ایسان کیا۔

﴿ بوسه كس وقت حضرت عصر كا خطاب ﴾ ﴿ بوسه كس وقت حضرت عصر كا خطاب ﴾ ﴿ وَيَقُولُ إِنَّىٰ لَاعْلَمُ آنَّكَ حَجَرٌ وَيَقُولُ إِنَّىٰ لَاعْلَمُ آنَّكَ حَجَرٌ مَا تَنْفَعُ وَلَا تَصُرُّ وَلُوْلَا أَنَّى وَأَيْتُ وَمُسُوَلَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ يُقَبِّلُكَ مَا قَبْلُتُكَ. مُتَفَقَّ عَلَيْهِ. **حل لغات**: اعلم: عَلِمُ (س)علماً جائنا، تنفع: نَفَعَ (ف) نفعاً فاكده كَبْجًا نا، تعضر: صَور (ن) صوراً تعمال كَبْجَاناً ـ قوجهه: حضرت عابس بن ربيد معروايت ب كه ش في عمر كو پقركو چوست بوئ ديكها، وه كهدر به يتع ش جانا بون كه توايك بقرب، توندن ببني سكتاب ندنتصان ، اورا كريس جناب ني كريم علي كوتيرابوسه لين موئ ندد يكتا توش تجيه نه چومتا

خلاصة حديث عجراسود كاستلام ش مرف جناب ني كريم الله كالريق كى بيردى ب، باقى اور كونبيس بـ انی لاعلم انك حجو ما تنفع و لاتصر : لین تیری حقیقت ایک پیخری ہے، اسکے علاوہ کونیس ہے، کمات حدیث کی تشری کی تشری کے انتخاب کی تشری کی دیوالیے پن کی دجہ سے بعض پیخروں کونانع

اورضار بجے بیں ، ولولا انی دایت النے: بس نے بس جناب نی کر پھنے کو چوہے ہوئے دیکھا ہے؛ اس لیے مس تھے چوم رہا ہوں

﴿رکن یمانی پر دعا کرنا ﴾

﴿ صِيثُمْرِ ٩٣٤٩ ﴾ وَعَنْ أَبِيْ هُوَيْوَةَ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: وُكِّلَ بِهِ سَبْعُونَ مَلَكًا يَعْنِي الرُّكُنَ الْيَمَالِيُّ فَمَنْ قَالَ اَللَّهُمُّ إِنِّي اَسْتَلَكَ الْمَغْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي اللُّهُيَّا وَالْآخِرَة، رَبَّنَا آتِنَا فِي اللُّهُيَا حَسَنَةً وَلِيْ الْآحِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَلَىابَ النَّارِ ، قَالُوْا: آمِيْنَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ.

حل لغات:ملكا:فرشة بِمُ مَلَا لِكُ ،حَسَنَةً: بَمَالِ لَي بَمْ حَسَنَاتً

قوجهه: حعرت الوبريه رضى الله عند مدوايت م كه جناب ني كريم تكاف نفر مايا: وبال يعنى ركن يمانى يرسر فرشة متعين بي بو

جو خص بیدها پڑھے فرشتے اس پر آمین کہتے ہیں۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه يه كدركن يمانى ك پاس دعاكرنى عابيد وال دعا تول موتى بـ

کلمات صدیث کی تشریخ کا مده معون ملکا النع:رکن بمانی کے پاس ترفرشتے متعین ہیں، قالوا آمین:ان فرشتوں کا کلمات صدیث کی تشریخ کام دعا کرنے والے کی دعا پرآئین کہنا ہے۔

﴿طُواف کے دوران ذکر کی فضیلت﴾

﴿ صَرَيَتُ نَهُ ﴿ ٢٣٨ ﴾ وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ: مَنْ طَاقَ بِالْبَيْتِ مَنْعاً وَلاَ يَتَكَلَمُ إِلَّا بِسُبْحَانِ اللّهِ وَالْحَمْدُ لِلْهِ وَلَا إِلَّا اللّهُ وَاللّهُ اكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُولًا إِلَّا بِاللّهِ مُحِيَثُ عَنْهُ عَشْرُ مَنْ طَاقَ فَتَكُلُمَ وَهُوَ فِيْ تِلْكَ الْحَالِ خَاصَ فَيَكُلُمُ وَهُوَ فِيْ تِلْكَ الْحَالِ خَاصَ فَيْ الرَّحْمَةِ بِرِجْلَيْهِ كَخَايْضِ الْمَاءِ بِرِجْلَيْهِ. زَوَاهُ ابْنُ مَاجَةً.

حل لفات: البيت: كرجم بيوت، محيت: معين (ن) معياً مثانا، خاض: خاض (ن) خوضاً وافل بوتار

قوجهه: ان سروایت ہے کہ جناب ہی کریم الله فی فرمایا: جس فض نے سات مرتبہ فائد کعبر کا طواف کیا اور "سبحان الله والحمد لله ولا الله والله اکبر ولا حول ولا قوة الا بالله" کے علاوہ کی بیش کہا، تو اس کے دس گناہ معاف کے جاتے ہیں، اور جس فض نے ان کلمات کو کہتے ہوئے جاتے ہیں، اور جس فض نے ان کلمات کو کہتے ہوئے طواف کیا، تو وہ یانی میں وافل ہوئے۔

خلاصة حديث أوى طواف كدوران فالتوبات ندكر، بكدذكرواذكارش لكارب،اس يوعفاكد عيل-

عدد عشر سينات المخ: لين بيرفط المركام كوش على الدورة المركان الدورة المركان الدورة المركان المركام ال

﴿باب الوقوف بحرفة﴾

الغصل الأول

﴿ وَدِيثُ مُهِ ١٣٨١﴾ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ ابِي بَكُرِ التَّقَفِي اللهُ سَأَلَ السَّ بْنَ مَالِكِ وَهُمَا غَادِيَانَ مِنْ مِنِي الْيَ عَرَفَةَ كَيْفَ كُنْتُمْ تَصْنَعُوْنَ فِي هَٰذَا الْيَوْمِ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ؟ فَقَالَ: كَانَ يُهِلُّ مِنَّا الْمُهِلُّ فَلَايُنْكُرُ عَلَيْهِ وَيُكَبِّرُ الْمُكَبِّرُ مِنَّا فَلَا يُنْكُرُ عَلَيْهِ.

حل الخات: غادیان: غدا (ن) غدو اس کے وقت جانا، الیوم: ران جمنایام، بھل: هلل (تفعیل) کلم طیب پڑھنا۔ موجعه: حضرت محر بن ابو بر تعنی سے روایت ہے کہ انہوں نے حضرت انس بن مالک سے اس وقت بوجها جب وہ دونوں میں کے وقت منی سے عرفہ جارہے تھے، کہ آپ لوگ جناب ہی کر یم الکا کے ساتھ اس دن میں کیا کرتے تھے؟ تو انہوں نے کہا: ہم میں سے
تبدیہ کہنے والے تبدیہ کہتے تھے اور ہم میں سے تبحیر کہنے والے تجمیر کہتے تھے اور ان دونوں کوئے نیس کیا جاتا۔ خلاصہ حدیث تج کے دور ان تلبیہ کہنا جا ہے تو تلبیہ کے اور اگر تجمیر کہنا جا ہے تو تجمیر کے، ازرد سے شرع دونوں کی محجائش ہے۔ محمد بن ابو بكر ثقفى: تقيف طائف من ايك قبيكانام ب،اى قبيكى طرف منوب بوكر المنقفى كهلات بي معاديان: مرادم كونت جانا، كان يهل منا المهل الغ: مراد تلبيه كهنا ه العن جن الم كورى مرضى تلبيد كين موتى وواوك تلبيد كيت وان بركوكى نكير تبيس موتى مى -

﴿عرفه مہیں وقوف ﴾

﴿ مديث بُهِ ٢٣٨٢﴾ وَعَنْ جَابِرِ أَنْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: نَحُوْتُ هَهُنَا وَعِنَى كُلُّهَا مَنْحَرٌ فَانْحَرُواْ فِيْ رِجَالِكُمْ وَوَقَفْتُ هَهُنَا وَجَمْعٌ كُلُّهَا مَوْقِفٌ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. حل لفلت: رحال: يمع ب رحل كيمعن قيام كاه، وقفت: وَقَفَ (ص) وقو فأنهرنا ـ

قوجمه: حفرت جابروسى الله عند سے روایت ہے كہ جناب ہى كريم الله في مايا: مس في تو يهال قربانى كى ہے جاليكن بورامنى قربان کا ہے؛ اس کیے تم لوگ اپنی قیام کا ہیں قربانی کراو، میں نے یہاں قیام کیا ہے؛ حالانکہ پوراعرف کم مرف کی جگہ ہے اور میں یہاں مخمرا ہوں، جب کہ بورا مرد لغہ موقف ہے۔

اس مدیث شریف کا خلاصہ بیہ ہے کہ عرفہ منی اور مزدلفہ کے تمام صدود دوران جے استعال کی جاسکتی ہے، تجاج خلاصۂ صدیث کرام کی مرض ہے، جہاں جا ہے تقہر سے اور قربانی کرے۔

المات حديث كانشرك من والعبواب ان المشار اليه موضع مخصوص من مواضع منى" (مرقات ١٢٩/٥)، ووقفت هذا الع: يعن معرّات كقريب وه جكرم ادب جهال جناب ني كريم تلك في مفر ماياتها ، آپ في مدكرواس كردياك

پر احرفات مغمرنے کی جکہ ہے میرے مغمرنے کی جکہ کو وقوف عرفہ کے لیے خاص نہر لیا جائے ، و وقفت جھنا و جمع الع : مزدلفہ کا دومراجم جع مجی ہے؛ لین اس سےمراد مرد لفہ ہے۔

﴿يوم عرفه كى فضيلت﴾

﴿ صِرِيثُ بُرِ٣٨٨﴾ وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: مَا مِنْ يَوْمِ الْحُفَرَ مِنْ أَنْ يُعْتِقَ اللَّهُ فِيْهِ عَبْدًا مِنَ النَّارِ مِنْ يَوْمِ عَرَفَةَ وَإِنَّهُ لَيَدْنُو ثُمُّ يُهَاهِي بِهِمُ الْمَلَاتِكَةَ فَيَقُولُ مَّا ارَادَ المؤلَّاء؟ رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لغات: يوم: ول جمع ايام بيعتق: اعتق (اقعال) آزاد كرتا_

موجمه: حضرت عائشه صديقه رضى الله عنها سے روايت ب كه جناب ني كريم الله فرمايا: ايماكوئي دن نبيس ب حس مي الله تعالى بندے کو ارف کے دن سے زیادہ آگ سے آزاد کرتا ہو، بلاشبراللہ تعالی بندوں کے قریب ہوتا ہے اور تجاج پر فخر کرتے ہوئے فرماتا ہے

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلامه بيب كمالله تعالى عرفه كدن تمام دلول سے ذياده جنميول كوآ زاد كرتا ہے۔

كمقابلي سب سيزياده جبنيول كوآزادكرتاب، واله ليدنو: مراديب كمالله تعالى اس دن بندول برهنل اورحم كرتاب-

الغصل الثاني

﴿ امام کے موقف سے دور میں ٹھھرنا ﴾

﴿ صَيَّ مُرِ اللهُ عَمْرٌ وَمِنْ عَمْرُواْ مِنْ عَهْدِ اللّهِ بْنِ صَفْوَانَ عَنْ خَالَ لَهُ يَزِيْدُ بْنُ شَيْبَانَ قَالَ: كُنَّا فِيْ مَوْقِفِ لَنَا بِمَوَفَةَ يُهَاعِدُهُ عَمْرٌ وَمِنْ مَوْقِفِ الْإِمَامِ جِلَّا فَاتَانَا ابْنُ مِرْبَعِ الْأَنْصَارِيّ، فَقَالَ: إِنِّيْ رَسُولُ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ النّيكُمْ، يَقُولُ لَكُمْ: قِفُوا عَلَى مَشَاعِرِكُمْ فَإِنَّكُمْ عَلَى إِرْثٍ مِنْ اِرْثِ آبِيْكُمْ مِلْكَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ النّيكُمْ، يَقُولُ لَكُمْ: قِفُوا عَلَى مَشَاعِرِكُمْ فَإِنَّكُمْ عَلَى اِرْثِ مِنْ اِرْثِ آبِيكُمْ إِبْرَاهِمْ عَلَيْهِ السَّلَامُ. رَوَاهُ التَّوْمِلِيُّ وَابُودَاؤُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَدَ.

حل لفات:مشاعو: جمع عشعر كى بمعنى اركان في اداكرن كى جكه

قوجعه: حفرت عمروبن عبدالله بن صفوان اپنے مامول بزید بن شیبان سے روایت کرتے ہیں کہ ہم میدان عرفات میں اس جگہ مخبرے ہوئے تنے ، جو ہمارے لیے متعین تنی ، جے عمر وامام کے موقف سے بہت دور بتاتے تنے ،اتنے میں ابن مراح انصاری نے ہمارے پاس آ کرکہا ، میں جناب بنی کر پہلانے کا قاصد ہوں ،تہمارے لیے یہ پیغام ہے کہتم لوگ اپنے مشاعر میں تفہرے رہو ؛اس لیے کہتم لوگ اپنے باپ ابراہیم علیدالسلام کی میراث پر قائم ہو۔

فلاصة عديث اس مديث شريف كاخلاصه يب كرجاج ميدان عرفيس جال كين بحي همري ج موجائ كا-

کلمات صدیث کی تشریک کریم علی الله بن صفوان: یقریشی بی اورتا بی، یزید بن شیبان: یه حانی بی جناب نی موقف ننا بعوفة: مرادیه ب کدان کریم علی سان کی تقار ثابت ب، کنا فی موقف ننا بعوفة: مرادیه ب کدان کریم علی که سان کی تقار ثابت ب، کنا فی موقف ننا بعوفة: مرادیه ب کدان کریم علی به موقف کی بی جو بی کی بی جو بی کی کریم علی که موقف کی بی به موجود بن دینار "(مرقات ۱۳۰۸)، فاقالا ابن موبع الانصاری النخ: یعنی جناب نی کریم علی نے قاصد بی کریم علی نی کریم علی نے قاصد بی کریم علی نے تا موقف کریا تھا کہ بی کریم علی نے دور میدان عرفات می جو لوگ جہال عمر سے بین وہیں رہیں؛ اس لیے کہ پودا میدان عرفات موقف ہے، جہال کہیں بی جہال کی بی کریم میدان عرفات می جوئے بین وہیں دہیں دہیں دہی ہوئے میدان عرفات موقف ہے، جہال کی خرب میں کی کی بی کریم اوری نہیں ہے۔

﴿پورا عرفه موقف هے﴾

﴿ مِدِيثُ مِبِر ٢٣٨٥﴾ وَعَنْ جَابِرِ أَنْ رَسُوْلَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلْمَ قَالَ: كُلُّ عَرَفَةَ مَوْقِفَ وَكُلُّ مِنَى مَنْحَرٌ وَكُلُّ الْمُوْدَاؤُدَ وَالدَّادِمِيُّ. وَكُلُّ مِنْ مَنْحَرٌ ، رَوَاهُ الوُدَاؤُدَ وَالدَّادِمِيُّ.

حل لفنت فبعاج: جمع عفج كيمعي كل ،طويق: راسترج طُوق-

قوجمه: حفرت جابروضی الله عند سے روایت ہے کہ جناب نی کریم اللہ نے فرمایا: پوراعرفد موقف ہے، پورامنی قربان گاہ ہے، پورا حردلفہ موقف ہے، اور مکرمد کی ہرگلی راستہ اور قربان گاہ ہے۔

فلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يب كرف كالإداميدان موتف ب، آدى جهال جائم مرد

کل عوفة موقف: یعنی عرفه کا برا میدان حاجیوں کے تخبر نے کی جگہ ہے، جہاں چاہے تغبرے، کلمات حدیث کی آشر سے اور کل مدے مرادیہ ہے کہ پورے منی میں جاج جہاں چاہیں قربانی کریں، و کل فجاج مکہ طریق و منحو: اس میں اس بات کا جواز بتلایا ہے کہ جاج مکہ مدے جس راستے سے چاہیں واقل ہو سکتے ہیں؛ اگر چہنش مکہ طریق و منحو: اس میں اس بات کا جواز بتلایا ہے کہ جہاں چاہیں قربانی کرنا افضل ہے "ای درائل ہونا افضل ہے، ایسے بی حدود حرم میں جہاں چاہیں قربانی کرنے کی مجائش ہے، البت منی میں قربانی کرنا افضل ہے "ای

يجوز دعول مكة من جميع طرقها وان كان الدعول من ثنيه كداء افضل ويجوز النحر في جميع لزاحها لانها من الحرم.....الا ان منى افعضل"(مرقات ١٣٣٠/٥).

﴿عرفه كا خطبه ﴾

﴿ مديث نبر ٢٢٨١ ﴾ وَعَنْ حَالِدِ بْنِ هَوْذَةُ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْطُبُ النَّاسَ يَوْمَ عَرَفَةَ عَلَى بَعِيْرٍ قَائِماً فِي الرَّكَابَيْنِ. رَوَاهُ ٱبُوْدَارُدَ.

حل الفات: يوم: ون جمع ايام الركابين: زين كاوه حصر جس برسوارا بنا بيرركمة اع جمع وكب

قوجمه: حفرت فالدين بوذه رضى الله عندے روايت ب كه من فے جناب ني كريم علي كوعرفد كے دن اونث كے اور دونوں رکابوں پر کھڑ ہے ہو کر تقریر کرتے ہوئے دیکھا۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه بيب كدندرااو في جكه بركمز ب موكر خطبدو ـــــــ

كلمات مديث في تشريح بعطب الناس: يعن جناب بي كريم عليه الي تقريش في كمسائل بتارب تعر

﴿ يَهُم عَرِفَهُ كَسَى دَعَالَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ قَالَ: خَيْرُ ﴿ وَمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ قَالَ: خَيْرُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ قَالَ: خَيْرُ اللّهُ عَرَفَةَ وَخَيْرُ مَا قُلْتُ آنَا وَالنّبِيّوْنَ مِنْ قَبْلِيْ لَا إِلَهُ إِلّااللّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ اللّهُ عَرَفَةَ وَخَيْرُ مَا قُلْتُ آنَا وَالنّبِيّوْنَ مِنْ قَبْلِيْ لَا إِلَهُ إِلَّا اللّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلُّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. رَوَاهُ النُّرْمِذِي وَرَوَىٰ مَالِكٌ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ إِلَى قَوْلِهِ لَا

حل لغات: النبيون: جمع بنبي كي بمعنى يغير، شنى: چيزجم اشياء

توجمه: حضرت عمرو بن شعيب سے روايت ہے كمانبول نے اپنے والد سے اور انبول نے اپنے دادا سے روايت كى ہے كہ جناب نى كريم كي ني نفر مايا: يوم عرف كى دعاسب سے بهترين دعا ہے اور ان ميں وہ دعاسب سے بہتر ہے جو بيں نے اور جھے سے پہلے انبيار نے كل ب: يعنى لااله الا الله وحده لا شريك له له الملك وله الحمد وهو على كل شئى قدير.

خلاصة حديث الاح وعرفد كون يدعاكرني جاسي؛ الله ياك بدايك جامع اورتمام انبيائ كرام كى پنديده دعا بـ

کلمات حدیث کی تشریح الدعاء دعاء يوم عرفة: يول تو برونت كى دعا ابهم بي بيكن يوم عرفه كى دعا كى ايك خاص كلمات حديث كي تشريخ البيت به وخير ما قبلت انا والنبيون من قبلى: مراديه به يحد يوم عرفه بين تجاج كواس مديث

شریف مین ندکوردعا پڑھن چا ہے؛اس کے کہ بدایک تمام انبیائے کرام کی پندیدہ دعا ہے۔

﴿شیطان کی حالت زارہ

﴿ صِينَ مُبِر ٢٣٨٨ ﴾ وَعَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ كُويْزِ أَنَّ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا رُأْيَ الشُّيْطَانُ يَوْمًا هُوَ فِيْهِ اَصْغَرُ وَلَا اَدْحَرُ وَلَا اَحْقَرُ وَلَا اَغْيَظُ مِنْهُ فِيْ يَوْمٍ عَرَفَةَ وَمَا ذَاكَ إِلَّا لِمَا يَرَى مِنْ نَنَزُّكِ الرُّحْمَةِ وَتَجَاوُزِ اللَّهِ عَنِ الدُّنُوْبِ الْعِظَامِ إِلَّا مَا رُأَى يَوْمَ بَشْرٍ ، فَقِيْلَ مَا رَأَىٰ يَوْمَ بَشْرٍ ، فَقِيْلَ مَا رَأَىٰ يَوْمَ بَشْرٍ ؟ قَالَ: فَإِنَّهُ قَدْ رَأَى جِبْرِيْلَ يَزَعُ الْمَلَائِكَةَ. رَوَاهُ مَالِكٌ مُرسَلًا وَفِي شَرْحِ السُّنَّةِ بِلَفْظِ الْمَصَابِيْحِ.

حل لفات: الدحو: دَحَوَ (ف) دحواً وحتكارنا، احقو: حَقَرَ (ض) حقواً بِتَدربونا، اغيظ: غاظ (ض) غيظاً عمد يربرا المخت

بونا، يزع: وَزعُ (ف) وزعاً أكيش ترتيب عفول من ركمنا

قو جعه: حضرت طلح بن عبیدالله بن کریز رضی الله عند بروایت ہے کہ جناب نی کریم علیہ نے فربایا: ایسا کوئی دن بیس ہے جس میں شیطان اتنازیادہ و کیلی درائدہ اور اتنازیادہ حقیر پرغیظ دیکھا گیا ہو، جیسا کہ وہ عرفہ کے دن ہوتا ہے، سیاس لیے کہ وہ اس دن رحت کے خرول اور اللہ تعالیٰ کی طرف سے بوے بوے گنا ہوں کی معانی دیکھتا ہے: البتہ بدر کے دن ایسادیکھا گیا تھا: اس لیے کہ اس نے جبرئیل کوفر شتوں کی صف بندی کرتے ہوئے دیکھا تھا۔

کلمات حدیث کی تشریخ الشیطان یوم هو فیه اصغر النع: مرادیب کرفد کون شیطان خودکو برا ذکیل اور رسوا کلمات حدیث کی تشریخ الشیطان یوم هو فیه اصغر النع: مرادیب کرفد کون شیطان کے خودکو ذکیل اور رسوا محسوس کرنے کی وجہ خدا کی طرف سے رحمت کا نزول اور معافی کا اعلان ہے، عن الذنوب العظام: حدیث شریف کا اکاکس سے بتا چاتا ہے کہ اللہ تعالی اس دن گزاہ کہر ہی معاف کر دیتا ہے"وفیه ایماء الی غفر ان الکباتر" (مرفات ۱۳۲۸) کلمات سے بتا چاتا ہے کہ اللہ تعالی اس دن گزاہ کیرہ بھی معاف کر دیتا ہے"وفیه ایماء الی غفر ان الکباتر" (مرفات ۱۳۲۸) الا ما رأی یوم بدر النع: لیمن جس طریقے سے عرف کے دن شیطان اینے آپ کوؤلیل اور رسوا محسوس کرتا ہے ایسے بی تیوم بدر" میں کیا تھا ، اور اس کی وجہ ملا تک کا نزول ہے۔

﴿يوم عرفه كى فضيلت﴾

﴿ مِدِينَ بُهِ ١٣٨ ﴾ وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: إِذَا كَانَ يَوْمُ عَرَفَةَ إِنَّ اللّهَ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: إِذَا كَانَ يَوْمُ عَرَفَةَ إِنَّ اللّهَ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: إِذَا كَانَ يَوْمُ عَرَفَةَ إِنَّ اللّهَ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ عَبَادِى آتُولِي شُعْناً عُبْرًا صَاجَيْنَ مِن كُلّ فَجٌ عَمِيْقِ أَشْهِدُ كُمْ آتَى غَفَرْتُ لَهُمْ، فَيَقُولُ الْهَلَا لِكَةً: يَا رَبِّ فَلَانٌ كَانَ يُومًى وَفَلَانٌ وَلَالَةً عَلَيْهِ وَسَلّمَ: فَمَا مِنْ يَوْمٍ وَفَلَانًا مَا اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: فَمَا مِنْ يَوْمٍ وَفَلَانًا مَرْدُ عَيْهًا مِنْ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: فَمَا مِنْ يَوْمِ الْمُعَلِّمُ عَيْهًا مِنَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: فَمَا مِنْ يَوْمٍ الْمُعَلِّمُ عَيْهًا مِنْ اللّهِ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: فَمَا مِنْ يَوْمِ عَرِفَةً رَوَاهِ فِي شرح السنة.

حل لفات:شعناً:شَعِتُ (س)شعنا براگنده مونا،غبرا:غَبرَ (ن)غبوراً گرد آلود مونا، ضباجين:ضَبَّ (ض)ضجا چِننا، زور زورے بولنا، بوهن: رَهِنَ (س) دهقاً برائيوں كامرتكب مونا۔

قو جعه: حطرت جابر رضى الله عند بروايت بكريم يتياني نفر ما يا كه الله تعالى عرف كدن آسان دنيا پر نازل بوكر فرشتوں كے سامنے حاجيوں پر فخر كرئے بوئے فرما تا ہے، مير بندوں كو ويكھوا بيلوگ مير بياس پر اكنده بال، گرد آلود اور چلتے بوئے دور دراز سے مير ب ياس آئے ہيں، هي شهيس كواه بنا تا بول كه بيس نے ان سب كو بخش ديا، تو فرشتے كہتے ہيں: اب پروردگار! فلال شخص كناه كرتا تفا، اور فلال مرد اور فلانى عورت بھى كناه كار ہيں، آپ نے فرما يا كه الله تعالى كہتا ہے: بيس نے انہيں بھى بخش ديا، و خرمايا: ايساكوكى دن نيس ہے، جس ميں الله تعالى يوم عرف سے زيادہ جنہيوں كو آزاد كرتا ہو۔

ظلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصيب كالشتعالي عرف كدن تمام جان كو بخش ديا ب-

ان الله ينزل الى السماء الدنيا: مراديب كالقدتوالى كى رحمت كانزول موتاب فيهاهى بهم كلمات حديث كي تشريح المالا تكة: مراداً ان دنيا كفرشة بين يامقرين يا تمام قرشة ،ان تيول احمالول كي تنجائش ب

"ای ملائکة سماء الدنیا او الملا ئکة المقربین او جمیع الملا ئکة" (مرفات ۲۳۳/۵)، ضاجین من کل فیج عمیق: یہ بجاج دنیا کے کوئے کوئے کے باند کے ساتھ تبید کہتے ہوئے آئے ہیں، اشھد کم الی غفرت لھم: یعنی اللہ تعالی تجاج کرام کی مغفرت کو فرشتوں پر ظاہر کرتا ہے، فیقول المملا نکة یا رب فلان کا ن یو هق المخ: یعنی اللہ تعالی کی جانب سے تجاج کرام کی عام معافی کا منظر دیکے کرفر شنے عرض کرتے ہیں، یا اللہ ااس جماعت میں تو فلال فلال گناه گار بھی ہیں، ان کی تو مغفرت بیں ہونی جا ہے تھی، اس پراللہ تعالی فرماتا ہے کہ ہیں نے ان تمام گناه گار کھی بخش دیا۔

النصل الثالث

﴿عرفات میں وقوف کا حکم﴾

﴿ مديث بُهِر ١٣٩٩ ﴾ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ كَانَ قُرَيْشٌ وَمَنْ دَانَ دِبْنَهَا يَقِفُونَ بِالْمُزْدَلِفَةِ وَكَانَ يُسَمُّوْنَ الْحُمْسَ، فَكَانَ مَائِرُ الْعَرْبِ يَقِفُونَ بِعَرَفَةَ، فَلَمَّا جَاءَ الْإِسْلَامُ آمَرَ اللّهُ تَعَالَى نَبِيَّةٌ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنْ يَاتِيَ عَرَفَاتِ، فَيَقِفُ بِهَا، ثُمَّ يُفِيْضَ مِنْهَا، فَذَالِكَ قَوْلَهُ عَزُّوجَلَّ، ثُمَّ آفِيضُوا مَنْ حَيْثُ آفَاضَ النَّاسُ. مَتَفَقَّ عَلَيْهِ. عَرَفَاتِ، فَيَقِفُ بِهَا، ثُمَّ يُفِيضَ مِنْهَا، فَذَالِكَ قَوْلَهُ عَزُّوجَلَّ، ثُمَّ آفِيضُوا مَنْ حَيْثُ آفَاضَ النَّاسُ. مَتَفَقَ عَلَيْهِ. عَلَيْهِ مَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ وَاللهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ وَلَاهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَنْ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ وَمَنَا اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهِ مَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَلَهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ الللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ مِنْهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ ا

بتوجهد: معزت عائشهمد يقة عدوايت م كرقريش أوروه لوگ جوان كرنه بست قريب سقى مزدند يس تقم برت سقاورقريش كو بها دركها جاتا تعا؛ البنة سارا عرب عرفه يس تقم تا تعا؛ ليكن جب اسلام آيا تو الله تعالى نے اپنے نبی علي كوتكم ديا كه ميدان عرفات مس آكر دهان وقوف كرين اور پحروبان سے كوچ كرين ، بيالله تعالى كول" ثم الحيضوا من حيث افاض الناس" كى وجہ ہے۔ أخلاصة حديث اس مديث شريف كا خلاصه بيہ كماصل وقوف عرفه بى كا ہے؛ اس ليے جاج و بين وقوف كريں۔

المالمودلله المحرود الله المحرود الله المحرود الله المحرود المحرود الله المحرود الله المحرود الله المحرود الله المحرود الله الله المحروم المحروم المحروم الله المحروم المحروم المحروم المحرور الله المحروم المحروم المحروم المحروم المحروم المحروم المحرور ال

﴿عرفه کے دن آپ کی دعا کا قبول ہونا﴾

﴿ صِينَ بُهِ اللّٰهِ عَنْ عَبَّاسِ بْنِ مِرْدَاسٍ أَنْ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعَا لِامَّتِهِ عَشِيّةَ عَرَفَةَ بِالْمَغْفِرَةِ، فَأَجِيْبَ أَنَى قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ مَا خَلَا الْمَظَالِمِ، فَإِنَّى آخِذٌ لِلْمَظْلُومِ مِنْهُ، قَالَ: أَى رَبِّ إِنْ شِنْتَ اَعْطَيْتَ الْمَظْلُومَ مِنَ الْجَنَّةِ وَغَفَرْتَ لِلظَّالِمِ، فَلَمْ يُجَبْ عَشِيّتَهُ، فَلَمَّا أَصْبَحَ بِالْمُزْدَلِفَةِ أَعَادَ الدُّعَاءَ، فَأَجِيْبُ إِلَى مَا مَنَالَ، قَالَ: فَضَحِكَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ، أَوْ قَالَ: تَبَسَّمَ، فَقَالَ لَهُ اللّهِ مَكْمِ وَعُمَرُ: بِابِي أَنْتَ وَأَمَّىٰ! إِنَّ هَلِهِ لَسَاعَةً مَا كُنْتُ تَضْحَكُ لِيْهَا فَمَا الّذِي أَضْحَكَ ؟ أَضْحَكَ اللّهُ صِنْكَ، قَالَ: إِنَّ عَدُو اللّهِ إِلْلِيْسَ لَمًا عَلِمَ أَنَّ اللّهَ عَزُوجَلُ قَدْ إِسْتِجَابَ دُعَايِي وَغَفَرَ لِامَّتِي أَخَدُ اللّهِ إِلَيْسَ لَمُا عَلِمَ أَنَّ اللّهَ عَزُوجَلُ قَدْ إِسْتِجَابَ دُعَايِي وَغَفَرَ لِامَّتِي أَخَدُ اللّهُ عَرُوجَ فَلَ اللّهَ عَرُوجَ فَلَ اللّهُ عَرُوبَ اللّهُ عَلَى وَاللّهُ عَلَى وَاللّهُ إِلَيْهُ إِلَى اللّهُ عَرُوبَ فَا ضَحَكَنِي مَا رَأَيْتُ مِنْ جَزْعِهِ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةً وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ فِي كِتَابِ الْبَعْثِ وَالنّشُورِ لَحْوَهُ.

حل الفات: امته: قوم جمع المراسسة: شَاءَ (ف) شيئا طام الجنة: باغ جمع جنات،

تو جمع : حضرت عباس بن مرداس رضی الله عند سے روایت ہے کہ جناب نی کر یم الله نے عرف کی شام اپنی امت کے لیے مغفرت کی دعا باتی جمعے : حضرت عباس بن مرداس رضی الله عند سے روایت ہے کہ جناب نی کر یم الله نے کہ میں طالم سے مظلوم کا حق دعا باتی ہے کہ میں طالم سے مظلوم کا حق دول بھی جن ہے بین بلکن اس شام کو بید عا قبول نہیں ہوئی ؛ البت مزداف کی میچ کو جب آپ نے اس دعا کا اعادہ کیا تو آپ نے جو کھی ما نگاسب قبول ہوگیا، راوی کہتے ہیں کہ جناب نی کر کیم ہوئی ؛ البت مزداف کی میچ کو جب آپ نے اس دعا کا اعادہ کیا تو آپ نے جو کھی ما نگاسب قبول ہوگیا، راوی کہتے ہیں کہ جناب نی کر کیم ہوئی ؛ البت مزداف کی میچ ہیں کہ جناب نی کر کھی ہوئی ؛ البت میں آپ ہنے نہیں تی ہوئی ہوگیا ، راوی کہتے ہیں کہ جناب نی کر کھی ہوئی ہوئی ہوئی الله تو الله کو میں آپ ہنے نہیں تی ہوئی ہوئی ہوئی ہوئی الله تو الله کو میں آپ ہنے نہیں کہ جناب اور ہلا کت کو ہلا تا کہ الله تو اس کی بدھوا کی دیجو اس دیجو کھی کو جھے نمی آپ نے مریس ڈ النا شروع کر دیا اور اس نے عذاب اور ہلا کت کو ہلا تا شروع کر دیا ، چناں چداس کی بدھوا کی دیچو کھی ہوئی ہیں آگی۔

خلاصة حديث عرف مردافه من خاص طور پردعائي قبول موتى بن اس ليے جاج كرام كودعار كا امتمام كرنا جا ہي-

دعا لامت عشیة عرفة النع: لین جناب نی کریم علی فی امت کے لیے المظلوم منه: الممان میں کامات حدیث کی نشرت کی دعا کامات حدیث کی نشرت کی دعا کامات حدیث کی نشرت کی دعا کرد المظلوم منه: شام کوآپ کی دعا قبول کر لی گن"ما خلا المظالم فانی آخذ للمظلوم منه: شام کوآپ کی دعا قبول کرتے ہوئے امت محریہ کی مغفرت تو ہوگی؛ گرظالم لوگوں کوالگ کرلیا کہ اس میں وہ لوگ شاط نیس ان کی مغفرت نیس ہوگی، میں ان لوگوں سے بدلہ لوں گا، فلما اصبح بالمز دلفة اعا دالدعاء النع: لین عرف کے وقوف کے بعد جب آپ مزدلف پہنچ ہوآ آپ نے وہاں جا کر عرف کی شام میں کی جانے والی دعا کود ہرایا تو یہاں وہ دعا قبول ہوگئ، فضحت دسول الله صلی الله علیه و سلم النع: لین بیدعا قبول ہوئے کے بعد شیطان کی مجیب وغریب حالت ہوگئ جس کی وجہ سے آپ کالمی آگئ۔

﴿باب الدفع من عرفة والمزدلفة﴾

الفصل الاول

ہمرفات سے آپ کی واپسی ہ

﴿ صدید بمبر ۱۳۹۲﴾ عَنْ هِشَام بْنِ عُرْوَةً عَنْ ابِیهِ قَالَ: سُئِلَ اُسَامَةُ بْنُ زَیْدِ کَیْفَ کَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَیْهِ.
عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَسِیرُ فِیْ حَجَّةِ الْوَدَاعِ حِیْنَ دَفَعَ؟ قَالَ: کَانَ یَسِیرُ الْعَنَقَ، فَاذَا وَجَدَ فَجُوةً نَصَّ. مَتَفَقَّ عَلَیْهِ.
عل ففات: العنق: عَیْقَ (س)عنقاً کمی گرون والا مونا،اعنق (افعال) تیز چلنا، فجوة: دو چیزوں کے درمیان کشادگی جمع فجوات، نص: نَصَّ (ض) تُصَالَىٰ الله اوْتُی کوتیز دورُ انا۔

قوجمه: حضرت بشام بن عروه است والدے روایت كرتے بين كداسامد بن زيدے إو چھا كيا كه ججة الوداع بيل واليسي كوقت

فيض المشكوة جلد بينهم المشكوة جلد بينهم الده من مرفة عن مرفة المستاوي المناسك رباب الدهم من مرفة عن مرفة المستادة بال المناسك رباب الدهم من مرفة عن مرفة عن مرفة المستادة بال المناسك رباب المناسك رباب الدهم من مرفة المستادة بال المناسك رباب الدهم من مرفة المستادة بال المناسك رباب الدهم من مرفة المستادة بالمستادة با ال مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ رائے میں حجاج کرام تیز جلیں تا کہ مقامات مقدسہ میں جلدی جا کر زیادہ ہے خلاصۂ حدیث زیادہ عبادت ودعا کی جاسکے۔

کمات صدیث کی تشری کی مسام بن عووه: عروه عمرادعروه بن زبیر بین، بوے مشہور تابعی بین؛ بلکد دیند منوره کے کمات صدیث کی تشری کی سات بوے نقها، بین ان کا شارے، کیف کان رسول الله صلی الله علیه وسلم الغ:

والیسی سے مرادع فدے والیس ہے؛ لین جناب نی کریم اللہ عرفہ سے جب والیس مورے تقوق آپ کی رفار کیسی تھی؟ قال سیان يسيو العنق المنع: ليني آپ كى رفنارتيز كلى ادر جب آپ كوموقع ماتا كهراسته كشاده بإتو آپ إلى سوارى كودور الجمي ديتے تھے۔

﴿چال میں طمانیت هو﴾

﴿ صِدِيثِ مُبِر ٢٣٩٣﴾ وَعَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ دَفَعَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ عَرَفَةَ، فَسَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَاءَ هُ زَجْرًا شَدِيْدًا وَضَرْبًا لِلْإِبِلِ، فَاشَارَ بِسَوْطِهِ إِلَيْهِمْ، وَقَالَ: يا آيُّها النَّاسُ! عَلَيْكُمْ بِالسَّكِيْنَةِ قَإِنَّ الْبِرَّ لَيْسَ بِالْإِيْضَاعِ . رواهُ الْبُخَارِيُّ.

حل لفات: زجراً: زَجَوَ (ن) زجراً وُاثْناء سوط: كورُ اجْعُ اسواط، اليضاع: أوْضَعَ (افعال) البعير اوتث كوتيز وورُ انا_ توجمه: حضرت ابن عباس رضى الله عنهما سے روایت ہے کہ وہ عرفہ کے دن واپسی میں جناب نبی کر یم منافظ کے ساتھ تھے کہ جناب نبی اطمینان کے ساتھ چلو؛اس لیے کہ دوڑا ٹاکوئی نیکی نہیں ہے۔

خلاصة حديث الصديث شريف كاخلاصه بيه كه چال مين اليي تيزي اختيار ندكي جائے كه جس سے دوسرے لوگوں كويا خود اللہ علا صديد على الله على ا

كلمات حديث كي تشريح عبال وفي الله عليه وسلم الخ عليه وسلم الخ عليه وسلم الخ عليه وسلم الخ عليه وسلم الغ عليه وسلم الغ عليه وسلم الغ عليه وسلم الغ

لیعن جناب نی کریم علی نے اپنے پیچے اونوں کے ہائنے اور مارنے کی شدید آوازی، فاشار بسوطه البهم و قال النع: یعن جناب نی کریم میلانی نے جب سواریوں کو تکلیف دیتے ہوئے دیکھا تو آپ نے اس سے منع کرتے ہوئے فر مایا کہ جال میں طمانیت اختیار کی جائے جھن تیز چلنا کوئی نیکی کا کا مہیں ہے۔

﴿تلبیه کب تک کھیے﴾

﴿ مديث تُمِر ٢٣٩٣﴾ وَعَنْهُ أَنْ أَسَامَةً بَنِ زَيْدٍ كَانَ رِدْفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ عَرَفَةً إلى الْمُزْدُلِفَةِ، ثُمَّ أَرْدُفَ الْفَصْلَ مِنَ الْمُزْدَلِفَةِ إلى مِنيَ، فَكِلَاهُمَا قَالَ: لَمْ يَزَلِ النّبيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُلَبِّي حَتَّى رَمَى جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ . مُتفقٌ عليهِ.

حل لغات: اردف: أردف (افعال) اع يتي سواركرنا، العقبة : كما في جمع عقاب

قوجمه: ان سروایت ب کرامام بن زیدعرف سردلفه تک جناب نی کریم سالله کرد یف تھے، پر آپ نے مزدلفہ سے منی تك تفل كواسي بيني بنهايا ،ان دونول كابيان ب كه جناب بى كريم علية رى جمرة عقبة تك برابر تلبيه كيتي رب_

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلامه يه ب كرجاج كي ليرى جرؤ عقبة تك تلبيه كهناست ب-

كلمات حديث كي تشريح أوعنه: يعني سروايت حفرت ابن عباس رضى الله عنها عدوايت ب، ان اسامة بن زيد كان الدف النع: مراديب كدعرفد سردلفه تك معزت اسامين زيد جناب تي كريم علي كم ساته

تع، ثم اردف الفضل من المزدلفة الى منى: مراديب كدم ولفي من تك تعرت فضل بن عباس وضى الله عنها جناب ني كريم مل كاتم تع فكالهما قال لم يزل الخ مراديب كرى جرة عقبة كالبير برعة رباست ب-

مانده: منى ينى كرسب سے پہلامل جرة عقبه كى رى بے جوواجب ب، منى مين تين محصوص مقام بين، جنهين "جرات" كيتے یں: پہلا جمرہ جو مجد خف کے نزدیک واقع ہے،اے جمرہ اولی، دوسرا جمرہ اس ہے آگے ہے،اے جمرہ وسطی، اور تیسر اجمرہ جو منی کے اخیری ب،اے جرو عقبہ کہتے ،اس حدیث شریف میں یہی اخروالا جرومرادے۔

﴿مزدلفه میں جمع بین الصلاتین﴾

﴿ صِلَتُ مُمِر ١٣٩٥﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ فَالَ جَمَعَ النِّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمُ الْمَغُوبَ وَالْعِشَاءَ بِجَمْع كُلُّ وَاحِدَةٍ مِنْهَمَا بِإِقَامَةٍ وَلَمْ يُسَبِّحْ بَيْنَهُمَا وَلَّا عَلَى الْوِ كُلُّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

حل لفات: جمع: جَمَعَ (ف) جمعاً اكما كرنا، يم كرنا، يسبع: سَبّعَ (تفعيل) تبيع را صنار

توجعه: حضرت ابن عمر رضى الله عنها ، روايت ب كه جناب في كريم الله في مرداف من مخرب اورعشاء كي نمازي ايك ساته ردهیں،ان میں سے ہرایک کے لیے تحبیر کھی گئ،ان دونوں کے درمیان آپ نے نافل پڑھی نہ جے۔

خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلاصه بيب كدوسوين ذى الجركوم ولفي شمغرب وعشاء كى نمازين ايك ساته بإحنى جابي-

كمات مديث كاتشرت البي صلى الله عليه وسلم المغوب والعشاء بجمع: جمع عمرادم ولف بيعن جناب ني كريم الله في في دونول نمازي مزدلفه بس اس طريق پر بردهيس كدمورج غروب مون

کے بعد آپ نے تاخیر کی اور جب مردلفہ بھی ہے تو آپ نے مغرب دعثا، دونوں نمازیں ایک ساتھ پڑھیں،ولم یسبع بینهما المع: اس مديث شريف كالفاظ ي يا چلا ب كدان دونو ل نماز دل كدرميان سنن ونوافل كاابتمام نبيس بوا بليكن معمد تولي كرات ن بعد من سون سے بہلے سنن اور ورزك تمازي پرحي تي "والمعتمد انه يصلى بعد ها سنة المغرب والعشاء والوتر لقوله (ثم اضطجع)اي ثلنوم بعد راتبة العشاء والوتر كما في رواية"(مرقات٢٥٥)

﴿ آپ نے کسی نماز کو وقت سے پھلے نھیں پڑھی ﴾

﴿ مديث مُبر ٢٣٩٧ ﴾ وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَى صَلَاةً إِلَّا لِمِيْقَائِهَا إِلَّا صَلَّا تَيْنِ صَلاَةَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ بِجَمْعِ رَصَلَّى الْفَجْرَ يَوْمَتِلِ قَبْلَ مِيْقَائِهَا. مُتَعَقَّ عليه.

حل الفادت: ميقات: وقت يحمو اقيت، صلا تين ، تشنيب صلاة كى بمعنى نماز ...

قرجعه: حفرت عبدالله بن مسودر من الله عند ، وايت ب كهيس في جناب ني كريم تلك كودونمازول كعلاوه كوكي نماز وقت ہے سملے ہو معتقبیں دیکھا،ایک مغرب وعشاء کی نماز مردلفہ میں،اور دوسری فجر کی نماز جوآپ نے اس دن وقت سے پہلے برحی تھی۔ مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ آپ نے کوئی مجی فماز وقت سے پہلے میں بڑھی اور یہ جواس روایت میں یہ بات خلاصة حديث المحلى بيعام معول كظاف قاءاى كوحفرت ابن مسودر من الله عند قاس اعداز من بيان كرديا ب

صلی صلاة الا میفاتها: مرادیه ب که جناب نی کریم الله فی کریم الله فی کریم الله فی می نماز وقت سے پہلے ہیں کلمات حدیث کی تشریح کی شریح می آپ جو بھی نماز پڑھی ،وقت ہونے کے بعد وقت پر پڑھی ،خواہ سفر میں ہول یا حضر میں "ای

فی وقتها قال النووی اخذ ابو حنیفة رحمه الله منع الجمع فی السفر "(مرقات ۱۳۲۷)، الا صلاتین صلاة المعوب والعشاء بجمع : یده دو قرازی بی بی بی کریم الله نی کریم الله نی کریم الله نی کریم الله نا دونون قراری کردی بی بی بی بی بی کریم الله عنه الدونائ کے موقع پر عشار کے دقت میں پڑھناسنت ہے "ای جمع بینهما فی وقت العشاء وهذا الجمع سنة باجماع من العلماء "(فتح الملهم ۱۳۸۷)، وصلی الفجر یو منذ قبل میقاتها: یه نماز حقیقت می وقت می وقت می بی الفجر یو منذ قبل میقاتها: یه نماز حقیقت می وقت سے پہلے کہ کریم الله نی بی کریم الله نماز می الله عنه الله الله عنه الله الله عنه الله عنه الله عنه الله عنه الله عنه الله الله الله عنه الله عنه الله عنه الله الله عنه الله عنه الله عنه الله الله الله عنه الله عنه الله الله عنه الله الله عنه الله الله الله الله

﴿عَدْرِ كَى وَجِهِ سَنِي مِزْدَلَقَهُ يُهْلِي جَانَا﴾

﴿ وديث مُبر ٢٣٩٤ ﴾ وعَن ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أَنا مِمَّنْ قَدُّمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةَ الْمُزْدَلِفَةِ فِي صَعَفَةِ اَهْلِهِ. متفقى عليهِ.

حل الفات: قدم: قَدَّمَ (تَفْعَيل) آك برُحانًا، ليلة: رات بَعَ ليالي

قوجهد: حضرت ابن عباس رضی الله عنماے روایت ہے کہ میں ان لوگوں میں سے ہوں جنہیں جناب نبی کریم ملک نے کروری کی ورگ کی ورگ کی ورگ کی اللہ عنہ میں جناب نبی کریم ملک نے کروری کی وجہ سے مزدلفہ کی رات میں پہلے ہی جمیح دیا تھا۔

اس مدیث اُس مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ عذر کی وجہ سے مزدلفہ سے منی کے لیے دات ہی میں چلنے کی مخبائش ہے؛ تا کہ خلاصۂ مدیث از دحام کی وجہ سے داستے کی دشوار یوں سے بچاجا سکے۔

د شواری ہوتو رات میں جاسکتے ہیں ؛ جیسا کہ جناب نی کریم اللہ نے اپنے اال وعیال کو پہلے ہی منی جمیع دیا تھا۔

وکنکریاں کھاں سے لیے

﴿ مديث بمبر ٢٣٩٨ ﴾ وَعَنْهُ عَنِ الْفَصْلِ بْنِ عَبَّاسٍ وَكَانَ رَدِيْفَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ انَّهُ قَالَ فِي عَشِيَّةٍ عَرَفَةَ وَغَدَاةٍ جَمْعٍ لِلنَّاسِ حِيْنَ دَفَعُوا: عَلَيْكُمْ بِالسَّكِيْنَةِ وَهُوَ كَاثَ نَاقَتَهُ حَتَّى دَخَلَ مُحَسِّرًا وَهُوَ مِنْ مِنِي قَالَ: لَمْ يَزَلُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَى وَهُوَ مِنْ مِنِي قَالَ: لَمْ يَزَلُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُلَيِّى حَتَّى رَمَى الْجَمْرَةَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: كاف: روك والا، كف (ن) كفاً روكنا، المعذف الوبياك برابرى چزكوفذف كها جاتا ، خدف (ض) حذفاً المحصاة الكيول عن يختلنا، المجموة : ككرى جمع المجمود

تو جعه: ان سے دواہت ہے کففل بن عہائ جناب نی کریم آلگانہ کے ردیف تنے، آپ نے عرفہ کی شام اور حرد لفہ کی میچ کولوگوں سے چلنے کے دوران فر مایا: آپ لوگوں پراطمینان ضروری ہے، اس وقت آپ بھی اپنی اوٹنی کورو کے ہوئے تنے، یہاں تک کہ آپ منی یعنی وادی مسر میں پہنچ گئے ہو آپ نے فر مایا: آپ لوگ خذف کے مائند جمرہ میں ماری جانے دالی کنگریاں اٹھالیس، نیز فعفل بن عباس نے کہا کہ جناب نی کریم تنگیجے رمی جمرہ تک برابر تلبیہ کہتے رہے۔

خلاصة حديث ال حديث شريف كا خلاصه يب كدرى كے ليے دادى محر سے بى ككريال لے لينى جا ہے۔

کمات صدیث کی تشری کی دوایت حفرت ابن عباس رضی الدعنمات روایت به الفضل بن عباس و کان المات صدیث کی تشری کی دونه کان دوایت حفرت الله علیه و سلم النع: به بات پیچی آن کی ب که وفد سه مزداند تک حفرت

اسامہ بن زید جناب نی کریم علی کے دریف تے اور مزدلفہ منی تک حضرت نقل بن عباس ردیف تھے ،انه قال النے: ہار خمیر سے
مراد جناب نی کریم علی ہیں ایسی آپ نے دیکھا کہ بجائ بھیڑا ورسواری کی رعایت کے بغیر بہت تیز ہا تکنے کی کوشش میں گئے ہوئے
ہیں، تو آپ نے قدرے آہت چلنے کی تقین کی ،و هو سحاف نافعہ: مراد آہت کیل کھینچا یا ہاکا بریک مارنا ہے ،یہ مراد ہیں ہے کہ آپ نے
ہالکل سواری روک کی تھی 'ای مانع من السوعة ہالفعل' (مرقات ۱۵/۸۵)، قال علیکم بعصی المخدف النے: مرادیہ ہوراند ہے
مردلفہ سے چلتے ہوئے عقب تک بینچنے سے پہلے پہلے راستے ہی سے تکریاں جن لیں، ایباند ہوکہ عقبہ میں جا کرری کی ہوئی تکریاں لینی
مزدلفہ سے چلتے ہوئے عقب تک بینچنے سے پہلے پہلے راستے ہی سے تکریاں چن لیں، ایباند ہوکہ عقبہ میں جا کرری کی ہوئی تکریاں لینی

﴿ آپ کی طرف سے ایک اہم اطلاع ﴾

﴿ صريت بُهر ٢٣٩٩ ﴾ وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: اَفَاضَ النَّبِي صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ مِنْ جَمْعِ وَعَلَيْهِ السَّكِيْنَةُ وَاَمَرَ هُمْ بِالسَّكِيْنَةِ وَاوْضَعَ فِيْ وَادِى مُحَسَّرٍ وَامَرَهُمْ اَنْ يُرْمُوا بِمِثْلِ حِصْى الْحَذْفِ، وَقَالَ: لَعَلَىٰ لأَوَاكُمْ بَعْدَ عَامِيْ هَذَا. لَمْ آجِدُ هَذَا الْحَدِيْتَ فِي الصَّحِيْحَيْنِ إِلَّا فِي جَامِعِ التَّرْمِذِي مَعَ تَقْدِيْمٍ وَتَاجِيْدٍ.

حل لغات: وادى: بِهارْ كورميان كشاده راست جع أو ديه، حصى : ككرى جمع حصاة _

قوجهد: حفرت جابروضی الله عند سے روایت ہے کہ جناب نی کریم اللہ مردلفہ سے چلق آپ کی جال میں طمانیت تھی ،اورآپ نے عجاج کو اطمینان سے چلنے کا تھم مجی دیا تھا،البت دادی محمر میں تیز چلتے ہوئے تجاج سے کہا:آپ لوگ خذف کے مانند جمرہ میں ماری جانے والی کنگریاں اٹھالیں،اورآپ نے امت سے فرمایا کہ اس سال کے بعد شاید میں تہیں نہیں پاؤں گا۔

خلاصة حديث جناب بى كريم علية غردلفد عطة موع است وصال كى اطلاع امت كود دى تى اوريى موا-

واوضع فی وادی محسر: مرادی به کرمزدلفد آپ خود آسته بلے ،اور تجاج کو بھی آسته بلخ کا استه بلخ کا استه بلخ کا کا کا کا کا کا کا دیا ،اولیت وادی محسر میں آپ کی رفتار تیز تھی ،و قال لعلی لارا کم بعد عامی هذا لم اجد:

مرادیہ کہ جنابتی کر پم اللے نے امت کو بینتا دیا تھا کہ میرے وصال کا وقت قریب ہے؛ اس لیے جج کے احکام اور دی امور جھ سے زیادہ سے زیادہ لکھ لیے جائیں، تا کہ بعد میں فائدہ ہو۔

الفصل الخالد

وعرفه اور مزدلفه سے روانگی کا وقت ﴾ وعرفه اور مزدلفه سے روانگی کا وقت ﴾ وسلی الله عَلَيْهِ وَسَلّمَ،

فَقَالَ: إِنَّ آهُلَ الْجَاهِلِيَّةِ كَانُوا يَدْفَعُونَ مِنْ عَرَفَةَ حِيْنَ تَكُونَ الشَّمْسُ كَأَنَّهَا عَمَائِمُ الرِّجَالِ فِيُ وُجُوْهِهِمْ قَبْلَ اَنْ تَفُرُبَ وَمِنَ الْمُزْدَلِفَةِ بَعْدَ اَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ حِيْنَ تَكُوْنَ كَأَنَّهَا عَمَائِمُ الرِّجَالِ فِي وُجُوْهِهِمْ وَإِنَّا لَا تَدْفَعُ مِنْ عَرَفَةَ حَتَى تَفُرُبُ الشَّمْسُ وَنَدْفَعُ مِنَ الْمُزْدَلِفَةِ قَبْلَ أَنْ تَطَلُعَ الشَّمْسُ هَدْيُنَا مُخَالِفٌ لِهَدْيِ عَبْدَةِ الْآوْقَانِ وَالشَّرْكِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيْمَانِ وَقَالَ: خَطَبْنَاوَسَاقَه نَحْوَهُ.

حل الفات: ید فعون: دَفَعَ (ن) دفعاً چلنا، و جوہ: تم عوجہ کی جمعتی چرہ، الاو ثان: تم عوفی کی جعنی بت۔

قو جعه: حفرت محدین قیس بن مخر مدرضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ جناب نی کر یم تفایق نے تقریر کرتے ہوئے فرما یا کہ جاہلیت می لوگ عرفات سے اس وقت والی ہوتے تھے، جب سورج غروب ہونے سے پہلے مردوں کے چروں پر مجڑ ہوں کی طرح نظر آتا تھا اور مزدلفہ سے طلوع آفیاب کے بعداس وقت روانہ ہوتے تھے جب سورج مردوں کے چرون پر مجڑ ہوں کی طرح نظر آتا تھا؛ مربم عرفہ سے سورج غروب ہونے یہ نے جرون پر مجڑ ہوں کی طرح نظر آتا تھا؛ مربم عرفہ سے سورج غروب ہونے یہ جہون پر مجڑ ہوں کی طرح نظر آتا تھا؛ مربم عرفہ سے سورج غروب ہونے سے پہلے جا میں سے کہ ہمارا طریقہ بت پرستوں اور مشرکین سے الگ ہے۔

ال عدیث الله عدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ جان عرف سے صورج غروب ہونے کے بعداور مزدلفہ سے طلوع آفتاب سے خلاصة حدیث الله کا میں جناب نی کریم عظیمہ کا طریقہ ہے۔

كلمات حديث كي تشريح محمد بن قيس بن مخومه: تابع بين اس ليے يدروايت مرسل بـ"ذكره المؤلف من المات حديث كي تشريح التابعين فالحديث موسل"(موقات ١٥/٣٣٩)ن اهل الجاهلية كانوا يدفعون الخ: مراد

یہ ہے کہ دورجا ہلیت یل جہاں بہت سارے خرافات درآتے تھے ان یس سے ایک یہ بھی رسم تھی، وانا لا نلفع من عوفة حتی تفوب الشمس النع: مرادیہ ہے کہ جناب نی کریم تلک نے ان کے اس طریقے کے خلاف عمل کرکے بیدواضح کردیا کہ ان کا پہ طریقہ تفکیک اور درست نہیں ہے۔

﴿ رمى كا مسنون وقت ﴾

﴿ صِدِيثُ بِرَا ٥٥٠ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَلَّمْنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةَ الْمُزْدَلِفَةِ أُغَيْلِمَةَ بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ عَلَى حُمُرَاتٍ فَجَعَلَ يَلْطَخُ اَفْحَاذَنَا، وَيَقُولَ: أَبَيْنِي لَا تَرْمُوا الْجَمْرَةَ حَتَى تَطُلُعَ الشَّمْسُ. رَوَاهُ ابُوْدَاؤُدَ وَالنَّسَائِقُ وَابْنُ مَاجَةً.

حل المفات: حمر ات: جمع ہے جماری بمعنی گوما، بلطخ: لَطَخ (ف) الطخائم کی دیا، المنعاذ: جمع ہے فنعد کی بمعنی ران۔ قو جمعه: حضرت ابن عباس رضی الله عنما ہے روایت ہے کہ جناب ہی کر پر الفظ نے جمیس مزدلفہ کی رات گوھے پر سوار کرکے فاعمان عبد المطلب کے بچوں کے ساتھ و دوائد کرتے ہوئے ، ہماری رانوں کو میکی دیتے ہوئے فرمایا: اے میرے بھوٹے بچواجب مک سورج نہ لکل آئے تم سب رمی جمارند کرنا۔

خلاصة حديث ال عديث شريف كاخلامه يه ب كدى كامسنون وقت مورج نكف كے بعد بى شروع موتا ہے۔

 ے کہری کے لیے مسنون وقت یہ ہے کہ مورج طلوع ہونے کے بعد کرے الکین اگر کی نے مزدافہ کی رات بی کوری کرلی آتو دی ب بوجائے گی، رمی کی سنیع اوا نہ ہوگی "وہو دلیل علی عدم جو از الرمی کی اللیل وعلیہ ابو حنیفة رحمه الله والا کشرون "(مرقات ۱۳۳۱/۵).

﴿رات میں رمی کرناہ

﴿ صَلَمَ بُهُم ٢٥٠١﴾ وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتُ: ارْسَلَ اللَّبِيُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأُمَّ سَلَمَةَ لَيْلَةَ اللَّهُ وَلَمَتُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأُمَّ سَلَمَةَ لَيْلَةَ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ الْجَمْرَةَ قَبْلَ الْفَرْمُ الَّذِي يَكُونُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَهَا. رَوَاهُ ابُوْ دَاوُد.

حل لفات: ارسل: أرْسَلَ (افعال) بعيجا، ليلة: رات جعليالي

توجمه : صفرت عائشه مدیقه رضی الله عنها سے روایت ہے کہ جناب نی کریم تلاقے نے امسلہ کو بقر حمید کی رات بھی دیا تھا؛ چنال چہ انہوں نے فجر سے پہلے ری کی ، مجروہاں سے چل کر طواف افاضہ کیا ، بیوہ دن تھا جس دن جناب نی کریم تلاقے ان کے پاس تھے۔ خلاصة حدیث کسی نے طلوع آفاب سے پہلے ہی ری کرلی توری ہوتو جائے گی ؛ مگر ری کی سنیت ادان ہوگی۔

كلمات حديث كي تشرر كي من الجمعوة قبل الفجو: فجر بم ادنماز فجر با يعنى ام المؤمنين معزت ام سلمدوش الله عنها كلمات حديث كي تشر من صادق كي بعدنماز فجر بهاري كرئي تقي مبت مكن به كريم الله في مريم الله في مرداف

ے پہلے آنے والوں کو جو سوری نکلنے ہے پہلے ری کرنے ہے تع کیا تھا، وہ بات ان کے تلم بیں ندا سکی ہواور انہوں نے پہلے جی ری کرنی ہو جاتی ہے، نیز امور قی بیں ایک چھوٹی باتوں پر نیادہ وھیان تی وہ اور چوں کہ اس طرح ہے ری کر کے معلقہ ہے تیں تاب اس روایت کی بنیاد پر صفرت امام شافعی علیہ الرحم کا مسلک ہے کہ اس روایت کی بنیاد پر صفرت امام شافعی علیہ الرحم کا مسلک ہے کہ آدمی رات کی بنیاد پر صفرت امام شافعی علیہ الرحم کا مسلک ہے ہے کہ آدمی رات کی تیر کہاں ہے آئی، جب کہ خود مزدافہ چلنے کا اصل وقت نما فی ہونے ہوئے ہوئے کہ اس سے تی بہلے پہلے ہے، جب آدمی نماز فیر کے بعد مزدافہ ہے کوچ کرے گا تو رات شری کرنے کا کوئی سوال ہی جین ہے؛ بلک اس روایت ہے رات شری کرنے کا فی ہوئی ہے، اس لیے کہ اس صدیت شریف میں ہے مقومت المجموف قبل الفجو : لینی وہ رمی می صادق کے بعد نماز فیر سے پہلے کی گئی ، جیسا کہ صفرات انتہ اٹلا شرف کہا ہے "ویسکن ان ہواد قبل صادة الفجو علی ما فہمہ الاتمة الفلائة "(مرقات ۱۳۵۸)۔

﴿عمره میں تلبیہ موتوف کب کرہے﴾

وَمديث بْهِر ١٥٠٣ ﴾ وَعَنْ اَبْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: يُلَبَّىٰ الْمُقِيْمُ أَوِ الْمُعْتَمِرُ حَثَى يَسْتَلِّمَ الْحَجَوَ. رَوَاهُ ابُوْدَاؤُدَ وَقَالَ: وَرُوعَ مَوْقُوْفًا عَلَى ابْنِ عَبَّاسٍ.

حل اخلت: يلبى: لَبُ (تَعْمِل) تَلبيد كِهَا الحجر: يُمْرَجْع احجار

من جمه: حضرت ابن عباس رضى الله عنها عدوايت ب كمقيم اور معتم حجراسود كاستام تك تبيد كية رئيل-خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيب كمقيم ومعتم طواف شروع كرف تك تبيد كية رئيل-

علی: ال مدے شریف کاس باب ے و فی تعلق میں ہومرہ کا تعلق میں ہومرہ کا تعلق میں ہومرہ کی المقیم مراد کے کے دواور ا

المحجوز مراديب معمر وكرنے والے خواو كے كے باشده مول يابابرے آئے ہوئے دوسر عالوك بول، ساحرام باندھنے سے لے كرطواف شروع كرنے تك برابرتلبيد كہتے رہيں ،اورجسے بى جمراسودكو چوم كرطواف شروع كريں تلبيد كہنا چھوڑ ديں "اى يلبى الذى احرم بالعمرة من وقت احرامه الى ان يبدأ بالطواف ثم يترك التلبية" (مرقات ٢٣٢/٥)-

اللصل الثالث

جعرفات ومزدلفه کے درمیان کھیں نہ ٹھھریے)

﴿ صِرِيثِ مُبِر ٢٥٠٣ ﴾ عَنْ يَعْقُوْبَ بْنِ عَاصِمٍ بْنِ عُرْوَةَ اللَّهُ سَمِعَ الشَّرِيْدَ يَقُولُ: اَفَضْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَما مَسَّتْ قَدَمَاهُ الْآرْضَ حَتَّى أَتَى جَمْعاً. رَوَاهُ أَبُو دَاوُّد.

حل الفات: افضت: أفأض (انعال) علاا

قوجمه: يعقوب بن عاصم بن عروه ب روايت ب كرانبول في شريد يكت موع سا كديس جناب ني كريم عليه كم مم راه تھا،آپ کے قدم زمین رئیس گئے یہاں تک کہآب مزدلفہ بننج گئے۔

خلاصة حديث أس حديث شريف كاخلاصه بيب كر فدس مز دلفه تك جناب ني كريم علينة ورميان مس كبيل أبيل تفهر __

افضت مع رسول الله صلى الله عليه وسلّم: يكلمات انبول في بات يس توت بيرا كلمات وسلّم: يكلمات انبول في الله عليه أكرف كيلي كى ب، فعا مست قدماه الارض الغ: مراديب كه جناب كى كريم تلك عرف

ے ما کرمزدلفہ بی میں آ کرد کے درمیان میں کہیں آ پنیس مقہرے ؛ بلکہ آپ سواری سے کہیں ازے بھی تبیں۔

﴿عرفات میں جمع بین الصلاتین﴾

﴿ صِدِيثُ بِمِ ٢٥٠٩ ﴾ وَعَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِيْ سَالِمٌ أَنَّ الْحَجَّاجَ بْنِ يُوسُفَ عَامَ نَزَلَ بِإِبْنِ الزُّبَيْرِ سَأْلَ عَبْدَ اللَّهِ كَيْفَ نَصْنَعُ فِي الْمَوْقِفِ يَوْمَ عَرَفَةَ؟ فَقَالَ سَاِلمٌ: إِنْ كُنْتَ تُرِيْدُ السُّنَّةَ فَهَجُّرْ بِالصَّلَاةِ يَوْمَ عَرَفَةَ، فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ: صَدَقَ إِنَّهُمْ كَانُوا يَجْمَعُونَ بَيْنَ الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ فِي السُّنَّةِ، فَقُلْتُ لِسَالِمٍ: ٱلْعَلَ ذَلِكَ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ سَالِمٌ: وَهَلْ يَتَّبِعُوْنَ ذَالِكَ إِلَّا شُنْتَهُ. رَوَاهُ البُحَارِيُّ.

حل لفات: سأل: سَأَلَ (ن)سؤالاً ، تويد: أرّاد (افعال) اراده كرنا

قوجعه: حضرت ابن شهاب سے دوایت ہے کہ سالم نے مجھ سے بتایا کہ جس سال حجاج بن یوسف نے ابن زبیر کولل کیا اس سال عبد الله على جها بم لوك عرف كدن وقوف كدوران كياكري؟ توسالم في كها: اكرسنت برعمل كرناجا بي توعرف كدن نماز جلدى م ي هيه الله بن عرف كها: انهول في يح كها؛ ال لي كه صحابه كرام سنت برعمل كرف كي ظهر اورعمر كي نماز جمع كرت تيرات مل في سالم على كا باجناب في كريم تلك في اليابي كياتها؟

: خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلامه بيب كرعرف من ظهراه رعصر كي نماز ول كوايك ساته يراهي

کمات حدیث کی تشری عن ابن شهاب: مراد این شهاب زبری بی، عام نزل بابن زبیر: مراد وه سال ب، جس می علمات حدیث کی تشریح عدالله بن زبیر کے خلاف فوج کشی کرکے ان کوشہید کردیا گیاتھا، سال عبد الله الخ:

مبدالله سےمراد صفرت عبداللہ بن عرفی ،واقعہ بیہوا کہ جاج کے ہاتھوں حضرت عبداللہ بن زبیروض اللہ عند کا شہید ہوجا تا عبدالملک من مروان کے لیے ایک بہت بڑی کامیانی مجی کی ،ای حسن کار کردگی سے خوش ہو کرعبد الملک بن و روان نے جاج کوامیر الحجاج منا کر بھیجا

اور سناکیدی کرج کے احکام حضرت ابن مروضی الله منهاے ہو چھ ہو چھ کراوا کیے جا کیں ؛ چناں چدای سلسلے ی ایک کڑی ہے۔

﴿ياب رمى الجمار﴾ الغصل الاول

وسوارى سے رصى كرينا ﴾ ومديث نبر ٢٥٠١) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْمِيْ عَلَى رَاحِلَتِهِ يَوْمَ النَّحْرِ وَيَقُولُ: لِتَاخُذُو امْنَاسِكُكُمْ فَانِي لَا أَدْرِى لَعَلَىٰ لَا أَخْجُ بَعْدَ حَجْتِي هَالِهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

مل المات: يرمى: رَمي (ض) رمياً ميكنا بيوم: دن جع ايام

ترجمه: حفرت جابروش الله عند بروايت بكريم الله عناب ني كريم الله كوقر باني كدن سواري برساري كرت ديكها اور آ ہے: آب اوگ افعال ج سکے لیجے، شاید میں اپنے اس ج کے بعد ج نہ کرسکوں۔

ا فلاصة عديث ال مديث شريف كاخلا مديب كرسواري برساري كرف ساري موجاتى ب-

عومی علی داحلته یوم النحو: رمی پیل کرے یاسواری پرحفرت امام ثاقی علیہ الرحمہ کے یہاں کمات حدیث کی تشری کے تعلق النصورة بعدة الله یستحب لمن وصل منی داکباان یومی جعوة

العقبة يوم النحر راكباومن وصلها ما شياان يرميها ماشيا وفي اليومين الاولين من التشريق يرمى جميع الجمرات ماشیا وفی الیوم الثالث راکبا" (مرقات ۳۲۲/۵) البت احناف کے یہاں مطلقاً پیل ری کرنا افضل ہے" بستحب المشي الى الجمار وان ركب اليها فلا بأس به والمشى افضل" (مرات ١٣٣/٥)، يهات يجيم من مكل على على المناب عي كريم على في بيدل اداكي جان والعض افعال كوسوارى يرساداكي، اوراس ش حكمت يقى كداوك واضح انداز بن و كيوكر جي ے ج کا دکام کے لیں ،ان ش سے ایک سواری پردی بھی ہے "بعدمل ما روی من رکوبه علیه الصلاة والسلام فی رمی الجمار كلها على انه ليظهر فعله، فيقتدي به ويسئل ويحفظ عنه المناسك كماذكر في طوافه" (مرقات ٣٣٣/٥).

﴿رضى كاطريقه ﴾

﴿ وَمِينُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَمَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَمُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَمَّى الْجَمْرَةَ بِمِثْلِ حَصَى الْغَدَفِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: رمى: رمنى (ض) رَمْيًا كِينَكناء حصى: جَعْ بِ حصاة كى بمعنى ككرى -قوجمه: ان سردایت ہے کہ میں نے جناب نی کریم عظیمہ کوفذف کی تنکریوں کی طرح کنکریوں سے ری کرتے دیکھا۔ ظامر حدیث اس مدیث شریف کا خلاصہ بے کری کے لیے اور چنے کے مائند کنکریاں فی جا کیں۔

كلمات مديث كي تشريح إدمى الجموة بمثل حصى المعدف: مراديه بي كدري كيلتي بوب بيترند لي جاكس: يكد اویایا ہے کے برابر کھریاں لیکرری کرے اس مقدارے چھوٹی یابدی کھریاں لیکردی نہ کرے اس كي كروه ب- "وهو قدر الياقلاء او النواة اوالانملة اليكره اصغر من ذالك و اكبر منه " (مرقات ١٣٥٥م)-

﴿ رَحِي جِمْوهُ كَمَا وَقَعْتُهُ قَالَ: رَمَىٰ رَشُوْلُ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْجَعْزَةَ يَوْمَ النَّحْرِ طُعِيَّ وَأَمَّا

بَعْدَ دُلِكُ فَإِذَا زَالَتِ الشَّمْسُ.متفق عليه.

حل لفات: الجموة: ككرى جمع جَمَو ، الشمس: مورج جع شموس-

قوجمہ: ان سے دوایت ہے کہ جناب ہی کر میں اللہ نے قربانی کے دن جاشت کے وقت کنگریا مجینکیں ، اوراس کے بعد کے دنوں میں

فلامة حديث ال مديث شريف كاخلامه يب كرمورج نكف كے بعد سے بى دى كاونت شروع موتاب

كلمات مديث كي تشريح ومي رسول الله صلى الله عليه وسلم الجموة: مراديب كدرى ك تين دنول بيل بهلادان اسورج نکنے کے بعداور بقیدوورنوں میں زوال کے بعدری کرے "قال ابن الهمام افاد ان وقت

الرمي في اليوم الثاني لا يدخل الا بعد ذالك وكذا في اليوم الثالث" (مرقات١٥٥٥)، الكانصيلي بيان"باب النطع من عوفة والمزدلفة" كِتْت كرر چكا ب، ديكهي"ري كامسنون وتت" اوررات مي ري كرتا

﴿رمی کے وقت کیا کھے﴾

﴿ مديث بمر ٩٠٥ ﴾ وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّهُ الْتَهِلَى إِلَى الْجَمْرَةِ الْكُبْرِي، فَجَعَلَ الْبَيْتَ عَنْ يَسَارِهِ وَمِنَى عَنْ يَمِيْنِهِ وَرَمَى بِسَبْعِ حَصَيَاتٍ يُكَبِّرُ مَعَ كُلِّ حَصَاةٍ، ثُمَّ قَالَ: هَكَذَا رَمَى الَّذِي ٱنْزِلَتْ عَلَيْهِ سُورَةُ الْبَقَرَةِ. متفق عليه.

حل المفادت: البيت: كمرجح بيوت، دمى: دمى (ض) دميا كايكار.

قد جعه: حطرت خبرالله بن مسعود رضى الله عند سے روایت ہے كدوه جمرة عقبه يه ينجي اتو انہوں نے خات كعبكو باكيس اور منى كوداكيں طرف کرے سات تکریاں مجینکیں اور ہرکنگری پر بھیر کی ، مجرانہوں نے کہا کہ اس ذات نے ای طرح سے کنگری مجینکیں ہیں؛ جس ذات پرسور وُ بقرہ نازل ہو کی ہے۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلامه يه ب كرككرى مينكة وقت تجبير كى جائد

کلمات حدیث کی تشری کا الجعوة الکبوی: مراد جمرهٔ عقبه ب، فجعل البیت عن یساره و منی عن یمینه: اس طرح کلمات حدیث کی تشری کوت یدعا

﴿ هِ "اللَّهُ اكبر اللَّهُ اكبر اللَّهِم اجعله حجا مبروراً وذنبا مغفوراً وعملًا مشكوراً " (مرتات ١٣٦١/٥)_

﴿سات کنگری کا حکم﴾

﴿ صِهِ يَثْ بُرِ • ١٥١﴾ وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ٱلْإِمِيتِجْعَارُ تَوَّ ، وَرَمْيُ الْجِعَادِ تُوَّ، وَالسَّعْيُ بَيْنَ الصَّفا وَالْمَرْوَةِ تُوِّ، وَالطَّوَافَ تُوِّ، وَإِذَا اسْتَجْمَرَ احَدُكُمْ فَلْيَسْتَجْمِرْ بِعَوِّ. رَواهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: توّ: طاق تُعالواء الخليستجمر: استجمر (استفعال) وموتى دينا_

قوجمه: حضرت جابرض الله عندس روايت ب كرجناب بى كريم الله في التنجار طاق ب، كري مينكا طاق ب، مفامرده كدرمان على ال بر الواف طاق ب اورتم من كوئى وحونى د دومى طاق ب

فلاصة حديث ال مديث شريف كا خلاصه يه كدرى من سات ككرى مجينكا واجب بـ

الاستجمار تو: تو سراديهال تين دُهلي بن ؛ جواستناء كي المستب إنه سنة والعردية المات حديث كي تشريح المالية وفي البواقي بالسبعة "(مرقات ٢٢٧٥)، ورمى الجمار تو: يهال تو عمراد

سات عدد ب؛ يعنى رمى كے ليے سات كرى واجب ب "و كلها و اجبة " (مرتات ٣٣٤/٥)، وإذا استجمر احد كم فليستجمر بيء : صديث شريف كلمات على محمار منا بيء : صديث شريف كلمات على محمرة النار فيو تفع التكرار لازم نه آك "المظاهر ان المراد بالاستجمار هنا هو التبخر فانه يكون بوضع العود على جمرة النار فيو تفع التكرار وهو اولى " (مرقات ٣٣٤/٥).

الفصل الثاني

﴿سواری سے رمی کرناہ

﴿ مَدَيَثُ بِمِرَا الْمُهُوعَنُ قُدَامَةَ بْنِ عَبْدِ اللّهِ بْنِ عَمَّارٍ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَصَلَّمَ يَوْمِيُّ الْمَجَمُّرَةَ يَوْمَ النَّحْوِ عَلَى نَاقَةٍ صَهْبَاءَ لَيْسَ ضَرْبٌ وَلَا طَرْدٌ وَلَيْسَ فِيلٌ اِلَيْكَ اِلَيْكَ اِلَيْكَ. رَوَاهُ الشَّافَعِيُّ وَالنَّرْعِلِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِعِيُّ.

حل لغلت: ناقة: اوْثَى بَحْ ناق، صهباء: سرخى مائل سفيدى، صبهب (س) صهباً، الشعر بالول كاسرخ ياسفيد بونا-قو جهه: حضرت قدامه بن عبدالله بن مماررضى الله عنه سے روایت ہے کہ بیس نے قربانی كے دن جناب نبى كريم تفظف كومهباد اوْثَى پر سوار موكر دمى كرتے ديكھا ہے، ندوبال مارنا تھانہ ہا تكنا اور ندم نوبج كي آواز بن تھيں۔

خلاصة حديث اسمديث شريف كاخلامه يب كسوارى برسدى كى جاستى ب

﴿رمی اور سعی ذکر الله کے ذرائع هیں﴾

﴿ مديث بُهِ ١٥١٢﴾ وَعَنْ عَائِشَةَ عَنِ النِّي صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّمَا جُعِلَ رَمْيُ الْجِمَارِ وَالسَّغْيُ
بَيْنَ الصَّفَاوَ الْمَرْوَةِ لِإِقَامَةِ ذِكْرِ اللّهِ. رَوَاهُ التَّرْمِذِي وَالدَّارِمِيُّ، وَقَالَ التَّرْمِذِي الْمَا حَدِيثَ حَسَنَّ صَحِيْحٌ.
حل هفات: لاقامة: اَقَامَ (انعال) كمرُ اكرناءذكو: ذَكَرَ (ن)ذكراً عادكراً ــ

من جهد: حضرت عاكثر صديقة رضى الله عنها بروايت بكر جناب في كريم عليه فرمايا كدرى جمارا ورسى بين السفاد المروه ذكر الله كذرائع بين _

خلاصة حديث المعديث شريف كاخلاصه بيه كردى اورسى بحى در حقيقت ذكرالله اى مير.

عمل رمی الجمار و السعی الخ: بدونون ذکرالله اسطور بریس که ان دونون امور کوانجام دیتے کمات حدیث کی تشریح وقت الله کا ذکر اور دعائیں کی جانے کے ساتھ ساتھ ان مقامات میں بیش آمده واقعات کی یادتازه ہو

جاتی ہیں اور مناظر قدرت المحمول کے سامنے ہوتے ہیں۔

ومنئ ميں شھرنے كى جگه متعين كرنا ﴾ ومنئ ميں شھرنے كى جگه متعين كرنا ﴾ ﴿ صديث بُر ١٥١٣ ﴾ وَعَنْهَا قَالَتْ: فَلْنَا: يارَسُولَ اللهِ اللهِ

سَبَقَ. رَوَاهُ التُّرْمِلِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِمِيُّ.

- حل الفات: بناء: الراري بح ابنية وظل: ساب جع ظلال ومناخ: اوثث بحان كي جكم

قر جمد: ان سےروایت ہے کہم نے کہا: یا رسول اللہ ا آپ کے لیے منی میں کوئی عمارت شبخوادیں جوآپ کے لیے سامیر کا کام ويدرتو آب فرمايا بيس المني من اس مخف كادن بنعاف ك مكدم جويه يني-

خلاصة حديث مني من كوني فض اين ليظهر في كامكم تعين ندر ، بلكة ص كوجهال مجك طي عمر جائد

الا نبنی لك بناء يظلك بمنی: يعن آپ سے بدرخواست كى كداجازت ہوتو آپ كے ليمنی كات حديث كى تشری كا منى مناخ النع: تو آپ نے ليمنى

منع کرتے ہوئے فرمایا کمنل میں جو جہاں پہلے بانچ جائے وہ جگہاس کے لیے ہے ،کوئی اپنے لیے خاص جگہ تعین نہ کرے۔

الغصل الثالث

﴿جمارات کے پاس وقوف﴾

﴿ مديث بْرِ٢٥١٣﴾ عَنْ نَافِع قَالَ: إِنَّ ابْنَ عَمَرَ كَانَ يَقِفُ عِنْدَ الْجَمْرَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ وُقُوفاً طَوِيْلاً يُكَبِّرُ اللّهَ وَيُسَبِّحُهُ وَيَحْمِدُهُ وَيَدْعُواللّهَ وَلاَ يَقِفُ عِنْدَ جَمْرَةِ الْعَقَبَةِ. رَوَاهُ مَالَك.

حل الفات: يقف: و قف (ض) وقوفا ممراء المجمولين: جره كالشنيه بي معنى مناره

قوجمه: حضرت نافع مدوايت م كرابن عربها دومنارول كي إس ديرتك شهرت ته في الله كى بوائى ،اس كى بيع ،اورتميد بيان كرتے ہوئے دعاكرتے ،اور جمرہ حقبہ كے ياس بيس تفہرتے تھے۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه بيب كه يهل دونول منارول بيرى ك بعدو بال فم ركر ذكراور دعاكرني وإبي-

قراء قسورةالبقرة كما رواه البيهقي من فعل ابن عمر"(مرقات٥/٣٥٨)،ولا يقف عند جمرة العقبة: يمرة عقبـ كـ یاس اس کینیس کرے موتے تھے کہ بیجناب ہی کریم اللے سے ثابت نہیں ہے ''ہم یومی جموۃ ذات العقبة من بطن الوادی بسبع حصيات يكبر عند كل حصاة ولا يقف عندها ثم ينصرف فيقول هكذا رأيت النبي صلى الله عليه وسلم بفعله رواه البخارى"(مطوة المائع/٢٣٣)_

رباب المدى

الهدى: قربانى كاده جانورجوايام ج يم محرم كم معظم الحجائة "هو في اللغة، والشرع ما يهدى الى الحرم" (وراقار٣١/١) الفصل الاول

﴿ اشعار وتقليد كرنا﴾

﴿ حديثُ بْرِ ١٥١٥ ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: صَلَى رَسُولُ اللهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الظُّهْرَ بِإِي الْحَلَيْفَةِ، لُمُّ دُعاً بِنَاقَتِهٖ فَاشْعَرَهَا فِي صَفْحَةِ سَنَامِهَا أَلاَيْمَنِ وَسَلَتَ الدُّمَ عَنْهَا وَقَلَّلَهَا تَعْلَيْنِ، ثُمُّ رَكِبَ رَاحِلْتَهُ فَلَمَّا اسْتُوتْ بِهِ عَلَى الْبَيْدَاءِ آهَلُ بِالْحَجِّ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: اشعرها: أَشْعَرَ (افعال) اي لي فاص علامت مقرر كرنا، صفحة: جانب جمع صَفْحَات اسنام: كوبان جمع أسنيمة، قلدها : قَلْدُ (تَفْعَلَ) باردُ التار

قوجهد: حضرت ابن عباس منى الله عنها ب روايت ب كه جناب ني كريم الله في الحليف من ظهر كي نماز يزهى ، مرايي اوفني منگواکراس کے کوہان کے دائیں پہلوکوزخی کیا،اس کا خون پونچھا اور دوجو تیوں کاہار ڈالا، پھراپٹی سواری پرسوار ہوئے جب آپ کی اوقتی مقام بیداد می آپ کو لے کر کھڑی ہوئی تو آپ نے ج کے لیے لبیہ کہا۔

خلاصة حديث اس حديث شريف كاخلاصه بيب كه بدتى كے جانور ميں كوئى خاص تشان ہو۔

کلمات حذیث کی تشریک اصلی رسول الله صلی الله علیه وسلم النع: ذی الحلید الله میندی مقات م، یهال آپ کلمات حذیث کی تشریک فی آن کرظیری نماز پڑھی، ثم دعابناقته فاشعوها النع: مرادیه ہے کہ بدی براجانور بوتواس کوسنت كے مطابق زخى بھى كرے اور كلے ميں بارڈ ال دے ؛ تاكہ لوگ اس جانور كى حرمت كاخيال رقيس اوراس سے تعرض نہ كريں كم بيغربار كا حَقّ مِ وضوب به صفحة سنامه ليعلم انه هدى للفقراء"(درمختار ١/٤)ثم ركب راحلته:اوپروالى تاقد عمرادوه اونتی ہے، جے جناب نی کر یم اللے نے ہدی ہی کے لیے ساتھ لیا تھا اور یہاں را حلہ سے مرادوہ اونٹنی ہے جسے آپ نے سواری کے لیے لیا تفاءجس كانام تصوارتفا

رصرف هدی بھیجنا ہ

﴿ حديث مُهِ ٢٥١٧﴾ وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: آهْدَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّةً إِلَى الْبَيْتِ غَنَماً فَقَلَّدُهاً. متفق عليه.

حل نفات: البيت: كرجع بيوت، غنما: برى جع إشاة ك_

قوجمه: حضرت عاكشمديقدرض الله عنها سے روايت بك كه جناب نى كريم الله في ايك مرتبح مكر يول كى مدى جيجى قو آپ نے

خلاصة عديث اسمديث شريف كاخلاصه يه كخودنه جاكر صرف بدى بيجى جاستى --

اهدی النبی صلی اللّه علیه وسلّم الخ: مرادیے که دوسرے کے واسطے ہے ہدی بھیج کے کا تشریح کے الله علیه وسلّم الخ: مرادیے کہ دوسرے کے واسطے ہے ہدی بھیج کے الله کی تشریف کے الفاظ ہے واضح اشار وماتا ہے کہ ہدی کا جانور چھوٹا ہوتو صرف ہارڈ الا

جائے، اس كورتى ندكر _ "قال الطيبي رحمه الله اتفقوا على انه لا اشعار في الغنم وتقليدها سنة "(مرقات ٣٣٩/٥)-

﴿دوسریے کی طرف سے قربانی﴾

﴿ صِرِيتُ تَمِرِ ١٥١٧﴾ وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: ذَهَحَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَائِشَةَ بَقَرَةً يَوْمَ النَّحْرِ. رَواَهُ مُسْلِمٌ.

حل لغات: بقرة: كائي يحم بقرات، يوم: ول يحم إيام-

موجهه: حضرت جابر رضى الله عند سدوايت ب كقربانى كدن جناب بى كريم الله في طرف سايك كائ ذري كى-فلاصة حديث أس مديث شريف كاخلاصه يه كدوس كالحرف حقرباني كى جاسكى م كلمات مديث في تشريح فيه وسول الله عليه النع: مراديب كدآدى دوس في طرف على قرباني كرا -

﴿ آپ کا ہیویوں کی طرف سے قربانی کرنا ﴾

﴿ مِدِيثُ بِمِ ١٥١٨ ﴾ وَعَنْهُ قَالَ: لَحَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ لِسَائِهِ بَقَرَةٌ فِي حَجَّتِهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. حل الفات: بنساء ه: جمع بإمراة كي بمعن عورت، بقرة كات جمع بقرات-

توجمه: ان عددايت كرجاب في كريم الله في كيم كالله في كريم الله في الى يويول كى طرف سالك كائ ذري كى -خلاصة حديث اس مدعث شريف كاخلاصه يه كموقع بولو آدى الناخاند كاطرف يجى قربانى كرے-

کلمات حدیث کی تشری و البی صلی الله علیه وسلم الخ: اس حدیث شریف ش ہے عن نساء و اوراس سے پہلی کلمات حدیث کی تشری الله علیه وسلم الغ عن عائشة؟ ممکن ہے کہ جناب نی کریم الله نے ایک پوری گائے ام المؤمنین

حعرت عائشمديقدض الله عنها كاطرف عقرباني كى بواوردوسرى كائة تمام ازواج مطبرات كى جانب سے "و يحتمل انه ذبح عن عائشة وحمدها بقرة وجعل البقرة عن الكل" (مرتات ١٣٩٥٥)-

﴿ هدی بھیجنے والے کے لیے حکم ﴾

﴿ صريت بمر ٢٥١٩ ﴾ وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: فَعَلْتُ قَلَا ثِدَ بُدنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِيَّ، ثُمَّ قَلْدَهَا وَاشْعَرَهَا وَآهْدَاهَاء فَما حَرُمَ عَلَيْهِ شَيْءٌ كَأَنَ أُحِلُّ لَهُ. مَتَفَقَّ عَلَيْهِ.

خل الفات: بدن: جمع معدلة كى ، ووكائ يااون جس كاقربانى في كموسم من كي مل كائ وائ ، شيء: چيز جمع اشياء ـ قوجمه : حفرت عائشه صديقه رضى الله عنها سے روايت ہے كه ميں نے جناب نبى كريم الله ك بدنے كيلئے اسے باتھ سے سے بنائے، پھرآ ہے گلے میں ڈالا، زخی کیا اور آپ نے رواند کیا، اس کی وجہ سے آپ پرکوئی چیز حرام جیس ہوئی جو آپ کے لیے حلال تھی۔ خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه يب كه بدى جيمين والامحر منيس موجاتا؛ بلكه وه حلال بى ربتا ب-

کل ت مراد برے جانور ہیں "والبدن جمع بدنة کل ت مراد برے جانور ہیں "والبدن جمع بدنة وهی ناقة او بقرة" (مرقات ۴۵۰/۵) فما حرم علیه شیء کان احل له: مرادیہ کہری جینے

والامرميس بوجاتا؛ يكروه طال بى ربتا بي "لان باعث الهدى لايصير محرما فلا يحرم عليه شيء" (مرقات ١٥٠/٥)_

﴿ ﴿دوسریے کے ذریعے سے هدی بھیجنا ﴾

﴿ صديث بمر ٢٥٢ ﴾ وَعَنْهَا قَالَتْ: فَتَلْتُ قَلَالِدَهَا مِنْ عِهْنِ كَأَنَ عِنْدِى ثُمَّ بَعَتَ بِهَا مَعَ أبي. متفق عليه. حل لغات: فتلت: فَتَلَ (ض) فتلا الحبل رى بنا،عهن: اون جمح عهو نـ

قوجمه: ان سےروایت م کریس نے اپنے پاس موجوداون کے مدی کیلئے بٹے بنائے، پھرآ بنے ان کومیرے دالد کے ساتھ بھیجا۔ خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلامه بيه ووسرك كاجانب بريجيج جاستى ب

کلمات مدیث کی تشری کے اللہ ایک اللہ ایک میں ڈالی جانے والی ری ہے، شم بعث بھا مع ابی: مرادیہ کلمات مدیث کی تشری کی کشری میں جب مفرت مدیق اکبرکو جناب نی کریم علی نے تج کے لیے بھیجا توان کے

ساتھ ہری کے جانور بھیجے تھے۔

﴿هدى كى سوارى ﴾

﴿ صريت تمير ٢٥٢١﴾ وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنْ رُسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَاى رَجُلًا يَسُوقَ بَعَنَةً، فَقَالَ: ٱرْكُنْهَا، فَقَالَ: إِنَّهَا بَلَلَةٌ ،قَالَ: أَرْكُنْهَا، فَقَالَ: إِنَّهَا بَدْلَةٌ، قَالَ: أَرْكُنْهَا وَيْلَكَ فِي النَّانِيَةِ أَوِ النَّالِقَةِ. متفقّ عليهِ. حل الفات: يسوق: سَاق (ن)سوقاً بإنكنا، بدنة: وه كائيا إون بس كرباني ج يموسم من عج بن ك جائة بدن توجمه: حضرت الوجريره رضى الله عند عدوايت بكر جناب ني كريم الله في ايك آدى كود يكما كديدى إلى كدر باب بو آپ نے فرمایا: اس پرسوار ہوجا کو اس محص نے کہا: بدیدی ہے، آپ نے فرمایا: سوار ہوجا و، تواس نے کہا: بدی ہے، آپ نے فرمایا: اس پرسوار ہوجا و ،افسوس ہے م پرایہ بات آپ نے دوسری یا تیسری دفعہ میں کھی۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيب كمضرورت يربدي ك جانوركوبطورسوارى استعال كريكت بي-

کلمات حدیث کی تشری کے افغال او کبھا: مرادیہ برکضرورت ہوتو ہدی کے جانور کوبطور سواری استعال کر سکتے ہیں؛ اس لیے کمات حدیث کی تشریک کے کہ حدیث شریف میں غدکور صحابی کے پاس ہدی کے علاوہ دوسرا جانور سواری کے لیے نہ تھا، یہ ایک مجوری تھی ؛ اس لیے جناب نی کر پم اللے نے ان کو ہدی کے جانور پر ہی سوار ہوئے کے لیے کہددیا"و قال اصحابنا و الشافعی رحمه الله لايركبها الاعند الحاجة حملا للامر المذكور" (مرتات ١٥١/٥)

﴿ھدی پر سوار ھونے کے لیے ھدایت﴾

﴿ صديث مُبر٢٥٢٢ ﴾ وَعَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ سُئِلَ عَنْ رُكُوبِ الْهَدْي، فَقَالَ: سَمِعْتُ اللَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: أَرْكَبُهَا بِالْمَعْرُولَ إِذَا ٱلْجِئْتَ إِلَيْهَا حَتَّى تَجِدَ ظَهْرًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. حل الغات: الجئت: الْجَا (افعال) مجبور بونا، ظهر: بيرُوجَع ظُهُور -

قل جعه :حضرت ابوز بیرے روایت ہے کہ میں نے سنا، جابر بن عبداللہ سے بدی پرسوار ہونے کے بارے میں بوچھا حمیا توانہوں نے كها: ميس في جناب ني كريم الله كوكت موسة سنا، ابر دستور كم مطابق سوار موجب تم مجبور مو، يهال تك كددوسرى سوارى فل جائه فلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه به ب كدكونى دوسرى سوارى ند مطيقورى برسوار موسكة بي-

ار كبها بالمعروف: مراديه كرسوار بون كاجوطريقه باس كرمطابق بى سوار بونا جاب، كالمات حديث كي تشريح اليانه بوكه بدى كونقصان ينفي جائه المجنت البها المخ: مراديه كرمجور بواور دومرى سوارى

كانظام نبهوتوبدى يربى سوار موجائ البتدجب دوسرى سوارى كانظم موجائ توبدى يرسوار مونامناسب نبيس-

﴿قریب المرگ هدی کا حکم﴾

﴿ مِدِيثُ مُرِ ٢٥٢٣﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سِتَّةَ عَشَرَ بَدَنَةً مَعَ رَجُلٍ وَأَمَّرَهُ فِيْهَا فَقَالَ: يَارَسُولَ اللَّهِ! كَيْفَ أَصْنَعُ بِمَا اللَّهِ عَلَى مِنْهَا؟ قَالَ: أَنْحَرْهَا، ثُمُّ اصْبَعْ نَعْلَيْهَا فِيْ ذَمِهَا، ثُمَّ إِجْعَلَهَا عَلَى صَفْحَتِهَا وَلَا تَأْكُلُ مِنْهَا انْتَ وَلَا احَدَّ مِنْ اَهْلِ رُفْقَتِكَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: ابدع: بَدَعَ (ف)بدعاً يغير تمون كولى كام كرنا ، اصبغ: صَبَعَ (ن ف) صَبْعاً رَكَار قوجمه : حضرت ابن عباس رضى الله عنهما سے روایت ہے کہ جناب نی کر یم الله نے ایک آدمی کو محافظ بنا کراس کے ساتھ سولداونٹ مکمہ بيعيج ، تواس مخص نے كہا: يارسول الله! ان ميں سے جوچل نہ سكے ميں اس كوكيا كروں؟ آپ نے قرمايا: اس كوذئ كركے دونوں جو تيال

رنگ کراس کے کو ہان کے کنار ہے چھیرویٹا ،اوراس کا گوشت تم اور قاللے والے میں کوئی نہ کھائے۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلامديب كرجوبدى مكدنة كأنج سكاس كوذع كركاس كاكوشت تعليم كردياجات

كلمات مديث كي تشريح منة عشر بدنة مع رجل: المخفى كانام ناجيد اللي تعا"اي ناجية الاسلمي" (مرتات ١٥١/٥) کیف اصنع ہما ابدع علی منها: مرادیہ ہے کہ ہدی جب کرور جوجائے اور چل نہ سکے تو کیا کیا

جائے؟ قال انحرها ثم اصبغ نعليها في دمها النع: المين حكمت بيب كالوكول كو با جل جائے كريم مرى ب، الدارلوك كمانے ے يربيزكري، ولا قاكل منها انت المخ بحافظ اور قافے والے والے كواس ليے كھانے سے مع كرديا تاكرياوك خود مرى كى موت كابهاند بناكرة رئ كركهان يشيس "وانما منعوا ذالك قطعاً لا طماعهم لنلا ينحر ها احد ويتعلل بالعطب" (مرتات ٣٥٢/٥)

﴿هدی میں حصے﴾

﴿ صِرِيتُ بُرِ ٢٥٢٢﴾ وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نُحَرْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ الْحُدَيْبِيَّةِ الْبَدَنَةَ عَنْ صَبْعَةٍ وَالْبَقَرَةَ عَنْ صَبْعَةٍ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل الغامة: البدنة: ووكائ يا اون جس كي قرباني ج كموسم بن كي بن كرائ جمع بدُن ، البقرة: كائ جمع بقرات. توجمه: حعرت جابرض الله عندے روایت ہے کہ ہم نے جناب بی کر یم الله کے ساتھ عدیدیے سال سات سات آ دمیوں کی طرف سے اونٹ اور کائے ذیج کیے۔

خلاصة حديث جس طرح بوے جانور كى قربانى بىل كى آ دى كى شركت كى تخائش ہےا ہے ہى بدى بىل بى كى آ دى شريك ہوسكتے ہيں

البدنة عن سبعة والبقرة عن سبعة: ال مديث شريف بن بقركو بدند الك بيان كياميا كلمات مديث كن تقرب الك بيان كياميا كلمات مديث كن تقرب كالميان كياميا

بعر مجى شامل ہے،اس مديث شريف ميں دومرا مسئلہ يہ ہے كہ بوے جانوركى مدى ميں زيادہ سے زيادہ سات آ دى شريك موسكتے إلى، كم جموركا مسلك ب"وفيه دليل لمذهبنا كا كثر اهل العلم انه يجوز اشتراك السبعة في البدنة او البقرة إذ كان كلهم متقربين" (مرقات٢٥٣/٥)_

﴿نحر كاطريقه ﴾

﴿ صديث بْمِر ٢٥٢٥﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ آتَى عَلَى رَجُلٍ قَدْ أَنَاخَ بَدَنَّتَهُ يَنْحَرُهَا ،قَالَ: ابْعَثْهَا قِيَاماً مُقَيِّدَةً سُنَّةَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل لهات: اناخ: أَنَاخُ (افعال) البعير اوتث كوبهما ثار

ترجمه: حضرت ابن عمروض الله عنها سے روایت ہے کہ وہ ایک ایسے خص کے پاس پہنچ جواونٹ کونم کے لیے بھائے ہوئے تھے، انہوں نے کہا:اس کا بایاں یاؤں یا ندھ کر کھڑا تھوڑ دویسی جناب نبی کریم علیہ کا طریقہ ہے۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلامه بيب كماونث كوكمر عكر عركيا جائي

عنمانے ویکھا کہ اونٹ کو بٹھا کرنم کرنا جا ہتا ہے تو انہوں نے کہا کہ اس کا بایاں یا وی باندھ کر کمڑا جھوڑ دواورنم کروہ میں ست ملر بقہ ہے۔

﴿ هُدى كے بارہے میں هدایت ﴾

﴿ مديث تبر٢٥٢١ ﴾ وَعَنْ عَلِيٌّ قَالَ: أَمْرَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ ٱلْحُومَ عَلَى يُدَّيْهِ وَأَنْ اتَصَدُّقَ بِلَحْمِهَا وَجُلُودِهَا وَأَجلِّتِهَا وَأَنْ لَا أَعْطِيَ الْجَزَّارَ مِنْهَا، قَالَ: نَحْنُ نُعْطِيْهِ مِنْ عِنْدِنَا. مُتَّفَقَ عَلَيْهِ.

حل لفات: الحم: گوشت جمع لُحُوم، جلود: جمع جلد كى بمعنى كال، اجلتها: جمع ب جلكى بمعنى جمول_

توجمه: حفرت على رضى الشعند بروايت بكر جناب ني كريم الله في كي كاب كاب كاونول كى خركيرى كرول ان ك

موشت، کھال ،اورجمول صدقد کروں اور یہ کہ انسیں سے تصائی کو بچھ نہ دوں ،حضرت علی نے کہا: قصائی کوہم اینے یاس سے دیتے ہیں۔

خلاصة حديث الصويث شريف كا خلاصه بيب كه ال حديث تشريف مين خدور بدايت مح مطابق قرباني كے جانور كے ساتھ معامله بونا جا ہے ؟ تا كه خلاف شرع امور لازم ندآئے۔

كلمات حديث كي تشرك ان اقوم على بدنه النج: ان كوكرال الله الي بنايا تما تاك فرد بردنه موكر بي معرف من فرج كلمات حديث كي تشرك بلك الك ساجرت در،

قال نحن نعطیه من عندنا: قال کے فاعل حضرت علی بھی ہو کتے ہیں اور جناب نی کریم اللہ بھی ای علی او النبی صلی الله عليه وسلم وهو الاظهر"(مرتات٢٥٣/٥)_

﴿ هدى كسے كوشت كا هكم ﴾ ﴿ وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كُنَّا لَا تَأْكُلُ مِنْ لُحُوْمٍ الدَّبِيَّا فَوْتِي لَلَاثٍ فَرَخَّصَ لَنَا رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ : كُلُوا وَتَزَوَّدُوا فَاكُلُنا وَتَزَوَّدُ لَا مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل ثفات: لحوم: يمَّع لحم كي محمَّى وشت، رخص: رَخَّص (تفعيل) رخصت دينات

من جمع: حطرت جابروسی الله عندے دوایت ہے کہ ہم اوگ قربانی کا گوشت تین دن سے زیادہ نہیں کھاتے تھے، پھر جناب نی کریم الله في رخصت ديية موئ فرمايا: كما واورجم كرو؛ چنال چهم في كما نا اور جمع كرنا شروع كيا-

خلاصة حديث أقرباني اوربدى كا كوشت تين ون سازياده تك كعابهي كت بي اورجع كرك ركامي كت بي-

کنا لاناکل من لحوم بدننا ثلاث: اسلام کے ابتدائی دور ش قربانی کا گوشت تین دن سے زیادہ کمات حدیث کی تشریح کا خات حدیث کی اجازت تھی اور نہ ہی جع کر کے رکھنے کی گنجائش تھی؛ اسلئے حضرات صحابہ کرام تین دن

كاندراندرى كوشت كوشم كردياكرتے تھے مفو حص لنا النج بمراديب كااب قربانى كا كوشت تين دن سے زياده دنول تك كما بحى سے ہیں اورجع کر کے رکھ بھی سکتے ہیں۔

فاندہ: بری کے یتن طرح کے جاثور ہیں(۱) هدی تطوع جب حرم بیج جائے (۲) هدی المتعة (۳) هدی قران ،مبدی کے لیے افکا گوشت کھانا اور مطلقاً دوسروں کو کھلا نا درست ہے، باتی اسکے علاوہ ہدی کے جتنے جانور ہیں، انکا گوشت خودمبدی نہیں کھاسکتا، بكُـغربيوں مِسْتَقْمِمُ كُروبٍ "ويجوز كله بل يندب كالا ضحية من هدى النطوع إذا بلغ الحرم والمتعته والقران فقط ولو أكل من غيرها أي غير هذه الثلاثة من بقية الهدايا كدماء الكفارات كلها والنذور وهدى الاحصاء والتطوع الذي لم يبلغ الحرم وكذا لو اطعم اغنياً افاده في البحر ضمن ما اكل اي ضمن قيمته "(ردالمحتار ١٣٩/٣)

الغصل الثاني

چھدی کے ذریعے دشمن کو تکلیف پھنچانا ﴾

﴿ مديث بُمِر ٢٥٢٨ ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسِ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَهُدَى عَامَ الْحُدَيْبِيَّةِ فِي هَذَا يَا رَسُوْلِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَمَلًا كَأَنَ لِأَبِي جَهْلِ فِي رَأْسِهِ بُرَةٌ مِنْ فِضَّة ، وَفِي رِوَايَةٍ مِّنْ ذَهَبٍ رَأْسِهِ بُرَةٌ مِنْ فِضَّة ، وَفِي رِوَايَةٍ مِّنْ ذَهَبٍ لَا كَأَنَ اللَّهِ مَا وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مَنْ ذَهَبٍ لَا يَعْمُ وَاللَّهِ مِنْ فَعَيْدِ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ فَعَيْدِ اللَّهِ عَلَيْهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ فَعَيْدُ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مَلْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ مَلْمَ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ فَيْ إِنَّالِهُ مِنْ أَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ الللَّهُ عَلَيْهِ مَا اللَّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مَا اللَّهِ مِنْ اللَّهُ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهِ م يَعِيْظُ بَذَالِكَ الْمُشْرِكِيْنَ. رَوَاهُ الْبُودارُدَ.

حل لغات: جمل: اونث جمع جمال المرة الحلقة جم أرّات الرّوا وأرن) مروا المثنى كاك من صلقه والناء يغيظ عَاظ (ص) غيظاً عمدالانا قوجمه: حضرت ابن عباس رضى الله عنهمات روايت بكر جناب ني كريم الله في حديديك سال اليخ مدايا من الدجهل كا وزث بمي بھیجاتھا؛ جس کے سریس جاندی کا حلقہ تھا، اور ایک روایت میں ہے کہ سونے کا تھا، جس سے مشرکین کو خصد دلا ناتھا۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصريب كفنيمت ميس ملے موت اونث كوبدى ميس لے جاسكتے ہيں۔

تها، يغيظ بذائك المسركين: بدادنث ال ليانها تاكمشركين كواسلام كي نفرت اورمشركين كي تشست كانبيس عاردلا ياجا سكي

﴿ بِيهَ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الل قَالَ: ٱلْحَرْهَا، ثُمَّ أَغْمِسْ نَعْلَهَا فِي دَمِهَا، ثُمَّ خَلِّ بَيْنَ النَّاسِ وَبَيْنَهَا فَيَأْكُلُونَهَا ۚ رَوَاهُ مَالِكٌ وَالتَّوْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ وَرَوَاهُ أَبُوْ دَاؤِدَ وَالْدَّادِمِيُّ عَنْ نَاجِيَةَ الْأَسْلَمِيِّ.

حل الخات :عطب: عَطِبَ (س)عَطْباً تَعَكَناء البُدُن : جَمَعَ ب بُذْنَة كى وه كائ يا ون جسكى قربانى ج كموسم من مح من كا جائ قوجمه: حضرت ناجية زائ مدوايت م كيس نے كها: يارسول الله! جو مدى تحك جائے ميں اس كے ساتھ كيا كروں؟ آپ نے فرمایا: اس کونح کر کے اس کی جوتی کواس کے خون میں رنگ دینا، پھراس جانور کولوگوں کے درمیان چھوڑ دینا تا کہ لوگ اس کو کھالیں۔ خلاصة حديث إرى كاجوجانور چلنے سے عاجز ہوجائے ،اس كوذ كى كر كے غريوں كو كھلادياجائے۔

کلمات حدیث کی تشری کے مجلف اصنع بما عطب من البدن: جناب نی کریم ﷺ نے ایک موقع پران صحابی کو بھی ہدی کا کلمات حدیث کی تشریح کی اونٹ زیادہ تھک کمات حدیث کی تشاخ سے بید مسئلہ پوچھا کہ اگر کوئی اونٹ زیادہ تھک

جائے اور وہ حرم تک جانے سے عاج ہوجائے تو اس کے ساتھ کیا معاملہ کیا جائے؟قال انحرها النع: آپ نے بدیتایا کہ ایسے جانورکو ذی کر کے اس کی گردن میں پڑی جو تیوں کو رنگ دینا تا کہ لوگ سے جھیں کہ یہ ہدی کے جانور کا گوشت ہے اور اس کے ساتھ ویبا ہی معالمدكري؛ يعنى اغنياء اسكا كوشت كهانے سے پر بيزكري، ثم خل بين الناس وبينها فياكلونها: يعنى اس جانوركوذ كرك عام لوگوں کے کھانے کے لیے چھوڑ دیا جائے، نہ خود کھائے اور نہ قافلے دالے کو کھانے دے اور نہ ہی کوئی بالداراس کے کوشت سے فاكده المائ ينصيل كے ليے ديكھيے" قريب الرك بدى كائكم".

﴿قربانی کے گوشت کا حکم ﴾

﴿ صِدِيثُ مُمِرُ ٢٥٣ ﴾ وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بَنِ قُرْطٍ عَنِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ اعْظَمَ الْآيَّامِ عِنْدَ

اللهِ يَوْمُ النَّحْرِ، لُمُّ يَوْمُ الْقَرِّ قَالَ: نَوْرٌ وَهُوَ الْيَوْمُ النَّانِيْ، قَالَ: وَقُرِّبَ لِرَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَدَنَاتٌ خَمْسٌ اَوْسِتٌ، قَطَفِقْنَ يَزْدَ لِفَنَ إِلَيْهِ بِآيَتِهِنَّ يَبْدَأُ قَالَ، فَلَماً وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا، قَالَ: فَتَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ بَدَنَاتٌ خَمْسٌ اَوْسِتٌ، فَطَفِقْنَ يَزْدَ لِفَنَ إِلَيْهِ بِآيَتِهِنَّ يَبْدَأُ قَالَ، فَلَا وَكُلَمَةٍ بَكُمْ الْهُودَاوُدَ وَذَكَرَ حَدِيْتُ ابْنِ عَبَّاسٍ خَيْهِ لَمْ الْهُودَاوُدَ وَذَكَرَ حَدِيْتُ ابْنِ عَبَّاسٍ وَجَابِ فِيْ بَابِ الْأَضْحِيَّةِ.

حل المفاتُ: القر: اَلَوَّ (ن ض) الرَّا شَنْدَا مونا، طفقن: طَفِقَ (س) طَفْقاً شُروع كرنا، يز دلفن: زَلِفَ (س) زَلْفاً، إِذْ دَلَفَ (التعال) آكي مونا، قريب موناء

قوجهه: حطرت عبدالله بن قرط وضى الله عنه بدوايت بكر جمالك بن كريم الله في الله في

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلامه يه بكافل مدى كاكوشت مرآ دى كماسكاب-

ان اعظم الایام عند الله الغ: ہم ادبہ کر قربانی کا دن ان دنوں بھی ہے ایک دن ہے جو کمات حدیث کی تشرق افغان اور ہزرگ ترین دن ہے ، بیرمراداس لیے لی گئے ہے کہ دوسری احادیث بی (ذی الحجہ کے) عشرہ کوتمام دنوں کے مقابلہ بیں افغال کہا گیا ہے؛ لہذا اس اعتبارے کہ عشرہ ذی الحجہ افغال ہے، ذی الحجہ کی دسویں تاری (جو قربانی کا دن ہے) بھی افغال ہے؛ کیونکہ بیددن بھی عشرہ ذی الحجہ بی شامل ہے۔

النصل الثالث

رهدی کا گوشت کی

﴿ صَمَيْ مُكْمَ اللَّهُ عَنْ سَلَمَةَ بَنِ الْآكُوَعِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ ضَحَى مِنْكُمْ فَلَا يُصْبِحِنَّ بَعْدَ ثَالِئَةٍ وَفِى بَيْبِهِ مِنْهُ شَيْءٌ ، فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الْمُقْبِلُ، فَٱلُوْا: يَا رَسُوْلَ اللَّهِ! نَفْعَلُ كَمَا فَصْبِحِنَّ بَعْدَ ثَالِئَةٍ وَفِى بَيْبِهِ مِنْهُ شَيْءٌ ، فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الْمُقْبِلُ، فَٱلُوْا: يَا رَسُوْلَ اللّهِ! نَفْعَلُ كَمَا فَعَلْنَاالُهُامَ الْمَاضِي؟ قَالَ : كُلُوْا وَاطْعِمُوْا وَآدُخِرُوْا فَإِنَّ ذَلِكَ الْعَامَ كَانَ بِالنَّاسِ جُهْدٌ فَارَدْتُ اَنْ تُعِينُوْا فِي اللّهُ عَلَيْهِ .

حل لغات:ضحی:ضحی(تفعیل) ذرج کرنا،قربانی کرنا،بیته:گرجعبیوت،جَهَدَ(ف)جَهْداً بهت کوشش کرنا. تعینوا: اَعَان (افعال) مردکرنا۔

قوجمه: حفرت سلمه بن اکوع رضی الله عندے روایت ہے کہ جناب نبی کریم آلیا ہے نے فرمایاتم میں سے جو قربانی کرے ہو تیرے دن کے بعداس حال میں شخ نہ کرے کہ اس کے گھر میں قربانی کا پھے گوشت موجود ہو، جب اگلا سال آیا تو صحابہ نے کہا: یارسول اللہ! کیا ہم اس سال و یہائی کریں جیسا پچھلے سال کیا تھا؟ آپ نے فرمایا: کھاؤ کھلاؤاور جمع کرو؛ اس لیے کہ لوگ اُس سال بھوک میں جنلا تھے تو میں نے جایا کہ تم لوگ ان کی مدد کرو۔

ال مدیث شریف کا خلاصہ بہ ہے کہ قربانی کے گوشت کے ساتھ آدی جیسا جاہے معاملہ کرے بخود کھائے، خلاصة حدیث دوسرول کو کھلائے اور اگر چاہے قرجع کرے رکھ بھی سکتا ہے۔

کلمات حدیث کی تشری کا وشت ندر کھنداستعال کرے، اس مال کا واقعہ ہے کہ جس سال بہت سخت قطارہ ا

قا، اور دید مؤره الل بادید سے بحر گیا تھا؛ اس لیے جناب نی کریم اللہ نے قربانی کا گوشت زیادہ دنوں تک کھانے اور رکھنے ہے منع کر دیا تھا؛ تاکہ باہر سے آئے ہوئے جولوگ مدینے میں ہیں ان کوبھی گوشت ل جائے " لا جل القحط الشدید الذی وقع فیہ حتی امت لؤت المعدیدة من اہل البادیة " (مرفات ۵/ ۲۵۵)، فلما کان العام المقبل النح: یعنی جب آئدہ سال آیا تو حضرات محلب کرام نے جناب نی کریم تھی ہے ہوچھا کہ یارسول اللہ! اس سال کیا تھم ہے؟ کیا بچھلے سال کی طرح اس سال بھی تمن دن کے اعدر اندر گوشت تقدیم کر کے شم کردیں؟ آپ نے فرمایا کہ نیس اکھاؤ کھلاؤاور جا ہوتو جمع بھی کرلو، آب وہ حالات نیس رے؛ اس لیے تمن دن کے اعدر اندر قربانی کا گوشت شم کرنا ضروری نیس ہے۔

﴿هدى كا گوشت تقسيم كرنا﴾

﴿ صَمَّ مُهِ ٢٥٣٢﴾ وَعَنْ نُبَيْشَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: إِنَّا كُنَّا نَهَيْنَاكُمْ عَنْ لُحُوْمِهَا أَنْ تَأْكُلُواْ وَادَّخِرُواْ وَاتَجِرُواْ آلَا وَإِنَّ هَلِهِ لُحُوْمِهَا أَنْ تَأْكُلُواْ وَادَّخِرُواْ وَاتَجِرُواْ آلَا وَإِنَّ هَلِهِ اللهُ بِالسَّعَةِ فَكُلُواْ وَادَّخِرُواْ وَاتَجِرُواْ آلَا وَإِنَّ هَلِهِ الْكُهُ بِالسَّعَةِ فَكُلُواْ وَادَّخِرُواْ وَاتَجِرُواْ آلَا وَإِنَّ هَلِهِ اللهِ وَإِنَّ هَلِهُ اللهُ مِنْ اللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ مَنْ اللهِ وَاللهِ وَاللهِ مَنْ اللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ اللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ الللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ

حل لفات : لحومها : جمع ب لَحم بمعن كوشت ،ايام جمع بيوم كى جمعن دن_

قو جهد: حضرت بيده رضى الله عند بروايت ب كرجناب في كريم تطاف نفر مايا كريم في تهين تمن دن سوزياده قرباني كا كوشت كمانے سے شع كيا تھا تا كرسپ كوكافى موراب الله نے وسعت دى اس ليے كما كر ، جمع كرواوراجر كما كر ، فورسے سنوابيايا مكمانے مينے اور

ذ کراللہ کے دن ہیں۔

خلاصة حديث قرباني كاكوشت كماني ادرجع كرنے كے علاو النيم بحى كرے تاكدو كنا جريائے۔

کلمات حدیث کی تشریح الماکنا نهینا کم عن لحومها النج: مرادیه ب کدکی وقتی ضرورت پرایک مرتبرتین دن سے زیادہ رکھ کر کمات حدیث کی تشریح کی القادار ، و ضرورت اتی نہیں ، ی اسلئر قر انی کرکٹ یہ کوشوں سے ادر كمانے مضع كردياتما،ابوه مرورت باتى نہيں ربى؛ اسلئے قربانى كے كوشت كوتين دن سے زياده

ر کھ کر کھانے میں کوئی حرج نہیں ہے، والعجود ا:مرادیہ ہے کہ دومروں کو دیکر نیکی کمائی جائے جیارت مرادنہیں ہے"ای اطلبوا الاجربالتصدق وليس من التجارة" (مرقات ٢٥٤/٥)، وان هذه الايام ايام اكل وشرب الخ: مراديب كمنل كيهار ون جنہیں ایا م تشریق کہاجا تاہے ،ان ایام میں روز ہ رکھناحرام ہے،اسلنے روزہ ندر کھے، بلکہ کھائے چینے اور ذکر اللہ میں مشغول رہے۔

ہسر منڈانے کا بیان ہ

القصل الاول

چسر منڈانا افضل ھ<u>ے</u> ہ

﴿ مِدِيثُ بِهِ ٢٥٣٣﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَلَقَ رَأْسَهُ فِي حَجَّةِ الْوَدَاع وَٱنَّاسٌ مِّنْ ٱصْحَابِهِ وَقَصَّرَ بَعْضُهُمْ. مُثَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل المفات: حلى: حَلَقَ (ش) الواس منذانا ، اناس: جمع بناس كي بمعن آوى _

قوجعه: حضرت ابن عررضى الدونها ب روايت ب كه جناب ني كريم تلك اوراكش محابد في جد الوداع كموقع يرمرمنداك اور محوی نے تعرکرایا۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلامديب كدرمنذانا أنعنل ب-

كلمات حديث كي تشريح احلق رأسه في حجة الوداع الغ: مرادبيب كيرمندُ انا أفضل بي، يكي وجه كيشمول جناب انی کریم اللہ کے اکثر محلبہ کرام نے سرمنڈایا تھا "و حلقہ افضل، ای ہو مسنون"

(د دمعناد ۵۲۵/۳) قصر بعضهم: مراديب كركوني طل كرباع اعتمركرانا جا باداس كيمي منجائش ب-

﴿ آبِ کَا قَصِرِ کَرَانَاهِ

﴿ حديث تَبِر ٢٥٣٣﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ لِي مُعَادِيَةُ: إِنَّىٰ قَصَّرْتُ مِنْ رَأْسِ النَّبِيّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ رُسَلُمَ عِنْدَ الْمَرْوَةِ بِمِشْقَصِ. مَعْقِ عَلَيْهِ.

حل لغلت: قصوت: قَصَورَ (ن) قصوراً تأتم بونا ، قصور (الفعل) التي جمونا كرنا ، مشقص: جود مسكل كالتيري مشاقص قرجمه: حضرت ابن عباس رض الله عنها عدوايت ب كدمعاويد في جهد كها كديس في متعص عدوده كي باس جناب في ريم الله كريم الله تعوث كي تق-

ظلاصة حديث ال مديث ريف كاخلاصه يب كرم ملل كر بجائ تعربي كراسكا ب-

الى قصارت من رأس النبي الغ: حفرت معاويد من كالمناب في كريم علية ك بال تعرف الله عند كاجناب في كريم علية ك بال تعر نے کاتعلق جے میں ایک کس عرے ہے: اس لیے اس مدیث شریف ش عندالمروة کی

قید موجود ہے، اگر ج کے موقع پرآپ کے ہال قمر کرتے تو عند المدنی ہوتا، اس مدیث شریف کے ذیل میں بعض لوگوں نے یہ بحث چیئر دی کہ حضرت معاویہ رمنی اللہ عنہ نے اسلام کب قبول کیا؟ اللہ نے جب ان کوتو فیق دی اسلام قبول کیا، بال تر اشنے سے پہلے ہویا بعد میں، اس لیے کہ تر اشنے کے لیے مسلمان ہونا تو کوئی ضرورت نہیں ہے۔

رسر منڈانے والے کے لیے دعاہ

﴿ مِدَيَثُ بُهِ ٢٥٣٥ ﴾ وَعَنِ ابْنُ عُمَرَ أَنَّ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ فِي حَجَّةِ الْوَداَعِ: اللَّهُمُّ أَرْحَمِ الْمُحَلِّقِيْنَ، قَالُوْا: وَالْمُقَصِّرِيْنَ يَا رَسُوْلَ اللَّهِ؟ قَالَ: اللَّهُمُّ أَرْحَمِ الْمُحَلِّقِيْنَ، قَالُوْا: وَالْمُقَصِّرِيْنَ يَا رَسُوْلَ اللَّهِ؟ قَالَ: اللَّهُمُّ أَرْحَمِ الْمُحَلِّقِيْنَ، قَالُوْا: وَالْمُقَصِّرِيْنَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: اللَّهِ؟ قَالَ: وَالْمُقَصِّرِيْنَ. مَنْفَقٌ عَلَيْهِ.

حل لغات: المحلقين: حَلَقَ (ض) الرأس موندُنا، المقصرين: قَصَّرَ (تَفْعَيْل) الشيء جهونا كرنا

مند النه والول پردم فرما الله عنها في روايت م كه جناب في كريم تنطيع في الوداع كموقع پردعاكى "اے الله! توسر مند انے والوں پردم فرما" صحابہ نے كها: يارسول الله اور كتر وانے وائے، آپ نے فرمايا: اے الله اتوسر مند انے والول پردم فرما باصحابہ نے كها: يارسول الله! اور كتر وانے والے ، تو آپ نے فرمايا اور كتر وانے والے۔

خلاصة حديث اس حديث كاخلاصيب كدرمنذانا جول كدافعنل باس لية بن ان كے ليے رحت كى دعاكى۔

قال والمقصوين: يعنى جناب ني كريم من الله في توجدولان برتيسرى مرتبه بال ترشواف والوس كي ليدعاكى

﴿قصر سے حلق افضل ھے﴾

﴿ صريتُ بْبِر ٢٥٣١﴾ وَعَنْ يَحِي أَبْنِ الْحُصَيْنِ عَنْ جَدَّتِهِ اللهَا سَمِعَتِ النَّبِيَّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ دَعَا لِلْمُحَلِّقِيْنَ فَلَاثاً وَلِلْمُقَصِّرِيْنَ مَرَّةً وَاحِدَةً . رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل الخات: المحلقين: حَلَقَ (ش) حلقاً الرأس موثدً تاء المقصرين: قَصَّرَ (القَّيل) الشيء حجوثا كرنا_

قوجعه: حفرت کی بن حمین اپنی داوی سے روایت کرتے ہیں کہ انہوں نے ججۃ الوداع می کلھین کے لیے تین مرتبد عاکرتے ہوئے جناب بی کریم ملک سے سنااور کتر وانے کے لیے ایک مرتبہ۔

خلاصة عديث ال مديث شريف كاخلاصه يه ب كدر منذانا انسل ب_

دعا للمحلقين ثلاثاً: ال حديث شريف ش ب كدس منذاف والول كے ليے جناب في كريم علمات حديث كي تشريح علمات حديث كي تشريح

مدیث ید کلیتے بیں کہ جس داوی نے جیا ساویا ہی قل کردیا ہے" بعد مل کلام کل داو علی ما مسمع به" (مرقات ۲۹۰/۵)۔

﴿سرمنڈانے کا طریقہ ﴾

﴿ صَلَيْهُ بَاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَالْحَلَّاقِ وَنَاوَلَ الْحَالِقَ شِقْهُ الْآيْمَنَ، فَاحَلَقَهُ، ثُمَّ دَعا آبَا طَلْحَةً مَنْوَلَهُ بِمِنِي وَنَحَلُقَهُ مِنْ فَاعْطَاهُ آبَا طَلْحَةً، فَقَالَ: الْآنُصَادِيّ، فَأَعْطَاهُ آبًا طَلْحَةً، فَقَالَ: الْحَلِقُ فَحَلَقَهُ مَ فَأَعْطَاهُ آبًا طَلْحَةً، فَقَالَ:

ٱلْسِمْهُ بَيْنَ النَّاسِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل اخات: نسکه: سین پرزبراور پیش دونوں پڑھے جاتے ہیں جمع ہے نسکة کی جمعنی ذبیحہ شفه: جانب، کنارہ۔
قو جعهه: حضرت انس رضی اللہ عتہ ہے دوایت ہے کہ جناب نبی کریم اللہ میں آنے کے بعد جمرہ عقبہ کے پاس تشریف لے جاکر
ککریاں ماریں، پھر آپ منی میں اپنی قیام گاہ تشریف لائے اور ہدی کے جانوروں کو ذرح کیا، پھر آپ نے حلاق کو بلا کرا ہے سرکا دایاں
حصراس کی مانے کر دیا؛ چنال چاس نے آپ کا سرمونڈ ا، پھر ابوطلی انساری کو بلاکران کو وہ بال دے دیے، پھر آپ نے اپنے سرکا بایاں
حصراس کے سامنے کر کے فرمایا مونڈ و، چنال چاس نے مونڈ ے، تو آپ نے وہ بال ابوطلی کودے کر فرمایا یہ بال کوگوں بی تقسیم کردو۔
خلاصہ حدیث اس حدیث شریف کا خلاصہ ہے کہ آدی سرمنڈ اے تو دائیں جانب سے شروع کرے۔

کلمات صدیر کی تشری الله منی فاتی الجموة النع: مرادیه که جناب نی کریم الله فی آکر جمرة عقبه پدری کی اللی منوله بعنی النع: مرادیه که بعد آین قربانی کی " قم دعامالحلاق النع: مرادیه که قربانی که بعد آین معدات می طاق کو بلاکر پہلے سرکے دائی صحاد بعد بی سے کے بال منڈ واکرامت میں تقلیم کرادیا

وحلق کے بعد خوشبو لگانا)

﴿ وَمِدَ عَنْ مِهِ ٢٥٣٨ ﴾ وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ كُنْتُ أُطَيِّبُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَبْلَ آنْ يُحْرِمَ وَيَوْمَ النَّحْرِ قَبْلَ آنْ يَطُوْفَ بِالْبَيْتِ بِطِيْبِ فِيْهِ مِسْكَ. مُتَّفَقَ عَلَيْهِ.

حل اخات: طيب: خوشبوجع أطياب ميسك: كتتورى جع مسك-

قر جمع: حضرت عائشهمد يقدرض الله عنها بروايت بكه يس في جناب بى كريم تلطية كواحرام باند من به بيلي خوشبولكا في تقى، اورقر بانى كدن خانة كعبه كاطواف كرفي بيلي الى خوشبوجس مي كستوري تقى -

خلاصة حديث ال مديث ريف كاخلامه يب كه آدى مرمند اكرخوشود مى لكالے، يا ب كاطريق ب-

قبل ان محرم: احرام برادج وعره دونون کااحرام با نشخهاج کمات حدیث کاتشرت کا نشهمدیقدرض الله عنهاج کمات حدیث کی تشری و و میادونون کااحرام با ندھنے سے پہلے آپ کو خشبولگاتی تحیی، وہوم النحو المنع: لیمن جناب نی کریم تاہد قربانی اور حلق سے فارغ ہو کر حسل فرماتے، اس کے بعد حضرت عائشهمدیقدرض الله عنها آپ کوخوشبولگاتی تھیں، بعطیب فیه مسلك: مرادیہ ہے کہ وہ خوشبو ہوی اور شائد ار ہواکرتی تنی ۔

چنمر کے دن ظھر کی نماز کھاں پڑھے

وصديت نمير ٢٥٣٩ كه وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ انْ رَسُوْلَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ آفَاضَ يَوْمَ النَّحْوِ ثُمَّ رَجَعَ فَصَلَى الظُّهْرَ بِعِنيْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: افاض : أَفَاضَ (افعال) القوم منتشر مونا ، جانا ، يَوْمٌ : ول حَمَّ أَيَّامٌ -

قوجمه: جناب ني كريم تلك قربانى كدن مكر مرتشريف لائداورلوث كرآب في شي ظهرى فماز پرسى-خلاصة حديث قربانى كايام بس جهال موقع بود بس ظهرى فماز پرسد كمنى بس پر مناضرورى فيس ب-. افاض یوم النحو: قربانی کے تین دن ہوتے ہیں،ان ایام میں جناب ہی کریم اللہ منی اس کا سے مکرمہ کا است حدیث کی تشری متعدد بار مجے تھے،ان میں سے یہاں ایک سفر مراد ہے، دجع فصلی الظهر بعنی:اس حدیث

شريف مي م كه جناب ني كريم علية في ظهر كي نمازمني من پرهي اور "باب قصة حجة الوداع" مي ع "فافاض ١ البيت فصلی ہمکة الظهر "فین آپ نے ظہر کی نماز کے میں پڑھی۔ان دونوں روایتوں میں تطبیق بیہے کہ قربانی کے ایام میں من سے کمہ كرمد جناب نيي كريم الله كا صرف ايك بى سزنيين موا تعا؛ بلكة قرباني كان ايام من جناب ني كريم الله كان اسفار ثابت ہیں اس کے کہ کی روایت میں ہے کہ آپ نے طواف زیادت کے لیے مکہ مرمہ کا سنر کیا اورظہر کی نماز مکہ مرمہ بی میں پڑھی کمی میں ہے کہ آپ کہ مرمدآئے اور ظہر تک واپس جا کرظہر کی نمازمنی میں بڑھی اور سی روایت میں ہے کہ آپ نے رات کو بھی منی سے کہ مرمہ کا سنرفر ما يا تما" انه عليه الصلاة والسلام زار مع نساء ه ليلا" (مرقات ١٢/٥) _ يرتنف الفاظ اور متعدد كام بتارب إلى كرآب كا منى سے كمكرمهكاسفرايك بارتين ؛ بلككى باركا ب،اس دوران آپ كوظهركى نماز جهال ير من كاموقع ملاوجي يرد فى "روى انه كان يزور البيت في كل يوم ايام النحرفليحمل على يوم آخر"(مرةات١٢/٥٣١)_

الغصل الثاني

دِعورت کا سر منڈانا ہے

﴿ مديث بْبر ٢٥١٠ ﴾ عَنْ عَلِيٌّ وَعَالِشَةَ قَالًا: نَهِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تَحْلِقَ الْمَوْاةُ رَأْسَهَا. رَوَاهُ التَّوْمِلِيُّ.

حل لفات: تحلق: حَلَقَ (ش) حلقاً الرأس منذ انا ، المرأة: عورت بمع نساء.

من جعه: حضرت على اورعا تشرمد القدوش الله عنما سدوايت ب كه جناب ني كريم الله في حورت كوسر منذاف سيمنع فرمايا ب-خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يب كدورت ابناس دمندا اعد

كلمات حديث كاتشر من دسول الله صلى الله عليه وسلّم الغ: مراديب كمورت اينامر ندمندُ اع:اس ليك كم عديث كاتشر من عورو ل كي مندُ انا مرده تحر مندُ انا مردي (ردي مردي مندُ انا مردي انتها مند انتها من انتها مند انتها من انتها من

﴿عورت بال كترواني

﴿ صِرِيثُ مُبِرُ ٢٥٣١ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ عَلَى النُّسَاءِ الْحَلْقُ، إِنَّما عَلَى النِّسَاءِ التَّقْصِيرُ. رَوَاهُ ابُوْدَاوُدُ وَالدَّارِمِيُّ.

حل لفات: النساء: جمع إمراة كيممن عورت، الحلق: حَلَقَ (ش) حلقاً الرأس منذانا

موجعه: حضرت این عباس رضی الله عنها سے روایت ہے کہ جناب نی کریم تعظیم نے فرمایا مورتوں کے لیے سرمنڈ انانہیں ہے؛ بلکدان

كلمات حديث كي تشريح ليس على النساء العلق: مردول كي طرح طال مون كي ليعورتول كومر منذانا واجب نيس ے، بلکہ ان کے لیے منوع ہونے کی بنیاد پر مردہ ہے، انعا علی النساء التقصیر: مراویہ ہے کہ

مورت طال بون كيليم المي تحورُ عب بال ايك الكل ك بقدر كرواك "وعندنا التقصير هو ان يا خد من رؤس شعر راسه مقدار الملة رجلا كان او امرأة" (مرقات ٣٦٢/٥)_

يان

اس پرتوین پرهیں کے میدنیال رہے کہ یہ باب رہے سے فالی ہے۔

الغصل الأول

﴿افعال حج میں تقدیم وتاخیر﴾

﴿ مديث تُبِرُ ٢٥٣٢﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ الْ رَسُوْلَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ وَقَفَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ بِمِنَى لِلنَّاسِ يَسْأَلُونَهُ ، فَجَاءَ هُ رَجُلٌ ، فَقَالَ: لَمْ اَشْعُرُ فَحَلَقْتُ قَبْلَ الْ الْبَيْ وَلَا حَرَجَ فَقَالَ: الْمُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَنْ شَيْء فَقَالَ: لَمْ اَشْعُرْ ، فَقَالَ: الْمُ اللهِ عَرَجَ ، فَقَالَ: ارْمِ وَلَا حَرَجَ فَمَا سُئِلَ النّبِي وَلَا حَرَجَ ، فَقَالَ: الْمُ عَنْ شَيْء فُلُمَ وَلَا أُخْرَ إِلَاقَالَ الْعَلْ وَلَا حَرَجَ . مُتَفَقَّ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَنْ شَيْء فُلُمَ وَلَا أُخْرَ إِلَاقَالَ الْعَلْ وَلَا حَرَجَ. مُتَفَقَّ عَلَيْهِ .

وَلِمِيْ رِوَايَةٍ لِمُسْلِمِ: اَتَاهُ رَجُلٌ، فَقَالَ: حَلَقْتُ قَبْلَ اَنْ اَرْمِيَ، قَالَ: اَرْمِ وَلَا حَرَجَ وَاتَاهُ آخَرُ، فَقَالَ: اَفَضْتُ اِلَى الْبَيْتِ قَبَلَ أَنْ اَرْمِيَ، قَالَ: اَرْمِ وَلَا حَرَجَ.

اللم" (مرتات ١١٦٥)_

جواب: حفرات جمهور کی طرف سے مدیث باب کا بیجواب دیاجا تا ہے کہ مدیث شریف میں "لا حوج" سے مراد بیہ کہ چول کہ و الله کا معنی کہ اللہ میں ہوگا جسیا کہ حضرت ابن و الله کی لائلی میں ہوگا تھی اس لیے گئاہ تو نہ ہوگا ؛ اس لیے کہ حرج کے معنی گناہ بی کے آتے ہیں ؛ البتد دم لازم ہوگا ؛ جسیا کہ حضرت ابن مہاس رضی اللہ خہما کی روایت سے واضح ہے "و او لو الوله و لا حرج علی دفع الالم لجھله دون الفادية" (مرقات ۱۳۲۳)_

رجج میں چھوٹی موٹی فلطیوں کاحکم

﴿ مديث نُمِرُ ٢٥٣٣ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسْتَلُ يَوْمَ النَّحْوِ بِمِنْي، فَقَالَ: لَا حَرَجَ فَسَتَلَهُ رَجُلَ، فَقَالَ: رَمَيْتُ بَعْلَمَا آمْسَيْتُ، فَقَالَ: لَا حَرَجَ وَرَاهُ الْبُحَادِيُّ.

حل الفات: امسيت: أمسى (اقعال) شام ش واخل بونا، حرج: كناه، حَرَج ، حَرَجاً الرجل كناه كاربونا-

قو جعد: حضرت ابن عباس رضی الله عنها ہے روایت ہے کہ قربانی کے دن منی میں جناب نبی کریم اللے ہے مسائل ہو جھے جارے تھے ہو آپ فرمارے سے کہ کوئی حرج نبیں ہے؛ چناں چرایک آدی نے ہو چھتے ہوئے کہا: میں نے شام کے بعدری کی ہے ، تو آپ نے فرمایا کہ کوئی حرج نبیں ہے۔

خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلاصه بيب كرج مين جوفي موفي غلطيال موجائة كوكي كناه بيس ب-

الغصل الثانى

﴿ ایک آدمی کا سوال ﴾

﴿ صِرِيثُ بُهِ ٢٥٣٧﴾ عَنْ عَلِي قَالَ: آتَاهُ رَجُلٌ، فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللَّهِ النِّي ٱفْضَتُ قَبْلَ انْ آخِلِقَ قَالَ آخِلِقُ أَوْ قَصَّرُ وَلَا حَرَجَ مِوَجَاءَ آخِرُ مُفْقَالَ: ذَبَحْتُ قَبْلَ انْ آرْمِيَ، قَالَ: آرْمِ وَلَا حَرَجَ . رَوَاهُ التَّرْمِلِيُّ. حل المات: رجل: آدى جمع رجال ، احلق: حَلَق (ض) حلفاً الرأس منذانا، حرج: گناه، حَرِجَ (س) حوجاً الرجل گناه گار بوتا قوجهه: صغرت على رضى الله عند عدوايت ب كرايك آدى نے آكر بوچها: يا رسول الله الملطة من نے طق بيلے طواف افاضه كر ليا به آپ نے فرمايا: اب طق يا قمركر لوكوكى حرج نيس به دوسرے نے آكركها: من نے رئى سے پہلے قربانى كرلى به آپ نے فرمايا: اب رئى كرلوكوكى حرج نيس ب

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلامه بيب كرآدى جانكارلوكول سے يو جوليا كرے۔

کلمات مدیث کی تشری المی افضت قبل ان حلق النع: طواف زیارت می ترتیب واجب نیس ب؛ اس لیے اگر کی نے منی المات مدیث کی تشریح اس کے اگر کی نے منی ادا کیے جانے والے امور سے پہلے ہی طواف زیارت کرلیا تو کوئی حرج نیس ہے، نہ گناہ ہے اور نہ

ى دم ب "والحاصل ان الطواف لا بجب ترتيبه على شيء من الثلاثة "(ود محتار ٣١٥/٥)، ذبحت قبل ان ادمى النج: ممكن ب كديرما كل مفرد و و بن برقرباني بيس، جب قرباني ان برواجب بي بيس قر تريب بحي باقى ندرى ؛ اس ليمان كارى سے پہلے قرباني كر ليما كوئى ترج كى بات ند وكى "اى لا اثم و لا فدية على المفرد " (مرقات ٣١٢/٥) -

﴿ كَنِي لُوكُونِ كَاسُوالِ كَرِنَا ﴾

﴿ مديث ُمُبر ٢٥٣٥﴾ عَنْ أَسَامَةَ بْنِ شَرِيْكِ قَالَ: حَرَجْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللّهِ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ حَاجًا فَكَانَ النَّاسُ يَأْتُوْنَهُ فَمِنْ قَائِلِ يَارَسُوْلَ اللّهِ! سَعَيْتُ قَبْلَ انْ أَطُوْقَ اوْ أَخُوْتُ شَيْءًا أَوْ قَلْمَتُ شَيْءًا، فَكَانَ يَقُوْلُ: لاَحَرَجَ إلّا عَلَى رَجُلٍ اِفْتَرَضَ عِرْضَ مُسْلِمٍ وَهُوَ ظَالِمٌ فَذَالِكَ الّذِي حَرِجَ وَهَلَكَ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ.

حل المفاق: صعبت: سَعیٰ (ف) سعباً چلنا، افتوض (التعال) عوضه فیبت کرنا، عوض: ایجی عادت جمع آغو اض.
قو جعه: حضرت اسامه بن شریک رضی الله عند سے روایت ہے شن جناب فی کریم الله کے ساتھ بچے کے ارادے سے لکا تو لوگ آپ
کے پاس آئے تھے، ایک کہنے والے کہتے یارسول الله میں نے طواف سے پہلے سی کرلی ہے یاش نے کوئی چیز مؤخر کردی ہے یاش نے
کوئی چیز مقدم کردی ہے، تو آپ فرماتے تھے کوئی حرج نہیں ہے؛ الا اس مخص کے جو کی مسلمان کی عزت سے تھیا، یہ ظالم ہے؛ وربیوه مخص ہے جو گناه گاراور بلاک ہونے والا ہے۔

اس مدیث اس مدیث شریف کا خلاصریب کربن الوگول کی مجلس لکی بواور بات چل ربی بوتو موقع سے فائدہ اٹھا کرجو پچھ خلاصۂ حدیث بوچھنا بو بوچھ لینا چاہیے، جیسا کر حفرات صحابہ کرام جناب نی کریم سے کیا کرتے تھے۔

بہلے بی کوئی سعی کرلے تو یہ می سخی ہے، اس شرط کے ساتھ کہ سعی سے بہلے کوئی طواف کیا ہو،خواہ وہ طواف نقل بی ہو،الا علی رجل المتر ص عرص مسلم المنے: حدیث شریف کے ان کلمات سے واضح اشارہ ملتاہے کہ "لاحرج" سے مراد گناہ بی ہے، نہ کرفدید

﴿ بَابُ خطبة يوم النَّمر ورمى ايَّام التَّشريق والتّوديج ﴾

المصل الأول

﴿قربانی کے دن خطبہ﴾

﴿ مديث بْرِ٢٥٣٧ ﴾ عَنْ ابِي بَكُرَةَ فَالَ: خَعَلْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ النَّحْوِ قَالَ: إِنَّ الزَّمَانَ

قَدِامُتَدَارَ كَهَيْتَتِهِ يَوْمَ خَلَقَ اللّهُ السَّمُواتِ وَالْآرْضَ، السَّنَةُ إِنْمَا عَضَرَشَهُراً: مِنْهَا أَرْبَعَةَ حُرُمٌ فَلاكُ مُقَوَ الْهَاتِ ذُوْالْقَعْدَةِ وَدُوْالْحِجَّةِ وَالْمُحَرَّمُ وَرَجَبُ مُصَرَ اللّهِى بَيْنَ جُمَادِى وَضَعْبَانَ، وَقَالَ: اللّهُ عَلَمَا: اللّهُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ، فَسَكَتَ حَتَى ظَنَا اللّهُ سَيْسَمَيْهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ، فَقَالَ: النِّسَ ذَالْحِجَّةِ؟ فَلْنَا: بَلَى بَلَدٍ هِلَمَا؟ فَلْنَا: اللّهُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ، فَسَكَتَ حَتَى ظَنَنَا اللّهُ سَيْسَمِّيْهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ، فَقَالَ: اللّهُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ، فَسَكَتَ حَتَى ظَنَنَا اللّهُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ وَمُولُولُهُ اعْلَمُ اللّهِ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ وَمُولُولُهُ اعْلَمُ وَمُولُهُ اعْلَمُ وَاللّهُ وَرَسُولُهُ اللّهُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ وَاللّهُ وَرَسُولُهُ اللّهُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ وَاعْرَاحَتَى طَنَنَا اللّهُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ وَاعْرَاحَتَى طَنَيْا اللّهُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ وَاعْرَاحَتَى طَنَيْا اللّهُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ وَاعْرَاحَتَى طَنَا اللّهُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ وَاعْرَاحَتَى طَنَيْا اللّهُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ وَاعْوالَكُمْ وَاعْرَاحَتَى طَنَيْا اللّهُ عَلَمُ وَاعْوالَحَمْ وَاعْرَاحَتَى وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَرَعُولُهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللللّهُ اللللهُ اللللهُ اللللّهُ اللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللللّهُ اللللهُ اللللّهُ اللللهُ اللللهُ اللّهُ الللللهُ اللللهُ اللللهُ الللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللهُ اللللهُ الللللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ اللللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللّ

حل نفات: هيئة: مالت بجع هَيْنَات، يسميه: سَمّى (تَفْعَلَ) نام ركانا، البلد: شهر جع بلاد، اعراض: بحع بعوض ك بمعن المجى عادت، ضلا: كرابى، حَسل (ض) صَلَالاً مراه بونا، اوعى: وعي (ض) وَغَياً الحديث تبول كرنا-

عطبنا النبی صلی اللّه علیه وسلّم بوم النحر: حفرات شوافع کنزد یک قربانی کے پہلے دن کمات حدیث کی تشریکی خطبنا النبی صلی اللّه علیه وسلّم بوم النحر: حفرات شوافع کنزد یک قربانی کے پہلے دن خطبد یا متحب ہور حضرات احناف کنزد یک قربانی کے دوسرے دن خطبد یا سنت ہے، جس کی تائید بعض دوسری احادیث ہے ہوتی ہے، جو اس بات کی دلیل ہے کہ احناف کا مسلک تن بجانب ہے" یستحب المحطبة عند المشافعی فی اول ایام النحر وعدد الافی الثانی من ایامه و تقییده فی الاحادیث الصحیحة یؤید ملحنا"

(مرقات ٣١٥/٥)، قال في اللباب ثم إذا كان اليوم الحادي عشر وهوثاني ايام النحر خطب الامام خطية واحدة بعد صلاة الظهر.....وهذه الخطبة سنة وتركها غفلة عظيمة"(تآوي ثاي ١٠٥/٥٥)_

عافده: ال مديث شريف من طه يهم الخر حمراده فطبه بهم من جن من جناب في كريم الله خربانى كدن بندوليست كي كي اله وه فطبه بين المك مناسك بنائ جائي بين المكه وه فطبه و قربانى كدوس ون ديا جاتا ب "فالصواب ان هذه الخطبة كانت خطبة موعظة وان المخطبة المعروفة كانت ثانى يوم النحر والله اعلم (مرقات ١٥٥٥)، قال ان الزمان: وقت كانت خام نام ذمانه مي خواه كم جويا زياده : يكن مراديها بيسال بيسال بيسال بيسال الوقت وكثيره والمراده السنة "(مرقات كانام زمانه مي أن ياده : يكن مراديها بيسال المينة " (مرقات ١٥٥٥).

﴿رمی کی ابتداء کون کریے ﴾

﴿ صِريكُ نُمِرِ ٢٥/٢٤ ﴾ وَعَنْ وَبَرَةً قَالَ: سَأَلْتُ ابْنَ عُمَرَ مَتَى آرْمِيَ الْجِمَارَ، قَالَ: إذَا رَمَى إِمَامُكَ فَارْمِهُ فَاعَدْتُ عَلَيْهِ الْمَسْأَلَةَ ، فَقَالَ : كُنا نَتَحَيَّنُ فَإِذَا زَالَتِ الشَّمْسُ رَمَيْنَا. رَوَاهُ البُخَارِئُ.

حل نفات: امامك: پيتوا، مقدى جي ائمه، نتحين: تحين (تفعل) انظار كرنار

قوجهه: حضرت وبره رحمة الشعليد سے روايت ہے كہ ميں نے ابن عمر سے پوچھا كہ ميں رمى جماركس وقت كروں؟ تو انہوں نے كها: جب تہاراامام رمى كرے تو تم بھى رى كراو، يس نے مسئلے كا اعاده كيا تو انہوں نے فر مايا ہم انظار كرتے، جب دو پهر ڈھلتى تو رمى كرتے ۔ اس حدیث شريف كا خلاصہ بہ ہے كہ جب جا تكارلوگ رمى شروع كرديں تو دوسر بے لوگوں كو چاہيے كہ اب رمى خلاصة حديث كر

کلمات حدیث کی تفریک کے دومر الجعماد : لین حضرت وبروتابعی فے حضرت ابن عمر منی الله عنی الد عنی حضرت ابن عمر منی الله عنی حضرت ابن عمر کلمات حدیث کی تشری کی تشری الله عنی حضرت ابن عمر منی الله عنی منابع الله علی الله علیه الله علیه الله علیه الله علی الله

﴿رمی جمرات کی ترتیب﴾

﴿ حديث ﴿ بِهِ اللّهِ وَعَنْ سَالِم عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ كَانَ يَوْمِيْ جَمْرَةَ الذَّنْيَا بِسَبْع حَصَيَاتٍ يُكَبِّرُ عَلَى الْوِ اللهُ عَلَا وَيَدْعُوْ وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ، ثُمَّ يَرْمِيْ الْوُسْطَىٰ كُلُّ حَصَاةٍ ثُمَّ يَتَقَدَّمُ حَتَى يُسهِلَ، فَيَقُومُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ طَوِيْلًا وَيَدْعُوْ وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ، ثُمَّ يَرْمِيْ الْوُسْطَىٰ بِسَبْع حَصَيَاتٍ يُكَبِّرُ كُلَمًا رَمَى بِحَصَاةٍ، ثُمَّ يَا خُدُ بِذَاتِ الشَّمَالَ، فَيُسْهِلُ وَيَقُومُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ، ثُمَّ يَدُعُو وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ وَيَقُومُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ، ثُمَّ يَذَعُو وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ وَيَقُومُ طَوِيْلًا، ثُمَّ يَرْمِيْ جَمْرَةَ ذَاتِ الْعَقَبَةِ مِنْ بَطْنِ الْوَادِيْ بِسَبْع حَصَيَاتٍ يُكَبِّرُ عِنْدَ كُلُّ مَنْ مَلْ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ يَقْعَلُهُ. رَوَاهُ الْبَحَادِيُ. حَصَاةٍ وَلَا يَقِفُ عَنْهَ عَنْهَا وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ يَفْعَلُهُ. رَوَاهُ الْبَحَادِيُ.

حل لفات: حصيات: جمع بحصاة كي بمني كرى، يرفع: رَفع (ف)رفعا الحاناء

قوجمہ: حضرت سالم سے روایت ہے کہ ابن مرقریب کے جمرے میں سات کنگریاں ارتے تھے، ہر کنگری پہ تجبیر کہتے ہم آگے برط برصتے ؛ یہاں تک کہ جب زم زمین پر کافی جاتے ، تو قبلہ رود پر تک کھڑے دنے اور اپنے دونوں ہاتھ اٹھا کردعا کرتے ، مرجم و دسلی پہ سات کنگریاں مارتے ، جب کنگری مارتے تو تجبیر کہتے بھر ہائیں جانب بڑے کرزم زمین پر کافی جاتے اور قبلہ روکھڑے ہوئے ، محراسیے دونوں ہاتھ اٹھا کر دیر تک کھڑے ہوکر دعا کرتے ، پھر جمر ہ عقبہ پہلطن وادی سے سابت بجریاں مالاتے ، ہر کنگری پیجبیر کہتے ،اور وہاں کھڑے نیس ہوتے ، پھر وہاں سے واپس ہوتے ہوئے کہتے میں نے جناب نی کریم تلکی کوایسے بی کرتے دیکھا ہے۔

ال مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ جس ترتیب سے اس مدیث میں رقی کا طریقہ بتایا کیا ہے، ای ترتیب سے خلاصہ حدیث کرے ا تاکہ کی طرح کا کوئی تعلی پیدا نہ ہو۔

اومی جموۃ الدنیا: جرہ دنیا ہے مراد جرہ اولی ہے، یہ جمرہ اور مناخ بنی اور مجد خف ہے قریب کمات حدیث کی تشری ہے، ای بنیاد پراسے جرہ دنیا؛ یعنی قریب کا جرہ کہا جا تا ہے، بسبع حصیات المخ بین یہ کنریاں

ومنی میں شب باشی کے

﴿ صِرِيثُ بُهِ ٢٥٣٩﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: اِسْتَأْذَنَ الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ انْ يَبِيْتَ بِمَكْمَ لَيَالِيَ مِنِي مِنْ آجُلِ سِقَايَتِهِ فَاذِنَ لَهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل المفات: الميت: الماتُ (ض) الله عنها رات كرارنا الميالي: جمع ب ليلة كى بمعنى رات اسقاية: يانى بلانے ك جكد-قوجه عنرت ابن عررضى الله عنها سے روایت ب كه عباس بن عبد المطلب نے جناب ہى كريم الله سے اپنى بلانے ك جكه كى وجد الله عنى كى راتيس كے مِس كر ارنے كى اجازت جا ہى ، تو آپ نے ان كو اجازت وے دى۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلامه بيب كرتقاضه كي بنياد برمني كي راتيس كي بس كزاري جاسكي بير-

کل ت دیث کی تشری ان بیت بمکة لبالی منی من اجل سقایته: حضرات احناف کے نزدیک منی کی راتوں میں منی کل است حدیث کی تشری کی من ایم میں رات منی بی علی است میں رات منی بی

من قيام كرے؛ الايدكوئى عذر موتومئى كى شب باشى ترك كى جاسكتى ہے، جيسا كہ جناب نى كريم آلگائے نے عذركى بنياد پر معرب عباس رضى اللہ عندكو سكے شى دات گزاد نے كى اجازت دى تقى " لا يعبوز توك السنة الا بقدر وجع العذر توفع عنه الاساء ة واما عند المشافعى فيجب المعبيت فى اكثر الليل " (مرقات ١٩/٥).

﴿ آپ سبیل زمزم پر ﴾

﴿ صَدَيَثُ بُهِ ٥٥٠﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَاءَ إِلَى السَّقَايَةِ فَاسْتَسْقَى، فَقَالَ الْعَبَّاسُ: يَا فَصْلُ ا ذُهَبْ إِلَى أُمِّكَ، فَاثْتِ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِشَرَابٍ مِنْ عِنْدِهَا، فَقَالَ: اسْقِيَى فَقَالَ: يَارَسُولَ اللهِ إِلَّهُمْ يَجْعَلُونَ آيْدِيَهُمْ فِيْهِ، قَالَ: اسْقِيَى، فَشَوِبَ مِنْهُ، ثُمَّ آتَى زَمْزَمَ وَهُمْ يَسْقُونَ وَ يَعْمَلُونَ فِيْهَا، فَقَالَ: اعْمَلُوا فَإِنَّكُمْ عَلَى عَمَلِ صَالِح، ثُمَّ قَالَ: لَوْلَا آنُ تَعْلَبُوا لَنَوَلَتُ

حل المفامت: السقاية: يانى بلان كى جكر اشراب: يينى كرير جمع أشربة

موجعه: حعرت ابن عباس رض الله عنها مدوايت بكر جناب ني كريم علية في سيل زمزم بيآكر يافي ما تكاء وعباس في كها: ا فضل! پی ماں کے پاس جا کر جناب نی کریم تلاف کے لیےوہ یانی لے کرآ ؤجوان کے پاس ہے، آپ نے فرمایا: مجھے بلاؤ بتوان یوں بند كها: يارسول الله! لوك اس من ماته وال دية مين آب ني كها: مجمع با و ونال چه آب في اى سه بيا، محرآب برزمزم به آئ جہاں وہ لوگ پانی پلانے میں معروف سے ، تو آپ نے فرمایا تم لوگ اپنا کام کیے جاؤاس لیے کہ تم لوگ ایک نیک کام میں ہو، پھر فرمایا اگر جھے بیاندیشہ نہوتا کہ لوگتم پرغلبہ پالیں محرتو میں از تا یہاں تک کہ ری اس پر رکھتاا ورآپ نے اپنے کندھے کی طرف اشارہ کیا۔ خلاصة حديث عجائ بيرزمزم پن جاكر بانى ب ،طواف كے بعد بانى منكواكردوسرى جكبول يس ندي -

جاء الى السقاية: سقاية عمرادوه وض بين بن من بهلے عن عجاج كو بلا في كيا بركر پائى ركھ كلمات حديث كي تشريح لياجاتا تماءتاكه بروقت بهيوكي بنياد برزياده دشواري كاسامنانه بو، فقال العباس يا فضل اذهب الی امك النع: حضرت عاس رضی الله عند کا مقصد بیتھا كرآ ب كے ليے عمده سے عده بانى كا انظام مورقال اسقنى فشرب منه: يعنى جناب ني كريم ملك نے اصراركياتو آپكوونى يانى بلاديا كيا۔

﴿ آپ کا طواف وداع ﴾

﴿ صِرِيثُ بِمِرِا ٢٥٥ ﴾ وَعَنْ أَنَسِ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَى الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ وَالْمَعْرِبَ وَالْعَشَاءَ ثُمَّ رَقَدَ زَقَدَةٌ بِالْمُحَصِّبِ ثُمَّ رَكِبَ إِلَى الْبَيْتِ فَطَافَهُ بِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِئُ.

حل الفات: رقد: رَقَدَ (ن) رَفْداً سوناء البيت: كمرجَع بُيُوت -

من جعه : حضرت انس وضي الله عند سے روایت ہے کہ جناب ني كريم الله نے ظهر عمر بمغرب اورعشاء كى نماز پردهي جم تموزى دير مصب میں سو مجے، پھرآپ خان کوبے لیے سوار ہوئے اور وہاں جاکرآپ نے طواف کیا۔

اس مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ بجاج جب منی کے امور سے فارغ ہوجا کیں تو مکہ کرمہ آتے ہوئے وادی خلاصہ حدیث اللہ علیہ میں رات قدر سے تھم نے کے بعد طواف وداع کے لیے مکہ کرمہ میں داخل ہوں۔

كانت ما وقد رقدة بالمحصب: محسب على اور مكه مرمد ك درميان ايك جكد كانام إلى كوبعنع ،بطحاء را اور خیف نی کنانہ بھی کہتے ہیں، مرادیہ ہے کمنی عطواف وداع کے لیے مکہ مرساتے ہوئے اس

مقام پررات قدر عارام كرك"إذا نفو من منى الى مكة للتوديع ينزل بالشعب الذى يخرج به الابطح ويرقد فيه ساعة من الليل ثم يدخل مكة وكان ابن عمر يراه سنة وهو الاصح"(مرقات٥٠/٥-٣٤)_

دِیوم ترویہ کو آپ نے ظھر کی نماز کھاں پڑھی؟﴾

﴿ مديث تمبر٢٥٥٢﴾ وَعَنْ عَبْدِ الْعَزِيْزِ بْنِ رُفَيْعِ قَالَ: سَأَلْتُ انْسِ بْنِ مَالِكِ، قُلْتُ: اَخْبِرْنِي بِشَيَّ عَقَلْتَهُ عَنْ رَسُوْلِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، آيْنُ صَلَّى الظُّهْرَ يَوْمُ التَّرْوِيَةِ؟ قَالَ: بِعِنَى، قَالَ: فَآيْنَ صَلَّى الْعَصْرَ يَوْمَ النَّفْرِ؟ قَالَ: بِالْآبْطَحِ، ثُمَّ قَالَ: افْعَلْ كَمَايَفْعَلُ أُمَرَاؤُكَ. مَتفقٌ عليهِ.

العل الغات: عقلته: عَقلَ (ش)عَقلًا الشيء جمناءامواؤك: جمع إميرى بمعنى مردار

قوجمہ: حضرت عبدالعزیز بن رفع ہے دوایت ہے کہ میں نے انس بن مالک سے پوچھتے ہوئے کہا کہ آپ جناب نی کریم اللے کے متعلق کے متعلق اس بارے میں جو کچھ جانتے ہیں جھے بتاہے کہ آپ نے ترویہ کے دن ظہر کی نماز کہاں پڑھی تھی جانہوں نے کہا: منی میں میں نے کہا: کوئی کے دن عصر کی نماز کہاں پڑھی کا نہوں نے کہا: ابطے میں ، پھرانہوں نے کہا: تم ویسائی ترویہارے مرداد کرتے ہیں۔ خلاصۂ حدیث کی جانکارلوگوں کو جیسا کرتے ہوئے دیکھے ویسائی کرے ، اپنی طرف سے ذیادہ دیا ٹی نداگائے۔

کلمات حدیث کی تشری کے انہوں نے ہشنی عقلته النع: حضرت عبدالعزیز تابعی تھے، انہوں نے جناب نی کریم علیہ کو کلمات حدیث کی تشری کی کریم علیہ کو کلمات حدیث کی تشری کا نیس تھا؛ اس لیے انہوں نے حضرت انس بن مالک رضی اللہ عندے جے کے بعد مسائل دریافت

کے این صلی الظهر یوم الترویة قال بمنی: یوم الترویہ سے مرادزی الحجری آٹھویں تاریخ ہے، یوم النفر: یوم العر سے مرادزی الحجری تیرہویں تاریخ ہے، یوم النفر: یوم العر سے مرادزی الحجری تیرہویں تاریخ ہے، ٹم قال افعل کما یفعل امراز لا: یعنی مسئلہ بتائے کے بعداس بات کی تاکید کی کہ اس بارے میں تمہارے امراد اور سردار جیسے کرتے ہیں ویبائی کرو، بات بات پر شیخی نہ جھارو۔

﴿ ابطح میںقیام ﴾

﴿ صريت بُبر ٢٥٥٣﴾ وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: لُزُولُ الْآبُطَحِ لَيْسَ بِسُنَّةٍ إِنَّمَا نَزَلَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لاَنَّهُ كَانَ السَّمَعَ لِنُحُرُوجِهِ إِذاً.

حل لغات:اسِمع:سَمَحَ (ف)سَمْحاً زم بونار

خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلاصه يه كمابطح مين هم ناكوني سنت نبيس بـ

کلمات صدیث کی تشریکی کشری کی تشریکی کشری الا بطح لیس بسنة: مرادیه ب که مکه کرمه سه دید منوره کے لیےروا کی کے وقت ابطی میں کلمات صدیث کر تشریف کے ان کلمات سے ایک سوال کا جواب دیا گیا ہے کہ جناب نی کریم ملک تا ہے ہیں تھم رے تھے، اس کا جواب ہے کہ جناب نی کریم ملک ت سے تھم رے تھے، اس کا جواب ہے کہ جناب نی کریم ملک ت سے تھم رے تھے، آپ کا تھم رنا کوئی شری تھم کے بیش نظر نہ تھا۔

﴿طواف وداع کے بعد روانگی﴾

﴿ صِينَ بُهِ ٢٥٥٣﴾ وَعَنْهَا قَالَتُ: آخُرَمْتُ مِنَ التَّنْعِيْمِ بِعُمْرَةٍ فَدَخَلْتُ فَقَضَيْتُ عُمْرَتِيْ وَانْتَظَرَ نِيْ رَسُوْلُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ بِالْآبْطَحِ حَتَّى فَرَغْتُ فَآمَرَ النَّاسَ بِالرَّحِيْلِ فَخَرَجَ فَمَرَّ بِالْبَيْتِ فَطَافَ بِهِ قَبْلَ صَلَاةِ الصَّيْحِ ثُمَّ خَرَجَ إِلَى الْمَدِيْنَةِ. هلذا الْحَدِيْثُ مَاوَجَدْتُهُ بِرِوايَةِ الشَّيْخَيْنِ بَلْ بِرِوَايَةِ ابِيُ ذَارُدَ مَعَ اخْتِلَافِ يَسِيْرٍ فِيْ آخِرِهِ.

حل لغات:قضيت:قضى (ض)قَضَاءً بعديس اداكرنا، أمَو (ن) امر أحم دينا

قوجمہ: ان سے روایت ہے کہ میں نے تعلیم سے عمرے کا حرام باندھا، کے میں داخل ہوکر اپنا عمرہ ادا کیا اور جناب نی کریم بیکائے ان میں میراانظار کررہے تھے؛ یہاں تک کہ میں فارغ ہوگئ تو آپ نے لوگوں کوروائل کا تھم دیا؛ چناں چہ آپ بھی روانہ ہوکر خانۃ کعبہ آئے، نماز فجرسے پہلے آپ نے طواف کیا، پھرآپ مدینہ منورہ کے لیے روانہ ہوئے۔ قالت احومت من التنعيم بعموة النع: حفرت عائشرض الشعنها في مج قران كا احرام بائد حاتفاءاس بنياد يران كوعمره كرنا تعااليكن مكمرمه بنيخ سع بهاي عائده موكيس! جس كي دجه

طواف ندر سلیں ،اور عمره ان کے ذہرہ کیا اور ادھر ج کے ایام شروع ہو سے ، اُدھر کی مصروفیت کی جدے ان کوعرہ کرنے کاموقع نه مل ر كا السلئے جناب نبى كريم اللے في ان كو ج كے بعد عليم سے احرام با ندھ كرعمرے كى تضاكرنے كا عكم ديا، وہى عمر وانہوں نے بعد ميں ادا كيامهذا المحديث ما وجدته المخ: مؤلف مختلوة كول كامطلب يه كمير علم كمطابق ال روايت كونية بخارى فيال كيا ہے اور ندمسلم نے ؛ بل كه اس روايت كوابودا و د نے نقل كيا ہے مزيد كه ابودا و دكى روايت اور صاحب مصابح كى نقل كرده اس روايت ے آخری جزمیں کھا ختلاف بھی ہے، گویا اس جملہ کے ذریعہ مؤلف مفکو ہے صاحب مصابح پرایک اعتراض توبیکیا ہے کہ انہوں نے اس روایت کوفعل اول میں نقل کیا ہے؛ جب کے قصل اول میں صرف بخاری وسلم ہی کی روایت نقل کی جاتی ہے، دوسرااعتراض بیکیا ہے كنقل حديث ميں راوى؛ لينى الوداؤدكى كالفت كى بايس طور كەحدىث كا آخرى جزاهيندو اقل نبيس كيا جوالوداؤد نے روايت كيا ہے۔

﴿طواف وداع کا حکم﴾

﴿ صِرِيثُ بُمِرِ ٢٥٥٥ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسِ قَالَ: كَانَ النَّاسُ يَنْصَرِفُوْنَ فِي كُلِّ وَجْدٍ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَمَلَّمَ : لَا يَنْفِرَنَّ أَحَدُكُمْ حَتَّى يَكُونَ آخِرُ عَهْدِهِ بِالْبَيْتِ إِلَّا أَنَّهُ خُفَّفَ عَنِ الْحَاثِضِ. متفقّ عليْه.

حل الفات: وجه: جانب جمع وجوه، البيت: كمرجع بيوت. قوجعه: حضرت ابن عباس رضى الله عنهما سے روایت ہے کہ لوگ ہر طرف سے لوٹ رہے تھے، تو جناب نبی کریم سالتے نے فرمایا: تم میں ے کوئی نہ جائے یہاں تک کرآ خری مرحلہ بیت اللہ کوقر ارنددے لے ایکر بیرحا کضہ کے لیے معاف ہے۔

خلاصة حديث اس حديث شريف كاخلاصه يه علم كمطواف وداع واجب --

کان الناس ینصرفون فی کل وجه: تجاج جب کام ے فارغ ہو گئے آو الناولوں نے یہ کمات حدیث کی تشری کے اسلام النام الحک کمات حدیث کی تشری کے اسلام کا میں اللہ اللہ کا میں کی اللہ کا میں اللہ کی کا میں اللہ کی اللہ کی کے اللہ کی اللہ کی کے اللہ کی کے اللہ کی کی کے اللہ کی کے کہ کے اللہ کی کے کے کہ کے کے کہ کے کے کہ کی کے کہ کے کے کہ اس ليے جناب تي كريم علي في فرمايا الجي ايك كام باتى ہے؛ يعنى طواف وداع، اس طواف كوكي بغيركوئى ندجائے، الا اند حفف عن الحائض: البتربيطواف حاكضه عورت سيمعاف --

﴿عذر کی حالت میں طواف وداع﴾

﴿ صديث نمبر ٢٥٥٧ ﴾ وَعَنْ عَاتِشَةً قَالَتْ: حَاضَتْ صَفِيَّةً لَيْلَةَ النَّفْرِ، فَقَالَتْ: مَا اَرَانِي إِلَّا حَامِسَتَكُمْ، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عَقْرَى حَلْقَىٰ اَطَافَتْ يَوْمَ النَّحْرِ؟ قِيْلَ: نَعَمْ ا قَالَ: فَانْفِرِيْ. مَعْقَ عليْه.

حل لغات: النفر: نَفَرَ (ض) نفراً القوم متفرق بونا ، يوم: دان جمَّ ايام.

قوجمه: حضرت عائشهمديقدرض الله عنها يروايت بكرصفيدكوج كدن حائضه جوكى الوانبول في كما كديمرا كمان بكه میں آپ لوگوں کورو کے رکھوں کی او جناب نی کریم میلانہ نے فرمایا: ہلاک وزخی کرے ، کیااس نے محرکے دن طواف نہیں کیا ہے؟ کہا گیا: ہاں! تو آپ نے فرمایا تووہ ہلے۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يه ب كه عذركي حالت من طواف ودارع معاف ب_

عاضت صفیة لبلة النفر الغ: بدون مكه كرمه سے چلنے كاون تقا،ال دن طواف دواع كر كرب كمات حديث كي تشريح كو كار كر الله النفر الغ: بدون مكه كمات حديث كي تشريح كو تيارى بين تھے كہ حضرت صفيه رضى الله عنها كه جھے چين شروع ہو كيا ہے جسكى بنياد

ر میں طواف نہیں کرسکتی ہوں اور جب تک طواف نہ کرلوں تب تک میراجانا بھی ممنوع ہے؛ اس لیے میری وجہ سے پورے قافلے کو رکنا زیڑے گا، اطافت یوم النحو المنے: جناب نبی کریم اللی نے ان کی بات من کر فر مایا کہ انہوں نے تو طواف زیارت کیا ہے؛ اس لیے ان کے لیے طواف و داع ضروری نہیں ہے، چیش! یک عذر ہے؛ اس لیے طواف و داع معاف ہے۔

الفصل الثاني

﴿قربانی کے دن آپ کی نصیحت﴾

﴿ صِدِيثُ بِمِرِ ٢٥٥٧﴾ عَنْ عَمْرِوبْنِ الْآخُوصِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّم يَقُولُ فِي حَجّةِ الْوَدَاعِ: أَيُّ يَوْم هٰذَا؟ قَالُوا: يَوْمَ الْحَجِّ الْآكْبَرِ، قَالَ: فَإِنَّ دِمَانَكُمْ وَآمُوالكُمْ وَآعْرَاضَكُمْ بَيْنَكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هٰذَا فِي بَلَدِكُمْ هٰذَا آلَا لَا يَجْنِيْ جَانَ عَلَى نَفْسِهِ آلَا لَا يَجْنِيْ جَانَ عَلَىٰ وَلَذِه وَلَا حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هٰذَا فِي بَلَدِكُمْ هٰذَا آلَا لَا يَجْنِيْ جَانَ عَلَىٰ وَلَذِه وَلَا مَوْلُودٍ عَلَىٰ وَالِدِه آلَا وَإِنَّ الشّيْطَانَ قَدْ آيِسَ أَن يُعْبَدَ فِي بَلِدِكُمْ هٰذَا أَبِدا وَلكَنْ سَتَكُونُ لَهُ طَاعَةً فِيْمَا تَحْتَهِرُونَ مِنْ أَعْمَالِكُمْ فَسَيَرُضَىٰ بِهِ. رَوَاهُ ابنُ مَاجَةَ وَالتّرِمِذِيُّ وصَححة.

حل الفات: دهاء: جمع ہے دم کی بمعنی خون ،اهو ال: جمع ہمال کی بمعنی اسباب،اعواض: جمع ہے عور طن کی بمعنی انجھی عادت۔
موجهه: حضرت محروبن احوص رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ بیس نے جناب نبی کریم علی ہے الوداع کے موقع پر کہتے ہوئے سا
پر جمهه: حضرت محروبن احوص رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ بیس نے جناب نبی کریم علی ہے الوداع کے موقع پر کہتے ہوئے سا
پر کونساون ہے ،صحلیہ کرام نے عرض کیا: جم اکبر کا دن ، آپ نے فرمایا: یقینا تمہارے خون ،تمہارے مال اور تمہاری آبروتم پر اسی طرح
حرام ہیں جس طرح تمہارے اس دن جس جمہارے اس شہر میں ،خبر دار! ظلم کرنے والاصرف! پی جان برظلم کرتا ہے ،خبر دار! کوئی ظالم
الجی اولا و برظلم نہیں کرتا اور نہ کوئی اولا داپنے جنے والے پر اور یقینا شیطان نا امید ہوگیا ہے کہ اس شہر جس بھی بھی اس کی پرستش نہیں کی
جائے گی ایکن تمہارے ان اعمال جس شیطان کی فرمال برداری ہوگی ،جنہیں تم حقیر سمجھو گے جن سے وہ خوش ہوگا۔
جائے گی ایکن تمہارے ان اعمال جس شیطان کی فرمال برداری ہوگی ،جنہیں تم حقیر سمجھو گے جن سے وہ خوش ہوگا۔
خلاصۂ حدیث اس حدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ ج کے ایام میں قربانی کے دن تجاج کے درمیان نصوحت کی جائے۔

کلمات مدیث کی تشریکی یقول فی حجة الوداع ای یوم هذا النع: ایک تقریرتو قربانی کے دوسرے دن ہوتی ہے، جو بہت کلمات مدیث کی تشریکی اسم ہے؛ اس لیے کہ اس تقریر میں امور ج بتائے جاتے ہیں اوروہ تقریر سنت بھی ہے؛ لین اس صدیث شریف میں ذکور تقریر وہ تقریر نہیں ہے، بلکہ یہ قربانی کے دن عام نصیحت کی جانے والی تقریر ہے، قال فان دمانکم النع: یعنی جان وہ الل اور عزت وآبر وصرف آج ہی حرام نہیں ہے؛ بلکہ جس طرح سے آج حرام ہے ای طریقے سے قیامت سک حرام ہے، شری اجازت کے بغیر کی جان، دولت اور عزت کو نقصان بنجاتا قیامت تک حرام ہے، الا لا یعنی جان علی نفسہ: مرادیہ ہے کہ کوئی کی جان، دولت اور عزت کو نقصان بنجاتا قیامت تک حرام ہے، الا لا یعنی جان علی نفسہ: مرادیہ ہے کہ کوئی کی جات ہے کہ اللہ اللہ اللہ اللہ کم هذا ابلداً المنع: کامطلب یہ ہے کہ شیطان کی پڑھی کرتا ہے تو اس کا وہال ای پر ہے، و ان الشیطان قدابس ان تعبد فی بلد کم هذا ابلداً المنع: کامطلب یہ ہے کہ شیطان

بیمقدی شہر بیشے کے گفروشرک کی غلاظت سے پاک کردیا گیا ہے، اور اب بھی بھی اس پاک سرز من پر کی غیر مسلم کوقد مرکفنے کی

اجازت نہ ہوگی ، ہاں میداور بات ہے کہ کوئی غیر مسلم چوری چھپے اس شہر میں آجائے اور وہ خفیہ طور پرغیر اللہ کی عبادت کرنے گئے۔ '' ہاں تہمارے ان اعمال میں شیطان کی فرما برواری ہوگی' میں اعمال سے مراد گناہ کے اعمال میں ؛ جیسے ناحق فی کرنا ، کسی کا مال لوٹنا یا اسی ختم کے دوسرے اعمال بدھی جتال ہونے والا جب ان کو حقیر سمجھتا کے دوسرے اعمال بدھی جتال ہونے والا جب ان کو حقیر سمجھتا ہونے دالا جب ان کو حقیر سمجھتا ہونے والا جب ان کو حقیر سمجھتا ہونے دالا جب ان کو حقیر سمجھتا ہونے میں دو ان اعمال سے اجتماع ہوں جاتے ہیں۔

﴿منیٰ میں آپ کی تقریرہِ

﴿ صديث تمبر ٢٥٥٨ ﴾ وَعَنْ رَافِع بْنُ عَعْرِو الْمُزَنِي قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ يَخْطُبُ النَّاسَ بِمِنَى حِيْنَ ارْتَفَعَ الصَّخَى عَلَىٰ بَعْلَةٍ شَهْبَاءَ وَعَلِي يُعَبُّو عَنْهُ وَالنَّاسُ بَيْنَ قَاتِم وَقَاعِدٍ. رَوَاهُ آبُو دَاوُدَ.

حل لفات: الضحى: چاشت كاوتت، بعله: حجر حم بِفال ، شهباء: شهب (س) شهبا سائى لمى بولَى سفيررتك والا بونا .

ترجمه: حفرت راف بن عروم فى سروايت بى كه من في جناب نى كريم تَلِيْ يُومَى من چاشت كونت السے خجر برخطب ديت

ہوئے دیکھا،جس کارنگ سیاہ اور سفید تھا، حضرت علی اس کود ہراتے اورلوگ کھڑے بیٹھے س رہے تھے۔

خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلاصه بيه كمنى مين ذراتقرير موتا كدلوكون كوفائده بنجي

کلمات حدیث کی تشریک بینان بعنی الغ: مرادوہ تقریب جو آئے قربانی کے دن بطور نسیحت کے کمتی، علی بعد عنه: یعنی بعد عنه: یعنی معلی بعد عنه: یعنی دو چت کبراتھا، و علی بعد عنه: یعنی دو جن معلی بعد عنه: یعنی دو جن معلی بعد معل

حضرت على رمنى الله عنه جناب نبي كريم عليات كي تقرير كود هرات تنعة تا كدودروال بعي س ليس

وطواف زیارت کا وقت

﴿ صِرِيتُ بُهِ ٢٥٥٩ ﴾ وَعَنْ عَائِشَةَ وَابْنِ عَبَّاسِ الْكَرْسُولَ اللّهِ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ اخْرَ طَوَافَ الزِّيَارَةِ يَوْمَ النَّحْوِ إِلَى اللَّيْلِ. رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ وَابُوْدَاؤُدَ وَابْنُ مَاجَةَ.

حل لفات: اخو: أخُور (تقعيل) مؤخر كرنا ، يوم: دن جع ايام -

قو جهد: حفرت عائشهمديقة سيروايت ب كرجناب ني كريم الله في كريم الله عندن طواف زيارت كورات مك مؤخركيا ـ خلاصة حديث ال مديث الم مديث الم الفلامديب كه طواف زيازت رات مك مؤخركر في كانجائش بـ

اخو طواف الزيارة الخ: مراديه كرآب فرات كلواف زيارت مؤخرك كرات كالمواف زيارت مؤخرك كراجازت كلمات حديث كي تشريف كرات كواف زيارت كياتها؟

ال لي زيات آپ كُتُعلق عن ابت م كرآب في من الليل الليل الليل الليل الم الليل ا

﴿طواف زیارت میں رمل﴾

﴿ مديث تمر ١٥٦٠ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيِّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَرْمُلُ فِي السَّبْعِ الَّذِي آفَاصَ فِيْهِ. رَوَاهُ آبُودَاوُدَ وَابْنُ مَاجَةَ.

حل لفلت: يرمل: رَمَلَ (ن) وَمُلّا كثرحا بِلاكرچلنا افاض: اَفَاصَ (افعال) القوم متغرق بونار

قرجمه: حضرت ابن عباس رضى الله عنها الدوايت ب كرجمان في كريم الله في المراس كرون من را فيس كيار خلاصة حديث طلامه بيب كهطواف قدوم من رال كركين كے بعد طواف زيارت من رال كرنے كي ضرورت نيس_

کلمات حدیث کی تشریح کم یوهل فی السبع الذی افاض فیه: جناب نی کریم علی نے چول کے طواف قدوم میں رال کرایا کلمات حدیث کی تشریح کا قااس لیے اب طواف زیارت میں رال کرنے کی ضرورت نیس رہی تو آپ نے رانہیں کیا۔

﴿محرم کے لیے حلال ہونے کا وقت﴾

﴿ وَرِيثُ نُهِ ١٤٧١ ﴾ وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا رَمَىٰ أَحَدُكُمْ جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ فَقُد حَلَّ لَهُ كُلُّ شَيْءٍ إِلَّا النِّسَاءَ .رَوَّاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ وَقَالَ اِسْنَادُهُ ضَعِيْفٌ وَفِي رِوَايَةِ احْمَدَ وَالنَّسَائِيُّ عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِذَا رَمِيَ الْجَمْرَةَ فَقَدْ حَلَّ لَهُ كُلُّ شَيْءٍ إِلَّا النَّسَاءَ.

حل لغات: شئى: چرجع اشياء، النساء: جع إمرأة كابمعن عورت.

موجمه: حضرت عائشه صديقة رضى الله عنها ب روايت ب كه جناب ني كريم الله في خرمايا جب تم من سيكونى جمرة عقبه كى رمى كر لے تواس کے لیے عورت کے علاوہ ہر چیز حلال ہو گئے۔

خلاصة صديث مديث مديث شريف كاخلاصه بيب كرعقبه كى رى كرلينے كے بعد جاج كے ليے ورت كے سوا ہر چيز حلال ہوجاتى ہے۔

اذا رمی احد کم جموة العقبة النع: بيتن جرول ش سالك به النع كرسب بيلائ كرسب بيلائ كرسب بيلائ كلمات حديث كي تشري كي باق بيرى كى جاتى بيرى كرن كرن كرن كرن كا بعد جاج طال موجات بين، ان كے ليد اب احرام كى وجہ

سے منوع چیزیں حلال ہو تئیں ،اب دواک عام آدمی کی ظرح ان اشیار سے لطف اندوز ہوسکتے ہیں ،صرف اب عورت حرام ہے۔

﴿ آپ کی رمی کرنے کی کیفیت ﴾

﴿ صِينٌ بُم ٢٥ ٢٥ ﴾ وَعَنْهَا قَالَتْ: الْحَاصَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ آخِرٍ يَوْمِهِ حِيْنَ صَلَّى الظَّهْرَ فَمْ رَجَعَ إِلَى مِنِي فَمَكَّتَ بِهَالَيالِيَ أَيَّامِ التَّشْرِيْقِ يَرْمِي الْجَمْرَةَ إِذَا زَالَتِ النَّسْمُسُ كُلُّ جَمْرَةٍ بِسَبْعِ حَصَيَاتٍ يُكَبِّرُ مَعَ كُلِّ حَصَاةٍ وَيَقِفُ عَنْدَ الْأَوْلَىٰ وَالثَّانِيَةِ فَيُطِيْلُ الْقِيَامَ وَيَتَضَرُّعُ وَيَرْمِىٰ الثَّالِثَةَ فَلَا يَقِفُ عِنْلَهَا. رَوَاهُ الْبُوْ دَاوُدَ.

حل الغات: المكث: مَكَتُ (ن) مَكْتُا مَعْبِرنا، ليالى: جَمْ ب ليلة كى بمعنى رات_

قوجمه: ان سے دوایت ہے کہ جناب نی کریم اللے نے قربانی کے دن آخری حصیص اس وقت طواف زیارت کیا جب آپ نے ظہر کی نماز پڑھی، بھرمنی واپس آ کرایام تشریق کی را تیس و ہیں گزاریں، آپ جمروں پراس دفت کنگری ماریتے جب دوپہر ڈھل جاتی، ہر جرے یہ سات ککری مارتے اور برککری کے ساتھ تھیر کہتے اور پہلے ودوسرے جرے کے پاس کھڑے ہو کر دیر تک دعا تیں کرتے اور تيسرے بھرے يہ تکري مار کروہاں کھڑے نہيں ہوتے تھے۔

خلاصة حديث ال مديث ثريف كاخلامه بيب كرمديث ثريف من ذكور طريق كمطابق ري كرب ، تا كركوني كي ندرب

کلمات حدیث کی تشری کے خین صلی الظهر النع: حدیث شریف کے ان کلمات سے اس بات کی نفی ہوتی ہے کہ آپ نے ظہر کلمات حدیث کی تشریف کی تشریف کی نبیاد پر بھی کہا جائے گا کہ آپ نے

ظر كانماز كے بن من يومي اور تن ايس يوسى جانے والى ظرر كى نماز دوسر دن كي سى دلالة على انه صلى الظهر بمنى

ثم افاض وهو خلاف ما ثبت في الاحاديث لاتفاقها على انه صلى الظهر بعد الطواف" (مرتات ٢٢٥/٥).

﴿عذر کے سبب جمرات میں نقدیم وتاخیر﴾

﴿ مديث مُبِر ٢٥ ١٣ ﴾ وَعَنْ أَبِي الْبَدَّاحِ بْنِ عَاصِمِ بْنِ عَدِى عَنْ ابِيْهِ قَالَ: رَخَصَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَمَلَّمَ لَهِ عَاءِ الْآبِلِ فِي الْبَيْتُوتَةِ أَنْ يَرْمُوا يَوْمَ النَّحْرِ فَمَّ يَجْمَعُوا رَمْىَ يَوْمَيْنِ بَعْدَ يَوْمِ النَّحْرِ فَيَرْمُوهُ فِي الْبَيْتُوتَةِ أَنْ يَرْمُوا يَوْمَ النَّحْرِ فَمَ يَجْمَعُوا رَمْىَ يَوْمَيْنِ بَعْدَ يَوْمِ النَّحْرِ فَيَرْمُوهُ فِي الْبَيْتُوتَةِ أَنْ يَرْمُوا يَوْمَ النَّحْرِ فَمَ يَجْمَعُوا رَمْىَ يَوْمَيْنِ بَعْدَ يَوْمِ النَّحْرِ فَيَرْمُوهُ فِي الْمَدْرِقِيلُ النَّرْمِذِي وَالنَّسَائِقُ وَقَالَ التَّرْمِذِي هَا لَهُ عَلَيْكُ وَالتَّرْمِذِي وَالنَّسَائِقُ وَقَالَ التَّرْمِذِي هَا لَهُ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَيْكُ وَالْتَرْمِذِي وَالنَّالِي اللهِ عَلَى اللهُ عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْدُ اللهُ عَلَيْكُ وَالتَّوْمِذِي وَالنَّالِي اللهِ عَلَيْكُ وَالتَّرْمِذِي وَالنَّالَ التَّرْمِذِي هَا لَا اللهِ اللهِ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّ

حل لفات: الابل: اوتث يم إبال ، يوم: ون جمع إيام.

خوجهد: حعزت الوالبداح بن عاصم بن عدى البيذ والديروايت كرتے بيل كه جناب نى كريم الله في اونث چكانے والوں كو منى ميں شب باشى ندكرنے كى اجازت دى، نيز وه لوگ قربانى كے دن رى كركے يوم النحر كے بعد دودن كى رى ا كھنے كريں ؛ چنال چدوه لوگ ايك دن ميں ان دونول پرى كرتے۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلامه بيب كه عذركي وجه دي بيس تفتريم وتاخير كي جاسكتى ب-

رخص رسول الله المخ: اونث چگانے والوں کے لیے اونوں کی رکھوالی ایک مجبوری تھی، اس لیے کمات صدیت کی تشریح جناب نی کریم علیقے نے ان کومٹی سے باہر رہ کر رات گزارنے کی اجازت دی تھی،ان یو موا یو مالنحو المخ: مرادیہ ہے کہ قربائی کے دن رگی کرے ایک دن موقوف کر کے آخری دن اکٹے دونوں جمرات میں رمی کی جاسکتی ہے،فیر موہ فی احدهما: یعنی ان لوگوں کو جب اس کی اجازت لی گئ وان لوگوں نے اس اجازت سے خوب خوب فا کدہ اٹھایا۔

رباب ما يجتنبه المحرم»

الفصل الاهل

ومحرم کے لیے سلاھوا کپڑاہ

﴿ وَدِينَ ثُمْ ١٥٠٢﴾ عَنْ عَبْدِ اللّهِ بْنِ عُمَرَ انَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللّهِ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ مَا يَلْيَسُ الْمُحْرِمُ مِنْ النّيَابِ؟ فَقَالَ: لَا كَلْبَسُوا الْقُميصَ وَلَا الْعَمَائِمَ وَلَا السَّرَاوِيْلَاتِ وَلَا الْبَرَائِسَ وَلَا الْجَفَاتِ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَلَا الْجَفَاتِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّ

البوانس: جع بي بين جائونس كى يمتى وه لجى أولى جوعرب مين بينى جاتى تقى -

اہر الس ، اسبوں اللہ بن عررض اللہ عنما سے روایت ہے کہ ایک آدی نے جناب نی کریم عظیم سے اوچھا کہ عمرم کیے کیڑے قوجهد: حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنما سے روایت ہے کہ ایک آدی نے جناب نی کریم عظیم سے چھا کہ عمرم کیے کیڑے ہے؟ تو آپ نے فرمایا کرتا، مگڑی، بچامہ برنس اور موزے نہ بہنو ؛ اللہ کہ کوئی جوتانہ پائے تو موزے اس طرح پہنے کہ دونوں شخنے کے نیچے سے کاٹ دے، اور زعفران اور ورس رنگ کے کیڑے نہ بہنو۔

فلامة حديث ال مديث تريف كاخلامديب كرم سلي بوع كرا عنه

ما يلبس المعوم من النياب: لين الكراب في المات عديث في المات عديث في المريم المات عديث في المريم المعام المات عديث في الشرب من المات عديث في المراب القميص المع: مراديب كرسل موسة اوراي

کڑے نہ پہنے جا کیں جن ہمر ڈھنک جائے ،ولا المخفاف الا احد لا بعد نعلین النے: مرادیہ ہے کہ فی کے ایام میں ایے جوتے پہنے جا کی جن ہے گئے نہ ڈھنے ؛ لیکن اگر کسی کو جوتا میسر نہ ہوتو وہ موزے مخنے تک کاٹ کر پہنے ؛ اس لیے کہ محرم کے لیے مخنہ دھنکنا ممنوع ہے ،ولا تلبسوا من الثیاب شیئا مسم زعفوان ولا ورس بمرادیہ ہے کہ ذعفران اور اس کے مشاہد مگ کے کہرے نہ بہنے ؛ اس لیے کہ زعفران مورت ورودول یک السوالی کے مشاہد تک کے استوال کی استوال کے درعفران میں قدرے خوشبو ہوتی ہے ،اور اس محم میں عورت اور مرودولوں یک ال الحدی میں السوالی بین "اشتوال الوجال و النساء فی هذا الحدی میں اس میں صبحة زعفوان لما فیه من الطیب "(مرقات ۱۳۷۵/۵)۔

﴿مجبوری میں محرم کا لباس﴾

﴿ مديث مُبر ٢٥١٥﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْطُبُ وَهُوَ يَقُولُ: إِذَا لَمْ يَجِدِ الْمُحْرِمُ نَعْلَيْنِ لَبِسَ خُفَيْنِ وَإِذَا لَمْ يَجِدُ إِذَارًا لَبِسَ سَرَاوِيْلَ. مَنفَقَ عليْهِ.

حل الفات: ينعطب: خطب (ن) خُطبة تقرير كرنا ، نعلين: تثنيه إنعل كالمعنى جوتا-

موجهد: عفرت ابن عباس رضى الله عنها سے روایت ہے کہ پس نے جناب نبی کریم الله کوتقریر کرتے ہوئے سنا وہ کہدرہے تھ، جب محرم جوتے نہ یائے تو موزے کہن لے، اور جب لکی نہ یائے تو پجامہ کئن لے۔

فلاصة حديث ال مديث شريف كاخلام ربيب كرجاح مجورى من سليموع كير ع بمن سكة بي-

کلمات حدیث کی تشری افا لم یجد المحرم نعلین لبس خفین الغ: حفرت امام شاقعی علیه الرحمه کا کہنا ہے مجوری میں المات حدیث کی تشری کارم کی میں المعام علم المعام المعام

الرحرم پیامہ بان کے عرف ان کے اور اس کے اور اس کے اور اس کے اور اس طریعہ باب ہے: اس سرت ان اس الیونینہ اور دسترت انام یا لک علیما الرحم کا کہنا ہے کہ پہامہ پہنے گاتو بت آجائے تو ممکن حد تک کوشش کرے کہ ملائی اوج کر پہامہ پہنے تا کہ کفارہ لازم ندآ ہے: کیکن اگر محرم نے ملا ہوا پہامہ پین لیا گو مجوری ش بھی تو اس پر کفارہ واجب ہے: اس لیے کہ دومرے مضبوط دلائل سے سلے ہوئے کیڑے چول کر ممنوع ہیں"ولیس علیہ فدیة و هو قول للشافعی، وقال: أبو حنیفة و مالك رحمهم الله تعالى لبس له لبس السر اویل، فقیل مشقه و یاتر زبه ولو لبسه من غیر فتق فعلیه دم" (مرتا ہے ۱۳۵۸)۔

رجبه پھننے والے محرم کا واقعہ پ

﴿ صديث بْمِر ٢٥ ٢٧﴾ وَعَنْ يَعْلَى ابْنِ أُمَيَّةَ قَالَ: كُنَا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بِالْجِعِرَّانَةِ إِذَا جَاءَهُ وَرَجُلٌ اعْرَابِيٍّ عَلَيْهِ جُبَّةٌ وَهُوَ مُتَصَمَّحٌ بِالْحَلُوقِ، فَقَالَ: يَارَسُولَ اللهِ إِنِّى آخِرَمْتُ بِالْعُمْرَةِ وَطلِهِ عَلَى، وَجُلٌ اعْرَابِي عَلَيْهِ اللهِ إِنِّى آخِرَمْتُ بِالْعُمْرَةِ وَطلِهِ عَلَى، فَقَالَ: أَمَّا الطَّيْبُ اللهِ عَلَيْهِ عَلَى عُمْرَتِكَ كَمَا تَصْنَعُ فَقَالَ: أَمَّا الطَّيْبُ اللهِ عَلَيْهِ عَمْرَتِكَ كَمَا تَصْنَعُ فَيْ عَمْرَتِكَ كَمَا تَصْنَعُ فَيْ حَجِّكَ. مَنْ عَلَيْهِ عَلَيْهِ.

حل الفات: جبة : جبه جن جُبّات منتضمخ : ضَمَخ (ن) ضَمْخاً بدن مِن فوشبولگانا ، تضمخ (تفعل) فوشبو سے ات پت ہونا قر جمعه : حفرت یعلی بن امیدوشی الله عند سے روایت ہے کہ ہم جناب نی کریم الله کے پاس ہمر اندیس تنے ، اچا تک ایک دیہاتی آدی آیا ، امیر جبرتھا ، نیز وہ فوشبو سے خلوق سے است پت تھا ، اسنے کہا: یا رسول الله! میں نے عمر سے کا احرام با عمر حالے اور یہ جہر پر ہے ، تو آپ نے فرمایا : بہر حال وہ فوشبو جو تھے پرگی ہوئی ہے ، اسکو تین مرتبد دھوڑ الو، جبرکوا تار دواور عمره میں ایسا ہی کر وجیسا جی میں کیا تھا خلاصہ حدیث آدی اگر سلے ہوئے کیڑے یا فوشبولگائے ہوئے احرام با ندھ لے تو جنتی جلدی ہو سکے ان چیز وں کو ہٹادے۔ البعوالة: حدودترم ش ايكمشبورجك كانام ب،إذا جاء و رجل اعرابي عليه جبة النخ:ان كو كلات حديث كي تشريح عليه جبة النخ:ان كو يول كم بالكارى نبيل تني الله الله على احرام باعده لي تفاءاني احرمت بالمعموة

وهلهملى: شايدان كوكى في ان چزول كمنوع مون كى بارى من بنايا موكاء انبول في مريد تحقيق كے ليے جناب في كريم كان سوريافت كيا ملقال اما الطيب الله على المن مراديب كرآپ في ان محالي كوجلداز جلدان چزون كودوركرف كانكم ديا۔

﴿حالت اعرام میں تکاج﴾

وَصريتُ مُرِك ٢٥٦ ﴾ وَعَنْ عُثْمَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ لاَ يَنْكِحُ الْمُحْرِمُ وَلاَ يُنْكِحُ وَلَا يَنْحُلُبُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفلت: ينكح: نكّحَ (ش) لِكاحاً بإوكرنا_

موجعه: حعرت حان سے دوایت ہے کہ جناب ہی کریم آبات نے فرمایا کرم نکاح ندکے ، ندنکاح کرائے اور ندیجام دے۔ اس مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ محرم جج جینے اہم کام ہیں مشغول ہوتا ہے، اس لیے اس کے لیے مناسب جیس خلاصۂ حدیث ہے کہ نکاح کرے: البند اگر نکاح کرے تو نکاح ہوجائے گاکوئی خاص حرج نہیں ہے۔

کلات مدیث کی تشری کے المعوم: حفرت اہام شائتی علیہ الرحمہ کے نزدیک محرم کے لیے مطلقا ثکاح کرتا ممنوع کمات مدیث کی تشریح کے البت احناف کے یہاں محرم کے لیے تکاح کرنا مناسب نیس ہے؛ لیکن اگر تکاح کرلیا تو بیکروہ

ترئي ب،ولا ينكع ولا يخطب: ال طرح ب ثكار كرانا اور ثكار كا پينام دينا شوافع كزد يكمنوع ب، اوراحناف ك يهال كروه تركي ب والا الكاحه عنله يهال كروه تركي ب، والا الكاحه عنله والكل للتنزيه عند الشافعي فلا يسمع فكاح المحرم ولا الكاحه عنله والكل للتنزيه عند ابي حنيفة رحمه الله" (مرتات 4/2)-

﴿ اهرام کی عالت میں آپ کانکاح کرنا﴾

وصديث بمر ٢٥١٨ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَزَوَّجَ مَيْمُوْنَةَ وَهُوَ مُحْرِمٌ. مُتَعَقَّ عَلَيْهِ. حل لفات: تزوَّج: زوِّج (تفعيل) ثاح كرنا-

من جمد: حضرت ابن عباس رضى الدعنما ب دوايت بكر عباب ني كريم علية في حالت احرام ش ميوند عنكاح كيا-خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلامديب كدمح معالت احرام بس نكاح كرسكتا ب-

كلمات حديث في تشريح الزوج ميمونة وهو محرم: مراديب كرم مالت احرام من فكاح كرسكاب.

ہمیمونہ سے آپ کا نکاح کرناہ

﴿ مدى مُهُوْلَةَ أَنَّ وَمُولَ مَنْ يَوْلِدُ بُنِ الْآصَمُ ابْنِ أَخْتِ مُيْمُوْلَةَ عن مَيْمُوْلَةَ أَنَّ وَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَوَوَّجَهَا وَهُوَ حَلَالٌ. وَوَاهُ مُسْلِمٌ، قَالَ الشَّيْخُ الْإِمَامُ مُحِيُّ السُّنَّةِ وَالْآ كُثَرُوْنَ عَلَى اللَّهُ تَوَوَّجَهَا حَلَالًا وَطُهَوَامُو تَوْوِيْجِهَا وَهُوَ مُحْرِمٌ لُمُ بَنِي بِهَا وَهُوَ حَلَالٌ بِسَرِفَ فِي طَرِيْقِ مَكَة

حل لفلت: ازوجها: ازوج (الفعل) تاح كرتا-

قوجعه: حضرت يزيد بن اصم يعني ميوندك بعافي سروايت بكر جناب بى كريم الله في ميوند عدال ك حالت بن لكاح كيا اسكوسلم في روايت كيام، حضرت الشيخ المام كي السنداوراكثر لوكول في بيان كيام كداّ بين افتحال كي حالت بن كيا تعاد البت لكان كامعالمه حالت احرام من ظاہر ہوكياتھا، گرآئے كے كرائے به مقام مرف ميں ان كيماتھ حلال كى حالت ميں دن اف مناكى خلاصة حديث صديث مديث كا خلاصه يہ به كه جناب نى كريم الله نے حضرت ميموندرسى الله عنها سے نكاح موسم في ميں كيا تھا۔

کل ت حدیث کی تشری کے اور جہا و ہو حلال: بہر کیف بیر حدیث شریف جے حفرت میونہ کے بھانچ حفرت بزید نے کلمات حدیث کی تشری کا اس میان کی اس روایت کے بالکل برخلاف ہے جواس سے پہلے قل کی تی،

رف ملم نقل کیا ہے۔

حمدرم کا سر دھوناہ

﴿ صريت بُر ١٥٤ ﴾ وَعَنْ ابِي ايُوْبَ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ كَانَ يَعْسِلُ رَأْسَهُ وَهُوَ مُحْرِمٌ. مُتَفَقَّ عَلَيْهِ.

حل لغلت: يعسل: غَسَلُ (صُ)غَسْلًا دحونا راسه: مرجَع رُوس.

قوجمه: حفرت ابوالوب وشى الله عند سے دواہت ہے كہ جناب نى كريم علي الله الله الله عندان الله عند معرب عقرب عقرب خلاصة حديث الصور عند شريف كاخلامه يہ ہے كہ سيد ھے اور ملكے انداز على محرم انهامر دموسكي ہے۔

کل ت حدیث کی تشریخ کوئی بال او شده و هو محرم: مرادیه به که خوشبودار چیز استعال کید بغیر محرم این سرکواس طور پر دموئے کہ کوئی بال او شنے نہ بائے ،خوشبودار چیز استعال کرے گایابال او نے تو اس پردم واجب ہوگا۔ ﴿معرم کے لیے سینگی کھنچوانا ﴾

﴿ صريت تُمِرا ٢٥٤ ﴾ وَعَنِ أَبْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: اخْتَجَمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مُحْوِمٌ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. حل لفات: احتجم: إحتجم (التعال) يَكُلُّ مَنْ وانا_

موجهد: حفرت ابن عهاس وضى اللوعها سے دوایت ہے کہ جناب نی کریم سکتے نے حالید احرام میں سینگی تھنچا کی۔ خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلامديب كرماليد احرام من يجيزالكا تاورست ب

كلمات حديث كي تشريح المعتجم النبي المع: مراديه ب كرمحرم ال طور يريحمند لكوائ كد بدن كاكوكي بال توشيخ ند باية تو ورست ب وخص الجمهور في الحجامة إذا لم يقطع شعراً " (مرتات ١٦٨١٥)_

و محدم كسي ليب سرجه لكاناي وصلى الرجل الله عليه وسلم الله عَلَيْهِ وَسَلَمَ فِي الرَّجُلِ إِذَا اشْتَكَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فِي الرَّجُلِ إِذَا اشْتَكَى عَيْنَيْهِ وَهُوَ مُحْرِمٌ ضَمَّدَ هُمَا بِالصَّبِرِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل الغلت: اشتكى (التعال) يَارِينَا، صَمَّدَ (تقعيل) ليب كرنا، الصبر: المواجع صبور-

احرام میں د کھنے لگیں تو وہ اپنی آنکھوں پدایلوے کالیپ کرے۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلامديب كدمرى كالكهين تكيف بوجائة وومرمد وغيرواستعال كرسكاب-

کلمات حدیث کی تشری افا اشتکی عینیه و هو محوم الغ: مرادیب کدم کی آنجیش اگر تکلیف بوجائے تو سرمده فیره استحال کرسکتا ہے؛ البتہ فوشبودارادرسیاه سرمدے پر بیز کرے۔

﴿محرم کیے لیے چھتری استعال کرنا ﴾

﴿ صِرِيثُ مُبِرُ ٢٥٤ ﴾ وَعَنْ أُمَّ الْحُصَيْنِ قَالَتْ: رَأَيْتُ أَسَامَةً وَبِلاَلاً وَأَحَلُهُمَا. آجِدُ بِجِطام نَاقَةِ رَسُوْلِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَمَثَلُمَ وَالْآخَرُ وَافِعٌ ثَوْبِهَ يَسْتُرُهُ مِنَ الْحَرِّ حَتَّى رَمَىٰ جَمْرَةَ الْعَقْبَةِ. وَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: خطام: كيل جو نظم ، ثوب: كيرُ اجْمَع ثِياب.

قوجهد: حفرت ام الحصين رضى الشرعنها عدوايت م كهيل في اسامداور بلال يس سي أيك كود يكما كرجناب في كريم الله في كرا اوٹنی کی کیل پکڑے ہوئے ہیں ،اور دوسرے کپڑااٹھا کر گری ہے پر دو کیے ہوئے ہیں ؛ یہاں تک کہآپ نے جمرہ عقبہ کی ری کی۔ خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيب كمرم جمترى استعال كرسك بـ

کات دیشی ایک ایک اسامه و بلالا: مرادیب کدانهول نے اسامداور بلال کودیکھا کدونوں ایک ایک کام کر کمات حدیث کی تشری کمات حدیث کی تشریک رہے تے الیکن کون کونیا کام کررہ تے تھیک سے یادندرہ سکا، والآخو رافع نوبه الغ: مراوید

ے کہ عرم چمتری دفیر وال طور پر استعال کرسکتا ہے کہ سر پہ لکنے نہ پائے۔

﴿وقت سے پھلے سر منڈانے والے کی جزا ﴾

﴿ صريت بْمِر ١٥٤٢ ﴾ وَعَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ رَسَلَمَ مَرَّ بِهِ وَهُوَ بِالْحُدَيْدِيَّةِ قَبْلَ اَنْ يُدْخُلَ مَكَةَ وَهُوَ مُحْرِمٌ وَهُوَ يُوْقِدُ لَحْتَ قِدْرِ وَالْقَمْلُ تَنْهَافَتُ عَلَى وَجْهِم فَقَالَ آيُؤْذِيْكَ هَوَامُكَ، قَالَ: نَعُمُ ا قَالَ: فَاخْلِقْ رَأْسَكَ رَاطِعِمْ فَرَفَا بَيْنَ سِنَّةِ مَسَاكِيْنَ وَالْفَرَقْ لَلَاقَةَ آصُعِ أَوْصُمْ لَلَاقَةَ آيامُ أَوْ انْسُكُ نَسِيْكَةً. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل الفات: يوقد: وَقَدَ (ص) وَفَدا آ ك جانا ، أو قَدَ (انعال) آك جانا ، قدر: بانثرى جَنْ قُدُور ، القمل: جَعْ ب قملة ك بمعنى جول ، مساكين: جَعْ ب مسكين كي بمعنى عناج ، تتهافت : تهافت (تفاعل) لكا تاركرنا .

قوجهد: حفرت کعب بن مجر و سے روایت ہے کہ جناب نی کریم اللہ ان کے پاس سے اس وقت گزرے جب وہ مے میں داخل مونے سے پہلے حدید بیسی حالت احرام میں تھے، وہ ہانڈی کے بیچ آگ جلار ہے تھے اور جو ئیں ان کے مند پہر رہی تھیں ہتو آپ نے فرمایا: کیا یہ جو کمی تمہیں تکلیف پہنچارہی ہیں؟ انہوں نے کہا جی ہتو آپ نے فرمایا: اپناسر منڈ ادواور ایک فرق کھانا چھ مسکینوں کو کھلا دواور ایک فرق تین صاع کا موتا ہے، یا تین دن روزے رکھویا ایک قربانی کرو۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيب كه عذركي وجد يحرم وقت سي بهلي سرمنذ اتوسكتاب بهيكن كفاره دينا موكا_

مربه وهو باالحديبية الخ: مراديب كه الحديث الخ المحاب كالمات عديث كالشرائ عليه المحاب كالمات عديث كالشرائ عروك ليا محلية كرام

و بین تخم رے رہاور چند معام کے بربات ختم ہوئی ،اس کے وہاں کھانا بینا بھی چلنار ہا، تو جناب نی کریم ایک نے کوب رضی اللہ عند کواس حال میں کھانا بناتے ہوئے دیکھا کہ ان برجو میں چل رہی تھیں ،فقال ایؤ ذیك هو امك النے: مرادیہ ہے کہ ان جو وک سے تہیں تکلیف ہے ؛اس کے این بال منڈ ادو الیکن کفارہ دینا ہوگا۔

الغصل الثانب

﴿اعرام میں مورتوں کے لیے ممنوع چیزیں﴾

وصيث نبر ٢٥٤٥) هِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ انْهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ يَنْهَى النّسَاءَ فِي الْحَرَامِهِنَّ عَنِ الْقُفَّازَيْنِ وَالنَّقَابِ وَمَا مَسَّ الْوَرْسُ وَالزَّعْفَرَانُ مِنَ النَّيَابِ وَلْتَلْبَس بَعْدَ ذَالِكَ مَا حَبَّتُ مِنْ الْوَانِ النَّيَابِ وَلْتَلْبَس بَعْدَ ذَالِكَ مَا اَحَبَّتُ مِنْ الْوَانِ النَّيَابِ مُعَضْفَرِ اوْخَرُّ اوْ حُلَى اوْسَرَاوِيْلَ اوْ قَمِيْصِ أَوْ خُلَّ. رَوَاهُ ابُوْ دَاوُدَ.

حل لغلت: النساء: بَحْ بِ امراً أَه كَى يَمْنَ مُورت، القفازين: وستان بَحْعٌ قَفَافِيز ، الورس: ايك تم كى كماس جس مدنكائي كاكام معتاب الزعفوان: زعفران جع زَعافِو، عز: ريشم جمع خُزُوز.

قوجهد: حضرت این عمرونی الله عنها سے روایت ہے کہ انہوں نے سنا کہ جناب نی کریم تھے عورتوں کو احرام کی حالت میں دستاند، فقاب، اور ورس وزعفران سے دیکتے ہوئے کپڑے پہننے سے منع کرتے تھے؛ البتداس کے بعدوہ کپڑوں کی قسموں میں سے جو جا ہیں پہنس؛ خواہ کسم ہوکہ دیشم، زیور ہوکہ شلواریا کرتا ہوکہ موزہ۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يه كالمورتين حالت احرام من شوخ ادر بجرك دارتم كے كيڑے نه بين ـ

کلمات حدیث کی تعریخ کا الففازین: مراد دستانه به والنقاب: مراد چرے ش ڈالا جائے والا وہ کپڑا ہے جو چرے ش سٹ جائے اگر چرے میں نہ شے تو کوئی حرج نیں ہے"ای البوقع فی وجو ھین بحیث یصل المر مشر تعن "دمہ قات ۱۳۸۳/۵ موما میں الدرس والا عقر ادن مورس میں موان عقر الدرج کے گئی میں سئے موان

الى بشرتهن "(موقات ١٨٣/٥)، وما مس الورس والزعفوان: مراديه بيكم اورزعفرانى رنگ كركر عند يهني، ولتلبس بعد ذالك النع: مراديب كرحلال بون كر بعد برطرح كركير عادرتمام زيب وزينت كرمامان اعتمار كرسكتي ب- ﴿حالت احرام میں پردہ کا طریقہ﴾

﴿ صِرِيتُ ثَمِرُ ٢٥٤١﴾ وَعَنْ عَالِشَةَ قَالَتْ: كَانَ الرُّكْبَانُ يَمُرُّوْنَ بِنَا وَنَحْنُ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ ۖ وَسَلَّمَ مُحْرِمَاتٌ قَاذاً جَازُوْا بِنَا سَدَلَتْ بِنَا إِحْدَانَا جِلْبَابَهَا مِنْ رَأْسِهَا عَلَى وَجْهِهَا قَاذَا جَاوَزُوْنَا ۖ كَشَفْنَاهُ. رَوَاهُ اَبُوْ دَاوُدَ وَلِابْنِ مَاجَةً مَعْنَاهُ.

حل لفات: سدلت: سَدَلَ (ن)سَدُلاً الثوب كُرُ الزَّانا، جلبابها: عادر تم جَلابيب.

قو جعه: حفرت عائشر مدیقة رضی الله عنها ہے روایت ہے کہ ہم حالت احرام میں جناب نبی کریم ملک کے ساتھ تھے اور ہارے پاس سے قافلے گزرتے تھے؛ چنال چہ جب کوئی قافلہ ہارے پاس سے گزرتا ہتو ہم میں سے ہرمورت اپنی چاورا پے سر پرتان کراپے چیرے پرلٹکا لیٹی تھی اور جب قافلہ گزرجا تا تو ہم چیرہ کھول لیتے تھے۔

خلاصة حديث فاصهيب كورتي والت احرام بن بحى يرده كري كى ، مراس طور يركه جبر يري إلكني نه يائي

کلمات صدیر کی تشریکی کا ن الر کبان بعرون بنا الغ: مراد به ب که ورتی حالت احرام میں بھی چرے وجہائے کممات صدیر کی تشریف ان لوگوں کے لیے سبق آموز ہے جو یہ کہتے ہیں کہ ورت کا چرہ پردے میں شاف ہیں ہودوں کے شفنا: بیرس ایک گھر کی عورتیں یا قریبی رشته دار تھیں ؛ اس لیے جناب نی کریم تقاللہ کی موجودگی میں

چرہ کھول نیا کرتی تھیں ؛ورندتو ہر عورت آپ سے پردہ کرتی تھی۔

﴿ حالت اهرام میں تیل لگانا ہ

﴿ صديتُ بِمِرِ ٢٥٤٤ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَأَنَّ يَدُهِنُ بِالزَّيْتِ وَهُوَ مُحْرِمٌ غَيْرَ الْمُقَتَّتِ يَعْنِيْ غَيْرَ الْمُطَيِّبِ. رَوَاهُ التَّرْمِلِيُّ.

حل نفات: يدهن: دَهَنَ (ن) دَهُنا الرأس مر يرتبل لكانا، الزيت: زينون كا تبل جمع زُيُوت.

توجهد: حضرت ابن عمر منى الله عنها ب روايت ب كه جناب في كريم الله حالت احرام من زينون كاابيا تيل لكات يتع جس مي مقنع اليني خوشبونيس موتى تقى ..

خلاصة حديث الى حديث شريف كاخلامديب كرجم بخشبودار تبل استعال ارسكتا ب-

کمات صدیدی کاشریک کان یدهن بالزیت و هو هر عیو المقتت النے: احرام کی حالت می خوشودار تیل استعال کردونی بنده برای تفصیل بیہ کدا کرونی محرم کی ایک عضو کے پورے حصد پریائی یاسب اعضاء پردوئن بنفشہ، روئن گلاب، روئن موتیایا ای شم کا کوئی بھی خوشودار تیل لگائے گا تو حنیہ کے ہاں بالا تفاق اس پردم یعنی جا نور ذرج کرنا واجب ہوگا ، اور اگر زخون یا بیل کا ایسا تیل کہ جس میں خوشود رائی ہوئی ہوزیادہ مقدار میں لگائے گا؛ تو حضرت امام اعظم ابوحنین کردیک اس صورت میں ہو واجب ہوگا جکہ صاحبین ؛ یعنی حضرت امام ابو بیست اور حضرت امام گئے ہیں کہ صدقد داجب ہوگا ؛ کیک مرد داجب ہوگا ، اور کی دا بیل خوشود دار پھول کے پکاتے ہوئے نہ ہوگا؛ کیل میں خوشود وار پھول کے پکاتے ہوئے نہ ہوں ؛ کیوں کہ اگر زخون کے بیاتی میں خوشود می بیاس میں خوشود دار پھول ڈال کر پکایا گیا ہوگا تو پھر سب بی کے نزدیک اس کو استعال کرنے کی وجہ سے دو واجب ہوگا؛ اس طرح پر اختلاف اس صورت میں ہے جبکہ بیتی نواد دھرا کی بات بیگی جان کیجے اس کو استعال کرنے کی وجہ سے مرف صدقد داجب ہوگا ، اور بھرا کی بات بیگی جان کیج

کران تیلوں کے استعمال کی وجہ سے دم باصدقہ ای وقت واجب ہو کا جبکہ ان کوئن خوشبو کی خاطر استعمال کیا جائے اور اگر انہیں دوا کے طور پراستعال کیا جائے گاتر پر علی الا تفاق ہے ہی واجب نہیں ہوگا،لیکن مشک یا دوسری خوشبوؤں کے استعمال کا مسئلہ اس سے مختلف ہے كران كاستعال ببرصورت دم واجب موتا ب-

﴿سلے ھونے کپڑیے بدن پہ ڈالنا﴾

﴿ مِدِيثُ نِهِ ١٥٧٨ ﴾ عَنْ نَافِعِ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ وَجَدَ الْقَرُّ فَقَالَ : اَلْقِ عَلَيٌّ ثَوْبًا يَانَافِعُ ا فَالْقَيْتُ عَلَيْهِ بُرْنُساً، لَقَالَ: تُلْقِيْ عَلَى عَلَى عَلَا وَقَدْ نَهِنَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنُ يَكْبَسَهُ الْمُحْرِمُ. رَوَاهُ أَبُودَاؤُدَ.

حل لفلت: بونسا: أو في كي طرح الكي لباس، برساتي ، القو : مُعَنَّدُك، فَو (ن صَّ) قرّاً اليوم: ون كاشَنْدَا مونا ـ

قوجمه: حضرت نافع سے روایت ہے کہ ابن عمر کوشنڈی کلنے تلی ، تو انہوں نے کہا: اے نافع! مجھ پرکوئی کپڑا ڈال دے توجس نے ان پر برساتی ڈال دی توانہوں نے کہا: تونے جھے پر بیڈال دیا حالال کہ جناب نی کریم میلائے نے محرم کواس کے پہننے سے منع کیا ہے۔ خلاصة حديث المحرم سلم ہوئے كيڑ مضرورت كے وقت يوں بى ڈالسكتا ہے دستور كے مطابق پہنچہيں۔

کا ت حدیث کی تشریکی ان ابن عمو وجد القو النج: مرادیه بی کم فرورت کے وقت محرم سلے ہوئے کیڑے یوں ہی ڈال سکمات حدیث کی تشریکی سکتا ہے، اس میں کوئی حرج نہیں ہے؛ البتہ سلے ہوئے کیڑے جس انداز میں پہنے جاتے ہیں اس طرح

پہنچیں ؛ جیسا کہ حضرت ابن عمر رضی الله عنها پر برساتی و ال دی گئی تو انہوں نے روکانہیں ، یڑی رہنے دی۔

محرم كم البيم بيها الكوانا > (محرم كم البيم بيها الكوانا > (محرم كم البيم بيها الكوانا > (محرم كم الله عَلَيْهِ وَسَلَمَ وَمَدِيثَ مُرِهِ ١٥٤) وَعَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَالِكِ ابْنِ بُجَيْنَةَ قَالَ: احْنَجَمَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ وَهُوَ مُحْدِمٌ بِلَحْي جَمَلِ مِنْ طَرِيْقِ مَكَّةَ فِي وَسَطِ رَأْسِهِ. مُتَّفَقَ عَلَيْهِ.

حل لفات: احتجم: احتجم (التعال) كِهِنا للوانا، طريق: راست جمع طُرُق.

قوجمه: حعرت عبداللدين ما لك الجيميد سه دوايت ب كه جناب ني كريم تنظف نے حالت احرام ميں كے كراست كى جمل كے مقام بدر كے بيوں في كچينا لكوايا۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يه به كمرم كه لي بجها لكوانا درست ب-

كه آپ تالك نے كى عذر دو ضرورت كى بناء پرسر ميں تجھنے لكوائے تھے، چناں چه اگر محرم كى اليى جگہ تجھنے لكوائے جہاں بال نہ ہوں تواس پر فديدواجب تبين موتا

مصطه: اگرکوئی عمر مرکے بال چوتھائی حصہ ہے کم منڈائے یا بچھنے وغیرہ کی دجہ ہاں کے سرکے چوتھائی حصہ ہے کم بال ٹوٹ جائمی تواس مرصدقہ واجب ہوگا؛ لین وہ بطور جزار یا توکس بھوکے کو پیٹ بھر کھانا کھلا دے یا اے نصف صاع کیہوں دے دے،اگر کوئی محرم بلاعذر چوتھائی سرے زیادہ منڈ وادے یا بلاعذر تجھنے لگوالے اوراس کی دجہسے چوتھائی سرے زیادہ بال ٹوٹ جائیں تواس پر دم واجب ہوگا؛ لینی وہ بطور جزار ایک بری یا اس کی ما نند کوئی جانور ذرج کرے، اور اگر کوئی کسی عذر کی بنار پر چوتھائی سرے زیادہ

منڈائے یا کسی عذر کی وجہ سے بچپنے لگوائے اوراس کی وجہ سے چوتھا کی سرے زائد ہال ٹوٹ جائیں تو اسے تین چیزوں جس سے کسی ایک چز کا اختیار ہوگا کہ جا ہے تو وہ ایک بحری ذرج کرے، جا ہے نصف صاع فی سکین کے حساب سے چیوسکینوں کو تین صاع کیبوں دے، اور جا ہے تین روز سے دکھ ؛ خواہ تین روز سے سلسل رکھ لے یامتفرق طور پر۔

ا گرکوئی محرم سیجینے لگوانے کی وجہ سے محاجم ؛ لینی مجمعوں کی جگہ ہے بال منذ وائے تو اس صورت میں امام اعظم ابو حذیفہ کے نزدیک تواس پردم واجب ہوگا اور صاحبین کے نزدیک صدقہ۔'' مجھنوں کی جگہ'' ہے گردن کے دونوں کنارے اور گدی مراد ہے؛ اس لیے اگر کوئی پوری گردن منڈوائے گاتو چرمتفقہ طور پرسب کے نزدیک اس پردم واجب ہوگا،اور اگر پوری سے کم منڈوائے گاتو صدقہ واجب ہوتا ہے، خود بخو دبال او شخے سے کھے بھی واجب نیس ہوتا۔

﴿ پیر میں پچھنا لگوانا ﴾

﴿ مِدِيثُ مُمْرِكُ ٢٥٨ ﴾ وَعَنْ أَنْسِلُ قَالَ: احْتَجَمَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم وَهُوَ مُحْرِمٌ عَلَى ظَهْرٍ الْقَدَمِ مِنْ وَجَعِ كَانَ بِهِ. رَوَاهُ أَبُوْ ذَاوُّدَ وَالنَّسَانِيُّ.

حل لغات: ظهر: پيئة تَنْ أَظُهُر ، المقدم: يا كال بَنْ أَفُدام ، وجع : دردوالا بَنْ وَجْعُولْ .

من جمع : حضرت السيرض الله عند سروايت ب كرج ناب في كريم الله في حالت احرام بن ياول كى بشت براس درد كى وجد بجيمنا لكواياجو ان كوتعا

أ خلاصة حديث أس حديث بريف كاخلاصه يب كدم بجيمنا لكواسكاب-

كلمات حديث كاتشرت احتجم رسول الله النع: مزاديب كاس اندازيس كجينا لكوائ كه بال وشخ نها ا

ومیمونه سے آپ کا نکاح پ

﴿ مِدِيثُ نِهِ ١٥٨ ﴾ وَعَنْ أَبِيْ رَافِعِ قَالَ تَزَوَّجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَيْمُوْنَةَ وَهُوَ حَلَالٌ وَبَنِي بِهَا وَهُوَ حَلَالٌ وَكُنْتُ أَنَا الرَّسُولُ بَيْنَهُمَا. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتَّرْمِذِيُّ وَقَالَ هذا حَدِيْتُ حَسَنٌ.

حل لغات: تزوج: تزوّج (تفعل) بياه كرنا_

قوجمه: حضرت ابورافع رضى الله عند سروايت الله عناب ني كريم علي في التا في مالت احرام من ميوند عنال كياء حالت حلال میں شب زفاف منائی اور میں ان دونوں کے درمیان قاصد تھا۔

خلاصة حديث أن حديث شريف كاخلامدييب كه حالت حلال اوراحرام دونون يس نكاح كياجا سكتاب

کلمات حدیث کی تشری انوق جر رسول الله صلی الله علیه وسلّم الغ: به مدیث شریف حضرت ابن عباس رضی الله علیه وسلّم الله علیه وسلّم الله علیه کمات حدیث کی تشری کی اس روایت کے فلاف ہے، جس میں منقول ہے کہ جناب نی کریم علی نے معرف میمونہ ہے

تكا قالت احرام من كيا تقا بيات ذبن من رب كه حضرت ابن عباس رضى الله عنها والى روايت كي تخ تصرت امام بخاري اورمسلم نے کی ہے؛ اس کیے حضرت این عباس رضی الله عنها کی روایت کورائ قرار دیتے ہوئے کہا جائے گا کہ آپ نے میموندے لکاح حالت احرام بی میں کیا تھا۔

﴿باب المعرم يجتنب الصيد﴾ الغصل الأول

﴿معرم شکار سے اجتناب کرہے﴾

﴿ مِدِيثُ مُر ٢٥٨٢ ﴾ عَنِ الصَّفْبِ أَنِ جُنَّامَةَ اللَّهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِمَارًا وَحُشِيًّا وَهُوَ بِالْآبُواءِ أَوْ بِوَدَّانِ فَرَدَّ عَلَيْهِ فَلَمَّا رَأَىٰ مَا فِي وَجْهِم قَالَ: أَنَا لَمْ نَرُادُهُ عَلَيْكَ إِلَّا أَنَا حُرُمٌ. مُتَّفَقّ عَلَيْهِ.

حل لفلت: حمار: كرما يح خيير وحُمُر، وجهد: چروج وُجُوه.

قوجعه: حفرت صعب بن جامدوض الله عندس دوايت م كدانهول في جنكل كدهاجناب ني كريم علي كي خدمت من بطور مديد پی کیا، جبآپ مقام ابوار یاوزان می تھے؛ چنال چہآپ نے والی کردیا توجب آپ نے اس کے چہرے بڑم کے آثار دیکھے تو آپ نے فرمایا کہ تہاراہدیہ ہم نے صرف اس لیے داپس کردیا کہ ہم حالت احرام میں ہیں۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يه به كرم شكار بربيز كر --

انه اهدی لوسول الله المع: اسروایت بی به که جناب نی کریم میلی کی خدمت بی زنده کدها کلمات حدیث کی نشری بیجا کیا تفااور دوسری روایوں بی بے کہ وشت وغیرہ بیجا کیا تفاء اس بارے بیل حضرات محدثین بید

کھتے ہیں کہ پہلے تو آپ کی خدمت میں زندہ کدھا ہی جمیجا کیا تھا،جب آپ نے اس کو قبول نہیں کیا تو بعد میں کوشت جمیجا کیا تما والاظهر انه اهداه حيا اوّلا ثم اهدى بعضه مذبوحاً "(مرقات ١٩٨٧/٥)، فرد عليه قلما رأى ما في وجهه الغ: جتاب ني كريم الله في ال ليه واليس كرديا؛ تاكدوس بالوك شد پاكران ايام بين شكارا پنامعمول ند بناليس اور جواصل مقصد ہےوہ فوت ہوجائے۔

﴿منفیه کی مستدل هدیث﴾

﴿ مِدِيثُ مُرِ ٢٥٨٣ ﴾ وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ أَنَّهُ خَرَجَ مَعَ رَسُوْلِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَحَلَّفَ مَعَ بَعْضِ ٱصْحَابِهِ وَهُمْ مُحْرِمُوْنَ وَهُوَ غَيْرُ مُحْرِمٍ فَرَاؤا حِمَاراً وَحُشِيًّا قَبْلَ اَنْ يَرَاهُ، فَلَمَّا رَأَوْهُ تَوَكُوهُ حَتَّى رَآهُ ابُوْقَتَادَةَ فَرَكِبَ فَرَساً لَهُ فَسَأَلَهُمْ أَنْ يُنَاوِلُوْهُ سَوْطَهُ فَابَوْا فَتَنَاوَلَهُ فَحَمَلَ عَلَيْهِ فَعَقَرَهُ ثُمَّ أَكُلَ فَأَكُلُوا فَنَلِمُوا ِ فَلَمَّا اذْرَكُوْا رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلُوْهُ، قَالَ: هَلْ مَعَكُمْ مِنْهُ شَيْءٌ؟ قَالُوْا: مَعَنَا رِجْلَهُ فَاخَلَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاكَلَهَا مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِيْ رِوَايَةٍ لَهُمَّا فَلَماَّ اتَوَا رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: آمِنْكُمْ آحَدٌ آمَرَهُ آنٌ يَحْمِلَ عَلَيْهَا أَوْ أَشَارَ اِلَيْهَا، قَالُوْا: لَا، قَالَ: فَكُلُوْا مَا بَقِيَ مِنْ لَحْمِهَا.

حل لفات: حمار: كرمائح حَمِيْر وحُمُر، سوط: كورُاجْع أَسُواط، لحم: كوشت بَع لُحُوم.

قرجمہ: حضرت ابوقیادہ رضی اللہ عنہ ہے روایت ہے کہ وہ جناب نبی کریم آگئے کے ساتھ نکلے بگریہ اپنے بعض ساتھیوں کے ساتھ نے دیکھا تو چپوڑ دیا ہماں تک کہ ابوقادہ نے دیکھ لیا تو انہوں نے اپنے گھوڑے پرسوار ہوکراپنے ساتھیوں سے اپنا کوڑا ما نگا تو ان کے ساتھیوں نے دینے سے انکار کردیا، تو انہوں نے خود سے لے کراس برحملہ آور ہوئے یہاں تک کہاس کو مارگرایا، پھراس کا گوشت انہوں نے اور ان کے ساتھیوں نے کھایا بلیکن بعد میں بیلوگ نادم ہوئے ،جب ان لوگوں کی ملاقات جناب نی کریم اللقائے سے ہوئی تو اس

بارے میں آپ سے پوچھاتو آپ نے فر مایا: کیااس میں ہے تم لوگوں کے ساتھ کھے ہے؟ ان لوگوں نے کہا: اس کا پیر ہے، تو جناب نی کریم تعلقہ نے اسے لے کر کھایا۔

خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلامه بيا كوئي شكاركر نوعم اس كى كى صورت بن بعي مددندكر ي

کمات حدیث کی تشریخ التخلف مع بعض اصحابه وهم محرمون الغ: مرادیه کیم شیکار کرے اور شیکار کر نوالے کمات حدیث کی تشریخ کارکر نوالے کی مدند کی تھی مدند کی تھی الوا معنا رجله الغ: ان لوگول نے چونکد الوقاده کی مدند کی تھی

اسلنے محرم اور غیرمحرم سب کیلئے اس کا گوشت کھانا جائز تھا؛ اس لیے آپ نے ملی طور پراس میں سے کھا کریہ بتادیا کہ کوئی حرج نہیں ہے۔

﴿محرم کن جانوروں کومار سکتا ھے﴾

﴿ صريت مُهِ ٢٥٨٣ ﴾ وَعَنَ ابْنِ عُمَّرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: خَمْسٌ لَا جُنَاحَ عَلَى مَنْ قَتَلَهُنَّ فِي الْحَرَمِ وَالْإِخْرَامِ الْفَارَةُ وَالْغَوَابُ وَالْعِدَاةُ وَالْعَقْرَبُ وَالْكَلْبُ الْعَقُورُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلامه بيب كمرم ان جانوروں ميں كى كومارد يو كوئى حرج نبيس ب-

کلمات حدیث کی تشریح افر دکور پانچ جانوریس المنات حدیث کی تشریف می فدکور پانچ جانوریس المنات حدیث کی تشریک اور ندی کفاره۔

ومحرم کے لیے تکلیف دہ جانور کا مارنا ﴾

﴿ صِ يَتُ مُمِر ٢٥٨٥ ﴾ وَعَنْ عَائِشَة عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: خَمْسٌ فَوَاسِقُ يُقْتَلْنَ فِي الْحِلّ وَالْحَرَمِ الْحَيَّةُ وَالْغُرَابُ الْاَبْقَعُ وَالْفَارَةُ وَالْكَلْبُ الْعَقُورُ وَالْحُدَيًّا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل فغات: الحية: ماني رَمْع حَيَّات وحَيَوَات.

مر جمه: حضرت ما تشصد يقدرض الله عنها بروايت بكر جناب ني كريم الله في خرمايا: پانج تكليف ده جانور بين جنهيس طل اور حرم دونون جكة تل كيا جاسكتاب (١) سانب (٢) ابلق كوا (٣) چو با (٣) كاث كهانے والاكوا (٥) چيل _

خلاصة حديث ال عديث شريف كاخلاصه بيب كة تكليف ده جانوركوم مارد يو كوئى حرج نبيس بـ

کلمات حدیث کاتشری این عمس فواسق یقتلن النع: مرادیه به که تکلیف ده جانورون کوم بھی مارسکتا بے کوئی حرج کلمات حدیث کی تشریک انہیں ہے، خواہ حرم کے اندر ہو یا باہر۔

الفصل الثاني

﴿محرم کے لیے شکار کا گوشت استعمال کرنا﴾

﴿ وديث مُر ٢٥٨٧ ﴾ عَنْ جَابِرِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ: لَحْمُ الصَّيْدِلَكُمْ فِي الْإِحْرَامِ
حَلَالٌ مَالَمْ تَصِيْدُوْهُ أَوْ يُصَادُ لَكُمْ. رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ وَالتَّرْمِدِيُ وَالنَّسَائِيُّ.

حل لفات: لحم: كوشت جم لحوم، الصيد: صَادُ (ض) صَيْداً شكاركرنار

قوجمه: حعرت جابروضی الله عند بروایت ب که جناب نی کریم الله نے فرمایا که تبهارے لیے حالت احرام میں ایسے شکار کا گوشت حلال ب، جے نہ تم نے شکار کیا ہواور نہ تبہارے لیے شکار کیا گیا ہو۔

خلاصة حديث محرم اليده كاركا كوشت كماسكتاب، جس مين عرم كاكوني عمل دخل ندر بابود الرعمل دخل بوجائة حرام ب-

قال لحم الصيد لكم في الاحوام حلال المخ: مراديب شكاركا كوشت عمر كي فدمت بشآئ كلمات حديث كي نشرت في فدمت بش آئ كلمات حديث كي نشرت في المورج نبيل بي الكين الرشكار كراني بين خود عمر كالمل دخل بي كامنوع بياي

طرح سے زئدہ شکار بھیج دیے آس کا گوشت کھانا ممنوع ہے،اوراس میں مصلحت یہ ہے کہ زندہ جانورآئے گا تو اس کے بنانے اور پکانے میں مشخولیت برائے میں مشخولیت برائے میں مشخولیت برائے مام ہوتی ہے، جیسے وہ دوسری چیز کھائے گا دیے ای اس گوشت کو کھا کرا ہے کا میں لگ جائے گا،اور نقصان ندا محاتا پڑے گا۔

خِثْدُی شکار کرناک

﴿ صِدِيثُ مُمِرِ ٢٥٨٤﴾ وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الْجَرَادُ مِنْ صَيْدِ الْبَحْرِ. رَواَهُ أَبُوْدَاوُدَ وَالتَّرْمِذِيُّ.

حل الغات: الجواد: جمع ب جوادة كي بمعنى الأي اصيد: صَادَ (ض) صَيْداً شكار كرنا.

توجمه: حصرت ابو ہريره رضى الله عندے دوايت بكر يم بنالغ في فرمايا ثاري دريائي شكار ب-

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيد كميم ثدى كاشكار كرسكتا ب-

کلمات حدیث کی تشری کا شکار کرسکتا ہے"واحتوز به عن البحوی" (رد متارین) نیز قرآن کریم سے بی ثابت موتامیک دریائی جانوں کا شکار کرسکتا ہے"واحتوز به عن البحوی" (رد متارین) ۵۹۵) نیز قرآن کریم سے بی ثابت موتامیک دریائی جانوروں کا شکار محرم کے لیے درست ہے"واُجل لَکُمْ صَیْدُ الْبَحْدِ مَا دُمْتُمْ حُرُماً".

﴿درندیے کو مارنا﴾

﴿ مِديثُ مُبِر ٢٥٨٨ ﴾ وَعَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ ٱلنُحَدْرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَقْتُلُ الْمُحْرِمُ السَّبُعَ الْعَادِي. رَواَهُ التَّرْمِذِيُّ وَأَبُوْدَاؤُدَ وَابْنُ مَاجَةً.

حل لفات: السبع: درثره جمع أسبع وسِبَاع.

قوجهه: حضرت ابوسعيد خدرى رضى الله عندے روايت ہے كہ جناب نى كريم الله الله عندم بجا رُكھا نيوالے جانوركو مار وال خلاصة حديث كاس عديث شريف كاخلاصه بيہ ہے كہ محرم درندےكو مارسكتا ہے۔

کلمات حدیث کی تشریح کی بیش ہے۔ کا المحوم السبع العادی: مرادیہ ہے کہ محرم کی بھی بھاڑ کھانے والے جانورکو مارسکتا ہے، کوئی ا

﴿بجو کا شکار کرنا﴾

﴿ صَرَيَتُ مُمِ ٢٥٨٩ ﴾ وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمُنُ بْنِ أَبِي عَمَّارٍ قَالَ: سَأَلْتُ جَابِرَ بْنِ عَبْدِاللّهِ عَنِ الطَّبُعِ آصَيْدٌ هِي؟ فَقَالَ: نَعَمْ! فَقُلْتُ: سَمِعْنَهُ مِنْ رَسُولِ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ؟ قَالَ: نَعَمْ! فَقُلْتُ: سَمِعْنَهُ مِنْ رَسُولِ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ؟ قَالَ: نَعَمْ. رَوَاهُ التَّرْمِلِيُّ وَالنَّسَاتِيُّ وَالشَّالِمِيُّ وَقَالَ التَّرْمِلِيُّ هَلَا حَدِيْثَ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

حل لفات: الضبع: بجوج ضِباع ، صيد وكار ، صَادَ (صُ) صَيْداً وكاركرنا_

عن الضبع اصید هی فقال نعم الغ: اس مدیث رفین بنیاد پر مفرت امام شافتی کتے ہیں کہ الخات مدیث رفین کی بنیاد پر مفرت امام شافتی کتے ہیں کہ بھات مدیث کی تشری المام المحظم الوطنیفة اور امام مالک الکے میں کہ بھوکا گوشت کھانا بھی الک مفرت میں کہ بھوکا گوشت کھانا ممنوع ہے، ان مفرات کی دلیل مفرت فزیمہ والی روایت ہے"عن خزیمة بن جزی قال: سالت اللہ مالک میں کہ بھوکا گوشت کھانا ممنوع ہے، ان مفرات کی دلیل مفرت فزیمہ والی روایت ہے"عن خزیمة بن جزی قال: سالت

رسول الله صلى الله عليه وسلّم عن اكل الضبع قال او يأكل الضبع احد"_

﴿محرم کے لیے بجو کا شکار ممنوع ھے﴾

﴿ صِيتُ مُبِر ٢٥٩﴾ وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الطَّبُعِ، قَالَ: هُوَ صَيْدٌ وَيَجْعَلُ فِيْهِ كَبْشَاًإِذَا اَصَابَهُ الْمُحْرِمُ. رَوَاهُ البُوْدَاؤُدَ وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّادِمِيُّ.

حل لفات: الضبع: يَوَتِمَع ضِبًاع، كَبْشاً: مِيندُ إِنْهُ كِبَاش.

قو جعه: حضرت جابر رضی الله عند سے روایت ہے کہ میں نے جناب نبی کر یم اللغ سے بجو کے بارے میں پوچھا تو آپ نے فرمایا: وہ شکار ہے؛ اگر محرم اس کا مرتکب ہوجائے تو بدلے میں مینڈھا دینا پڑے گا۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصيب كرم كي لي بحوكا شكاركرنامنوع بـ

كلمات حديث كاتشرك مولانا فيه كبشا إذا اصابه المحرم: مراديه كرم في بحوكا شكاركرليا تواس يردم واجب كلمات حديث كاتشر كا موكا"اى في جزاء قتله" (مرتات ٢٩٠/٥)_

ہبجو حرام ھے ﴾

﴿ مديث بُهِ ١٥٩ ﴾ وَعَنْ خُزَيْمَةَ بْنِ جَزِكٌ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَنْ آكُلِ الطَّبُع، قَالَ: أَوْ يَأْكُلُ الذَّنْبَ أَحَدٌ فِيْهِ خَيْرٌ. رَواهُ الطَّبُع، قَالَ: أَوْ يَأْكُلُ الذَّنْبَ أَحَدٌ فِيْهِ خَيْرٌ. رَواهُ اليَّرْمِذِيُ وَقَالَ لَيْسِ إِسْنَادُهُ بِالْقَوِيِّ.

حل لفات: الضبع: بجوجم ضِبًا ع، اللئب، بعير يا جمع ذِئاب.

قوجمہ: حضرت خزیمہ بن جزی سے روایت ہے کہ میں نے جناب نی کریم اللی سے بجو کھانے کے بارے میں پوچھا تو آپ نے فربایا: کیا کوئی بجو بھی کھا تا ہے؟ نیز میں نے آپ سے بھیڑیا کھانے کے بارے میں پوچھا بتو آپ نے فرمایا کوئی بھیڑیا بھی کھا تا ہے؟ | خلاصۂ حدیث اس حدیث شریف کا خلاصہ بہے کہ بجواور بھیڑیا کا گوشت کھا ناممنوع ہے۔

اویاکل الضبع احد: مرادیه به کربوکا کوشت کهاناممنوع بهدل علی حرمته اکل الضبع کم بحوکا کوشت کهاناممنوع بهدل علی حرمته اکل الضبع کمات حدیث کی تشریح کمات حدیث کی تشریح کمات حدیث کا قال به ابو حنیفة و مالك خلافاً للشافعی و احمد" (مرقات ۱۳۹۰)،اویاکل الذئب

احد النع: مراديب كرآدي بعير ياكا كوشت شكها ياس ليكداس من فائده بين بانقصال بى نقصال ب-

الغصل الثالث

﴿محرم کے لیے شکار کا گوشت کھانا﴾

﴿ مديث بُمر ٢٥٩٢ ﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَٰنِ بْنِ عُثْمَانَ النَّيْمِيُّ قَالَ: كُنَّا مَعَ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ وَنَحْنُ حُرُمٌّ فَأَهْدِىَ لَهُ طَيْرٌ وَطَلْحَةُ رَاقِدٌ فَمِنَّا مَنْ أَكُلَ وَمِنَّا مَنْ نَوَرٌ عَ فَلَمًّا اسْتَيْقَظَ طَلْحَةُ وَافَقَ مَنْ آكَلَهُ، قَالَ: فَاكَلْنَاهُ مَعَ رَسُوْلِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَواهُ مُسَلِّمٌ.

حل لفات: طير: يرنده جمع طُيُور ، واقد: رَقَدَ (ن) رَقُداً سونا-

تو جعد: حفرت عبدالرخمن بن عثمان التمی سے دوایت ہے کہ ہم حالت احرام بیں طلحہ بن عبیداللہ کے ساتھ تھے کہ ان کے پاس ہدیہ میں ایک پرندہ آیا اور طلحہ سور ہے تھے بتو ہم میں سے بعض نے کھایا اور بعض نے پر ہیز کیا، جب طلحہ بیدار ہوئے بتو انہوں نے کھانے والوں کی موافقت کرتے ہوئے کہا کہ ہم نے بیر جناب نی کریم اللہ کے ساتھ کھایا ہے۔

خلاصة حديث أس مديث شريف كاخلاصه يب كمرم شكاركا كوشت كهاسكتاب-

کلمات حدیث کی تشریح افاهدی له طیر: طیر برد برد کا گوشت ب "ای مشوی او مطبوخ" (مرفات ۱۳۹۱) وافق المات حدیث کی تشریح من اکله المخ: مرادیه به کدانهول نے محرم کیلئے کوئی شکار کا گوشت بھیج تو اسکو کھانے کی اجازت

دی اوراپی بات کومزید مضبوط کرنے کے لیے انہوں نے بیفر مایا کہ ہم نے جناب نبی کریم اللے کے ساتھ اس طرح کا گوشت کھایا ہے۔

﴿باب الاحصار وفوت الحج﴾

احصاد کے معنی: احصار کے معنی: احصار کے معنی افت کے اعتبار ہے تو ''روک لیاجانا'' ہیں اور اصطلاحِ نقد میں 'احرام باندھ لینے کے بعد حج یاعمرہ ہے دوکاجانا'' احصار کہلاتا ہے ''ای المنع او المحبس لغة، والمنع عن الوقوف والطواف شرعاً" (مرقات ۱/۱) جدح یاعمرہ کے اسلام ناد میں باندھا اور پھر جس کام کے واسلے (بینی حج یاعمرہ کے لیے) احرام باندھا تھا اس کے اداکر نے ہے وہ روکا گیا تو اس کو 'کفر'' کہتے ہیں۔

احصار کی صور تیں کے خفی سلک کے مطابق احصار کی کئی صور تیں ہیں جواس چیز کی ادائیگی ہے کہ جس کا احرام باندھا ہے (یعنی مج احصار کی صور تیں کی علیم ہ) مقیقہ یا شرعاً مانع ہو جاتی ہیں ،ان صور تو س کی تفصیل درج ذیل ہے۔

(۱) کسب دشمن کا خوف مو: رحمن سے مرادعام ہے خواہ کوئی آ دمی ہو یا درندہ جانور مثلاً بیمعلوم ہو کہ راستہ میں کوئی دشمن بیٹا ہے جو تجاح کوستا تا ہے یا لوٹنا ہے یا مارتا ہے آئے ہیں جانے دیتا ، یا ایسے ہی کسی جگہ شیر وغیرہ کی موجودگی کاعلم ہو۔

(۲) بیمادی: اترام باعد سے کے بعدالیا بیار ہوجائے کہ اس کی وجہ سے آگے نہ جاسکتا ہو، یا آگے جاتو سکتا ہے مگر مرض بوج جانے کا خوف ہو۔ کا خوف ہو۔

- (٣) عورت كا محوم نه رهي : احرام باند صنے كے بعد عورت كا محرم يا خاد ندم جائے ، ياكميں جلاجائے يا آ گے جانے ہے انكار كردے۔
- (٣) خرج كم هو جائي : مثلًا احرام باند سے كے بعد مال واسباب چورى ہوجائے ، يا بہلے بى سے فرج كم لے كر چلا ہواور اب آ كے كی ضروريات كے ليے رو بير بير ندر ہے۔
- (a) عودت كي اليم عدت: احرام باند صن ك بعد عورت كاشوبر مرجائ ياطلاق دردرج مل كي وجدرو بابند

عدت ہو جائے تو یہا حصار ہو جائے گا۔ ہاں اگر وہ مورت اس وقت مقیم ہے اور اس کے جائے قیام سے مکہ بفتر رمسافت سنرنہیں ہے تواحسارتين سمجما جائے گا۔

- (٢) راسته بمول جائے اور کوئی راہ بتانے والانٹل سکے۔
- (4) عودت کو اس کا شوھو منع کو دید: بشرطیداس نے ج کااترام اے شوہری اجازت کے بغیر باندها ہو، ج فرض کے روکنے کا اور ج تفل میں اجازت دینے کے بعدرو کنے کا اختیار شو ہر کوئیس ہے۔
 - (۸) اوغری یاغلام کواس کاما لک منع کردے۔(رد محارم-۳)

احساری بیتمام صورتیں حنفیہ کے مسلک کے مطابق ہیں، بقیہ تیوں ائمہ کے ہاں احسار کی صرف ایک ہی صورت؛ یعنی دعمن کا خوف ہے، چنال چان حضرات کے نزد کید دیگر صورتوں میں احصار درست نہیں ہوتا؛ بلکہ احرام کی حالت برقر اررہتی ہے۔

ر کا تھم اجس محرم کواحسار کی مندرجہ بالاصورتوں میں سے کوئی صورت پیش آ جائے تواسے جاہے کہ وہ اگر مفرد ہوتو ایک بدی کا جانور (مثلاً ایک بکری) اور اگر قارن ہوتو دو ہدی کے جانور (مثلاً دو بکری) کی فخص کے ذریعے حرم میں بھیج دے

تا كدوه اس كى طرف سے دہاں ذرئ موہ يا قيت بھيج دے كروباں بدى كا جانور فريدكر ذرئ كرديا جائے اوراس كے ساتھ بى ذرئ كا دن اور وقت بھی متعین کردے؛ لینی جس مخص کے ذریعہ جانور حرم مجیج رہا ہواس کو بہتا کید کردے کدیہ جانوروہاں فلال دن اور فلال وقت ذی کیا جائے پھروہ اس متعین دن اور وقت کے بعد احرام کھول دے ،سرمنڈ انے یابال کتر وانے کی ضرورت نبیں۔ پھرآئندہ سال اس کی تضاكر ياس طورك اكراس في احسارى وجه على كاحرام الارائية السك بدله ايك في اورايك عمره كرا اوراكر قران كالحرام ا تاراہے تواس کے بدلہ ایک جج اور دوعمرے کرے جبکہ عمرہ کا احرام اتار نے کی صورت میں صرف ایک عمرہ کیا جائےگا۔

اگر بدی كا جانور سميخ كے بعد احصار جاتار ب اور يمكن موكدا كر مصر رواند موجائة قربانى كے ذرئح مونے سے يہلے بي جائے كااور في مجى في جائے كا تواس يرواجب بوكاكدوه فورارواند بوجائے ،اوراكريمكن ندمو تو بحراس برفورا جاناواجب نبيس بوكاء تا ہم اكر وہ ج كورواند بوجائے اور وہاں اس وقت ينجے جب كر بدى كاجانور بكى ذرئ بوچكا بواور ج كا دقت بكى كرر چكا بوتواس صورت يس ده

عمرہ کے افعال اداکر کے احرام کھول دے۔

ج فوت بوجانے كا مطلب اور اس كا تعلم بانده ليا تعا : مركوني الي بات بيش آئن كده عرف كے كيلي كيا ، استے احرام بعي ا

ہے بقرعید کی ضبح تک بے عرصہ میں ایک منٹ کے لیے بھی وتو ف عرفات نہ کرسکا ، (یا در ہے کہ دتو ف عرفات کا وقت عرف کے ان زوال آفاب کے بعد شروع ہوتا ہے اور بقرعید کی فجرطلوع ہوتے ہی فتم ہوجاتا ہے، اس عرصہ میں وتو ف عرفات فرض ہے خواہ ایک ہی منٹ کے لیے کیوں نمو) تو اس صورت میں ج فوت ہوجائے گا ،اورجس مخص کا ج فوت ہوجا تا ہےاسے فائت الج کہتے ہیں۔

جس شخص کا حج فوت ہوجائے اس کوجا ہے کہ عمر ہ کر کے لینی خانۂ کعبہ کا طواف اور صفاد مردہ کے درمیان سمی کرنے کے بعد احرام کھول دے،اگرمغر د ہوتو ایک عمر ہ کرے اور اگر قارن ہوتو دوعمرے کرے ادر اس کے بعد سرمنڈ دادے یا بال کتر دادے اور پھر سال آئنده بن اس في كاقتاكر ___

جس فخص کا ج فوت ہور ہا ہواس کے بارہ ش ایک بڑا ویجیدہ مسلمیہ ہے کہ اگر کو کی فخص وہاں بقرعید کی دات کے بالکل آخری حصہ ش اس

الحج فوت ہوجانے کے سلسلہ کاایک پیچیدہ مسئلہ

حال میں پنج کہ اس نے ابھی تک عشاری نمازنہ پڑھی ہو، اور اسے اس بات کا خوف ہو کہ اگر عرفات جاتا ہوں آو عشاری نماز جاتی رہے گی ، اور اگر عشاری نماز میں مشخول ہوتا ہوں آو وقو ف عرفات ہا تھ نہیں گے گا ، اس صورت میں وہ کیا کرے؟ اس کے متعلق بعض حضرات تو یہ کہتے ہیں کہ اسے عشاری نماز میں مشخول ہو جانا جا ہے اگر چہوتو ف عرفات ہوجائے ، جبکہ بعض حضرات سے کہتے ہیں کہ وہ عشاء کی نماز چھوڑ و سے اور عرفات جانا ہو جانا جا ہے۔ چٹاں چہوٹہ کر عرفات سے جانا جائے۔ چٹاں چہوٹہ کر عرفات سے جانا جا ہے۔ کہانا جا جانا جا ہے۔

الفصل الأدل

خذات نبی کے ساتھ احصارہ

﴿ مديث مُبر ٢٥٩٣ ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسِ قَالَ: قَذَ أُخْصِرَ رَسُولُ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَحَلَقَ رَأْسَهُ وَجَامَعَ نِسَاءَ أُو وَنَحَرَ هَذْيَةً حَتَّى اغْتَمَرَ عَاماً قَابِلاً. رَوَاهُ الْهُخَادِئُ.

حل الغات: احصر: أخصر (افعال)عن السفر روكناء أسه: مرجع رُوس انساء: جمع اعراة كالجمعن عورت-

قوجمہ: حضرت ابن عباس رضی الله عنها سے روایت ہے کہ جناب نی کریم علی اوک دیے گئے تھے، تو انہوں نے ابنا سرمنڈ ایا، اپنی یو یوں سے محبت کی اور اپنی بدی ذرج کی، پھرا گلے سال آپ نے عمرہ ادا کیا۔

خلاصة حديث آدمى كوج وعره مدوك د اور حالات زياده خراب مول تورك جائ آكے ند بوج بعد ميں اداكر عـ

قد احصر رسول الله الغ: جناب ني كريم منطقة الع ياصحاب كم اتحد عمره كي لي من الني اصحاب كم اتحد عمره كي لي كلمات حديث كاتشرت كل الكين آپ كوكفار كمد في مديد من روك ديا تو آپ و بين رك كاور آكن درج، فحلق

راسه: مرادیب کرآپ عره کے بغیرطال ہو گے و جامع نساء ہ و نحو هدیه النے: و جامع نساء ہ ش حق واومطلقا اظہار جمع کے لیے استعال کیا گیا ہے، لیمن سرمنڈ اناوغیرہ ، یہاں ترتیب کے ساتھ ذکر نہیں کیا گیا ہے؛ بلکہ اصل ترتیب کے مطابات آپ علیہ نے نحر کے بعد احرام کھولا اور اس کے بعد اچی ازوان ہے ہمستر ہوئ؛ چناں چہ بخاری وسلم کی ایک روایت کے الفاظ یہ بیں کہ جناب نی کریم کر کر کھتاتے اور آپ کے رفتاء نے حدیبیہ بی احرام کھولا جب آپ کوشر کئین مکہ نے (مکہ جانے ہے) روکا؛ چناں چہ جناب نی کریم علیہ عمرہ کا احرام ہا تھ مے ہوئے تھے، آپ نے کم کیا؛ یعنی ہدی کا جانور ذری کیا، پھرسر منڈ ایا اور پھر اپنے رفتاء ہے فر مایا کہ کھڑے ہوجا کا اور نم کر دواور پھر سرمنڈ ائ و دور پھر سرمنڈ ائ ور دیا ہے اس کے بعد یقل کیا گئی کہ مرمنڈ انے کے بعد انہوں نے احرام کھول دیا۔

این ہما م کر ماتے ہیں کہ ہدایہ کے ان الفاظ ہے یہ بات واضح ہوگئ کہ محصر ہدی کا جانور ذرخ ہونے ہے پہلے احرام نہیں کھولتا، ای لیے یہ مسئلہ ہے کہ اگر کسی محصر نے ہدی کا جانور حرم روانہ کیا اور اس جانور کو لے جانے والے ہے بیتا کیدگی کہ اس جانور کو فلال دن اور فلال وقت ذرخ کر دیا اور پھر اس نے اس محصن دن میں ہے بھر کہ اب جانور ذرخ ہوگیا ہوگا ہے کو احرام ہے باہر بجھ لیا اور کوئی ایسانعل کیا جو حالیہ احرام میں ممنوع ہے گر بعد میں معلوم ہوا کہ ہدی کا وہ جانوراس محصن دن میں ذرخ نہیں ہوا تھا یا ذرخ تو اس دن ہوا تھا، گر حرم میں ذرخ ہوئی ایسانعل میں ذرخ ہوئی بور کے ہوئی ایسانعل میں ذرخ ہونے کی بجائے حرم ہے باہر ذرخ ہوگیا تھا تو اس صورت میں اس نے خلاف احرام جس قدر دھل کے ہوں کے ہر فعل کے وہن گرار دی مزے گیا۔

احساری بری کے علاوہ باتی براپاکے بارے میں تو حفیداور شوافع کا اتفاق ہے کہ وہ حرم کے علاوہ اور کہیں ذک ندی جا کی جائے؟ کے علاوہ اور کہیں ذک ندی جا کیں جائے؟

احساری مدی کہاں ذرج کی جائے:

اس ہارہ میں دونوں کے اختلاقی اقوال ہیں، حفرت اہام شافی قرباتے ہیں کہ احساری ہدی اس جگہ ذری کی جائے جہاں احساری صورت بیش آئی ہوہ جبہ حضرت اہام اعظم ابو صنیفہ کا مسلک ہے کہ احساری ہدی حرم میں ہیں جب کہ اور جب ہے بات ہے کہ ایک خاص وقت اور کہیں ذرج نہ کی جائے : کیونکہ خاص دفوں میں اور خاص موقع پر ہدی کا ذرج ہونا عبادت ہے، اور جب ہے بات ہے کہ ایک خاص وقت اور خاص جگہ ہدی کا ذرج کرنا عبادت ہے کہ ایک خاص وقت اور خاص جگہ ہدی کا ذرج کرنا عبادت ہے کہ ایک جا ہے خالاف کیا گیا؛ لیخی اس ہدی کو ذرج کرنے کی جو خاص جگہ (لینی حرم) ہے اگر وہ اس ہوں اور جب عبادت رہی گئی و جب سے اور ایسی ہوگ ذرج نہ کی تو عبادت کہاں دری اور جب عبادت رہی نہ وہ سے صال ہونا (لینی احرام کھولنا) کس طرح درست ہوگا؟ حضرت امام شافی کی دلیل نہ کورہ بالا حد یہ ہے کہ جناب نی کریم علیا ہوں اور جب عبادت ایک ہوگی ہوگا ہوں کہ جو حص جس بینی انسی کہوری کی بناء پر ہے ، اس کا جو اب حنفیہ کی جانب سے بید دیا جا تا ہے کہ اس موقع پر ہدی کے جانو روں کا حرم جس پہنچنا مکن جو رحل جس بیلی بیلی کہوری کی بناء پر آپ نے اور صحابہ نے کہ اس موقع پر ہدی کے جانو روں کا حرم جس پہنچنا مکن جورم جس اور پکھ حصد حرم جس ہے؛ اس لیے ہوسکتا ہے کہ آپ نے اور صحابہ نے بدی کے جانور صدیبہ کے اس کے حصابہ نیا کہ جورم جس شامل ہے۔

عرم جس شامل ہے۔

﴿محصر کے لیے حلق یا قصر کرانا ﴾

﴿ مديث مُبِر ٢٥٩٣﴾ وَعَنْ عَبُدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى الْلَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَحَالَ كُفَّارُ قُرَيْشٍ دُونَ الْبَيْتِ فَنَحَرَ النَّبِيُّ صِلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَدَايَاهُ وَحَلَقَ وَقَصَّرَ اَصْحَابُهُ . رَوَاهُ الْبُحَارِيُّ.

حل الفات : فحال: حَالَ (ن) حَالِلًا حَالَ البيت : كُمر جَنْ بيوت.

توجمہ: حضرت عبداللہ بن عرض اللہ عن الد عنها اللہ عن اللہ عناب بی کریم اللہ کے ساتھ نظے بلیکن کفار قریش کھرے درمیان مائل ہو گئے ، تو جتاب بی کریم آللہ اوران کے اصحاب نے اپنی ہدی کی قربانی کی اور طاق وقعرکیا۔

ال مدیث الم مدیث شریف کا خلاصدیہ کہ کسی مرم کو چی رائے میں روک دے بتواس کوچاہیے کہ طلق یا قصر کر لے تا کہ یہ خلاصۂ حدیث الم میں ہوجائے کہ اب والیس کا پختہ ارادہ ہے۔

فعال کفار قریش دون البیت: مرادید به که جناب نی کریم الله کوم اسحاب کے کفار قریش کا کھات حدیث کی انشریکی انتشریکی انتشال می ان

﴿قربانی کے بعد حلق کریے﴾

﴿ وَمِدَ عُهُمُ ١٥٩٥ ﴾ وَعَنِ الْمِسْوَرِ أَنِ مَخْرَمَةَ قَالَ: إِنَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نَحَرَ قَبْلَ اَنْ * يَتْحَلِقَ وَامْرَاصْحَابَةً بِذَالِكَ. رَوَاهُ الْهُخَارِيُ.

حل لفات: امر: أمَرُ (ن) أمراً حم كرنا، اصحابه: جمع عاصحاب كيمعن سأتمى

من جمه: حفرت مسور بن مخر مدرض الله عند سدوايت بكر جناب بى كريم مظف في حال سي بلي قربانى كى اوراي اصحاب كواس كانكم ديا...

فلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيه كمرم قرباني ك بعدى علق كر __

كلمات صديث كاتشريك المو قبل ان يحلق المخ: مراديب كدم مربانى ك بعدى ملق يا تعركر __

﴿اعصار کی صورت میں کیا کریے﴾

﴿ مديث بُهِ ١٥٩١ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ قَالَ: اَلَيْسَ حَسْبُكُمْ سُنَّةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ إِنْ حُبِسَ أَحَدُكُمْ عَنِ الْحَجَّ طَافَ بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ لُمَّ حَلَّ مِنِ كُلِّ شَيْءٍ حَتْى يَحُجَّ عَاماً قَابِلاً فَيُهَدِى أَوْ يَصُومَ إِنْ لَمْ يَبِحِدْ هَدْياً. رَوَاهُ الْبُخَارِي.

حل لغلت: حبس:حَبسَ (ض)حَبساً عن الشئى روكنا،شيئى چيرجع اشياء.

قوجمہ: حضرت ابن عررضی اللہ عنہا سے دوایت ہے کہ کیا تمہارے کیے جناب نبی کریم تلک کی سنت کافی نہیں ہے؟ آگرتم میں ہے کی کو ج سے دوک دے تو وہ خامۃ کعبہ کا طواف اور صفا مروہ کی سعی کرنے کے بعد ہر چیز سے حلال ہو جائے اور ایکے سال آکر ج کرے قربانی نہ کر سکے توروز ہ دیکھے۔

ظلا صرّ حديث احرام كے بعد كى كوج سے روك دي قز ورز بردى ندكر سے، ا كلے سال اس كى قضا كر لے۔

کلمات صدیث کی تشریک ان حبس احد کم عن الحج الخ: مرادیه بی کداحرام کے بعد کی کوج سے روک دے تو جتنے امور آسانی کے ساتھ ادا ہو سکے کرلے ، زور زبردی نذکرے ، اور وہ طال ہوجائے ، حتی یحج عاماً

قابلًا: مرادیه بے کہ جس مج یا عمرے کا احرام با عمصاب، اسکے سال اس کی قضا کر لے۔

السلسله بيل بيه بات ذبن بيل ربني جا بيك "فانت المحج" ور "محصر" كي هم بي تحوز اسافرق ہے۔ "فانت المحج" كے ليے تو يتم مي تحوز اسافرق ہے۔ "فانت المحج" كے ليے تو يتم مي كداكر وہ مفرد بور ليعني اس نے صرف عج كا احرام باندها بور) تو طواف وسلى كركے احرام كھول دے، اس پرصرف سال آئندہ اس ج كى تضاوا جب ہے ، مرواور ہدى اس كے ليے واجب نيس ہے۔

محصر کے لیے بیتھم ہے کہ اگروہ مفرد ہواور اسے حرم میں پینچنے سے پہلے ہی راستہ میں احصاری کوئی صورت پیش آ جائے تو وہ پہلے ہری کا جانور حرم بھیجے، جب وہ جانور حرم میں پہنٹے کر ذیح ہوجائے تو وہ احرام کھول دے، اور آئندہ سال اس جج کی تضا کرے اور اس کے ساتھ ہی ایک عمرہ بھی کرے۔

لیکن دعفرت امام شافعی فرماتے ہیں کہ اسپرسال آئندہ صرف نج کرناہی واجب ہوگا عمرہ کرناضروری نہیں ہوگا؛ کیوں کہ وہ صرف نج سے محمر ہوا ہے اور چوں کہ ہدی کا جانور بھیج کراس نے احزام کھولاتھا تو بس اس کے بدلہ اس کے ذرصرف نج ہی ہے عمرہ نہیں ہے۔ اور اگر محمر قاران ہو (لیمنی اس نے نج اور عمرہ دونوں کا احزام باندھا ہو) تو وہ بھی ہدی کا جانور حمیں بیسیجا وروہاں اس جانور کے اور اگر محمر قاران ہو (لیمنی اس نے نج اور عمرہ دونوں کا احزام باندھا ہو) تو وہ بھی ہدی کا جانور حمیں بیسیجا وروہاں اس جانور کے ذرج ہوجانے کے بعداحرام کھول دے؛ لیکن سال آئندہ اس پراس نج کی قضا اور اس کے ساتھ دو عمر سے واجب ہوں گے ، اس پرا کے جمرہ و اسلے کہ اس سے جج اور عمرہ کے بدلہ اداکر ناہوگا ، اور دوسر اعمرہ اس واسطے کہ اس سے جج اور عمرہ فوت ہوا؛ اس لیے اس کی جزاد کے طور پرا کے عمرہ نواصلی ج

اوراگراحساری صورت حرم کنیجے سے پہلے راستہ میں پیش ندآئے ؛ بلکہ حرم کنی کر پیش آئے کدو مکی عذر کی وجہ سے وقوف عرفات

ے قوعاج رہے مرطواف اور سی کرسکتا ہوتو وہ طواف وسی کرنے ہے بعد ؛ یعن عمر ہے افعال اواکر کے احرام کھول دے اور پھرآت محد سال اس نج کی تضا کرے اور ہم کی کا چانور ذرج کرے اور اگر ہدی کا جانور ذرج نہ کرسکتا ہوتو روز ہ رکھے نڈکورہ مدیث میں بہی صورت بیان فرمائی گئی ہے۔

" فانت المحج" اگرقارن بوتو پہلے دہ عمرہ کے لیے طواف وسٹی کرے ، پھر جج نوت ہوجانے کے بدلہ میں طواف وسٹی کرے ،اس کے بعد سرمنڈ وائے یابال کتر وائے اور احرام کھول دے ،اس کے ذمہ سے قران کی قربانی ساقط ہوجائے گی ، اور اگر وہ حقق ہوگا تواس کا تحت باطل ہوجائے گا اور اس کے ذمہ سے تتح کی قربانی بھی ساقط ہوجائے گی ، اگروہ اس کی قربانی کا جانور اپنے ساتھ لایا ہوتو اس کو جو جائے گا۔

جس طرح مفرد کا تج نوت ہوجانے کی صورت میں اس برآئندہ سال صرف جج کی تعنا ہی واجب ہوتی ہے ای طرح قران اور تہتع کی صورت میں بھی اس برآئندہ سال صرف جج کی قضا واجب ہوگی۔

﴿مرض بھی احصار کا سبب ھے﴾

﴿ صِرِيتُ بَهِ رِكِهِ ٢٥٩٧ ﴾ وَعَنْ عَائِشَةً قَالَتُ: دَخَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَلَى ضَبَاعَة بِنْتِ الزُّبَيْرِ فَقَالَ لَهَا: خُجَى وَاشْتَرِطِي الزُّبَيْرِ فَقَالَ لَهَا: خُجَى وَاشْتَرِطِي وَقُولِي اللهُ مَ حِلَى حَيْثَ حَيْشَتَىْ. مُطَّقَ عَلَيْهِ.

حل نفلت: اردت: أرَّادُ (افعال) اراده كرنا، وجعة: مرض، وَجِعَ (س) وَجُعاً مريض، والـ

توجهد: حعرت عائش مديقد رضى الله عنها سدوايت بكر جناب ني كريم على في خاص منت زير سالا قات كرك ان سه كها: شايدتم ع كاراده ركمتى مو؟ انهول في كها: خداكي هم إش اي آب و يمار پاتى مول قرآب في قرمايا: تم ع كاراده كرلواوريد كهدكر شرط لكالود اسدالله يمر ساح امرام سے نكلنى جگه وہ ہے جہال ش روك دى جاؤل -

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يب كمرض بعى احسارب-

والله ما اجدنی الا وجعة النع: مرادیب كريراارادولوج كرنے كاب بيكن مرض كا وجند كلي وجند كليات حدیث كا تشریح میں اس قدر كم زور بول كه جھے احساس بے كه بيل خانه كعبرتك نه بخج سكول كى، فقال فها حجو اشتر طى النع: مرادیہ بے كم تم تح كااراده كراواوراس كے ساتھ يہ شرط نگالوكه بيل جمال تك جاسكتى مول جاؤل كى آكے نه بوھ

کی تو وی جگریرے لیے طلال ہونے کی جگر ہوگی "معل خووجه من المحیج و موضع حلالی من الاحوام" (مرقات ٣/٦)۔ جن ائمہ کا مسلک بیہ ہے کہ احصار کی صرف ایک ہی صورت؛ لینی دشمن کا خوف ہے ادر بھاری سے احصار نہیں ہوتا ،ان کی دلیل ، میں حدیث ہے کہ اگر مرض کی وجہ سے احرام کھول دینا مباح ہوتا تو جناب نبی کریم تعلقے حضرت ضباعد ضی اللہ عنہا کو تدکورہ بالاشر ط کرنے

كالحكم نددية بكون كرجب مرض كي وجد احسار مونى جاتاتو پر شرطكا كيافا كده حاصل موتا

الدید بین سرب برای الم المسلک چول کرید که احصار مرض کی وجہ سے بھی ہوجاتا ہے؛ اس لیے وہ حضرت تجان بن عمرة المسار حضرت ایام اعظم ابوطنیفہ کا مسلک چول کرید ہے کہ احصار مرض کی وجہ سے بھی ہے کہ حضرت این عمروضی اللہ عنما شرط کے افعاری کی حدیث کوا تی دلیل قر اور سے جین جوا آ گے آ رہی ہے ، نیز ان کی ایک دلیل یہ بھی ہے کہ حضرت این عمر سے کافی فیس مشر تھے، جولوگ شرط کے قائل تھے ان سے حضرت این عمر میں فریاتے ہے کہ کیا تعبارے لیے جناب نی کریم تھے کی سنت کافی فیس ہے؟ یعنی جب اس بارے میں آپ کا داشتے تھم موجود ہے تو بھر شرط کو اختیار کرنے کا کیا معنی؟ اب رہی یہ بات کہ جب مرض کی وجہ سے

الغصل الثاني

﴿منصر هدی کی بھی قضا کریے ﴾

﴿ صِرِيتُ بُمِر ٢٥٩٨﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَمْرَ اَصْحَابَهُ اَنْ يُبَدِّلُوْ االْهَذَى اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَمْرَ اَصْحَابَهُ اَنْ يُبَدِّلُوْ االْهَذَى الَّذِي نَحَرُوْا عَامَ الْحُدَيْبِيَّةِ فِي عُمْرَةِ الْقَصَّاءِ. دَوَاهُ

حل نفلت: امر: أَمَوَ (ن) أَمُوا تَحْمَ كرناء القضاء: قَضي (ض) قَضَاء " بعد من اواكرنا_

قوجعه: حضرت ابن عباس رضی الله عنهما سے روایت ہے کہ جناب نبی کریم اللہ فائے نے اسے اسحاب کو مکم دیا کہ عمرة القصنار کے موقع پر ان جانوروں کے بدیلے میں ہدی دیں جن کوحد یبیہ کے سال ذرج کیا ہے۔

خلاصة حديث ال عديث شريف كاخلاصه بيب كه مدى حرم بن ذرى نه كرسكة وجمره كي تضاكه وتت بدى كي بحي تضاكر ل_

الموم، وفيه دلالة على أنه صلى الله عليه وسلم ومن تبعه ذبحوا دم احصار هم في ارض الحرم» (مرات المارة) و المارة) و المارة ا

﴿عذر بِهِي احصار كا سبب هيه

﴿ مديث مُر ٢٥٩٩ ﴾ وَعَنِ الْمَعَجَاجِ بْنِ عَمْرِهِ الْأَنْصَارِي قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ مَنْ كَيْسِوَ أَوْ عَرِجَ فَقَدْ حَلَّ وَعَلَيْهِ الْحَجُّ مِنْ قَابِل. رَوَاهُ التَّرْمِلِيُّ وَابُوْدَاؤُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِمِيُّ كَيْسَوَ أَوْ عَرِجَ فَقَدْ حَلَّ وَعَلَيْهِ الْحَجُّ مِنْ قَابِل. رَوَاهُ التَّرْمِلِيُّ وَابُوْدَاؤُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِمِيُّ وَوَالَدُ التَّرْمِلِيُّ هَلااً حَدِيثُ حَسَنٌ وَفِي الْمَصَابِيْحِ صَعِيْفٌ.

حل لغات: كسر: كَسَرَ (صُ)كُسُوا تُورُنا،عرج: غَرِجَ (سُ فَ عَرَجا لَكُوابُونا۔

قوجعه: حعرت مجاج بن عمر دانساری رضی الله عنه ہے روایت ہے کہ جناب نبی کریم ﷺ نے فرمایا، جس کا پیرٹوٹ کیا یا کنگڑا ہو گیا ہودہ حلال ہو گیا!لیکن آئندہ سال اس برحج ہے۔

خلاصة حديث محرم كاعضار أوث يكوش كا وجد و ولي ك قابل نده سكة وه مح عمر كم من ب

کلات حدیث کی تشری کا من کسو او عرج: مرادیه ب کدافرام کی حالت می محرم کے اعتباء ثوث جا کی اور آ دی جلنے کا است حدیث کی تشریح کے لائن شدنے ہووہ بمی محصر ب افقد حل و علیه المحیج النج: مرادیہ بے کدوہ اس سال

علال ہوجائے اور محصر کی طرح الصطے سال اپنے جج وعمرہ کی قضا کرے۔

دِهج کا رکن اعظم پ

﴿ صِيتُ مُبِرُ ٢١٠﴾ وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنُ بَنِ يَعْمُرُ الدَّيَلِيُّ قَالَ: ﴿ سَمِعْتُ النِّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: الْحَجُّ عَرَفَةُ مَنْ أَدْرَكَ عَرَفَةَ لَيْلَةً جَمْعِ قَبْلَ طُلُوعِ الْفَجْرِ فَقَدْ ادْرَكَ الْحَجُّ اليَّامُ مِنِي فَلاَلْلَا الْمَائِقُ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَمَنْ تَأْخُرَ فَلاَ إِنْمَ عَلَيْهِ. زَوَاهُ التَّرْمِذِيُ وَٱبُوْدَاؤُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةً وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التَّرْمِذِي وَقَالَ التَّرْمِذِي وَقَالَ التَّرْمِذِي وَقَالَ التَّرْمِذِي طَلَا حَدِيْثَ حَسَنْ صَحِيْحٌ.

حل الفات: ادرك: أدرك (افعال) إنا، ليلة: رات جمع ليالي، يومين . يوم كا تثنيه بي معنى ون جمع آيام.

قو جعه: حضرت عبدالرخمن بن يحر الديلي سے روابت ہے كہ ميں نے جناب ني كريم علي كو كہتے ہوئے سنا كہ وفدج ہے جس فنص نے مز دلفه كى رات طلوع فجر سے پہلے وقوف عرف پاليا،اس نے ج كو پاليا، نئى كے تين دن بيں تو جوفنص جلدى كرے اور دو ہى دن ميں آ جائے، تو اس بركوئى گناه نہيں ہے اور جوتا خير كرے اس براجى گناه نہيں ہے۔

خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلاصه يه كدوون عرفد ج كاسب سے بواركن م

كلمات حديث كاتشريك وقوف عرفة: مراديه ب كه وتوف عرفه في كاركن اعظم ب"اى ملاك الحج ومعظم اركانه المات حديث كاتشرت وقوف عرفة لانه يفوت بفوته" (مرقات ٢/١) فقد ادرك الحج المخ: "اس في في كو ياليا"

کامطلب ہیں ہے کہ اسکاتے فوت نہیں ہوا اور وہ بھے جس کسی خرائی اور فساد سے مامون رہا، بشر طیکہ اسے احرام کا وقت پورا ہونے ہے ہم بیوی سے ہم بستری یا کسی ایسے فعل کا ارتکاب نہ کیا ہو جو احرام کی حالت میں منوع ہے، اور یہ بات تو پہلے بھی ہتائی جا بھی ہے کہ جس فنی کا ان قوت ہو جائے ؛ بینی وہ ذی الحج کی وسویں رات کی طلوع مجر تک ایک منٹ کیلئے بھی وقو فی عرفات نہ کر سکے قواس پر یہ واجب ہوگا کہ وہ میں رات کی طلوع مجر تک ایک منٹ کیلئے بھی وقو فی عرفات نہ کر سکے قواس پر یہ وہ وہ کہ اس کے جا تک مسلسل احرام باند ھے رہنااس کیلئے حرام ہے۔

""جو فض جلدی کرے الح "" کا مطلب سے ہے کہ اگر کوئی فض بار ہویں تاریخ کو ظہر کے بعد شخوں منادوں پر تکریاں مار کر ملہ چلا آگ کہ آگ واس پر کوئی گناہ نہیں ہوگا، اور تیر ہویں وات تیر ہویں تاریخ کوئی گناہ نہیں ہوگا، اور تیر ہویں وات میں قام میں اور میں تاریخ کوئی جرات کے بعد منی ہی میں مخم را رہ تا آگ کہ اس طرح" "جو فض تا خیر کرے" کا مطلب سے ہے کہ اگر کوئی فض بار ہویں تاریخ کوری جرات کے بعد منی ہی میں مخم را رہ تا آگ کہ تیر ہویں رات کو بھی دی جرات کر بے قواس پر بھی کوئی گناہ نہیں، گویا جواز کے اعتبار سے قو دونوں صورتیں برابر ہیں ؛ البت کثر ہے مباوت کی پیش نظر تا خیر افضل ہے۔

تیر ہویں رات کو بھی دی جرات کر بے قواس پر بھی کوئی گناہ نہیں، گویا جواز کے اعتبار سے قو دونوں صورتیں برابر ہیں ؛ البت کثر ہے مباوت کے پیش نظر تا خیر افضل ہے۔

منقول ہے کہ اہل جا ہلیت میں دوفر ایق تھے، ایک فریق تو تعیل کو گناہ کہتا تھا اور دوسرا فریق تا خیر کو؛ چناں چہ پی کا زل ہوا کہ تعیل اور تا خیر دونوں برابر ہیں ان میں سے کی میں کوئی مخناہ نہیں ہے۔

خِباب حرم مكة حرسها الله تعالىٰ

"حرم" زین کاس قطعہ کو کہتے ہیں جو کعبداور مکہ کے گرداگر دے،اللہ تعالی نے کعبد کی عظمت کے معب اس ذین کو بھی مظم وکرم کیا ہے،اس ذین کورم اس لیے کہتے ہیں کہ اللہ تعالی نے اس خطہ زیمن کی بزرگی کی وجہ سے اس کی صدود یس اسکی بہت کی چڑی حرام قرار دی ہیں جواور جگہ جرام نہیں ہیں، مثلاً حدود حرم میں شکار کرنا، در خت کا ثنا اور جانوروں کو متانا وغیرہ ورست نہیں، بعض علاء کہتے ہیں کہ ذیمن کا یہ حصہ "حرم" اس طرح مقرر ہوا کہ جب حضرت آدم علیہ السلام زیمن براتادے کے قوشیاطین سے ڈرتے تھے کہ جھے ہلاک نہ کرڈالیں؛ چناں چہال فرشنوں نے کھڑے ہوکر حد بندی کی وہ حرم کی حد مقررہ وکی ،اوراس طرح کھیہ کھر مداوران فرشنوں کے لہذا کہ کے کرداگر د جہاں جہال فرشنوں نے کھڑے ہوکر حد بندی کی وہ حرم کی حد مقررہ وکی ،اوراس طرح کھیہ کرمہاوران فرشنوں کے کھڑے ہونے کی جگہ کے درمیان جوزین آئی ،وہ حرم ہوئی ، بعض معزات یفر ماتے ہیں کہ معزرت آدم علیہ السلام نے جب کعب بناتے وقت جراسودر کھا تو اس کی وجہ ہے ہر چہاد طرف کی زمین روش ہوئی ، چناں چہاں کی روشن اس زمین کے جاروں طرف جہاں جہاں تک پینی ،وہیں حرم کی حدمقررہوئی ، زمین حرم کے حدود یہ ہیں ، مدید منورہ کی طرف تین میل (مقام تعظیم تک) ہیں ، طائف ، ھزاند اور جد ہی طرف سات سات میل ، بعض کتابوں میں کھھا ہے کہ جد ہ کی طرف دس میں اور جد اندی طرف نومیل ، چاروں طرف جہاں جہاں حرم کی زمین تم ہوتی ہے ،وہاں حدود کی علامت کے طور پر کہ جیال بنی ہوئی ہیں گرجۃ ہاور چر اندی طرف کی جیال نہیں ہیں۔

الفصل الاول

﴿حرم مکه کی فضیلت﴾

﴿ مِدِيثُ بِهِ ١٩ ﴾ كُفَّ اللهِ عَلَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ يَوْمَ فَيْحِ مَكُةَ: لاَ هِجْرَةً وَلِكِنْ جِهَادٌ وَيَنَّةٌ وَإِذَا اسْتَنْفِرْتُمْ فَانْفِرُوْا وَقَالَ يَوْمَ فَيْحِ مَكُةَ: إِنَّ هَلْمَ الْبَلَدَ حَرَّمَةُ اللهُ يَوْمَ فَالْمِواتِ وَالْاَرْضِ فَهُوَ حَرَامٌ بِحُرْمَةِ اللهِ إلى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَإِنَّهُ لَمْ يَحِلُّ الْقِتَالُ فِيْهِ لَا حَدٍ قَيْلَى وَلَمْ يَحِلُ لِى إِلّا صَاعَةٌ مِنْ نَهَا رِ فَهُوَ حَرَامٌ بِحُرْمَةِ اللهِ إلى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا يُفْضَدُ شَوْكُهُ وَلَا يُنَفَّرُ صَيْدُهُ وَلَا يَنَفُرُ صَيْدُهُ وَلا يَلْقِطُ لُقَطَتُهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ

حل المان : هجرة: هَجَرَ (ن) هَجُواً وهِجُرَانا جُورُ تا، جهاد: اعلائ كلت الله كالمية الله كالمرنا، جَهَدَ (ف) جَهْداً بهت كُوش كرنا، البلد بشررت بلاد، شوك : كاثما جُعَ الشواك -

قوجهه: حضرت ابن عباس مے دوایت ہے کہ جناب نی کر پم تقافیہ نے فتح کہ کے دن فر مایا: ہجرت نیس ہے؛ کین جہا داور نیت ہے؛
اسلے جب جہیں نکلنے کیلئے کہا جائے تو نکل جاؤ، نیز آپ نے فتح کہ کے دن کہا کہ اللہ تعالی نے اس شہر کوز مین وآسان کے پیدا کرنے کے دن بی حرام کیا ہے؛ اس لیے یہ اللہ تعالی کے حرام کرنے کی وجہ سے قیامت کے دن تک حرام ہے، اس زمین میں نہ جھ سے پہلے کی کے لیے قبال طلال ہوا اور ندمیر سے لیے گرون کے ایک جھے میں؛ چناں چہ یہ اللہ تعالی کے حرام کرنے کی وجہ سے قیامت تک حرام ہے؛
اس لیے نداس کا کا ثنا کا ٹا جائے، نداس کا شکار بہکا یا جائے ، اور ندبی اس کا لقط اٹھایا جائے؛ گریہ کہ جواس کا اعلان کر سے، اور نداس کی گھاس کا ٹی جائے ، قوم باس نے کہا: یا رسول اللہ! گراؤٹر: اس لیے کہ وہ کار مگر دن اور گھروں کے لیے ہے تو آپ نے فر مایا: گراؤٹر۔

ماس کا فی جائے ، تو عباس نے کہا: یا رسول اللہ! گراؤٹر! اس لیے کہ وہ کار مگر دن اور گھروں کے لیے ہے تو آپ نے فر مایا: گراؤٹر۔

ماس میں میں میں جائے اس کے کا شاخرام ہے، گراؤٹرا کے اس کے کو کا شاختے ہیں۔

ماس میں میں میں کا شاخرام ہے، گراؤٹرا کے اس کے کا شاختے ہیں۔

پرسارہ مرادیہ کا اس کے اس کے اس کے اس کے اس کے اس کے اس کا اس کے بہلے کہ کرمہ سے مدینہ کا اس سے بہلے کہ کرمہ سے مدینہ مورو کے لیے اجرت جوفرض کے درج میں تمی وہ فرضت ساقط ہوگئ "من منحة إلى المدينة

مفروضة "(مرقات ٥/١)، ولكن جهاد ونية : يعنى جرت چول كه مجورى يش كى جاتى ب، فتح كمه كے بعد مجورى چول كه فتم موكى اور اسلام كى شان دد بالا موكئى ب؛ اس ليےاب جهاداوراخلاص نيت ب، آدى جرت كے بجائے جهاداوراخلاص نيت كى طرف توجه مبذول کرے اور جب جہاد کے لیے کہا جائے تو فوراً تیارہ وجائے ، و قال فتح محة ان هذا البلد حومه الله المنح: مرادیہ کہ پرداارش حرم حرم ہے؛ اس لیے اس کے پورے صدودی کی جاندار کو بارنا یا پودا وغیرہ کا ثنا حرام ہے "ای محة یعنی حرمها او العواد بالبلد اوض الحوم جمیعاً" (مرقات ۲/۱) ، [لا الاذخو فانه لفینهم و لبیوتهم النح: لفینهم عراد لو بارادر ساری بین جن بالبلد اوض الحوم جمیعاً " مرقات ۲/۱) ، إلا الاذخو فانه لفینهم و لبیوتهم النح: لفینهم عراد لو بارادر ساری الله عند نے جناب تی کر کم الله کے جناب نی کر کم الله کے صدود حرم کر تمام عیر پودوں کو کا شخ سے روک دیا تو حضرت عباس رضی الله عند نے جناب تی کر کم الله کی روزی روئی کا مسلم الله کا این الله کا این کا مسلم کا شخ کی اجاز دور میں میں اور بہت ہوگ اس کھاس سے اپنے گھر کی جھاؤئی کرتے ہیں تو جناب نی کر کم الله نے صدود حرم میں میں اذخر کھاس کا شخ کی اجازت دی۔

﴿مکے میں هتھیار اٹھانا﴾

﴿ مديث ْمِر ٢٢٠٢ ﴾ وَعَنْ جَابِرِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: لَا يَحِلُ لَا حَدِيحُمْ اَنُ يَحْمِلَ بِمَكَّةَ السَّلَاحِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: يحمل: حَمَلُ (ضُ)حَمَلًا الْحَانَاء السلاح: بتهاري أَسْلِحَة.

قوجمہ: حضرت جابروش اللہ عندے روایت ہے کہ بین جناب نی کر یم اللہ کو کہتے ہوئے سناکی کے لیے طال نہیں ہے کہ کے می جھا را افعائے۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه يه كه كمكرمه ش بلاضرورت كوئى بتعيار ندا شاعة

لأ يحل لا حدكم ان يحمل بمكة السلاح: مراديب كمكرمه شي كوئى آدى بلاضرورت كلمات حديث كي تشريح كالمراد المحمد المحمد

﴿ عرم مِیں مرتد کوقتل کرنا ﴾

﴿ صديث نُبِر ٢٦٠٣﴾ وَعَنْ انْسِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ مَكَةَ يَوْمَ الْفَتْحِ وَعَلَىٰ رَأْسِهِ الْمِغْفِرُ فَلَمَّا نَزْعَهُ، جَاءَ رَجُلٌ وَقَالَ: إِنَّ ابْنَ خَطَلٍ مُتَعَلِّقٌ بِاَسْتَارِ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ اُفْتُلْهُ. مُثَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل المفات: المعفو: الويك الولي جوار الى من بهنة بين تم مَعًا فور رجل: آوى جع رجال.

تو جمعه: حضرت انس مدوایت ہے کہ جناب نبی کر میم اللہ فتح کے دن کے کے اندراس حال میں وافل ہوئے کہ آپ مے سر پہ لو ہے کی ٹو بی تھی ، جب آپ نے اسکوا تارا تو ایک آ دمی نے آ کر کہا کہ این نطل کعب کا پردہ تھا ہے ہوا ہے بتو آپ نے فر مایا اسکول کردو۔ خلاصۂ حدیث اس مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ کلیدی مجرموں کوئرم ہی میں سزادی جا سکتی ہے۔

المعنون عدیث کی تشری کی مخت یوم الفتح و علی راسه المعنون صدیث شریف کان کلمات کے بنیاد پر معنوت الم کلمات حدیث کی تشری کی تشری شاہی علیہ الرحم کا کہنا ہے کہ آپ کے سرمبادک پاو ہے کی ٹو پی ہونا اس بات کی علامت ہے کہ آپ کم مرمد میں داخل ہونے کی تنج اسلے اب بھی بلاا ترام کے مکہ مرمد میں داخل ہونے کی تنج اسکے اب بھی بلاا ترام کے مکہ مرمد میں داخل ند ہو، نیز آپ نے بغیرا ترام داخل ہونے سے منع کہتے ہیں کہ مکرمہ کی ترمت کا تقاضہ ہے کہ کوئی آدمی بلاا ترام کے مکہ مرمد میں داخل ند ہو، نیز آپ نے بغیرا ترام داخل ہونے سے منع

کتے ہیں کہ مکہ کر مسکی حرمت کا تقاضہ ہے کہ کوئی آومی با احرام کے مکہ طرحہ ہیں واس نہوہ نیزا پ لے بعیر احرام وال ہوتے ہے۔ مجمی کیا ہے "عن ابن عباس رضی الله عنهما ان النبی صلی الله علیه وسلم قال لا تجاوزوا المیقات بھیر احوام" (مرقات ۸/۱)اور آپ جومنفر کا کر داخل ہوئے تھے وہ اسلنے کہ آپ کیلئے مکہ طال ہو گیا تھا"و دخوله صلی الله علیه وسلم عام

الفتح بغير احرام حكم مخصوص بلالك الوقت "(مرقات ٨/١)، اب جارول مسلك والول كاال بات يزايماع بوكيا بك بغیراترام کے بھی صدودترم میں داخل ہوا جاسکتا ہے، فقال اقتلہ: صدیث شریف کے ان کلمات کی بنیاد پر حضرت امام ما لک اور حضرت امام شافی کا کہنا ہے کہ کی کوقصاصاً مدود حرم میں آئی کیا جاسکتا ہے؛ لیکن حضرت امام اعظم ابوصنیفہ کا کہنا ہے کہ مدود حرم میں قصاصاً کی گوٹل کرنا معرب مي نيس ب؛ اسك كرابن طل كوقصاصانبين؛ بلكراسكوارتدادى بنياد برل كياتما" والطاهر أنه انما فعله لارتداده" (مرتات ١٨٨)، ا كريدان بعي لياجائے كه جناب نى كريم على في ابن علل كوقعاماً بى لل كرنے كا تكم ديا تھا توبداسلنے تھا كداس دن آپ كيلئے كد مرمه طال كردياتها؛ اسليّ اس دن أوقعاماً قل كرنادرست تعاماب نبيس. "بأن هذا كان في الساعة التي احلت له " (مرقات ١٨/١)-

چہفیر احرام کے مکے میں داخل ہونا ﴾

﴿ صِرِيتُ بِهِ ٢٧٠١﴾ وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ رَسَلُمَ دَخَلَ يَوْمَ لَتُعِ مَكَةَ وَعَلَيْهِ عِمَامَةً سَوْدَاءُ بِغَيْرِ إِحْرَامٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: يوم: دن جمع أيّام، العمامة: پكرى ، خودكاوه حصه جوسرك برابرينا كرنو يى كيني ببناجاتا ب، جمع عَمَانِم. قرجمه : حفرت مإروضي الشعند سے روایت ہے کہ جناب نی کر يم تلك فتح كے دن بغير احرام كے كے كے اندراس حال مي داخل موئے كرآب بركاني چرى تقى _

خلاصة حديث كمرمآب كے لياس دن طال كرديا كيا تفاءاس لية بنيراحرام اى كمكرمه مي داخل موسئ تھے۔

کمات حدیث کی تشری ایا جمامه سوداء: مغفرکا دوسرانام کمام بھی ہے، اس کیے الفاظ کی بازی کیری میں نہ پڑتا، اس پر کمات حدیث کی تشری المحناج ہے کہ یہاں کمامہ ہے اور پیچے مغفرتھا، اصل حقیقت ہے کیا؟

﴿كعبه پر حمله كرنے والے كے ليے وعيد﴾

﴿ مِدِيثُ بِهِ ٢١٠٥ ﴾ وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَغُزُوا جَيْشُ الْكَعْبَةَ فَإِذَا كَانُوا بِيَنْدَاءَ مِنَ الْأَرْضِ يُخْسَفُ بَأُولِهِمْ وَآخِرِهِمْ، قُلْتُ: يَارَسُولَ اللَّهِ! وَكَيْفَ يُخْسَفُ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ وَفِيْهِمْ أَسْوَاقُهُمْ وَمَنْ لَيْسَ مِنْهُمْ؟ قَالَ: يُخْسَفُ بِأَوْلِهِمْ وَآخِرِهِمْ ثُمَّ يُبْعَثُونَ عَلَىٰ نِيَّاتِهِمْ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل لظت : بغز : غزاه (ف)غَزْواً ، القوم جها وكيك لكنا، جيش الشكرجع جيوش، يخسف : خَسَفَ (ض) خُسوفاً وهنس جانا ـ قوجهه: حضرت عائشهمديقدرض الله عنها مروايت م كه جناب ني كريم الله في ايك كشكر خانة كعبه به حيل كااراده كري كا توجب وه زمين كايك ميداني حصيص ينج كاتووه اول ساتخرتك زمين من دهنساديا جائ كاتومس في كها: يارسول الله! وه اول ے آخرتک کیے دھنسادیا جائے گا، جب کدان میں کاروباری اوروولوگ بھی ہوں کے جوان میں سے بیں جس؟ آپ نے فرمایا: وواول سے آخرتک دھنسادیا جائے گا؛ البتہ وہ اپنی نیتوں کے مطابق اٹھائے جاتیں گے۔

فلاصد حدیث اس مدیث شریف کاخلاصہ بیہ ہے کہ آخری زمانے میں ایک لئکر خانہ کعبہ پرحملہ آور ہوگا، کین وہ کامیاب نہ ہو سکے گااور خانہ کعبہ تک کانچ سے پہلے ہی زمین میں دھنسادیا جائے گا۔

کمات مدیث کی تشریخ بهزوا جیش الکعبة: مرادیب کرآخری زمانے میں ایک عظیم انترائی تعب پر جملے کا اراده کرے گا
"ای یقصد (جیش) ای عسکر عظیم فی آخر الزمان "(مرقات ۱۹/۱)، فاذا کانوا بیداء الخ بيداء سے مراد مدينه منوره سے قريب وه ميدان بجس كا نام بيداء ب؛ يعنى يالكر جب اپ ناپاك ارادے سے خات كعب كى طرف

برمے کا تو ہورے کے پورے لککر کومقام بیداد میں دھنسادیا جائے گا۔

مدیث کے آخری جملہ کا مطلب یہ ہے کہ اگر چا ہے اوگ نظر کے ناپاک ارادوں کے ہموانہ ہوں محاور خانہ کو ہونتھاں پہانا یاس کی تو ہین کرناان کا مقصد نیمی ہوگا: گرچ نکہ وہ لشکر جس شامل ہو کر نہ مرف یہ کہ ان کی بھیڑ جس اضافہ کریں گے: بلک ایک طرح ہے ان کے ناپاک ارادول جس احانت کا سیب بھی بنیں گے: اس لیے پور نظر کے ساتھ ان کو بھی زجن جس دھنا ویا جا گا، ہاں ایم قیامت جس سب کوان کی نیت خوص کی جبوری اور زبردی کے تحت نظر جس شامل ہوا ہوگا اور اس کی نیت منور ہوگا وہ جنبت جس داخل کیا جائے گا، اور جولوگ واقعی ناپاک ارادول کے ساتھ اور سان اور اس کا قلب ایمان واسلام کی روش سے منور ہوگا وہ جنبت جس داخل کیا جائے گا، اور جولوگ واقعی ناپاک ارادول کے ساتھ اور برنیکر جس شامل ہوں محانیں دوز خ کی آگ کے حوالے کر دیا جائے گا۔

﴿کعبہ یہ حملہ کرنے والے کی نشانی﴾

﴿ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يُخَرَّبُ الْكَعْبَةَ ذُوالسُّويَقَتَيْنِ مِنَ الْحَبَشَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل اخلت: ینحوب : خَوَّبَ (تفعیل) البیت و حانا، السویفتین: شنید بسویْق کاساق کی تفغیر بے بمعنی پنڈلی۔ قو جعه: حضرت ابو بریره رضی الله عندے دوایت ہے کہ جناب ہی کریم تالیہ نے فرمایا: خان کعبہ کونقصان کہنچانے والے لئکر می ابیا مخف بھی ہوگا جس کی پنڈلیاں بٹلی اور چھوٹی ہوں گی۔

خلاصة حديث فانة كعبركونتصان كبنجانے والول ش كجولوگ عيب دار بمى مول محے جو برے فتنه باز موتے ہيں۔

مات حديث كي تشرر كاليجي الكعبة: مرادخانة كعبكونقصان كان الردم الحادد السويقتين: مراديب كدال المنكرين كلمات حديث كي تشرر كاليب كالورجيوني بول كالديب كالمات حديث كي تشرك السيبي الوك بول محرين كي ينذليال بتلي اورجيوني بول كال

دوسری علامت

﴿ صِريتُ مُبِرِ٤٢٢﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّامٍ عَنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: كَأَنَّى بِهِ اَسْوَدَ اَفَحَجَ يَقْلَعُهَا حَجْرًا حَجْرًا. ۚ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

حل المفات: اسود: كال يُح سُود وسُؤدان ، يقلعها: قَلَعَ (ف) قَلْعا الني المُعارات

قر جعه : حفرت ابن عباس رضى الله عنها ب روايت ب كه جناب ني كريم الله في أنه فرمايا كه من خانة كعبد وحان واليكود كهر الم مول، وه ايك سياه رنگ كا يحيد افتض موكاء جو خانة كعبر كا ايك ايك بقرا كها از واليكا-

ال مديث المعديث المعديث على المعديد على المعديد على المعديد على المعديد المعديث المعديث المعديث المعديد المعديد المعديد على المعديد ا

جس کے قدم آڑے تر جھے ہوں ، مرادیہ ہے کہ کعبہ شریف منہدم کرنے والے لفکر میں ایک ایسا فضی بھی ہوگا جو ٹھیک سے مل می ندستے گا؛ مگر خانۂ کعبہ ڈھانے میں چیش چیش ہوگا۔

الغصل الثاني

﴿ حرم حين المتكارِ ﴾ ٢٧٠ ﴾ عَنْ يَعْلَى ابْنِ أُمَيَّةً قَالَ: إِنْ رَسُولَ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَصَلَّمَ قَالَ: إِخْتِكَارُ الطّعَامِ

فِي الْحَرَمِ إِلْحَادٌ فِيْهِ. رَوَاهُ الْمُؤْدَاوُدَ.

حل الفات: احتكار: حَكَرَ (ض) حَكْراً ظلم كرنا، احتكر (التعال) من كانيخ كيك روك ركمنا، الحاد: اَلْحَدَ (افعال) دين عينا قوجمه: حفرت يعلى بن امية عروايت م كه جناب في كريم الله في الدرم من غلد جع كرنا بدوي م-**خلاصة حديث** اخلاصه بيه كرويسے تواح كارمنوع ہے ، كرحرم ميں بھاؤ برھ جانے كيلئے غلہ جنع كرنا بجھ ذيادہ ہى برى غلطى ہے۔

احتكار الطعام فى الحرم الغ: مراديب كه فاص طور عرم من احكار ندكر عن اس ليك كم التحديث كي تشري احكار ندكر عن اس ليك كم التحديث كي تشري احكاد كر كا المحرم كوريثان كرنا بهت برى بات ب-

﴿مِكه مكرمه كي فضيلت﴾

﴿ صِدِيثُ مِهِ ٢٧٠٩ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَحْةَ: مَا اَطْيَبَكِ مِنْ بَلَدٍ وَاَحَبُكِ إِلَيَّ وَلَوْلَا أَنَّ قَوْمِي آخُوَجُوْنِي مِنْكِ مَا سَكَنْتُ غَيْرَكِ. رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ وَقَالَ هٰذَا حَدِيثُ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيبٌ إِسْنَادًا.

حل فغلت: بلد: شرجتع بلاد، قومي: قوم جمع اقوام.

موجعه: حضرت ابن عباس رضى الله عنها سے روایت ہے کہ جناب نبی کریم اللہ نے مکه مرمد کے بارے می فرمایا توشیروں میں سب <u>ے اچھا ہے اور تو مجھے بہت پیارا ہے ،اگر میری قوم مجھے تھھ سے نہ نکائتی تو میں تیرے علاوہ کہیں نہ رہتا۔</u> خلاصة حديث اس حديث شريف كاخلاصه يب كه مكه مرمة تمام شهرول بسسب سي بهترين شهرب-

کلمات حدیث کی تشریک کے اطبیات من بلد الغ: مرادیہ ہے کہ مکہ مرمہ تمام شہروں میں سب سے اچھا شہر ہے، یہی وجہ ہے کلمات حدیث کی تشریک کے دیاب نبی کریم الفظ کوائی سے بہت مجت تھی۔

﴿ارض کعبہ کی فضیلت﴾

﴿ صِرِيتُ تَمِرِ ٢٦١﴾ وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَدِى بْنِ حَمْرًاءَ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاقِفًاعَلَى الْحَزُورَةِ فَقَالَ: وَاللَّهِ! إِنَّكِ لَحَيْرُ أَرْضِ اللَّهِ وَاحَبُّ ارْضِ اللَّهِ إِلَى اللَّهِ وَلَوْلَا إِنَّى أُحْرِجْتُ مِنْكِ مَا خَرَجْتُ. رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ وابنُ مَاجَةَ.

حل الخات: واقفا: وَقَفَ (ض) وُقُوفاً كُمْ ابونا ، الْحَزْ وَرَة: مَكْمُرمد مِن اليَ جُكْمَانام بـ

قوجمه: حضرت عبدالله بن عدى بن حراء سے روایت ہے كہ ميں نے جناب ني كريم الله كود كھا، حزورہ يدكفرے بوكر فرمارے تھ، ب مك توالله كى زمينول على سب سے بہتر ہے اور الله كنزد كي سب سے بنديده زين ب، اگريس تحصي نه تكالا جاتا تونه تكار **خلاصة حديث** أس مديث شريف كاخلاصه بيب كه كم كمرمك زين تمام زمينون ميسب ساجي زمين بــ

کلمات مدیث کی تشریح ادف علی الحزورة: مرادیه به کدآب نے تقریر مقام حزوره میں کی تھی، فقال والله انك لخير ادف الله الخ: مرادیه به كدكرمه كی زمین تمام زمینوں میں سب سے بہترین ہے۔

جمکے میںکسی کا خون بھاناہ

﴿ صِهِ يَمْ بِهِ اللَّهِ عَنْ أَبِي شُرَيْحِ الْعَدَوِيِّ أَنَّهُ قَالَ لِعَمْرِوِ بْنِ سَعِيْدٍ: وَهُوَ يَبْعَثُ الْبُعُوثُ إِلَى مَكَّةَ اِنْذَنْ

لِي أَيُّهَا الْآمِيْرُ الْحَدُّفُكَ قَوْلًا قَامَ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْفَدَ مِنْ يَوْمِ الْفَتْحِ سَمِعَتْهُ أَذْنَاىَ وَوَعَاهُ قَلْبِيْ وَٱبْصَرَتُهُ عَيْنَاىَ حِيْنَ تَكُلُّمَ بِهِ حَمِدَ اللَّهُ وَالْنَى عَلَيْهِ، فُمَّ قَالَ: إِنَّا مَكَّةَ خَرَّمَهَا اللَّهُ وَلَمْ يُتَحَرُّمُهَا النَّاسَ فَلَا يَبِحِلُّ لِإِمْرَءِ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ اَنْ يُسْفِكَ بِهَا دَمَّا وَلَا يَعْضُدَ بِهَا شَجَرَةً فَإِنْ اَحَدُّ تُوَخُّصَ بِقِتَالِ رَسُوْلِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسُلَّمَ فِينَا، فَقُوْلُوا لَهُ: إِنَّ اللَّهَ قَدْ آذِنَ لِوَسُولِهِ وَلَمْ يَأْذَنْ لَكُمْ وَإِنَّمَا اَذِنَ لِي فِيْهَا سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ وَقَدْ عَادَتْ خُرْمَتُهَا الْهَوْمَ كَحُرْمَتِهَا بِالْآمْسِ وَلَيُتَلِغِ الشَّاهِلُهُ الْغَائِبَ، فَقِيْلَ لِآبِيْ شُرَيْحٍ مَا قَالَ لَكَ عُمْرُو؟ قَالَ: قَالَ: آنَا أَعْلَمُ بِلَالِكَ مِنْكَ يَا آبَاشُرَيْحٍ إِنَّ الْحَرَمَ لَآ يُعِيْدُ عَاصِيًا وَلَا فَارًا بِدَم وَلَا فَارًا بِخَرْبَةٍ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، وَفِي الْهُخَارِيَ الْخَرْبَةُ الْخِيَانَةُ.

حل لفات: البعوث: جَن مِهَ بَعْث كَي مِن فَرج ، يعضد: عَضَدَ (ن) عَضْداً كَائنا ، شجرة: ورخت جَن أشجارٍ -

قرجمه: حفرت ابوشرت عدوى سے روايت م كه انبول في عمرو بن سعيد سے اس وقت كها جب وه مكم كرمد فوج بھيج رہے تھا ، میرے سردار! آپ جھے اجازت دیجئے تا کہ بیل جناب نی کریم تنگ کا وہ قول نقل کروں جے آپ نے فتح مکہ کے دوسرے دن فرمایا تھا، جے میرے کا نول نے سنا ہے،میرے دل نے حفاظت کی ہے اور میری آ تھوں نے دیکھا ہے، جب آپ نے بات شروع کی تو الله كاتعريف اوراس كى تنابيان كى ، چرفر مايا كه محكوالله تعالى في حرام كيا ب، كى آدى في حرام بين كيا ب: اس ليكسى ايسيآدى کے لیے ملال نہیں ہے جواللہ اور آخرت کے دن پرایمان رکھتا ہو کہ کسی کا خون بہائے اور بیا کہ کوئی درخت کا فے ؛ لیکن اگر کوئی حض جناب نی کریم الله کے قال کی وجہ سے رفعت نکالا ہے تواس سے کہدو کہ اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول کے لیے اجازت دی تھی ادر تہارے لیے اجازت نیں ہے (جیسا کہ آپ نے فرمایا) کہ جھے دن کے ایک جھے میں میرے لیے اس میں قال کی اجازت تھی اور اس كى حرمت آن لوث آئى ہے؛ جيسا كوكل تنى اورموجودين غائيين تك كانچادين ، ابوشر ت كے كما كيا كورونے آپ سے كيا كها؟ انہوں نے کہا کہ عمرونے کہا کہ بیل اس بارے میں تھے سے زیادہ جانتا ہوں،اے ابوشری اے شک حرم گناہ گارخون کر کے بھا گئے والے اور تخ يبكارى كرف واللكويناه بيس ويتاب، اور بخارى بس بهك "المخوبة: خيانت كمعن بس ب"_

خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلاصه يه به كه ارض حرم مين كى تولل كرنامنوع ب؛ اس ليه ذاتى دشمنى كى بنياد پر جذبات ا سے سرشار موكر قل وقال شروع ندكرد ، ___

کمات حدیث کی تشری عبد الله بن دیر الملک ابن مردان کی جانب سے مدیند کے حاکم تھے، انہوں نے جب حفرت کمات حدیث کی تشریخ کا اللہ بن دیر اللہ کو تا کہ کا کا کہ کا تعدید سے مکہ والشکر دوانہ کیا تو حضرت ابوشریخ صحابی نے ان کے اس فعلس بيزارى كااظهاركرت بوع الخضرت كى غدكوره بالاحديث بيان كى جس سان كالمطلب بيتحا كرم ملّه من ولائن قل مخص كم والمار في اجازت نبيس م جه جائيك آب ايك جليل القدر صحالي كاخون بهان كي ليدوبال التكريميج رب ين اس ع جواب میں عمرو بن سعید نے کہا کہ زمین حرم اس مخص کو پتاہ نہیں وی جو خلیفہ سے بغاوت کرکے نافر مانی کا مرتکب ہوا ہو، کو یا عمرو بن سعید کے مان می عبدالملک بن مروان خلیفہ برحق تھا، اور حصرت عبداللہ بن زبیر اس کے باغی، حالان کہ عبدالملک بن مروان خلیفہ برحق نہیں تفاكماس كي خلافت كا تكاركرني واللكوشرى نقطة نظرے باغي قرار دياجاتا اي طرح عمرو بن معيد ني يبحى كها كدا كركوني فخص كسي كا خون کرکے حرم میں چلا جائے تو حرم اس کو بھی پناہ نہیں دینا، ایسے ہی اگر کوئی مخص تقمیر کرکے یعنی دین میں فساد کا نے بوکر یا کوئی دین جرم کر کے یاکوئی اور تصور کر سے مثلا کسی کا مال تلف کر کے یاکسی کا حق خصب کر کے بھاگ جائے اور حرم میں پناہ لے لیواس کاریم طلب نہیں ہے کہ اس ہے درگزر کرلیا جائے ، کو یا ممرو بن سعید کے جواب کا حاصل بیتھا کہ عبداللہ بن زبیر ایک گذگار و نافر مان مختص ہیں ؛ کوں کہ انہوں نے خلفیہ کی اطلاعت سے انجواف کیا ہے ، اگروہ زمین حرم سے باہر آ جا کیں تو وہاں ان کوسر ادی جائے گی ،اوراگر حرم ہی ہیں رہیں گے تو ان کوح م ہی میں رہیں گے تو ان کوح م ہی میں رہیں ہوا؛ لینی زمین حرم ہی میں ان کوشہید کردیا گیا۔

﴿ حرم کی ہے حرمتی کانقصان ﴾

﴿ صِيتُ مُرِالاً ٢ ﴾ وَعَنْ عَيَّاشُ بْنِ أَبِي رَبِيْعَةُ الْمَخْزُوْمِيُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تَوَالُ هَذِهِ الْأُمَّةُ بِخَيْرٍ مَا عَظَمُوا هَٰذِهِ الْخُرْمَةَ حَقَّ تَعْظِيْمِهَا فَإِذَا ضَيْعُوا ذَلِكَ هَلَكُوا. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ. حل لفات: الامة: امت مُنْ أَمَمَ مضيعوا: ضَاعَ (ش) ضِياعاً شَالُعُ كَرَا۔

قو جهه: حفرت عیاش بن الی ربید بخز دی رضی الله عند سے روایت ہے کہ جناب نی کریم علی نے فر مایا یہ امت اس وقت تک فیر میں رہے گی جب تک اس حرمت کی تعظیم کرتی رہے گی اس کی تعظیم کرنے کی طرح ، جب اس کوضائع کرد سے گی تو ہلاک ہوجائے گ خلاصة حدیث کی حدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ حرم کی بے حرمتی نذکر ہے: اس لیے کہ اگر حرم کی بے حرمتی کی گئ تو تہا بی آ سے گی۔ کلمات حدیث کی کشری کی گئر ترکی کا لاتو ال هذه الاحمة بعد والمنح: مرادیہ ہے کہ حرم کی تعظیم بی میں امت کی فیر پوشیدہ ہے۔

﴿باب حرم المدينة عرسها الله تعالىٰ﴾

مدیداوراس کی گرداگردز بین کی حرمت کے بارے میں احادیث منقول ہیں ایکن اس سلسلہ میں علاء کے اختلافی اتوال ہیں اچنان چہ فی علاء کے زختا فی اقوال ہیں اچنان چہ فی علاء کے زدیک مدیداورا کی گرداگرد زمین کی حرمت کا مطلب ہے کہ اس شیم مقد سادرا کی چاروں طرف کی زمین کی تعظیم وکریم کی جائے اسلام میں دوخت وغیرہ کا شااور شکار کرنا حرام نہیں ہے انکین ائمہ ٹلاش کے زدیک چونکہ حرم مکہ اور حرم مدید کا ایک بی تھم ہے اسلام کی زمین میں وہ تمام چیزیں حرام ہیں جو مکہ اورائسکے اطراف کی زمین میں حرام ہیں ، تا ہم ان انکہ اسکے مسلک میں مدیداورا سکے اطراف کی زمین میں وہ تمام چیزیں حرام ہیں جو مکہ اورائسکے اطراف کی زمین میں وہ تمام چیزیں حرام ہیں جو مکہ اورائسکے اطراف کی زمین میں حرام ہیں ، تا ہم ان انکہ کے مال بھی حرم مدید میں ان چیزوں کے ارتکاب سے جزار واجب نہیں ہوتی "اعلم ان المدینة حرمة عندنا لا حرما کما لمکة خلافاً للائمة الثلاثة لعند هم یحوم صیدها وقطع شجرها وعندنا لا یحرم ذالك قال فی الكافی لان حل الاصطاء خلافاً للائمة الثلاثة لعند هم یحوم الابیراهین ساطعة ومرویهم محتمل وهو لا یصلے حجة "(مرقات ۱۳/۱۳)

الفصل الاول

وحرم مدینہ کے حدودہ

﴿ صَدِيثُ مُرِ اللّهِ عَلَيْ قَالَ: مَا كَتَبْنَا عَنْ رَسُولِ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ إِلَّا الْقُوْآنَ وَمَا فِي هَلِهِ الصَّحِيْفَةِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: الْمَدِيْنَةُ حَرَامٌ مَا بَيْنَ عَيْرِ إلَىٰ تَوْرِفَمَنْ الْحَدَثَ فِيْهَا حَدَثًا اوْ اوى مُحْدِنًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ، لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَذَلَ اللّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ، لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَذَلَ اللّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ الْجَمَعِيْنَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ الْجَمَعِيْنَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ الْجَمَعِيْنَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَذَلَ " وَمَنْ وَاليَ قُومًا بِغَيْرِ إِذْنِ مَوَالِيْهِ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ الْجَمَعِيْنَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَذَلَ " وَمَنْ وَاليَّاسِ الْجَمَعِيْنَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَذَلَ . مُتَفَقّ عَلَيْهِ . وَفِي وَوَايَةٍ لَهُمَا: مَنْ ادَّعَىٰ إلَى غَيْرِ ابِيْهِ وَالنَّاسِ الْجَمَعِيْنَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَذَلَ . مُتَفَقّ عَلَيْهِ . وَفِي وَوَايَةٍ لَهُمَا: مَنْ ادَّعَىٰ إلى غَيْرِ ابِيهِ وَالنَّاسِ الْجَمَعِيْنَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ اللّهِ وَالْمَلَا لِكَةِ وَالنَّاسِ الْجَمَعِيْنَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ عَنْهُ اللّهِ وَالْمَلَا لِكَةِ وَالنَّاسِ الْجَمَعِيْنَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفُولَا عَذْلًى .

فلا صدّ حدیث خلا صدّ حدیث خاص حقوق بین،ان کی رعایت بهرحال ضروری ہے۔

كلمات حديث كي تشريع ما كتبنا عن رسول الله الغ: بعض لوكون كابي خيال ربا موكا كي قربت كي بنياد پر جناب بي كريم منالتے نے کھ خاص احکام لکھوائے ہیں، جوان ہی کے پاس ہیں، اور کسی کوان احکام کی خرنیس ہے تو انہوں نے اس کی تردیدی اور فرمایا کہ میرے یاس قرآن کریم اوراس صحفے کے علاوہ اور پھڑیں ہے، و ما فی هذه الصحيفة برادوه محینہ ہے جس میں انہوں نے دیت وغیرہ کے احکام لکھے تھے، جوتگو ار کے نیام میں ان کے ساتھ رہتا تھا اور اس صحیفے کے بارے میں عام طور يرحفرات محلية كرام كومعلوم تفاء المدينة حوام: ان جيس روايتول كى بنياد برحفرات ائد ثلاث كزد بك مديد منوره مكمرمدك طرح بى حرم بوبال نكى كاخون بهانا جائز بادرندى بيز يود عكاف جاسكة بين"انى حومت المدينة كما حوم ابواهيم مكة "(فتح الملهم ١٩٤/٣)، حضرت المام ورى عبدالله بن مبارك ، المام اعظم الوحنفيد، الويوسف اورمحر مم الله كاكمنا ب كدر يندمنوره مكرمدى طرح حرفيس باس ليوبال شكاراور بيز بودول ك ساته كاشخ كاعمل كيا جاسكتا باس لي كرجتاب في كريم الكاف نے بعض حالات میں ہے جماڑنے کی اجازت دی ہے، جب کرم مکر کے تعلق سے اس طرح کی اجازت نہیں ہے "لا تنجبط منها شجرة إلا لعلف واشجار حرم مكّة لا يجوز خطبها بحال "(فتح الملهم ٣٩٨/٣)، اورجناب ني كريم عَلَيْكُ في جهال 7م مديدين پير بود _ كائے _ منع كيا ہے،ان احاديث عمرادميندمنوره كى زينت باتى ركھنا بس عمر قال نھى دسول الله صلى الله عليه وسلم عن آطام المدينة ان تهدم وفي رو اية لا تهدموا الأطام فانه زينة المدينة وهذا اسناد صحیح " (الع الملهم ١٩٨/٣)، ما بين عير الى ثور: عمر اوراد ركدرميان إدرايرم ب، فمن احدث فيها حدثا او اوى محدال المع: عديث شريف كريكمات بتارب إلى كدرينم فوره كتعلق عرمت عمراو تعظيم وكريم ب "حومت المدينة ار اد بذالك تحريم التعظيم دون ما عداه من الأحكام المتعلقة بالحرم" (فتح الملهم ٣٩٨/٣)، ١٠٠٠ وجب كمديد منورہ کی بے حرمتی کرنے پرلعنت آو کی گئ جنایت لازم نہیں ہوئی۔

و مدين هي شركا ٢٩١٢ ﴾ وَعَنْ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنِّي أَحَرَّمُ مَا بَيْنَ لَا بَتَي

الْمَدِيْنَةِ أَنْ يُقْطَعَ عِطَاهُهَا أَوْ يُقْتَلَ صَيْدُهَا، وَقَالَ: الْمَدِيْنَةُ خَيْرٌلَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ لَا يَدَعُهَا أَحَدٌ رَغْبَةً عَنْهَاإِلَّا اَبْدَلَ اللَّهُ فِيْهَا مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِّنْهُ وَلَا يَثْبُتُ أَحَدٌ عَلَى لَاْوَائِهَا وَجَهْدِهَا إِلَّا كُنْتُ لَهُ شَفِيْهًا أَوْ شَهِيْدًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لغات:عضاهها: جمع بعضاها كيمعي بربواكاف داردردت ،شفيعا،سفارش كرف والاجمع شفعاء

قوجمہ: حضرت سعد سے روایت ہے کہ جناب نی کریم اللہ نے نظر مایا کہ میں مدینہ کے دونوں پہاڑوں کے درمیان حرام قرار دیا ہوں،اس لیے نداس کے فار دار درخت کائے جا کی اور نہ شکار مارا جائے ، نیز آپ نے فر مایا: مدینہ ان کے لیے بہتر ہے،اگر دولوگ جان لیس، جو خص اس شہر کو بے رغبتی سے چھوڑ ہے گا تو اللہ تعالی اس کی جگہ دوسرے ایسے خص کو بسادے گا جواس سے بہتر ہوگا ،اور جو خص مدینہ میں ختیوں اور بھوک کی حالت میں مدینہ میں خابت قدم رہے گا تو میں قیامت کے دن اس کے لیے شفیع یا شہید ہوں گا۔ خلاصہ حدیث کا س حدیث شریف کا خلاصہ ہے کہ مدینہ مورہ بھی حرم ہے۔

انى احوم: حرمت سے مراد مدینه منوره کی تعظیم وکریم ہے" حرمت المدینة اراد بذالك تحویم كمات حدیث کی تشریح العظیم دون ما عد اه من الأحكام المتعلقة بالحوم" (اسم الملهم ۱۹۸/۳) ما بین لا بتی

﴿مدینه میں مصیبت کے وقت صبر کرنا ﴾

﴿ صِرِيثُ بَهِ ١٢١٥﴾ وَعَنْ أَبِي هُوَيْرَةَ أَنَّ وَسُوْلَ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَا يَصْبِرُ عَلَى لَا وَاءِ الْمَدِيْنَةِ وَشِئَتِهَا أَحَدٌ مِّنْ أُمَّتِيْ إِلَّا كُنْتُ لَهُ شَفِيْعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: يصبر: صَبَرَ (ض) صَبْراً مبركرنا، احت، توم بتع احم، شفيعا: سفارش كرف والاجع شفعاء

توجمه : حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ جناب نی کریم آفٹے نے فرمایا: میری امت میں سے جو بھی شخص مریخ کی مجنوب اور کا درختی کے دونت مرکر سے گاتو میں قیامت کے دن اس کا شفیع ہوں گا۔

ال حدیث الله میری میلید خلاصة حدیث قیامت کے دن اس کی شفارش کریں گے۔

کلمات حدیث کی تشریح کا یصبو علی لاواء المدینة و شدتها احد الخ: مرادیه به کرجوش معائب کاشکار بونے کے اللہ است حدیث کی تشریح کی اللہ اسکی سفارش باد جود میرکر کے مدینه منورہ بی میں رہائش بزیر ہاتو قیامت کے دن جناب نی کریم اللہ اس کی سفارش

205

﴿مدینه کے لیے آپ کی دعاہ

﴿ صديث بُمر ٢١١٦ ﴾ وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّاسُ إِذَا رَأُوْ الوُّلَ النَّهُ رَاءُ وَا بِهِ إِلَى النَّبِيّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِذًا أَخَذُهُ قَالَ: اللَّهُمُّ بَارِكُ لَنَا فِي ثَمَرِنَا وَبَارِكُ لَنَا فِي مَدِيْنَتِنَا وَبَارِكُ لَّنَا فِي مُدُنَّاء اللَّهُمَّ إِنَّ إِبْرَاهِيْمَ عَبْدُكَ وَخَلِيْلُكَ وَنَبِيُّكَ وَإِنَّىٰ عَبْدُكَ وَنَبِيُّكَ وَإِنَّهُ دَعَاكَ لِمَكَّةَ، وَآنَا آدْعُوْكَ لِلْمَدِيْنَةِ بِمِثْلِ مَا دَعَاكَ لِمَكَّةَ وَمِثْلِهِ مَعَهُ، ثُمُّ قَالَ: يَدْعُوا اصْغَرَ وَلِيَّدٍ لَهُ فَيُعْطِيْهِ ذالِكَ الشَّمَرَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: الثمرة: كالمرجع ثمار.

قوجمه: ان سے روایت ہے کہ جب لوگ نیا کھل دیکھتے تواہے جناب نی کریم تنافیق کی خدمت میں بیش کرتے ، جب اس کو قبول كرتے تو سيرعا پڑھتے "اللهم بارك لنا في صاعنا وبارك لنا في مدنا اللهم ان ابراهيم عبدك وخليلك ونبيك واني عبدك ونبيك وإنه دعاك لمكة وانا ادعوك للمدينة بمثل ما دعاك لمكة ومثله معه" كرابو بريرة في كما كرآب ايخ چوٹے بچوں کو بلاتے اور انہیں وہ پھل دے دیتے۔

خلاصة حديث طامه يب كرآب في ميز كي بار يين دعاكى جوتبول بوئى اوراس كى قدرومنزلت بوهاى-

کمات حدیث کی تشری حضرات محلبہ کرام کی بائتار محبت کی علامت ہے کہ جب انتج یہاں پہلے پہل پھل پکتا تو اے

جناب ني كريم الله كي خدمت يس پيش كرتے ، اللهم بارك لنا في ثمونا الخ: يعنى جب آپ كرما من ايے چل آتے تو آپ م اور مدینددونوں کیلئے دعافر ماتے، یدعوا اصغرو لید الغ: یعنی آپ کرے جموٹے بچوں کو بلا کردہ چیل دے دیا کرتے تھے۔

﴿مدینه کی حرمت کاتذکره ﴾

﴿ صِدِيثُ تُمِرِ ٢١١٧﴾ وَعَنْ أَبِي سَعِيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ إِبْوَاهِيْمَ حَرَّمَ مَكَّةَ فَجَعَلَهَا حَرَامًا، وَإِنِّي حَرَّمْتُ الْمَدِيْنَةَ حَرَامًا مَا بَيْنَ مَازِمَيْهَا أَنْ لَا يُهْرَانَ فِيْهَا دَمَّ وَلَا يُحْمَلُ فِيْهَا سِلَاحٌ لِقِتَالِ وَلَا تُخْبِطُ فِيْهَا شَجَرَةٌ إِلَّا لِعَلَفٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: حوم بحوم أحوم (تفعيل) حرام قراردينا، سلاح بتهيارج أسلِحة

موجعه: حعرت ابوسعيدرض الشعند سروايت م كرجناب ني كريم بكناتواس جناب في فرمايا كرابرائيم في مكوحرام قرار دیا چتاں چدوہ حرام ہو گیا،اور میں نے مدینے کے دونوں کناروں کے درمیان حرام قرار دیا ہے،اس لیے نہ کوئی خون بہائے، نہتھیا را تھا ے اور ندکوئی در دنت کے ہے جما ڑے مرجانور کے لیے۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه بيب كدريد بحى حرم ب-

کلمات صدیث کی تشری ان الایهراق دم النج: ان کلمات کی تشری باب کی بہلی صدیث کے تحت دیمی جاستی ہے، وہاں موجود ہے۔

﴿سعد بن وقاص كا ايك واقعه ﴾

﴿ مديث تَبر ٢١١٨ ﴾ وَعَنْ عَامِرٍ بْنِ سَعْدِ أَنَّ سَعْدًا رَكِبَ إِلَى قَصْرِهِ بِالْعَقِيْقِ فَوَجَدَ عَبْدًا يَقْطَعُ شَجَرًا أَوْ

يَخْبِطُهُ فَسَلَيَهُ قَلَمًا رَجَعَ سَعْدٌ جَاءَ هُ اهْلُ الْعَبْدِ فَكُلُّمُوهُ أَنْ يَرُدُ عَلَى غُلَامِهِمْ أَوْعَلَيْهِمْ مَا أَخَذَ مِنْ غُكَامِهِمْ، فَقَالَ: مَعَاذَ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَابَى أَنْ يَرُدُّ عَلَيْهِمْ.

حل لفات: عقيق: مرح پهرجع أعِقّة ، شجر: ورفت جع اشجار _

قوجمه: حفرت عامر بن معدے روایت ہے کہ معد عقیق کے پاس اپن حویلی میں جانے کے لیے سوار ہوئے تو انہوں نے دیکھا کہ ایک غلام ورخت کاث رہا ہے یا ہے جماڑر ہا ہے تو انہوں نے اس غلام کے کہڑے چمین لیے، جب سعدوالی آئے تو ما لک نے آگران ے کہا کہ کیڑے غلام کویا آ قاکودے دیے جا کیں، تو انہوں نے کہا: خداکی بناہ میں وہ چیز کیسے واپس کردوں جسے جناب نی کریم الله نے مجھے دلوائی ہے، اور انہوں نے دیے سے صاف ا تکار کردیا۔

ا خلاصة حديث اس مديث تريف كا خلاصه يب كرم مدين كحدود من بي تحانداز من بير بود عنه كاف

ان مود علی غلامهم او علیهم: شرحف"او" راوی کے شک کوظاہر کررہا ہے کہ ان کے کلمات حدیث کی تشریح کی ان کے کہ ان کے کا تصافی کے کہ ان کے کہا تھا کہ جو کپڑے کہا تھا کہ جو کپڑے

مارے غلام سے لیے ہیں وہ ہمیں دے دیں ، حدیث کے اس جملہ "جو جھے جناب نی کریم اللے نے دلوائی ہے" کا مطلب سے کہ آپ نے اس بات کی اجازت دی تھی کہ جو تف کسی کو مدیند میں شکار کرتے یا درخت کا نتے دیکھے تو وہ اس کے کپڑے منبط کر لے البذا کہا جائے گاکہ یا توبیدد بث منسوخ ہے یا پھر بیکہ آپ کی طرف سے بیاجازت زجرد عبید کے طور پردی می کا

علا مد طبی قرماتے ہیں کہ حضرت امام مالک اور حضرت امام شافعی کا مسلک یہ ہے کہ مدیند میں شکار مار نے یا درخت کا شنے کی وجہ ے بدلہ (کفارہ) واجب نہیں ہوتا؛ بلکہ دیند میں بے چیزیں بغیر بدلہ کے حرام ہیں، جبکہ بعض علاء بے کہتے ہیں کہ جس طرح مکہ میں ان چےزوں کے ارتکاب سے بدلدواجب ہوتا ہے؛ ای طرح مدیند میں بھی ان کی وجدے بدلدواجب ہوتا ہے؛ لیکن دھرت امام اعظم ابوحنیفہ کے نز دیک مدینہ میں ہے جنریں حرام نہیں ہیں؛ البتہ مکروہ ہیں۔

وصديث بمبر ٢٦١٩ هُوَعَنْ عَالِشَةَ قَالَتْ: لَمَّا قَدِمَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم الْمَدِيْنَةَ وُعِكَ ابُوْبَكُرٍ وَصَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم الْمَدِيْنَةَ وُعِكَ ابُوْبَكُرٍ وَبِلَالِ، فَجِئْتُ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَٱخْبَرْتُهُ، فَقَالَ:اللَّهُمُّ حَبُّ إِلَيْنَا الْمَدِيْنَةَ كَحُبَّنّاً مَكُةَ أَرْ أَشَدُّ وَصَحُّحْهَا، وَبَارِكْ لَنَا فِي صَاعِهَا وَمُدَّهَا وَانْقُلْ حُمًّا هَا فَاجْعَلْهَا بِالْجُحْفَةِ. مُتَّفَقّ عَلَيْهِ.

حل لغابت: وعك: وَعَكَ (ش) وَعُكا تيز بخار ير منا، صححها: صَحْحَ (تقعيل) في كرنا

مرجمه: حفرت عائشمديقدرض الله عنهات روايت بكر بم الله مديد مؤره آئة ابوبراور بلال وخت بخارموكيا، تومي نے جناب ني كر يم الله كي خدمت مي آكر خروى تو انہوں نے بيدعاكى "اللهم حبب الينا المدينة كحبنا مكة او اشد وصححها وبارك لنا في صاعنا ومدنا وانقل حماها فاجعلها بالجحفة "_

خلاصة عديث عديث مريف كاخلاصه يب كهدينى آب وجوابها خرابتى آپ كه دعاكرنى كوجه على موكل-

کلمات صدیث کی تشری حضرت ما تشری و بلال الغ: منقول ہے کہ جب حضرت ابو یک شدت بخار ش جا اور حکمات اور حملات صدیث کی تشری حضرت ما تشری ان کی مراج یک کی تواس وقت وہ کمداور دہاں کی آب وہوا، دہاں کے مکانات اور

بہاڑوں کی صحت افزار فضاؤں وغیرہ کا باواز بلند ذکر کرنے لکے، چناں چہ حضرت عائشہ نے جناب نی کریم سی سے میال ذکر کیا تو آپ سی اللہ نے ندکورہ بالا دعافر مائی۔

"جعفه"ایک مقام کانام ہے جو مکداور مدینہ کے درمیان واقع ہے، اس مقام پریبودی آباد تھے، پیصدی اس بات کی دلیل ہے کہ مسلمانوں کی طرف سے کفار کے لیے مہلک امراض اور ان کے شہروں کی خرابی کی بدوعا کرنا جائز ہے؛ چنال چیاس حدیث کے علاوہ ایک روایت ریم منقول ہے کہ مدینہ میں جناب نبی کریم اللہ کی بجرت سے پہلے بیاری اور وباؤں کی کثرت تھی ، آپ نے ان وہاؤں کو (اللہ تعالی سے دعا کے ذریعہ) کفار کے علاقوں میں جمیعے دیا۔

﴿مدینے کے تعلق سے ایک خواب﴾

﴿ صديث بُبر ٢٢٢﴾ ﴾ وَعَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ فِي رُوْيًا النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَدِيْنَةِ رَأَيْتُ امْرَأَةً سَوْدَاءَ فَائِرَةَ الرَّاسِ خَرَجَتْ مِنَ الْمَدِيْنَةِ حَتْى نَزَلَتْ مَهْيَعَةَ فَتَأُوّلَتُهَا اَنَّ وَبَاءَ الْمَدِيْنَةِ نُقِلَ إلى مَهْيَعَةَ وَهِيَ الْجَحْفَةُ. رُوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

حل الفات: الأوة: يراكنده بال جمع الواتور

قوجمه: حطرت عبدالله بن عمرض الله عنها ب دوايت ب كه جناب بي كريم الله كخواب كم معلق روايت ب كه (آب نے فرمایا) يس فرايا) يس فرايا) يس فرايا) يس فرايا) يس فرايا) يس فرايا) يس منطق مودك و يماجس كه بال براگنده ته، وه مدينه سفل كرمبيد بني گي تو يس في اس كي تعبيريد تكالى كه مدين كي و مهيد خفل موگي اوروه عدب -

خلاصة حديث اس حديث شريف كاخلاصه بيب كهدينه منوره كى دباايك بوزهيا كاشكل مين تكل كرجه بانج كل ب-

رأیت: کے فاعل جناب نی کریم ملطی اس کے بھی فاعل آپ بی اور میں استاق لتھا: اس کے بھی فاعل آپ بی ای اور میں استحد معربیث کی تشریح المجمعه: مرادیہ ہے کہ بہیداور عمد ایک بی جگہے۔

﴿مدینے سے نہ نکلے ﴾

حل لفات: يبسون: بَسُّ (ن)بَسَّا إِكْتاب

قر جعه: حضرت سفیان بن الی زہیرے دوایت ہے کہ مل نے جناب ٹی کر مجھ اللہ کو کہتے ہوئے سنا کہ جب یمن فتح ہوگا ہو ایک قوم آئے گی اور اپنے اہل وعیال اور فرمال برواروں کے ساتھ آہت ہے نکل جائے گی ، حالال کہ مدیندا چھا ہے اگر وہ جائیں ، جب شام فتح ہوگا تو ایک قوم آئے گی اور اپنے اہل وعیال اور فرمال برواروں کے ساتھ آہت ہے نکل جائے گی ، حالال کہ مدیندان کے لیے اچھا ہے اگر وہ جائیں ، اور جب عراق فتح ہوگا ہو ایک قوم آئے گی اور اپنے اہل وعیال اور فرمال برواروں کے ساتھ آہت ہے نکل جائے گی ، حالال کے مدینہ موروان کے لیے اچھا ہے اگروہ جائیں۔ خلاصة حديث جنهيں مدينه منوره كى سكونت ميسر ہووه اس سعادت كوچھوڑ كر بلامنرورت وشديده كے دوسرى جكه نہ جائے۔

کلمات حدیث کی تشری جا المدیدة عیولهم: مرادیه به که خواه تواه دینه منوره کی سکونت ترک نه کرے،البته شدید ضرورت پر

﴿مدینے کی تاثیرہ

﴿ مِدِيثُ بُهِ ٢٦٢٢ ﴾ وَعَنْ ابِي هُرَيْرَةَ قُالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أُمِوْتُ بِقَرْيَةٍ تَأْكُلُ الْقُرِي يَقُولُونَ يَثْرِبُ وَهِيَ الْمَدِيْنَةُ تَنْفِي النَّاسَ كَمَا يَنْفِي الْكِيْرُ خَبَتَ الْحَدِيْدِ. مُتَّفَقَّ عَلَيْدِ.

حل الفات: قریة: گاؤل جمع قری الحدید: لوا مسلمان المان المان المان المان المان کا قریم المان جوتمام بستوں برغالب قو جمعه: حضرت ابو جریرة سے دوایت ہے کہ جناب نی کریم الله فرمایا: جھے ایک الی بستی کا تھم ہوا ہے جوتمام بستیوں برغالب ے جے لوگ یٹرب کہتے ہیں، وہی مدینہ ہے جو ہرے آ دمیوں کواس طرح نکال دیتا ہے جس طرح بھٹی لوہ سے میل کو نکال دیتی ہے۔ خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيه كهدينه منوره مي برياد كرنبيس ره سكتي بي-

امرت بقویة: امر سے مراد کم جرت ہے، تاکل القری براد عالب ہوتا ہے، یقولون یئرب کمات حدیث کی تشریح و المحدیدة: مرادیہ کے پہلے اس کا نام یثرب تھا اور اب وہی مدید ہے، تنفی الناس الخ بمراد

بيه به كه بر الوك مدينة منوره بيل زياده دنول تك نبيل تفهر سكته ...

﴿اللَّهُ كَي طرف سے مدینے كانام ﴾

﴿ صِرِيثُ مُرِ٣٦٢٣ ﴾ وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: إِنَّ اللَّهُ سَمَّى الْمَدِيْنَةَ طَابَةً. رُوَّاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات:ستى:ستى (تفعيل) نام ركمنار

توجمه: حضرت جابرين عره سروايت م كمين في جناب ني كريم تنطية كوكت بوك سنا كمالله تعالى في مديد كانام طابد كما-خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يه كدين كاليك نام طابيمي بجوالله تعالى كاركها مواب

کلمات حدیث کی تشری کے میں الله المدینة طابة: طاب دوسری روایت می طیبه بنائی پیشر پاک صاف ہم اوبیہ کلمات حدیث کی تشری کے مشرشرک و کفری نجاستوں سے پاک ہے۔

﴿ مديث تُمِر ٢٢٢٣﴾ وَعَنْ جَابِرٍ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ آعْرَابِيًّا بَايَعَ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَصَابَ الْإُعْرَابِيُّ وَعْكَ بِالْمَدِيْنَةِ فَاتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ الْقِلْنِي بَيْعَتِي فَابني رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ جَاءَ هُ، فَقَالَ: ٱقِلْنِي بَيْعَتِي فَآبِي فَخَرَجَ الْآغْرَابِيُّ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّمَا الْمَدِيْنَةُ كَالْكِيْرِ تَنْفِي خَبَفَهَا وَتُنْصِعُ طَيَّبَهَا. مُتَّفَقَّ عَلَيْهِ.

حل لغات: اعرابيا: حرب كاويهاتى ، الكيو: لوبارى يعنى جمع اكيار ...

توجمه : حضرت جابرض الله عندے روایت ہے کہ ایک اعرانی نے جناب نی کر یم اللے سے بیعت کی تو ان کو مدیند میں بخارا میا، تو اس نے جناب نی کریم تلک ہے آکر کہا: اے حرا بری بیت فتم کرد یجئے ، جناب نی کریم تلک نے الکارکیا ، پراس نے دوبارہ آکر كها: مرى بيت فتم كرديج ،آپ في الكادكيا، كراس في تيرى بارآكركها: مرى بيعت فتم كرديج ، او آپ في الكادكيا؛ چنال چه ووریهاتی چلا میا، توجتاب ٹی کریم سی نے فرمایا کہ دینہ بھٹی کی طرح ہے جوسل کودورکرتا ہے اورا مجھے کو کھارتا ہے۔ فلاصة حديث ال مديث شريف كاخلام يب كدري على بر اوكنيس روسكت بير

كلمات حديث كاتشريح أنفى خبيها المخ: مراديب كربر عديد موروي زياده دلول تكريس روسكة إلى

﴿مدینے کے تعلق سے قیامت کی نشانی ﴾

﴿ مديث تبر٢٧٢٥ ﴾ وَعَنْ الْبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَنْفِي الْمَدِينَةُ شِرَارَهَا كُمَا يَنْفِي الْكِيْرُ خَبَّكُ الْحَدِيْدِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

حل لفات: الكير: او إرى بحق بمع اكيار ، حبث: كذكي جمع خبائث.

موجعه: حضرت الوجريه وضى الله عند عدوايت بكرجناب في كريم الله في المايا: اس وقت تك قيامت قائم ندموكى جب تك كهدينه برا وكول كونكال ندو، بيسي بعثي لوب كي كند كي كوشم كردي ب ب

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلامديب كدبر عادك مدينه منوره من بيس روعيس كـ

کی در ایک تقوم الساعة الغ: مراد به به کرترب تیامت می جب دجال کا خردج موگا اور پوری دنیا می است می جب دجال کا خردج موگا اور پوری دنیا می است کی عظمت شان کی وجه سے داخل ندموسکے گا اس

وتت جواسلام کے غدار ہوں مے وہ دینہ سے لکل کر د جال ہے ساتھ شریک ہوجا کیں مے ،اس مدیث شریف ہے کہی لوگ مراد ہیں۔

﴿مدينے ميں طاعون نه هوگا﴾

﴿ حديث بْهِ ٣٦٢٦ ﴾ وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عَلَى آنَقَابِ الْمَدِيْنَةِ مَلَاحِكَةٌ ، لَآ يَدْخُلُهَا الطَّاعُونُ وَلَا الدُّجَّالُ. مُتَّفَقَّ عَلَيْهِ.

حل الفات: الطاعون: لِلكِ حَمْ طَوَاعِين ـ

موجعه: ان سروايت بكرجناب في كريم الله في المرايا: مين كرووازول برفرشة بن اس لي طاعون اورد جال مين مں داخل نہیں ہو کتے۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيب كه طاعون مدينه يشتبس موكا-

كلمات مديث كي تشريح وعنه: ويعنى بدروايت معزت الوجريه رضى الشرعند بدوايت به الا يد علها الطاعون: مراوي ہے کہ مدید متورہ میں طاعون کی بھاری داخل شہوگ۔

چهرمین شریفین میں دهال د اغل نه هوگاپ

﴿ مديث تمبر ٢١١٤ ﴾ وَعَنْ أنس قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَيْسَ مِنْ بَلَهِ إِلَّا سَيَطَاهُ الدَّجَّالُ إِلَّا مَكَّةَ وَالْمَدِيْنَةَ لَيْسَ نَقَبٌ مِنْ ٱلْقَابِهَا إِلَّا عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ صَالَّيْنَ يَحْرُسُوْنَهَا فَيَنْزِلُ السَّبِحَةَ فَتَرْجُفُ الْمَدِيْنَةُ بِٱهْلِهَا ثَلَاتُ رَجَفَإِت لَمَخْرُجُ إِلَيْهِ كُلُّ كَافِرٍ وَمُنَافِقٍ. مُطَّفَلٌ عَلَيْهِ.

حل لفات: بلد: شرر الادسيطا: وَطَا (ش) وَطْعا روتدا

میں جمعہ: حضرت انس رضی اللہ عند سے روایت ہے کہ جناب نبی کریم اللہ فی نفاذ نبیا: د جال مکہ اور مدینہ کے علاوہ تمام شہروں کو رویم ڈالے گا؛ اس لیے کہ ان کے ہر دروازے پہ فرشتے کمڑے ہیں جو ان کی حفاظت کرتے ہیں؛ چناں چہ د جال زین شعر میں نمودار ہوگا تو مدینہ اپنے باشندوں کے ساتھ متن مرتبہ ملے گا، جس کے نتیج میں تمام کا فرمنا فق لکل جائیں گے۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلامديد بكرم يس د جال داخل ندبوسكا

کلمات حدیث کی تشری کی من بلد إلا میطاه النع: مرادیه به کدوجال پوری دنیا بس جابی مچا کرد کودے گا جین حرین کلمات حدیث کی تشریک کشری کا محمد شان کی وجہ سے حرین بین وافل نه دوسکے گا۔

﴿اهل مدینه سے فریب کی سزا ﴾

﴿ صريت نِهِ ٢١٢٨ ﴾ وَعَنْ سَغُدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمْ: لَا يَكِيْدُ اَهْلَ الْمَدِيْنَةِ اَحَدُّ إِلَّا النَّمَاعَ كَمَا يَنْمَاعُ الْمِلْحُ فِي الْمَاءِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل لغات: انماع: نَمَعَ (ف) نَمْعاً بِلاك بوتا كُلناء الملح: ثمك جمع مِلاح

قو جعهد: حضرت سعدے روایت ہے کہ جناب نبی کریم تلک نے فرمایا: جو فض الل مدینہ کے ساتھ کر کرے گا وہ پانی میں نمک کے مطلح کی طرح تعل جائے گا۔ محلنے کی طرح تعل جائے گا۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلامه بيب كدابل مدينه كما تعركوني مكارى ندكر ــــ

كلمات حديث كي تشريح لايكير اهل المدينة احد المنع: مراديه بيكه جوفس اللهديد كيما تعد كارى كريكاوه بلاك بوجائيكا

﴿مدینے سے آ پ کی معبت ﴾

﴿ مديث تَبر ٢٦٢٩ ﴾ وَعَنْ أنَسُ أنَّ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا قَلِهَ مِنْ سَفَرٍ فَنَظَرَ إِلَى جُدُرَانِ الْمَدِيْنَةِ أَوْطَبَعَ دَاحِلَتَهُ وَإِنْ كَانَ عَلَى دَابَّةٍ حَرَّكَهَا مِنْ حُبِّهَا. دَوَاهُ الْبُخَادِيُ

حل لفات: سفر : سفر جمع اسفار ، جلوان : جمع بعدار كى بمعنى داوار

قوجعه: حعرت انس رضی الله عند سے روایت ہے کہ جناب نی کریم تلک جب سنر سے داپس ہوتے ،تو مدینہ کی دیواروں پرنظر پڑتے علی اونٹ کو دوڑا دیتے ،اوراگرآپ دوسری سواری پر ہوتے تو مدینے سے عبت کی بنیاد پراس کوتیز کر دیتے۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاظامه يب كدين عبت كي بنياد برآب ال شهر الكر منا يندند كرتـ

کلمات حدیث کی تشری کے مراحلته المخ: مرادیہ ہے کہ جناب نبی کریم تفایق کو دیند منورہ سے بہت زیادہ محبت تھی ، یبی وجہ کمات حدیث کی تشریح کے سفر سے والبی سے وقت جب مدینے کے قریب ہوجاتے اور دیواری نظر آتی تو آپ جلد

سے جلعمدیند منورہ میں داخل ہونے کے لیے مناسب حال بھی سواری کودوڑ ادیے اور بھی تیز کردیے۔

﴿ احد پھاڑ کی نضیلت ﴾

﴿ صِدَعَثُ بِرِ ٣١٣ ﴾ وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ طَلَعَ لَهُ أَحُدٌ، فَقَالَ: هلذَا جَبَلَّ يُبِيِّنَا وَنُبِعِيدُ، اللَّهُمَّ إِنَّ إِيْرَاهِيْمَ حَرَّمَ مَكَّةُ وَإِنِّي أَحَرَّمَ مَا بَيْنَ لَا بَتَيْهَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

حل المفات: جبل: پياڙيم جِبَال.

ترجمہ: ان سے دوایت ہے کہ جناب ٹی کریم نظافہ کی نظر جب احدی اڑ پر پڑی ہو آپ نے فرمایا بیدوہ پہاڑ ہے جوہم سے مجت کرتا ہے اور ہم اس سے مجت کرتے ہیں ، اے اللہ! ایراہیم نے مکہ حرام کیا اور میں ان دونوں پہاڑوں کے درمیان حرام کرتا ہوں۔ خلاصۂ حدیث اس حدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ جناب ٹی کریم علی کے واحد پہاڑے ہی محبت تھی۔

كلات حديث كاتشريح هذا جهل محبنا المغ: مراديب كهبهت عديد ادرون إي ال ليه آب كوعبت فلى-

﴿احد پھاڑ سے آپ کی معبت﴾

﴿ مديث تُمِر ٢٧٢١﴾ وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدِ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: احُد جَبَلْ يُحِبّنَا وَنُحِبُّنَا وَنُحِبُّنَا وَنُحِبُّنَا وَنُحِبُّنَا وَنُحِبُّنَا وَنُحِبُّنَا وَاللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: احُد جَبَلْ يُحِبّنَا وَنُحِبُّهُ. رَوَاهُ الْبُخَادِيُ.

حل لغات:جبل: پياڙ ترج جبال.

قر جمه: حفرت بهل بن سعد رضى الشعند سدوايت بكر جناب في كريم علي فرمايا ، احدايها بها زب جوبم سعبت كرتاب اوربم ال سعبت كرتاب اوربم ال سعبت كرتاب اوربم ال سعبت كرتاب اوربم ال

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه يب كدامد بها زس آب كوعبت تقى -

كلات مديث كاتشرك احد جيل يحبنا ونحيه: مراديب كدوبان بهت مدون ين اس ليآب ومبتقى-

الغصل الثاني

رحرم مدینه کا ثبوت

﴿ مديث بُرِ٣١٣٢ ﴾ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ إِبِي عَبْدِ اللّهِ قَالَ: رَأَيْتُ سَغْدَ بْنِ إِبِي وَقَاصِ آخَذَ رَجُلاً يَصِيْدُ فِيْ حَرَمِ الْمَدِيْنَةِ الَّذِيْ حَرَّمَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَسَلَبَهُ لِيَابَهُ فَجَاءَ مُوَالِيْهِ فَكَلّمُوهُ فِيْهِ فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ حَرَّمَ هذا الْحَرَمَ وَقَالَ: مَنْ آخَذَ آحَدًا يَصِيْدُ فِيْهِ فَلْيَسْلَبُهُ فَعَلَا اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَلَكِنْ إِنْ شِنْتُمْ دَفَعْتُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَلَكِنْ إِنْ شِنْتُمْ ذَفَعْتُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَلَكِنْ إِنْ شِنْتُمْ مَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَلَكُنْ إِنْ شِنْتُمْ مَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَلَا أَوْلَا وَاللّهِ مِنْهُ إِنْ مُ مُوالِلْهُ مِنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَلَكُنْ إِنْ شِنْتُمْ مَا لَهُ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَلَكُونُ إِنْ شِنْهُ مَا أَوْلُهُ مُنْهُ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَلَكُنْ إِنْ شِنْعُومُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْهُ مُنْ أَوْلُوا اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَلَا اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَلَا عُنْتُمْ وَلَعْمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَلَا عُلَاهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ إِلَا لَا عُلْمُ مِنْ اللّهُ عَلَيْهُ وَلَا عُلَالُهُ عَلَيْهِ وَلِكُونُ إِلَا اللّهُ عَلَيْهُ مَا أَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَلَا لَا لَا لَا لَا لَهُ عَلَاهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَلَا عَلَاهُ عَلَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَلَاللّهُ عَلَيْهُ وَلَا عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ وَلِلْهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ الللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ ال

حل الفات: اخذ: أخذ (ن) أخذاً كارثاء ثيابه: جمع بوبك بمعن كرا-

قوجهد: حفرت سلیمان بن افی عبد الله سے روایت ہے کہ ش نے سعد بن وقاص کودیکھا کہ انہوں نے ایک آدی کو پکڑا جو مدید کے

اس جمے میں شکار کر رہاتھا جے جناب نی کریم علی نے حرم قرارویا ہے، چنال چداس کے کبڑے انہوں نے لے لیے اواس کے مالک

نے آکران سے اس بارے میں بات کی اوانہوں نے کہا کہ جناب نی کریم تعلیق نے اس حرم کو حرام قرار دیا ہے، نیز آپ نے فرمایا ہے جو

اس میں کی کو دکار کرتے ہوئے یائے تو اس کے کپڑے لے اس لیے جناب نی کریم علی نے جے جو چیز دلوائی ہے میں است

دالی نہیں کروں گا جیکن اگر تم میا ہوتو میں اس کی قیت وے و بتا ہوں۔

فلاصة عديث ال عديث شريف كاخلاصه يب كدديد منوره بحى حرم --

دفعت اليكم ثمنه: يعنى جناب ني كريم تلك كفرمان كى بنياد برتم تضاء ويريز فيل المسكة الى كلمات حديث كى تشرت كى يا مواق المول م المول م المواق المول م المول م

﴿مُدينَ كِي درغت كاثني والي كي ساته سلوك ﴾

﴿ مديث بُهِ ٣١٣٣﴾ وَعَنْ صَالِح مَوْلَى لِسَعْدِ أَنَّ سَعْدًا وَجَدَ عَبِيْدًا مِنْ عَبِيْدِ الْمَدِيْنَةِ يَقْطُعُوْنَ مِنْ شَجَرِ الْمَدِيْنَةِ فَانَحَدَ مَتَاعَهُمْ وَقَالَ يَعْنِي لِمَوَالِيْهِمْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهِى آنُ يُقْطَعَ ، مِنْ شَجَرِ الْمَدِيْنَةِ شَيْءٌ وَقَالَ مَنْ قَطَعَ مِنْهُ شَيْئًا فَلِمَنْ آخَذَهُ سَلَبُهُ. رَوَاهُ ابُوْدَاؤُدَ.

حل الفات:عبيد:عبد ك جمع معنى غلام،متاع : برده چيز جس عا كده الحايا جاسك-

اس مدیث شریف کا خلاصہ یہ ہے کہ جس فخص کو مدیند منورہ کے درخت کا شنے ہوئے دیکھے،اس کے کپڑے ضبط خلاصۂ حدیث خلاصۂ حدیث

فاخذ متاعهم: متاع ہم ادکر ہے ہیں؛ اس لیے کدومری روایتوں میں کیڑے کی صراحت موجود کمات حدیث کی تشریح کے میں ان مقطع من شمجر المدینة: مرادیہ کدید متورہ کے پیڑ بودے کا شخے ہاں

كى زيتكونقصان موتاب؛اس كيدسية كے بير بودےكا فاكرو وتنزير بى ب-

خمقام وج میں شکار پ

﴿ مِدِيثُ مُهِ ٢٢٣٣ ﴾ وَعَنِ الزُّهَيْرِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ صَيْدَ وَ لِجَ وَعِضَاهَهُ حُرْمٌ مُحَرَّمٌ لِلْهِ. رَوَاهُ ابُوْ دَاوُدَ وَقَالَ مُحْى السُّنَّةِ: وَ لِجَ ذَكُرُوا انَّهَا مِنْ نَاحِيَةِ الطَّاتِفِ، وَقَالَ الْحَطَّابِيُ: النَّهُ بَدَلَ انَّهَا.

حل لغلت:صيد: صَادَ (ش)صَيْداً ثَكَارَكُرنار

قوجمه: حفرت ذبیرے دوایت بے کہ جتاب نی کریم علی نے فرمایا دج کا شکار اور اس کے فاردار درخت حرام ہیں ،اس لیے کدوه اللہ کے لیے حرام کیے گئے ہیں۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه بيب كدوج من شكارندكيا جائے۔

کان صید وج: وج طائف کے نزدیک ایک مقام کا نام ہے، جہاں اسلامی فوج کے جانور جے تے کا است حدیث کی تشریح کے جانور جے تے کا کمات حدیث کی تشریح کے جانور جانب نبی کریم مقطعے نے اس مقام پد شکار کرنے اور پودے کا شئے ہے مع کردیا

تھا؛ اس لیکہ ادھردوسر مے اوگوں کے جانے سے سرکاری ملکیت کونقصان کا خطرہ تھا، ادریہ ممانعت ایک بخصوص زیانے کے لیے تھی اب سے تھم باتی نہیں ہے؛ البتہ حضرت امام شافعی اب بھی ممانعت کے قائل ہیں؛ لیکن ان کے نزدیک بھی مقام دج کے درخت کا نے یاشکار کرنے کی صورت میں جمان میں ہے، بیعنان کے قائل نہ ہوتا اس بات کی دلیل ہے کہ ان کے نزدیک بھی شخفیف ہے۔

﴿مُدينتِ مِين مرنے والوں کے لیے سعادت﴾

﴿ مِدِيثُ مُهِ ٢١٣٥﴾ وَعَن ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَن اَسْتَطَاعَ أَنْ

يَمُوْتَ بِالْمَدِيْنَةِ قَلْيَمُتْ بِهَا قَائِنُي آهُفَعُ لِمَنْ يَمُوْتُ بِهَا. رَوَاهُ احْمَدُ وَالتَّرْمِدِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيْتُ حَسَنٌ صَعِيْحٌ غَرِيْبٌ إِسْنَادًا.

حل عفلت: يموت: مَاتَ (ن) موتاً مرنا، اشفع: شَفَعَ (ن) شَفْعاً سُفارش كرنا_

مرجعه: حفرت این عررض الله منها سے روایت ب کرجناب نی کریم الله نے فرمایا جوفس مے می مرسکتا ہووہ مدیے ال میں مرے اس کیے کہ جو تھی مدینے میں مرے گااس کی سفارش کروں گا۔

خلاصة حديث مد تبسي مرنے والول كے ليے جناب ني كريم الله خصوص طور برسفارش كريں مے-

كلمات حديث كي تشريح فانى اشفع: مراد خصوص سفارش ب ابوالمعنى شفاعة منعصوصة "(مرقات ١٤٧١)-

﴿مدینه سب سے اخیر میں ویران هوگا﴾

﴿ مديث بْمِر ٢٧٣١﴾ وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلْمَ آخِرُ قَرْيَةٍ مِّنْ قُوبى الْإِسْلَام خَرَابًا الْمَدِيْنَةُ. رَوَاهُ التُّرْمِذِيُّ وَقَالَ هٰذَا حَدِيْتٌ حَسَنَّ غَرِيْبٌ.

حل لفلت:قرية: كاوَل يَحْقَوَىٰ۔

توجعه: حفرت ابو بريره رضى الله عند عدوايت م كه جناب ني كريم الله في فرمايا: اسلامي شرول من سعسب اخريل

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيب كقرب قيامت يسسب اخريس مديده مران موكا

كلمات مديث كي تشريح العرقوية من قوى الاسلام المخ: مراديه به كترب قيامت من پورى دنياويران بوجائ كي اس ورانیت کا شکار میندمنور و بھی موگا الیکن سب سے اخیر میں ؛ اس لیے کدو بال جناب نی کریم علق کا

جىدالمېرىدنون يے۔

﴿ آپ نیے هجرت کے لیے مدینه پسند کیا ﴾

﴿ مِدِيثُ بُهِرِ٣١١٣﴾ وَعَنْ جَوِيْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ أُوْطَى إِلَيَّ ائًى هَوْلَاءِ الثَّلَاقَةِ نَوَلْتَ فَهِي دَارُ هِجْرَتِكَ الْمَدِيْنَةِ أَوِ الْبَحْرَيْنِ أَوْ قِنْسُرِيْنَ. رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ.

حل لغلت: اوحى: أوْحلى (انعال) وكي كرنا، دار: كمر بَنْ دُور -

توجمه: حفرت جرين عبدالله عدوايت م كم جناب في كريم علية في فرمايا كدالله في مرع ياس وي ميمي كدية تن جليس میں(۱) دین(۲) بحرین (۳) قشرین ان میں سے آپ جہاں چلے جائیں وہی آپ کے لیے دار الجرت ہے۔

خلاصة عديث آب وجرت كسليا عن تنن جكه كا اختياره يا الكن آب فيدينه موره كو بندكيا-

أن الله اوحى إلى اى هؤلاء الثلاثة الغ:"بحرين"موجوده بخرافيائي نتشر كے مطابق ان كلمات حديث كي تشريح متعدد جزیروں کے مجموعہ کا نام ہے جو فیج غربی کے جنوب مغربی کوشے میں واقع ہے، ان جزیروں علسب سے بوا بریرہ بریرہ منامد ہے جس کا دوسرانام بحرین بھی ہے،ای بریرہ کےنام پر پورے ملک کو بحرین کہتے ہیں الین مدیث شریف اور تاریخ کی کمایوں میں" بحرین" کالفظ اس علاقہ کے متعلق آیا ہے جو جزیرة العرب کے شرقی ساحل پر تیلی بصرہ سے قطر اور ممان تک پھیلا ہوا ہے اور موجودہ بحرین کے مغرب میں واقع ہے،اس علاقہ کواب "احساء" کہاجاتا ہے؛لہذا یہاں صدیث میں بھی "بحرین" سے مرادوبی علاقہ ہےجس کا نام اب"احرار" ہے۔

"منسوین" ملک شام کے کا ایک شہرکا نام ہے، بہر کیف جناب نی کریم اللہ کے ارشاد کا مامل یہ ہے کہ اللہ تعالی نے مجھے العتیار دیا تھا کدان تین شہروں میں جس شہر کے بارے میں آپ کی خواہش ہو مکہ سے بھرت کر کے دہاں مطلے جائیں اور اس شہر کو اپنا مسكن قرارد يجيے بليكن تاریخ مدينه مل بيلها ہے كه اگر چه شروع ميں جناب نبي كريم الله كوان نين شيروں ميں ہے كى بھى ايك شهر ميں رہے کا افتیار دیا گیا تھا گرآخر میں مدینہ ی کوشعین کردیا گیا تھا، چناں چہ آپ کمہ ہے جمرت فرما کر مدینہ تشریف لے آئے۔

الفصل الثالث

﴿دِجَالِ سے مدینے کی حفاظت﴾

﴿ مِدِيثُ مُبِر ٢٦٣٨﴾ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَا يَذْخُلُ الْمَدِيْنَةَ رُعْبُ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ لَهَا يَوَمَثِلٍ سَبْعَةُ الْوَابِ عَلَى كُلِّ بَابٍ مَلَكًانٍ. رَوَاهُ الْهُ تَارِيّ.

حل لفلت: يدخل: دَخَلَ (ن) دُخُولًا واخل بوتًا ، رعب عَمرا بسُ الرَّحْ وَعُبَة.

قب جعه: حضرت ابوبكره سے روايت ہے كہ جناب ني كريم الله في فرمايا: مدينے ميں كانا د جال كارعب بحى داخل نه بوكاءاس ون مدینے کے سات دروازے ہول گے ہر دروازے بید دوفر شتے ہول گے۔

خلاصة حديث اس مديث شريف كاخلاصه بيب كدوجال كظهور ساال مدينه كوكوتى ورياخوف ندموكا

كلمات حديث كي تشريح لا يدخل المدينة رعب المسيح الدجال: ين الل مدينه كوكانا دجال كا خوف حبر برابر مجى نه ا موكا مسبعة ابواب: الواب عمرادرات إلى

﴿مدینے کے تعلق سے آپ کی دعاہ

﴿ صِرِيثُ بُمِ ٣٦٣٩﴾ وَعَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اللَّهُمُّ أَجْعَلْ بِالْمَدِيْنَةِ ضِعْفَىٰ مَا جَعَلْتَ بِمَكَّةَ مِنَ الْبُرَكَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيُّهِ.

حل لفات: ضعفى: دوچند، ضَعَف (ف)ضَعْفاً زياده كرنا

قوجعه: حضرت الس رضى الله عندس روايت م كه جناب في كريم الله في فرمايا: الااس بركت من سعدين كودوكي عطاكر

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصديب كدديد ين بهت زياده بركت بو

كلمات مديث كاتشرك اللهم اجعل بالمدينة ضعفى ما جعلت بمكة النع: ال كايرمطلب بيس ب كدرية منوره ك فضیلت کم کرمہ سے بڑھ کئ ، مدینہ منورہ کے لیے بیرایک جزوی فضیلت ہے جیسے مدیند منورہ کو بیر

شرف مامل ہے کداس کے گود عن جناب ٹی کر یم عظم مرفون ہیں۔

﴿ حرمین میں سکونت کی نضیلت ﴾

﴿ صَرَبُ ٢٢٣﴾ وَعَنْ رَجُلٍ مِنْ آلِ الْخَطَّابِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ زَارَنِيْ مُتَعَمِّدًا كَانًا فِي جَوَارِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنْ سَكَنَ الْمَدِيْنَةَ وَصَبَرَ عَلَى بَلَاتِهَا كُنْتُ لَهُ شَهِيْدًا وَشَفِيعًا يَوْمَ ﴿ الْقِيَامَةِ وَمَنْ مَاتَ فِي أَحَدِ الْحَرَمَيْنِ بَعَنَهُ اللَّهُ مِنَ الْآمِنِيْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

حل لفات: زار :زار (ن)زيارةُو يكنابيوم: ون جعايام.

قوجهد: خائدان خطاب کے ایک آدی ہے دوایت ہے کہ جناب نبی کریم اللغ نے فرمایا: جو محض بالقصد میری زیادت کرے گا قیامت کے دن وہ میراپڑوی ہوگا، اور جس فخض نے مدیند منورہ کی سکونت اختیار کی اور مصیبتوں میں وہاں مبرکیا تو میں قیامت کے دن اس کا گواہ اور شفیج ہوں گا، اور جو مخض حرمین میں ہے کی ایک میں مرے گا اللہ تعالی اس کوامن والوں میں اٹھائے گا۔

خلاصة حديث ال حديث شريف كاخلاصه بيب كه جس مخص كوموقع ميسر مو وه حرم بى ميسكونت اختياركر --

من زار نبی متعمد اکان فی جوادی النع: زیارت عام من مرادع؛ یعنی نزدگی فرندگی نزدگی النع: زیارت عام من مرادع؛ یعنی نزدگی ایران کی بادفات کے بعد مزاراقدس پر حاضری دی تو دونوں کو پر فضیلت حاصل ہے،

بشرطیکمدیند منوره کاسفرخالصة آپ کی زیارت کے لیے ہوا ہو، کوئی دنیوی غرض: مثلاً تجارت وغیرہ کا ندہو۔

﴿روضهٔ اطهر کی زیارت﴾

﴿ مديث بُهِ ١٩٣٧ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَمُ وَأُلُوعًا مَنْ حَجَّ فَوَارَ قَبْرِى بَغْدَ مَوْلِي كَانَ كَمَنْ زَارَ نِي فِي حَيَالِيْ. وَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيْمَان.

حل نفات: فزار: زَارَ (ن) زيارةُ وكينا، قبرى: قبر تَ قبور.

قوجمہ: حضرت ابن عمرض اللہ عنما سے مرفوعاً روایت ہے کہ جس مخص نے ج کیا اور میری موت کے بعد میری قبر کی زیارت کی تووہ ایسا ہے؛ جیسا کداس نے میری زندگی میں مجھے دیکھا ہو۔

خلاصة حديث ال مديث شريف كاخلاصه يب كدرون اطبرى زيارت كرنى جا بياسى بوى نسيلت ب-

کمن زار نی فی حیاتی: بیفنیات اس لیے عاصل ہے کہ آپ اپی قبر شریف یس زعرہ ہیں "لانه کلمات حدیث کی تشریف میں دائدہ ہیں "لانه کلمات حدیث کی تشریف میں الله علیه وسلم حی "(مرقات ۲۹/۱)-

ومدینه سے آپ کا کمال تعلق ک

﴿ وَدِينَ بَهِ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ مِنْ اللّهِ مَا لَا أَسُولُ اللّهِ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَاسَلّمَ كَانَ جَالِسًا وَقَيْرٌ يُحْفَرُ بِالْمَدِيْنَةِ فَاطَلَعَ رَجُلٌ فِي الْقَبْرِ، فَقَالَ: بِنْسَ مَصْبَعُ الْمُؤْمِنِ، فَقَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: بِنْسَمَا قُلْتَ قَالَ الرَّجُلُ: إِنِّى لَمْ أُرِدُ هَذَا إِنَّمَا اَرَّدْتُ الْقَتْلَ فِي سَبِيْلِ اللّهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: لَا مِثْلَ الْقَتْلِ فِي سَبِيْلِ اللّهِ مَا عَلَى الْآرْضِ بُقْعَةٌ اَحَبُ إِلَى اللهِ مَا عَلَى الْآرْضِ بُقْعَةٌ اَحَبُ إِلَى اللّهُ مَا عَلَى الْآرْضِ بُقْعَةٌ اَحَبُ إِلَى اللّهُ مَا عَلَى الْآرْضِ بُقْعَةٌ اَحَبُ إِلَى الْ يَكُونَ قَبْرِى بِهَا مِنْهَا فَلَاثَ مَرْاتِ. رَوَاهُ مَالِكٌ مُرْسَلًا.

حل المات: يحفر: حَفَرَ (ص) حَفْراً كُرُ ما كودنا ، بقعة: زين كالكراجع بِقَاع.

قو جعه: حفرت کی بن سعیدرضی الله عندے روایت ہے کہ جناب نی کریم الله بیٹے ہوئے تھاور مدینے میں ایک قبر کھودی جاری معی بنوایک آ دی نے قبر میں جھا تک کر کہا: قبر مومن کیلئے بری خواب گاہ ہے تو جناب نی کریم الله نے فرمایا: براوہ ہے جوتم نے کہا ہے، اس مخص نے کہا: میری مراویٹیوں ہے الکہ میری مراواللہ کی راہ میں شہید ہونا ہے، تو جناب نی کریم تلک نے فرمایااللہ کی راہ میں آب ہونے سے بہتر کوئی چیز میں ہے: البتہ زمین ایک کلوا ہے، جس کے بارے میں میری خواہش ہے کہ میری قبروہاں ہو، میآپ نے تین مرتبہ فرمایا۔ كلمات مديث كي تشريح الله صلى الله عليه وسلم بنسما قلت الغ: بها توييج يم في تواعد ك مطابق لفظ "فول" قعل ك لي بمى استعال كياجاتا ب الهداحديث كآخرى جمله قل عمرة في

حجة كمعن بين"اوراس تمازكودهمره شاريج جوق كيماته موتاب "كوياس جلهك ذريدوادي فين ساداك جان والى نمازك فضیلت کوبیان کرنا مقصود ہے کہ دادی فقیق میں جونماز پڑھی جاتی ہےاس کا تواب اس عمرہ کے برابرہے جوجے کے ساتھ کیا جاتا ہے، ای طرح دوسری روایت کے الفاظو قل عموة و حجة كامطلب بيہ كروادي عين من پرسى جانے والى نماز عمره و تج كے برابر ہے۔

﴿وادی عقیق میں نماز کی فضیلت﴾

﴿ صِيثَ بَهِ ٢٦٣٣﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ بِوَادِى الْعَقِيْقِ يَقُولُ: اَتَانِي اللَّيْلَةَ آتٍ مِنْ رَبِّي، فَقَالَ: صَلَّ فِي هٰذَا الْوَادِى الْمُبَارَكِ، وَقُلْ عُمْرَةً فِي حَجَّةٍ، وَفِي رِوَايَةٍ وَقُلْ عُمْرَةٌ وَحَجَّةٌ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُ.

حل لغات: وادى: بِهارُول يا تُيلول كرميان كى كشادكى جمع أو دِيَة ، الليلة: رات جمع ليالي _

قوجهد: حضرت ابن عباس رضى الله عنها سے روایت ہے كه عربن الخطاب نے كہا كه ميس نے وادى عقیق ميس جناب ني كريم الله كا كت الاكت وادى يس نماز ير عدا كمرف ساكي آف والے في آكركها: اس بابركت وادى يس نماز ير عيداور في كساتھ كياجانے

خلاصة حديث وادى عقيق ميں برحى جانے والى نماز كا تواب ج كے ساتھ كيے جانے والے عرب كے برابر بـ

عمات مدیث کی تشریح اوقل عموة فی حجة: قل احسب کمعنی میں ہے کہ دادی عقیق میں پڑھی جانے والی المازكا تواب ج كے ساتھ كيے جانے والے عمرے كے برابر ہے "قال الطيبى رحمه الله اى

احسب صلاتك هذه واعدلها بعمرة داخلة في حجة "(مرتات٢٠/١)_

كتَّابُ النُّنُوْعِ

﴿ خریدوفروخت کے اقسام ﴾

حضرت مصنف ہے عبادات کے بعد معاملات کے بیان کا سلسلہ شروع فرمایا ہے: اس لیے کدانسانی زندگی جس کا تعلق اس دنیا سے ہال میں معاملات کا ہونالا زمی امور ہے، اور قرآن وسنت نے جہال بھی عبادت کا تذکرہ کیا ہے معاملات کو بھی بیان فر مایا ہے اور معاملات کی بہت می اقسام اور صور تیں ہیں، فقہ اور احادیث میں ان سب کو بیان کیا ہے، پھر معاملات میں کون اہم ترین ہیں؟ بعض امحاب تصنیف نے عبادات کے بعد نکاح (کتاب الزکاح) کواختیار کیا اور بعض حضرات نے ''کتاب المبیوع'' کوشروع مل فرمایا ہے جیا کرصاحب مفکلوۃ نے ای کواختیار کیا ہے۔

اس عنوان کے تحت بیوئے کے علاوہ دوسری اور اقسام کو بھی ذکر کیا ہے جن کا تعلق کسب معاش ہے ہے۔ انسان کن ذرائع کواختیار کرے جواس کے معاش کا وسیلہ ہو؛ مثلاً: تجارت ، ذراعت و تیجر کاری (باغبانی) اور صنعت وحرفت یا اجرت بركام كرناوغيره صاحب مطکوٰ ق نے اگر چوعوان "المبوع" کوافتیار فر مایا ہے؛ کین ان تمام کے ساتھ ضروری اسباب معاش اور کسب معاش کے ذرائع کو بھی بیان فر مایا ہے؛ اس لیے کہ ان تمام اسباب معاش میں تجارت کونو قیت حاصل ہے اور اس کی ضرورت واہمیت بہت زائد ہے،

نیز تجارت کے ساتھ تقریباً تمام دومرے ذرائع بھی وابستہ نظر آتے ہیں، اگر ذراعت اور کاشتکاری کرنا ہے تو اس میں بھی بہت ی ضروری
اشیار کا حصول کرنا ہے جو فرید وفرو شت کے ساتھ ہی دستیاب ہوں گی اور اس کی تجارت کے شعبہ میں سلاز مت اور محنت کئی کی ضرورت

ہیش آئے گی تو اجارہ کی صورت میں احکام ہوں مے کو یا کہ "تجارت" اور فرید وفر خت ہی کی ضرورت ذائد ہے اور اس کی اہمیت بھی زائد
ہے! اس لیے اس کو بی مقدم رکھا۔

قرآن كريم في "تجارت" كا جازت واباحت بيان كرتے ہوكار شادفر ماياب: قال تعالى: "احل الله البيع" (الآبة)
اور اگر تجارت كى فضيلت كيلئ اس آيت سے استدلال كيا جائے۔ قال تعالى: "ان الله اشترى من المومنين" تو درست موكا، اور بياستدلال باي وجه موكا كوالله تعالى في الله علي الله الله الله بياس من تجارت كى ترغيب موكا، اور بياستدلال باي وجه موكا كوالله تعالى في الله بيان فرمائى من الناجر الصدوق الامين مع النبيين والصديقين والشهداء" بيان فرمائى من التاجر الصدوق الامين مع النبيين والصديقين والشهداء"

آپ کے اس مبارک ارشاد سے مجی تجارت کی فغیلت معلوم ہوتی ہے، نیز ایک روایت ش آپ کا بیار شاد مبارک بھی ہے 'ان اطیب الکسب کسب النجار الذین اذا حدّثوا لم یکذبوا''(الحدیث) (ترغیب: جر ۴ رص ۲۰ ۵ ۵)

اوراكك روايت ش آبكا ارثاد مي- "التاجر الصدوق تحت ظلّ العرش يوم القيامة" (ترغيب:ج١٦٠٥/٥٠٣)

ا گرتجارت کواختیارند کیا گیا (بعنی مجمی غلام) تهاری دنیایس امتحان ندبن جائیں۔ (بعنی مجمی غلام) تهاری دنیایس امتحان ندبن جائیں۔

منقول ب كدايك مرتبه حضرت عمر بازار مين آشريف لے مطاتو ديكھا كه بالعوم تجارت كرنے والے باہرے آئے ہوئے ہيں ، بيد د كيدكر حضرت عمر عملين ہوئے اور جب خواص لوگ جمع ہو مطاتو فرمايا (اوراس صورت حال كا تذكرہ كيا) اہلِ مجلس نے فرمايا: اللہ تعالیٰ نے فتو حات اورا موالي غمائم كی وجہ ہے ہم كوتجارت ہے مستغنی كرديا ہے ، حضرت عمر نے فرمايا: اگرتم لوگ ايسا كرو گے تو تمہارے مرد ان كے مردول كے اور تمہارى مورتيں ، ان كى مورتوں كى محتاج ہوجائيں گي۔

علامہ عبدائی کتائی فرماتے ہیں کہ حضرت عمری فراست اس امت کے بن میں بالک بچے ہوئی ؟اس لیے کہ جب اس امت نے مشروع طریقتہ پر تجارت کوترک کردیا تو اس کو غیروں نے اختیار کیا اور است مسلمہ غیروں کی مختاج ہوگئی، ہر چیز میں دوسروں کے مختاج ہو گئے (کہ جب وہ تجارت برغالب آگئے)۔(ماخوذازالتر تیب الادرایة نی ۱۳۷۰ س۲۷)

امت مسلمہ برلازم ہے کہ زیم کی سے متعلق تمام شعبائے معاش کو اختیار کرنا اور ضروری ہے۔

جبکہ کچ کی بہت ی اقسام میں اور اسکی مختلف صور تیں مردج ہیں ؛ اسلے ''المیوع'' جمع کیسا تھ تو فرمایا ہے اور بھتا اور اسکی مختلف صور تیں مردج ہیں ؛ اسلے اور اس کی اور اس کی دوسر الفظ اسکا واحد' بھی '' ہے ، اکثر اور بیشتر یہ لفظ فروخت کرنے کے معنی میں استعمال ہوتا ہے اور اس کا دوسر الفظ الشتری نعین فرید کرنے دالا) اور دوسر امشتری (خریدنے والا) اور

جس فی رکوخریداور فردخت کیا جاتا ہے اس کو بھی اورجس شی کے ذریع فرید کرتا ہے اس کو دہمن 'اور قیت کہا جاتا ہے۔

بہر حال جس شکی کوفر وخت کرنا ہواور خرید کرنا ہووہ ٹی رشر عا '' بمثن'' با قیت ہونے کی صلاحیت رکھتی ہو، یہ شرط لازم ہے؛ لہذا جو شکی شرعاً ایسی نہوگی اس کی تج نہ ہو سکے گی ؛ مثلاً : حرام اشیار اور نجس اشیار ، شراب ، مینة ، خزیر (دغیر ہم)۔

بيع كاشرى اوراصطلاحى معنى المعال بالمعال على سبيل التراخى" اورية رافى الى وقت بى معتر بوكى جب كه اشرعاً وه معتبر مود اكراز روئ شرع وه تراخي كالعدم بي توباجم رضا مندى محى كالعدم موكى ،اوروه فاسداور باطل رے گی؛ چنانچ قرآن کریم میں ارشاد باری تعالی ہے"ان تکون تجارة عن تو اص " عقد رہے کارکن ایجاب اور قبول ،اورشرط تراخی ، نیز دونوں فریق شرعاً عقد کی اہلیت بھی رکھتے ہوں ؛ لینی عاقل ، بالغ ہوں ،اورعقد عقد رہے کارکن ایجاب اور قبول ہونے پر'نے" میں خریدار کی ملکیت ہوجائے گی ،اور بائع کی ملکیت ہے

خارج ہوگی ،اورشن میں بائع کاحق ملکیت ثابت ہوگا۔

المتسام بيع: (١) مع تام (٢) كا موقوف يامعلق (٣) كا فاسد (٣) كا باطل (٥) كا مطلق (٢) كاملم (٤) كام مرف (٨) كا بالتعاطی (۹) بیع من یزید (۱۰) بیع مرابحه (۱۱) بیج تولیه (۱۲) تیج وضعیه (وغیرجم) ان تمام کی تعریفات و تفصیلات فقه کی کتب میں ہے۔ خلاصه کلام بیہ ہے کہ عقد ہوشری تو اعداور ضوابط پر؛ تا کہ وہ حاصل شدہ مال حلال اور طیب ہو، نہ کہ بالباطل ؛ جس کی نہی فرمائی، قال تعالىٰ: "يا ايها الذين آمنوا لا تاكلوا اموالكم بينكم بالباطل" (الآية)

اسلاف کرائم نے تجارت کو بہت زائد پیندفر مایا اوراس کو اختیار بھی فر مایا ہے۔حضرت عبدالرحمٰن بن عوف کی ایومحابر مہاجرین میں سے ہیں وہ بڑے تا جر تھے۔اورآ بے نے ان کی تجارت میں برکت کی دعا فر مائی ، کپڑے کے بڑے تا جر تھے اور حضرت عبداللہ بن مبارک کمارمحد مثن میں ہوئے ہیں، وہ بھی بڑے تا جریتھ، جب تک حضرت ابو بکر صدیق مصب خلافت پر فائز نہ ہوئے تھے بڑے تاجرتھ، کپڑے کی تجارت تھی۔

ایک اہم بات سے ہے کہ تجارت میں جو برکت ہے وہ اس وقت تک ہے جب کہصد تن اور امانت کے ساتھ اور شرعی اصول بر مبنی مو، حصرت عرض میفرمان تھا'' جابل لوگ جارے بازاروں میں تجارت نہ کریں' چنانچہ وقتا نو قتا حضرت عرفر بازار میں تشریف لاتے اور لبعض جاہل تا جروں کو در ّے ہے مزاہمی دیتے تھے اور فر ماتے تھے کہ ہمارے بازاروں میںصرف وہی لوگ خرید وفر وخت کریں جن کو تجارت ك شرى احكام كاعلم جو - (احيار العلوم اردو:ج رقط: ٣١٥ رص: ٥ ١٥ ، وطبات فقيدالاسلام ج: اصر ١٣١٧)

ابلِ علم كا قول بكر كسب الحلال اصل الورع واساس التقوى الين العارب (٢٩٣٥) معاش انسانى زندگى من خالق ارض وموات نے اوقات كى تشيم كوبيان كرتے ہوئے ارشاد فرمايا به وجعلنا النهاد

معاشا" اوربنايا هجهم في ال المحاشك لي "وقال تعالى: "وجعلنا لكم فيها معايش،قليلا ما تشكرون".

قرآن كريم كي آيات شي درق ومعاش كوهل رب فرمايا ب"قال تعالى: فانتشروا في الارض وابتغوا من فضل الله" (جد) الله تعالى في اسباب معاش زين كم عقف حصول من جميلات موسة بين الهذاجس كوجس جكدسايي معاش حاصل موف والی ہےاس کے لیے مباح قرار دیتے ہوئے فر مایا ہے کہ زمین میں پھیل جاؤ اور نضل اللہ کو حاصل کر وہ تلاش کر و سمندری سفر کرنا ہے یا كخشى كاسفر، قرآن كريم من اجازت واباحت فرمائى ب "و آخرون يضربون فى الارض المخ" كسب طال اورطلب حلال ك لیے بہت سے اسباب اور وسائل بیدا فر مائے اور پھر بندوں کو ان تمام اقسام کی جانب مائل فر مایا ہے۔

کسبِمعاش اورکسبِ طلل اورا مادیث میں کسبِ معاش اورکسب طلل کی تاکید ہے، ایک مدیث میں آپ علی ایک مسبِ معاش اور کسبِ طلل کسبِ المحلال فریضة بعد الفرائض "(مکلوة) اس ارشاد نبوی

میں کسب معاش ادر کسب طال کی اہمیت کابیان ہے کہ اس کوفرض قرار دیا گیا ہے، اور جب اس کوفرض کا درجہ دیا گیا ہے تو بقیناً وہ طاعت

اورعبادت كزمر عي من محى آئكا

ببرحال الملِ علم نے کسیب معاش کوتین اتسام رہسیم فر مایا ہے: (۱) مباح (۲) فرض (۳) مستحب۔

قرآن اور مدیث نے اس امور کو بہت تاکید کے ساتھ بیان فر مایا ہے کہ کسب محض نہیں ؛ بلکہ '' کسبِ طلال'' مطلوب ہے، اور ملال وہ ہے جس کو قرآن اور مدیث نے ملال قرار دیا ہے، اور قرآن وسنت کے اصولوں پر جو مامٹل ہوگاوہ کی قانونِ البی میں ملال ہو سکتا ہے، اور جواس کے خلاف ہے دہ ملال نہیں ہوگا۔

کب اوراکشاب کے معنی حاصل کرنا، کمائی ، محنت اور جدو جہد کرنا ہے ، نیز دست ویاز وکی محنت سے حاصل کردہ اسباب معاش ۔ حقوق اللّٰد اور حقوق العباد عبادات ہے احکام اور مسائل اور قانونِ زندگی دور ہنما اصولوں پر جنی ہیں: (۱) جن کا تعلق حقوق اللّٰد اور حقوق العباد عبادات ہے ہے ، نیز ای کواس طرح بھی تعبیر کیا جاسکتا ہے کہ

(١) حن الله وعنوق الله (٢) اورحن العبد بحقوق العباد

آپ علی کی بعثت ہے بل ندحوق الله کی وقعت تھی اور ندحوق العباد کا کوئی تصور تھا؛ اس لیے کہ تقریباً تمام دنیا جہالت سے قریب ترتھی! جس کوعہد جابلیت سے بی یاد کیا جاتا ہے۔

جب آپ عظی کی بعث ہوئی تو آپ علی اوات کی حقیقت ہے ہی باخبر فر مایا ، اور عبادات کے احکام دسائل کی بھی تعلیم ارشاد فر مائی ، اور اس کے احکام دسائل کی بھی تعلیم ارشاد فر مائی ، اور اس کے احکام دسائل بھی تفصیل کے ساتھ ارشاد فر مائے اور جملہ اقسام معاملات کے اصول وضوا اول بیان فرمائے ، اور ان بڑمل کرنے کی بہت زیادہ تاکید فرمائی۔

حقوق العباداور معاملات بی ایک اہم ترین شعبہ تجارت اور کسب معاش کا ہے، کسب معاش کے بعض اسباب اور ذرائع ہیں ان سب کو واضح عبارات کے سماتھ است کے سمامنے پیش فر مایا ، اور حضرات صحابہ نے بھی انہیں اصولوں پر تربیت فر مائی۔ اللہ تعالیٰ ہم کو بھی آئیس اصولوں پرگامزن ہونے کی تو نیش عطا فر مائے اور تمام است اسلامیہ اس کو اختیار کرے۔ و باللہ التو فیق۔ لاحول ولا قوہ الا باللہ

﴿بِأَبِ الْكَسُبِ وَطَلَبِ الْحَلاَلِ ﴾ النصل الاقِل

﴿ اپنے دست بازو کی کمائی اختیار کرنا ﴾

﴿ مِدِيثُ مُهِ ٢٢٣﴾ عَنِ الْمِقْدَادِ بْنِ مَعْدِى كَرِبَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : مَا أَكُلَ اللَّهِ مَا أَكُلَ مِنْ عَمَلِ اللَّهِ مَا أَكُلُ مِنْ عَمَلِ اللَّهِ مَا أَكُلُ مِنْ عَمَلٍ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِي اللَّهِ دَاؤَدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلٍ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِي اللَّهِ دَاؤَدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلٍ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِي اللَّهِ دَاؤَدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلٍ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِي اللّهِ دَاؤَدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلٍ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِي اللّهِ دَاؤَدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأَكُلُ مِنْ عَمَلٍ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِي اللّهِ دَاؤَدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلٍ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِي اللّهِ دَاؤَدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلِ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِي اللّهِ دَاؤَدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأَكُلُ مِنْ عَمَلِ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِي اللّهِ دَاؤَدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلِ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِي اللّهِ دَاوْدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلِ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِي اللّهِ دَاوْدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عَمَلِ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِي اللّهِ مَا وَاللّهُ مَا وَاللّهُ مَا مُنْ اللّهِ وَالْ نَالَهُ عَلَيْهِ السَّالَامُ عَلَى مِنْ عَمَلِ عَلَيْهِ وَإِنَّ نَبِي مِلْكُوا وَاللّهُ عَلَيْهِ السَّلَامُ اللّهُ عَلَى مِنْ عَمَلِ عَلَيْهِ وَاللّهُ مِنْ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ السَّلّامُ اللّهُ عَلَيْهِ مِنْ عَلَيْهِ مِنْ مِنْ عَلَيْهِ السَّلّامُ اللّهُ عَلَيْهِ السَّلّامُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللّهِ عَلَيْهِ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُولُ اللّهُ عَلَيْهِ مِنْ اللّهُ عَلَيْهِ عَلَى اللّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ ال

قرجمه و مطلب: حفرت مقداد بن معدى كرب نفش كيا كدرسول الله على في ارشادفر ما يا بنيس كها يا كم فض في بهتر اس كهانے سے كہ جوائے دست بازوسے كما يا ہوا ہے ، اور بلا شبداللہ تعالیٰ كے ني حضرت داؤ وائے دست بازو كے عمل سے (حاصل اور كسب شده) كماتے تھے۔ (بنارى)

مقعمد بیان بیہ کدانسان دوسرول کا دست مگرند بن کراپنے دست وبازوکی محنت کے ساتھ معاش کو اختیار کرانے ہیں بہترین خوردونوش ہے، اور تمثیلاً حضرت داؤد کا تذکرہ فرمایا ہے کہ وہ بھی اپنا معاش خود ہی

كلمات مديث كي تشريح

عاصل کرتے تھے؛ چنانچے قرآن کریم میں ان کی صنعت و حرفت کا بیان بھی ہے؛ حالانکہ دھنرت داؤڈ نی اور رسول ہونے کے ساتھ عظیم ترین حکومت وسلطنت پر بھی فائز ہیں، اور حضرت داؤدکی ایک و چنفسیص یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے آپ کو وہ صنعت براوِ راست تعلیم فرمائی تھی ، کہ مافی ان تعالیٰ: ''وعلمناہ المنح" بہر حال اس تمثیل ہے ترغیب ہے کہ بند وکسب معاش میں خود کفیل ہو، جس میں خیر و برکت کے ساتھ "فافلہ یعضمن فو اللہ ہ کشیر ہیں (ارتعلیٰ مع التشریک اسعدی)۔

وانسانوں کیلئے معاشیات

الله تعالى نے انسان كے ليے اسباب معاش بيدا فر ماكراس كومكلف فر مايا ہے كه وه حسب فقد رست محنت ومشقت برداشت كرتے ہوئے أن اسباب كوافقيارے اوراس كے ليے خاص طور پر ترغيب كے ساتھ متوجہ فر مايا ہے قَالَ تَعَالَى "وَلَقَدْمَ كَنْكُمْ في الْآرْضِ وَجَعَلْنَالَكُمْ فِيْهَامَعَايِشَ" (الاعواف ٧٠١)" وَقَالَ تَعَالَى: هُوَ الَّالِيٰ خَلَقَ لَكُمْ مَافِي الْآرْضِ جَمِيْعًا" (البقره ١٩٧)

رکسب جلال ہی مطلوب ہے ہ

﴿ صِدِيثُ مُرِ ٢٦٣٥﴾ وَقُنْ آبِي هُوَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ :إِنَّ اللهَ طَيِّبُ لَا يَقْبَلُ إِلَّا طَيِّبًا وَإِنَّ اللهَ آمَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ بِمَا آمَرَبِهِ الْمُؤْسَلِيْنَ فَقَالَ: يَاآيُهَا الرُّسُلُ! كُلُوا مِنَ الطَيْبَاتِ وَاغْمَلُوا صَالِحاً، وَقَالَ تَعَالَىٰ: يَاآيُهَا الَّذِيْنَ امَنُوا كُلُو مِنْ طَيْبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ثُمَّ ذَكَرَ الرَّجُلَ يُطِيْلُ وَاغْمَلُوا صَالِحاً، وَقَالَ تَعَالَىٰ: يَاآيُهَا الَّذِيْنَ امَنُوا كُلُو مِنْ طَيْبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ثُمَّ ذَكَرَ الرَّجُلَ يُطِيْلُ السَّفَرَ اشْعَتُ اغْبَرَ يَمُدُ يَدَيْهِ إِلَى السَّمَاءِ يَا رَبِّ يَا رَبُّ وَمَطْعَمُهُ حَرَامٌ وَمَشْرَبُهُ حَرَامٌ وَمَلْبَسُهُ حَرَامٌ وَعُلْمَ اللَّهُ مَا أَنْ يَسْتَجَابُ لِللَّكِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

ذکر کیا جائے تواس سے مقصودا خلاق رذیلہ سے (بندہ) پاک اور صاف ہوا در خصائل محمودہ کے ساتھ آراستہ ہو،اور مال کے ق میں طیب ہونا کہ دہ حلال ہوا ورعمہ ہر بن صاف و تقرابو ہر تم کی کراہت سے ؛ لہذا کسب معاش میں اس حقیقت شرعیہ کا کمل خیال رکھے ،اور مال حرام کا ایک اثر بیہ و تا ہے کہ دعا قبول نہ ہوگی ؛ اگر چہوہ جج وغیرہ فی سبیل اللہ کے سفر میں بھی ہو، حرام غذاکی وجہ سے دعا کیے قبول ہو؟ اشعث: بالوں کا براگندہ ہونا، اغہر :گردآلودہ ہونا، کہ سفر کی بیدو خاص حالتیں ہیں۔

﴿آئندہ کے لیے﴾

﴿ صريتُ بْمِر ٢٦٣٦﴾ وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ : يَاتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يُبَالِي الْمَرْءُ مَا آخَذَ مِنْهُ آمِنَ الْحَلَالِ آمْ مِنَ الْحَرَامِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُ.

ترجمه: حضرت ابو ہرمے اُنظل کیا که رسول الله عَلَيْنَ نے فرمایا: لوگوں پر نیز ایک زمانداییا آئے گا کہ (اس میں)انسان پرواہ نہیں كركا جومال لے رہاہے كياده حلال بياحرام_(بناري)

مقصد بیان بیہ کر ترب قیامت کے وقت علم اور عمل نہ ہوگا، مال کی محبت عالب ہوگی، اور مال کا کامت صدیث کی تشریح کا مقامی تر رہے گا، حلال ادر حرام کا متیاز ندر ہے گا۔

خورع اور تقویٰ پ

﴿ مِدِيثُ بِمِ ٢٢١٢﴾ وَعَنِ النَّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْحَلَالُ بَيِّنَّ وَالْحَرَامِ بَيِّنٌ وَبَيْنَهُمَا مُشْتَبِهَاتٌ لَا يَعْلَمُهُنَّ كَثِيْرٌ مِنَ النَّاسِ فَمَنِ اتَّفَى الشُّبُهَاتِ اسْتَبَرَّا لِلِينِهِ وَعِرْضِهِ وَمَنْ وَقَعَ فِي الشُّبُهَاتِ وَقَعَ فِي الْحَرَامِ كَالرَّاعِيْ يَرْعَىٰ حَوْلَ الْحِمَىٰ يُوْشِكُ اَنْ يَرْتَعَ فِيْهِ الْاوَاِنَّ لِكُلُّ مَلِكٍ حِمَّى آلًا وَإِنَّ حِمَى اللَّهِ مَحَارِمُهُ آلًا وَإِنَّ فِي الْجَسِّدِ مُضْغَةَ إِذَا صَلْحَتْ صَلْحَ الْجَسَدُ كُلُّهُ وَإِذَا فَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ كُلُّهُ آلَا وَهِيَ الْقَلْبُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

متوجعه: نعمان بن بشرر فق كيا كرسول الله علي في ارشادفر مايا: طلال ظاهر باورحرام (بهي) ظاهر باوران دونول ك درمیان مشتبہ ہیں جن کوا کٹرلوگ نہیں جانتے ، پس جو خص مشتبرا مورے بچااس نے اپنے دین اورا پی آبر دکو پاک (اور محفوظ) کرلیا ، اور جو مشتبه امور میں جتال ہو گیا تو وہ حرام میں جتال ہو گیا اس جروا ہے کی طرح جو کہ چراہ گا ہ کے قریب جراتا ہوتو اندیشہ ہے کہ وہ چراگاہ میں چائے ،خردارا ہر بادشاہ کی چاہ گاہ ہے ،خردارا بقینا اللہ تعالی کی (خاص) چاہ گاہ (لینی صد جواس نے مقرر کی ہے) اس کی حرام (كرده چزي) بين بخردار اينينا جسم بس أيك كوشت كالكزاب اكروه درست بوترتمام جسم درست بادراكرده بكركيا تواس كاتمام جسم مر جائے گا ،خبردار اوہ قلب ہے۔ (بخاری ملم):

مقعد بیان بہے کہ شریعت نے قرآن اور سنت کے ذریعہ طال اور حرام کو واضح کر دیا ہے بیان کر دیا ہے، اور جو خلاصۂ حدیث امور مباح ہیں ان کو بھی صاف کر دیا ہے، نیز محضورات شرعیہ بھی بیان کر دیئے گئے دلائل اور اصول کے ساتھ جن ے کوئی امر مخلی نہیں ہے،علاوہ ازیں (بعض وجوہات ہے) بعض اشیار میں شبہ ہوتا ہے کمن وجدوہ طلال کے ساتھ یامن وجہ حرام کے ساتھ مشتبہ ہوتا ہے، ایس صورت میں مخاط ہونالازم ہے اور جب تک سی ایک کے حق میں واضح نوعیت معلوم نہ ہواس سے اجتناب کیا جائے:اس لیے کہ اگراس کا اجتمام نہ ہوگا تو ائدیث توی ہے کہ حرام میں جتلا ہوجائے ، درع ادر تقوی ختم ہوجائے گا۔ (ماخوذ ازتعلی) بست من القلب: ایک جم (گوشت) کا ایک گؤا ہا اور اس قلب فا ہری کے ساتھ "قلب معنوی" کا ربط ہوا کرتا کل است حدیث کی تشریح ہے اللے ای کے اصلاح اللہ اللہ کا کا اللہ کا کا اللہ کا اللہ کا کا کا کہ کا اللہ کا کا کہ کا اللہ کا کا اللہ کا کا کہ کا اللہ کا کا کہ کا اللہ کا کا کہ کا کا کہ کا کا کا کہ کا اللہ کا کا کہ کا اللہ کا کا کہ کا کا کہ کا کا کہ ک کی فکررہی ضروری ہے اور تقوی بھی دراصل قلب (کمانی الحدیث) ہی میں ہوا کرتا ہے ؟اس لیے یہ بھی ضروری ہے کہ اس پرنظر اور اس ك فكرر باوراس وقت حرام سے بچاؤ موسكتا ب اس لياس مقام براس كو بيان فرمايا ب، اگر تر دد موكاتو قلب يربى اس كاورود موكار

(۲) صاحب كماب في روايت كے بعدروايات من چندايى اشيار كا تذكره فرمايا ہے جن ميں بيان ہے كدوه اشيار اوران كے ذربعة مدهال خبافت وكرابت الوده بوتاب جن سابقتاب لازم ب-(اسلاى)

(٣) شرى طور برجن اشيار كے متعلق نبى وارد موئى ہاور شارع نے ان منع فرمايا ہاس كے دودر بعين: (۱) حرام اور ناجائز (۲) مروه كدشر عالعض وجوبات كى وجد اس يس كرابت شرعيه بتقوى اورورع كالمتعنى أيه بكراس

ے بھی پر ہیز کیا جائے جو حلال بھی ہواور طیب مجی ہو۔

(٣) ان روایات یس نی بھی ہے اور خیاشت ہونا بھی بیان فر مایا ہے، بعض امور حرام اور بعض کے حق یس کراہت ہے، اور اس کاعلم دوسرے دلائل اور قرائن ہے ہوگا کہ س پر حرمت کا تھم ہے اور کس پر کراہت کا تھم ہوگا جس کی تفصیل آئندہ معلوم ہوگا۔ وصدیت نمبر ۲۲۲۸ کھو عَنْ رَافِع بُن خَدِیْج قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلّی اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلّمَ: فَعَنُ الْكُلْبِ
خَبِیْتٌ وَمَهُو الْهَعِیُّ خَبِیْتٌ وَ کَسْبُ الْحَجُام خَبِیْتٌ رَوَاهُ مَسْلِمٌ.

من جمع : حضرت رافع بن خدين في أنظل كيا كدرسول الله عَلَيْهِ في ما يا اكتاكى قيمت نالبنديده باورزانيك اجرت بليد باور سينكى لكانے والے كى اجرت نالبنديده ب-(مسلم)

اس روایت میں تین چیزوں کا تذکرہ ہے ،کلب (کنا) ،زنا کی اجرت اور مینکی کی اجرت ،اس روایت کے علاوہ خلاصة حدیث فرری روایات میں اور بھی اشیار کا تذکرہ ہورہاہے ؛مثلاً حدیث فمبر:۲۲۴۹م میں کا بن کی اجرت اور حدیث

نمبر: ۲۷۵۰ برمین خون کوفروخت کرنا اور مدیث نمبر: ۲۷۵۱ برمین بلی کی قیمت کی ممانعت کی گئی اوران کا خبیث ہونا اورآیدنی کا خبیث ہونا بھی فر مایا ہے ،سوال بیہے کہ '' خبیث'' کامفہوم کیاہے؟

بدلفظ '' طبیب' کی ضد ہے جس طرح لفظ طبیب و دمعنی پر والات کرتا ہے(۱) حلال ہوتا (۲) نفیس اور عدہ ، نیز یا کیزہ ہوتا اور کراہت شری ہے بھی پاک ہوتا؛ اس طرح لفظ خبیث ہے بھی دومفہوم ہوں گے(۱) حرام ہوتا (۲) اور مکروہ اور تا پہند بیرہ جس کو قلب نظیف آبول ندکرے اور اس کو نسیس ہے بھی تجبیر کیا جاسکتا ہے، بہر حال ایک لفظ ایک سے زائد معنی میں بھی استعمال ہوتا ہے۔

شهن ملب: لین کتر یا وفرو وخت کی قیت بظاہراس مدیث پاک بین علی الاطلاق کتے کی خرید وفر وخت کی ممانعت معلوم ہور بی ہے اوراس کے شن (وام) کی حرمت ارشا وفر مائی ہے۔

حضوات فقها كوام كى صداهب فى هذه المصنكة: حضرات المراقة اور فقهاء سلف كى ايك جماعت (وجمامير علام الله الدور فقهاء سلف كى ايك جماعت (وجمامير علام) كنزديك على الاطلاق مركة كى فريدوفروخت ناجائز اور حرام ب،ان احاديث سان حضرات كاستدلال ب؛ لهذا شكارى كمّا اور حفاظت وغيره كاسبكا يى حكم ب؛ كول كران احاديث من على الاطلاق ندكور ب

الم اعظم اورنقها عِكرام كى ايك جماعت كنزديك شكارى اورجس ضرورت كے ليے كئے كى شرعاً اجازت وى كئى ہاس كى خريد وفروخت (فى نفسه) مباح ہوگى، اوراس كى اباحث دوسرى احادیث سے معلوم ہوتی ہے؛ مثلاً برولس حضرت جابر (می) الا الكلب المعلم (منداحم) اور ترفدى مى بروایت حضرت ابو جربرة مروى ہے "الا كلب الصيد" (مى: ١٣١١، ج: ا) نيز بروایت حضرت ابن عباس مى ہوئى ہے دخرت ابن عباس مى ہوئى ہے دخرت ابن عباس مى دسول الله صلى الله عليه و سلم فى ثمن كلب الصيد،

اورامام طحادیؓ نے شرح معانی الا تاریس حضرات صحابہ کے تاریخی نقل کئے ہیں جن ہے اس کی اباحت معلوم ہوگئ۔ هاشدہ: ان روایات کے پیش نظریہ کہا جائے کہ جن روایات سے نمی معلوم ہوتی ہے وہ بھی (اگر چہ لفظ) علی الاطلاق ہیں مکران میں بھی استثنار ہوگا؛ تا کہ روایات میں تعارض نہ ہو،اوراس تنم کی بہت ی مثالیس روایات میں موجود بھی ہیں۔

ضروری وضاحت عباده شوق ہے اور بکٹرت اس میں رغبت ہے تو آپ عظافی نے دیکھا کہ کتوں کا پالنااوران کور کھنے کا صروری وضاحت بہت زیادہ شوق ہے اور بکٹرت اس میں رغبت ہے تو آپ عظافی نے اولاً علی الاطلاق کتوں کے تل کا تکم جاری فرمایا ، دھرت جابری رواعت میں ہے کہ آپ ملک نے ہم کوتل کلاب کا تکم فرمایا ۔ (الحدیث مکلون ۲۵۱)

اوردوسری روایات می ہے کہ بعد می علی الاطلاق الله تاکرنے سے منع فرماد یا اور چند خاص اقسام پر بی تھم باتی رہا، اور اس کے بعد آپ مالئے نے بالکلیم فل کرنے سے مع فرمادیا: (البتہ بلا ضرورت) اس کو بالنے کی آپ سالئے نے اجازت نہیں دی؛ بلکہ اس سے هد ت كرساته منع فرمايا باوراس كونقعان كوبيان فرمايا، ديمي مكتكوة :٩٥٠ پر،اوردوسري جكه بروايت معزت ابن عر كابدارشاد ب"امر بقتل الكلاب الاكلب صيد او كلب غنم او ما شية" (بخارى ومسلم).

عندہ: بہت مکن ہے کہ ابتدار علی الاطلاق شمن کلب کی نبی فرمائی ہواوراس کے بعددوسرےدور میں اس کا استثنار کیا مورواللہ الم مسئله: تمام الرعم كاس راتفاق بكر شكاراورزراعت (وغيره) كي حفاظت كي لي كما كاركمنا جائز بالبته حغرات علاء كرام نے بیمی مراحت کی ہے کہ من مگر کی تفاظت کے لیے کمار کھنا درست نہیں ہے! کیونکہ احادیث میں صید (شکار) زراعت کی تخصیص ے؛ مراہام شافق کے زریک جائزے کہ یہ می ضرورت ہے؛ اس کیے حدیث میں مذکورہ اشیاء پر قیاس کیا ہے۔

ا جرت زتا مساورزنا کی حرمت قانون اسلام کے مطابق علی الاطلاق ہے کہ جرآ ہویا دونوں کی رضا مندی کے ساتھ، بہر الجرت زتا مورت دونوں پر حد زنا جاری ہوگی؛ البتہ دونوں فریق میں سے جن پر جرکیا ہوا درآ خرتک دوسر نے رہت کی رضا مندی نہ موءاس پر حاز زنا جاری نه دوگی جس کی تنصیل کتاب الحدود میں معلوم موگی انشار الله.

زنا كذر بعد جوآمدنى مده خبيث العن حرام م، يرآمة زادورت كوبوياباندى كوسب كحق يسحرام م-حرب میں اور دوسرے علاقوں میں عبد جا بلیت میں زنا کاری عام تھی اوراس کو بھی نکاح کے نام کے ساتھ موسوم کرتے تھے، آج

مجى ونيايس زناكارى عام إدراس كى فتلف مورتس بين ، ببرمال سب بى حرام بين -

ال روایت (۲۲۴۸) می آپ الله کام کرامت سیکی کی اجرت کا محم (شرخ کی) ہے؛ اس لیے کہ مدیث نبر (۲۲۵۳) میں بروامت معزت انس مروی ہے کہ آپ میان نے سينكى كـذربيه علاج كرايا اورسينكى لكانے والے كوآپ علي في اجرت بھى عنايت فرمائى معلوم مواكد فى نفسه بيكل مباح اور حلال ب اور جب دہ طال اور مباح ہے، تو اس پرا جرت بھی طال اور مباح ہوگ ؛ مراس کے ساتھ ہی اس میں بھٹ وجوہ سے کرا ہت ہے کہ جس وقت آلد كے ساتھ خون كشيده كياجا تا بوده مندك ذريد سانس كے ساتھ كشيد بوتا ب جس بي توك امكان ب كملق ك ذريد اندرند يو في جائے ،اس اعتبار سےاس مس كرابت موكى -

ببرحال جبآب على في معاوض ديا إوريمل كرايا بإقواباحت ظاهر ب؛ للذاخبيث بمعنى كراجت موكى ،اوراى كراجت کی وجہے آپ ﷺ نے ایک سحائی کواس آ مرکو کھانے سے منع فر مایا اوراس کی اجازت ندی تھی ،اور پھر آپ تھے نے اگر اجازت دی مقى توبيفر مايا كداية جو يايداورغلام كوكهلايا جائي-(ويصيفكوة:٢٣٢،روايت عن محيصة")-

بددلیل ہے مباح اور طال ہونے کی ، نیز مروہ ہونے کی بھی ، یفصیل صدیث نبر: ۲۲۲۳ میں ہے۔ (اسدی)

مدید فروخت احدید فرایا ۱۹۵۳ می می آب مالی نیست منع فرایا ، ملی کادر عده مونا احادید سے تابت کی خرید وفرت میں الی کی خرید وفرت میں الی کی خرید وفر وخت میں اور تمام در عدے حرام میں الیمن الی کا گوشت حرام میں الیمن کا گوشت حرام میں الیمن کی خرید وفر وخت میں الیمن کی الیمن کی میں الیمن کی الیمن کی میں الیمن کی الیمن کی کا گوشت کرام میں الیمن کی خرید وفر وخت کے الیمن کی کا گوشت کرام میں الیمن کی خرید وفر وخت کے الیمن کی کا گوشت کرام میں الیمن کی کی کی کی کی کا گوشت کرام میں الیمن کی خرید وفر وخت کے الیمن کی کی خرید وفر وخت کے الیمن کی خرید وفر کے الیمن کی خرید وفر کی کی خرید وفر کی کی خرید وفر کی کی کردند کی کردند کے الیمن کی خرید وفر کی کردند کردند کی کردند کردند کی کردند کردند کردند کردند کردند کی کردند مباح ہے، اور عادہ کی انسانوں کے ساتھ مکانات میں رہتی ہے؛ اس لیے شریعت نے اس کے پس خورده (جمونا) کی نجاست کا حکم مرتفع کردیا ہے، غالبًا اس وجہ ہے می کداس کی ضرورت ہے، اور جب وہ اشیار ضرور بیش سے ہے اور قائل انتفاع بھی ہے تو اس وجہ سے لى كا بهدكرنا اوراس كى عاريت يرلين وين كرنا معروف باورمعمول به ب؛ البذاس كى ت عال اورجائز موكى "وهذا مذهبنا

ومذهب العلماء كافة"

البت صدیمی پاک میں اس کی جمن سے منع (نمی) فر مایا ہے تو وہ نمی برائے تنزیبی ہوگی ،اور یاوہ بلی مراد ہوجس سے انتفاع نہ ہو سکے، قاله النووی کله (ازتیلق:۲۹۸) اس کیے صدیمت کی نمی پرنظر کرتے ہوئے یہ کہا جائے کہ اس کی جمن (قیمت) کوازروئے احتیاط اور ورح استعمال نہ کیا جائے اور اسلاف میں بعض معزات نے صدیمت کے طاہر کے مطابق ناجا تربھی فرمایا ہے، وبد قال ابو هر یو ق و طاق س و مجاهد آ. (ایناً:۲۹۰)

حلوان المكاهن: لين كائن (كمل كهانت) كاجرت: يه طاوت " سے ماخود ب، بمعنى مضائى، اور كائن كى اجرت مضائى اور شرفى سے تعبير كى كى اجرت مضائى اور شيرنى سے تعبير كى كى ہے، اوراس طرح رشوت كو بھى طوان سے تعبير كيا جاتا ہے، بہر حال بيا جرت بى ہے، تعبير جو بھى ہو۔ (ارتبلق وغيره)

گاهن: وہ فض جوغیب کی خردے،آئندہ ہونے والے حالات بتلائے ، ییمل اور پیشر حرام ہاوراس کے ذریعیہ آرتی ہمی حرام ہوگی۔ هاخدہ: اس طرح بعض عامل پوشیدہ اور گم شدہ اشیاء کے مل پراجرت لیتے ہیں ، یہی اس کے ساتھ مشابہ ہے جو بالکل ناجائز ہاس کو عوّاف مجمی کہا جاتا ہے ،اور اس طرح نجوی (کاعمل) بھی ناجائز ہے اور اس کے پاس جانا اور اس سے احوال معلوم کرنا بھی ناجائز ہے۔ (شرح نودیؒ:۲/۱۹)

اب بندا کی حربید و فروخت بیرو فرای مدیث نبره ۲۷۵ میں آپ عظی نے خون کی قیمت (لیمنی اس کی خرید و فروخت) سے منع فر مایا حون کی خرید و فروخت ہے؛ لبذا اس نبی کی وجہ سے اس کی شمن ناجائز اور حرام ہوگی؛ کیونکہ خون نجس هی ہے اور هی نجس شرعاً مال

(متعوم) کے حکم میں ٹیس ہے جس پر خرید وفروخت کے احکام جاری ہوسکیس ، ایسی آمدنی کو طلال اور پاکٹبیس کہا جائے گا۔ فمین دم کوسٹنگ کی اجرت پر قیاس نہیں کیا جاسکتا ؛ کیونکہ کہ وہ عمل کی اجرت ہے اور علاج کی ایک صورت ہے جس میں خون فاسد کو

نكالا جاتا ہے؟ اس ليے دونوں كے درميان بہت فرق ہے۔ فاقهم

عنده: اگراضطراری صورت حال محقواجازت موگ عطیه کرنے یا خرید کرنے کی۔

باب بذای مدیث نمبر:۲۲۵۱ مین آپ نے بھراحت ان اشیاد کی حرمت کو بیان فرماکران کی حرام اشیاد کی تجارت اور کی تعارف کی تع

مرداری حرمت بھی قطعی ہے اور اس کی تجارت بھی حرام ہے ،اور خزیر کی حرمت اور اس کا بخس العین ہوتا اور اس کی تجارت بھی حرام ہے ،اور بنوں کی صنعت بھی حرام ہوگی)۔

معسنله: جوچیز حرام ہواس کواپن حقیقت وحرام پر رکھتے ہوئے جائز نہیں کہ (اس سے کس بھی تنم) کا انتفاع کیا جائے جب تک کہ اس میں کوئی تحول اور تغیر و فیرہ ضاور (از تقریر تریزی: ۲۲۰، معزیت مدثی)

مرداری چربی کا تھم مرداری چربی جرام اور نجس ہے؛ لبندااس کی خرید وفر دخت بھی حرام ہے اور اس ملرح اس سے کوئی انتفاع بھی جائز نہ ہوگا؛ لبندااس کو آگے میں بکھلا کر بھی وہ چربی ہی ہے، مادہ میں کوئی تغیر نہیں آیا۔

الل كتاب يبودنے اس ش اس حيله كرى كے ماتھ اس كوطلال قرار ديا تھا؛ جس كى دجہ سے آپ تھا گئے نے ان كى اس حيله مازى پرلعنت فرمائى ہے اوراس كے بعد بھراحت ارشاد فرمايا كہ وہ حرام (ہى) ہے، يجى اكثر الل علم اور جما ہير علاد كا غرجب ہے، اس سے كسى مجى قسم كا انتفاع جائزن ہوگا۔ نه به امام ثانی به به کدانسان این جسم پرتواس کواستعال نیم کرسکتا ،البته و نگرانفاع جائز به به مثلاً کشتی میں اس کالیپ کرتا ، جراغ میں جلاتا و غیر و ذلك معالیس یا کل و لا فی بدن الا دمی۔ (ارتعلیق و فیرو ،س:۸۹)

چاں یں ہوا ہار حوں است سے نور کیے خمیر هو راقع ہے ہیع کی جانب! لیمن فرید وفرو وفت حرام ہےاور التفاع (فدکوروفی الحدیث) علقه ہو: درامل ان صفرات کے نزویک خمیر هو راقع ہے ہیع کی جانب! لیمن فرید وفرو وفت حرام ہےاور التفاع (فدکوروفی الحدیث) کی جانب راجع نیں۔(ایناً)

مدیث نمبر:۲۱۵۲ میں مجی سرداری چربی کی حرمت اور یہودی حلا کری پرآپ ماللے کی اعنت کا تذکرہ ہے جس سے اس کی شدید ندت مجی معلوم ہوتی ہے۔

رثمن كلب

﴿ مديث مُبر ٢٧٣٩ ﴾ وَعَنْ آبِي مَسْعُوْدِ الْآنْصَارِي اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَهَى عَنْ فَمَنِ الْكُلُبِ وَمَهْرِ الْهَعِيِّ وَحُلُوانِ الْكَاهِنِ . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ .

مرجه : صفرت ابوسسعود انساری نقل کرتے بیں بلاشہ نی اکرم ملک نے کتا کی قیمت سے اور زانید کی کمائی (اجرت) سے مع فرمایا ہے اور کا بمن کی اجرت (مشمائی اور تخنہ) سے (مجمی) منع فرمایا۔ (بغاری سلم)

﴿ غون کی غرید و فرو شت﴾

﴿ مديت بُهر ٢٧٥﴾ وَعَنْ اَبِي جُحَيْفَةَ آَنَّ النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَهٰى عَنْ قَمَنِ اللَّمِ وَلَمَنِ الْكُلْبِ وَمُديت بُهر ٢٧٥﴾ وَعَنْ اَبِي جُحَيْفَةَ آَنَّ النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَهٰى عَنْ قَمَنِ اللَّمِ وَلَمَنِ الْكُلْبِ وَمُو كِلَهُ وَالْوَاضِمَةَ وَالْمُسْتَوْضِمَةَ وَالْمُصَوَّرَ. وَوَاهُ الْهُعَادِي.

توجمه: حطرت ابرجیدة مروى م كني اكرم الله في خون كى قبت (اوراس كى خريد فروخت) اورك كى قبت اور ذائيك اجرت سه منع فرمايا اورسود كما في والمادر كودف والى مورت اور كمواف والى عورت اور كمورت اوركم كمورت كمورت كمورت اوركم كمورت كمورت

خون کی تریداور فروشت کا عظم معلوم ہو چکا ، اور اس میں اکل ربوالینی سود کی آمدنی کا حرام ہونا اور اس برلعنت کا ہونا فیکور ہے اور "الو اشعمة": بد الوشعم سے ماخوذ ہے ، سوئی وغیرہ کے ذریعہ بدن (کھال) میں گدائی کرنا ، اور

اس میں نورہ ، کل وغیرہ بھرنا جس سے کررنگ ابھر جائے ، عرب میں عورتیں اکثر ایسا کرتی تھیں ، وہ عورت جو گدائی کرائے اور جو عورت گدائی کرے ، پیل ناجا تز ہے اور باحث ِ احت ہے۔

تصویر سازی کا تھی ایک جا تداری تصویر ہے جس کا بنانا اور بنوانا جائز نہیں ہے؛ للذا تصویر سازی کے ذریعہ کسب تصویر سازی کا تھم معاش مجی جائز نہیں ہے، احادیث میں تصویر سازی پرشد بدوعید بھی آئی ہے؛ چنا نچہ بروایت عبداللہ آپ

كارثاد ع "اشد الناس عذاباً عند الله المصورون". (مكلوة: ازص: ١٨٥ بغارى وسلم)

البت غیر جاندار کی تصویرینائی جائے اوراس کو ذریعہ معاش بھی بنانا بلا کراہت مباح اور جائز ہے جیسا کہ برواہت معنداللہ بن مباس (ایک واقعہ) مروی ہے کہ ایک مخص تصویر سازی کا چیشہ اختیار کیے ہوئے تھا، جب حضرت ابن عباس نے اس پروعید سنائی تو وہ مخص بہت فکر مند ہوااور اس کے چیرہ کا رنگ پیلا پڑ کیا ، تو پھر حضرت عبداللہ بن عباس نے اس کو (بیتتریج کرتے ہوئے) فرمایا : "و کل شیء لیس فیہ دوح"۔ (مکلو تا ۱۳۸۷ زبناری) بہر حال اس میں کوئی حربے نہیں ، جائز ہے۔

﴿ هِرامِ اشياء كا حكمٍ ﴾

﴿ مديث تبر ٢١٥١ ﴾ وَعَنْ جَايِرِ اللَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ عَامَ الْفَتْحِ وَهُوَ بِمَكَّةَ

إِنَّ اللَّهَ وَرَسُولَةً حَرَّمَ بَيْعَ الْمَعْمِ وَالْمَيْتَةِ وَالْجَنْزِيْرِ وَالْآصْنَامِ فَقِيْلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ِ ا اَرَآيْتَ شُحُومَ الْمَيْتَةِ قَالَتُهُ تُطْلَىٰ بِهَا السُّفُنُ وَيُدَّعَنُ بِهَا الْجُلُودُ وَيُسْتَصْبَحُ بِهَا النَّاسُ فَقَالَ: لَا هُوَ حَرَامٌ ثُمُّ قَالَ: عِندَ ذَٰلِكَ قَاتَلَ اللَّهُ الْيَهُوٰ وَ إِنَّ اللَّهَ لَمَّا حَرَّمَ شُهُوٰمَهَا ٱجْمَلُوٰهُ ثُمَّ بَاعُوٰهُ فَٱكُلُوٰ لَمَنَهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجعه: حضرت جابر عمروى ب كدانبول في رسول الله عليه سناآب عليه فرمار ب تصفح كدواليس، اورآب 🐲 (اس وقت) مكه من قیام فرمایتے، بلاشبراللہ تعالیٰ نے اور اس كے رسول نے شراب كی خربید وفروشت اور خزیر اور بتوں كی خربیر وقرو وقت كوحرام كرديا ہے،كى في سوال كيايارسول الله امردارى جربى كے متعلق (كياتكم ہے) آپ تا في خردي، كول كداس سے کھتیاں پائش کی جاتی ہیں اور چڑے اس سے میلنے کیے جاتے ہیں اورلوگ اس سے جراغ روش کرتے ہیں؟ لیس آپ عظف نے ارشاد فرمایا: مت استعال کروتم ، و وقو حرام ہے، پھرای کے ساتھ فرمایا: اللہ تعالی یہودکو برباد کرے ، اللہ تعالی نے جب ان پر مردار کی جریوں کو حرام کیا تو انہوں نے اس کو تکھلا یا اور پھراس کی خرید دفر دخت کی اور اس کی قیمت کو کھایا۔ (بخاری مسلم)

الروایت سے اللہ معلوم ہوا کہ حرام اشیار سے انتفاع اور ان کی تجارت کرنا اور ذریعہ معاش کمات حدیث کی تشری بنانا حرام ہے، آپ ماللہ نے چند اشیار کا تذکرہ کرتے ہوئے ارشاد فرمایا کہ شراب کی تجارت حرام

ہے،مرداری تے بھی جرام ،خزیر کی تے بھی جرام اور بت (سازی اوراس کو) فروخت کرنا بھی جرام قرارد یا،اور جب مردارجرام ہے!اس کے کدوہ بحس ہے تواس کی چر لی بھی جس ہے اور اس کی خرید وفرو دست کرتا بھی حرام۔

المل كتاب يبودن اس ش تحريف كي ،اوراس كوتيل بنا كراس انفاع كرتے تھے،آپ من كے اس كى ممى وضاحت فريا دى كوشكل تبديل كرف اورنام تبديل كرف ساس كامل تحمين كوئى تبديلى ندموكى «هو حوام» وه (تو) حرام بـ خلاصة كلام بيب كرجوهى حرام اورنجس موكى اس كى تجارت اوراس سے كسى هم كا انفاع بھى حرام بى موكا_

ریمود کی میله سازی پ

﴿ مِدِيثُ بُهِ ٢٦٥٢﴾ وَعَنْ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: قَاتَلَ اللَّهُ الْيَهُوْدَ حُرِّمَتْ عَلَيْهِمُ الشُّحُومُ فَجَمَلُوهَا فَيَاعُوهَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

ع بیان حرام کی تئیں تو انہوں نے اس کو مجملایا اور پھراس (کے تیل) کی خرید و فرو دست کی۔ (بخاری وسلم)

کلمات حدیث کی تشری کے خت تغمیل معلوم ہو چکی ،قاتل الله یعنی الله تعالی ان کو ہلاک کردے، اس روایت کلمات حدیث کی تشری کے حدال بنائے وہ اس وعید میں واخل ہے۔ تعوذ باللَّه من ذلك.

﴿ مِدِيتُ بُرِ٣١٥٣﴾ وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ مَا فَا نَهَىٰ عَنْ لَمَنِ الْكَلْبِ وَالسَّنُّورِ. وَوَاهُ مُسْلِمٌ. موجعه : حضرت جابرت مروى ب بلاً شبرسول الله علية ني كاكى قيت اور بلى كى قيت (ليني أس كى خريد وفروخت) عضع

کلمات حدیث کی تشرر کے اکا وجہ سے اس کی قیمت (اور فروختل) سے منع فر مایا ہے اور میں کے حکم میں ہے

کامر۔علادہ ازیں جب کہشرعا اس کی نجاست کا تھم مرتبع ہے اس اختبار ہے اس پرحرمت کا تھم جاری نہ ہوگا،علامہ نو وی فرماتے ہیں کہ جو بلی غیرنافع ہواس کی ممانعت اور قامل انتفاع بلی کا عادہ باہم بلا تیت لینادینا، عاریہ سویہ وینارانج ہے؛ لہذا مروت کا معتصی یہ ہے کہ اس كى قيت شافى جائے۔(العلق:١٨٩:١٣ وفيره)

﴿سینگی لگانے کی اباعت﴾

﴿ مديث نُبر ٢٧٥٣ ﴾ وَعَنْ أنسِ قَالَ: حَجَمَ أَبُوطُيْبَةَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَآمَرَ لَهُ بِعَناع مِنْ لَمْرِ وَآمَرَ أَهْلَهُ أَنْ يُخَفِّفُوا عَنْهُ مِنْ حِرَاجِهِ. مُتَّفَقٌّ عَلَيْهِ.

مر جمه: حفرت الس في بيان قرمايا كد حفرت الوطيب في رسول الله عظف كينتى لكائى ، پس آب علف في ان (كو) أيك ماح محجور ویتے جانے کا تھم فرمایا اور آپ ملک نے ان کے مالک کو تھم فرمایا کہ وہ ان سے ان (پرمقررہ) فراج میں (قدرے) مخلیف كردي _(بناري وسلم)

کلمات حدیث کی تشری این ماوک کوئی بیاند، جسکی مقدار (تقریباً) ساڑھے تین سیر، خواج: غلام باندی کے مالک ایست حدیث کی تشریب کی پیشہ کرنے کی اجازت ویکر ہردن کیلئے ایک مقداران پرمقررکرتے کدوہ اپی آھ

مس سے بیمقدار مالک کوادا کردے اور باقی ماندہ اُس کی ملکیت رہے گی ، غلام اس کوقبول کرتے ہوئے کہتاد طنیت بد. (تعنیق: ۲۹۰)

آپ عظف نے موں فر مایا کہ ابوطلو پر یومی فران کی مقدار ذائد ہے: اس لیے آپ عظف نے اُن کے کمات حدیث کی شریح اللہ سے سفارش فر ماکراس میں تخفیف کرائی تھی ،اس میں رحمت وشفقت نبوی کا حال معلوم ہوا ہے۔

مسئله: الواقعد علوم بواكريه بيشرق نفسدماح ب،اورازروك طب وعلاج افضل الادوية بين عدوترين علاج بخون میں شد ت اور نساد ہونے پراس فاسدخون کا اخراج ہوتا ہے ایک آلہ (سینگی) کے ذریعے۔

مستعله: بوتت ضروزت سفارش كرنا درست ب؛ بلكما جروثواب بهي اس برمرت بهوكا؛ المبعة سفارش بهم شهو_ (بخاري وسلم شريف)

الفصل الثاني

﴿ کسب معاش کی فضیلت ﴾

﴿ مِدِيثُ بْهِر ٢٧٥٥﴾ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : إِنَّ ٱطْيَبَ مَا ٱكَلْتُمْ مِنْ كُسْبِكُمْ وَإِنَّ ٱوْلَادَكُمْ مِن كَسْبِكُمْ رَوَاْهِ التَّرْمِلِينُ وَالنَّسَائِيُ وَابْنُ مَاجَةٍ وَفِي رِوَايَةٍ آبِي دَاؤُدَ والدَّادِمِيُّ إِنَّ ٱطْيَبَ مَا ٱكُلُ الرُّجُلُ مِنْ كُسْبِهِ وَإِنَّ وَلَدَهُ مِنْ كُسْبِهِ.

توجمه : حفرت عائشة في كما كدرول السائلة في مايا: بلاشه جوتم في الي منت عاصل شده كمايا بهده بيت بي ياكيره (اوربهتر) مال ہے، اور یقیناً تمہاری اولا دہمی تمہاری کمائی (ہوئی چیزوں میں) ہے ہے۔ (ترفدی ونسائی)

ابن ماجدادرابوداؤراورداری کی ایک روایت می ب کریقیناسب سے زیادہ پاکیزہ (اوربہتر)جوا دی نے کھایا ہے (وو)اس کی كمائى بوئى (چز) مى سے ہاور بلاشداس كى اولا د (بھى) اس كى كمائى (بوئى شى ،) مى سے ہے۔

ال مدیث پاک می دوامر کابیان ہے(۱) انسان پرلازم ہے کہ وہ اپنے دسیع بازو سے اور اپی کلمات مدے گاشری کاشری محنت سے کسین حلال کوافقیار کرے اور اس کو کھائے اور ضرور بات زندگی کی بھیل کرے۔

(٢)اورا كروالدين كوخرورت مواوراب وه كسب مغاش برقادرنه مول تو مندالعرورت ادلادكي آمدني بركزركرنا بحى درست ب،اور

(گویا کہ)وہ والدین کے حق میں اُن بی کی کمائی ہے(ماخوذ ازتعلی)،اور بیاس لیے فر مایا ہے کہ والدین اس حالت میں پہونچ کریہ احساس نہ کریں کہ ہم اولا دیے چیاج ہو گئے ،فتہار نے فر مایا ہے:عندالصرورت والدین کے ضروری مصارف اولا دیرلازم ہوں گے۔

﴿مَالُ هُرَامُ عَنْدَاللَّهُ مُقْبُولُ نَهْيِنَ هُــــ﴾

﴿ مديثُ بُر ٢٦٥٧ ﴾ وَعَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَا يَكْسِبُ عَبْدُ مَالُ حَرَامٍ فَيَتَصَدَّقُ مِنْهُ فَيْقَبُلُ مِنْهُ وَلَا يُنْفِقُ مِنْهُ فَيْبَارِكُ لَهُ فِيْهِ وَلَا يَتْرُكُهُ خَلْفَ ظَهْرِهِ إِلَّا كَانَ زَادَهُ اللهِ مَالُ حَرَامٍ فَيَتَصَدَّقُ مِنْهُ فَيْقُبُلُ مِنْهُ وَلَا يُنْفِقُ مِنْهُ فَيْبَارِكُ لَهُ فِيْهِ وَلَا يَتْرُكُهُ خَلْفَ ظَهْرِهِ إِلَّا كَانَ زَادَهُ اللهُ مَا اللهُ لَا يَمْحُوا السَّيِّيَ إِللهِ مَا اللهُ اللهُ اللهُ لَا يَمْحُوا السَّيِّ إِللهِ عَلَى يَمْحُوا السَّيِّيَ وَالْكِنْ يَمْحُوا السَّيِّ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ الل

معبول ہوا بین اس میں معبول عنداللہ ہونے کی صلاحیت واستعداد ہی نہیں ہے اور جب وہ معبول نہ ہوگا تو اس پر تو اب بھی مرتب نہ ہوگا ،اور اس کے علاوہ دوسری صورت ہدہے کہ بیرخود ہی اپنے کسب کروہ مال حرام میں سے خود پر فرج کرے گا تو اُس میں کوئی خیر اور برکت اس کے لیے نہ ہوگی۔

برکت وہ شیر کثیر ہے جو منجانب اللہ عطیۂ خصوصی ہوا کرتا ہے، اور مال حرام عنداللہ بہت مبنوض ہے تو اس پر رحمی النی بصورت برکت کیے متوجہ ہوگی؟ ہرگز نہیں! یہی وجہ ہے کہ مال حرام، نا جائز اور خلاف شیشر بعت میں صرف ہوتا ہے جو تقیقی منافع دے کر نہیں جائے گا۔ (اسلام) اور مال حرام کامر نے کے بعد ترکہ جو ہوگاوہ ایسا تو شہوگا جو اس کو دوز خ کی آگے تک پہو نیجا دیے گا، یعنی آخرت کے اعتبار سے جمی وہ مال سب ہوگا دوڑ نے کے لیے۔

حُلف ظهره: ساشاره موت كى جانب؛ يعنى بس مرك زاد بمعنى توشه سفر بيل ضرورت بورى كرنے والى شى دار الله النع، يدكلام متاتعه ہاور عندالله متبول نه مونے كى على كابيان ہے۔

گناھوں کا کفارہ کیسے ھوگا: اس لیے فرمایا برائی، برائی کودھونے اور صاف کرنے والی بیس ہوسکتی؛ بلکہ صنہ کے ذریعہ سقات کومٹایا اور صاف کیا جاتا ہے۔ جب وہ مالی حرام نری شک ہے ، تا پاک اور گندی ہے تو ایسا مال اور ایسی بری شکی بندہ کے برے اعمال اور گنا ہوں کے لیے کفارہ کیے ہوگا؟ قال مذہبی کما قال الله ان الحسناتِ یُلْھین السینات.

خلاصدادر حاصل کلام بیہ ہے کہ خبیث اور گندی شکی ،خباشت اور گندگی کو صاف نہیں کر سکتی اور نُرے اعمال کا کفارہ نہیں موسکتی ایسے مال میں نہ کوئی خبر ہے اور نہ برکت اور نہ عنداللہ معبول ،اللہ تعالیٰ طبیب ہے اور طبیب بی کوقیول فر ماتے ہیں اور وہ پھر آخرت میں دوز خ کے لیے توشہ دگا۔

مدیث فرمدد می ارشاد ہے بعض علاء نے فرمایا ہے کداگر مال حرام کوصدقہ کیا گیاادراس پراواب کی امید کی توبیل

مودب كفرب اوراكرفقيركومعلوم بوكيا كربيرام مال اسكوريا كيا بهاوراس فقيرن اسكودعادى بي توريمي كفرب. هامنده: ما قبل يس جو جملے حديث پاك يس ندكور إي وه دراصل آخرى جمله "ان النعبيث النع"ك لي تمبيداور مقدمه، على معافرت قديم صوا)

(ارتبل س ١٩١٣، مظاهر تن قديم صوا)

﴿عرام خوری کا حکم ﴾

﴿ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا اللَّهِ عَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ لَحْمٌ نَبَتَ مِنَ السُّحْتِ كَانَتِ النَّارُ اَوْلَىٰ بِهِ . رَوَاهُ اَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ وَالْبَيَهَةِيُّ فِي مَنَ السُّحْتِ كَانَتِ النَّارُ اَوْلَىٰ بِهِ . رَوَاهُ اَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ وَالْبَيَهَةِيُّ فِي السُّحْتِ كَانَتِ النَّارُ اَوْلَىٰ بِهِ . رَوَاهُ اَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ وَالْبَيَهَةِيُّ فِي السُّحْتِ كَانَتِ النَّارُ اَوْلَىٰ بِهِ . رَوَاهُ اَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ وَالْبَيَهَةِيُّ فِي السَّحْتِ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:

قو جعه: حُعزت جابرؓ نِفقل کیا کہ رسول اللہ علی نے فر مایا: جنت میں وہ کوشت داخل نبیں ہوگا جوحرام مال سے پر درش پایا ہو، اور ہروہ کوشت جو مال حرام سے برورش پایا ہوتو اس (جسم) کے لیے آگ زیادہ لاکش ہے۔ (احد، داریؒ بیسیؒ)

السُّخت: حرام بُخِس، اصلَّ معنى لعبد سوشت كردن ، اور بال حرام بركت كوسوشت كرديتا ب، جو السيت حديث كي تشريع السانى بدن مال حرام سے پرورش بايا مو، بوااورتر في كيا مواور عديث باك من لحم "كي جانب

اسنا وفر مانی ہے کہوہ جنت میں واغل ندہ و گانفسِ انسانی کی جانب بیاسنا دہیں فرمائی۔

جرام خوری سے کیول جست میں محروم ہوگا؟ العبیث للعبیث" اور جنت یا کیزہ مقام ہاں میں شکی طیب ہی داخل

ہوسکتی ہے، اگر اس کی مغفرت نہ ہوتی تو اوّلا دوز خ بیں جائے گا جیسا کہ حدیث بیں اس جانب اشارہ ہے، بعد ہ جنت بی داخل ہوگا اور بخشش کی ہوگا ؛ اس لیے ہر باایمان جنت بی ضرور داخل ہوگا توبہ یا مغفرت کے بعد یا سرا بھکنٹنے کے بعد ،اور جن صورتوں بین مغفرت اور بخشش کی تفصیل ہے اس کے مطابق مثلاً صاحب می کوراضی کر دیا گیا یا سفارش شامل حال ہوگی ، اور ایک مغہوم یہ بھی ہوسکتا ہے کہ جنت کے در جات عالیہ بین داخل نہ ہونیز اس بین زجراورتو بخ ہے اور وعید بھی ہے اور اگر (خدانخوستہ) اس کا اعتقاد نہ ہونے کا نہ تھاوہ از روک احتقاد دند ہونے کا نہ تھاوہ از روک احتقاد دند ہونے کا نہ تھاوہ از روک احتقاد دند ہونے کا نہ تھاوہ از روک کے برایک کی احتقاد دند ہونے کا منہ تھا وہ اور اگر وہ مالی جرا میں کو علال جانا تھا تو بھر حرام کو حلال تصور کرتا کفر ہے ، مالی حرام کی مختلف انواع اور صورتیں ہیں ؛ اس لیے ہرا کہ کی توعیت علیمہ ہو ہوارک اعتبار سے اس کا محتم بھی ہے۔

﴿تقوى اور پرهيز گاري﴾

﴿ مَدَى ثُمِرِ ٢٢٥٨﴾ وَعَنِ الْحَسَنُ بُنِ عَلِيٌّ قَالَ: خَفِظْتُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ دُعْ مَا يُرِيْبُكَ إِلَى مَا لاَ يُوِيْبُكَ فَإِنَّ الصَّدُق طَمَا نِيْنَةٌ وَإِنَّ الْكِذُبَ رِيْبَةٌ. رَوَاهُ ٱحْمَدُ وَالتَّرْمِذِيُ وَالْنَسَالِيُّ وَرَوَى الدَادِمِيُّ ٱلْفَصْلَ الْآوُلَ.

قو جعه : حضرت حسن بن علی قرماتے میں کہ میں نے رسول اللہ تالی ہے (اس صدیث کو) یاد کیا ہے، آپ تالی نے ارشاد فرمایا: جوثی ر تھے کوشک میں ڈالتی ہے اس کوچھوڑ (اور متوجہ ہواورا نقتیار کر) اس تی رکو جو تھے کوشک میں ندڈ الے؛ چونکہ بچائی باعث الممینان قبی ہے اور یقینا جموٹ (اور باطل) باعث شک (اور تردد) ہے۔احمد ، ترندی ، نسائی اور داری نے جزاول کوفتل فرمایا ہے۔

یں ورور درہا ہے ہو سے مصار اور روز کے اس میں میں اور واروں سے جو اور اور مایا ہے۔ عدیث یاک میں میں میں کم ہے کہ جس شکی (قوی ہے، مال ہے کہ بھی شک) میں شک اور شبہ کلمات صدیث کی تشریح قلب میں پیدا ہوجائے اور تر دوہوجائے کہ وہ درست اور طال ہے یا نہیں ، او الی صورت میں ای شک كو چيوڙ دياجائے اوراس جانب كوافتيار كرلے جس بيل كوكى تر دداور فتك وشبدند بو-

" وولوں الفات میں علامت ومضارع برفتہ بھی بڑھا کیا ہے اور ضمتہ بھی دونوں ہو سکتے میں ؟ البتداکثر روایات بالفتح ہے، دَابِ اور اَدِ اَبِ دونوں الفات میں ؛ البتدان میں درست اور معروف راہنی الشنبی ہے جھکوشک وشبہ میں ڈالدیا۔

ماصل کلام بیہ کرمشتہاورشہات ہے بہرصورت پر بیز کیا جائے ، نیز اس شے کواختیار کیا جائے جس میں قلب کوشک اورشہ نہ ہو میں میں قلب کوشک اورشہ نہ ہو میں میں تا ہے اور اس کے برخلاف کذب اور امید خل میں میں تا ہے اور اس کے برخلاف کذب اور امید ناختی قلب میں تر دو پیدا کرتا ہے جو علامت ہے اس کے باطل ہونے کی ؛ اس لیے ایک حدیث میں یہ می ارشاد ہے "اپ قلب میں تر دو پیدا کرتا ہے جو علامت ہے اس کے باطل ہونے کی ؛ اس لیے ایک حدیث میں یہ می ارشاد ہے" اپ قلب میں اس کے لیجے "مہر حال اس کے لیے می ضروری ہے کہ قلب آلتو کی ہے صافی ہوقلب میں نور تقوی کی ہو، تقوے سے قلب مجرا ہوا ہو۔

ونیکی اور معصیت کی شناخت،

﴿ صَلَى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَالْمِلْمَ قَالَ: يَا مَعْبَدِ أَنَّ رَسُولَ اللّهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَا وَابِصَةُ اجِئْتَ تَسُالُ عَنِ الْبِرِّ وَالْمِلْمَ قُلْتُ: نَعَمْ! قَالَ: فَجَمَعَ أَصَابِعَهُ فَضَرَبَ بِهَا إِصَلْرَهُ وَقَالَ: اِسْتَفْتِ نَفْسَكَ إِسْتَفْتِ قَلْبَكَ وَالْمِلْمُ وَالْمَالُ لِيَا اللّٰهُ مِنْ وَالْمَالُ اللّٰهِ الْقَلْبُ وَالْمِلُومُ مَا حَاكَ فِي النَّفْسِ وَتَوَدَّدُ فِي الصَّدْرِ وَإِنْ آفْتَاكَ النَّاسُ. رَوَاهُ آخْمَهُ وَاللَّادِمِيُّ.

قوجمه: حضرت وابعه بن معبر عمروی ب کرسول الله علی نظر مایا: یا دابعه! آیا ب تو (میرے پاس) تا کر الله علی اور کمناه (کی حقیقت اور علامت) سے متعلق، یس نے عرض کیا: بی ہاں! حضرت وابعه فرماتے ہیں کہ آپ الکلیال جمع کیس اور گھران کو میرے سینے پر مار ااور فرمایا: فتو کل طلب کر اپنے نفس سے ، اور فتو کل طلب کر اپنے قلب سے (اور سے بات) تین مرتبہ فرمائی:

اور گھران کو میرے سینے پر مار ااور فرمایا: فتو کل طلب کر اپنے نفس سے ، اور فتو کل طلب کر اپنے قلب سے (اور سے بات) تین مرتبہ فرمائی:

عور قلب منشر ح نہ ہو) اگر چہ لوگ فتو کل دیں۔ (احرق داری)

حل حديث: البور: نيكي، حدد، اوران كي ضد ب الم اكناه ، معصيت ، النفس: وات انسان، حاك (ماضي) خلجان ، تردو، كظك، الحتاء: فتوى دينا، حكم بيان كرنا-

کمات حدیث کاتشریک اندیاز کرنے اور حقیقت حال کومعلوم کرنے کیلئے (زین) اصل یہے کرا کرکسی امیدیس واضح عظم ندہونے

کیوچہ سے تر دداور شک ہے تواہے قلب کی جانب رجوع کرلے، اگر قلب میں کوئی تر ددنہ ہواور قلب کی امید پر مطمئن ہے تو وہ حسناور غلی رہے، اور قلب میں کھنگ اور تر دو ہے اور قلب کی امید پر مطمئن نہ ہوتو وہ اثم ہے، اور مفتی حضرات کا فتو کی فلا ہر پر ہوتا ہے، ان کے دو بروجو صورت حال (قولاً یا فعلاً) آئے گی وہ اس پر فتو کی دیا کرتے ہیں ؛ اس کے ضروری ہے کہ اپ قلب متمی سے فتو کی لیا جائے۔ علیہ مارشاد نہوی ایک حقیقت یہ می دریا فت ہوئی کہ فتو کی اور ہے اور تقوی کا در ہے۔

آب ﷺ کی بوگت: آپ آلی کی ایست مبارک ان محالی کے سینہ پر رکھا، بظاہر تو آپ آلی نے اشارہ کیلے رکھا ہے کہ قلب کی جکہ سے اور معنوی طور پر بالھروراً لکا قلب مبارک ہاتھوں کی روحانی کیفیت کومسوس کرتے ہوئے قلب میں بڑی تو ت پیدا ہوئی ہوگی جس سے قلب میں بڑی تو ت پیدا ہوئی ہوگی جس سے قلب میں اور اک میں ترقی بھی حاصل ہوئی ہوگی ، اور سوال سے قبل آپ تالی کا معلوم کرنا کہ بیر سوال کریں گے بیاز راو مکا شفہ آپ تالی کا معلوم ہوا۔

دِنقویٰ اور ورع کا حصول ب

﴿ مديث تمبر ٢٧٦ ﴾ وَعَنْ عَطِيَةَ السَّعْدِيُّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: لَا يَبْلُغُ الْعَبْدُ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُتَّافِيْنَ حَتَى يَدَعَ عَالَا بَاسَ بِهِ حَلْرًا لِمَا بِهِ بَاسٌ. رَوَاهُ التَّرْمِلِكُ وَابْنُ مَاجَةَ .

قر جعه : صغرت عطیه سعدیؓ نے لقل کیا که رسول الله نے فرمایا : کو لَی بنده اس دقت تک متلی لوگوں کے مقام تک نبیس کافی سکتا یہاں تک کہ چھوڑ دے ایکی چیزوں کو جس میں کوئی برائی (اور قباحت) نبیس (یعنی وہ چیز درجه ٔ اباحت میں ہے) اس چیز ہے بچاؤ کے لیے جس میں برائی اور (خرالی) ہے۔ (ترندیؓ این ماجؓ)

حل المفات: يَدَ عُ : يَنُو كُ (ترك كرو) إلا ما من العنى ازروت طا برعندالفتوى اس بن كوئى شرعاً قباحت نه مو مها م مو حلواً: منصوب بم مفعول الد مو في كرو و به به بعنى خوطاً اوريكون تعلى مضارع بالحفى كاظرف بوگا اور مضاف محذوف ب به بين دوجه التقى لغته اسم فاعل به جو ماخوذ لم وقائه به مصدرالوقاية محنى بهت زياده احتياط كرنا ، محتاط بونا ، اور مُتقى ك شرى معنى التقى نفسه تعاطى ما يستحق به العقو بدنين فعل او ترك يعنى وهن به جوابي نفس كوايي على سه بجائي جس كرت بعذاب كالمستحق به واورجم نعل كرت برعذاب كالمستحق به واورجم نعل كرت كرت برعذاب بونا به ونا به ونا

کلے سے حدیث کی تشریح اسے ہوتی ہیں، اہل تقویٰ بہت نے درجات ہیں، ابتدائی درجہ کفراورشرک سے لکانا، تو بکرنا، اورا سے بعدا سے درجات کلیا سے حدیث کی تشریح کی تشریح کی تاراضکی کا سبب ندہو، اور

اس کیلئے آپ مان کا بدار شاد کلیدی حیثیت رکھتا ہے کہ اعلی درجہ تک یہو شخنے کے لیے بہت سے مباح امور کو بھی ترک کرنا ہوتا ہے۔

وشراب اور لعنت

﴿ وَدِيثُ بُرِ ٢٢١١﴾ وَعَنْ آنسِ قَالَ: لَعَنَّ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْحَمْرِ عَشَرَةً عَاصِرَ هَا وَمُعْتَصِرَهَا وَشَادِبَهَا وَخَامِلَهَا وَالْمَحُمُولَةَ إِلَيْهِ وَسَاقِيَهَا وَبَالِعَهَا وَا كِلَ لَمَنِهَا والمسترى لهاوَ الْمُشْتَرِىٰ لَهُ. رَوَاهُ التَّرْمِلِيُّ وَابْنُ مَاجَةً .

قوجهد: حفرت الس في فقل كيا كدرسول السُّمَا في العنت كاشراب كسليل من دس لوگون بر،اس كونجوژ في والا اوراس كو نجروانے والا اوراس كا چينے والا اوراس كولانے والا اورجس كي طرف لا يا جائے اوراس كو پلانے والا اوراس كى تا كرنے والا اوراس كى تا اوراس كى تا كا اوراس كا تا كا اوراس كو تا يا كا اور جس كے ليے تريدكى جائے۔ (تريدي، ابن ماجة)

الفات حدید : آفنت ، بردعا برحت الی سے دور ہونے کی عاصر : اسم فاعل از عَصر : انگور (دغیرہ) سے شراب بنانے کے لیے شرہ نکا لئے دالا . مُعنَصِر : بَوِیُقُ شیرہ نکاوائے بیا ہے لیے ہویا کی دوسرے کے لیے : ضَادِ ب : اسم فاعل ، ہنے والا حاصل : اسم فاعل ، بنے والا حاصل : اسم فاعل ، نخواہ اسپے لیے یا دوسرے کے لیے اگر چہوہ غلام یا طازم دخادم ہو، وکیل کی حیثیت سے یا کم بھی صورت سے مفحد فولا : اسم فاعل ، شراب فروخت کرنے والا ، ما الک ہوئی مفحد فول الید کی کے لیے اُٹھا کرنے جائے ۔ بائع : اسم فاعل ۔ شراب فروخت کرنے والا ، ما الک ہوئی حیثیت سے یا طازم دغیرہ ہونے کی وجہ سے شراب فروخت کرنے والا ، ما لک ہوئی انگور سے دوالا ، مال کے کہ معلوم ہے کہ اس کا طور سے دو شراب بنائے گاتو اس کو اگر و دفت کرنے والا بھی اس میں شامل ہا درشراب جس کے لیے تربید کی گئی ہو۔

اعورے وہتراب بنائے گالواس اواعور فروخت کرنے والا ان اس سل سے اور سراب سے سے ربیل کا اور استان کا اور سے معاملہ میں جو تفص بھی جس صورت سے اس سے وابستا ہوگا دو احت کا متحق ہوگا۔ اکثر ویشتر سے خلاصہ حدیث فلا صد حدیث فلا صد حدیث فلا میں ہوا کرتی ہیں اس لیے اُن کو نا حرد کر دیا گیا ہے۔ ان کے علادہ اور بھی بھٹا شراب بنانے یا فروشت

كرنے كے ليے جك كرايد يردى كى تواس كرايدى آمدنى كوكھانا بھى حرام ہادراس فہرست يس شامل ولاحق ہوگا۔ ﴿شراب خوری کا عکم ﴾

﴿ صِرِيثَ بَهِ ٢٦٢٢﴾ وَعَنْ إِنْ عُمَرٌ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَعَنَ اللَّهُ الْمَحْمُرَ وَشَارِبَهَا وَمُالِيَهَا وَهَالِعَهَا وَمُهْتَاعَهَا وَعَاصِرَهَا وَمُعْتَصِرَهَا وَحَامِلَهَا وَالْمَحْمُوٰ لَةَ اِلَيْهِ. رَوَاهُ ٱبُوٰدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَةً

قوجمه: حضرت عبدالله بن عمر فقل كيا ب كرسول الله عليه في مايا: الله تعالى في العنت فرياتي بي شراب براوراس كي ين والے پراوراس کو پلاتے والے (خادم دغیرہ) پراوراس کوفر دشت کرنے اوراس کوفریدنے والے پراوراس کونچوڑنے والے پراوراس کو محرموانے والے پراوراس کولانے والے پراورجس کے لیے لائی جاتی ہواس پر۔(ابوداؤرّہ ابن ماجہّ)

ا حادیث میں بیان ہے کہ شراب اُلم الغائث ہے جس کی وجہ سے بکثرت گناہ کا صدور ہوتا ہے انسان کو بزی تعت خلاصۂ حدیث دی گئی ہے ''عقل' ۔ شراب لوشی سے عقل مستور ہو کر ایسی صورت حال بنادیتی ہے کہ (گویا)وہ انسان نہیں ہے؛

بلكه بدرز حيوان ہے۔

کل ت من کا تشریکی آلفت مور الیمی ما حب شراب بہر حال نفس شراب بھی ہوسکتی ہے کہ اس کی بدتر ہونے کی وجہ سے وہ کمات صدی کا تشریکی مناہر ی معاون ہے اور شراب والا بھی ہوسکتا ہے۔ (ازقدیم مناہر ی مع الوضاحت اسدی)

يْرْشُرابِ يَحِن حُي بِي عِدقال الله تعالى إنَّمَا الخمرُ والميسر والأنصاب والأزلام رجس.

﴿سینگی کی اجرت مکروہ ھیے ﴾

﴿ مِدِيثُ بْمِرُ٣٦٦٣﴾ وَعَنْ مُحَيِّصَةٌ آنَّهُ إِسْتَا ذَنَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَجْرَةِ الْحِجَامِ فَنَهَاهُ فَلُمْ يَزَ لَ يَسْتَاذِنُهُ حَتَّى قَالَ آغُلِفُهُ نَا ضِحَكَ وَٱطْعِمْهُ رَقِيْقَكَ. رَوَاهُ مَالِكٌ وَالتَّرِمِذِيُّ وَابُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَةً.

موجعه: عيمة عمروى ع كرانبول في رسول التُعلق سرا جازت طلب كي يكي لكان كى اجرت لين (اوراس كواستعال كرنے) كى، پس آپ علي نے ان كوشع كرديا، پس وه آپ تلك سے برابرا جازت طلب كرتے رہے يہاں تك كرة بالك نے فرمايا: خرج كرد اس كواين اوغنى ير (لينى اس كوكلاد) اوركلاد اب غلام كور الك، ترخى الدواؤر ابن ماجر)

کلمات حدیث کی تشریک این دیا جائے ،گزشته روایات کتحت تفصیل معلوم موچکی کرینگی کا پیشه اور اس کے ذریعہ علاج کرنا

حلال ہے،حرام بیں؛ اورلیکن وہ عمل نزامت کے خلاف ہے؛ کیونکہ سینگی والا آ کرمنہ میں لے کرسانس کیا تو خون نکالا جاتا ہے؛ اوراس الكاحمال كرخون كااثر سائس كماتها ندريهو في جائ الله الدوه نزاجت اور فظانت كي خلاف بالله المات ال خلاف درع اور کمال طہارت کے خلاف ہونے کی وجہ سے اشراف کے لیے اس آمدنی کو پٹند ندفر مایا،اس لیے ان کو اجازت ندوی ایک سے زیادہ مرتبہ (تین مرتبہ) سوال کرنا ہوسکتا ہے کہ ضرورت کی وجہ سے اجازت طلب کرتے ہوں۔ بہر حال پھر آپ اللہ نے اجازت مرحمت فرمائی کہاہے جانور کے لیے کھانس وغیرہ پر یا غلام پراس کوخرچ کرنے کی اجازت دی۔اگر بیآ مدنی حرام ہوتی تب تو جانوراورغلام کے لیے بھی درست نہ ہوتی ۔ بہر حال بیا جازت کراہیت کے ساتھ ہے۔

﴿گانابجانے کی اجرت حرام ھے ﴾

﴿ صَمَتُ مُرِ ٢٢٢٣﴾ وَعَنْ آبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: نَهِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهُ وَسَلَّمَ عَنْ ثَمَنِ الْكُلْبِ

وَكُسِبِ الزُّمَّارَةِ. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ

توجهه: حضرت ابو بريره في بيان فرمايا كدرسول التُمانية في في قيمت اوركاف والي عورت كي اجرت مع فرمايا- (شرح سن) يت كي تشريكي أَلْزَمَارَةُ: (ناكار باندى، كافي والى باندى، حسين عورت ، بالعوم زناكارى اوركاف والى عورت حسين

رب أَ بوتى ب، آواز من موتاب؛ اس ليه يدونون احمال بي، يُقالُ غِناء ومير يعنى حسن اور زَمَو

تجمعنی گانا، زمَوَ الوَجُلُ، بدأس وقت كها جاتا ہے جس وقت بجانے كى ليے ضرب لكاتى مو، اور اس تخف كو زَمَازٌ كہتے ميں اور عورت كو زَامِوةً، اوراكثر زناكار عورت فاحشد (رئرى)كا پيشرك والى كانا بجانا بحى كرتى ب، ابتدار كانا بجانا بوتا باورانتار زنا برموتى ب، اورایک لعنت بیان کی گئی ہے کہ وہ اصل رَمَزَه ہے جس کے عنی آ تکھاور ہونٹ کے ذریعہ اشارہ کرنا۔اورا کثر ایسی پیشہور فاحشہ عورت اقلاً اشارہ بازی کرتی ہے، رجال کوائی طرف مائل اور متوجہ کرتی ہے۔

﴿گانے والی باندی خریدکرنا بھی حرام ھے﴾

﴿ صِدِيثُ مِبِهِ ٢٧١٥﴾ وَعَنْ آبِي أَمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : لَا تَبِيعُوْ الْقَيْنَاتِ وَلَا تَشْتَرُوْهُنَّ وَلَا تُعَلِّمُوْهُنَّ وَتَمَنُّهُنَّ حَرَامٌ وَفِي مِفْلِ هَلَا أَنْزِلَتْ وَمِنَ النَّامِ مَنْ يَشْتَرِى لَهُوَ الْحَدِيْثِ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتَّوْمِدِيُّ وَابْنُ مَاجَةً وَقَالَ التُّومِدِيُّ هَاذَا حَدِيْتٌ غَرِيْبٌ وَعَلِيُّ بْنُ يَزِيْدَ الرَّاوِيُّ يُضَعَّفُ فِي الْحَدِيْثِ وَسَنَذْكُرُ حَدِيْتَ جَابِرِ نَهِي عَنْ آكُلِ الْهِرِّ فِي بَابِ مَا يَجِلُّ آكَلَهُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَىٰ.

موجعه: حصرت ابوا مامة في من كيا كرسول الله الله في فرمايا: مت خريدو كاف والى بائد يول كواوران كوندفر وخت كرواورند محصلا و ان کو،اوران کی قیمت حرام ہے،ادرای طرح کےاموراوراشیاء سے تعلق بیآیت نازل ہوئی ہے۔

"ومن الناس الغ" اوربعض لوگ بيهوده كميل كى بات كى خريدكرت بين _ (احدٌ، ترنديٌ) ابن ماجدٌ اورترنديٌ ن فرمايا: مديث غریب ہےاوراس کے ایک راوی علی بن پزید حدیث کے سلسلہ میں ضعیف قرار دیتے گئے ہیں۔

اور عنقر يب حضرت جابر كي حديث "نهى عن اكل الهر" "باب مايحل اكله "بس بيان كري كانشار الله تعالى -

لغات حديث: اَلْقَيْنَةُ: كَانْ بَجانْ والى باندى، اور دومرامعنى حيينة كل ب-

اس صديم ياك معلوم ہواكہ ايى بانديوں كى خريد وفر وخت اور تجارت حرام ہے؛ اس ليے كه بيذر ربيداور يث اسب ہے حرام كارى اور فخش كارى (زناوغيره) كاءاور اس ليے گانا بجانے كى تعليم دينا بھى حرام ہے؛ اس لیےاس ہے جھی منع فر مایا ہے، اور الی باندی کی قیمت زیادہ ہوا کرتی ہے؛ اس لیے کوئی اس کو کھلائے؛ جس سے کہ زیادہ قیمت پر فروخت ہوگی بخرید نے والا رغبت سے خرید کر لے گا۔ اور ای طرح گانے بجانے والے کو اُجرت پر بلا ناحرام ہے

<u>الفصل الثالت</u>

﴿كسب حلال فرض هے﴾

﴿ صِدِيثُ مُرِ٢٢٢٢﴾ عَنْ عَبْدِاللَّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :طَلَبُ كَسَبِ الْحَلَالِ فرِيْضَةٌ بَعْدَ الْفَرِيْضَةِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيْمَانِ.

قوجمه : حضرت عبدالله بن مسعودٌ في نقل كيا كدرسول الله الله الله في مايا: طلال كما في طلب كرنا فريضه (نماز وغيره) كم بعد فرض ے۔(ﷺ)

خلاصة حديث معاش انسان كے ليے بنيادى ضرورت ہے،اور ہرانسان اس كوافتيار بھى كرتا ہے، شريعت نے انل ايمان كوتكم ديا کے كدوہ كسب حلال كرے، نيزِ شريعت نے اس كوفرض قرار ديا ہے،اور جب شريعت نے اس كوفرض كہا ہے توبيہ

طاعت اورعبادت کے درجے بیں بھی آگیاہے؛ لہذا حکم البی اوراطاعت کرتے ہوئے اس کواختیار کرنے پر آخرت بیں اجروثو اب بھی مرتب ہوگا؛ ای وجہ سے بہت سے کسپ معاش کے فضائل بھی آ حادیث میں وار دہوئے ہیں ، نیز قر آنِ کریم میں بھی صیغتد امر کسب اور طلب حلال کا تذکر ہ آیا ہے۔

کلمات حدیث کی تشری فرائض کوبیان کیا ہواہے؛ مثلاً نماز ،رورزہ وغیرہ ان کے بعد کسب حلال کا علم ہے، شریعت نے ان فرائض کا علم ہے، شریعت نے ان

جوفرائض عائد ہیں ان میں ہے آیک کسب حلال بھی ان فرائض شرعی کے ساتھ وابسۃ ہے،اور کسب حلال کوایک اہم ترین درجہ میہی حاصل ہے کہ یہ اصلِ ورع ہے اور اساسِ تقویٰ بھی ہے۔ (ازتعلیق ۲۹۴ج ۳)

ضدودی و ضماحت: کسب معاش طال کی فرضت میں ضروری تفصیل یہ ہے کہ جس قدرانیانی حیات کے لیے لازم ہاس قدر کسب فرض ہے اور جن افراد کا نفقہ کسی شخص پر فرض ہے اُن کے لیے کسب فرض ہے اور جن افراد کا نفقہ کسی شخص پر فرض ہے اُن کے لیے بھی حقوق کی اوا کی فرض سے کسب لازم اور فرض ہے یا مباح ہے اور جب کہ بعض افراد کے نفقات دوسرے کے ذمہ ہوتے ہیں بھی حقوق کی اوا خدی نفقات دوسرے کے ذمہ ہوتے ہیں بھٹلا زوجہ کا نفقہ شوجر پراوراولاد کا نفقہ تو زوجہ (عورت) پر کسب فرض نہیں ہے اور نابالغ بیتی ں پر بھی بیکسب فرض نہیں۔

خلاصه کلام: بهرصورت بنده (انسان) پرلازم ہے کہ معاش میں وہ خود کفیل ہو،اوراپنے دسیت باز دکی کمائی (کسب) کے ساتھ کفالت کرے، دوسرے انسانوں کا محتاج نہ ہواور دسیت گرنہ ہو۔اگر کسیب معاش نہ کرے گائو پھر بہت ی نا جائز صورتیں بھی کرگز رتا ہے، دست سوال دراز کرنے لگتا ہے جوشر عادع فا بالکل ناپہندیدہ ہے۔

﴿كتابت قرآن كي اجرت حلال هيے﴾

﴿ صديث نُمِر ٢٧٢٧﴾ وَعَنِ أَبْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ سُئِلَ عَنْ أُجْرَةِ كِتَابَةِ الْمُصْحَفِ فَقَالَ: لَا بَاسَ إِنَّمَا هُمْ مُصَوِّرُونَ وَإِنَّهُمْ إِنَّمَا يَا كُلُونَ مِنْ عَمَلِ آيْدِيْهِمْ. رَوَاهُ رَذِيْنُ.

قوجهه: حضرت عبدالله بن عبال سے قرآن کریم کی کتابت کی اجرت سے متعلق سوال کیا گیا تو انہوں نے جوابا فر مایا کوئی مضا کفتہ نہیں ہے وہ تو محض مصور (یعنی نقش بنانے والے) ہیں اور دہ تو اپنے ہاتھوں کے مل کی اجرت کھاتے ہیں۔(رزین)

خلاصة حديث المراق على الكرامل بيب كرانسان "عمل بيده" كوافتياركر بقر آن كريم من الله تعالى كاحفرت المائة حديث المراق كالمنظم الله تعالى الله على الله تعالى الله تعال

یا تکل مِن عُمَلِ یَدَیٰیهِ" (حدیث) اورای وجہ ہے کہ بہی اصل ہے حدیث نمبر ۲۹۱۸ میں اس کو «محیبِ اطیب ، پھی فر مایا ہے؛

ایسی عمد و ترین کسب معاش اور قرآن کریم کی کتابت بھی "عمل بیدہ" میں شامل ہے، اِلہٰذِ احضرت ابن عباس نے ارشاد فر مایا ہے کہ
وہ بینی طور پر کسب حلال اور معاش طیب ہے اور اگر کسی کو اشکال وشہ پیش آنے گئے کہ یہ آیات الہی کی فرید وفر وخت کی صورت تو نہ ہوگ اس شہداورا شکال کو بھی حضرت ابن عباس نے دور کرتے ہوئے فر مایا: وہ حردف کی صورت کو نقش کرنا ہے جو بندہ ہی کا ممل ہے اوروہ ممل کتابت ہے جس کی اجرت کی گئی نہ کہ کم قوب اور قرآن بیا کلام اللی کی۔ (ماخوذ از تقریر طبی وقعیان)

هائده: اليامعلوم بوتا ب كرمائل كوموال كي ضرورت الله ييش آئى بوكداس كي نظر نفس قر آن اور كلام الني يعني "المعكوب و

المقروء ۵" پر مو، بلاشباس کی بری شان وعظمت ہے جس کی وجہتے اس کو کسب معاش میں ثمار کرنا درست نہ ہو؛ اس لیے استفتار کیا، حضرت ابن عباس نے اس جواب وافحارے حقیقت الامرکوواضح کردیا ہے۔ (اسعدی)

﴿تَمَارِتُ اوربازوكي كَمَانِي﴾

﴿ مديث تمبر ٢٦٧٨﴾ وَعَنْ رَافِع بْنِ خَدِيْج قَالَ: قِيْلَ: يَا رَسُولَ اللّهِ ا أَيُّ الْكَسْبِ اَطْيَبُ؟ قَالَ: عَمَلُ الرَّجُلِ بِيَدِهِ وَكُلُّ بَيْعِ مَبْرُورٌ. رَوَاهُ اَحْمَدُ.

قوجمه: حصرت رافع بن خدیج نفل کیا کہ سی مخص نے دریافت کیا یارسول الله! کون ی کمائی زیادہ بہتر (اور پا کیزہ) ہے؟ آپ

عَلَيْنَ فِي مايا: آوي كااين باتها على كرنااور برمبروريع (احدًا)

فلاصة حديث السكام من آپ الله عندالله وه به جوشرى توانين كساته موادر بندول كتن خيروصلاح كساته معاملات من المدول كتن خيروصلاح كساته معاملات

ہوں ، اور الی تجارت پراجروٹو اب بھی ہوتا ہے اور ایسے تاجر کی نضیات بھی آج ہے۔ (اسعدی)

عمل الوجل بيده: مين تمام صنائع اور حرفات واخل بين بشرطيكه ان مين كوئي شرى قباحت اور منكرنه كلمات حديث كي تشرك الموادراكريد بات كي جائة وحديث باك كي روشي مين درست معلوم بوتي م كركسب معاش كي

دراصل دوبی صورتی بین، ایک تجارت اورایک عمل بیده به بس مین زراعت اور برتم کی دستگاری وغیره شامل بین - (اسعدی)

﴿ دودہ فروخت کرناہلاکراہت مہاج ھے ﴾

﴿ مديثُ بُمُ ٢٧٢٩﴾ وَعَنْ آيِي بَكُو بُنِ آبِي مَوْيَمَ قَالَ: كَانَتْ لِمِقْدَامِ بُنِ مَعْدِىٰ كَوِبَ جَارِيَةٌ تَبِيْعُ الْلَبَنِ وَيَقْبِضُ الْمِقْدَامُ ثَمَنَهُ قَقِيْلَ لَدُ: سُبْحَانَ اللّهِ ٱتْبِيْعُ اللّبَنَ وَتَقْبِضُ النَّمَنَ ؟ فَقَالَ : نَعَمْ ! وَمَا بَاسٌ بِلَالِكَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّهِ عَلِيْكَةً يَقُولُ: لَيَا تِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يَنْفَعُ فِيْهِ إِلّا الدِّيْنَارُ وَالدَّرْهَمُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ

ے اکتباب بی بچا سکےگا۔ (احمد)
قرن اول اور عبد صحابہ میں دودھ کی تجارت اوراس کی فروشتگی کا رواج ندتھا؛ بلکدا گرزا کداز ضرورت کلمات حدیث کی تشریح کلمات حدیث کا تشریح کلمات کلمات کلمات حدیث کا تشریح کلمات کلمات حدیث کا تشریح کلمات کا تشریح کلمات کلمات کلمات کا تشریح کلمات کا تشریح کلمات کلمات کا تشریح کا تشریح کلمات کا تشریح کلمات کا تشریح کا ت

ا ہونا کو وہ سمارہ اور ہم ہیں اس عبد کے وہ سات ہوا اور ازراہ تعجب ہوا ،اور ازراہ تعجب ہوا ،اور ازراہ تعجب ہوگوں نے میں عبد سے عبد سے اس جو باشدی کے ذریعہ دودھ کی فروشنگی کراتے ہول جس براس عبد کے عرف کی دجہ سے تعجب ہوا ،اور ازراہ تعجب کو گوں نے میں بات کہی ،اور حضرت مقدام نے فرمایا: نعم ، و لیس بہ بائس ،ادراس جو اب باصواب سے اس امر کی جانب اشارہ فرمایا: نعم ، و لیس بہ بائس ،ادراس جو اب باصواب سے اس امر کی جانب اشارہ فرمایا: نعم ، و لیس بہ بائس ،ادراس جو اب باصواب سے اس امر کی جانب اشارہ فرمایا نعم ، و لیس بہ بائس ،ادراس جو اب بائس کی قاضوں اس کے مطابق کے مطابق کسپ حلال کی ہرصورت کو اختیار کیا جائے گا؛ اگر ایسانہ کریں گے تو پھر حرام راستوں پرچل پڑیں گے۔

اسلاف كامقوله ع" أتجبروا واكتسبوا فأنكم في زمان اذا احتاج احدكم كان اوَّلُ ماياكل دينه "اور حفرت لقمان

علیہ السلام نے اپنے بیٹے کونسیحت کرتے ہوئے فرمایا تھا'نیا بنئی استغن بالکسبِ الحلالِ عن الفقر فانه ما افتقر احدّالا اصابه ثلاث خصال رقتفی دینه وضعف فی عقله و ذهاب مروَّة واعظم من هذه الثلاثِ الاستخفاف الناس به (از تعلیق: ۲۹۳/۳) خلاصه کلام: الله تعالی نے بندول کو بنار اور درہم ، مال و دولت جوعطا فرمائی ہے یہ الله تعالی کی بڑی فعمت ہے، اور بندول کو بیاس لیے عنایت ہوتی ہے کہ بندے باعزت طریقہ براس نفع حاصل کریں اور شریعت کے اصول کے مطابق اور شرعی صدود کی رعایت کرتے ہوئے اس کو استعمال کریں ، تجارت کریں ، بلاشہ اس میں خیر ، برکت اور صلاح کے اسباب پوشیدہ ہیں۔ (اسعدی)

﴿بِلاوجه ذریعه معاش کی تبدیلی نه کی جائے ﴾

﴿ صديتُ بُهُ ١٧٤ ﴾ وَعَنْ نَافِعِ قَالَ: كُنْتُ أَجَهِزُ إِلَى الشَّامِ وَالِيٰ مِصْرَ فَجَهَزْتُ الِي الْمِرَاقِ فَاتَيْتُ اللَّي الْمُوْمِنِيْنَ اكْنُتُ أَجَهَزُ اللَّي الشَّامِ فَجَهَزْتُ اللَّي العِرَاقِ فَقَالَتْ: أُمَّ الْمُوْمِنِيْنَ اكْنُتُ أَجَهَزُ اللَّي الشَّامِ فَجَهَزْتُ اللَّي العِرَاقِ فَقَالَتْ: لاَ تَفْعَلْ مَا لَكَ وَلِمَتْجَرِكَ فَانَى سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: إِذَا سَبَّبَ اللَّهُ لِأَخْدِكُمْ رَزْقاً مِنْ وَجْهِ فَلَا يَدَعْهُ حَتَى يَتَغَيِّرَ لَهُ أَوْ يَنَكُرَ لَهُ . رَوَاهُ وَابْنُ مَاجَةً.

توجه: حضرت نافع ہے مروی ہوہ فرماتے ہیں کہ میں سامان (تجارت) ملک شام اور ملک مصر بھیجا تھا، پس میں نے (قصد کیا) عراق کی طرف روانہ کرنے کا، میں اُمُ الموشین حضرت عائش کے پاس حاضر ہوا اور میں نے ان سے عرض کیا یا ام الموشین! میں سامانِ تجارت شام روانہ کرتا ہوں، پس میں نے قصد کیا ہے عراق روانہ کرنے کا، حضرت عائش نے فرمایا: تم (یہ) نہ کرو تم اپنی جس تجارت گاہ (مال روانہ کرتے ہوتو اس میں) کیا وجہ آپ کے لیے پیش آئی؟ (اس قدیم جگہ کو بلاوجہ ترک نہ کرو) کیوں کہ میں نے رسول الشمالی ہے سے اللہ تعلق نے میں سے کی مخص کے لیے رزق کے حصول کے لیے کوئی سب بنا دیا ہوتو اس کو رک نہ کرویہاں تک کہ اس کے لیے منظم ہوجائے اور یا نقصان ہونے گے اس کو ۔ (احمد ابن ماجد آپ

کلمات حدیث کی تشریکی تشریکی تشریکی از تجهیز بروزنِ تفعیل ،اوراس جگدمراد ہے کہ بذریعدای دکلار اور کارندوں کے مال تجارت ملک شام برائے تجارت بھیجا ہوں، فتجهزت: سو پھر میں نے قصد کیا کہ ملک عراق روانہ کروں ،مقصد بیان بہے کہ تجارتی منڈی تبدیل کردوں۔

مالك؟ برائے استفہام اور برائے انكار ہے، تم ايها كول كرتے ہو؟ آئندہ جملے ہوا كد حضرت عائشكا مقصداس پر انكاركرنا اور منع كرنا ہے اور اس كے بعداس كى وجہ بھى بيان فرمائى . منجوك ، ظرف مكان ؛ يعنى آپ كى تجارتى جگد ، ملك شام كوتبديل كرنے كى ضرورت نہيں ہے جب تك كوئى ضرورى وجہ نہ ہو ۔ فانى المخ ، فابرائے سب ہے ؛ يعنى بيل تم كوتبديل نه كرنے كا جومشوره دے رہی ہول وہ آپ الله كے كاس ارشادكى وجہ ہے ، آپ الله كا يوارشاد ہے جس ميں آپ الله نے ايك اصول بيان فرمايا ہے كہ الله تعالى نے جس ميں آپ الله تعالى الله تعالى الله وہ دنہ ہو الله تعالى الله تعالى الله وہ دنہ ہو كار اس معاش كا در يوعطاكيا ہوا ہواس كواس وقت تك نه ترك كيا جائے كہ جب تك (كوئى الى وجہ دنہ ہوكا كار ميں انفر نه ہوجائے ، فائدہ نه ہوا اور نقصان ہونے لگے؛ لہذا اب تبديلى كے ليے ضرورى وجہ اور سب ہوگيا۔

خلاصة كلام: يہ كہ جواسبابِ معاش مباح اور جائز اختيار كي ہوئے ہيں اور بحرالله اس سفروريات بھى عاصل ہورہى ہيں تو بلاكى ضرورى وجه كے مالفة صورت كوتبديل نه كيا جائے كه دراصل و منجانب الله عطاشدہ ہاوراس ميں بركت ہے، اوراب جوتبديلى ك تجويز بيش نظر ہے ہوسكتا ہے كہ اس ميں انسانی ، نفسانی اور وسوسر شيطانی اور غلط مشوروں كی وجہ سے يہ خيال بيدا ہو، اور تحض ترتی كے احتمالی تصور سے بحی ايسانه كرنا جا ہے تاوقت كي نقصان ہونے لگا ہو، نفع بخش نہيں رہا ہو۔ من اصاب من اميرمهاح وجب عليه ملازمته و لا يعدلُ عنه الى غيرهِ إلّا يضار لان كلّا ميسر لما خلق لهُ والله اعلم_(الرَّطِق:٣٩٥/٣)

﴿حضرت ابو بكرٌ اور كمال تقوىٰ ﴾

﴿ مديث مُبرا٢٢٤ ﴾ وَعَنْ عَائِشَة قَالَتْ: كَا نَ لِآلِي بَكْرٍ عُلَامٌ يُخَرِّجُ لَهُ الْحِرَاجَ فَكَانَ اَبُوْ بَكْرٍ يَاكُلُّ مِنْ حِرَاجِهِ فَجَاءَ يَوْمًا بِشَىءٍ فَاكُلَ مِنْهُ اَبُوْ بَكْرٍ فَقَالَ لَهُ الْغُلَامُ تَدْرِىٰ مَا هَلَا فَقَالَ آبُوْ بَكْرٍ : وَمَا هُوَقَالَ كُو الْغُلَامُ تَدْرِىٰ مَا هَلَا فَقَالَ آبُوْ بَكْرٍ : وَمَا هُوَقَالَ كُونْتُ تَكُهُّنْتُ لِإِنْسَانَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَمَا أُحْسِنُ الْكَهَانَةَ إِلَا أَنَّى خَدَعْتُهُ فَلَقِيَتِي فَاعْطَانِي فَبِذَالِكَ فَهِلَا اللهِ عَلَى مَا كُلْتَ مِنْهُ قَالَتُ فَالَتْ فَالْدَى اكْلُتَ مِنْهُ قَالَتُ قَالَتُ قَادُخَلَ أَبُو بَكُرٍ يَدَهُ فَقَاءَ كُلُّ شَيْءٍ فِي بَطْنِهِ . رَوَاهُ الْبُخَارِقُ.

قو جعه : حفرت عائش هر ماتی بین که حضرت ابو بکر صدین کا ایک غلام تفاجو حضرت ابو بکر گوخراج و یا کرتا تھا، حضرت ابو بکر اس کے خراج (کی آبد) سے کھایا کرتے تھے، ایک دن کو کی شی رہے کر آیا ، حضرت ابو بکر ٹے اس میں سے بچھ کھالیا ، کھانے کے بعد غلام نے عرض کیا آپ کو معلوم ہے کہ یہ بہاں سے آیا جو معلوم ہے کہ یہ بہاں سے آیا جو حضرت ابو بکر صدیق نے فر مایا: کہاں سے آیا ہے؟ اس غلام نے عرض کیا کہ میں نے زمانہ جالمیت میں ایک میں نے زمانہ جالمیت میں ایک میں نے اس کو دھو کہ دیا (اور اس کا جا بھت میں ایک میں نے اس کو دھو کہ دیا (اور اس کا کام ہو گیا) سواس محض نے (اب) مجھ سے ملاقات کی اور بیاس نے مجھکودی ہے، پس جوشی رآپ نے کھائی ہے وہ بہی ہے ، حضرت عائش بیان کرتی ہیں کہ حضرت ابو بکر نے اپنا تھ (حمل میں) داخل کیا اور جس قدران کے پیٹ میں تھا اس کو نکال دیا۔ (بخاری)

کلمات صدیث کی تشریکی النحواج: وه مقرر شده رقم جوغلام پر تجویز کرده جو که وه اپنی آمدنی میں بید مقدار مالک کواوا کریگا۔
کلمات حدیث کی تشریکی النحر ہے: راد پرتشدید، یعنی مقرر شده روزیندادا کیا کرتا، مضاف محذوف ہے لینی آبدنی میں ہے،
تکھنٹ : بتکلف میں نے عمل کہانت کیا جبکہ میں اس سے وائف بھی نہ تھا، الاسے اسکو بیان بھی کردیا کہ میں نے تو دھوکا (بی) دیا تھا۔
خلاصة کلام: بیہ ہے کہ کہانت اور اس کے ذریعہ مال حاصل کرنا بھی حرام ہے، اور اس کے ساتھ خداع (دھوکا دینا) بھی حرام ہے،
اس طرح اس میں دوحرام کا اجتماع ہونے کی وجہ سے اس کی حرمت میں اور شدت بیدا ہوگئ ہے، بہر حال اصل حرمت اور اجرت کہانت
بی ہے جس کو حلوان الکا بمن وہ لوگ کہتے ہیں۔ (جبی ازتعلی)

معزت ابو بکر مدین کار عل نہایت تقوی اور پر بیزگاری کو اختیار کرنا ہے اور کمالی تقوی اور کمالی ورع یہی ہے کہ بیٹ بی کوئی الی ہی دعزت ابو بکر مدین کار میں ہے کہ بیٹ بی کہ بیٹ بی کہ بیٹ بی کہ بیٹ بی بیت الی بی بیت الی بی بیت الی بی بیت خیال دکھتے تھے اللہ تعالی بیم کو بھی الی بیت منابعت فرمادیں۔ (آبین) عنابت فرمادیں۔ (آبین)

﴿مَالُ حَرَامُ كَمَانِي يُرِيمُنَّكَارِ﴾

﴿ صِرَيَتْ بَهِ ٢٢٤ ﴾ وَعَنْ آيِيْ بَكُو آنَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : لَا يَذْخُلُ الْجَنَّةَ جَسَدٌ عُذِي بِالْحَرَامِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِيْ شُعَبِ الْإِيْمَانِ.

قوجمه: حفرت ابو برصد بن مروى ب كرسول الله عَلَيْ في ارشاد فرمايا: جوجم حرام مال ي برورش بايا بدوه جنت على داخل ند بركا_(يبنيّ)

جس بدن کی پرورش مال حرام ہے ہوئی تھی وہ معنوی اعتبارے نجس ہے! اس لیے وہ فی الحال عذاب کا محلت صدیث کی تشریح کے البندا قصد أاور طاہراً مال

حرام ندکھائے ، کمل پر بیز کیا جائے اور اگر عدم علم یا خفلت سے دنیا بھی ایسا کیا تھا تو موت سے پہلے اس کی تلائی کرے۔ حدام جال سے نماز مقبول نه هوگی ،

﴿ صَدَيَتُ مُمِرُ ٢٧٤٣﴾ وَعَنُ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: مَنِ الشَعَرَىٰ لَوْبِاً بِعَشْرَةِ دَرَاهِمَ وَ فِيْهِ دِرْهَمٌ حَرَامٌ لَمْ يَقْبَلِ اللّهُ تَعَالَىٰ لَهُ صَلَاةً مَا دَامَ عَلَيْهِ ثُمَّ اَدْحَلَ إصْبَعَيْهِ فِى أُذْنَيْهِ وَقَالَ صُمِّنَا إِنْ لَمْ يَكُنُ النَّبِيُّ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَصَلَّمَ سَمِعْتُهُ يَقُولُهُ رَوَاهُ آحْمَدُ وَالْبَيْهَةِيُّ فَى شُعَبِ الْإِيْمَانِ قَالَ وَإِسْنَادُهُ ضَعِيْفٌ.

موجه : صغرت عبدالله بن عرض فرمایا: جس فض نے ایک کیژا دس درہم میں خرید کیا اور اس میں ایک درہم حرام کا ہے تو اللہ تعالی اس کی نماز اس وقت تک قبول نہیں فرما ئیں گے جب تک وہ کیڑا اس کے جسم پر ہے ، اس کے بعد حضرت عبداللہ نے اپنی الکیوں کو اپنے کا نول میں واض میں واض کیس اور فرمایا: یہ دونوں کان بہرے ہوجا کیں اگر میں نے اس ارشاد کو نبی اکرم تعلیق سے ندستا ہو کہ آپ تعلیق اس کوفر ما رہے تھے۔ (احمر بیسی نے فرمایا: اس کی استاد ضعیف ہے)۔

کلمات صدیث کی تشری کے ازروئے تاکیدید کلمات صدیث کی تشری بیان دیا ہے کہ میں نے اس کلام نبوی اللہ کا کو بذات خود سنا ہے اور جھے کوخوب یاد ہے اور محفوظ ہے جس

من جھ كوشك اورشبيس ہے، مل نے اس كلام كواسى طرح بيان كيا جس طرح ميں نے اس كوسا تھا۔

خلاصة كلام: عندالله بالرحمام بهت مبنوض اورنالبنديده ثي، به ابل ايمان اس سے نهايت ابتمام كے ساتھ بر بيزكري؛ اگر چه وه بهت قليل مقدار بوء اوراكثر حصه مال حلال بوء اور عدم قبوليت؛ لينى عندالله وه مغبول نه بوگ جس پراجروثو اب حاصل بوگا، البتة اس كه دمه سے وه نماز ادا بوگئى ہے حكم دنيوى كے اعتبار سے؛ للندااس پر قضا واجب نه بوگى كه جس طرح خصب كرده زمين ومكان ميں نماز پڑھى جائے تو وه عندالله مقبول نہيں؛ ليكن نماز ادا بوگئى ہے۔ (ارتعاق)

<u>باب المُساهلة في المعاملة</u>

الغصل الاول

﴿معاملات میں نرمی کرنے والے کے لیے آپؑ کی دعاء رحمت ﴾ ﴿معاملات میں نرمی اورسھولت اختیارکرنا ﴾

﴿ صِينَ بُهِ ٣٦٤٣﴾ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَجَمَ الْلَهُ وَجُلا سَمْحًا إِذَا يَا عَ وَإِذَا الشُّعَرِئُ وَإِذَا الْمُتَعِنِ. وَوَاهُ الْبُخَارِئُ

قوجمه : حفرت جابر فی کیا کدرسول النظافی فی مایا: الله تعالی رخم فرمائی زم (خو) شخص پر که جس وقت فروخت کرتا ہزی کرتا اور جس وقت خرید کرتا ہے تو نری کرتا اور جس وقت تقاضا کرتا ہے تو نری کرتا ہے۔ (بناریؒ)

﴿نرم خونی کی نضیلت﴾

﴿ صديث تُمِر ٢٧٤٥﴾ وَعَنْ حُدَيْفَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: إِنَّ رَجُلاَ كَانَ فِيمَنَ كَانَ قَيْمَنَ كَانَ قَيْلَ لَهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: إِنَّ رَجُلاَ كَانَ فِيمَنَ كَانَ قَبْلَكُمُ النَّاهُ الْمُلَكُ لِيَقْيِصَ رُوْحَهُ فَقِيلَ لَهُ اعْلَمْ عَمِلْتَ مِنْ خَيْرٍ قَالَ قَالَ مَا اَعْلَمُ قِيلَ لَهُ انْظُرْ قَالَ مَا عَلَمُ قَيْلَ لَهُ انْظُرْ قَالَ مَا عَلَمُ فَيْدًا وَاللهُ عَيْرَ اللهُ عَنْ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الْمُعْتَقِيقَ عَلَيْهِ وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ نَحْوَهُ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ وَآبِي مَسْعُودٍ الْآنُصَادِى * فَقَالَ اللهُ:

أَنَا أَحَتُّى بِذَا مِنْكَ تَجَاوَزُوا عَنْ عَبْدِي.

موجهد: حضرت حذیفہ فی نیا کہ رسول اللہ نے فرمایا: بالیقین تم لوگوں ہے بل آیک فی تھا، اس کے پاس فرشتہ آیا؛ تا کہ اس کی روح قبض تھا، اس کے پاس فرشتہ آیا؛ تا کہ اس کی روح قبض کرے، پس اس فیض سے سوال کیا گیا تو نے کوئی نیک عمل (بھی) کیا ہے؟ اس نے کہا: پس نہیں جانتا، البتہ بس دنیا میں لوگوں کوفرو وہت کرتا تھا، مالدار کومہات اور تنگدست سے درگذر کیا کرتا تھا، کوفرو وہت کرتا تھا، مالدار کومہات اور تنگدست سے درگذر کیا کرتا تھا، کی اللہ تعالی نے اس کو جنت میں داخل کردیا۔ (بخاری وسلم)

اورمسلم کی ایک راویت میں اس کے مانند مروی ہے براویت عقبہ بن عامر اور ابی مسعود انصاری ، پس اللہ تعالی نے فرمایا میں اس (آسانی اور درگذر کرنے) کا زیادہ حق رکھتا ہوں تیرے مقابلہ میں (اے فرشتو! تم) میرے بندہ سے درگز رکرو۔

﴿قسم کھاکرمال فروخت کرنامکروہ ھے﴾

﴿ صِرِيثُ مُبِر ٢٧٤٧﴾ وَعَنْ آبِي قَتَادَةً قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: إِيَّاكُمْ وَكُثْرَةً الْحَلْفِ فِي الْلَهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: إِيَّاكُمْ وَكُثْرَةً الْحَلْفِ فِي الْبَيْعِ فَإِنَّهُ يُنفِّقُ ثُمَّ يَمْحَقُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

موجعه ومطلب: حضرت الوقادة في نقل كياكه رسول الله الله في فرمايا: بجوتم فتم كعان كى كثرت سے بي يس اكول كه تم سامان كو (جلد) فروخت كرادے كى اور پھر بركت ختم (اورزائل) بوجائے كى۔ (مسلم)

﴿ صِرِيتُ مُبِرِ٢٧٤ ﴾ وَعَنْ آبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ الْحَلْفُ مَنْفَقَةٌ لِلسَّلْعَةِ مُمْحِقَةٌ لِلْبُوكَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجهه: حفرت الع بريرة في بيان كياكه ش في رسول التعلقة سي سنا بي آستانة فرماد به منظ (جمولي يا كثرت كماته) منه كانا سامان كي جلن كا (فروفت كريكاتو) باحث ب اور بركت كومناوية (اور ذائل كردية) كاسبب ب (بخاري وسلم) هو ديث تبر ٢١٤٨ كه وعن آبي ذرعن النبي صلى الله عَليه وسلم قال: قلالة لا يُكلِمُهُمُ الله يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يَنْظُرُ النّهِمْ وَلَا يُوَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ آلِيمٌ قَالَ اللهُ ذَرٌ: حَابُوا وَحسِرُوا مَنْ هُمْ يَا رَسُولَ اللهِ إِقَالَ المُسْهِلُ وَالْمَنَانُ وَالْمُنَفِّقُ سِلْعَتَهُ بِالْحَلِفِ الْكَاذِب. رَوَاهُ مُسلِمٌ.

قرجمه و مطلب: حضرت ابودر ابودر ابودر آنی اکرم الله سے اس کرتے ہیں ،آپ الله فی فرمایا: تمن (متم کے)لوکوں سے روز قیامت الله تعالیٰ کلام نہیں کریں گے اور ندان کی طرف (رحمت کی) نظر فرمائیں گے اور ندان کو (گناہ کی گندگی سے) مساف کریں گے اور ان کے لیے در دناک عذاب ہوگا۔

تعفرت ابوذر شنع من كيا: بلاك بو مح اور خماره من برا مح ، وه كون لوگ بي يارسول الله ا آپ نے فر مايا: إسبال كرنے والا اوراينے سامان كوجمو في قسمول كے ساتھ رواج دينے (اور فروخت كرنے) والا۔ (مسلم)

المصل الشانب

چامانت داراورسچانی پسندتاجری

﴿ صَدَيَتُ مُمِ ١٢٤٤ ﴾ عَنْ آبِي سَعِيْدٍ: قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: التَّاجِرُ الصَدُوْقُ الْآمِيْنُ مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَالصَّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ. رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَالدَّارَ قُطْنِيُّ وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ عَنِ ابْنِ عُمَرَ، قَالَ التَّرْمِلِيُّ: هٰذَا حَدِيْتُ عَرِيْبٌ. قر جمه: حصرت ابوسعید فقل کیا کدرسول الله عظف نفر مایا: امانت دارسجاتا جر (بروز قیامت) انبیار کرام اورصد یقین اورشدار کے ساتھ موگا۔ (ترندی، داری، دارقطنی)، اور ابن ماجة نے بیاحدیث براویت ابن عمر قل کی ، ترندی نے فر مایا: بیصدیث فریب ہے۔

وتمارت کے ساتہ صدقہ وغیرات کامکم ﴾

﴿ مديث نَبر ٢١٨﴾ وَعَنْ قَيْس إِنِ آبِى غَرَزَةَ قَالَ: كُنَّا نُسَمِّى فِي عَهْدِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ السَّمَا لَا بِاللهِ هُوَ آخْسَنُ مِنْهُ فَقَالَ: يَا وَسُلَمَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَمَا لَا بِاللهِ هُوَ آخْسَنُ مِنْهُ فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ التُّجَارِ إِنَّ البَيْعَ يَخْضُرُهُ اللَّهُ وَ الْحَلِفُ فَشُوْبُولُ بِالصَّدَقَةِ. رَوَاهُ ٱبُوْدَاوَدَ وَالتَّرْمِذِي وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَةً.

توجمه و مطلب: حضرت قیس بن الی غرز "فرماتے ہیں کہ ہم رسول اللہ اللہ کے عہد میں (تجار) سامرہ کے نام سے موسوم تھ، ایک مرتبدرسول اللہ اللہ ہوئے ہمارے پاس سے گزرے اور آپ آلی نے ہمارا نام اس سے (بھی) بہت عمدہ تجویز فرمایا ،فرمایا: اے جماعت تجار ایقیناً فریدوفروخت میں لغو (اورفضول گوئی) ہوجاتی ہے اور شم (بھی) لہذاتم لوگ اس کوصد قد کے ذریعہ صاف کرد۔ (ابوداؤ دُرَمَذَیٌ، نسائی ،این ماجہؓ)

﴿تاجِروں کی اقسام﴾

﴿ صَلَى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ التَّجَارُ يُخْفَعُ عَنْ آبِيْهِ عَنِ النِّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ التَّجَارُ يُحْشَرُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فُجَّارًا إِلَّا مَنِ اتَقَلَى وَبَرُّ وَصَدَقَ رَوَاهُ التّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِمِيُّ وَرَوَى الْبَهْقِيُّ فِي شُقَبِ الْإِيْمَانِ عَنِ الْبَرّآءِ وَقَالَ التّرْمِذِيُّ هَلَا حَدِيْثٌ حَسَنَّ صَحِيْحٌ.

توجهه و مطلب: حضرت عبید بن رفاعة بروایت والدخود نبی اکرم نطان کا ارشاد نقل کرتے ہیں ،آپ تا نظی نے فرمایا: تا جرلوگ بروز قیامت جمع کیے جائیں گے فاجر (اور فاس لوگوں) کے ساتھ؛ مگر جو شخص اللہ سے ڈرتا اورلوگوں کے ساتھ بھلائی کرتا اورسچائی اختیا رکرتا تھا۔ (ترندیؒ، این ماجّہ، داریؒ، بیقیؒ براویت براڑ، اورامام ترندیؒ نے فرمایا: بیصدیث حسن سمجے ہے)

<u>بابالخيار</u> الفصل الاقل

﴿خريدوفروخت ميں اختيار﴾

﴿ مديث بُهُمَا بِالْخِيَارِ عَلَى صَاحِبِهِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا إِلَّا بَيْعَ الْخِيَارِ مُتَفَقَّ عَلَيْهِ وَسَلَمَ : الْمُتَبَايِعَان كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا بِالْخِيَارِ عَلَى صَاحِبِهِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا إِلَّا بَيْعَ الْخِيَارِ مُتَفَقَّ عَلَيْهِ وَلِي رِوَايِةٍ لِمُسْلِمِ إِذَا تَبَايَعَ الْمُتَبَايِعَان فَكُلُّ وَاحِدٍ مُنْهُمَا بِالْخِيَارِ مِنْ بَيْعِهِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا أَوْ يَكُونُ بَيْعُهُمَا عَنْ خِيَارٍ فَإِذَا كَانَ بَيْعُهُمَا عَنْ خِيَارٍ فَإِذَا كَانَ بَيْعُهُمَا عَنْ خِيَارٍ فَإِذَا كَانَ بَيْعُهُمَا عَنْ خِيَارٍ فَإِنَّهِ لِلتَّرْمِلِي الْمُتَعَوِي مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا أَوْ يَكُونُ بَيْعُهُمَا عَنْ خِيَارٍ فَإِنَّهِ لِلتَّرْمِلِي الْبَيْعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا أَوْ يَخْتَاراً وَفِي الْمُتَّفَقِ عَلَيْهِ أَوْ يَقُولُ اَحْدَهُمَا لِصَاحِبِهِ اَخْتُو بَذْلَ أَوْ يَخْتَاراً.

تو جهة و مطلب : حطرت عبدالله بن عرف ألل كيا كدرسول الله الله الله المردوخريد وفروخت كرف والحض البين ساتقى (فريق) پراختيار ركيته بين إلى ي من الين برخض بااختيار ب) جس وقت تك وه دونون جداجدانه بون مياييكه بوان دونون كي تخ خياركيما ته ،اوراگران دونون كي في (ي) خيار كرما ته به قو كر (خيار) لازم (اورخقق) بو چكا، اور ترفدي كي ايك روايت من ب ہردہ بائع ومشتری خیار کے ساتھ ہیں جس وقت تک دولوں علیحدہ نہ ہوں یا دولوں افتیار رکھتے ہوں (اصل عقد میں تو پھر یہ بعد تک رہتا ہے)،اور بخاری وسلم کی ایک روایت میں ہے یا ان دولوں میں سے ہرفض اپنے ساتھی سے (یوں) کیج اِ ختر یعنداد اکی جگہ۔

﴿جِمُوتُ اورفریب دھی سے برکت نھیں﴾

﴿ مديث نُبِر ٢٢٨٢﴾ وَعَنْ حَكِيْمٍ بْنِ حِزَامٍ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ: وَسَلَمَ الْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا قَانْ صَلَقًا وَبَيِّنَا بُوْرِكَ لَهُمَا فِي بَيْعِهِمَا وَإِنْ كَتَمَا وَكَلِبَا مُحِقَتْ بَرَكَةُ بَيْعِهِمَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

توجمه و معللب: حفزت علیم بن حزام نے نقل کیا کہ رسول الله تقایق نے فر مایا: بائع اور مشتری دونوں اختیار کے ساتھ ہوتے ہیں جب تک دونوں علا حدہ علاحدہ نہ ہوں ،سواگر دونوں نے سچائی اختیار کی اور صاف صاف کہہ دیا تو دونوں کے لیے ان کے عقد تھے میں برکت دی جائے گی اور اگر (عیب وغیرہ) کو چھپایا اور جھوٹ بولے تو ان کوئے کی برکت دورکردی جائے گی۔ (یخاری دسلم)

خضرورت كيوقت اختياركاهوناي

﴿ صديث بْهِ ٢١٨٣ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَّجُلَّ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنِّي أَخُدَعُ فِي الْبَيْوعِ فَقَالَ إِذَا بَايَعْتَ فَقُلْ لَا خِلَابَةَ فَكَانَ الرَّجُلُ يَقُولُهُ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجهه ومطلب: حفرت عبدالله بن عمر فقل كياكر سول الشقطة في الميض في عرض كياكه بين على بي ووكه كما جاتا مول أو آب في المين المين

الفصل الثاني

﴿تَجَارِتُي مُعَامِلَاتُ مِينَ فَرِيقِينَ كَي رَضَامِنْدِي ضَرُورِي هِيهِ﴾

﴿ صِرِيثُ مُبِر ٢٢٨٥﴾ عَنْ عَمْرِ وَبْنِ شُعَيْبٍ عَنْ آبِيهٌ عَنْ جَدَّهِ آنَ رَسُوْلَ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ قَالَ الْبَيْعَيانَ بِالْحِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَوَّقَا إِلّا آنْ يُكُوْنَ صَفْقَةَ خِيَارٍ وَلَا يَحِلُ لَهُ آنْ يُقَارِقَ صَاحِبَهُ خَشْيَةَ آنْ يُسْتَقِيْلَةُ. رَوَاهُ التَّوْمِذِيُّ وَآبُوْدَاؤُدَ وَالنَّسَائِيُّ.

توجمه ومطلب: حفرت عمروین شعب برواست والدخوداز جد خود نی اکرم الله کاارشاد نقل کرتے ہیں۔آپ ملک نے فرمایا: ودنوں بائع اورمشتری خیار کے ساتھ ہوتے ہیں جس وقت تک وہ دونوں متفرق ندہوجا کیں ، مگریہ کرعقد بھے خیار کے ساتھ (بی) ہوا ہو،اورکی ایک کے لیے مناسب نہیں کہ وہ اسٹے ساتھی سے علا صدہ ہواس اندیشہ سے کہ دہ اس سے اقال محقد کر لےگا۔

(ترندي، الوداؤرة، نساقي)

﴿ خریداراورہائع کے درمیان رواداری﴾

﴿ صديث تُمِر ٢٧٨٧﴾ وَعَنْ آيِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَا يَتَفَرَّقَنَّ اِثْنَانِ اللَّهِ عَنْ تَرَاضِ رُوَاه آبُوْدَاوُدُ

توجمه: ومطلب: حفرت الابريه في اكرم الله كارثاد قل كرت بن كرا بالله في مرز بردوبائع وشترى مغرق نه بول عن مرايا بركز بردوبائع وشترى مغرق نه بول عد مكربابم دضامندى سے (عقد) بر

الغصل الثالث

﴿ مديث تُمِر ٢٩٨٧ ﴾ عَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْرِ أَغْرَابِيًّا يَعْدَ الْبَيْعِ. رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيْثُ حَسَنَّ صَحِيْحٌ غَرِيْبٌ.

قرجعه وصطلب: حفرت جابر عمروی ب كررسول السَّلَا في ايك اعرابي كوافتيار ديائ كے بعد (ترفري، اور امام ترفري في من خريب ب) -

يا<u>ب الريادا</u> الفصل الاول

﴿سودی معاملات حرام هیں﴾

﴿ صِدِيثَ مُبِر ٢٧٨٨﴾ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: لَعَنَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اكِلَ الرِّبَا وَمُوْكِلَهُ وَكَاتِبَهُ وَشَاهِدَيْهِ وَقَالَ هُمْ سَوَاءٌ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

ترجمہ دمطلب: حضرت جابڑنے نقل کیا کہ رسول الٹھائیے نے سود کھانے (بینی لینے) اور کھلانے (بینی دینے) والے پرلعنت فرمائی اور سود کے (حساب دغیرہ کے) کھنے اور اس کی گواہی دینے والے پر (بھی) لعنت فرمائی ، اور ارشاد فرمایا: یہ سب (اصلِ گناہ میں) برابر میں۔ (مسلم)

خسودكى حرمته

الله تعالی اپن حکسید بالغداور بندول کی مصالح اور نظام عالم کے حسن وخیراور فلاحی زندگی کے لیے اور ان تمام فوا کدے ساتھ بندول پرقانون اللی کے نفاذ کے ساتھ امتحانی زندگی کہ بندہ کس درجہ انتقال امر کرتا ہے۔

(الف)ادراس کوقانون کے ذریعہ پھھاشیار ہےروک دیا گیاہے اور قانون شریعت سے ان کوترام کردیا گیاہے، اُن میں سے ایک سودی معاملات بھی ہیں۔

مال اور دونت کی الندتعا فی عطا کرده بردی نعت ہے، نظام عالم کی مصالح اور پُر از حکمت کیا تھا بعض بندوں کوکثیر مقداریں بینعمتِ مال عطا فرمائی ہے،اوربعض بندوں کوغریب اورمفلس رکھا ہے۔

(ب) اورحالات اوروقب ضرورت ایک غریب شخص بالدارے قرض کاطالب ہوتا ہے بگروہ بال کی طمع اور تکثیر کے لا لیج میں سودطلب کرتا ہے، ضرورت منداس پرنا چارہ توکر رضامند ہوتا ہے اورای طرح وہ سود کی لعنت میں گرفتار ہوکر مزید مفلس اور لا چاری کا شکار ہوجاتا ہے ''المداد باہمی'' کا دروازہ بند ہوتا ہے

(ج) اوربعض انسان ہے اصل طریقہ ہے مالداروں کی طرح ہے بوے، بوے منصوبے بنا کرسودی طریقہ پرکاروبارکرتے ہیں جو بلاشہ فیرفطری طریقہ ہے اوروہ ذات ہی بخو بی علم ہیں جو بلاشہ فیرفطری طریقہ ہے اور آخر کاروہ کا میاب نہیں ہوتا، بہر حال اللہ تعالیٰ نے عالم کو پیدافر مایا ہے اوروہ ذات ہی بخو بی علم اور خیر ہے کہ عالم میں اور خیر ہے کہ عالم کا المبتد اور کی العنت 'میں کوئی بھی فریق حیات د ندی میں ہر گزفلاح حاصل نہیں کرسکا؛ کہ جس طرح گندی غذائیں ہے فساد عمل کے اور انسانی ہدردی سے دور کرنے والا نظام جس کو اللہ تعالیٰ نے قطعی حرام فرمادیا ہے۔

وربارسودكي اقسام)

سودی لین دین کی دوشمیں ہیں (۱) حقیقی سود (۲) ملکی سود، جس کوحیقی اور اصلی سود بصورت قرض قم پرایک مشوره کرده (ناجائز) منافع (کے نام) پرمقرد کرنا۔ اس کی مزید تفعیل معزت اقدس مفتی اعظم ،مفتی محد شفیع صاحب نورالله سرقده کی تالیف فرموده ''مسئله سود'' کامطالعہ کیا جائے

وهم هنس اشیاء کے باهمی تبادله وتجارت میں رباکی صورت کے

﴿ صِهِ مَنْ مُهِ ٢٢٨٩﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: قَالَ: رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ : اللَّقَبُ بِاللَّعَبِ وَالتَّمَرُ بِاللَّهَبِ وَالْتَمَرُ بِاللَّهَبِ وَالْتَمَرُ بِاللَّهَبِ وَالْتَمَرُ بِاللَّهِ فِي الْمِلْحِ مَثَلًا بِمَثَلِ سَوَاء بِسَوَاء يَداً بِيَدٍ فَإِذَا خُتَلَفَتْ عَلَيْهِ الْآصَنَافَ فَبِيْعُوا كَيْفَ شِئْتُمُ إِذَا كَانَ يَدا بِيَدٍ وَوَاهُ مُسْلِمٌ.

قو جمه و مطلب: حفرت عبادہ بن صامت نے نقل فرمایا: که رسول النطاقی نے فرمایا بچوتم سونے کوسونے کے وض اور چاندی کو چاندی کے عوض اور گیبوں کو گیبوں کے عوض اور جوکو جو کے عوض اور مجور کو مجور کے عوض اور نمک کونمک کے عوض برابر ، برابر (بوں مقدار میں اور مزید تاکید کے لیے فرمایا: سوار ایسواء) برابر، برابر کے ساتھ ہاتھ در ہاتھ (یعنی دونوں طرف سے نفتہ) اور جب کہ بیاجتاین بدل جا کیں تو چرفر وخت کروتم جس طرح جا ہو بشرطیکہ ہاتھ در ہاتھ ہو۔ (مسلم)

﴿ مَدَيَ مُهُمُ ٢٧٩ ﴾ وَعَنْ آبِي سَعِيْدُ الْمُعَدُوكَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: اَللَّعَبُ بِاللَّعَبِ وَالْفِطَّةُ بِالْفِطَّةِ وَالْبُرُّ بِالْبُرُّ وَالشَّعِيْرُ بِالشَّعِيْرِ وَالتَّمَرُ بِالتَّمَرِ وَالْمِلْحُ بِالْمِلْحِ مَثَلًا بِمَثَلٍ يَداً بِيَدٍ فَمَنْ زَادَ أُواسْتَزَادَ فَقَدْ اَرْبِي الْأَعِدُوالْمُعْطِىٰ فِيْهِ سَوَاءً. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

قر جعب و مطلب: حضرت ابوسعید خدری نفل کیا که رسول الشفاط نفر دایا: فردخت کردتم سونے کوسونے کے موض اور جا ممک کو جا ندی کے موض اور گیبوں کو گیبوں کے عوض اور جوکو جو کے عوض اور مجود کو مجود کے عوض اور نمک کونمک کے عوض (مقدار میں) مشل موں مشل کے عوض، ہاتھ در ہاتھ (بعنی لین دین ہو دونوں جانب ہے) پس جس شخص نے زائد دیایا جس نے زائد طلب کیا تو یقیناً اس نے سود کو اختیار کیا بھود لینے والا اور دینے والا اس میں برابر ہیں۔ (مسلم)

جسونااورچاندی کے ہاہم لین دین کاحکم ﴾

﴿ مديث بُهِ الله الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَيْهِ وَسَلَمَ: لَا تَبِيْعُوْ اللَّهَبَ بِاللَّهَبِ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تَبِيْعُوْ اللَّهَبَ بِاللَّهَبِ اللَّهَ عَلَى مِثْلًا بِمِثْلُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَالْ الْوَرَقَ بِالْوَرِقِ اللَّهَ مَثَلًا بِمَثَلُ وَلَا تُبِيْعُوْ اللَّهَبُ بِاللَّهَبِ وَلا الْوَرِقَ بِالْوَرِقِ بِاللَّهَبُ بِاللَّهَبِ وَلا الْوَرِقَ بِالْوَرِقِ بِاللَّهِ وَلَى رِوَايَةٍ لَا تَبِيْعُوْ اللَّهَبُ بِاللَّهَبِ وَلاَ الْوَرِقَ بِالْوَرِقِ اللَّهُ اللَّهِ وَلَا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّ

قوجمه ومطلب: حضرت ابوسعید خدری نفل کیا کدرسول النهای نے ارشادفر مایا: تفروخت کردتم سونے کوسونے کے وض، مگر برابر، برابراوراس کا بعض بعض پرزیادہ نہ کرو، اور جا ندی کو جا ندی کے وض نفروخت کرو؛ مگروزن (میں من حیث المقدار) وزن کے برابر مواور ذائد نہ کر دیعض پر بعض کواور نہ بھے کروان میں سے کی کی غائب کی نفذ کے وض (بواری وسلم)

 رهم منس اشياء كاتبادله برابركروي

﴿ مديث بُهِ ٢١٩٢) ﴾ وَعَنْ مَعْمَرٍ بْنِ عَبْدِاللَّهِ قَالَ: كُنْتُ اَسْمَعُ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: الطَّعَامُ بِالطَّعَامِ مَثَلًا بِمَثَلِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

قوجمه ومطلب: حضرت معمر بن عبدالله بيان فرمات بي كديس فرسول السلطة عناع بالمنظمة فرمارع تع مغله عله كوض برابر برابر فرو وحت كرو_ (مسلم)

﴿متعدالقدرچيزوں كيے تبادله ميں ادھارناجائزھيے﴾

﴿ مديث بُهِ ٣٢٩٣ ﴾ وَعَنْ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: اَللَّهَبُ بِالنَّهَبِ رِبًا اِلَّا هَاءَ وَهَاءَ وَالْبُرُ بِالْبُرِّ بِاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: اَللَّهُ بِالنَّهِيْرِ رِبًا اِلَّا هَاءَ وَهَاءَ وَالْبُرُ بِالْبُرِّ بِاللَّهُ فِا اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهِيْرُ بِالشَّعِيْرِ رِبًا اِلَّا هَاءَ وَهَاءَ وَهَاءً وَهَاءً وَهَاءً مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجمه و مطلب: حفرت عرض فرمایا کرسول الله الله فرمایا: سونا، سونے کوش سود ہے؛ مراس ہاتھ لے اوراس ہاتھ دے، اور جاندی، جاندی کے وض سود ہے؛ مراس ہاتھ دے، اوراس ہاتھ لے اور گیبول گیبول کے وض سود ہے؛ مراس ہاتھ لے اور اس ہاتھ دے، اور جو، جو کے وض سود ہے؛ مراس ہاتھ لے اور اس ہاتھ دے، اور مجود کھو رکھوں سود ہے؛ مراس ہاتھ لے اور اس ہاتھ دے۔ (بخاری مسلم)

﴿ جيدا وردى هم جنس اشياء كا تبادله كمى بيشى كي ساته جائزنهين > ﴿ جيدا وردى هم جَنْ اَبِي سَعِيْدٍ وَآبِى هُرَيْرَةَ آنَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِسْتَعْمَلَ رَجُلاً عَلَى خَيْبَر فَجَاءَ هُ بِتَمْرِ جَنِيْبٍ فَقَالَ: آكُلُّ تَمْرِ خَيْبَرَ هَكَذَا قَالَ. لَا وَاللهِ! يَا رَسُولَ اللهِ! إِنَّا لَنَا خُذُ الصَّاعَ مِنْ هَذَا بِالصَّاعَيْنِ والصَّاعَيْنِ بِالثَّلَاثِ فَقَالَ لَا تَفْعَلْ بِعِ الْجَمَعَ بِالدَّرَاهِمِ ثُمَّ اَبْتَعْ بِالدَّرَاهِمِ جَنِيْبًا وَقَالَ: فَي الْجَمَعَ بِالدَّرَاهِمِ ثُمَّ اَبْتَعْ بِالدَّرَاهِمِ جَنِيْبًا وَقَالَ: فِي الْجَمَعَ بِالدَّرَاهِمِ ثُمَّ اَبْتَعْ بِالدَّرَاهِمِ جَنِيْبًا وَقَالَ: فَي الْجَمَعَ بِالدَّرَاهِمِ ثُمَّ اَبْتَعْ بِالدَّرَاهِمِ جَنِيْبًا وَقَالَ لَا تَفْعَلْ بِعِ الْجَمَعَ بِالدَّرَاهِمِ ثُمَّ اَبْتَعْ بِالدَّرَاهِمِ جَنِيْبًا وَقَالَ:

قوجهه و مطلب: حفرت ابوسعید اور حفرت ابو بریرهٔ ہے مروی ہے کہ رسول اللہ اللہ نظافہ نے خیبر پرایک مخص کو عامل مقرر فر مایا، وہ عامل آپ تالیہ کے پاس نہایت عمره مجوری لایا تو آپ تالیہ نے دریافت فرمایا: کیا خیبر کی تمام مجوری ایسی ہی ہوتی ہیں؟ انہوں نے عرض کیا یا رسول اللہ البتہ ہم لوگ اس تم کی مجوری ایک صاع کو دوصاع کے عوض اور دوصاع کو تمن صاع کے عوض تبادلہ کرتے ہیں، آپ تالیہ نے ارشاد فرمایا (بیصورت) نہ کرو، (بلکہ) فروخت کرو (اپنی) ردی تئم کی (یا مخلوط شدہ) مجوروں کو (اوان) دراہم کے عوض اور پھرنیس مجوروں کو دراہم کے عوض فرید لو، آپ تالیہ نے اشیاد ربوا میں جو اشیاد) وزن کی جاتی ہیں ان میں (بھی) ہی کہ مخرمایا۔ (بنی کی جاتی ہیں ان میں (بھی) ہی کہ مخرمایا۔ (بنی گرمایا۔ (بنی گرمای

﴿ اگرایک جنس ھے توہ

﴿ مديث بُمِر ٢٩٩٨﴾ وَعَنْ أَبِى سَعِيْدُ قَالَ: جَاءَ بِلَالَ إِلَى النَّبِيّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بِتَهْ بَوْنِى فَقَالَ لَهُ النَّبِيّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بِعَهْ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بِعَنْ آَيْنَ هَلَا ؟ قَالَ: كَانَ عِنْدَنَا تَهْرٌ رَدِى قَبِعْتُ مِنْهُ صَاعَيْنِ بِصَاعٍ فَقَالَ النَّبِي صَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بَيْعِ النَّهُ مَ النَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بَيْعِ النَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ الْحَقْقُلُ وَلَكِنُ إِذَا آرَدُتُ آنُ تَشْتَرِى بِبَيْعِ التَّهْ وَهُ عَنْ الْمُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بَعِيْهُ الرَّبَا لَاتَفْعَلُ وَلَكِنُ إِذَا آرَدُتُ آنُ تَشْتَرِى بِبَيْعِ التَّهُ وَهُ عَنْ الرَّبَا لَاتَفْعَلُ وَلَكِنُ إِذَا آرَدُتُ آنُ تَشْتَرِى بِبَيْعِ التَّهُ وَيَعْ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بَعِيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَكِنُ إِذَا آرَدُتُ آنُ تَشْتَرِى بِبَيْعِ التَّهُ وَيَعْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بَعِيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَمْلُ وَلَكِنُ إِذَا آرَدُتُ آنُ تَشْتَرِى بِبَيْعِ التَّهُ وَيُعَلِّ الْمُنْ الرَّبَا كَمُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ وَمُسْلَمَ بَالِهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَمُعَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَمَا عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَا عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَالْمُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَالْمُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللْهُ عَلَيْهِ اللْعُلِي اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللْعُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْكُوا عَلَى اللَّهُ الْمُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّهُو

نے ان سے دریافت فرمایا: بیکہال سے لائے ہو؟ انہوں نے عرفس کیا کہ میرے پاس دری تم کی مجوری تھین پس میں نے ان میں کی دو معاع مجوروں کو ایک مصاع کے عوض فرید کر لی ہیں ، آپ آلی نے نے ارشاد فرمایا: اُف! (بیتری عین سود ہے، عین سود ہے، مت کردیکن اگر (نفیس تم کی مجوریں) فرید کرنے کا اراد و کرونا (اولا) ان مجوروں کو فرونت کردوکی دوسری جنس کی جے کے سماتھ اور پھر فرید کر لواس کے بوض ۔ (بغاری وسلم)

﴿اگرسودکی حرمت سے بچناھے تو﴾

﴿ مديث بَهِ ١٩٩٧﴾ وَعَنْ جَابِرِ جَآءَ عَبْدٌ فَبَايَعَ النّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَلَى الْهِ جَرَةِ وَلَمْ يَشْعُرْ آنَهُ عَبْدٌ فَجَآءَ صَيَّدُهُ يُونِيْهِ فَاشْتَرَاهُ بِعَبْدَيْنِ آسُوَدَيْنِ وَلَمْ يُبَايِعْ اَحَداً بَعْدَهُ حَتَّى يَسْأَلُهُ أَعَبُدُ هُوَ آوْحُرٌ ؟ رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

قوجهه و مطلب: حفرت جابر فقل فرمایا کرایک غلام حاضر (خدمت نبوی) ہوا اور اس نے نبی اکرم بھٹے ہے بیت کر لی اجرت پراور آپ تھٹے کو علم ندقعا کروہ غلام ہے، پھر آپ تھٹے کے پاس اس غلام کا مالک آیا جواس کو لے جانے کا ارادہ کرتا تھا، آپ تھٹے کے اس اس غلام کا مالک آیا جواس کو جانے کا ارادہ کرتا تھا، آپ تھٹے نے اس سے فرمایا کرتم اس کوفروخت کردو؛ چنا نچہ آپ تھٹے نے اس کودہ جبشی غلاموں کے عوض فرید کرلیا، اور اس واقعہ کے بعد آپ تھٹے نے اس کودہ جبشی غلاموں کے عوض فرید کرلیا، اور اس واقعہ کے بعد آپ تھٹے کے اس سے سوال فرما لیتے کیا وہ غلام ہے یا آزاد؟ (مسلم)

﴿هم جنس اشیاء کاتفاوت کیے ساتھ لین دین جائزنھیں﴾

﴿ صَلَيْتُ مُبِرِ٢٦٩٤﴾ وَعَنْهُ قَالَ: نَهِنَى رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَنْ بَيْعِ الصَّبْرَةِ مِنَ التَّمْوِ لَا يُعْلَمُ مَكِيْلَتُهَا بِالْكَيْلِ الْمُسَنِّمِي مِنَ التَّمْوِ. رَوَاهُ مُسْلِبٌ.

قد جمه وصطلب: حضرت جابر فقل كيا كرسول السُّلَقِينة في مجورول ك وْ عِركُون كاكيل معلوم ند ، وفروخت كرفي منع فرايا بمقدار معلوم مجورول كوش (مسلم)

> ﴿سونیے کی خریدوفروخت کامسٹلہ ﴾ ﴿بیع صرف کا ایک مسئلہ ﴾

﴿ صَدَيَثُ بَهِ ٢٦٩٨﴾ وَعَنْ فَضَالَةً بْنِ آبِي عُبَيْدٍ قَالَ: الشَّتَرَيْتُ يَوْمَ خَيْبَرَ قِلَادَةً بِالْنَى عَشَرَ دِيْنَاراً فِيْهَا ذَهَبٌ وَخَرَزٌ فَفَصَّلْتُهَا فَوَجَدْتُ فِيْهَا ٱكْثَرَ مِنْ الْنَى عَشَرَ دِيْنَاراً فَذَكُوْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَقَالَ: لَا تُبَاعُ حَتَى تُفَصَّلَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

قوجهه و معلمب: حضرت فضاله بن افی عبید نے بیان فرمایا کہ بیس نے تیبروالے دن ایک ہاربارہ دینار کے کوش ترید کیا جس میں مونا اور تکینے تھا، بیس نے ان تکول کوسونے سے جدا کر دیا، پس میں نے اس ہار بیس بارہ دینار سے زائد سونا موجود پایا ۔ تو پھر بیس نے نبی اکرم تنافظ سے اس بات کا تذکرہ کیا، آپ تلک نے ارشاو فرمایا فروخت نہ کیا جائے یہاں تک کہ علاحدہ کر لیا جائے۔ (مسلم)

الغصل الثاني

﴿ سودکیم باریم میں آپ کی پیش گوئی سودی معاملات بکشرت هوں گیے ﴾ ﴿ صریت بمبر ٢١٩٩﴾ عَنْ آبِیْ هُرَیْرَةَ عَنْ رَسُوْلِ اللّهِ صَلّی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ قَالَ: لَيَاتِيَنَّ عَلَى النّاسِ زَمَانَ لَا يَبْقَى آحَدٌ إِلّا آكِلُ الرّبَا فَإِنْ لَمْ يَاكُلُهُ آصَابَهُ مِنْ بُخَارِهِ وَبُرْوىٰ مِنْ عُبَارِهِ. رَوَاهُ آحُمَدُ وَآبُوْدَاؤَدَ

وَالنَّسَائِيُ وَابْنُ مَاجَةً.

قوجعه وصطلب: حفرت ابو ہریرہ می اکرم آفت کا ارشاد اس نے بین آپ آفتے نے ارشاد فربایا: لوگوں پرایک زبانداییا ضرور آئے گاکہ (اس وقت) کوئی شخص باتی ندر ہے گا؛ گرسود کھائے گا،اوراگراس نے سوڈ بیس کھایا تو اس کا دھواں (بینی اس کا اثر اس کوخرور پروٹی کا اورایک روایت میں منقول ہے "من غبارہ" بینی اس کا گردو غبار۔ (احدٌ،ابودارُدٌ،نسانی،ابن ماجہؓ)

بروپ با اوراس کی ممانعت اس وجہ ہے گئی کہ زماعہ جا ہایت میں اہلِ کفر کا یہ ایک قمار (جوا) کی صورت تھی۔اور کھوا (قمار) شریا معشوعہ:۔ اوراس کی ممانعت اس وجہ ہے گئی کہ زماعہ جا ہایت میں اہلِ کفر کا یہ ایک قمار آجی کی ایسی تجارتیں بکثرت رائج ہیں۔ حرام ہے؛ لہٰذاا گرکوئی تجارت کرے تو قمار (ہوا) بازی کی صورت لاحق ہوگی وہ حرام ہے، آج بھی ایسی تجارتیں بکثرت رائج ہیں۔

﴿مَفْتَلَفَ الْمِنْسِ اشْيَاءَ كَيْ يَذَابِيدِ مِينَ كَمَى بِيشَى جَائِزَهِي﴾

﴿ صريف بُهِ ١٤٠٠ ﴾ وَعَنْ عُبَادَةً بْنِ الصَّامِتِ آنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ: لَا تَبِيْحُوا اللّهَبَ بِاللّهَبِ وَلاَ التَّمْرِ بِالْوَرِقِ وَلاَ البُرُّ بِالْبُرُولَا الشَّعِيْرَ بِالشَّعِيْرِ وَلاَ التَّمْرَ بِالتَّمْرِ وَلَا الْمِلْحَ بِالنَّمْرِ وَلاَ الشَّعْرِ وَلاَ الشَّعْرِ وَلاَ الشَّعْدِ وَلاَ الشَّعْدِ وَالْوَرِقِ وَالْوَرِقِ بِاللَّهَبِ وَالْبُرُ بِالشَّعِيْرِ بِالنَّهِ وَالنَّرِ بِالشَّعِيْرِ وَالنَّرِ وَالنَّهُ وَالنَّهُ بِالشَّعْدِ وَالنَّهِ مِنْ اللَّهُ وَالنَّهُ فَي النَّمْ بِالنَّمْ وَالنَّهُ وَالنَّهُ اللهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَاللَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَاللَّهُ وَالنَّهُ وَالْمُولِ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَالنَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالنَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْوَلِقُ وَالنَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللْهُ وَاللَّهُ وَالْمُولُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُولُ وَالْمُولُ وَالْمُولُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ وَالْمُولُ وَالْمُلْعِلَ وَالْمُلْكِ وَالْمُلْكِ وَالْمُلْكِ وَالْمُلْكِ وَالْمُلْكِ وَالْمُلْكِ وَالْمُلْكِ وَالْمُلْكِ وَالْمُلُولُ وَالْمُلْكِ وَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ اللَّهُ وَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ ولَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ وَاللْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ وَالْمُلْكُولُ وَاللَّلَالُولُولُ وَاللَّهُ وَالْمُلْكُولُ وَاللَّهُ وَالْمُلْكُولُ وَاللَّهُ وَالْمُلُولُ وَاللَّهُ وَالْمُلْكُولُ وَلَالْمُلْكُولُولُ وَاللْمُلْكُولُ وَاللْمُلْكُولُ وَاللْمُلْكُولُ وَلَالْمُولُولُ وَاللْمُلْكُول

﴿رطب ویابس پھلوں کیے باہمی لین دین کامسئلہ﴾

﴿ مديئ بُمرا م ٢٤ ﴾ وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِى وَقَاصِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ عَنْ شِرَى النّهُ مِ اللّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ عَنْ شِرَى النّهُ مِ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ عَنْ شَالِكُ وَوَاهُ مَالِكُ شِرَى النّهُ وَابُوْ مَالِكُ وَوَاهُ مَالِكُ وَالنّهُ وَابُنُ مَاجَةً.

قوجمه و معلی: حفرت سعد بن ابی وقاص نے بیان فرمایا کہ میں نے رسول النہ الله نے نے شاہ کہ آپ الله سوال کے گئے (علی) مجور کو تازہ مجور کے وض خرید کرنے سے متعلق ، تو آپ الله نے دریافت فرمایا: کیا تازہ مجور گئٹ جاتی ہے جب کہ وہ سوکھ جائے؟ تو (ہم نے) کہا جی: ہال ! تو پھرآپ الله نے اس سے نع فرما دیا۔ (ام مالک، ترنی ، ابوداؤ ڈ، نمائی ، این ماجہ)

﴿ و يَتْ بْهِ ٢٤ مُ ٢٤ ﴾ وَعَنْ سَعِيْدٌ بْنِ الْمُسَيِّبِ مُرَسَلًا أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ نَهِى عَنْ بَيْعِ اللَّهْ عِلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهِى عَنْ بَيْعِ اللَّهُ عِلْهُ إِلْحُهِ بِالْحَيْوَانِ قَالَ سَعِيلًا: كَانَ مِنْ مَيْسِرِ آهُلِ الْجَاهِليَّةِ. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ

ترجمه ومطلب: حطرت سعيد بن ميتب عرسلا مروى بكرسول الشيكة فرمايا بكوشت كى كا زعره حيوان كے عوض - حضرت بعيد فرمايا كريدوور جالميت كا جواتھا۔ (شرح سند)

﴿ زنده جانوراورگوشت کی بیع﴾

﴿ مديث تمير ١٢٤٠ ﴾ وَعَنْ سَمُّوةَ بْنِ جُنْدُبٍ أَنْ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهِني عَنْ بَيْعِ الْحَيْوَانِ

بِالْحَيْوَانِ نَسِينَةٌ رَوَاهُ التَّوْمِلِيُّ وَأَبُو دَاؤُدَ وَالنَّسَالِيُّ وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِمِيُّ.

ترجمه ومطلب: حفرت مره بن جندب سے مروی ہے کہ نی اکرم اللہ فرمایا ہے زندہ جانور کی جے ندہ جانور کے عوض بطور اوحار کے ۔ (تردی، ابوداؤر، نمائی، ابن ماجہ، داری)

﴿ مديثُ بُهِ ٣٤ ﴾ وَعَنْ عَبْدِاللَّهِ بْنِ عَمْرِ وَبْنِ الْعَاصِ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ آمَرَهُ أَنْ يُجَهِّزَ جَيْثًا فَنَفِدَتِ الْإِبِلُ فَآمَرَهُ أَنْ يَاخُذَ عَلَى قَلَاتِصِ الصَّدَقَةِ فَكَانَ يَاخُذُ الْبَعِيْرَ بِالْبَعِيْرَيْنِ إِلَى الِبِلِ الصَّدَقَةِ. رَوَاهُ أَبُوْدَاوُدَ.

مرجمه وصطلب: حضرت عبدالله بن عمره بن عاص سے مردی ہے کہ یقینا رسول الشمالی فی فرمایا کردہ ایک فیکم فرمایا کردہ ایک فیکر کا سامان تیار کریں ؛ چنانچہ (جب انہوں نے اس کی تیاری کی تو) اون کم ہو گیا تو آپ آلی نے ان کو تھم فرمایا کہ دہ ذکو ہ کے اون آ نے تک کے دعدہ وسع میر (فی الوقت) اون فرید کر لیں ؛ چنانچہ دہ ایک اون دو اونوں کے کوش فرید کرتے تھے زکو ہ کے اون کی آ مرکے دعدہ برابوداؤدی (ف) مرید تنصیل آ کدرہ آری ہے۔

الفصل الثالث

﴿سودي معاملات أدهاركياتو؟﴾

﴿ مَدَعَثُ مُبِرَ٥٠ كَا ﴾ عَنْ أَسَامَةُ بْنِ زَيْدٍ أَنَّ النّبِيَّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الرَّبَا فِي النّسِينَةِ وَفِيْ رَوْايَةٍ قَالَ: لَا رِبًا فِيْمَا كَانَ يَدا بِيَدٍ مُتَّفَقُ عَلَيْهِ.

توجمه وصطلب: حفرت أسامه بن زيد عمروى بكم باليقين في اكرم الله في ارشادفر مايا: ادهار بن سود ب، ادرايك روايت بن بي كرم الله في الرم الله في الرم الله في المراكبة من المراكبة

تشریع: مقصد بیان بیہ کدا کرسودی معاملات وہ ہیں جوادھاری صورت میں ہوا کرتے ہیں ؛اگر چدبعض صورتی نقذی مجی سود میں شامل ہیں۔

﴿ صَلَى اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ الْمِنِ حَنْظَلَةَ غَسِيْلِ الْمَلَالِكَةِ فَا لَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: دِرْهَمُ رِباً يَاكُلُهُ الرَّجُلُ وَهُوَ يَعْلَمُ اَشَدُّ مِنَ سِتَّةٍ وَّقَلَالِيْنَ زِيْنَةً رَوَاهُ اَخْمَدُ وَالدَّارَ قُطْنِيُّ وَرَوىٰ الْبَيْهَةِيُّ فَى شُعَبِ الْإِيْمَانِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ وَزَادَ وَقَالَ مَنْ نَبَتَ لَحْمُهُ مِنَ السُّحْتِ فَالنَّارُ اَوْلَىٰ بِهِ.

قوجهه و مطلب: حَفرت عبداً لله بَن حَظَلَمْ على المائكة الله كرتے بين كرسول الله الله في اندوكا أيك در بهم جس كوآ دى كها تا إداده جانباہ (كه ميرسودكا ب) تو چينيس مرتبرزنا كرنے سے زيادہ بھارى ب(ازردئے معصيت)، احمدٌ، دارِقطنيٌ ، اورا مام بيكيّ في شعب الايمان على برولست ابن عباس مزيد ميرسي نقل فرمايا ہاورآ پ الله في فرمايا: جس فخص كے بدن كا كوشت مال حرام سے برورش يائے تو دوزخ كى آگ زيادہ بہتر ہاس كو۔

﴿ صَمَيْ مُمْرَكُ مُمَا ﴾ وَعَنْ آبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ٱلرِّبَا سَبْعُونَ جُزْء ٱ ٱيْسَرُهَا ٱنْ يَتْكِحَ الرَّجُلُ ٱمَّهُ.

ترجمه وصطلب: حفرت الو بريرة في الله المسالة في ارشاد فرمايا: مود (ك كناه) كيسر الزاد (ص) بين ان من عسب م درجها دى كا في مال سن ناكرنا ب- و مديث تمبر ٨٠ ١٤ ﴾ وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: إِنَّ الرِّبَا وَإِنْ كَثَرَ قَانَ عَاقِبَتَهُ تَصِيرُ إِلَى قُلَ رَوَاهُمَا ابْنُ مَاجَةَ وَالْبَيْهَةِ فَي شُعَبِ الْإِيمَانِ وَرُوى آخْمَدُ الْآخِيْرَ.

﴿ سودپرعذاب قبراورعذاب آخرت ﴾

﴿ مديث بُمِر ٩٠٪ ﴾ وَعَنْ آبِي هُرَيْرَةٌ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتَيْتُ لَيْلَةَ أُسْرِى بِيْ عَلَىٰ قَوْمِ بُطُونُهُمْ كَالْبُيُوْتِ فِيْهَا الْحَيَّاتُ تُرىٰ مِنْ خَارِجِ بُطُوْنِهِمْ فَقُلْتُ: مَنْ هَؤُلَاءِ يَا جِبْرِيْلُ! قَالَ هَوُلَاءِ أَكُلَةُ الرِّبَارَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَةً.

قوجمه ومطلب: حفرت ابو بريرة في الله المنظيظة في ارشاد فرمايا: جسشب من جها كوسركرائي عن العني معراج موفى) تو مسالك المحالي قوم كه پاس آيا جن كه پيث كهرون كي طرح يتي جن كاندرسانپ يت جوكدان كه پيول سے دكھلائى دے دم مين فرمايا الله على الله

ترجمه ومطلب: حضرت على عمروى بحكمانهول نے رسول الله الله عليه عن كه آپ الله في العنت فرمائى سود كھانے والے اور كلانے والے اوراس كو اكھنے والے اورصد قات واجبہ كے نددينے والے ير، اور آپ الله في غرمايا نوحد كرنے سے - (نسائى)

﴿سودی آیت کی تفسیرمجمل ہیے﴾

﴿ لَهُ يَثْمُ بِرَااكِ ﴾ وَعَنْ عُمَرَ بُنِ الْخَطَّابِ أَنَّ اخِرَ مَا نَزَلَتْ ايَّةُ الرِّبَا وَأَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهَ وَسَلَّمَ قُبِضَ وَلَمْ يُفَيِّرُهَا لَنَا فَدَعُوْ االرِّبَا وَالرِّيْبَةَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِمِيُّ.

قوجمه و محللب: حفرت عمر بن خطاب ہے مردی ہے انہوں نے فرمایا: بلاشبہ جو آیت (احکام ہے متعلق) آخر میں نازل ہوئی ہے (دہ آیتِ)ربوا ہے، اور بلاشبہ رسول النوی کے کی روح قبض کی گئی اس حالت میں کہ آپ آیٹ نے ہاں آیت کی جارے لیے تغییر (مع التشریح بسیار) بیان نہیں فرمائی ؛ لہذاتم لوگ سودکو (بھی) چھوڑ دواور شبہ (سود) کو بھی۔ (ابن مائب، داری)

فائدہ: غالباس کی وجہ بھی ہوئتی ہے؛ تا کہ ازروئے احتیاط بہت می صورتوں کو بیان شدہ کی روشی میں مشد د جانب کوترک کر دیا جائے! جیبا کہ حضرت عمر کے کلام سے واضح ہے۔

﴿ مقروض سے هديه بهی قبول نه کیاجانے ﴾

﴿ صَمَّ اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَنْ أَنَسَ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ : إِذَا أَقُرَضَ آخَدُكُمْ قَرْضاً فَأَهْدَىٰ إِلَيْهِ أَوْ حَمَلَهُ عَلَىٰ الدَّآبَةِ فَلاَ يَوْكَبُهُ وَلاَ يَقْبَلُهَا إِلَّا أَنْ يَكُوْنَ آجُرَى بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ قَبْلَ ذَالِكَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةً وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ. '

قوجمه ومطلب: حضرت الس في فقل فرماً يا كدر سول التي الله في فرمايا: الرحم كسي مخف كوقر ضددواوروه تم كومديد عياوه اس كو

سوارى پرسواركر من و دوال پرسوار شهواور شدوه بديو قبول كريا بكريدكراس منظل ان كدرميان بيبارى قوار (اين اجريس) و صديث نمبر الكا كه وَعَنْه عَنِ النَّبِيِّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ: إِذَا الْفُرضَ الرَّجُلُ الرّجُلُ فَلاَ يَاخُذُ هَدِيَّةً رَوَاهُ الْهُ خَارِي فِي تَارِيْجِهِ هِنْكَذَا فِي الْمُنتَقِيْ.

مَوجهه وصطلب: حضرت الن يم اكرم الله كارشافال كرتے بين: آپ الله كن وايا: اگركوئي فخص كى كوقر خدد يو وه (مقروض سے) مدين يول ندكر به (امام بخاري في اس حديث كوا بي تاريخ بين الله بيا ہے اور متى بين بي بي اى طرح متول ہے) _ حوص مدين بم بي اس الله بين ميان الله بين الله بين

موجهه و معلیب: حضرت ابوبرده بن ابی موئ فرماتے ہیں کہ میں مدینہ حاضر ہوااور میں نے حضرت عبداللہ بن سلام سے ملاقات کی تو حضرت عبداللہ بن سلام نے فرمایا: یقیناتم الیی سرز مین (لیعنی ملک) میں رہتے ہو کہ وہاں سودخوب عام ہے، اگرتمہارا کسی فض کے ذمہ کوئی حق ہواوروہ تم کو تھس کی گھری یا جو کی گھری یا گھاس کا مختابدیاتہ دے تو تتم اس کو قبول نہ کرنا ؛ کیوں کہ وہ یقینا سود ہے۔ (بخاری) عادہ: دراصل مقروض سے کی بھی تنم کا نفع حاصل کرنا جا بڑئیں احتال سود کی وجہ ہے۔ (اسعدی)

من من الله الله الله الله الله على الله على الله على الخصوص بهت احتياط كي ضرورت ها الله كرموام مي سودى مدرج موجان كي وجه سي الله وي الله كا وكياجان كا احمال زياده موكا.

ياب المنهى عنها من البيهع

(الف) آپ آب آب آب آب الله نظر من اقسام کیج سے منع فرمایا ہے وہ دورجا ہلیت ہیں عدم علم کی وجہ سے جس طرح عبادات کے حقائق بدل پر سے بھے ، منح ، منح بھی اس دور میں توریت اور انجیل کی تعلیم و قدریس کرتے تھے ؛ مرحملی زندگی ہیں وہ حضرات انبیاء کرائم کی تقلیمات اور آسانی کتاب کے مطابق عمل کرنے میں بہت زائد دور تھے ، اورای کے ساتھ آسانی کتابوں ہیں تح بیف کرتے اصل کتابوں کو وہ نابود کر بھی جھے ؛ اس وجہ سے جہالت ہی کا غلبہ تھا ، معاشرت اور معیشت بھی تضمی طور پر جہالت پر ہی جن تھی ، ایک طرف سودخوری کا بازادگرم تھا ، دوسری طرف بہت سے تجارتی اور کاروباری عمل میں جوئے کی شکلیں پھیلی ہوئی تھیں۔

ظاہر ہے جو ممل جہالت پر بینی ہوگا وہ صلاح ہے بہت دور ہی ہوگا ،آپ اللہ نے وی اللہ کے علم کے مطابق زندگی کے ہر شعبے کی اصلاح فر مائی ، تنجارتی اور کاروباری معاملات میں پھیلی ہوئی فرابیوں ہے بھی کسب ومعاش میں اصلاح فرمائی ، حرام اور ناجا تزصورتوں ہے مطلع فرمایا اور صاف وشفاف معاملات کے اصول بیان فرمائے۔

(ب) شریعت نے مفادِعامۃ الناس کے اصول پر ہرائی بات کورد کر دیا ہے اوراس سے روک دیا ہے اوراز روئے قانون شریعت نے اس کو ناجا تر قرار دیا ہے جن صورتوں میں کسی بھی ایک فریق کو ضرر اور نقصان چینی والا ہو، اور یا باہم فریقین کے درمیان خراع اور اختلاف پیدا ہونے کا احتمال ہو، اور عقد کے بعد جھڑ ااٹھ کھڑا ہو، ہر خفس کا ذہن اوراس کی عقل ادراک نہیں کر سکتی اس نقصان کو بھرشارے کی نظر میں خرابی لیے ہوئے ہے؛ اس لیے شریعت نے اولا ہی ایس تمام صورتوں کو خلاف قانون اور ممنوع قرار دیا ہے کہ ایسی صورت کو اختیار نہیں کیا جاسکتا ہے۔

(ج) اوراُن خلاف قانون شریعت معاملات میں بعض وہ ہیں جن میں سودی نوعیت شامل ہے اور بعض وہ ہیں جن میں کسی ایک

﴿ جَن معاملات كوناجائزقراردياگيا﴾

کلمات مدیث کی تشری کے منافع قریب قریب ایک بند ہوع کا تذکرہ ہے جن کی شرعاً ممانعت ہے اور قدرے الغاظ کے فرق کے ملات مدیث کے مطابق یہ ہیں:

(۱) مرابد (۱) كايره (۳) كا قله (۲) معاومة _

الموابنه: زار، با، نون (زبن) ماده اورحروف اصلی بین، اوراس کااصل به باب مفاعلة (کا) مصدر باوراس کے معنی المدفع المسلم المستدید، شدت کے ساتھ دفع کرنا، روکنا، اور جنگ (حرب) کو ای وجہ سے الزبون سے موسوم کیا گیا ہے، اور شرعاً اس بچ مزابند سے السلم کی گیا ہے، اور شرعاً اس بچ مزابند سے اس لیے منع کیا گیا ہے کہ برفریق، بالغ اور مشتری، ایک دوسر سے کواس کے جن سے دور کرتا ہے اور دوسری وجہ کہ جن فریق نے نمین کیا ہے معلوم ہونے پرتے کے ذریعاس کی جانب دفع کرتا ہے اور دوسر افریق اس کوروکتا ہے کہ وہ شخ نہ کرے، برایک دفعیہ کرتا ہے

اور مزابن کی اصطلاحی تعریف اور تشریع: جیسا کهای روایت ش (بھی) مندرجہ ہے؛ مثلاً باغ ہاور دختوں پر پھل (بھی) مندرجہ ہے؛ مثلاً باغ ہاور درختوں پر پھل (مجور) ہےاں کا اندازہ کرلیا گیا کہوہ سوکلوہوگا،ای پھل کی جنس کے برابراندازہ کے مطابق سوکلو پھل دے دیا جائے اس تاج کونا جائزاس لیے قرار دیا ہے کہ درختوں پر پھل کا اندازہ کیا ہے، بہت قوی اختال ہے کہ یا تو وہ زائدہوگایا کم ہوگا،اور ایک جنس کی فی کم اور زائدگی وجہ سے قرام ہے، کمام "۔

روایت شی دوسری مثال انگورنی دی گئی ہے، بہر حال تمام اقسام کا بھی یہی تھم ہے، اہلِ عرب کی بیصورت بھے جوئے کی تنم پڑتی۔ عاشدہ: اگر روایت میں فقط مجور کی مثال ہے تو اس کا بیمطلب نہیں ہے کہ بیتھم اور نہی فقط اس میں منحصر ہوگی ؛ بلکہ عام ہے کہ غیر معلوم المقدار کومعلوم المقدار کے بدلے ہم جنس مجل (وغیرہ) میں عقد کرنا جائز نہیں۔

دوسری منسم: خابرہ، یہ جی باب مغاعلۃ سے ہادر خبروالے معاملہ کی جانب اشارہ ہے کہ آپ نے اہل خبر سے جوز مین کی کاشت (وغیرہ) کا معاملہ فر مایا تھا، گروہ مقدووسری نوع پر ہے، اور یہ جس کی ممانعت ہاں کی نوعیت دوسری ہے جس کی مثال اس روایت میں بیان ہوتی ہے کہ زمین میں کاشت تیار کھڑی ہے، اس کا (بھی) اندازہ کرلیا جائے کہ وہ سوکلوہ وگی اس کے مطابق سوکلو گیہوں دے دیا جائے تو ہم جنس والی صورت میں بیصورت مقد بھی ناجا نزہ اس علت کی وجہ سے جو مزابنہ میں معلوم ہو بھی۔
گیہوں دے دیا جائے تو ہم جنس والی صورت میں بیصورت عقد بھی ناجا نزہ اس علت کی وجہ سے جو مزابنہ میں معلوم ہو بھی۔
منسس می منسم: محاقلہ باب مغاعلۃ سے ہوالحقل بمعنی وہ کھیت میں کھڑی ہوئی ہو، کئنے سے پہلے؛ البذا جو تشریح مخابرہ کی

بیان ہو کی وہ تشریکا اس میں مجی ہے۔ ھائندہ: دراصل ان کلمات کے مختلف معانی ہیں، نہ کورہ تشریح ایک معنی کے انتبارے کی گئی ہے اور دوسرے معنی، هل کے معنی زرع اور محاقلہ کے معنی زمین کوکرایہ پر لیمنا (مثلاً) گیہوں کے عوض ، اورزَبُن کے دوسرے معنی شمر (پھل) اور مزابنہ ، بعنی باغ کے درختوں کو پھل کے عوض کرایہ پر لیمنا۔ (ماخوذ ازتقر بریز نہ کی مرکی جس معروم)

كرايكي بعض صورتيس مباح اورجائزين اوربعض صورتيس ناجائز يامكروه بفصيل أتنده

عدایااور مذاهب منقها، خلاصهٔ بحث: عقد عرایا کی تشری اورمرادی اختلاف ب، معزات ائمه اللث کنزدیک بعض معزات نے معزت امام مالک کالم به احناف کے ساتھ فقل فرمایا ہوہ در حقیقت مزاید بی کی صورت ہے الیکن آپ میافی نے مزاید سے اس کو (ازروئے رخصت) متنی کیا ہے اور بیاتشنار متصل ہے۔

جب كەعمدالا احناف صورتاً تو ت م اور هيقيد تي نهيس ، بلكه بهدكرده درختوں يركے پيل كوواليس لے كراس كے بدل نقذا

كل درديا كياب اوراس كواستنار منقطع كهاجائ كاندكم تعل-

عائدہ: جب مزاید کی حرمت اعلی ربائے چرفکیل اور کیرکا فرق کول ہوگا(؟) لہٰذا ضروری طور پر بیر حقیقت تسلیم کرنی ہوگی کہ وہ اصلاً مزاید نہیں ہے بلکدائل مدینہ (اور الل بستان) کی اصطلاح اور عرف اور اللِ افت کی تشریحات ہے می اس کی تائید ہور ہی ہے، اور رفست اور اجازت سے اس کے تعییر فرمایا ہے کہ کن وجہ وہ آئے مزاید (معلوم ہوتا) ہے اور کن وجہ اس سے خارج ہو ایس کے آپ سے خارج ہوتا ہیان فرما دیا ہے۔ (والله اعلم، ماخوذ از قبلی و فیرہ)

جن صفرات کے باعات ہوئے تنے دہ مساکین اور غربا کو در فت پر پہلوں کا عطیہ کردیا کرتے تھے جس کو ' عربیہ ' کہا جاتا ہے ، اس کے بعد بعض مرتبہ ہرکرنے والوں کو ضرور تا تبدیل کرتا ہوتا اور بعض مرتبہ بیغر بار اور مساکین کو پہلوں کے کمل تیار ہونے تک انتظار کرنا مشکل ہوتا تو نفذا مچلوں کے عوض تباولہ کرنے کی ضرورت پیش آتی تھی ، یا اس لیے آپ تابیجہ نے دونوں جانب کی ضرورت کی بنار پر اس کی اجازت ورخصت فرمائی ہے۔ (واللہ اعلم ، ماخوذ ارتعلیق وغیرہ)

اورامام شافی کے زوریک ید بھے عرایا' دراصل بھے مزابنہ ہے؛ جب کہ روایت میں ہے اگر پانچ وس کی مقدار سے کم ہے تو جائز ہے اوراگر پانچ وس کی مقدار یااس سے زائد ہے تو حرام ہے تھے مزابنہ کے تھم کے مطابق، اورایک قول بیہ ہے کہ پانچ وس تک (کی بھی) رخصت ہے اورا ہام شافعی نے اس رخصت کی وجہ بیبیان فرمائی ہے کہ حالات اور ضرورت کی وجہ سے۔

اورامام احد کے نزد کی بیج عرایا کی صورت رہے کہ کمٹی خص کو درخت کا پھل ہونڈ دیا گیا اور پھر بیموہوب لا اس درخت کے پھل کو واہب کے علاوہ کمی اور شخص کو پھل نفذ کے وض فر دخت کرے یا پانچ وسن سے کم مقدار میں دے دے ، بیعقدرخصت ہے۔

اورامام ما لک کے نزدیک بھی (تقریباً) احتاف کی تشریح کے مطابق ان درختوں کے پھل جو مبد دیے گئے تھے واہب ہی کو فروخت کردے؛ اس لیے کہ باغ والوں (واہب) کو شکایات ہونے گئیس تو آپ تاہی نے اس عقد کی اجازت دی تھی ، بیعقد دفع حرج کی وجہ سے دخصت ہے (اصول ہے المحو ہے مدفوغ)

ضدودی و ضاحت : پانچ وس ہے کم کی ندکورہ تیددراصل اس وجہ سے بیان ہوئی ہے کہ بیمقداردہ تھی جوفرض شدہ عشر میں سے پانچ وس سے کم مالک بذات خودفقرار کودے سکتاتھا، اورا گرعشر کی مقدار پانچ یااس سے زائد ہوگی تو اس کو بیت المال کے عاشر وصول کرتے تھے (ماخوذازرجمۃ الله الواسعہ ص ۸۵۸)

﴿عرایاکی بیج﴾

﴿ مدیث نمبر ۱۵۱۹﴾ وَعَنْ آبِی هُوَیْوَةَ آنَ وَسُوْلَ اللهِ صَلّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اَدْخَصَ فِی بَیْعِ الْعَوَایَا

بِخَوْصِهَا مِنَ التّمْوِ فِیْمَا دُوْنَ خَمْسَةِ اَوْسُقِ اَوْفِی خَمْسَةَاوْسُقِ شَكَّ دَاوْدُ بْنُ الْحُصَیْنِ. مُتَّفَقٌ عَلَیْهِ.

بِخُوْصِهَا مِنَ التّمْوِ فِیْمَا دُوْنَ خَمْسَةِ اَوْسُقِ اَوْفِی خَمْسَةَاوْسُقِ شَكَّ دَاوْدُ بْنُ الْحُصَیْنِ. مُتَّفَقٌ عَلَیْهِ.

قو جمه: حضرت ابو بریرهٔ ہم موں یا پانچوس میں، (اس روایت کے ایک راوی) اور داؤ دائن صین نے شک کیا ہے (بخاری وسلم)

حل لغات: العوایا، عویة کی جمع ہے، بروزنِ فعلیة ، منی مفعولة ۔ عوا ، عووا (نفر) لیمنی عظیما تشکیکا قصد کرنا۔ درخت پر گے ہوئے

علی لغات: العوایا، عویة کی جمع ہے، بروزنِ فعلیة ، منی مفعولة ۔ عوا ، عووا (نفر) لیمنی عظیما تشکیکا قصد کرنا۔ درخت پر گے ہوئے

پیک کو بہد کرنا، اور عربیۃ بمعتی بہد، درخت کے چل کا بہد، صاحب قاموں نے بیان کیا ہے: العویة من العاد اسم لحصّة شمار النجلِ.

کمات عدیث کی تشریکی میں المربی الموری الموری الموری میں العوایا یعنی فی النجلة والنجلیتین توهبان کمات عدیث کی تشریکی للوجل (طحاوی) اور چونکہ حضرت زیر اصحاب خیل میں سے ہیں؛ لہذا ان کا قول اس سلسلہ میں جت

ہوگا کہ وو صراحثاً فرماتے ہیں کہ "عربیہ ، عبہ اور عطیہ ہے ، یہ تمام تفصیل احناف کے قول کے مطابق ہے ، اور دومر فقہار کا اس میں اختلاف ہے ، اولاً احتاف کے قول کے مطابق اس کی تشریح ہیں ہوگی کہ صورتا تو عرایا کی بھے حراب کے بی شل ہے ؛ البتہ فی الحقیقت (عند الاحتاف) ہبد ہونے کی وجہ سے ان در شق کے بعد مباح ہے ، او الاحتاف) ہبد ہونے کی وجہ سے ان در شق کے بعد مباح ہے ، او رقب میں کی دفصت ہے گویا کہ ہبداور عطیہ اور عطیہ کی نوعیت کا تباولہ ہور ہے ، اور چونکہ معالمہ اور عقد کی ضرورت ہوئی ہے ؛ اس کی دفصت ہے گویا کہ ہبداور عطیہ اور عطیہ کی نوعیت کا تباولہ ہور ہے ، اور چونکہ معالمہ اور عقد کی ضرورت ہوئی ہے ؛ اس کی دفصت ہے گویا کہ ہبداور عطیہ اور عطیہ کی نوعیت کا تباولہ ہور ہے ، اور چونکہ معالمہ اور عقد کی ضرورت ہوئی ہے ؛

﴿پھلوں کی بیج کب ھوسکتی ھے؟﴾

﴿ صريت تُبَرَ ٢٤٢﴾ وَعَنْ عَبُدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ نَهِى رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَنْ بَيْعِ الشَّمَادِ حَتَى يَنْهُ وَعَنِ بَيْعِ النَّمَ وَالْمُشْتَرِى مُتَفَقَّ عَلَيْهِ وَفِي دِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ نَهِى عَنْ بِيْعِ النَّخُلِ حَتَى تَزْهُو وَعَنِ يَلْهُ وَلَيْهِ وَلِيْ دُوايَةٍ لِمُسْلِمٍ نَهِى عَنْ بِيْعِ النَّخُلِ حَتَى تَزْهُ وَوَعَنِ السَّنَبُلُ حَتَى يُبِيَّضَ وَيَامَنَ الْمَاهَةَ.

توجمه : حفرت عبدالله بن عرف مروى ہے كه رسول الله علي في فرمايا سول كى فرونتكى سے يہال تك كداس كا نفع ظاہر ہو عائے (اس سے) بالع اور مشترى دونوں كونع فرمايا۔ (بخاري بسلم)

، اور سلم کی ایک روایت میں ہے کہ درخنوں (کے بھلوں) کوفر دخت کرنے سے منع فر مایا یہاں تک کہ پختہ ہوں اور منع فر مایا کھیتی کو خوشہ میں یہاں تک کہ وہ پختہ ہوا در آ فات سے مامون ہوجائے۔

وصلاح ثمري

(الف) حضرت الم شافعیؒ کے زدیک پھل میں پختگی آجائے اوراس میں مضاس (اوررس) پیدا ہوجائے۔ (ب)عندالاحناف وہ پھل (کسی بھی درجہ میں) قابلِ انتفاع ہوجائے ادراس مدتک ہوجائے کہ آفات آسانی سے پھل محفوظ ہوجائے۔ کما قال ابن الهمام

(ج) معزت ابن عباس اور معزت عطار کنزدیک کھل پک جائے کہ کھانے کے لائق ہوجائے۔

﴿تفصیل مذاهب پهلوں کی ہیچ کی﴾

جب تک ورخت پر پھل طاہر ہونہ جائیں اس وقت تک ان کی نئے ناجائزے بالا تفاق ، لا خلاف فید ، اورای طرح بلا اختلاف ناجائزے بدوالصلا رح سے پہلے اس شرط کے ساتھ کہ صلاح تک درخت پر دہیں گے۔ اور صلاح کے بعد جائزہے بالا تفاق ، لا خلاف فید۔ (ارتعلیق) دلائل ائم، برنظر می کطیب ہاورایک روایت میں ہادو کی تغیر، حموقهٔ و صُفُوتهٔ ہاورایک روایت دلائل ائم، برنظر می کطیب ہاورایک روایت میں ہاکل منداور یو کل ہاور بیای وقت ہوگا جب کرتیارہ و جائے اور

اور حفرات احناف فراتے ہیں اسلملے کا تمام روایات کا احصل یمی ہے کہ ابداد العلاح " ہے مراد مجل کا آسانی آفات اور فساوسے امن بيس آ جانا؛ چناني حضرت عبدالله بن عرف فرمايا ب كلهب عاهنة ".

اوريجى حقيقت ہے كہ كون كى انواع اور اقسام مخلف بين ؛ اسلئے ہرنوع كا صلاح بھى مخلف ہوگا ، اور اسكا حال تجربكار اور باغ والاراسكوكر نوال بخوبي جائع بي، البتهمام ك ليمعيار بيضرور بجوروايات معلوم بواب "حتى تنجو من العاهة". خلاصة كلام: جب تك كال كاوجود نه بوا بو بالاجماع حرام باور جب كال وجود بو چكا بر مسلاح يبيل بي توجعي شرعاً ناجائز ہے اور جب صلاح ہوجائے اور بلاکسی شرط کے علی الاطلاق سے کی گئی ہو بھی القولین سے درست ہے، اور اگر قبل از صلاح عقد کیا جائے اور عقد میں شرط کی گئی ہودرختوں برر کھنے کی جب تک "توڑ" کے لائق ہے تو یہ تھے فاسد ہوگی ،اورا کر بلاشرط عقد ہو (مجل کا وجود ہے)احتاف کے نزویک تھ درست ہوگی ،اورائمہ ثلاث کے نزدیک درست نہوگی ! کیونکہ وہ قابل انتفاع نہیں ہے (ارتعلق وغیرہ) اورامام محد کے نزدیک ذیر بحث مئلہ میں تفصیل بیہے کہ اگر پھل بدوصلاح کی حد تک تو ہے مراجی پھل ممل نہ ہوا ہو بلکہ وہ ودفت پررے گااور بوجے گا، اجزار کمل ندہوئے ہول توالی صورت میں گذشتہ تول کے مطابق 'بیع بسوط التوك على المشجو'' فاسد ہوگی! اس لیے کہ جواجز ار مقد کے بعد زائد ہوں ہے ، وزن ہوگا و ومعدوم ہے ، نیز شرط خلا ف عقد ہے ؛ لہذا فاسد

اورا گراجزار تو مكل مو يكي : مكرا مجى تيار ندموئ ته يكل ، جائز ب: اگر بشرط ترك در فت موكى تو از روئ قياس سيجى فاسد مونا جاہیے الیکن امام محر کے نزد کی ازروئے (دلیل) استحسان میصورت جوازی ہے اور وجداستحسان میسے کے عوام کا اس پرتعامل ہے اور عموم بلوی ہے،امام طحادی نے بھی ای قول کوا ختیار فر مایا اور جواز کا فتوی دیا ہے۔

نیز حفرات ائم الله ی کنزد یک مجی جوازی (مخوائش) ہے اور 'المنتنی "بیس امام ابو پوسف کا قول مجمی امام محر کے موافق ہے۔ (بحواله فتح القدير وغيره)

﴿ایک سے زائد سال کے لیے فروخت کرنا ﴾

﴿ مديث تَبِر ٢٢٢٢﴾ وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهِىٰ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بِيْعِ السَّنِيْنَ وَأَمَرّ بِوَضَعِ الْجَوَائِعِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

ترجمه ومطلب: حفرت ماير في كاكرسول التماية في فرمايا چندسالون كى بيع درباغ كرميلون كى اورآب الله نے عظم فرمایا آفات (کی وجہسے درختوں کے پھل میں مشتری کوجونقصان ہوا ہے اس بناء براس) کے وضع کرنے کا۔ (مسلم) کلمات حدیث کی تشری مصد بیان بیدے کردو، تین یا جارسال (یا اور زائد) کے لیے باغ کے معلوں کی زیع کرنا بیرجا ترتبیں، اً بالله في ال منع فرمايا م، وجداورعلت عدم جواز ظاهر بكرهي غيرموجود، معدوم في كي الح کا کی ہے جس کی کوئی تخوائش نیس ہے۔

﴿روایت میں مذکورہ مسئلہ ثانی﴾

آپ الله في مرايا ہے كا مول بر" آنت سے نقصان بونے كى صورت ميں بائع وصول كرتے بوئے (كھے) كم كردے-

مقصید میان سے کددر فتوں بر پھل کی تھ نہ کور النصیل کے مطابق 'نبدوصلاح'' کے بعد کی تنی تھی کہ اس کے باوجود آفت آئی اور م ازروئے استحبان ہو گیا تو اس صورت میں ہا گئے کے لیے بیٹکم (ازروئے استحباب) ہے کہ نقصان پر نظر کرتے ہوئے تمن میں کم کر کے وصول کر لے،اورا کثر اہلِ علم کے نز دیک سیحم استحالی ہے، لازم اور وجوب کے لیے نہیں ہے، کیونکہ فروخت شدہ مال میں اگر نقصان ہو جائے تو وہ شتری کا بی نقصان ہوگا۔ (مزیر تفصیل اس کے بعد مدیث نمبر ۲۲۲۲ میں دیکھئے)۔

﴿ مِدِيثُ بُمِ ١٤٢٣﴾ وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَوْبِهُتَ مِنْ أَخِيْكَ لَمَراً فَأَصَابَتُهُ جَائِحَةً فَلَا يَحِلُ لَكَ أَنْ تَاخُذَ مِنْهُ شَيْئًا بِمَ تَاخُذُ مَالَ أَخِيْكَ بِغَيْرِ حَلَّ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

موجعه: حضرت جابر في تقل فرمايا كدرسول التُما الله في ارشاد فرمايا: اكرتم في اين بمائي (مسلمان) كو يعل فروخت كيا (يعني در دنت پر)اور پھراس کوآ دنت پہو چے جائے تو (ازروئے تقوی اور پر ہیز گاری) تیرے لیے طال نہیں اس سے پچھ (بھی مال) وصول كرنا، ناحق اين بعانى كامال كس بناه براو كري (مسلم)

گذشته مدیث بی تشریخ کا تشریخ کا تشته مدیث نبر ۲۷۲۲ کے تحت معلوم ہو چکا ہے کداگر درخت کے پھل میں آسانی آفت کی وجہ سے کلمات حدیث کی تشریخ کا کہ باغ نمن میں کم کردیں اور اس روایت میں ہے کداگر تمام ہی پھل ہلاک بلاک موچکا ہے قرم من کی کے وض تم این بھائی کا بال او کے (؟)۔

مسئله: عقد كالعنا الباب اورقبول ك بعد خريد كرده في برخريد اركاعمل تبضداد زم بيجيل عقد ك ليه اور برهي من تبضه ال في ك لوعيت في مطابق مواكرتا الماورجب تك باقع كا قبضه باق اس وقت ضمان بالع بى كاب-

البذاندكوره صديث يسمورت بلاك مي بداحمال موسكما ب كدابهي تك مشترى كا قبعندند موامواوروه بالغ بي ك قبعند مي كن ہلا کت آگئی یااس لیےاب خریدار برحنان نہ ہوگا اور قیت نہ وصول کرے گا ، یا کہ فروختلی بدوصلاح سے قبل ہوگئ تھی اور شمرہ (مجل) کے ساتھ موسوم کرنا آئندہ کے اعتبارے ہوا ہو (وغیرہ ذلک)

ببرمال اگر پھل آ مجنے کے بعد ہی بعد کی گئی تب یہا جائے گا بیتم مدیث نبر۲۲۲ کے مطابق ازرد کے استحباب ہے، ازراہ احتیاط بیتم ہے کہ ہلاکت کے بعد ندلیا جائے ؛ کیونکہ بروا مبت حدیث الی سعید خدری میں واقعہ فدکور ہے کہ ایک مخص کے خرید کروہ باغ كے پھل بلاك مو محتے تنے، آستان نے حضرات محابہ سے فرمایا (كماس كے ذر قرضہ مونے كى وجہ سے)" تصدّ قوا على هنكذا" كا برب كه بلاكت مونے برعلى الاطلاق قيت وصول كرنا حلال نهمى - (حب حديث نمبر٢٧٢٣) تو پحراس بردين (قرضه) كون (؟) اورآب الله في مدد كاظم كون فرمايا (؟) معلوم مواكفريدار يرتمت لازم رب كى؛ البنة رعايت كرت موسة ايك مسلمان بھائی کے ساتھ مولت کی جائے گی ،اس تفصیل سے روایات میں تعارض بھی نہوگا۔

ازروے علم بعد القبعد خریداری ملکیت مولی ہے؛ اس کیے اس پر قبت لازم مولی ازروئے تقوی اورورع، نیز ازروئے شفقت ندوصول کرنااہلِ اسلام برلازم ہے کسد بون (خاص کر ہلا کب مال کی دجہ سے نقصان بر)صدقہ کر کے تعاون کری قرض کی ادا لیکی کے ليے (ماخوذ ارتعلق وغيره)

صداهب منقهد: امام احد يك لازم بي من والس كرنا اكروصول كراياتها ، اورامام ما لك كنزد يك ايك من والس كرديا جائے گااوراحناف وشوائع کے مزد کے فرکورتنصیل کے مطابق ہے۔(ارتعلق:جرم:جرم: ارتعام ﴿مقدِ ہیچ کے بعد غریدار کا قبضه لازم ھے﴾

﴿ مديث تَبِر ٢٢٢ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ : كَانُوا يَبْنَاعُونَ الطُّعَامَ فِي أَعْلَىٰ السُّوقِ فَيَبِيْمُونَهُ فِي مَكَانِهِ فَنَهَاهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِهِ فِي مَكَانِهِ حَتَّى يَنْقُلُوهُ رَوَاهُ آبُودَاؤدَ وَلَمْ آجِنْهُ فِي الصَّحِيْحَيْنِ. قویجهد: حضرت عبدالله بن عمر فر بیان فرمایا که محابر ازار کے بالائی حصد میں غلہ فرید کرتے اور پھراس کوای جگہ (قبضہ کیے جانے ے مل بی) فرونت کردیتے تھے، رسول اللہ مالیا ہے ان کواس جگہ میں فروخت کرنے ہے منع فرمادیا یہاں تک کہ وہ اس کواس جگہ ہے منتقل كردين .. (ابوداؤرٌ)

﴿ عُربِدکردہ شنی پرقبضہ هونے پرتصرَف کرنا ﴾

﴿ مِدِيثُ بُمِر ١٤/١٥﴾ وَعَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنِ ابْتَاعَ طَعَامًا فَلَا يَبِيْعُهُ حَتَّى يَسْتُوْفِيَةُ وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ عَبَّاسِ حَتَّىٰ يَكْتَالَهُ مُتَّفَقَّ عَلَيْهِ.

قوجهه: حضرت عبدالله بن عرف فقل فرمايا كدرسول الثمليك في ارشاد فرمايا: جس مخض في غله خريد كيانواس كوفرونت نه كرے يهال تک کداس بر کمل قبضہ حاصل کر لے ،اور حضرت ابن عباس کی ایک روایت میں ہے یہاں تک کداس کو کیل کر لے۔ (بخاری وسلم) ﴿ مِدِيثِ بَهِ ١٤٢٢﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أَمَّا إِلَّذِي نَهِى عَنْهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَهُوَ الطُّعَامُ أَنْ يُّبَاعَ حَتَّى يُقْبَضَ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَلَا أَحْسَبُ كُلَّ شَيُّ إِلَّا مِثْلَهُ. مُتَّفَقّ عَلَيْهِ.

قوجعه : حفرت عبدالله بن عبال في بيان فرماياكه بي اكرم الله في الرم الله في منع فرمايا بي سوده غله به كه جب تك قبضه (نه) بو فروفت (نه) کیا جائے۔حضرت عبداللہ بن عباس فرماتے ہیں کہ میراخیال ہے کہ ہرشی رکا تھم اس کے مانند ہے۔ (بخاری وسلم)

عقد ہے ،ایجاب اور قبول ہونے کے بعد واجب اور ان مے کہ خرید ار بخرید کردہ فی بِمَمل قبضہ کرے ، کلمات حدیث کی تشری اور جب تک قبضہ تام نہ ہوگا عقد تام نہ ہوگا۔اور جب تک خرید ار بخرید کردہ فی پر قبضہ نہ کرے گا تو

اس وقت تك فريداركوكوكى تصرف كرنا (مثلًا) فروخت كردينا جائز نه بوكا؛ چنانچه حديث نمبر٢٥ ١٢ اورنمبر٢٥ ٢٤ سے يدمسكله معلوم بواكه بازاریں (مثلاً) غذخرید کیا گیا،اور قبضہ کرنے سے پہلے خریدار نے اس کواس جگہ پر فروخت کردیا،آپ تالے نے اس سے منع فرمایا ہے "حتى ينتقلون "جب تك اس كوبائع كے ياس سے تعلق ندكرديا جائے (يعنى) جب تك اس پر قبضه ندكرليا جائے جيبا كه حديث نمبر ٢٤٢٥ ش" حتى يستوفيه " ذكور إوار بروايت ابن عبال من ب" حتى يكتاله " الين عقد الي كابعداور جب تك ال في كوكل نه کرلیا جائے۔(اگروہ کیل هي ہے) کيونکه رہے ممل نہ ہوگی جب تک کہ بائع اس کوکيل (اوروزن) نه کردے۔

ضرورى وضاحت: ان روايات من نظل كرنالين قضد كرناب

تفصیل مذاهب فن هذه المستلة: اشارمتوله ش فریدار کا تبند کرنا (؟) تبند کرنے کے بعد (مجی) اگر بائع بی کے یاس رہے جب بھی خربدار کا تقرف کرنا، فروخت کروینا درست ہوگا، عرف کے اعتبارے تبضہ ہونے کی جو بھی ظاہری صورت ہو، مثلاً بذات خودا بي بوري وغيره من ركددينا_

احوال منقهد: الم شافي ، الم وفر اورالم محر ك تصنه برخ يدكرده في بربونالازم مع منقوله بويا غير منقوله ؛ كونكدناني كي روايت من "لا يتبيعن شيئاً" بــــ

امام مالك اورامام احد كيزديك فظ قبضه وناطعام والى اشيار من لازم بهاتى اشيار من لازم بين اس لي كدروايت من

طعام بی کی تخصیص ہے دوسری اشیاد کا تذکرہ نیس ہے ؛ اس کے روایت کے طاہر متن پرنظر کرتے ہوئے اس کوا تقیار کیا۔
امام اعظم اور امام ابو ہوسف کے نزدیک بیر منقولہ اشیاد کے لیے ہے اور غیر منقولہ اشیاد زین ، مکان وغیرہ بس بی تحکم بیس ہے ؛ کہذا
قضہ سے قبل بھی تقرف جا کڑ ہے ؛ کیونکہ عقادیش ہلاکت وغیرہ نا در ہے اور منقولہ اشیاد بی ہلاکت وغیرہ اکثر ہے اور بہت سے مسائل
(خاص کر صال بصورت ہلاکت) بیل شراع کی صورت ہو گئی ہے ، اور عقد (سابق) نتی ہونے کا بھی احمال رکھتا ہے (وغیر ذلک) اس
لیے تبغیہ کولازم قراد دیا ہے۔

اورمتن صدیث می طعام کا تذکره اکثر بی اعتبارے ہاور بہر حال یہ قیدا تفاتی ہے چنانچہ حضرت ابن عبال فر ماتے ہیں "و لا احسب کل مشی ۽ الا مشله" (مکلوة شريف بس مريه)

﴿تَجَارِتَى امُوالُ كُوشَهُرِكِي مِنْذُي مِينَ آنِهِ كِهِ بِعَدِ؟﴾

﴿ مديث بَهِ مَاكُ إِنَا مَا أَنَ مَهُولُوا اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ: لَا تَلَقُوْ الرُكُانِ لِبَيْعِ وَلاَ يَبِعْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضِ وَلَاتَنَاجَشُوا وَلا يَبِعْ حَاضِرٌ لِبَادٍ وَلاَ تَصُرُّواا الْإِلَ وَالْفَنَمَ فَمَنِ الْبَاعَهَا وَلاَ يَبِعْ حَاضِرٌ لِبَادٍ وَلاَ تَصُرُّواا الْإِلَ وَالْفَنَمَ فَمَنِ الْبَاعَهَا بَعْدَ ذَلِكَ فَهُوَ بِخَوْدٍ النَّظَرَيْنِ بَعْدَ أَنْ يَحْلَبُهَا إِنْ رَضِيَهَا اَمْسَكُهَا وَإِنْ سَخِطَهَا وَدُهَا وَصَاعًا مِنْ تَمْوِ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِم مَنِ اشْتَوى شَاة مُصَرَّاةً فَهُو بِالْخِيَارِ فَلاَلَةَ آيَامٍ فَإِنْ وَدُهَا وَكُ مَعَهَا صَاعًا مِنْ طَعَام لَا سَمُواآء.

توجهه : حفرت ابو ہری ہے مردی ہے کہ رسول الله الله نے ارشاد فر مایا (غلد لانے والے) قافلے ہے آ مے جا کر خرید کرنے کی وجہ
سے ملاقات نہ کرو (بلکہ اس کو منڈی ہیں لانے دو) اور تم ہیں ہے کوئی شخص ایک دوسرے کی بھے پر تھے نہ کرے اور دوسرے ہو کہ
قیمت لگا تا (بولی و بیا حالا تکہ خرید نے کی نیت نہیں تا کہ دوسر ادھو کہ ہیں پڑجائے) اور شہری و بہاتی کے لیے فروخت نہ کرے اور اونٹ اور
بری کے تقنوں ہیں دورہ محبوس نہ کرو (جس سے کہ خرید ارکودھو کہ ہواور دو ذیا دورو دو دالا خیال کرے) سوا کر کی شخص نے اس کے بعد
اس جانورکو خرید لیا تو دورہ نکا لئے کے بعد اس کو افتیار ہے (دونوں صورتوں ہیں جو بہتر جانے) کہ اگروہ اس پر دضا مند ہے تو روک لے
اس کو اور اگروہ ناخوش ہے تو اس کو دائیں کردے ایک صاح میں تھے۔ (بخاری وسلم)

اور مسلم کی ایک روایت میں ہے: جس محض نے دود ھارد کی ہوئی بکری خرید کی تو اس کو تین روز تک اختیار ہے، پھر اگروہ اس کو واپس کرے تو اس کے ساتھ ایک مساع طعام (بھی) ہوگیہوں نہ ہو۔

ابتذائی دور می تجارتی معاملات میں بہت ی صورتیں ایک رائج تھیں جوشر عا درست نہ تھیں ، دینہ کمات صدیث کی تشری کی کا سے حدیث کی تشری کی است کی معاملات کی اصلاح کرتے ہوئے بہت ہا مورے مع فرمایا جواس وقت رائج تنے ،اوران میں کی نہ کی فریق کے تق میں ضرراور نقصان دہ تنے ؛ چنا نچہ حدیث ابی ہریرہ (نمبر ۱۲۷۲اوراس کے بعد بھی) آیا تھے نے چھامور کی نشاعہ ہی کرتے ہوئے ان کونا جائز قرار دیا ہے۔

﴿تَجَارِتَى قَاعْلُهُ سِي آمدسي بِهُلِي مَلَاقَاتَ مَكَرُوهُ كَيُونِ؟﴾

(١ لف) الاتلقو الركان (٢) بيعُ بعضكم على بيع بعض (ج) تناجش (ح) بيع حاضر لباد(د) تصويه. هافده: حديث فمبر ٢٤٢٨ ش يه أنجلب اورجديث فمبر ٢٤٢٩ ش السلع بيني اصحاب اموال ين شلاقات كروجواموال بايم سه لا يا جائ اس كوجلب (بمعن مجلوب) كهاج أناب اورأسلع ممامان مال اوراشياد - آستان ركيان سيمنع قرمايا به

بوے تجارایا کرتے تھے کہ جب تجارتی اموال پر شمل باہر، دیہات ودیگر علاقوں کے قاطے آتے تو معلوم ہونے پر منڈی میں آنے ے بہلے بی ان قافلوں سے ملاقات کرتے اور وہ اموال خرید لیتے تھے تا کہ زخیرہ اندوزی کریں اور بازار میں حسب منشأ بھاؤ (اور قیت) پرفروشت کریں،اس صورت میں اکثر و بیشتر صاحب اموال کونقصان ہوتااور شہر میں عام خریداروں کوخریداری کا موقع نہ حاصل موسكاً ؛ اس لية آب ملكاً في الله قات منع فرمايا إور بدايت فرمائى كدان اموال كوبازاراورمندى من آف ديا جائه ، تاكد علمة الناس كوفريدارى كابرابرموقع حاصل مواوراس ونت بإزاركى جو قيت مواس برخريداور فروخث موسكے -ال صورت يس سب كے لیے برابر مواقع ہوں کے اور کسی فریق کو نقصان نہ ہوگا۔اس کے بعد بھی حدیث نبر ۲۸ تا اور نمبر ۲۷۲۹ میں قدرے الفاظ کے فرق کے ساتھ یمی مغہوم ہے۔

هکقده: دراصل شهری اور عوام کی مصالح کی رعابت بھی ضروری ہے اور ذخیرہ اندوزی کی راہ کو بھی بند کرنالازم ہے اور منڈی اور عام بازاروں میں اسلے بھی آ مضروری ہے کہ باہر سے آندالا مال (خاص کرغلہ) تمام افراد کی ضرورت ہونے کی وجہ سے استحقاق برابر ہے ﴿ مِدِيثُ بُمِر ٢٤١٨﴾ وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تَلَقُوا الْجَلَبَ فَمَنْ تَلَقَّاهُ

فَاشْتَرِئَ مِنْهُ فَإِذَا اللَّي سَيِّكُهُ السُّوقَ فَهُوَ بِالْخِيَادِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

نے اس سے ملاقات کی اور پھراس سے خرید لیا تو وہ اس غلہ کا مالک اگر بازار میں آئے (اور بھاؤ میں فرق یائے) تو اس کواختیار ہوگا (كداس مقدكوباتى ركے ياس كون كردے)-(مللم)

المجلب، مفہوم اور مرادی معنی کے اعتبار سے جومعنی حدیث تمبر 2727 میں تلقی رکبان کے معنی ہیں کمات حدیث کی تشریح وی مراد جلب کی تلقی کے بھی ہیں، لغۃ بحکت، جالت کی جمع ہے؛ لیعنی وہ خص جو ہاہر سے مال لائے

بازارادرشهر مي برائے فردخت،اورمجلوب مے معنى بحى موسكتے ہيں،مسئله كي تحقيق اور تفصيل معلوم مو پكي -

ومندى اوربازارمين لاياجائي

﴿ صِرِيثُ بَمِ ٢٤/٢٤﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : لَا تَلَقُوْا السَّلَعَ حَتَّى يُهْبِطُ بِهَا إِلَى السُّوقِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجمه : حضرت عبدالله بن عرف في في فرمايا: كدرسول الله الله في في مايا آك بوصرسامان (لان والول) علاقات ندكرويهان تك كداس كوبازاريس لاكراتاراجائ _(بخاري مسلم)

کلمات جدیث کی تشریک اور وایت می السِلْع ،ساختہ کی جمع ہے،بیھا عنمیر برائے سلع اور بارح ف جربرائے تعدیہ، سامان اور وہ مال جو برائے تجارت ہو، مقصد بیان اس کا بھی وہی ہے جو گذشتہ روایات میں معلوم ہو چکا

ہے۔ بھبط مضارع جمہول بینی جب تک بازار اور منڈی میں تجارتی اموال ندآ جائے اس وقت تک باہر جاکران سے ملاقات ندلی جائے احادیث میں واروشدہ کلمات ایک دوسری کی تغییر اورتشریج کرتے ہیں۔ (ماخوذ ارتعلی وخیرہ)

﴿درمیانِ عقد میں ضریداری نه کی جائے﴾

﴿ صِينَ تُمِرُ ٣٤١٤ ﴾ وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا يَبِيعُ الرَّجُلُ عَلَىٰ بَيْعِ آنِيهِ وَلا يَخْطُبُ عَلَى خِطْبَةِ أَحَيْهِ إِلَّا أَنْ يُاذَنَ لَهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. متر جمعه: حضرت عبدالله بن عمر في تقل فر ما يا كدرسول الله الله في في ارشاد فر ما يا: اسپند بعائى كى بي برق شرك دو اوراسپند بعائى كى بينام لكاح يربينام لكاح ندد ك بمكريد كدده اس كوا جازت دے _ (مسلم)

عدیث بر ۲۷۷ کے تحت مجمی کی مسئلہ آجا ہوت الفاظ کے فرق کے ساتھ الا بیدع "مقعید کلمات حدیث کی تشریع کی المراک کو المراک کو بداری کر رہا ہے اور مالک (تقریباً) رضا مند ہے اس کواس کے ہاتھ

فردنت کرنے پرتو اس صورت میں کوئی دومرافض ان کے درمیان آکرخریدار (کا قصد) ندکرے، قیت بوٹھا کریا جس صورت خریداری میں بھی ہواس لیے کداس صورت میں بھی پہلے خریدار کو تکلیف ہوگی اور اس کا ضرر ہوگا، دومری صورت سے کداورتم اپنامال خریدار کو کھلاکرا پی طرف اس کومتو جدند کرو، اس صورت میں باقع اول کو تکلیف ہوگی اور آپس میں اخوت اسملای کے بھی بی فلاف ہے اور برخلتی ہے اور اس طرح جھڑے ہوئے ہیں۔

اورای طرح نکاح کے پیغام (منظنی) کے درمیان دخیل نہ ہو۔"الا ان باذن له"البت اگر تن اول، دوسرے کومعالم کونے کی (بخقی) اجازت دے دے خریداری ، فرونتی اور پیغام نکاح کی تب درست ہوگا۔

صدیث فمبر ۱۷۵۲۸ میں ہے افسان تلقافہ المنع "اگراہل قافلہ سے ملاقات کرنے کے بعد تاجر نے ٹرید کرلیا ہے اوراس کے بعدوہ بازاریس آیا اور منڈی کا بھاؤ معلوم ہونے کے بعد اگر اس کی بیرائے ہوگی کہ وہ واپس لے تواس کو اختیار ہے ؛ کیونکہ تاجر نے راستہ جس ملاقات کرکے (گویا کہ) حقیق بھا کا ورقیت سے بے خبر رکھا تھا اوراس کوخداع ہواہے ؛ اس لیے شریعت نے اس کو بیا اختیار دیا ہے۔

﴿اقوال فقهاء اور مذاهب كي تفصيل﴾

(الف) حضرات علام فلا ہراور ابن حزام کے نزدیک علی الاطلاق یافتی حرام اور تا جا کڑے اور اس صورت کی کا باطل ہے تا منعقد نہ ہوگی۔

(ب) حضرات ائم کلاٹ کے فزدیک بیٹلی مروہ ہے کی الاطلاق، ضرر ہوا ہویا نہ ہوا ہو؛ اسلنے کہ آپ ملک نے منع فر مایا ہے۔
(ج) اور عندالاحناف یہ تفصیل ہے کہ بیٹلی مکروہ ہے؛ البتہ اگر طلاقات کر کے فریداری کی گئی اور غرر نہ ہوا ہو بھاؤ کے مطابق فریداری کی گئی تھی بیچ منعقد ہوگئ ، مگر ہوا ہے نہوی توان ہے مناف ہے "فی تلك النجادة حق اہل البلد جمیعاً، فہذا جب سبكا حق برابر ہے تو ایسا ہر گزند كیا جائے۔ (ماخوذ ارتعیاق وغیرہ كے ساتھ) صاحب اموال كوافتيا رہے۔

اس افتیار کے امرے معلوم ہوا کہ بچے ہو چکی تھی ؛ اس لیے کہ خیار والی صورت عقد کے ہوجائے پر بی ہو یکتی ہے اگر باطل اور قاسد متی تب تو بہر صورت اس عقد کوشتم کرنا اور کا اعدم قر اردینا واجب ہوا کرتا ہے۔

عندالاحناف جب كه (مع الكرابت) عقد لا زم بوچكاتها تواب على الاطلاق فنع كا اعتيار ندموكا؛ البنة بصورت اقاله ال كومقد كم فنه الاحناف جب كم المراب المعادل المعاد

اور دومری جماعت کے علام نے (بھی بھی کہا ہے کہ اگر) تاج نے ہوری قیت پر بی خریداری کی ہوئی ہے جب تو واپس شہوگی؛
اسلنے کہ علی ضررتیں ہے؛ البت اگر کم بھاؤ کی اتھ خریداری کی گئی تب خیار خ ہوگا؛ چنا نچہ مافظ این بخرش افعی ہیں وہ تحریر کرتے ہیں مہافا
کان سعر اہ اعلی او کسعر البلد ففیہ و جہان فی جہت شت المخیار الاطلاق المحدیث ، والاصح الله الاعبار له المعدم المغین: غین اور ضررت ہوئے کی جہت خیارت ہوگا اور اس تول کو اس خرمایا کیا ہے معلوم ہوا کہ فاہر مدے ہو الن صرات کا بھی علی مہان ہوئے گئی ہوئے ہوئی اور کی اور کی معلوم ہوا کہ بیمدے مردور کی جاوئی اور تحری کی اس کی جہت میں ہوئی ہوئی کر ہے ہیں۔
عمل نہیں ہے؛ بلکہ خیار جب ہوگا جب ضرراور تھی ہوا کہ بیمدے مردوک ہوئی میں خوا میں اور تحریل کو تھی اور کی معلوم ہوا کہ بیمدے مردوک ہوئی ہوئی ہوئی کہ سے ہیں۔

﴿ مِدَيَّ مُهِرَا اللهِ وَعَنْ آبِي هُوَيْوَةَ آنَ وَسُوْلَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: قَالَ: لَايَسِمُ الرَّجُلُ عَلَى سَوْمِ آمِيْهِ الْمُسْلِمِ. وَوَاهُ مُسْلِمٌ.

IAA

قوجهد: صرف ابو ہر م وضی الله عندے روا میں ہے کہ رسول کر یم تھا ہے فرما یا: کما ہے ہمائی کی قیت م (اور درمیان می وال اندازی کرتے ہوئے) قیت ندلگائے کوئی فنص اپنے مسلمان ہمائی کے سودے پر سودا نہ کرے (اینٹ کی سے فرید دفروشت کا معالمہ مور م ہوتو اس میں مداخلت نہ کرے اور چیز کے زیادہ دام نہ لگائے)۔ (مسلم)

﴿ مِرَيَثُ بِبُرُ ٢٤٣٢ ﴾ وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا يَبِيعُ حَاجِرٌ لِبَادٍ دَعُوا النَّاسَ يَوْزُقُ اللَّهُ بَعْضَهُمْ مِنْ بَعْضٍ، زَوَاهُ مُسْلِمٌ.

قوجهد: صغرت ماير فقل فرمايا كرسول التعلقة نے ارشادفرمايا شمرى ديهاتى كے ليے فروخت شكرے بتم لوكوں كوجهور دوكمالله تعالى ايك كودوسر فرك واسطى برزق عطافرما تا ہے۔ (مسلم)

رجبری معامله کرناهرام هیے﴾

﴿ مرے ثُمْ الْمُكَامَلَةِ وَعَنْ آبِي سَعِيْدِ الْمُعَلَّوِي قَالَ: نَهِىٰ رَسُولُ اللّهِ عَلَيْهُ عَنْ لِبْسَتَيْنِ وَعَنْ يَهْعَيْنِ نَهِىٰ عَنِ الْمُكَامَسَةِ وَالْمُكَامَسَةُ لَمْسُ الرَّجُلِ قُوْبَ الْأَخْوِ بِيَدِهِ بِاللّهٰلِ آوْ بِالنَّهَاوِ وَلاَ يَقَلَّهُ عَنِ الْمُكَامَسَةِ وَالْمُكَامَسَةُ لَمْسُ الرَّجُلِ بَوْبِهِ وَيَنْبِلَا الْأَخْو بِيَدِهِ بِاللّهٰلِ آوْ بِالنَّهَاوِ وَلاَ يَقَلَّهُ اللّهُ مِلْكُونُ وَلِكَ بَيْعَهُمَا مِنْ عَيْدٍ لِللّهُ وَالْمُنْ اللّهُ مَا اللّهُ مَا مَنْ عَيْدٍ وَلا تَوَامِي وَاللّهُ مَتَيْنِ الشّعَيْنِ الشّعَمَا لَى الرَّجُلِ بِقُوبِهِ وَيَنْبِلَا الْاَحْرُ قُوبَةً وَيَكُونُ وَلِكَ بَيْعَهُمَا مِنْ عَيْدٍ وَلا يَكُونُ وَلا تَوَاللّهُ مَا يَوْبِهِ وَلَا تَوْلِهُ وَلَا تَوْلَا مَا لَكُمْ عَلَى السّمَاءِ وَالصَّمَّاءُ آنَ يُخْعَلَ قُوبَةً عَلَى أَحْدِ عَاتِقَيْهِ فَيَبْدُو اَحْدُ شِقْتِهِ لَهُ مِنْ اللّهُ مَا عَلَى اللّهُ مَا عَلَى الرّبُولِ وَهُو جَالِسٌ لَيْسَ عَلَى فَرْجِهِ مِنْهُ شَيءٌ. مُتَقَلَّ عَلَيْهِ.

﴿ فُولِينِ دَهُنِي كُنِهِ بِسَالَتُهُ مِعَامِلُهُ كُونَا حَرَامُ هَيِهِ ﴾ ﴿ صَمَتُ بِرُ ٢٤٠٢﴾ وَعَنْ آبِي هُرَيْرَةٌ قَالَ: قَالَ: لَهِيْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الْحَصَاةِ

وَعَنْ بَيْعِ الْفَوَدِ. وَوَاهُ مُسْلِمٌ.

﴿ مديث بُر ٢٤٣٥﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهِى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ حَبْلِ الْحَبَلَةِ وَكَانَ بَيْعاً يَتَبَايَمُهُ آهُلُ الْجَاهِلِيَّةِ كَانَ الرَّجُلُ يَبْنَاعُ الْجَزُورَ أَنْ تُنْتِجَ النَّاقَهُ ثُمَّ تُنْتِجُ الَّتِي فِي يَطْنِهَا مُتَّفَقَ عَلَيْهِ.

قوجمه و مطلب: حضرت عبدالله بن عرف نظر کیا که دسول الله الله نفط فر مایا ہے حاملہ کے حمل کی تج سے اور وہ ایک تم کی تع تقی که دور جا بلیت کے لوگ اس کی خرید دفر وخت کرتے تھے، (جس کی تشریح یہ ہے کہ) ایک محف اونٹ خرید کرتا یہاں تک کہ اوقی بچہ جنے پھر وہ حمل جنے جواس کے پیٹ میں ہے۔ (بناری وسلم)

مشریع: جسشی کاوجودئی ند بوتووه مال کہاں ہاور جب وہ معدوم (بالمالیت) ہاس کی خریدوفروخت کس بنیاد پر ہوگی؟ معدد کا کے لیمحل عقد ہونالازم ہے۔ (اسعدی)

﴿ صريت بمبر ٢ ١٤/١ ﴾ وَعَنْهُ قَالَ: لَهِىٰ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَسْبِ الْفَحٰلِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. قو جعه: حضرت عبدالله بن عرِّفْ اللهِ عَلَيْهِ فَمْ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَسْبِ الْفَحْلِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. قو جعه : حضرت عبدالله بن عرِّفْ اللهِ عَلَيْهُ فَمْ عَلَيْهِ وَاللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِ وَاللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِ وَاللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِ وَاللهُ عَلَيْهِ وَاللهُ عَلَيْهِ وَاللهُ عَلَيْهِ وَاللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَسْبِ الْفَحْلِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَسْبِ الْفَحْلِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَسْبِ الْفَحْلِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَسْبِ الْفَحْلِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ .

﴿حیوان برانے جماع کرانے پردیناہائزنھیں﴾

﴿ صديث بمرك الماكم وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: لَهِى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ ضِرَابِ الْجَمَلِ وَعَنْ بَيْعِ الْمَاءَ وَ الْإِرْضِ لِتَحُرُث. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

ترجهد: حضرت جابر فض كيا كدر ول التعلق في منع فرمايا باون كے جفت كرانے كے عقد (ليني اجرت ملى كرنے) ساور پانی اور زمين كاشت كے ليے فروخت كرنے سے (ليني مالك زمين اپني زمين اور پانی برائے كاشت بٹائی پردے)۔ (مسلم)

﴿ صديث نبر ٢٤٣٨) وَعَنْهُ قَالَ: نَهِىٰ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ عَنْ بَيْعِ فَصْلِ الْمَآءِ. وَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَصِدِهِ وَمَعَلَمُ عَنْ بَيْعِ فَصْلِ الْمَآءِ. وَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَرَحِهِ وَمَعَلَمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاسَلّمَ عَنْ بَيْعِ فَصْلِ الْمَآءِ. وَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَحِمِهِ وَمَعَلَمُ اللّهُ عَلَيْهُ فَيْ وَاللّهُ عَلَيْهُ فَيْ وَاللّهُ عَلَيْهُ فَيْ وَاللّهُ عَلَيْهُ فَيْ وَاللّهُ عَلَيْهُ فَاللّهُ عَلَيْهُ فَيْ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ عَنْ بَيْعِ فَصْلِ الْمَآءِ. وَوَاهُ مُسْلِمٌ عَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ عَنْ بَيْعِ فَصْلِ الْمَآءِ. وَوَاهُ مُسْلِمٌ عَنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ عَنْ بَيْعِ فَصْلِ الْمَآءِ.

﴿تالاب اورکنویں وغیرہ کا پانی فروخت کرنا درست نھیں ﴾

﴿ صريت بْمُر ٣٤/٣٥) ﴿ وَعَنْ آبِيْ هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا يُبَاعُ فَضْلُ الْمَاءِ لِيُبَاعَ بِهِ الْكَلَاءُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجهه: حعفرت ابو ہر رہ انتقال فر مایا که رسول الله تقافی نے فرمایا: زائد پانی فروخت نہ کیا جائے تا کے فروخت کی جائے اس متام پر گھاس۔ (بھاریؒ وُسلمؒ)

منسومع: شریعت نے پانی ،خودرو کھاس جیسی اشیاد کومباح الاصل قراردیا ہے اور عامة الناس کی ضرورت کی وجہ سے اُن پرتسلط رکھنا علم اور تعذی ہے ،قدرتی پانی کی آ مرجس کو اللہ تعالیٰ کا مال کہا گیا ہے تو بندہ دوسروں کو کس طرح روک سکتا ہے؛ البتہ جس پانی کو اپنے ظرف میں جمع کیا ہودہ اب اُس کی ملک ہوجائے گا۔

﴿فريب دينااورعيب چهپاكرفروخت كرناهرام هي> ﴿مديث بُر ١٤٣٠﴾ وَعَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ رَسَلَمَ مَرُّ عَلَى صُبُرَةٍ طَعَامٍ فَآذُ حَلَ يَدَهُ فِيْهَا فَتَالَتْ أَصَابِعُهُ بَلَكُ فَقَالَ: مَا هَلَمَا يَا صَاحِبَ الطُّعَامِ؟ قَالَ: أَصَابَتُهُ السَّمَاءُ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: أَفَلَا جَعَلْتَهُ فَوَقَ الطُّعَامِ حَتَّى يَرَاهُ النَّاسُ؟ مَنْ غَشَّ فَلَيْسَ مِنَّى. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

قوجعه ومطلب: صرت الويرية في الله كاكدرول الشاك فلدى ايك ويرى ك پاس س كذر ع، آب الله فاس و مرى من اينادسيد مبارك داخل كرديا (تاكدا كدروني دانون كا حال معلوم مو) آب الليون كور ي محسول مونى ، آب الله ف وريافت فرمايا: المعالم الك المركما عاس فرض كمايارسول النهاف اس بربارش برائي من بالك في مرم في اس كوفلد كراو يركول ندا ال دياتا كرلوك اس كود كيديس بصفف نے دعوكد ديا (اور خيانت كى) تو ده محرے بي سے نبيل، (يعني مر عطريقة رئيس) (معلم)

مشروع : فریب دی کسی مالت میں جا تزمین اور پیضلت بہت زائد ندموم ہے شریعت نے کسی بھی بنار پراس کی اجازت نیس

دى اورنيز فسادى علامت ہے۔

الغصل الثانب

﴿ مديث مُراس ١٤٨ ﴾ عَنْ جَابِرِ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهِيْ عَنِ النُّنَيَا إِلَّا أَنْ يُعْلَمَ.

رُوَّاهُ التّرمِدِي.

توجعه ومعلب: معرت جابر فقل فرمايا كدرسول التُعَلَّق فرمايا استثنار (جهول في البيع) كرف سے بمريد كم مقدار معلوم ہو۔ (ترندیؓ)

﴿انگورکی فروختگی تیگری کے بعد﴾

﴿ مديث بْرِ٢٢٨ ﴾ وَعَنْ أَنْسٍ قَالَ: لَهِيْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الْعِنَبِ حَتَّى يَسْوَدً وَعَنْ بَيْعِ الْحَبِّ حَتَّى يَشْتَدُ هَكَذَا رَوَاهُ التَّرْمِذِي وَٱلُوْدَاؤِدَوَلَيْسَ عِنْدَهُمَابِرِوَايَتِهِ نَهَى عَنْ بَيْعِ التَّمْرِ حَقَّى تَوْهُو اِلَّابِرِوَايَةِابْنِ عُمَرَقَالَ نَهَى عَنْ بَيْعِ النَّمْرِ حَتَّى تَزْهُورَوَاهُ النَّرْمَذِيُّ وَٱبُوْدَاوُدَ عَنْ آنَسٍ وَالزَّيَادَةُ الَّتِيْ فِي الْمَصَابِيْحِ وَهِيَ قَوْلُهُ لَهِيْ عَنْ بَيْعِ التَّمْرِ حَتَّى تَزْهُوَ إِنَّمَا ثَبَتَ فِي رِوَايَتِهِمَا عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهِي عَنْ بَيْعِ النَّحْلِ حَتَّى تَزْهُو وَقَالَ التَّرْمِلِيُّ هَلَا حَدِيْثُ حَسَنَّ غَرِيْبٌ.

قد جمعه ومعلم : حضرت الن ينقل كيا كدرسول الله الله في في مايا الكورى الله عنهال تك كرسياه موجا كي اورغلدى الح سے پہاں تک کر دانہ) سخت ہوجائے (اس صدیث کوامام ترفدیؓ ، ابوداؤدؓ نے اس طرح نقل کیا ہے) اور ان دونوں کی روایت میں "لهي عن بيع التمر حتى تزهو ""بيس ب؛ البته بروايت ابن عرب "قال نهى النع" حضرت ابن عرب فقل كيا كمجوول كا فا سے مع فرمایا بہال تک کروہ خوش رنگ ہول (تیاری کے قریب ہول) _ (ترندی، ابوداؤر بروایت انس)

إور جوزيادتى مصابح كى روايت من بوء آپ الله كا ارشاد "نهى عن بيع التمر حتى تؤهو" بيع إرت ترفدى اورابوداؤوكى مدایت ش بردامت این عرفابت ہے. "قال نھی عن بیع النخل حتی تزهو" ادراہام ترندی نے فرمایا بیمدیث من غریب ہے ﴿ مِدِيثُ بُرِ ٢٢٣﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهِى عَنْ بَيْعِ الْكَالِي بِالْكَالَىٰ رَوَاهُ الدَّارَ قَطْنِيُّ.

قوجمه ومطلب: حضرت عبدالله بن عمر عمر وى بك نبى اكرم الله في فرمايا ادهارى كادهار كوف (والله في)

﴿ مديث تبر٣٣ مَا ﴾ وَعَنْ عَمْرُوبْنِ شُعَيْبٍ عَنْ آبِيهٍ عَنْ جَدَّهِ قَالَ: نَهِيْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الْعُرْبَانِ. رَوَاهُ مَالِكُوَ أَبُوْ دَاؤِدَ وَابْنُ مَاجَةً.

ترجمه و مطلب : صفرت مروين شعيب برولس والدخود ازجد امجد قل كرتے بين كدرسول الله الله في فرمايا عربان كى كا __(الك، ابوداؤة اين ماجة)

﴿ مديث بُهِ ١٤٢٥﴾ وَعَنْ عَلِيٌّ قَالَ: لَهِنَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الْمُضْطَرُّ وَعَنْ بَيْعِ الْمُضْطَرُ

﴿ مديث نَمِرُ ١٤٣٧﴾ وَعَنْ أَنَسِ أَنَّ رَجُلًا مِنْ كِلَابِ سَأَلَ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَسْبِ الْفَحْلِ فَنَهَاهُ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللَّهِ! إِنَّا نُطُوِقُ الْفَحْلَ فَنَكُومُ فَرَخُصَ لَهُ فِيْ الْكَوَامَةِ. رَوَاهُ التَّوْمِذِيُّ.

توجمه و مطلب: حضرت الن عمروى بكرسول الشنائية في أيكلاب كايك فنص في سوال كياكرى جفتى (كاجرت لين جمه و مطلب: حضرت الن عمروى بكر أرسول الله المركز بن المركز بن المركز بالمراس الله المركز بن المركز بين المركز بالمراس الله المركز بن المركز بين المركز بي المركز بين الم

منشوع : باباحت بعورت عطيداور مربيب جس ش كوكى قباحت ديس-

﴿ اگرمال موجودت هوتو؟ ﴾

﴿ مِدِيثُ مُرِكُ ٢٤ ﴾ وَعَنْ حَكِيْمٍ أَنِي جَزَامٍ قَالَ: لَهَ آنِي رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ أَنْ آبِيْعَ مَا لَيْسَ عِنْدِى رَوَاهُ التَّرْمِلِيُ فِي رِوَاهِ لَهُ وَلِا بِي دَاؤَدَ وَالنَّسَائِيِّ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللّهِ ا يَأْتِينِي الرَّجُلُ فَيُرِيدُ مِنِّي النَّهُ عَنْ السُّوقِ قَالَ: لَا تَبِعْ مَا لَيْسَ عِنْدَكَ.

قو جعه و مطلب: حفرت علم بن حزام نفل کیا کدرسول الشقای نے جھوکونے فربایا اس تی دکی ہے ہوجرے پاس موجود نہ مو (ترزیؒ) ترزیؒ ، ابوداؤرؒ اورنسائیؒ کی ایک روایت ٹس ہے انہوں نے عرض کیا یا رسول اللہ! میرے پاس ایک فخص آتا ہے اور وہ جھے سے اس شی رکڑ پدکرنے کا ارادہ کرتا ہے جو میرے پاس موجود نہ ہو، پھرٹس اس کو بازار سے فریدکر (دے دودل)؟ آپ تھے نے ارشادفر مایا: جوشی دتمہارے پاس موجود نہ مو (اس کو) مت فروخت کرو۔

قشر مع : عقد ت کے بعد فروخت شدہ مال برخر یدار کو تبغد دیا جانا جق سے جاور مشتری کا بھی حق ہے اور اگر کوئی شکی بائع کی ملیت ہی میں نہ ہوتو وہ اُس کی تطامی کی سے مسلم کے البقہ تھے سلم اس تھم سے مستقی ہے جو مشروع بالص ہے اور اگر مال کودام وغیرہ میں موجود ہے تو یہ می حاضر اور موجود ہے اور اس طرح جن اشیار کوآڈردے کر کار بگروں سے تیار کرایا جائے اور صفات وغیرہ کی جملہ شناخت کے ساتھ عقد کیا جائے رہے جا تر ہے اور اُس نمی کے ساتھ مثال نہیں ؛ بلکستنی ہے۔ (ماخوذ۔اسعدی)

بیع فضولی: اگرکونی فخص ملک غیرکواجازت اوراطلاع کے بغیر فروخت کردے توبیق نضولی ہے اورعندالاحتاف اگر مالک نے اس کے بعد اس کومنظوراور قبول کرلیا تو تھ نافذ ہوگی وَ آل وہ تھ کا لعدم ہوگی ، اور بیازروے استحسان جائز ہے ۔ قبضہ سے پہلے فروشت کرنا ہمی" مالینی عندك "کے تھم ش ہے كلدافی المنقوبو۔ ومديث تبر ٢٤/١٨) وَعَنْ آبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: نَهِيْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ اَيْعَتَيْنِ فِي اَيْعَةٍ. وَوَاهُ مَالِكٌ وَ القُرْمِلِي وَالْوَدَاوَدَ وَالنَّسَائِيُ.

ترجمہ ومطلب: حضرت ابو ہریں فی نے نفل فر مایا کہ رسول النطاقی نے منع فر مایا ہے ایک معقد تھے میں دو تھ (لیعنی دومعالمے) کرنے سے (مالک ، تریزی ، ابوداؤد ، نسالی)

قصوعة: مثلاً الرفق من قيت ير (دلروب) اوراكراُوهار الوقي تيت ير (باره روب اولى) - دوسرى مثال الرقم إلى يشى محص كفروشت كرت موتوش الى يشى فروشت كرونكا: يؤكدان دولول صوراتول ميل باصل شرط باور قيمت جميول بم معنن شده بيل وحديث تمبر المسلاك وعن عفود إن شعيب عن آبيه عن جدّه قال: نهى رَسُول اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَصَلَمَ عَنْ يَنْعَتَيْنِ فِي صَفْقَةٍ وَاحِدَةٍ. دَوَاهُ فِي شَرْحِ السَّنَةِ.

قوجهه و مطلب: حضرت محرو بن شعیب بروایت والدخوداز جدّ امجد قل کرتے ہیں که رسول الله عظی نے منع فرمایا ہے ایک عقد می دوئ کرنے ہے۔ (شرح سنہ)

ہِترض کے ساتھ عقد ہیچ کرنا ﴾

﴿ مِدِيثُ بُرِهُ ٢٤٥٤ ﴾ وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : لَا يَجِلُّ سَلَفٌ وَبَيْعٌ وَلَا شَوْطَانَ فِي بَيْعِ وَلَا رِبْحُ مَا لَمْ يَضْمَنْ وَلَابَيْعُ مَا لَيْسَ عِنْدَكَ. رَوَاهُ التَّوْمِلِيُّ وَ أَبُوْدَاؤدَ وَالنَّسَائِيُّ وَقَالَ التَّرْمِلِيُ هَذَا حَلِيْتُ صَحِيْحٌ.

قوجمه ومطلب: حضرت عمروین شعیب بروایت والدغوداز جد امجدروایت کرتے بیل کدرسول انتخابی نے فرمایا نہیں طال ہے قرض اور کھ (کا بیک ساتھ معالمہ) کرنا اور عقد کے بین وشرط لگانا اور نفع طال نہیں جس وقت تک کدخان بی نہیں آئے اور جوثی التمارے پاس نہواس کی کھ (درست) نہیں ہے۔ (ابوداؤ "، ترقدی ، نسانی ، اور امام ترفدی نے فرمایا بیصد بیٹ سے ہے)۔
مشروع: پہلا مصطلع: سَلَفُ اور بَنِعُ لِين تريدار نے بائع ہے بیشرط کی کداؤلاً وہ جھ کوترض (سلف) دے اور پھروہ تم سے شریداری کریا اللہ بیس ہے (اذکوکس)

(۲) موسوامسئله: "لاشرطان المخ اگر کس شی لین الی کوئی بھی شرط جوعقد کے منافی ہوایک ہویا دویا اس سے زیاد ہوتو جا ترجیل ہائی۔ ماتھ دوسرے عقد کولاحق کرنا۔

قوجهه ومطلب: حطرت عبدالله بن عُرِّن بيان فرمايا من بازار نقيع من دنانير كوش اونث فروخت كرتا تعاً، پر من دنانير ك بدله من دراجم وصول كرليتا اور فروحت كرتا بدراجم كوش تو اسكوش دنانير وصول كرليتا؛ چنانچه من نبي اكرم تايي كي باس حاضر بهوا اور من ن آپ الله على المده المراق الله المراق الله المراق المراق

قوجمه ومطلب: حضرت عدَّاد بن خالد بن بوذه سے مروی ہے کہ انہوں نے ایک تحرینکالی (اور دکھلائی جس میں عقبہ کے سے متعلق یہ تحرین کی یہ جس کی میں انہوں نے آب تعلقہ سے متعلق یہ تحرین کی یہ جس کی تحریب کی انہوں نے آب تعلقہ سے ایک خلام اور ایک باندی خرید کی کے جن میں نہ کوئی بیاری ہے اور نہ کوئی حیب اور نہ کوئی خب ہے ایک مسلمان نے تھ کی ایک مسلمان سے ایک مسلمان سے تھ کی ایک مسلمان سے در تر نہ کی ،اور یہ حدیث خریب ہے)

﴿ مديث نُبِر ٢٢٥٣﴾ وَعَنْ آنَسِ آنَ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بَاعَ حِلْساً وَقَدَحاً فَقَالَ مَنْ يَشْتَرِى هٰذَا الْحِلْسَ وَالْقَدَحَ فَقَالَ رَجُلّ: الحُدُّ هُمَا بِلِرْهُم فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: مَنْ يَزِيْدُ عَلَى دِرْهَم فَاعْطَاهُ رَجُلٌ دِرْهَمَيْنِ فَبَاعَهُمَا مِنْهُ. رَوَاهُ التَّرْمِذِي وَآبُوْدَاؤَدَ وَابْنُ مَاجَةَ.

قوجهه و مطلب: حفرت الن عمروى بكرسول الله بيالية في ايك جا درادرايك بيالدكوفرو وخت كيا بي آب اليقية في (اس كفروخت كرف كرف كر لي يوس) فرمايا كراس جا دراور بيالدكوكون فريدتا ب؟ توايك شخص في كها بي ان دونو س كوايك درجم كوض فريدتا بهوس رسول الله الله الله في في في مايا كرايك درجم سے ذاكدكون دے كا؟ توايك شخص في آب الله كودودرجم ديكي، آب الله في في وو دونوں چيزيں ال شخص كوفرو خت كرويں _ (ترزي ، ابوداؤر، ابن ماج)

الغصل الثالث

﴿ صديث بُر ٢٢٥٣﴾ عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْاَسْقَعِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ يَقُوْلُ مَنْ بَاعَ عَيْبًا لَمْ يُنَبُّهُ لَمْ يَزَلُ فِي مَقْتِ اللهِ أَوْ لَمْ تَزَلِ الْمَلَاثِكَةُ تَلْعَنُهُ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ.

قوجهه و مطلب: حفرت واثله بن اسقام نے بیان کیا کہ میں نے رسول النہ اللہ سے است آپ اللہ فر مارے تھے: جس مخص نے عیب دار چیز کوفرو دہت کر دیا (اور) اس عیب کو بیان نہیں کیا تو وہ مخص برابر اللہ تعالیٰ کے غصہ میں مبتلا رہے گا۔ یا (بیدارشاوفر مایا تما) برابراس برفرشتے لعنت کرتے رہیں گے۔ (ابن ماہد)

الأك

الغصل الاول

دِدرخت کی فروختگی کے ساتھ پھل داخل نھیں ﴾

﴿ صديث بُمر ١٤٥٥ ﴾ عَنِ ابْنِ عَمَو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: مَنِ ابْتَاعَ نَحُلاً بَعْدَ أَنْ تُومَرُ تَقَالِ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: مَنِ ابْتَاعَ نَحُلاً بَعْدَ أَنْ تُومَرُ ابْنَاعَ عَبْداً وَلَهُ مَالٌ فَمَالُهُ لِلْبَائِعِ إِلَّا أَنْ يُشْتَرِطَ الْمُبْتَاعُ. وَمَنِ ابْنَاعَ عَبْداً وَلَهُ مَالٌ فَمَالُهُ لِلْبَائِعِ إِلَّا أَنْ يُشْتَرِطَ الْمُبْتَاعُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَرُوَى الْبُخَارِيُّ ٱلْمَعْنَى الْآوَلَ وَحْدَهُ.

قوجمہ وصطلب: حضرت و براللہ بن عمر نے نقل فر مایا کہ رسول اللہ اللہ فیا: جس شخص نے مجود کے درخت فرید کے ان کی تائید کرنے کے بعد تو ان کی تائید کرنے کے بعد تو ان کے بعد کا اور اس خلام کے باس مال ہے تو وہ بائع کے لیے ہے؛ مرخریدار شرط لگائے (تو پرخریدار کے لیے ہوگا)۔ (مسلم اور امام بخاری نے فظ اول کے ہم معنی روایت نقل کی ہے)۔

کل ت حدیث کی تشریح اجوشی فروخت کرده اشیار کے ساتھ منتقلاً جزر کی حیثیت پرند ہووہ خارج از عقدر ہے گی محرجب کہ کلمات حدیث کی تشریح اس کو بھی شاملِ عقد کردیا جائے۔

وَمديتُ أَبِر ٢٥٥٢) ﴿ وَمَنْ جَابِرِ أَنَهُ كَانَ يَسِيْرُ عَلَىٰ جَمَلِ لَهُ قَدْ آغيىٰ فَمَرَّ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِهِ فَضَرَبَهُ فَسَارَ سَيْراً لَيْسَ يَسِيْرُ مِثْلَهُ ثُمَّ قَالَ: بِعَينِهِ بِوُقِيَّةٍ قَالَ: فَبِعْتُهُ فَاسْتَثْنَيْتُ حُمْلَانَهُ إِلَى آهُلِىٰ فَلَمَّا فَلَمَّا لَهُ عَلَيْهِ وَفِي وَايَةٍ فَاللَّذَ فَبِعْتُهُ وَرَدَّهُ عَلَى مُتَفَقٌ عَلَيْهِ وَفِي وَايَةٍ فَاغْطَانِى ثَمَنَهُ وَرَدَّهُ عَلَى مُتَفَقَّ عَلَيْهِ وَفِي وَايَةٍ فَاغْطَانِى ثَمَنَهُ وَرَدَّهُ عَلَى مُتَفَقَّ عَلَيْهِ وَفِي وَايَةٍ لِلْهُ خَارِى آنَهُ قَالَ لِيلالِ: الْفَضِهِ وَزِدْهُ فَاعَطَاهُ وَزَادَهُ قِيْرَاطاً.

قوجهد: حضرت جابر ہے مروی ہے کہ وہ این اون پر سفر کررہ ہے جو کہ تھک (کرست رفتار ہو) چکا تھا، سونی اکر مہلکے ان کے باس ہے گذرے (اور دیکھا کہ اون تھک چکا ہے) تو آپ آلے ہے اس اون کو مارا ۔ تو پھر وہ اس طرح (تیز رفتار) چلنے لگا کہ دومرا اون اس کے ماندنیس چلا تھا۔ آپ آلے ہے اس (تیز رفتاری) کے بعد فرمایا: تم اس کو ایک اوقیہ چا ندی کے عوض مجھ کو فروخت کر دو۔ حضرت جابر قرماتے ہیں کہ ہیں نے آپ آلے کہ کو وہ اون فروخت کر دیا اور اپنے گھر پہو نیخے تک اس پر سوار ہونے کو مشنی کر لیا؛ چنا نچہ جس وقت میں مدید آگیا تو میں آپ آلے کے پاس اون لے کر حاضر ہوا اور آپ آلے گئے کہ کو اس کی قیمت عنایت فرمائی، اور ایک روایت میں ہے کہ آپ آلے گئے گئے اس کی قیمت عنایت کی اور وہ اون (بھی) مجھ کو والی کو ٹاد یا۔ (بھاری مسلم)

اور بخاری کی ایک روایت میں ہے کہ آ ب اللہ نے حضرت بلال سے فر مایا اس کو قیمت ادا کر دواور کھے ذاکد دو ؟ چنا نچد حضرت ملال نے وہ قیمت دی اور ایک قیراط مزید دیا۔

﴿عقدِبيع كے ساتھ شرط كاھونا﴾

﴿ مديث مُبر ١٤٥٤﴾ وَعَنْ عَانِشَةَ قَالَتْ: جَاءَ تُ بَرِيْرِةُ فَقَالَتْ: إِنِّى كَاتَبْتُ عَلَى يَسْعِ آوَاق فِي كُلِّ عَامٍ وُقِيَّةٌ فَآعِيْنِيْنِي فَقَالَتْ عَائِشَةُ إِنْ آحَبُ آهْلُكِ آنْ آعُدُهَا لَهُمْ عُدَّةٌ وَاحِدَةٌ وَاغْتِقُكِ فَعَلْتُ وَيَكُونُ وَلَاءُ لِهِ فَلَحَبَتْ إِلَى آهْلِهَا فَآبَوْ اللهِ آنْ يُكُونَ الْوَلَاءُ لَهُمْ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: خُلِيْهَا وَاغْتِقِيْهَا لُمَّ قَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فِي النَّاسِ فَحَمِدَ اللهَ وَآلُنَىٰ عَلَيْهِ لُمَّ قَالَ: آمَّا بَعْدُ فَمَا بَالُ رِجَالِ يَشْعَرِطُونَ خُرُوطاً لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللَّهِ مَا كَانَ مِنْ شَرْطٍ لَيْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ فَهُوّ بَاطِلٌّ وَإِنْ كَانَ مِالَّةَ صَرْطٍ فَفَصَاءُ اللَّهِ آحَلُّ وَضَرْطُ اللَّهِ أَوْلَقُ وَإِنَّمَا الْوَلَآءُ لِمَنْ آغَيْقَ. مُتَّقَقَّ عَلَيْهِ.

توجعه وصعلب: حضرت عائش في بيان فرايا كه حضرت برية عاضر بوكس ادر مرض كيا كه مي فرائ ما لك ب) نوادقيه على (جوكه) برسال مي ايك اوقيداد كرف كن شرط كساته مي في عقد كرات كيا به البذاتم بيرى اعائت كرو حضرت عائش في مايا: اكرتهار ما لك كويتد بوق هي ايك مى دفت مي تمام مال كراس أدر اكران كردول كي اور تحكوا زاوكردول كي (اكران كروف بيني به كول في اور دولا مير مي ليه بوك ونا ني دخترت برية الي ما لك كه پاس كني (اور انهول في تراكول كي اور دولا مير مي ليه بوك ونا ني دخترت برية الي ماك كه پاس كني (اور انهول في تراكول كي اور دولا مير مي ليان كي جي كول انهول في انهول في الكرويا كراس شرط كراس شرط كراس شرط كراس المورد والدولان الدولان المورد والدول كول كراس شرط كراس شرط كراس المورد والدول كول كراس كروس آن الكول كروب آن المورد والمورد والمورد والمورد والمورد والمورد والمورد والمورد والمورد والكول كول كروس الكروب كراس المورد والمورد والمورد

﴿ مديثُ بْمِر ١٤٥٨﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهِيْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الْوَلَاءِ وَعَنْ

هَبَيْهِ. مُعْنَى عَلَيْهِ.

ترجمه ومعلب: حعرت عدالله بن عرف بيان فرمايا كدرسول التمالية في منع فرمايا بولاء كى يح كرف اوراس كامبدكرف سد (بناري سلم)

الغصل الثاني

﴿ مديث بُهِ اللَّي عَنْ مَعْلَدِ بْنِ عُفَافٍ قَالَ: آبْتَعْتُ عُلَاماً فَاسْتَغْلَلْتُهُ ثُمَّ طَهَرْتُ مِنْهُ عَلَىٰ عَيْبٍ لَعَاصَمْتُ فِيهِ إلى عُمَرَ بْنِ عَيْدِالْعَزِيْزِ فَقَضَىٰ لَى بِرَدُهِ وَقَضَىٰ عَلَى بِرَدَّ عَلَيْهِ فَاتَيْتُ عُرُوةَ فَاعْبَرْتُهُ وَقَضَىٰ عَلَى بِرَدُ عَلَيْهِ فَاتَيْتُ عُرُوةَ فَاعْبَرُتُهُ وَمَعْلَى اللَّهِ عَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَمَلّمَ قَضَىٰ فِي مِثْلِ فَقَالَ آرُوحُ إلَيْهِ الْقَشِيَّةَ فَاعْبِرُهُ آنَ عَائِشَةَ آخِبَرَتْنِي آنَ رَسُولَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَمَلّمَ قَضَىٰ فِي مِثْلِ طَذَا آنَ الْعَرَاجَ بِالطّمَانِ فَرَاحَ إلَيْهِ عُرْوَةً فَقَصَىٰ لِي آنَ اخَذَ الْحَرَاجَ مِنَ الّذِي قَصَى بِهِ عَلَى لَهُ. رَوَاهُ فَى شَرْح السّنَةِ.

تو جعه و معلی : حضرت کلدین خفاف فر ماتے ہیں کہ ش نے ایک غلام فرید کیا اور پھر شی نے اس کو اجرت (ومودوری) پر چو و دیا ، اس کے بعد اس غلام میں عیب پر اطلاع پائی اور اس معاملہ کو پیش کیا میں نے عمر بن عبد العزید کے ساتھ ، تو انہوں نے میرے تن میں
نیملہ کر دیا اس کو واپس لوٹانے کا اور جھ پر اس کی آلدنی کے واپس کرنے کا (بھی) فیملہ کر دیا ہے میں معز ت عودہ کے پاس حاضر ہوا اور
میں نے ان کو اس (معاملہ) کی فیمر دی ، تو حضرت عردہ فر مایا کہ میں شام کے وقت حضرت عمرین عبد العزیز کے پاس جاؤں گا اور ان کو
فیمر دوں گا کہ جیکل حضرت عاکش نے جھے کو فیمر دی ہے کہ رسول الشفائی نے اس تسم کے قصہ میں قیملہ (یہ) دیا تھا کہ بیشینا
فراج (منفعت) کے بعلہ اور صان میں ہے ؛ چنانچ حضرت عردہ ان کے پاس تشریف لے گئے (اور انہوں نے مید میٹ بیان کردی)
لیزانہوں نے میرے لیے فیملہ کیا کہ میں اس فیم سے (غلام کی دی ہوئی) آلداس سے واپس لوں جس کو دیئے جانے کا جھ پر (اولاً

فيله من المحم ديا تعا- (شرح سنه)

﴿ صَدَيْتُ مُرِ ١٤ ٢٤ ﴾ وَعَنْ عَبْدِاللّهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : إِذَا خَتَلَفَ الْبَيّْعَانِ غَالْقَوْلُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُبْتَاعُ بِالْحِيَارِ، رَوَاهُ التّرْمِدِيُ، وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ مَاجَةَ وَالدَّارِمِيّ قَالَ الْبَيّْعَانِ غَالْقَوْلُ مَا قَالَ الْبَائِعُ أَوْ يَتَرَآدَانِ الْبَيْعَ. الْبَيَّعَانَ إِذَا الْحَتَلَفَا وَالْمَبِيْعُ قَائِمٌ بِعَيْبِهِ وَلَيْسَ بَيْنَهُمَا بَيِّنَةً فَالْقَوْلُ مَا قَالَ الْبَائِعُ أَوْ يَتَرَآدَانِ الْبَيْعَ.

قوجهه ومنطلب: حعزت عبدالله بن مسعود في الله بن مسعود في الله الله قل الله الله قل الله على الشاقط في ارشاه فر ايا كه جب باكع اورمشترى دونول بن اختلاف بموتو باكع كاقول معتبر بموكا اورفز يداركوا فتايار (خواه وه عقد بمطابق قول باكع قائم ركھ يا فيح كرد ،) ترفد كا اورابن ماجه اورائ كى روايت يس به آپ ملاق في ارشاه فرمايا كه جب باكع اورمشترى دونول اختلاف كرين اورفر وخت شده مال اى حالت پرموجود مواوران دونول كى روايت يس به تو به به تو

﴿ صديت تَبِرا٧ ٢٢٤ ﴾ وَعَنْ آبِي هُوَيْرَةَ قَالَ قَالَ: رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: مَنْ اَقَالَ مُسْلِماً آقَالَةُ اللهُ عَشْرَتَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَوَاهُ ٱبُوْدَاؤدَ وَابْنُ مَاجَةَ وَفِي شَوْحِ السُّنَّةِ بِلَفْظِ الْمَصَابِيْحِ عَنْ شُويْحِ السَّامِيِّ مُوْسَلًا.

الفصل الثالث

﴿ صَدِيثُ نُهِ ١٢ ١٤ ﴾ عَنْ آبِي هُرَيْوَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: اِشْتَرَىٰ رَجُلٌ مِمَّنَ كَانَ قَبْلَكُمْ عَقَاراً مِنْ رَجُلٍ فَوَجَدَ اللّهِ يَ الْمُقَارَ فِي عَقَارِهِ جَرَّةٌ فِيْهَا ذَهَبٌ فَقَالَ لَهُ: اللّهِ يُ كَانَ قَبْلُكُمْ عَقَاراً مِنْ رَجُلٍ فَوَجَدَ اللّهِ يُ الْمُعَرَىٰ الْعَقَارَ وَلَمْ آبَتَعْ مِنْكَ اللّهَبَ فَقَالَ بَائِعُ الْأَرْضِ: إِنَّمَا اشْتَرِينَ الْعَقَارَ وَلَمْ آبَتَعْ مِنْكَ اللّهَبَ فَقَالَ بَائِعُ الْأَرْضِ: إِنَّمَا اشْتَرِينَ الْعَقَارَ وَلَمْ آبَتَعْ مِنْكَ اللّهَبَ فَقَالَ بَائِعُ الْأَرْضِ: إِنَّمَا اللّهُ وَقَالَ اللّهُ مَا أَلِي رَجُلٍ فَقَالَ اللّهِ يُعَالَىٰ اللّهُ مَا اللّهُ وَقَالَ اللّهُ مَا اللّهُ وَقَالَ اللّهُ وَقَالَ اللّهُ مَا اللّهُ وَقَالَ اللّهُ مَا اللّهُ وَقَالَ اللّهُ مَا اللّهُ وَقَالَ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَقَالَ اللّهُ وَقَالَ اللّهُ مَا مِنْهُ وَتَصَدَّقُوا مُتَّفِقً عَلَيْهِ.

> ተተተተ ተ

<u>ناب السلم والرهن</u> <u>الفصل الاول</u> ﴿عقدِسَلَمْ ﴾

﴿ مديث مُبر ٢٢ ٢٢﴾ عَنْ إِنْ عَبَّاسِ قَالَ: قَدِمَ رَسُولُ اللّهِ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ ٱلْمَدِيْنَةَ وَهُمْ يُسْلِفُونَ فِي الشَّمَارِ السَّنَةَ وَالسَّنَتَيْنِ وَالثَّلْكُ فَقَالَ مَنْ اَسْلَفَ فِي شَيءٍ فَلْيُسْلِفُ فِي كَيْلٍ مَعْلُوم وَوَزَنِ مَعْلُوم إلى اَجَلِ مَعْلُوم مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجمه و مطلب: عفرت عبدالله بن عباس نے بیان فر مایا که رسول الشفای مدین تشریف لاے اور مدینہ کے باشندے مجلوں میں ایک سال اور دوسال اور تین سال تک کے لیے عقد سلم کیا کرتے تنے تو آپ تا گئے نے (ان لوگوں سے) فر مایا: اگر کو کی مختص سی چیز میں عقد سلم کرے تو کیل معلوم اور وزنِ معلوم میں عقد سلم مدت معلوم تک کرے۔ (بخاری اسلم)

کلمات حدیث کی تشریکی ایک شرق ایک شرق نظ (عقد) ہے اورلفظ سکم (اسم ہے جو) اَلتَّسليمُ سے ماخوذ ہے اورلفظ سنگی کوفروفت کرتاہے جوفی الوقت

خریدار کودے کا اوراُس کی قیت (شمن) مجلسِ عقد میں ہی نقذا وصول کرے کا۔انسانی ضروریات کے پیشِ نظرشریعت نے اس عقد کو (خلاف قیاس) مباح کیا ہے، بسااو قات ایک فخص کے پاس نقذر قم نہیں ہے اور وہ سوو وغیرہ سے بھی بچاؤ کرتا ہے لہذا بصورت عقد سلم نقذر قم (شمن کی شکل میں) حاصل کرلے کا اور تنجارتی ضرورت کوشریعت کے رعایت کرلے گا۔

سكم :كوسكت سيجىموسوم كيا حميا سيجيدا كداس مديث مي ب-

شرائعه الذم: حدیث ندگوره میں اس کے لیے بیلازی شرط بیان فرمائی ہے کہ کیل (مقدار)معلوم ہونااوروقی مقررہ ہونااجل لینی وقیع معلوم اور مقررہ ،ان کے علاوہ اور مجی شرائط ہیں جن کی تفصیل ہدایہ وغیرہ میں ہے۔

رئن آوراس کا تھی : کے اختہ معنی الحب س، روکنا، مقید کرنا؛ وہشی جو (قرض) بیں قرید کے طور برمجوں، ہو؛ تا کہ دین وصول شہونے کی صورت بیس (بطور وکالٹہ واجازت) اُس مال مرہونہ کے ذریعہ قرض وصول ہو . "جَعَلَ الشنی مَحْبُوساً بِحَقَّ بِمحن مُ استیفاءُ ہ مِنْهُ کالدیون " اور بہقر آن وسقت سے ٹابت شدہ اور آپ نے عملاً بھی اس کی تعلیم فرمائی جیسا کہ روایات میں خدکورہ ، وقال تعالیٰ : " فَرِهَان مُقْبُوظَة "جس کے پاس رئین ہوگا وہ رائین اور وہ ایمن بھی ہے لہذا تعمر ف کرنا جا ترجیل حی کراجازت کے بعد بھی اس لیے کہ وہ سود کے تھم میں ہوگا۔

﴿ صديث بْهِ ١٤٢٤) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: اشْتَرَىٰ رَسُوْلُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ طَعَاماً مِنْ يَهُوْدِى إلى آجَل وَرَهَنَهُ دِرْعاً لَهُ مِنْ حَدِيْدٍ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

مرجمه ومعلب: حفرت عائش نيان فرمايا كدرسول التُعلق نيايك بهودى عفدايك وقت مقرره تك كيفريدااور آپ نياس بهودى كي پاس اين لو ميكى ذرع بطور رئن ركمى - (بخارى ملم)

﴿ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَنْهَا قَالَتُ: تُولِقَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَدِرْعَهُ مَرْهُولَةٌ عِنْدَيَهُوْ دِيَّ بِفَلَالِيْنَ صَاعاً مِنْ شَعِيْدٍ رُوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

موجمه وصطلب: حضرت ما تششف بيان فرمايا كدرسول التسكية نووفات يائى اس مالت يس كرآب الله كارح ايك يبودي

كياستى مائوك وجهدر ان ركى مولى فى _ (بنارى)

﴿ صديثُ بِمِ١٤ ١٤٢﴾ وَعَنْ آيِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :الظّهْرُ يُرْكَبُ مِنَفْقَتِهِ إِذَا كَانَ مَرْهُوْناً وَعَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :الظّهْرُ يُرْكَبُ مِنَفْقَتِهِ إِذَا كَانَ مَرْهُوْناً وَعَلَى الّذِي يَرْكَبُ وَيَشْرَبُ النّفْقَةُ رَوَاهُ الْبُخَادِي.

قوجمه وصطلب: حفرت ابو ہریرہ نے نفل کیا کدرسول الله الله نے ارشاد فرمایا: سواری والے جانور پرخری کرنے کی وجہ سے سواری کی جاسکتی ہے جب کدوہ سواری رہن رکھی گئی ہو، اور تھنوں کا دودھ بیا جاسکتا ہے اس پرخری کرنے کی وجہ سے جب کدوہ جانور رئن رکھا ہوا ہو۔ اورسوار ہونے والے اور دودھ بینے والے پرنفقہ واجب ہے۔ (بخاری)

الفصل الثانى

﴿ مِدِيثُ مِّرِكَا ١٤٤﴾ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيِّبِ آنَّ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا يَغْلِقُ الرَّهْنُ الرَّهْنُ مِنْ صَاحِبِهِ الَّذِي رَهْنَهُ لَهُ غُنْمُهُ وَعَلَيْهِ غُرْمُهُ رَوَاهُ السَّافَعِيُّ مُرْسَلًا وَرُوِىَ مِثْلُهُ آوْ مِثْلُ مَعْنَاهُ لَا يُعَالِهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ مُتَّصِلًا.

قوجهه و مطلب: حفرت سعید بن میتب سے مروی ہے کہ بینک رسول الله الله کے ارشاد فر مایا: رہن رکھ دیتار ہن کواس کے اس مالک ہے مع نہیں کرتا جس نے اس رمن کو دین رکھا ہے، اس مر ہون کی زیادتی (لیعن فقع) را ہن کے لیے ہے اور اس کا فقصان (مجمی) اسی پر ہے۔ (امام شافعی نے مرسل نقل فر مایا)۔ اور اس کے مثل یا اس کے معنی کے مطابق جو کہ اس کے خلاف نہیں برواست الی ہر مرہ اللہ مصل مروی ہے۔

مقصد بیان یہ ہے کہ شریعت کے انکامات اور حقوق میں مثلاً زکو ق بصدقات و کفارات و فیرہ میں ان کا مات و فیرہ میں ا کمانت حدیث کی تشریح کی کیال شرع ان و معتبر ہوگا جو آپ کے مبارک عہد میں یدیند منورہ میں رائج ہے اور اُس کی جومقدار (معلوم) ہے اُس کے حساب سے نفاذ ہوگا۔ اور میزان (جن موازین) کے ساتھ اعلی ملّہ کے درمیان اُس وقت رائج ہے اُنہیں اوز ان کا اعتبار رہے گا۔

﴿مكيال اورميزان كاحكم

﴿ صِرِيتُ بَهِ ١٤٧٨﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَر آنَ النَّبِيّ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم : فَالَ الْمِكْيَالُ مِكْيَالُ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَالْمِيزَانُ الْمُ مَنْزَانُ اَهْلِ مَكَةَ وَوَاهُ اَبُوْدَاؤَدَ وَالنَّسَائِيُّ.

قوجمه وصطلب: حضرت عبدالله بن عرف مروى ب كه ني اكرم الله في ارشاد فرمايا: كميال (تو معترب) اللي مديد كا اور ميزان (معترب) اللي مديد كا اور

﴿ صَرِيثُ مُبِهِ ١٤٧١﴾ وَعَنِ أَبِنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ لِاَصْحَابِ الْكَيْلِ وَالْمِيْزَانِ إِنَّكُمْ قَدْ وُلِيْتُمْ آمَرَيْنِ هَلَكَتْ فِيْهِمَا الْاَمْمُ السَّالِقَةُ قَبْلَكُمْ رَوَاهُ التَّرْمِلِيُّ.

مر جعه وصطلب: حضرت مرالله بن عبال في فقل فرمايا بكرسول الشيكة في كل اور ميز ان والول سار شادفر مايا: يكل الوك المنطقة في المراد المرد المراد المراد المراد المراد المراد المراد المراد المراد المراد المراد

النصل الثالث

﴿ مديث بمر ٤٢٤٠ ﴾ عَنْ آبِي سَعِيْدِ الْمُحَلِّرِي قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ آسْلَفَ فِي

شَىْءٍ فَالاَ يَصْرِفُهُ إِلَى غَيْرِهِ قَبْلَ أَنْ يَقْبِضَهُ رَوَاهُ أَبُوْ دَارُدَ وَابْنُ مَاجَة

موجعه وصطلب: حضرت ابوسعيد خدري في فال كياب كدرسول الله الله الله المالية جس مخص في من حقد ملم كيا ہےتواس کو کسی دوسر مے مخص کی جانب منتقل نہ کرےاس پر قبضہ ہے تبل ۔ (ابوداؤرٌ، ابن ہاج ؓ)

کلمات حدیث کی تشریح مقعمد بیان بدے کہ عقد ملم (سکف) کی تعمیل بی کے بعد مشری کوئی تعرز ف کرسکتا ہے اور بھیل إنسنه مونے كى صورت من موكا ـ ادرية تعرف كى بھى صورت من مود مثلًا حبركنا، مددة كرنا،

فروخت کرناغیره .. (ازعاشیه)

<u>باب الاحتكار</u>

﴿ احتكار اوراس كاعتم ﴾

احكارجو حكوے ماخوذ بافت بس اس كمعنى احتباس شىء ،كىشى كاروكنا اورجع كرتا اورشرعاً - هو حبس الطعام حین احتیاج الناس به حتی یغلو الینی ذخیره اندوزی (اشیار کواساک) کرنا اُس دفت تک انظار کرتے ہوئے کہ بازار میں اس کی تمت زائد ہوجب كے لوگوں كواس كى ضرورت ہے۔

اوراکشر وبیشتر بیاحکارخوردونوش کی اشیار میں ہواکرتا ہے جس کی شریعت نے اجازت دی ہے، ای وجدے احتکار جونا جائز ہے وہ غذائی اجناس میں ہی ہے اگر چدوہ حیوانات ہی کے لیے ہو۔

التوال منقصد: (الف) امام عظم وامام شافي اورامام احد فيزجما بيراال علم كنزديك بيخصوص باشياء خوروني من (خاص كرأن أيام من جب كرعوام كوضرورت مو)_

(ب)اورامام مالك ك ترزد يك يظم ان جملهاشياء ك ليے برسشى كى بھىلوكول كو ضرورت مو-

(ج) امام ابو بوسف اورامام محر قرماتے ہیں کہ جن اشیار کورو کئے پرعام انسانوں کوضرر اور نقصان ہود واشیار احتکار کے علم میں داخل میں اگر چرسونا، جا ندی اور یا کیز واستعال والی اشیارسب واخل مول کی الیکن کیڑے شل مباح بے عند محمد كذافي الهدايه-ضدودی وضماحت: اگرکاشتکارائی زمین کی پیدادار کی اشیاء کوفروشت ندکرین اوران کوبس کرین و ان کے لیے بیرجائز ہے،اور علامدنودیؓ نے ایک وضاحت بیک ہے کہ اگر چہوہ اشیار دوسرے علاقے سے خرید کی ہوں اور کم قیمت والے وقت می خرید کی ہون اور آ تنده فروخت كرنا بي ويمي مباح بي (ارتيلق:جرمرم ١٣٣٨)

<u>الغصل الاول</u>

﴿ مِدَيَثُ مُرِاكِ ١٤٤﴾ عَنْ مَعْمَرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنِ احْتَكُرَ فَهُوَ حَاطِىءً رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَسَنَذْكُرُ حَدِيْتُ عُمَرَ "كَانَتْ آمُوَالُ بَنِي النَّضِيْرِ فِيْ بَابِ الْفَيُّ" إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَىٰ. موجعه: حضرت معرف فقل فرمايا كرسول التعلق ففرمايا جس فض في احكاركياس في كناه كاارتكاب كيا- (مسلم) کلمات حدیث کی تشریح کا سندید میں مل الاطلاق ہے کی خاص فی رے ساتھ تخصیص نہیں ہے، اور بیرمدیث استدلال ہے ا قول ٹانی اور قول ٹالٹ کے لیے۔ انشآء الله تعالىٰ

اللصل الثالث

وذغيره اندوزي كانقصان

﴿ مديث بُهِ ١٤٤٥ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَابِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ مَنِ الْحَتَكَرَ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ مَنِ الْحَتَكَرَ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ طَعَامَهُمْ ضَرَبَهُ اللَّهُ بِالْجُدَامِ وَالْإِفْلَاسِ رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ وَالْبَيْهَةِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيْمَانَ وَرَذِيْنَ فِي كِتَابِهِ.

توجمه: حفرت عربن الخطاب في بيان فرمايا كدي في رسول التمالك سے ساآب الله فرمارے تے جس فنص في مسلمانوں مان كے غله كا احكاركيا تو الله تعالى اس پر جذام (كى يمارى) اورافلاس نازل كرديں كے۔ (ابن ماجة، يمكن ، ردين)

اس مدیث میں احتکار کو مخصوص فرمایا ہے "طعام" کے ساتھ، بیرصدیث (اوراس جیسی مخصیص کے اس مدیث (اوراس جیسی مخصیص کے استران اور معزات انکہ ثلاث کی دلیل ہے؛ لہذا جس روایت میں طعام کی

كلمات مديث كي تشريح

تد ذكوريس ماس كويمى دوسرى روايات كى وجهد مقيدكيا جائكا-

وعید شدید: احکار کرنے والوں پر سخت ترین مرض جذام مسلط ہوگا اور چل کدان کے اموال اور الی حرام تجارت می خمر و برکت ند ہوگا و "افلاس" مجی مسلط ہوگا ۔ فسادادرزوال آئے ویرکت ند ہوگا و "افلاس" مجی مسلط ہوگا ۔ فسادادرزوال آئے گاجودرحقیقت "فدائی مار"اورلعیت فداوندی ہے۔ (ماخود)

خلاصة كلام: انسان جب كسى بوے مرض بيل جتل موتا باتو (خاص كر بوے مالدار) علاج بريشر مال خرج كرتے بيل اور يہ كى ان كافلاس كاسب موتا باور ذكور مرض كى وجہ اوك فرت كرتے موئ اليے مريش سے دورد بنے بيں۔

﴿کیا اهتکار کے لیے کوئی مذہ ہے ؟﴾

﴿ مِدِيثُ مُهِرِهُ ٢٤٤٤ ﴾ وَعَنِ أَبِنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنِ احْتَكُرَ طَعَامًا ٱرْبَعِيْنَ يَرْمًا يُرِيْدُ بِهِ الْعَلَاءَ فَقَدْ بَرِئٌ مِنَ اللَّهِ وَبَرِئُ اللَّهُ مِنْهُ رَوَاهُ دَإِيْنٌ

توجهه: حضرت عبدالله بن عرف فقل كما كرسول الشنطائية في ارشادفر مايا: جس فخف في چاليس روزتك بعاؤ كم بوه جانے كے خيال بے غله كاركيا تووه الله تعالى (كى حفاظت) ہے برى ہوكيا اور الله تعالى اس سے برى ہو گئے۔ (رزين)

ال روایت مین احکار کی ایک مت الین جالیس بوم کو بیان فرمایا ہے، بیمت امراتفاقی می ہوسکتی کی تشریح کی کی تشریح کی کی ت

كلمات عديث كي تشرت

فالمرعوام کونقصان وخرر پیونچا تاہے۔ بعض حضرات نے مدت کا اعتبار کیا ہے بین چالیس ہوم اور بعض حضرات نے ازروئے قانون حکومت ،اورزا کدوالی صورت میں دومزا کا مستخل موگا۔اور گناہ ہونے کے لیے کلی مدت کی تخصیص نہیں ہے۔

والفلادُ: قيت كاكران بوتا من الله الخ: برموك كالشقائل عمد بكده ادامرالي ادراواى كالقيل كرسكا ادراحكاركمة والفلادُ: قيت كاكران بوتا من الله الخ: برموك كالشقائل ال عاراض موئة اب الشقائل كي حفاظت بحى فتم موكل ادرالشقائل كالم والفي في المرده مدود كوتورد منا يتجاوز كرنا يواكناه اورظم بع مقال الله تعالى "مَنْ يَتَعَدُّ حُدُودُ اللهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ وقال تعالى "أوفوا بعَهْدِى أوْفِ بِعَهْدِكُمْ"

خلاصة كلام: الروايت يم فل احكار ير كشديد عظيم و تهديد جسيم في الاحتكار " ي (انقيق) ﴿ مديث بُر ٧٤ ١٤٤ ﴾ وَعَنْ مَعَاذٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ بِنْسَ الْعَبْدُ الْمُحْتَكِرُ إِنْ ٱرْخَصَ اللَّهُ الْاَسْمَارَ حَزِنَ وَإِنْ ٱغْلَاهَا فَرِحَ رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيْمَانِ وَرَزِيْنٌ فِي كِتَابِهِ.

موجعه: صرت معاد في بيان فرمايا كديس في رسول الله ملك عدا آب فرمار بي تصاحكاركر في والا بنده بهت (على) براب (جس کی نصلیع بدید ہوتی ہے کہ) اگر اللہ تعالی ہماؤ ارزاں کر دیں تو رنجیدہ ہوتا ہے اور اگر ہماؤ تیز کردیں کے تو خوش ہوتا ہے۔(یکی ارزین)

کلمات حدیث کی تشریح اس دوایت میں احتکار کننده کی بدترین خصلت کوبیان فرمایا ہے کہ جب بازار میں اشیار کی قیمت کم ہو ا جاتی ہے تو اس پر گرانی ہوتی ہے اور وہ رنجیدہ ہوتا ہے؟ اس لیے کہ اپنے تصور کے مطابق نفع حاصل نہ

موكا ، اور جب بازارش كراني موتى بود بهت خوش موتا ب_

﴿ صِدِيثُ مِرِكَ ٢٤٤ ﴾ وَعَنْ أَبِي أَمَامَةً أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنِ الْحَكَرَ طَعَاماً

ٱڒؠؘۼؚؽنَ يَوْماً ثُمَّ تَصَدَّق بهِ لَمْ يَكُنْ لَهُ كَفَّارَةٌ رَوَاهُ رَزِيْنَ.

توجمه: حفرت الوامامة عروى م كه بيتك رسول الله علية في ارشادفر مايا: جس فض في حاليس روز تك احتكار كيا اور مراس كا مدقد كردياتوا المخض (ك كناواحكار) كے ليے كفاره ند بوكا _ (رزين)

الله تعالى واس كا (اب) مدقه كرنام كى پندنيس بادراه كار پرجو كناه موچكا ب مدقه كرنے سے كمات حدیث كى تشریح كا ب مدقه كرنے سے كمات حدیث كى تشریح كا ب مان كا كاره نه موكار درامس بيشد يدوميدا در عبيب

خلاصة كلام يب كراحكارتها يت فرموع ل عددالله (اسدى)

باب الافلاس والانظار

الافلاس باب افعال ے ب، اور مادہ فلس معنى بير اوراس كى جمع فلوس باور باب افعال كاير بمزه (الف) برائے سلب ہے؛ لہذا اللس وہ مخص جس سے یاس بینہ (مال ودولت) نہ مواور مفلس موجائے الیکن شرعاً مفلس مونے کا اطلاق اس پر موگا کہ قاضی نے اس کومفلس قرار دے دیا ہو و ایک مخص بہت مقروض ہو گیا اور نی الحال قرضہ کی ادائیگی کے لیے اس کے پاس مال دمتاع نہیں ہے، سب چوخم ہوگیا اور قاضی نے بھی (حالات کی تنیش اور تحقیق کرنے کے بعد) اس کے تن می تعمد بی کردی کے وہ مفلس ہے فی الوقت قرضدادا كرنے كى مالت ين نبيس ب؛ للذاجب تك مالت درست ند موكى اس وقت تك قرض خواه مطالبنيس كري عے اوراس كو مهلت دي كــقال الله تعالى "وَإِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ لَنَظِرَةً إِلَى مَيْسَرَةٍ" (بقرة: ص١٨٠)

الانظارُ جو نظو سے اخوذ ہے بمعنی تا خرکرنا مہلت دیتا، اور مہلت کی دوصور تیں ہوں گی، ازخودصا حب حق ایسر تک مہلت دے اور یا بیک قاضی کے محم پرمہلت دی جائے گی ؛ اس لیے کہ وہ مفلس قرار دیا حمیا ہے۔

الفصل الأول

﴿جوشخص مفلس قراردیاگیا؟ ﴾

﴿ وَمِدِيثُ مُمِرِ ١٤٤٨﴾ عَنْ آبِي هُرَيْرُةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّمَا رَجُلِ ٱلْمُلَسَ فَأَدْرُكَ رَجُلٌ مَا لَهُ بِعَيْنِهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ مِنْ غَيْرٍهِ مُتَّفَقٌ عَلَيِهِ. قوجعه: حضرت ابو ہریرہ نے لفل فرمایا که درمول النسائل نے ارشاد فرمایا: جو فنم مفلس ہو جائے اورایک فنص (قرض خواو) اپنے مال کو بعینہ (اس فنص مفلس مقروض کے پاس) موجود پائے تو بیفض اس کا زیاد ہ حقدار ہے دوسرے ۔۔ (ہماری وسلتے)

کلمات صدیث کی تشریح این بیان بیا که جب ایک فض مفلس موچکا ہا اوراس کے پاس کچی مال اور متاع ہے جوقر ضدی کا میں سے مال اور متاع ہے جوقر ضدی این سے میں ان کے حصول کی بقدر دے دیا جائے گا، اور ہاتی

كے ليےمہات دى جائے كى كمائر _

اورا گراس کے پاس ایک تخص کی کوئی تی رہیدہ موجود ہے تو اس صورت حال میں کیا تھم ہے؟ اس روایت میں بیار شاد ہے کہوہ مالک (عی) اس تی رکا زیادہ مستقی ہوگا ،اس مسئلہ میں اختلاف ہے۔

حعرات ائمہ ثلاث کے نزدیک ہر حالت میں وہی مالک ہوگا اس کوئل ہوگا، دیگر قرض خواو اس میں شریک نہ ہوں گے اور ان حضرات کا استدلال ای مدیث تمبر (۷۷۷۸) ہے ہے۔

هامنده: وه شي رخريد كرده بوء امانت بو فسب كرده بوركس بحي صورت يرآكي بوكي بورس كالمم بي ہے۔

احناف کا فرہب ہے کہ اگر فصب، امانت، عاریت کی صورت بیں اس کے پاس آئی ہوگی تی وہ حقد اردے گا، نیز اگر فرید کردہ تھی ؛ کین اس کا اس پر قبضہ نہ ہوا تھا تب بھی دہی حقد اربوجائے گا، دوسرے قرض خواہ اس بی شریک شہول کے، البت اگر ادھار خرید کردہ تھی بھت ہوں گا تھا اور دہ اس میں شریک شہول گے، البت اگر ادھار خرید کردہ تھی تبدید کردہ تھی تبدید کی تبدید کی الوقت بھی موجود ہے تو اس صورت میں دہ اکیلا حقد ارز بہوگا: بلک دیگر تمام شرکاء بھی اس میں شریک ہول کے اور بعد رحمص حصر سے گا! اس لیے کہ مفلس محقی اس میں رکا میں اس کی مقلس میں اس میں موجود ہے تو اب دیگر قرض خواہ کی طرح ہے ہی ہوگا، احتاف کا جانے پر خارج ہو جگی تھی اور اس براس کی قیمت (حمن) دین، (قرض) ہے تو اب دیگر قرض خواہ کی طرح ہے ہی ہوگا، احتاف کا استدلال حضرت علی اور حد ما بعینه "

اور فدکوره صدیت الى بريرة كاامرخموس بالين فصب، امانت اور عاريت و فيره كيماتيد جسين اس كى مليت ابت شده ندهو المحجواب: اور "مالله بعينه" في الواقع اى وقت بوسكا ب جب كه مليت اس كى ندبوه اوراس پرتمام المل علم كا ايماع ب كرمشرى بعد القين فريد كرده في وجي كاما لك بوتا به اور بائع كى مليت سود عين بعد القين فريد كرده في وجي كاما لك بوتا به اور بائع كى مليت سود عن مال قد كان له"

خلامة كلام بيب كرمديث فدكوره ش اضافت برائر ملك ب اوربيطك اضافيد حقق ب (مالد) اورشرعا جب كليت تهديل موكن تواب شرعاً وحكما تهديل عن بحل موجاتا ب الهذامي كاصورت شل وه ابينم بالع كى ملك ندرب كى ؛ بلكروه تو مشترى كى ملك ب اوروه اس كا ما لك بهاله اوه اس كا ما لك بهاله اوه اس كا ما لك بهاله او استال كا ما لك بهاله المساول المستال كا ما لك بهاله المستال كا حقد اد شاوكا - (انساق وغيره مع الشرح ،اسعدى)

ضروری وضاحت: حضرت العلام کشمیری فرات بین که (اگراس کو بیج کی صورت برجمول کیا جائے آو) از روئے دیانت اور مروت کا منتفی بیہے کہ وہ مال جب بعنہ ہے تواس کو وے دیا جائے۔ (اخوذ از ایناح)

﴿مفلس کی رعایت کرنا﴾

﴿ مَدَيَثُ مُرِ ٤٤٤ ﴾ وَعَنْ آبِيْ مَعِيْدٍ قَالَ: أُمِيهُ وَجُلٌ فِيْ عَهْدِ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فِيْ لِمَادٍ ابْنَا عَهَا فَكُثُورَ دَيْنُهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ تَصَلَّقُواْ عَلَيْهِ فَتَصَدُّقُ النَّاسُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَتَلُغُ ذَلِكَ رَفَاءَ دَيْنِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَيْهُ لِغُرَمَاتِهِ خُلُواْ مَا وَجَلْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ إِلَّا ذَلِكَ رَوَاهُ مُسْلِمٌ. قوجهد: صرت ایوسید نے بیان فربایا نبی اکر مقالت کے عہد میں ایک فنس کوفرید کردہ مجلوں میں نقصان اٹھا تا پڑگیا جس کی وجہ سے وہ زیادہ مقروض ہوگیا تو رسول الشہ کافٹے نے فربایا: اس پرصدقہ کروا چنا نچالوگوں نے اس پرصدقہ کیا، (صدقہ کی آمد) اس کے قرضہ کے پورا ہونے کی مقدار کمل نہیں ہوئی؛ للڈا آپ تالا نے زاس کے قرض خوا ہوں سے فربایا کہ جس قدر موجود ہے اس کوتو وصول کرلواور اس کے علاوہ پھر مجی تبہارے لیے نیس (بینی باتی معاف کردد)۔ (مسلم)

اصیب: آئی است صدیث کی تشریکی اصیب: آئی آسانی (آفیت نا کہانی) لائن آگی؛ لینی باغ کے پیل کی فریداری کی ہوئی تھی کہ کلمات صدیث کی تشریکی اور نتوں پر سے ''تو ژا' کانے سے پہلے ہی وہ پھل ہلاک ہو گئے جس کی وجہ سے وہ فریدار مقروش ہوگیا، آپ تائی نے حضرات سحا پر وصد تہ کرنے کا تھم فر مایا ۔ فلم یہ لمغ: جس قدر قرضہ واتھا، وہ اس کی بعقدر نہ وسکا ۔ غومانه: غریم کی جمع ، قرض خواہ ۔ خدوا المنے: یعنی جس قدر (فی الوقت) جمع ہو چکا ہے تم اس کو وصول کرلو، و ٹیس لکم المنے، چوں کہ بیتھ مفلس ہوچکا ہے تاس کے علاوہ اور پکھنہ ہو سکے گا ہلامہلت ۔

فا ہر ہے کہ آپ سے پہر ابلار ضامندی صاحب حق کے کسی کاحق باطل قرار نہیں دے سکتے: چنانچہ دوسرے واقعات سے سیاسر طابت ہے کہ صاحب حق نے آپ تھانے کی سفارش پر بھی اپنے حق کو جب ساقط نہیں کیا تھا تو آپ تھانے نے ان پر جبر نہیں کیا تھا جیسا کہ حضرت بیابڑ (کے والد کے) قصہ میں ہوا ہے۔

ومعاف کرنے کا بڑا اجر ھے ﴾

﴿ مديث مُبر ١٤٨٠ ﴾ وَعَنْ آبِي هُرَّيْرَةَ آنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: كَانَ رَجُلَّ يُدَاينُ النَّاسَ فَكَانَ يَقُوْلُ لِفَعَاهُ إِذَا آتَيْتَ مُعْسِراً قَجَاوَزْ عَنْهُ لَعَلَّ اللهَ آنُ يُتَجَاوِزَ عَنَّا قَالَ: فَلَقِى اللهُ فَتَجَاوَزَ عَنْهُ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

توجعه: حفرت ابو ہریر قصر وی ہے کہ نی اکر مقالت نے فرمایا: ایک فض لوگوں کو قرضد دیا کرتا تھا اور وہ اپنے غلام سے بہ کہتا تھا کہ جب کرتم تھا در میں تکدست کے پاس (وصول قرض کے لیے) کہنچوتو اس سے درگز رکر و، امید ہے کہ اللہ تعالی ہم سے (بھی) درگز رفر مادیں کے آپ تا تھا تھے نے فرمایا کہ اللہ تعالی ہے اس نے ملاقات کی؛ چنا نچہ اللہ تعالی نے اس کومعاف فرمادیا۔ (بخاری وسلم)

ربی برسر المساس، المناس، المن

معسواً: تک دست، غریب، نادار به جاوز: درگزر کرناتمام قرضه یا بعض حصد . لعل الله ، امید به کدانشاتی بم سے (بھی) درگزر کامعالم فرما کیں ، ہمارے گناہول کومعاف فرمادی ؛ چنانچ الله تعالی نے منفرت فرمادی ، درگزر (بی) کا معالمہ فرمایا۔اس میں درگزر کرنے کی بوی فعنیات آئی ہے۔

﴿ مَدَى ثُمِرِ ١٤٨١﴾ وَعَنْ آبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَرَّهَ آنْ يُنَجِّيهُ اللَّهُ مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلْيُنَفِّسُ عَنْ مُعْسِرِ أَو يَضَعْ عَنْهُ رَوّاهُ مُسْلِمٌ.

قوجهه: صرّت الوقّادة في نقل كيا كرسول التُعلَقَ في مايا: جم فض كو (بيه بات) پند به كدالله تعالى اس كو قيامت كون مشكلات بي نيات و يا قواس كوچا به كروه نظارست كوراحت دب (ليني مهولت دب) يااس كي د مد مي كم كردب (مسلم) من سره في بحرب كي من سره في بحرب كو پند مور بي آب تان في مورت ترغيب متوج فريايا به محرب كي ملات حديث كي تشري ﴿ صِرِيثُ مُمِرُ٢٤٨٢﴾ وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ يَقُولُ مَنْ اَلْظَرَ مُعْسِراً أَوْ وَضَعَ عَنْهُ انْجَاهُ اللَّهُ مِنْ كُرَب يَوْمِ الْقِيَامَةِ رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

قوجهد: حضرت ابوالآوہ نے نقل کیا کہ میں نے رسول الشاقالة سے سنا آپ آلا فرمار بے تے جس مخص نے تقدست كومهلت دى يا اس سے كى كردى تو الله تعالى اس كو بروز قیامت نجات دیں مے (مسلم)

كلمات مديث كي تشريح انظو ، مهلت دينا، تا خركرنا_

﴿مقروض كومهلت دينا ﴾

﴿ صِدِيثُ مُبِرُ ١٤٨٣﴾ عَنْ آبِي الْيَسَوِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ يَقُولُ مَنْ آنْطَرَ مُعْسِراً أَوْ وَصَعَ لَهَنَهُ آظَلُهُ اللّهُ فِي إِظِلّهِ رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

قو جعه: حضرت الويسرٌ فرماتے ہيں كہ بيل نے نبي اكرم آلي ہے سنا آپ آلي فرمارے تے جس فض نے كمي عكدست كومهلت دى يا اس سے كم كرديا تو اللہ تعالی اس كو (بروز قيامت) اپنے (عرش كے) سابية بس سابية طاكر يں مجے۔ (مسلم)

کلمات صدیت کی تشری اطله بینی اس کوروز قیامت کی گری ہے محفوظیت عطافر مادیں مے جس کی (ایک) صورت یہ ہوسکتی مسلم ا کلمات صدیت کی تشریح کے کرش کا سامیہ عطافر مادیں گے۔

هائدہ: دوسری احادیث میں اس کے اور بھی نضائل بیان ہوئے ہیں جس قدر مہلت دی جائے گی وہ صدقہ کے تم میں ہوگا کو یا کہ ہرروز اس قدر صدقہ کیا جار ہا ہے اور اس پر تو اب حاصل ہور ہاہے دراصل بیر سلمان بھائی کے ساتھ سن سلوک پر اجرو تو اب ہے البتہ بیہ بھی ضروری ہے کہ اخلاص نیت کے ساتھ اور حصول تو اب کی نیت کے بہاتھ بیہ معاملہ ہونا ضروری ہے۔ (اسودی)

﴿قرض کی ادائیگی ہمسن و خوبی هو﴾

﴿ صديث بُهِ ١٤٨٨ ﴾ وَعَنُ أَبِى دَافِع قَالَ: اسْتَسْلَفَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ بَكُراً فَجَاءَ ثُهُ إِبِلّ مِنَ الصَّدَقَةِ قَالَ أَبُوْ رَافِع: فَامَرَنِى أَنْ ٱلْفِينَ الرَّجُلَ بَكُرَهُ فَقُلْتُ لَا أَجِدُ إِلَّا جَمَلًا خِيَارًا رَبَا عِياً فَقَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ آغْطِهِ إِيّاهُ فَإِنْ خَيْرَ النّاسِ آخْسَنُهُمْ قَضَاءً رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

خوجهد: حضرت الدوافع نے بیان کیا کررسول اللہ اللہ نے ایک جوان اونٹ قرض لیا، پھرآپ سے کے پاس مدقد کے اونٹ آگے، پس آپ اللہ نے جھ کو تھم دیا کہ میں اس فخص کو جوان اونٹ دے دوں، میں نے عرض کیا میں پاتانہیں ہول گراس سے بہتر چارسالہ اونٹ، آپ اللہ نے نے ارشاد فر مایا: وہی اس کودے دو؛ کیول کہ لوگول میں بہترین فخض دہ ہے جوادا کرنے میں سب سے اچھا ہو۔ (سمنم) جَمَلًا رَبَاعِیاً یعنی دہ اونٹ جس کے تربا گی دانت فا ہر ہو سے ہول اوردہ ساتویں سال میں داخل ہوجائے۔

کلمات حدیث کی تشریک کی در اخلاق ہے کہ اوا کی میں احسن صورت اختیار کی جائے اور حسنِ اوا کیگی کی ایک صورت میہ ہے کلمات حدیث کی تشریک کے تقدرے زائد (مجمی) دیا جائے۔ صاحب تق نے جب آپ کے ساتھ بھلائی ،احسان اور مہولت کا

معالمہ کیا ہے تولازم ہے کہ بوقت اوا لیکی حسن اخلاق ہی کے ساتھ ہواڑ الی نہو۔

سوال: كياحيوان كاقرض درست يع؟

جواب: ال صدیث معلوم ہوا کہ بیمبال ہے؛ چنانی جماہیرعال کے زدیک بیمبال ہے اورامام اعظم کے زدیک بیصدیث منسوخ ہے مشکوۃ صرر ۲۳۵، بردوایت گذریکی ہے آپ ملک کا ادرادہ " لکی عن بنع المحیوان بالحیوان فیسیفت النع"بیدوایت شخ

کے لیے واضح دلیل ہے لیڈابیدا اقدال از نبی کا ہے۔

منده: اگر بلاشرط زائد دیاجائے مہاج ہے جب کہ صاحب حق کو یکلیاتہ کمان نہ ہوکہ زائد ملے گا ، وہ اس سے بالکلیہ خالی الذیمن ہو۔

﴿نقاضا کرتے ہوئے سفت گفتگو کرنا﴾

﴿ مديث بُهِ ١٤٨٥﴾ وَعَنُ آبِي هُوَيْرَةَ آنَ رَجُلًا تَقَاضَى رَسُولَ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَآغَلَطَ لَهُ فَهَمُّ أَصْحَابُهُ فَقَالَ دَعُوهُ قَالُوا لَا نَجِدُ إِلّا اَفْصَلَ مِنْ صِنَّهُ قَالَ اَشْتُرُوا لَهُ يَعِيْراً فَآغُطُوهُ إِيَّاهُ قَالُوا لَا نَجِدُ إِلَّا اَفْصَلَ مِنْ صِنَّهُ قَالَ اشْتُرُوهُ قَاعُطُوهُ إِيَّاهُ فَإِنَّ خَيْرَكُمْ اَحْسَنُكُمْ قَضَآءً. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجهد: صرت الو بریرہ ہے مردی ہے کہ ایک فیم نے رسول الشقاف پر (قرضہ کا) تفاضہ کیا اور آپ تھا کہ کوخت ترین بات کی ، تو

ایک کامی ہے نے ارادہ کیا (جواب دینے یا سرادینے کا) آپ تھا نے فرمایا: تم لوگ اسکو پھوڑ دو! کیوں کہ حقد اور کے لیے بات

کینے کامی ہے اور تم اس کے لیے ایک اورٹ فرید لواوروہ اس کودے دو! اسحاب نے عرض کیا کہ بم نہیں پاتے گراس کے اورٹ کی عمرے
زیادہ مرکا، آپ تھا نے فرمایا اس کو فرید لواوروہ کی اس کہ تم لوگوں میں بہتر وہ فض ہے جوتم میں بہتر ہوادا کرنے میں۔
زیادہ مرکا، آپ تھا نے فرمایا اس کو خراب کی اس کا معد کیا؛ لیمی کو سے میں کہتر ہوادا کرنے میں۔

کیمات حدیث کی تشریح کی تشریح کی تصدیما؛ لیمی کی میں بہتر وہ کو کا میں کا تصدیما؛ لیمی کی میں بہتر ہوئے کا قصد کیا؛ لیمی کی میں بہتر کی تھا کہ کیا میں بہتر کی تعدیما کی تعدیما کرتے ہوئے وہ قدرے خت کی میں میں بہتر ہوئے کا میں میں بہتر ہوئے کی کہتر میں بہتر ہوئے کہ کہتر میں بہتر ہوئے کہ میں بہتر ہوئے کی تعدیما کی تعدیما کی تعدیما کرتے ہوئے وہ قدرے خت کہ میں میں میں بہتر ہوئے کہ کہتر میں بہتر میں بہتر ہوئے کہ کہتر میں بہتر ہوئے کہ کہتر میں بہتر ہوئے کہتر ہوئے کہتر ہوئے کہتر ہوئے کہ کہتر میں بہتر ہوئے کہتر ہوئے کہ کہتر ہوئے کو کرنے کہتر ہوئے کہتر ہوئے

کام کرسکا ہے،آپ اللہ نے اسور حند سے اس امر کو بھی بیان فرما دیا ہے کہ اگر صاحب تن کوشکایت ہور بی ہے تو وہ اس پر بچھ اظہار تاراف می کرسکا ہے اور بظاہر ایسامعلوم ہوتا ہے کہ وہ کافر، یبودی (اور یا) منافق ہوسکا ہے۔

عدد: ببرمال دوسری روایات سے بیمی باقت ہے کہ آپنا ہے نے الل اسلام کو ہدایت قرمائی ہے کہ تقاضہ کرنے میں بھی احسن طریقہ اختیار کیا جائے۔

خِترضه میں ہلاوجه تاخیر کرنا ﴾

﴿ مديث مُبر ١٤٨٧﴾ وَعَنْدُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَطْلُ الْعَنِيِّ ظُلْمٌ فَإِذَا أَتْبِعَ آحَدُكُمْ عَلَى مَلِيَّ فَلْيَتْنِعُ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

کلات حدیث کاتشرت مورد مونا مال کا ظلم مناحل کردنی اور برظم حرام ہے؛ ابذا ہوتے ہوئے اوالیکی میں (بلاعذر)

تاخیر کرناحرام ہے البت اگروہ مالدارہے الیکن فی الوقت اوائیگی پرقدرت ندہودہ اس میں داخل نیس ہے، بہر حال اگروہ بلادجہ ٹال مٹول کرتا ہے واب وہ زی کاستحق نہیں ؛ بلک اُس کے ساتھ بخت گیری کرنا بھی مباح ہے۔

رب) البعَ، بعین مجول العن تالع بنایا جائے ،حوالہ کیا جائے۔ ملی بمعنی غنی، عبارت کا مطلب بیہوا کہ اگر کسی دوسرے مخص پر جوقر ضدادا کرنے پر قادر ہو، وصول قرضہ کے لیے حوالہ کیا جائے (اور وہ دوسرافخص اس کومنظور بھی کرلے) تو صاحب تن کو بیہ حوالہ قول کر لینا بیا ہے۔

فلنده: مقروض الى آسانى اورسوات ياكى مسلحت كى واجد عقر ضدوصول كرف كے ليے دوسرى جانب محل كرد عاقوال كوقبول كر

لینا چاہیے البنتہ اس میں ضروری ہے کہ صاحب حق کواس پر کلی اطمینان ہو کہ میراحق ضائع نہ ہوگا؛ بلکہ یفین ہو کہ وصول ہن جائے گا۔ (ج) ہیامر برائے اباحت (اورمند وہا) ہے اور بعض علاءِ فلا ہرنے اس کو برائے وجوب بھی کہا ہے۔

وسفارش كرني يرقرضه معاف كرناي

﴿ مديث بَهِ مِكَ مَهُ وَعَنْ كَعْبِ بَنِ مَالِكِ آلَهُ تَقَاضَىٰ ابْنَ آبِى حَدْرَدٍ دَيْناً لَهُ عَلَيْهِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَلَيْهِ وَسَلَمَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَنَى سَمِعَهَا رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ حَتَى سَمِعَهَا رَسُولُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ حَتَى كَشَفَ سَجْفَ حُجْرَتِهِ وَنَادَىٰ وَهُوَ فِي بَيْتِهِ فَخَرَجَ إِلَيْهِمَا رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ حَتَى كَشَفَ سَجْفَ حُجْرَتِهِ وَنَادَىٰ وَهُو فِي بَيْتِهِ فَخَرَجَ إِلَيْهِمَا رَسُولُ اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَمَ حَتَى كَشَفَ سَجْفَ حُجْرَتِهِ وَنَادَىٰ كَعْبَ بَنْ مَالِكِ قَالَ يَا كَعْبُ قَالَ كَعْبَ عَلَيْهِ وَاللهِ إِنَّا وَسُولُ اللهِ إِ فَاشَارَ بِيَدِهِ أَنْ ضَعِ الشَّطْرَ مِنْ دَيْنِكَ قَالَ كَعْبُ قَالُ كَعْبُ قَالَ كَعْبُ اللهِ إِنْ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ إِنْ اللهِ الل

قو جعه: حضرت کعب بن ما لک سے مروی ہے کہ انہوں نے ابن ابی حدر در پر رسول اللہ علی کے عہد جس اپ قرضہ کا فقاضہ کیا مجد

کا ندر، پس دونوں کی آوازیں تیز ہوگئیں یہاں تک کہ رسول اللہ علیہ نے ان آوازوں کون لیا حالا نکہ آپ تھی اپنے مکان جس حقور

رسول اللہ تھی ہوئی کی دوائی یا اور نوں کی طرف (متوجہ ہوئے اور) اپنے ججر ہوئے ہر نیف کا پر دوائی یا اور کعب بن ما لک کوآواز دی،

فر مایا: یا کعب! انہوں نے عرض کیا جا ضرفدمت ہوں یا رسول اللہ! آپ عقی ہے دائی دسیعہ مبارک سے اشارہ فر مایا کہ اپنے قرضہ کے

فر مایا: یا کعب! انہوں نے عرض کیا یا رسول اللہ! آپ عقی ہوا کہ آپ مقروض اور مدیون مجدیں ہوا اور اسکودے (بخاری سلم)

مفالہ کرنا درست ہے امام بخاری نے بھی اس واقعہ سے اس امرکو ٹا بت کرتے ہوئی این فرمایا ہے۔

کلما ت حدید کی تشریک

(ب) آبِ الله في ان دونول كردميان تنازع كوفتم كرنے كاغرض سے يہ تجويز فرمائى كرصاحب تق اپنانسف تق ساقط كر دے،معاف كردے۔

دراصل آپ الله کی بہتجویز تھی اور سفارش تھی ، تھم شری سے طور پرنہتی ، صاحب تن نے جب اس کومنظور کرایا تو آپ الله نے دوسرے فریق سے فرمایا " فخم فافضه " (اب) کور اجوء اورادا میگی کر۔

عائدہ: آپ اللہ فی مقروض محائی کے مالات اور کلام و گفتگو سے سائدازہ لگاتے ہوئے بیسفارش کی ہوگی، سَبعف: یعنی جو پردہ مکان کے دروازہ پر رہتا ہے بعض مرجبوہ دواجزار (والا) پردہ ہوتا ہے۔

چمقروض کی نماز جنازہ ک

﴿ صَالَى عَلَيْهِ وَسَلَمَةَ بُنِ الْآكُوعَ قَالَ كُنّا جُلُوسًاعِنْدُ النّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِذَا أَلِيَ بِجَنَازَةٍ فَقَالُوْ صَلِّ عَلَيْهِ وَسَلَمَ إِذَا أَلِي عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ إِذَا أَلِي بِجَنَازَةٍ فَقَالُوْ مَلْ عَلَيْهِ وَمَنَا وَاللّهُ عَلَيْهِ وَمَنَا وَاللّهُ عَلَيْهِ وَمَنَا وَاللّهُ عَلَيْهِ وَمَنَا قَالُوا عَلَيْهِ وَمَنَا قَالُوا عَلَيْهِ وَمَنَا قَالُوا عَلَيْهِ وَمَا لَيْ عَلَيْهِ النّالِقَةِ فَقَالَ عَلَيْهِ وَمِن قَالُوا وَلاَ اللّهِ عَلَيْهِ وَمَاللّهُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهِ عَلَيْهِ وَمَا اللّهِ عَلَيْهِ وَمَالُمُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهِ عَلَيْهِ وَمَالُمُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهِ عَلَيْهِ وَمَا اللّهِ عَلَيْهِ وَمَالْمُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهِ عَلَيْهِ وَمَا اللّهِ عَلَيْهِ وَمَا اللّهِ عَلَيْهِ وَمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهِ عَلَيْهِ وَمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا مُن عَلَيْهِ وَمَالًا عَلَيْهِ وَمَا اللّهِ وَعَلّمُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهِ وَمَالَمُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَمَالُمُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَمَالْمُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا لَمُ عَلَيْهِ وَمَا لَا اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا اللّهُ عَلَيْهُ وَمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا لَا اللّهِ اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا لَاللّهُ عَلَيْهِ وَمَا لَمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا لَمُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا لَمُ الللّهُ عَلَيْهِ وَمَا لَهُ اللّهُ عَلَيْهُ وَمُ اللّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ وَمَا لَمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا لَمُ اللّهُ عَلَيْهُ وَمَا لَمُ اللّهُ عَلْمُ اللّهُ عَلَيْهُ الللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَمَا لَمُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَمُعَلّمُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَمُعَلّمُ عَلَيْهُ وَالْمُعَلّمُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ا

موجمہ: حضرت سلم بن اکو ی نے بیان قرمایا کہم اوگ نی اکرم اللہ کے پاس بیٹے ہوئے سے کرنی الوقت بی ایک جنازہ الایا گیا، محابہ نے عرض کیا کہ جنازہ کی نماز پڑھاد بہتے ، اُس آپ ملک نے دریا نت فرمایا کیا اس پرقرضہ ہے؟ صحابہ نے عرض کیا نہیں ! تو آپ ناس کی نماز جنازه پڑھادی، گردومرا بنازه الایا گیا،آپ آگئ نے دریا دن فرمایا کیا اس پر قرضہ ہے؟ سحابہ نے عرض کیا ہاں!آپ آپ آگئ نے دریافت فرمایا کو گئ گھوڑی ہے (جس سے کہ قرضہ ادا ہوجائے) سحابہ نے عرض کیا تجن دیار چھوڑے ہیں،آپ آپ آگئ نے دریا فت فرمایا کیا اس پر قرضہ ہے؟ سحابہ نے عرض کیا تجن دیار،آپ آپ آگئ نے دریا فت فرمایا کیا اس پر قرضہ ہے؟ سحابہ نے عرض کیا تجن دیار،آپ آپ آگئ نے دریا فت فرمایا کم لوگ (بی) اپنے ساتھی کی نماز پڑھاو، محرت ابوق دریا فت فرمایا کم لوگ (بی) اپنے ساتھی کی نماز پڑھاو، محرت ابوق دریا فت فرمایا کم لوگ (بی) اپنے ساتھی کی نماز پڑھاو، محرت ابوق دریا فرضہ میرے ذمہ ہے، کی آپ آپ آگئ نے ان کی نماز جنازه پڑھا دیں اور ان کا قرضہ میرے ذمہ ہے، کی آپ آپ آگئ نے ان کی نماز جنازه پڑھا کی اور ان کا قرضہ میرے ذمہ ہے، کی آپ آپ آگئ نے ان کی نماز جنازه پڑھائی ۔ (بخاری)

سربسارہ پر حان۔ و بھارن) (الف) مدیث پاک میں تین وافعات کا تذکرہ ہے ، ایک ہی وقت میں کے بعد دیگرے ان کا تذکرہ ہے ، ایک ہی وقت میں کے بعد دیگرے ان کا مات حدیث کی تشریح کی تشریح کی تشریح کی تشریح جنازوں کی آ مرموئی ہویا وقت اور ایام کے فاصلہ کے ساتھ مراوی نے ان کوایک ساتھ فقل کردیا ہے۔

(ب) مقصد بیان یہ ہے کہ آ بنات کی اصل غرض یہ (معلوم ہوتی) ہے کہ مقروض مرنے ہے بل ادائیگی قرض کی فکر کرے اور حتی الا مکان قرض ادا ہو سکے ،اس لیے آپ آلگ نماز پڑھانے ہے انکار فر ہائے جس سے کہ دوسرے ایل اسلام کے لیے یہ عبداور عبرت ہو اور کوئی اس میں بے فکری اور خفلت نہ کرے اور آپ آلگ کا نماز جناز ہ بذات بخود نہ پڑھا نا پر در حقیقت خاص ہے آپ آلگ ہی کے ساتھ۔ (ج) اور یہ مجی احتمال ہے کہ آپ آلگ اسحاب کومتو جہ فر ماتے کہ اس کے قرضہ کی ادائی کی کافور اُنظام کیا جائے۔

(د) اس روایت سے خلوم ہوا کہ زندہ فض میت کے قرض کا گفیل اور ضامن ہوسکتا ہے اور میت (اب) بری ہو جائے گا اور مطالب کفیل وضامن پر ہوگا، اور بیصورت تبرعاً ہے اور بیصورت امام شافعیؒ کے نزدیک تو ورست ہوگی، البتہ امام اعظمؒ کے نزدیک میت مفلس کی جانب سے بیکفالت اور صفانت ورست نہ ہوگی۔

﴿ادا نیکی قرض کی نیت﴾

﴿ مِدِيثُ مُبِر ١٤٨٩﴾ وَعَنْ آبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ آخَذَ آمُوالَ النَّاسِ يُويْلُدُ اَدَاءَ هَا آدًى اللَّهُ عَنْهُ وَمَنْ آخَذَ يُويْدُ إِثْلَافَهَا أَتْلَفَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

قو جعه: حضرت ابو ہربرہ نی آگرم ملک کا ارشاد قل کرتے ہیں آپ اللہ فرمایا: جس فض فروکوں کے اموال (بطور قرض) لیے ہوں کہ وہ ان کی اوا یکی کا ارادہ کرتا ہوتو اللہ تعالیاس کی طرف سے اوا کردیں گے اورجس فض نے ان اموال قرض کو ضائع کرنے کا قصد کیا تو اللہ تعالیاس کوضائع فرمادےگا۔ (یعنی اوا یکی میں اس کی اعانت نہیں فرمائےگا)۔ (بخاری)

﴿حقوق العباد كا حكم﴾

﴿ صَمَتُ بُهُ ١٤٩﴾ وَعَنْ آبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللَّهِ اَرَآئِتَ اِنْ قُتِلْتُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ صَابِراً مُحْتَسِباً مُقْبِلاً غَيْرَ مُذْبِرٍ يُكَفِّرُ اللّهُ عَنَى حَطَايَاىَ فَقَالَ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نَعَمْ: قَلْمًا آذْبَرَنَادَاهُ فَقَالَ: نَعَمُ الِلَّ الدَّيْنَ كَذَلِكَ قَالَ جِهْرِيلُ : رَوَاهُ مُسْلِمٌ. قو جهه و مطلب: حغرت الوقادة في لقل كما كه ايك فض في عرض كما يارسول الله! آپ آل بي الله بحد و مطلب حضرت الوقادة في اكر بن الله كرداسته من بحالت صبر، بتيت ثو اب مقابله كه ليم آكم بزعته موئ ندكه يتهي شخته موئ تل كرديا جاؤل تو الله تعالى ميرى خطاؤل كا كفاره بنا دي كراس شهادت كو)؟ آپ آلي قائمة في ارشاد فرمايا: جي بان انجر جب وه فض واپس مواتو آپ آلي في في اس كوآ واز دى اور پحر فرمايا: حي بان! مرقر في (اور) حضرت جرئيل في اي طرح فرمايا به رسلم)

کلمات حدیث کی تشریح کفارہ ہوں مے اور بندوں کے جس کسی پرحقوق ہیں، وہ حق مالی ہویا حق غیر مالی ہو، جب تک

صاحب ثن اپناحق معاف ندكر في الى كادا يكى ند بوداس وتت تك ذمه قائم باوران حقوق ين دين الين قرض ي به به ماحب و ه و مديث فم را ۱۲۵) و وَعَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِ و أَنْ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ: يُفْفَرُ لِلسَّهِيْدِ كُلُّ ذَنْبِ إِلَّا الدَّيْنَ. رَوَاهُ مُسِّلِمٌ.

قو جمه: حفرت عبدالله بن عرق عمروى ب كدرسول الله الله في في مايا : شهيد كتمام كناه معاف كردية جاكي مع كرقر ضهاس كذمه باتى رب كا_(مسلم)

کل دنب: تمام گناه، برگناه، بظابراس بس کبائرداخل بی، ببرحال بیشهادت کی برکت ہوگی کداگر کلمات حدیث کی تشریح کوئی کبیره گناه بعی موکا ان شار الله وه بھی معاف ہو جائے گا، الله تعالی بندول پر بہت زائد

مريان إن، فيه دليل على ان حقوق الله تعالىٰ علىٰ المساهلة. (از تعليق)

﴿ مدينُ بُهِ 12 مَنْ آيِي هُوَيْرَةَ قَالَ: كَأَنْ رَسُوْلُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ يُوْتِي بِالرَّجُلِ الْمُتَوَقَّى عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ يُوْتِي بِالرَّجُلِ الْمُتَوَقِّى عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ الْمُوْمِنِيْنَ مِنْ الْمُوْمِنِيْنَ مِنْ الْفُومِنِيْنَ مِنْ الْمُومِنِيْنَ مِنْ الْمُؤْمِنِيْنَ مَالًا فَهُو لِوَرَقِيّهِ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ .

قوجهد: حضرت ابو ہر برہ ہے۔ حمروی ہے کہ انہوں نے بیان کیا کہ رسول الشفاف کی خدمت میں اس محض کا جنازہ لا یا جاتا کہ جس بر قر ضہ ہوتا تو آپ آگئے دریافت فرماتے کیا اس محض نے اپنے قرضہ کی ادائی کے لیے پھر چھوڑا ہے؟ ہیں اگر بیان کیا جاتا کہ اس محف نے قرضہ کی ادائی کے لیے پھر چھوڑا ہے جس بھر تو ایک کیا ترخوہ بھر جس وقت اللہ تعالی نے فتو حات کھول دیں تو آپ تھا تھ (برائے خطبہ) قیام فرما ہوئے اور ادر شادفر مایا: میں اللہ ایمان کے لیے ان کے نفوی سے زیادہ جن رکھتا ہول، ہیں اہل ایمان کے لیے ان کے نفوی سے زیادہ جن رکھتا ہول، ہیں اہل ایمان میں سے جو محف وفات یا جائے اور اس نے قرضہ (اپنے ذمہہ) چھوڑ ابو (اور اس کے نفوی سے باس مال نہو) تو اس کے در ثار کے لیے ہے۔ (بغاری مسلم) کی کہنا تھوڑا ہووہ اس کے در ثار کے لیے ہے۔ (بغاری مسلم) کی کہنا تھوڑا ہووہ اس کے در ثار کے لیے ہے۔ (بغاری مسلم) کی کہنا تھوں سے دینے کی تشریخ کی حدیث کی تشریخ کی حدیث بھر تھوں کے در شاری کی کہنا تھوں اس کے در ثار کے لیے ہے۔ (بغاری مسلم) کی کہنا تھوں سے دینے کی تشریخ کی حدیث بھر تھوں کی تعقیل ہو چکل ہے۔

ری و سی اول اس کریم میں ہے"اللّبِی اَوْلَیٰ بِالْمُوْمِنِینَ مِنْ اَنْفُسِهِم" اور کی مضمون آپ آگ کے اس اور اس می بلاشبہ آپ گان کوا بی امت پری شفقت ہے کہ آپ آگ اہل ایمان پران کی جانوں سے زیادہ حق رکھتے ہیں۔

النصل الثاني

ومفلس کے لیے آپ کاحکم ﴾

﴿ مديث تُبِرَ ١٤ ١٤ ﴾ عَنْ أَبِي خَلْدَةَ الزُّرَقِي قَالَ: جِنْنَا أَبَا هُرَيْرَةَ فِي صَاحِبٍ لَنَا قَدْ أَفْلَسَ فَقَالَ طَلَا الَّذِي قَصَىٰ فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيْمَا رَجُلٍ مَاتَ أَوْ أَفْلَسَ فَصَاحِبُ الْمَتَاعِ أَحَقُّ مِمْتَاعِهِ إِذَا وَجَدَةً بِعَيْبِهِ رَوَاهُ الشَّافَعِيُّ وَابْنُ مَاجَةً،

قو جعه : حفزت الوظاده ذرتی ی بیان کیا کہ ہم حفرت ابو ہریرہ کی خدمت میں حاضر ہوئے اپنے ایک ساتھی کے سلسلہ میں کہ وہ مغلس ہو میا تھا، پس حضرت ابو ہریرہ نے فر مایا (میں جوتم ہے بیان کررہا ہوں) بیدہ امر ہے کہ جس کو (اس طرح کے) معالمہ میں رسول الشہر نے فیصلہ فرمایا ، جوشف مرجائے یا خریب ومفلس ہوجائے تو صاحب متاع زیادہ حقدار ہے اپنے سامان کو لینے کا اگروہ اپنا مال بعینہ (اس مقروض کے پاس) موجود پائے۔ (شانعی، ابن ماجہ)

كلمات حديث كي تشريح اس روايت من جومنمون بوه حديث نبر (١٧٧٨) كے تحت كررچكا ب-

هائده: روای کابیان ہے کہ وہ اپنے ایک ساتھی کے قصد کو لے کرحضرت انی ہریرہ کے پاس حاضر ہوئے کہ وہ مفلس ہو چکا تھا،حضرت ابو ہریرہ نے اس کے متعلق وہی فیصلہ سنایا جو روایت میں ہے کہ آپ ایک نے بھی ایسے قصد میں یہی فیصلہ فرمایا تھا۔قال الاشرف العنی فیصن هو فی مثل حالم من الافلاس (ارتعاق)

ومقروض میت معلق رهتا هے ﴾

﴿ صديت بُهِ ١٤٩٥ ﴾ وَعَنْ اَبْي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: نَفْسُ الْمُوْمِنِ مُعَلّقةٌ مِدِينِهِ حَتَّى يُقْضَىٰ عَنْهُ رَوَاهُ الشَّافَعِيُّ وَآخْمَدُ وَالتّرْمِذِي وَإِبْنُ مَاجَةَ وَالدَّادِمِيُّ.

ترجمه: حعرت ابو بريرة في الله السيالية في ما المرسول السيالية في ما المرسول السيال على المرسول السيال على كد و وه اس كي ذمه سيادا كيا جائد (شافق ، ترفيق ، ابن ماجة ، الداري)

وہ ن سے دردے اور میں اس کو پہو نچنا تھا، ایمان اور اعمال حسند کی وجہ سے اوائیگی قرضہ تک وہ روک دی جاتی ہے،

کلمات حدیث کی تشریح

پراس کو پہو نچنا تھا، ایمان اور اعمال حسند کی وجہ سے اوائیگی قرضہ تک وہ روک دی جاتی ہے،

ایک روایت میں "ماسور" ہے؛ لین صلحار کے ساتھ شامل ہونے سے وہ روک دیا گیا۔

﴿مقروض بروزقیامت کیاشکایت کریے گا؟﴾

﴿ ورين بُهِ اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَوْحَدَة يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ وَرُوِى آنَ مُعَادَا كَانَ يَدَ الْ فَاتَى عَرْمَاوُ هُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَالَةٌ كَانَ يَدَ الْ فَاتَى عَرْمَاوُ هُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَالَةٌ كُلَةً فِي دَيْنِهِ حَتَى قَامَ عُوْمَاوُ هُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَالَةٌ كُلةً فِي دَيْنِهِ حَتَى قَامَ مُعَادٌ بِغَيْرِ شَى مُرْسَلٌ طَلَا الْفُطُ الْمَصَابِئِحِ وَلَمْ آجِلْهُ فِي الْاصُولِ اللهِ فِي الْمُنتَقِى، وَعَنْ عَبْدِالرَّحْمَٰ بُنِ مَالِكِ قَالَ: كَانَ مُعَادُ بْنُ جَبَلِ شَابًا سَخِيًّا وَكَانَ لَا يُمْسِكُ شَيْتًا فَلَمْ يَوَلْ يَدَانُ حَتَى أَعْرَقَ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكُلَّهُ فِي اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَلَّهُ لِيكُلِّمَ عُرَمَاءً هُ فَلُو تَوَكُوا اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَلَّمَ لَي اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكُلَّمَةً لِيكُلِّمَ عُرَمَاءً هُ فَلُو تَوَكُوا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكُلَّمَ لِيكُلِّمَ عُرَمَاءً هُ فَلُو تَوَكُوا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَا عَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَالَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَا وَلَاهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَا عُرَامَاءً هُ فَلَوْ تَوَكُوا اللهُ مَالَةُ لَا يُعْرَفُوا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَهُ وَسَلَّمَ فَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَالَةً لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا لَهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَالَةً وَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ وَاللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ وَاللْهُ عَلَيْهِ وَسُلُمَ اللهُ عَلَيْهِ وَلَمَا عُلَالِهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ الْمُعَالِمُ

حَتَّى قَامَ مُعَادَّ بِعَيْرٍ شَيَّ رَوَاهُ سَعِيدٌ فِي سُنَيهِ مُرْسَلًا.

من جعه: حضرت براء بن عازب في بيان كيا كرسول الدين في من مايا كمقروض فنس اي قرضه هل مقيد ب،وه اين بروردگار ے بروز قیامت تھائی کی شکایت کرے گا۔ (شرح سنہ) معتول ہے کہ معزت معالاً خوب قرضہ لیتے تھے (جس کی وجہ سے بہت ذائد مقروض ہو مے ،اور جب اوا میکی میں تا خیر ہو کی تو)ان کے قرض خواہ نی اکرم تا اللہ کے یاس ماضر ہوئے (اور انہوں نے اپنا مطالبہ بیش كيا)اورآب يك في صرت معالاً كمام مالكوان كقر ضد (كي ادائيكي) بين فروفت كرديايهال كك كدم عرت معالاً بغيركي جز ككر عدوة اور على مح معديث مرسل بي الفاظروايت معمائع كي بين، صاحب مكتوة قرمات بين كمن فال روايت كو امول (ليعن محارج ستدوغيره كتب) ين موجوديس باتى البنة المستقى ين ذكور ب-اور حضرت عبدالرحلن بن كعب بن ما لك في فالس كه حضرت معاق ايك نوجوان في آدى تے اور دوكوئي في رجوزت نبيس تھ (جوچز بھي بوتي اس كومىدقد كردية) برابر قرضد ليت رے (اوراس قدرمقروض موسة) يهال تك كذان كاتمام ال قرفيديس كمركما؛ چنا نيد معزب معاذ ني اكرم الله ك ك خدمت ي عاضر موسة ادرانبوں نے آپ سے کفتگوی تا کہ آپ تا گئے ان کے قرض خواہوں سے ہات چیت کریں، پس اگر قرض خواہ لوگ اپنا قرض کے لیے چوڑتے تو آپ ایک کی وجدے معرت معادی قرضہ چوڑتے، (جب ان قرض خواموں کا مطالبہ قائم رہا) تو آپ ایک نے ان کے تمام مال كوفروشت كريا (تاكرقر ضدادا بوجائے) يهال تك كر حضرت معاد بغير كى جز كے كوئے موت ، (اس ردايت كوسعيد بن منعور نے اپی سنن جس مرسل نقل کیاہے)۔

کلمات صدیث کی تشری اور قیامت شکایت کرے گا کہ وہ تنہارہ کیاہے یعنی سلحار کی جماعت ہے وہ علیمدہ ہوگا اور وحشت محسوس کرے گا۔ (از ماشیہ)

اس روایت میں اور دوسری روایت میں ہے کہ حضرت معاد (جب مقروض ہو کئے اور قرضہ کی ادامیکی میں تاخیر ہوگئی تو اس سلسلہ میں ان) كرض خوادة بالله كي خدمت من حاضر موئ (اورآب الله عصوص كياتو) آب الله في ان كرمامان كوفروخت كرديا-طبوودی وضاحت: ال واقعے بامرانابت ہوا کے سلطان اور قاضی کویر (بھی) حق ہے کے مفلس قر اردیے ہوئے کی ملکیت میں اكر كجومتاع بإواس كوفروشت كرديا جائے۔

عنده: اگرچديدوايت مرسل إدرعلار كي ايك جماعت كنزديك جديث مرسل محى جمت بواكرتى بــ فاخده: حضرت معاد کے یاس اوگ امانت رکھتے اور اجازت لے کر (بطور) قرض ضرورت مندول برخرے کردیا کرتے تھے!اس لیے والقروش موجات تنص

فاتی النبی یعن صفرت معاد آپ الله کی خدمت میں ماضر ہوئ: تا کہ آپ الله سفارش فرمادی ان کے قرض خواہوں سے کہ نی الوت وہ قرضوں کا مطالبہ نہ کریں یا معاف کردیں ، روایت سے معلوم ہوا کہ آپ تھا ہے ان لوگوں سے گفتگوفر مائی تمی مگر وہ لوگ ال يردضا مندندہوئے۔فلو تو كوا النع يعنى اگر معزت معالى كے قرض كومعاف كر سكتے تو ده لوگ آپ تا كى سفارش كى وجہ س معاف كردية ،ال واقعد معلوم مواكر مقارش كا قبول كرنالازم اورواجب نبيس ب اور معرات محابيا س حقيقت كوجائة عين ال العلف مع كردية ، بهرمال ال كربعد آب الكان ما مان فروخت كرف كر بعد قر ضاوا كرديا

وبلاعذر تاخير كرني والاه

﴿ مديث بُر ١٤ ١٤ ﴾ وَعَنِ الشَّرِيْدِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيُّ الْوَاجِدِ يُحِلُّ عِرْضَةً

وَعُقُوابَتَهُ قَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ يُحِلُّ عِرْضَهُ يُعَلُّطُ لَهُ وَعُقُوابَتَهُ يُحْبَسُ لَهُ رَوَاهُ أَبُو دَاؤِدَ وَالنَّسَائِيُّ.

قوجمه: حضرت شريد فقل كياكرسول الله الله في في ارشاد فر مايا: مالدار كى نال مؤل اس كى عزت كومبات كرد في باوراس كى مزا كور معزت عبدالله بن مبارك في في اس كي تغيير ميس) فر مايا: اس كى آبر وكو مباح كر دينے كا مطلب بيه به كه صاحب قرض اس كو سخت رست كه سكتا به داوراس كى مزاكم مباح ہونے كا مطلب بيه بكراس كوقيد كيا جاسكتا ہے۔ (ابوداؤ دُنسان)

الواجد، یعنی و فض جس کے پاس نفتر آم موجود ہاور قاور ہے قرضہ کی ادائیگی مراس کے باوجود کا اس کے باوجود کا اس کی تشریک التو صدیث کی تشریک تا خرکرتا، ٹال مثول کرتا ہے، مدیث نمبر: (۲۷۸۷) کے تحت تفصیل معلوم ہو چکی ہے۔

یعل النے، برین کومباح کردیتا ہے اور اگر ضرورت ہوتو''عقوبته" اس کومزادینا (اور سزادلانا) مباح ہوجائے گا،اورایک سزایہ ہے کہ اس کوقید کردیا جائے کہ بلاوجہ وہ تاخیر کرتا اور پریشان کرتا ہے۔ (ازتعلیق، مع الوضاحت)

موجهد: صرت ابرسعید خدری نے فرمایا کہ ہی اکرمہ کا کے پاس ایک جنازہ لایا گیا تا کہ اس پر نماز پڑھادیں، تو آپ کا نے دریافت فرمایا: کیا تمہارے (اس) ساتھی پر قرضہ ہے؟ صحابہ نے عرض کیا تی ہاں! آپ تا ہے نے دریافت فرمایا: کیا اس نے قرضہ کی ادا میکی کے لیے مال چھوڑا ہے؟ صحابہ نے عرض کیا نہیں! آپ تا ہے نے فرمایا: تم لوگ اپ ساتھی کی نماز پڑھ لو، حضرت ملی نے فرمایا: یا دسول اللہ!اس کا قرض میرے ذمہ ہے، چھرآپ تا ہے آگے تشریف لائے ادراس پرنماز پڑھی۔

ادرایک روایت میں ای کے ہم معنی مروی ہے ادر (مزید بیہی) فرمایا کہ اللہ تعالیٰ تنہاری گردن کو دوزخ کی آگ سے نجات دے جس طرح تم نے اپنے مسلمان بھائی کو (قرضہ سے) سبکدوش کردیا، جو بندؤ مسلمان اپنے بھائی کے قرضہ کوادا کردے تو اللہ تعالیٰ قیامت کے دوزاس کی گردن کوخلاصی عنایت فرمائیں ہے۔ (شرح سنہ)

آپ آلی مقروش کی نماز جنازہ پڑھانے سے انکار فریا دیتے اور اسحاب کو اجازت فرما دیتے کہوہ کمات حدیث کی تشریح این مسلمان بھائی کی نماز پڑھ لیں معلوم ہوا کہوہ آپ آبائی کی نصوصیت تھی۔

(الفعيل مديث نمبر ٢٧٤٨ ك تحت كرر چى-)

رجو شخص مقروض نه هوی

﴿ صديث بُمِر ٩٨ ١٤٨ ﴾ وَعَنْ قُوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ مَاتَ وَهُوَ بَوِيْتَى مِنَ الْكِبْرِ وَالْقُلُولِ وَاللَّايْنِ دَخَلَ الْجَنَّةَ رَوَاهُ التّرْمِلِي وَابْنُ مَاجَةَ وَاللّادِمِيُّ.

توجمه: حطرت وبان نفقل كيا كرسول التمالية فرمايا: جوفض اس عالت على مرجائ كروه كيراور خيانت اورقر ضه برى عاده وجنت على داخل موجائكا ـ (تندى اين ماجه، وارق) كلمات حديث كي تشريح الى دوايت معلوم بواكه فيانت اورقر ضرآ خرت من بهت نقصان اورخساره كاسب بوكا ،اورتجبير بمي عروم كرديني والى صلت ب،العلول: خيانت، النفيمت اور مال وتف يس خيانت كرنا، جورى كرنا

عاده: متعمدِ بيان سي كه بنده كوا في زندگي من اس تم كى برى حصلتول سے دور ركنے كي كوش كرنا ضرورى بي اور مقروض ند رے : كوتكدوه كيره كتابول على سے ايك كيره كناه بوجاتا ہے : اكرمفلس بوكيا اور قرضه كى ادائيكى كى كوئى صورت ند بوكل _

﴿مقروض هوکرموت بڑی معصیت هے﴾

﴿ مديث بُمر ٩٩ ١٤٤﴾ وَعَنْ أَبِي مُوْمِى عَنِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ أَعْظَمَ اللَّهُ وَلَهُ آنْ يُلْقَاهُ بِهَا عَبْدٌ بَعْدَ الْكَبَائِرِ الَّتِي نَهِي اللَّهُ عَنْهَا آنْ يُمُوْتَ رَجُلٌ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ لَا يَدَعُ لَهُ قَضَاءُ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابُوْ ذَاؤَدَ.

توجمه : حفرت ابوموی نی اکرم الله کا ارشاد قل کرتے ہیں آپ تھا نے فرمایا : الله تعالی کے زدید ایک عظیم ترین مناه کبیره حماوں کے بعد جن سے اللہ تعالی نے منع فر مایا ہے (وہ یہ ہے) بندہ اس عظیم کمناہ کے ساتھ اللہ تعالی سے ملاقات کرے کہ آدی مر مائے اوراس کے دمقرضہ مو (ادر) قرضمی ادائی کے لیے کھمال ندچموڑ امو۔ (امرہ ابوداؤد)

كلمات حديث كي تشريح كوكلم يدق العباد باور بروز قيامت اس كي ادائيكي دغوى رقم اور مال سوند بوكى بلكه اعمال مالح ے ہوگی اور اللہ تعالی اس کومعاف نفر مائیں کے۔اس اعتبارے وہ اکبرالکیائرہے۔

﴿ مِرْبِثُ مِمْ ﴿ * ٢٨٠ ﴾ وَعَنْ عَمْرِو بْنِ عَوْفِ الْمُزَنِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الصَّلْحُ جَائِزً يَهُنَ الْمُسْلِمِيْنَ إِلَّا صُلْحاً حَرَّمَ حَلَالًا أَوْ أَحَلُّ حَرَامًا وَالْمُسْلِمُونَ عَلَى شُرُوطِهِم إِلَّا شَرْطاً حَرَّمَ حَلَالًا أَوْ أَحَلَّ حَرَامًا رَوَاهُ التُّرْمِلِيكُ وَابْنُ مَاجَةً وَٱبُوْدَاؤِدَ وَانْتَهَتْ رِوَايَتُهُ عِنْدَ قَوْلِهِ عَلَىٰ شُرُّوطِهِمْ.

متوجعه: حعرت عمر وبن موف مزنى في اكرم الله كاارشاد قل كرتے بين كه آپ الله في الدم مان ك درميان ملح جائز ہے مكر الى ملى كهجوطال كوترام ياحرام كوطال كرے (وه جائز بيس)اورمسلمان إلى شرائط پرقائم بين محرده شرط جوكه طال كوترام ياحرام كوطال كرے_(ترفرق، اين ماجر، الوداؤر، اورالوداؤركى روايت خوروطهم يرفتم موكى)_

ال روایت می بحالیت قرضه مرنے والے کے فق میں بدی شدید تعبیہ ہے جب کداوا لیکی کی کوئی صورت ندمو بعد الكبائر يعنى معروف وشهور كهائر كي بعدا يك ورجد كبيره كناه كاير ب:اس لي

كال مورت يس يندول كي حقوق (مالي) كاضائع كرنالازم بـ علده: آخركون وجية حمى جس وجدا آينا في المازجاز ويرمان سانا فرات تهد

الغصل الثالث

﴿ آپّ نے بذاتِ خودخریداری فرمائی﴾

﴿ مِدِيثُ مُمِرًا ١٨٠﴾ عَنْ شُوَّيْدِ بْنِ قَيْسٍ قَالَ: جَلَبْتُ آنَا وَمَخْرَفَةُ الْعَبْدِي بَزَّا مِنْ هَجَرَ فَاتَيْنَا بِهِ مَكَّةَ لَمَجَاءَ فَا رَسُولُ الْلَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْشِىٰ فَسَا وَمَنَا بِسَرَ اوِيْلَ فَيِعْنَاهُ وَقَمَّ رَجُلُ يَوْنُ بِالْآجُو لَمُعَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: زِنْ وَارْجَحْ رَوَاهُ أَحْمَدُوَ أَبُودَاؤدَ وَالتَّرْمِلِيُّ وَابْنُ مَاجَةُوَّ الدَّادِمِيُّ وَقَالَ التَّرْمِلِيُّ طَلَّا حَلِيْتٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ. قوجهد: حضرت مویدین فین نے ارشادفر مایا میں نے اور خرفد حمدی دونوں نے مقام جرسے کیڑا فرید کیا اور مکراس کولے کرمکہ آئے، پس رسول الشفایی ہمارے پاس سواری کے بغیر تشریف لائے اور ہم سے ایک پا جامہ کا معاملہ کیا سوہم نے وہ آپ تا کہ کوفر دشت کر دیا، اور ای جگہ ایک شخص اجرت پر وزن کیا کرتا تھا، آپ تا ہے اس شخص سے فرمایا: وزن کر اور جھکا ہوا وزن کر۔ (احرر، ابوداد ترفیق ماہن ماجرہ وارق) اور امام ترفی نے فرمایا بہ صدیث مسیم ہے۔

كلمات مديث كي تشريح البؤ، بمعن توب اور بزاكا تاجراورجو كير ابنان كاحرف (پيشر) كرتا باسكو البزازة "كتي بي

مقدریان یہ ہے کہ آپ مانگ نے ایک تاج سے شلوار خرید فرمائی؛ یعن جس کورجال (مرد) استعمال کرتے ہیں۔ عاشدہ: اس باب کے تحت اس روایت کوفل کیا ہے، (غالبا) اس مناسبت کی وجہ سے کہ آپ مانگ نے اس میں جو ہدائت ارشاد فرمائی ہے؛ یعن" زن وارجع "(ارتیاق)

اجوت بووزن كوفا: بب مقدارزياده بوتى بالواجرت بروزن كيااوركرايا جاتاب، معلوم بواكديدمباح باوروزن كنده كوآپ آي في نيايت فرمائى كده قدر يزائدوزن كرياميس النيا بركت اور فير بوكى اورايك بوافائده يدوكا كه ال كم ندجائكا-مدوال: كياآپ مان نيات في النزيد فرموده مراويل كواستعال بحى فرمايا بي؟

جواب: بقراحت كروايت عارب المنظف كاستعال كرنا تابت بيس مرية تعيل كتاب اللهاس بس طاحظ فرما تيس-(اسعى) ومديث بمرا ١٨٠٥ و عَنْ جَابِرٍ قَالَ: كَانَ لِيْ عَلَى النّبِيّ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ دَيْنٌ فَقَضَالِيْ وَزَادَنِيْ وَوَاهُ اَبُوْدَاوُدَ.

قو جعه: حفرت جابر نے بیان فر مایا کہ آپ تھا کہ پر برا مجوز ضرفها ، آپ تھا کے بھوکوو ، قرض اوا فر مایا اور پھو جھوکو زائد عنایت فر مایا۔ (ابوداؤد)

﴿ آپَ نہے بھی قرض لیا﴾

﴿ مديث بُر ٣٠ ١٨ ﴾ وَعَنْ عَبْدِ اللّهِ بْنُ آيِنْ وَبِيْعَةَ قَالَ: السَّعَفُرَ طَى مِنِّىٰ النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَوْبَعِيْنَ الْفَا فَجَاءَ هُ مَالٌ فَلَعَهُ اللَّهُ عَالَىٰ إِنْ اللَّهُ تَعَالَىٰ فِي اَهْلِكَ وَمَالِكَ النَّمَا جَزَاءُ السَّلَفِ الْمَحَمْدُ وَالْآوَاءُ وَالْسَائِقُ. وَالْآوَاءُ السَّلَفِ الْمَحَمْدُ وَالْآوَاءُ وَالسَّلَفِ الْمَحْمَدُ وَالْآوَاءُ وَالْمَائِقُ.

من جمع: حضرت عبدالله بن افي ربية في بيان كياكه بي اكرم الله في محمد جار بزار كاقرض ليا، كر (جس وقت) آب الله كي اكرم الله في الرم الله كي اكرم الله كي اكرم الله كي الرم الله كي الله كي الله كي الله كي الله كي الله الله كي الله كي

كلمات حديث في تشريح محن كودُ عاء خرويا اور شكريا واكرنام مكارم اخلاق مس يه

وتاخيرهوني پرفضيلته

﴿ مديث بْمِر ١٨٠ ﴾ وَعَنْ عِمْوَانَ بَنِ حُصَيْنِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَانَ لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَانَ لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَانَ لَهُ عَلَى رَجُلٍ حَتَى قَلَمْ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَانَ لَهُ عِلَى رَجُلٍ حَتَى قَلَمْ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَانَ لَهُ عِلَى رَجُلٍ حَتَى قَلَمْ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَانَ لَهُ عِلْمَ عَمَدُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَانَ لَهُ عِلْمَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَانَ لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَانَ لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَانَ لَهُ عَلَيْهِ وَمَلْكَمْ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَسُلَّمَ اللهُ عَلَيْهُ وَلَهُ عَلَيْهُ عَلَيْ عَانَ لَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْكُولُ لَهُ عَلَى وَجُلَّ عَلَى مَا عَلَيْهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى مَعْمَا اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهُ وَلَا لَهُ عَلَيْهِ وَعَلَمْ مَا عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللّ

من وجور عرب من سن سن المورد المعلم المستحد ال

کلمات حدیث کی تشری اوراصل وقت پر قرضه وصول نه دونے پر قلب پر بہت کرانی دوتی ہے اس کے باوجود خدو پیشانی کے اساته مريدمهلت باعب فنيلت موكى ـ (اسدى)

﴿قرض کی ادانیگی مقدّم ھے﴾

﴿ مديث مُبره ١٨٠﴾ عَنْ سَعْدِ أَنِ الْأَطْوَلِ قَالَ: مَاتَ آخِي وَقَرَكَ ثَلَاثَ مِالَةٍ دِيْنَادٍ وَقَرَكَ وُلْداً صِفَاراً فَارَدُتُ أَنْ أُنْفِقَ عَلَيْهِمْ فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ آخَاكَ مَحْبُوسٌ بِتَيْنِهِ فَآقُصِ عَنْهُ قَالَ فَلَعَبْتُ فَقَضَيْتُ عَنْهُ ثُمَّ جِنْتُ فَقُلْتُ يَارَسُوْلَ اللَّهِ! فَذَفَضَيْتُ عَنْهُ وَلَمْ تَبْقَ الَّا اِمْرَاةٌ تَدُّعِيْ دِيْنَارَيْنِ وَلَيْسَتْ لَهَا بَيِّنَةٌ قَالَ اعْطِهَا فَإِنَّهَا صَادِقَةٌ رَوَاهُ أَحْمَدُ.

قد جعه: حفرت سعد بن اطول بيان كرتے بين كميرے بعائى كا انقال بوميا تين دينار (تركميس) چيوڙے اور چيو في جيو في يج (بحي) جيوڙے، پس ميں نے (بير)اراده كيا كمان بجوں ير (وه متروكه مال) صرف كروں (اور في الوقت قرض ادانه كروں) جمع میااور میں نے قرضدادا کردیا بھائی کی طرف سے اور چھر میں حاضر خدمت ہوا اور میں نے عرض کیا یا رسول اللہ ایس نے ان کی طرف ہے قرض ادا کر دیا اور کوئی قرض خواہ باتی رندرہا مگر ایک عورت جو کہ دو دیناروں کا دعویٰ کرتی ہے اوراس کے پاس کوئی شہادت (اور البوت) فيل إلى المعالمة فرماياس كوادا كردوه كى بـ (احرا)

عامده: _ميت كون مي بيبزااحسان بأس كا قرضها داكرديا جائة تأكده مجوس ندرب تفصيل كذريك ب_

خِقرضہ کی وجہ سے جنّت کاداخلہ پ

﴿ مديث تمبر ١٨٠١ ﴾ وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ جَحْشِ قَالَ كُنَّا جُلُوسًا بِفِناءِ الْمَسْجِدِ حَيْثُ يُوضَعُ الْجَنَا يُزُورَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ بَيْنَ ظَهْرَيْنَا فَرَفَعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَصَرَةً قِبَلَ السَّمَاءِ فَنَظَرَ ثُمَّ طَأْطًا بَصَرَةً وَوَضَعَ يَدَةً عَلَى جَبْهَتِهِ قَالَ سُبْحَاثَ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ مَاذَا نَزَلَ مِنَ التُّشْدِيْدِ قَالَ فَسَكَّتْنَا يَوْمَنَا وَلَيْلَتَنَا فَلَمَّ لَرَالًا خَيْرًا حَتَّى أَصْبَحْنَا قَالَ مُحَمَّدٌ فَسَأَلْتُ وَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَاالتَّشْدِيْدُ الَّذِي نَوْلَ؟ قَالَ فِي اللَّيْنِ وَالَّذِي نَفَسٌ مُحَمَّدِ بِيَدِم لَوْأَنَّ رَجُلًا قُتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللَّهِ ثُمَّ عَاشَ ثُمَّ قُتِلَ فِي سَبِيْلِ اللَّهِ ثُمَّ عَاشَ ثُمَّ قُتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللَّهِ ثُمَّ عَاشَ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ مَادَحَلَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَفْضِيَ دَيْنَهُ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَفِي شُرْحِ السُّنَّةِ نَحْوَهُ .

توجمه : حفرت محدين عبدالله بن جحث في بيان كياكم موكم معدك من بين بين بوت يقد م وكرجناز در كع جات تع اوررسول السَّقَافَة (بھی) ہمارے درمیان تشریف فرما تھے، پس آپ تھے نے اپنی نگاہ آسان کی طرف اٹھائی اور دیکھا چراپی نگاہ کو نیج کرلیا اورائے ہاتھ کو اپنی پیشانی پر رکھا، (ازروئے تعب) فرمایا سجان الله کس قدر سخت (عذاب) نازل ہوا ہے، مدیث کے راوی فرماتے ہیں کہ ہم لوگ ایک دن اور رات خاموش رہے (اور ہم منظررہے) ہم کو مجمد دکھلائی بیس دیا بجو خیر کے بہاں تک کہ ہم نے مج ك، راوى مديث معرب محرف بيان كياكي كي عن نرسول الشكاف يسوال كياد وفي كيا بجونازل مولى بك آب كالفي في ارشاد فرمایا: قرض کے متعلق جتم ہے اس ذات کی جس کے بعد میں جرکی جان ہے، اگرکوئی تخض اللہ کے داستہ میں آل کردیا جائے اور پھر زندہ ہواور پھر اللہ کے داستہ یم آل کر دیا جائے پھر ذیرہ ہواور پھر اللہ کے داستہ یم آل کر دیا جائے پھر زیرہ ہواور اس پرقرض ہوتو جنت یمی واقل نہ ہوگا یہاں تک کروہ اپنا قرضادا کر دے (یااس کا قرض ادا کر دیا جائے) احمد اور شرح سندیم بھی ای کے ماندمردی ہے۔ عکفتہ: اس روایت سے معلوم ہوا کہ تماز جنازہ کے لیے چکہ خارج الاسمجرم قررہ تمی ۔ (اسعدی)

باب الشركة والمكالة

الغضل النفل

وشرکت مشروع هے پ

﴿ مديث بَهِ ١٨٠ عَنْ زُهْرَةَ بْنِ مَعْهَدِ اللّهُ كَانَ يَخُوجُ بِهِ جَدَّهُ عَبْدَاللّهِ بْنِ هِشَامِ إِلَى السَّوْقِ فَيَشْتَوِى الطَّعَامَ فَيَلْقَا هُ ابْنُ عُمَرَ وَابْنُ الزُّبَيْرِ فَيَقُولَانِ لَهُ اَشْرِكْنَا قَانَ النَّبِيِّ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ قَدْ دَعَالَكَ الطَّعَامَ فَيَلْقَا هُ ابْنُ عُمَرَ وَابْنُ الزُّبَيْرِ فَيَقُولَانِ لَهُ اَشْرِكْنَا قَانَ النَّبِيِّ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَمَسَحَ وَأَسَهُ وَدَعَالَهُ بِالْهَرْكَةِ رَوَاهُ الْبُخَارِيُ . وَكَانَ عَبْدُاللّهِ ابْنُ هِشَامِ فَمَسَحَ وَأَسَهُ وَدَعَالَهُ بِالْهَرْكَةِ رَوَاهُ الْبُخَارِي .

قوجعه وصطلب: حضرت زہرہ بن معبد عروی ہے کہ ان کے دادا حضرت عبداللہ بن بشام ان کواہے ساتھ بازار لے جا اس میں مشام ان کواہے ساتھ بازار لے جا دے تا کہ ظرفریدیں، پس حضرت عبداللہ بن زیر دونوں حضرات کی ان سے ملاقات ہوگئی اور ان دونوں حضرات نے ان سے عرض کیا کہ ہم کو بھی شریک کر لیجے و (اور اس گزارش کی وجہ رہتی کہ) نبی اکرم تا ہے ہے دائے برکت کی تھی ؛ چنا نچے انہوں نے ان دونوں حضرات کوشریک کرلیا۔ بعض مرتبہ (نفع کی صورت حال یہ ہوتی تھی کہ) ایک اونٹ کا بوج انفع میں حاصل ہوجا تا بغیر کی نقصان کے جس کو دو اپنے کھر بھی و سے اور (واقعہ دواج نبوی تا گئے ہے کہ) ان کی والدہ عبداللہ بن ہشام کو تی اکرم تھے کی خدمت میں اگر میں آ ہے تھے نے ان کے مربر پر ہاتھ بھیرااور ان کے تن میں دھا ج برکت کی۔ (بخاری)

﴿ مديث بُهِ ١٨٠٨﴾ وَعَنْ آبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَتِ الْآنْصَارُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَصَلَّمَ: ٱقْسِمْ بَيْنَنَا وَيَيْنَ الْحُوّالِنَا النَّخِيْلَ قَالَ لَا تَكُفُونَنَا الْمُوْنَةَ وَنُشْرِ كُكُمْ فِي الثَّمَرَةِ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا رَوَاهُ الْبُحَارِيُّ.

قوجمه جعنرت ابو بریرہ نے بیان فر مایا کہ جماعیت انساز نے ہی اکرم اللہ ہے مرض کیا آپ تھی جمیں اور ہمارے مہائیوں کے درمیان مجور کے درخوں کو تعتیم فرما دیجئے ،آپ تھی نے فرمایا نہیں (تعتیم کی ضرورت نہیں) تم لوگ ہماری محنت (ومشعت بالعمل) کی کفایت کرواورہم پھل بھی تہمارے ماتھ شریک ہوں گے، انساز نے کہا ہم نے سنا اورہم نے اطاعت کی۔(بناری)

وحضرات انصاركاايثاري

﴿ صِرِيثُ بَهِ ٩٠٨٠﴾ وَعَنْ عُوْوَةَ بْنِ أَبِى الْجَعْدِ الْبَارِقِيِّ أَنَّ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَعْطَاهُ دَيْنَارَا لِيَشْتَرِى لَهُ شَاةً فَاشْتَرِى لَهُ صَائَيْنِ فَهَا عَ إِحْدَاهُمَا بِدِيْنَارٍ وَآثَا هُ بِشَاةٍ وَدِيْنَارٍ فَلَعَالَهُ رَسُوْلُ اللّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهَ وَسَلَّمَ فِي يَيْعِهِ بِالْبَرْكَةِ فَكَانَ لَوْاشْتَرَىٰ ثُرَابًا لَرَبِحَ فِيْهِ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ .

موجمه ومطلب: حضرت مرده بن انى جعد البارق عمروى بكررول الشكافة فان كودينار مناب فرمايا تاكر به الله كالم به كالله و بنار من الله و بنار من فروخت كردى اور آب الله كالله و بنار من فروخت كردى اوراً به الله كالله و بنار من كرما فروك و برك كردى اوراً به بنا في الله و بنارا وراك بم كرما في موتا قاله (بنارق)

الغصل الثاني

﴿اگرشرکاء نے غیانت کی﴾

﴿ مديث بْمِر ١٨١ ﴾ عَنْ آبِي هُوَيْرَةُ رَفَعَهُ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ عَرُّ وَجَلَّ يَقُولُ آلَا قَالِتُ الشَّوِيْكِيْنِ عَالَمْ يَعُنْ آحَدُ هُمَا صَاحِبَهُ فَإِذَا خَالَهُ عَوَجْتُ مِنْ يَيْهِمًا رَوَاهُ آبُوذَاؤَ وَزَاذَ رَايُنْ وَجَاءَ الشَّيْطَانُ ،

﴿ امانت کی ادائیگی واجب ھے ﴾

﴿ مديث بُهِ (ا ١٦٨) ﴾ وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَذًا لَامَانَةَ اِلَى مَنِ الْتَمَنَّكَ وَلَا تَخُنْ مَنْ عَالَكَ رَوَاهُ التَّرْمِلِيكُ وَابُوْدَاؤَدَ وَاللَّادِينُ .

توجمه وصطلب: حفرت الو بريرة في اكرم الله كا ارشاد فل كرت بين آب الله فرمايا: جم فض فرمايان بالات ركى بهاس كوابات اواكردو، اورتم خيانت ندكرواس كرماته جس في ارسماته خيانت كى بر (تفق العدادة، دامل) قضويع : بينايت ال وجد بها كراح و مال د به

رامتمادهونے کے لئے

﴿ مديث بْهِ ١٨١٢﴾ وَعَنْ جَابِرٍ قَالُ: اَدَّذْتُ الْمُعُوْلَ جَ إِلَى خَيْبَرَ فَاتَيْتُ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَلَمْتُ عَلَيْهِ وَقُلْتُ إِنِّي اَدَدْتُ الْمُعُوْلَ جَ إِلَى خَيْبَرَ فَقَالَ إِذَا ٱنَيْتَ وَكِيْلِي فَخُلْمِنْهُ حَمْسَةَ عَشَرَوْمَتُقَا فَإِن الْبَعَىٰ مِنْكَ آيَةً فَطَعْ يَلَكَ عَلَى تَرْقُونِهِ رَوَاهُ آبُوْدَاؤِدَ .

قوجمه ومطلب: حضرت جابر فقل كياك يس فرجبرى طرف جافكا قصد كيا؛ لإذا عبى آب تلك كى خدمت عن حاضر موا اور آب كا كى خدمت عن سلام عن كيا اور عن فرض كيا كر بمرا خيبر جافكا اداده به آب كاف فرمايا: جبتم بمر عد كل كي باس بنجو (جوكر خيبر عن ب) قو اس بي بدره وال مجود من وصول كرنا بهوا كرده تم سه كوفى علامت (اس امري) طلب كرمه (كرتم بمر عدة صد مو) قوابية با تعركتم اس كي مل برد كاد بنا در الادادة)

منشريع : ساك اسل اصول ع جس كي آب تلك في عمالتعليم اوشا وفر ما في عنا كدكوني ضرون عو

النصل الثالث

﴿برکت کے اسبابِ مِمنوی مُوتے میں ﴾

﴿ مديث بُرِ ١٨١٣﴾ عَنْ صُهَيْبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: قَادَتُ فِيهِنَ ٱلْمَرْكَةُ الْمَيْعُ إلى آجَلِ وَالْمُقَارَطَةُ وَإِنْعَلَاطُ الْبُرِّ بِالشَّهِرِ لِلْبَيْتِ لَالِلْبَيْعِ رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ .

الى اجل والمقاد صدور المربية والمقادمة والمنطقة في ارثاد فرمايا: ثمن يزي بي جن على يركت به: (١) وهده توجعه ومطلب: حضرت ميه في كالدمول المنطقة في ارثاد فرمايا: ثمن يزي بي جن على يركت به: (١) وهده مرك استمال كري مدت تك كري الي المرك استمال كري استمال كري المناد بي المرك المناد بي المرك استمال كري المناد بي المرك المرك المناد بي المرك ا

﴿ مِدِيثُ بُهِ اللّٰهِ وَعَنْ حَكِيْمٍ أَنْ حِزَامٍ أَنْ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ مَعَهُ بِدِيْنَارٍ لِمَشْعَرِى لَهُ بِهِ أَضْحِيَّةً فَاشْعَرِى كَبْشاً بِدِيْنَارٍ وَبَا عَهُ بِدِيْنَارَيْنِ فَرَجَعَ فَاشْعَرَى أَضْحِيَّةً بِدِيْنَارٍ فَجَاءَ بِهَا وَبِاللَّهُ عَلَيْهِ وَالشَّعْرَى أَضْحِيَّةً بِدِيْنَارٍ فَجَاءَ بِهَا وَبِاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّذِيْنَا رِ فَدَعَالَهُ أَنْ وَبِاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّذِيْنَا رِ فَدَعَالَهُ أَنْ أَيْنَا لِللَّهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّذِيْنَا رِ فَدَعَالَهُ أَنْ أَيْنَا لِللَّهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّذِيْنَا وِ فَدَعَالَهُ أَنْ أَيْنَا لِللَّهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّذِيْنَا وِ فَدَعَالَهُ أَنْ أَيْنَا لِللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّذِيْنَا وِ فَدَعَالَهُ أَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّذِيْنَا وَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمُ بِاللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّذِيْنَا وَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمُ بِاللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَارَةٍ وَوَاهُ التّرْعِلِيقَ وَالْمُ قَالَةً مِنْ بَعَارَةٍ وَوَاهُ التّرْعِلِقَى وَآلُو وَالْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَالْمَالِمُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَلَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَلَاللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا مُنْ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ وَلَاللَّهُ عَلَيْهِ وَلَاللَّهُ عَلَيْهِ وَلَا لَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمُ عَلَيْهِ وَالْمَالِمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَالْمَلْمُ اللّهُ عَلَ

قوجمه وصطاب: حفرت علم بن حزام ہے مردی ہے کدرسول النقافی نے ان کوایک دیناردے کر جمیجاتا کہ آ پہناتی کے لیے قربانی کا جانور ٹریدلائیں؛ چنانچہانی کہ آیک دیناری ایک دنبہ خریدلیا اور اس کو دو دیناری فروخت کردیا، پھر گئے اور ایک دیناری کا جانور ٹرید کیا ، پس وہ اس دنبہ اور جو دومرے دنبہ سے ایک وینارمنانع حاصل کیا تھا اس کو لے کر حامر خدمت ہوئے، میں قربانی کا جانور ٹرید کیا، بہل وہ اس دنبہ اور جو دومرے دنبہ سے ایک وینارمنانع حاصل کیا تھا اس کو لے کر حامر خدمت ہوئے، آپ تھی ہے وہ دینار صدقہ کر دیا اور ان کے لیے ان کی تجارت میں برکت کی دعافر مائی۔ (ترفیق، ابوائری) مقصومے : ویکل اور قاصد کو یہ لا دیا ہے کہ جس براے ویکل مقرر کیا جائے آئی قدر تھر نے کرے اللا یہ کے علی لا طلاتی و کا لت ہو ۔ عالی اس وجدہ نفع شدہ دینار صدقہ فر ما ہا ہے

باب الخصب والعارية

(الف) فضب، کی کی تی رپر جزا تبعنه کرنا ، اخذ کرلینا ، اور شرعاً فضب کی تعریف مال متعوم ومحترم پر ما لک کی اجازت کے بغیر جبراوظلما تبعنہ کرلینا، وہ مخص عامب ہے ، اور وہ ٹی 'مضوب' کینی غضب کردہ ہے۔

ففس كرناحرام باوراس كى حرمت قرآن وحديث وسنت سے فابت ب (اوراس كى حرمت برامت كا اجماع ب جس من كوكى اختلاف نيس، قرآن كريم على ب آيا عُدُ كُلُ سَفِينَةِ عَصْباً "اورارشاور بانى ب "لاَتَاكُلُو الْمُو الْكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ" (ب) العارية، برائ استعال ما تك لينا، اورشرعا "اباحة الانتفاع من اعيانِ المعالِ" يعنى اموال احميان ساتفاع كو مباح كروينا، بلاموش أكركى هى سانقاع كياجات معاوض كما تعاقوه واجاره ب

عاریت،یاد کی تخفیف (بلاتشدید) اور تشدید دونول کے ساتھ مستعمل ہے شریعت نے " عاربیة" کو بھی مباح اور جائز رکھا ہے اور اس کی اباحت قرآن وصدیث سے ثابت ہے اور اس برامت کا اجماع بھی ہے۔

قرآن كريم عن الشخص كى فدمت كى كى بعد واسدا تكاركرتاب، قال الله تعالى "وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ" اوراس كى تغير عن "عاريت والى اشيار يمنع كرتا، الكاركرتاب؛ مثلًا بإنثرى، تزازو، ۋول، وغيره، اورآب تلك نه عاريت كاسم بيان كرتے موسة خطب في عن ارشادفر بايا" العارية مؤداة" جوفى عارية لى كى موده وائيس كى جائے كى _

هلنده: عارية بيماخوذ بعار (بمعنى شرم دحيار) سے جب كى شف سے كوئى فى مائلى جائے تواس ميں عاراورشرم محسوس ہوتى ہے؟ اس ليےاس كو عاريت سے تعير كرديا كيا، جو تف لباس سے "عارى" يعنى نظا ہوتا ہے اس كوشرم اور عار لائق ہوتى ہے ؛اس ليےاس كو عارى كها كيا ہے۔ (از افعد المعات وفيرو)

النصل النول

﴿فصب کی سزاہِ

﴿ صِدِيثُ بِمِ ١٨١٥﴾ عَنْ مَنْ عِنْدِ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: مَنْ آعَدَ شِهْراً مِنَ الْارْضِ ظُلْماً فَإِلّهُ يُطَوّلُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ صَبْعِ اَرْضِيْنَ مُتَقَقَّ عَلَيْهِ . قوجمه: حضرت سعیدین زید نظل کیا که رسول انتهای نے فرمایا: اگر کمی فض نے بطور ظلم کسی کی ایک باشت زمین فصب کر لی تو بروز قیامت و و بالشت بحرز مین سمات زمینوں تک اس غامب کے ملے میں طوق بنا کر ڈ الی جائے گ۔ (بناری وسلم)

منبواً ،ایک بالشت، یه پیائش کی کم از کم مقدار ہے . تطویق کودومعنی می استعال کیا گیا ہے۔(۱) کلمات حدیث کی تشریح فرن میں دھنسادیا ،(۲) کلے میں طوق (بناکر) ڈال دینا، اور احادیث میں دونوں طرح بیان ہوا

ہے، جب زمین عن اس کود حنسادیا جائے گاتو (کویا) دہ زمین اس کے ملے کا بار ہوگئ۔ اکٹ بیشتہ زمین دار لوگ روم کی میں میں مقد الدار تعدید دیم سرور مدر الدار

اکثر دبیشتر زمین دارلوگ پروس کی زمین سےقصد آیا بلاقصد (بھی) اپنی زمین بدها لیتے ہیں۔

﴿بِلاَاجَازَت دودہ بکالنا بھی غصب ھیے﴾

﴿ مَدِيثُ بُمِرُ ١٨١٧﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : لَا يَخْلُبَنَّ آخَدٌ مَاشِيَةَ الْمِرِيُّ بِغَيْرِ إِذْنِهِ آيُحِبُّ آخَدُكُمْ آنْ يُوْتِيَ مَشْرَبَتُهُ فَتَكْسَرَ خِزَانَتُهُ فَيُنْتَقَلَ طَعَامُهُ وَإِنَّمَا يَخُزُنُ لَهُمْ

ضُرُوعَ مَوَاشِيهِمْ أَطْعِمَاتِهِمْ رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

قوجمہ: حضرت عبداللہ بن عمر فی کیا کہ رسول الدُمالیة نے فرمایا کہ کوئی فض کسی کے جانور سے بغیرا جازت دودہ خددوہ کیا کوئی فض اس بات کو پند کرتا ہے کہ اس کے فزانہ کے پاس آ جائے اور اس کو آوڑا جائے اور (اس مخزن بس سے) اس کا غلہ لے جایا جائے ، اور بلاشہدان کے جانور کے تھن اپنے مالکوں کے لیے ان کے طعاموں کی حفاظت کرتے ہیں۔ (لینی جانوروں کے تھن دودھ کی حفاظت کے لیے بحز لدان فزائن کے ہیں جہاں غلہ بحفاظت رہتا ہے)۔ (مسلم)

ماشیة، جانور،اس جگدروده دین والا جانور ب،امری بمعنی انسان بخض معشو و به بیم پرفته اور کامات حدیث کی تشر ک دون مراکن دون بیر فرمه بیری نفته نیز شمه بمعنی المعرفة لین ده فی جس بیس سامان رکعا جائے، مال کومخوظ

كياجائ_المخوفة خ يركسره مكان اورمخزن ب-

خلاصة كلام: كرجس طرح محفوظ مكداور مخزن سے وكى فئ نظل كرناما لك كى اجازت كے بغير حرام ہے اى طرح تعنول سے مالك كى اجازت كے بغيره دود حدثالنا بحى حرام ہے۔ (ف) البنة بعض مرتبدا ضطرارى حالت لائق ہوجاتى ہے اس دقت كاتحم اور ہے۔

﴿نقصان کا بدله﴾

﴿ وديث بُرك الله وَعَنْ آنَسٍ قَالَ: كَانَ النّبِي صَلّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ عِنْدَ بَعْضِ نِسَاءِ هِ فَآرْسَلَتُ الْحَدَىٰ أُمّهَاتِ الْمُوْمِنِينَ بِصَحْفَةٍ فِيْهَا طَعَامٌ فَصَرَبَتِ الَّتِي النّبِي صَلّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فِي يَنْتِهَا يَدَ الْتَعَادِمِ قَسَقَطَتِ الْصَحْفَةِ قَانْفَلَقَتْ فَجَمَعَ النّبِي صَلّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَلِقَ الصَّحْفَةِ ثُمَّ جَعَلَ يَجْمَعُ النّبِي صَلّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَلِقَ الصَّحْفَةِ ثُمَّ جَعَلَ يَجْمَعُ النّبِي صَلّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَلِقَ الصَّحْفَةِ ثُمَّ جَعَلَ يَجْمَعُ إِلَيْهِ الطَّعَامَ اللّهِ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَلِقَ الصَّحْفَةِ وَيَقُولُ عَارَتُ أَمْكُمْ ثُمْ حَبّسَ الْخَادِمُ حَتَى أَيْنَ بِصَحْفَةٍ مِنْ عِنْهِ فِي الصَّحْفَةِ وَيَقُولُ عَارَتُ أُمْكُمْ ثُمْ حَبّسَ الْحَادِمُ حَتَى أَيْنَ بِصَحْفَةٍ مِنْ عِنْهِ الطَّعَامَ اللّهِ عَلَيْ الطَّعْمَ اللّهِ عَلَيْهِ وَالمُسَلِّ الْمَعْمَ اللّهِ عَلَيْهِ وَالمُسَلِّ الْمَحْفَةِ وَيَقُولُ عَارَتُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْحَجْدَةِ وَيَقُولُ عَارَتُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمَسْلُ الْمُحَلِّمُ وَيَعْ الْمُعْمَ اللّهُ عَلْمُ مُنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمَالَ الْمُعْمَ الْمُحْفَةِ وَيَقُولُ عَارَتُ اللّهُ عُلَيْهِ وَالْمُسَلِّ الْمُعْمَ اللّهِ عَلَيْهِ وَالْمُسَلّالُ الْمُعْمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُسْلُقُ الْمُعْلَقِ وَالْمَعْلَقِ وَالْمُسَلِقُ الْمُعْلَقِ وَالْمُ اللّهِ عَلْمُ عَلَيْهِ وَالْمُسْلُقُ الْمُعْلَمُ وَلَا اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُسْلُقُ الْمُعْمَ وَالْمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُسْلُقُ الْمُعْلِقُ وَالْمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُسْلُقُ الْمُعْمَالِي اللّهُ عَلَيْهِ وَلَوْمُ اللّهُ عَلَيْهُ وَلَهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَلَوْمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُعْلِقُ وَالْمُ اللّهُ عَلَيْهُ وَلَا عَلْمُ اللّهُ الْمُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُعْلَقُ وَاللّهُ وَالْمُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَالْمُ اللّهُ عَلَيْهُ وَاللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ ا

قوجمہ: حضرت الس فے بیان کیا کہ نی اکر متلکہ اپنی از واج ش سے کی زوجہ کے پاس تشریف فر ماتھے،امہات الموثین ش سے کسی ایک نے رکائی جس ش کھانا تھا ارسال خدمت کیا ،پس آپ تھی جس زوج بھتر مدکے پاس تشریف فرما تھے انہوں نے خادم کے ہاتھ پر مارا جس سے کہ دور رکائی گرگئی اور ٹوٹ گئ، آپ تھی نے رکائی کے کلاوں کو جمع فرمایا اور پھراس کھانے کو جمع کیا جو پلیٹ میں تھا۔اورفر ماپا کہ تہماری اماں جان نے غیرت کی اور پھر آپ تھا نے خادم کوروکا یہاں تک کہ جن زوجہ کے پاس تھان سے رکا بی لی اور پھر آپ تھا نے اور بیٹو ٹی موئی رکا بی اس کھر جس کھر جس کھر جس ٹوٹ گئی تھی۔ (جناریؓ) بابت رکا بی ان کے پاس تھے دی جن کی رکا بی اور بیالہ (جس جس کھر انے ک فی رکھتے ہیں) انفلقت ،گرنے پرٹوٹ گئی، فلق کھی است صدیث کی تشری کی اندر کے میں کھانے کہ میں کھانے کہ میں کہا ت میں کو ان کی مطابق الانفلاق ، غارت یہ ماخوذ ہے انگیر ہے ، غیرت ایک کیفیت نفسانی ہے جو کسی خلاف

كى وجدے غيرا متيارى طور پرائم رتى ہے جس كوانسان نورى طور پرطبعًا دفع كرنے پرقا درنبيں ہوا كرتا۔

حاصل كلام: الكونت آپ تلك حفرت ما كشرك مكان من تشريف فرما تھے آپ تك كا ايك ذوجه نے خادم كى ذريعه پليث ميں قدرے كھانا بھيجانؤ حفرت ما كشركواس پرغيرت آگئ اورغيرا ختيارى طور پراس پر ہاتھ مارا جس سے كدوہ برتن كركر ثوث كيا اور كھانا مجى زمين برگر كيا۔

آپ آئی آپ ایک کے حضرت عائش کی جانب سے (ازخود)عذراورصفائی بیان فر مائی کہ ان کوغیرت آگئی ، آپ آئی کے خطاب عام کے ماتھ میہ بات کہ جو بھی اس واقعہ کو سنے وہ اس پر کوئی تبھر ہ نہ کڑے اور حضرت عائش کے اس فعل کو غرموم قر ارند دے؛ کیونکہ جب از روئے فیرت ہوا ہے تو یہ کیفیرت اضطراری ہوئی جس پر شرعا گرفت نہیں۔

المنده: اگر چدال داقعه كاتعلق نه غصب سے باور نه عاریت سے ،البترید مسئله ضان پر شتمل ہے، تا ہم مال غیر كوناحق ضائع كرنامن الواع النصب ہوا، آس مناسبت كى دجہ سے اس جگر نقل كيا ہے۔

مسئف: اگرغیر شلی می کوتاحق ضائع کردیا جائے تو اس کا صان قیت کے ساتھ ہوگا، اور اگروہ ہی مثلی ہے تب اس کے مشل کے ساتھ خان دیا جائے گا، آپ تافیقے نے پلیٹ کے بدلہ پلیٹ ہی ادا فر مائی؛ اگر چدوہ ہی غیر شلی ہے؛ کین عدداً اشیار متقاربہونے کی وجہ سے حکاوصور تاوہ مثلی ہوئی؛ اس لیے بیتبادلہ فر مایا۔ (از تعلیق: ج سرے درس سری س)

﴿ کسی کیے مال پر ظلماً قبضه کرناهرام هیے﴾

﴿ مَدَ مَثُ مُرِ ١٨١٨﴾ وَعَنْ عَبْدِاللَّهِ بْنِ يَزِيْدُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللّهُ نَهِى عَنِ النَّهْبَةِ وَالْمُثْلَةِ وَالْمُثْلَةِ وَالْمُثْلَةِ وَالْمُثْلَةِ وَالْمُثْلَةِ وَالْمُثْلَةِ وَالْمُثْلَةِ وَالْمُثْلَةِ وَالْمُثَلَةِ وَالْمُثْلَةِ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللّهُ

قوجعه: حفرت عبدالله بن يزيد بي الرم الله الله على المرابعة المناه المرابعة المنهاة المنها المنهاة المنها المنه

بِهِ وَحَتَى رَأْيَتُ فِيهَا صَاحِبَةَ الْهِرَّةِ الْتِي رَبَطَتُهَا فَلَمْ تُطْعِمُهَا وَلَمْ تَدَعْهَا تَاكُلُ مِنْ حَشَاشِ الْآرْضِ حَتَى مَاتَتْ جُوْعاً ثُمَّ جِيْنَ مِالْجَنَّةِ وَلَالِكَ حِيْنَ رَأْيُتُموْلِي تَفَلَّمَتُ حَتَى قُمْتُ فِي مَقَامِي وَلَقَدْ مَدَدْتُ يَدِى مَاتَتْ جُوْعاً ثُمَّ جِيْنَ مِالْجَنَّةِ وَلَالِكَ حِيْنَ رَأْيُتُموْلِي تَفَلَّمَتُ حَتَى قُمْتُ فِي مَقَامِي وَلَقَدْ مَدَدْتُ يَدِى وَأَنَا أُويِدُ أَنْ آتَنَاوَلَ مِنْ ثَمَرَتِهَا لِتَنْظُرُوا إِلَيْهِ ثُمَّ بَدَ الِي آنَ لَا اَفْعَلَ رَاوَهُ مُسْلِمٌ.

توجمه : حفرت جابر نے بیان فرمایا کررول الفطالة کے زمانہ میں جس روز آپ آلی کے صاحبزادے حفرت ابراہ کم کی وقات ہوئی سورج گران ہوا، آپ آلی نے نے لوگوں کے ساتھ چھ رکوع چار مجدوں سے نماز پڑھی، پس آپ آلی نماز سے فارٹی ہوئے درآ سے ملک سورج روثی ہو چکا (یعنی اپنی اول حالت پرلوٹ آیا) تھا، آپ آلی نے زراد فراغت نماز) ارشاد فرمایا: کوئی الی پیز نہیں جس کا تم سے وعدہ کیا گیا ہے مگر میں نے اس کو یقینا اپنی اس نماز میں دکھی ہے، البت آگ لائی گی اور بیاس وقت کی بات ہے جب کہ تم نے جھوکود یکھا تی میں چیچے کی طرف ہٹا تھا اس اندریشری دجہ سے کہ اس کی لیٹ جھوکوندلگ جائے اور بہاں تک کہ میں نے دوز ٹی کی ایر بیاں دوز ٹی میں میسے کہ اس کی لیٹ جھوکوندلگ جائے اور بہاں تک کہ میں نے دوز ٹی کی ایر بیاں دوز ٹی میں انگ گیا ہے اور اگر اس سے بخر کر اپنی آئی گی اور نہا تھا اور بہاں کو از اور چوڑ تی تا تھا اور بہاں کہ کے جاتا تھا اور بہاں کو روز ٹی میں انگ گیا ہے اور اگر اس سے بخر کر اپنی آئی گی اور نہا سی کو آئی ہور تی کہ کی میں کہ وہ سے مرگ پی جو میں کہ جو کہ ان کی میں کہ کہ جب کم کی کہ دوز ٹی کی گی میں ہوگی تو کہ اس کی کی وجہ سے مرگ پی جنت لائی گی ، اور یہ بات اس وقت کی ہے جب کم کی کہ دوز ٹی کی گی کہ وہ سے مرگ پی جو میں کہ کہ کہ کی کہ کی اس کے کہ کی ایک کو جو بات واقع کوئی کہ جنت لائی گی ، اور یہ بات اس وقت کی ہے جب کم کی کہ کی آئی کہ ایک کہ کی کہ کی کہ کوئی کہ کی کی کہ کی کی کہ کی کی کہ کی کہ کی کہ کی کہ کی کہ کی کی کی کہ کی کی کہ کی کی کہ کی کی کہ کی کی کہ کی کہ کی کی کہ کی کہ کی کہ کی کہ کی کہ کی کہ کی کہ

المان مراج کی المراج کی المراج کی المان کی المان کی المان کی المان کی المان کی المان کی المراج کی المراج

﴿ آبِّ نہے بھی عاریۃ اشیاء لی ھیں﴾

﴿ مديث بُمر ١٨١٠﴾ وَعَنْ قَتَادَةً قَالَ: سَمِعْتُ آنَساً يَقُولُ كَانَ فَزَعَ بِالْمَدِيْنَةِ فَاسْتَعَارَ النَّبِي صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَسًا مِنْ آبِي طَلْحَةً يُقَالُ لَهُ الْمَنْدُوبُ فَرَكِبَ فَلَمَّا رَجَعَ قَالَ مَا رَآيَنَا مِنْ شَيءٍ وَإِنْ وَجَذْنَاه لَبْحُراً مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجمه : حفرت قادة نے بیان فر مایا کہ میں نے حفرت انس سنا دہ فرمارے تھے دید میں پھی گھیراہٹ ہوئی (وشمن کی آمداور حملہ ہونے کی دجہ سے)رسول اللہ اللہ نے حضرت ابوطلی سے گھوڑا عاریة لیا اس گھوڑے کو مندوب (کے نام سے موسوم) کیا ہوا تھا: چنا نچر آپ سے ایک اس پرسوار ہوئے اور جس وقت واپس تشریف لائے تو فرمایا ہم کوتو کوئی چزنظر نہیں آئی (جو باعث خطرہ ہو) اور سے کہ میں نے اس گھوڑے کو (تیز رفتاری میں) سمندر (کی طرح کشادہ تو م) پایا ہے۔ (بخاری دسلم)

رس نار ہوگیا جس کوآپ معلی نے "لیعو اً" ہے تعیر فرمایا ، معنی تیز رفار دوڑ نے والا ، اوراس واقعہ سے معلوم ہوا کہ جوانات کے نام جویز رفار ہوگیا جس کو آپ تھا ہے۔ اس کا معنی تیز رفار دوڑ نے والا ، اوراس واقعہ سے معلوم ہوا کہ جوانات کے نام جویز

کرنامجی مباح ہے۔

مقصد بیان بیہ کہ عادیہ کوئی هی لینا اور اس کو استعال کرنا جائز ہے اور سواری کو بھی عادیت پر دینا، لینا درست ہے۔ چنانچہ آپ سی نے شرا تعلیم دینے کی فرض ہے (بھی) عادیہ اشیار استعال فر مائی ہیں۔ (اسعدی)

الغصل الثاني

﴿بنمِرزمین کا حکم ﴾

﴿ مديث بمبر ٢٨٢١﴾ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ زَيْدٍ عَنِ النّبِيِّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ قَالَ: مِنْ آخِيىٰ أَرْضاً مَيْتَةً قَهِى لَهُ وَلَيْسَ لِعِوْقِ ظَالِمٍ حَقَّ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتَّوْمِلِيُّ وَآبُوْ ذَاوْدَ وَرَوَاهُ مَالِكٌ عَنْ عُوْوَةَ مُوْسَلاً وَقَالَ التَّرْمِلِيُّ هَٰذَا حَلِيْتُ حَسَنٌ غَرِيْبٌ.

قو جعه : حضرت سعید بن زید نی اکرم تلطی کا ارشاد قل کرتے ہیں کہ پیشک آپ تلطی نے فرمایا: جس شخص نے مردہ (بنجر) زمین کوزندہ کیا تو وہ زمین ای کی ہےادر ظالم کے پسیند کا کوئی میں نیس۔ (احمد ، ترندی ، ابوداؤر ،)اورامام مالک نے بروا برے کی ہےاورامام ترندی نے فرمایا بیرمدیث حسن غریب ہے۔

ضوودی وضاحت: ارض موات کی دواقسام ہیں: (۱) وہ زشن کی ملکیت نہ موادراس کاما لک مطوم نہ ہو ہے(۲) قدیم مہد سے دہ زشن کی کی ملک نہ موادر خیر آبادی چلی آرہی ہو۔

معصد بیان بیہ کراگر کسی ملے زمین پر کسی نے ناخل قضہ کیا اور اس کوآباد کرلیا، اس کا احیاد کرلیا، بیفصب کردہ زمین کے تم میں ہاوروہ عاصب اور ظالم ہے، اس کا تھم بیارٹ اوفر مایا ''لیس لعوق طالم حق'' ظالم رگ کا کوئی استحقاق بیس ؛ لہذا اس کا قضہ ختم موگا اور اصل مالک حقد اربوگا۔

هومسوى صبورت ميں يه قفصيل هي : (الف) اقوال فقهاد علاد كا ايك جماعت كنزديك حاكم اورسلطان كى المازت ك بغير بحى اگركي فض في ازخودالي زين كا دياد كرايا به وجائك السيك كروايت يش على الاطلاق فر مايا به المهازت ك بغير بحى اگركي فض في البتهام اعظم كنزديك حاكم اورسلطان كى اجازت كى شرط كراته طليت تابت موكى اوران كا اس برايا و الموان كا اس دوايت ساسدلال ب، آب كا ارشاد به عدى الارض لله و لوسو له نم هى لكم منى المعلوم بواكم آب معلق كى جانب اوراج ازت سے (بحر) وه اس كے ليے بولى جس كوآب الله في عطاد فر مايا بوراوراس طرح آب آب كا بعد ملطان وقت كى اجازت بولى۔

(ب) امام ابو یوسف اورامام محرِ کے نز دیک بھی اجازت کی قیدنیں ہے، جماہیر علماد کے تول کے ساتھ ہیں۔ (ج) اور سباق میں عبکت کی بیر صورت ہے کہ جس وقت کھوڑے دوڑ انے کا مقابلہ ہو، کھوڑ اووڑ انے والے کے پیچھے ایک اور مخص

موجواً واز كرساته مارلگائے اور كموڑے كودوڑ انے ش كويا مددے؛ تاكراس كا كموڑ ا آ كے دوڑ تار بـ

اور بخت کی صورت ہے ہے کہ محور اور انوالا مزید ایک محور ااور برابر میں رکھے تا کہ موادی کا محور انھک اور ست ہونے لگے تو دمرے محور ان کی انداز سے معان کے انداز سے خداع ہے۔ دمرے محور ہے ہوار ہوکر آ کے نکلنے کی کوشش کرے، ببر حال آ کی مجمی ممانعت ہے اسلنے کہ انہوں ایک نوعیت کے انتہادے خداع ہے۔

لاشداد شین پر کسرہ ، دراصل عہد جاہلیت میں نکاح کی بدا کی صورت رائے تھی ، اور اس کی صورت بیتی کہ باہم دو تھی بیشر ط
کرتے کہ میں اپنی اڑکی یا بہن کا نکاح تمہارے (یا تمہارے اڑکے) کے ساتھ کرتا ہوں اس شرط کے ساتھ کہتم بھی اپنی اڑکی (یا بہن) کا
نکاح میرے ساتھ (تبادلہ میں) کرو گے ، اور بیتبادلہ لکاح ہی مہر ہوگا ، آپ تلک نے اس کو بھی اپنے فرمایا ہے ، اکثر علماء کے فرو کید اس
صورت سے نکاح باطل ہوگا ، اور امام اعظم و معز سے سفیان کے فرد کید (اگر ایجاب اور قبول کے ساتھ شری طریقہ پر) نکاح ہوا ہو تو
نکاح منعقدرہے گا اور چوشرط عدم مہرکی ہوئی تھی وہ کا لعدم ہوگی اور مہرشکی لازم ہوگا ، تا ہم ان معز رات کے فرد کید بھی کر اہت ضرور ہے
اس لیے اس سے اجتماب ضروری ہے ٹی کی وجہ ہے ، مزید تفصیل کتاب النکاح میں معلوم ہوئی۔ (از تعلیق ، اسعدی)

﴿ طیبِ نفس کے ساتھ ھی حلال ھلے﴾

﴿ صديث بُر ٢٨٢٢ ﴾ وَعَنْ أَبِي حُرُّةُ الرَّقَاشِيْ عَنْ عَمْهِ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَلَا لَا تَظْلِمُوْا أَلَا لَا يَحِلُّ مَالُ امْرِي إِلَا بِطِيْبِ نَفَسْ مِنْهُ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيْمَانِ وَالدَّارُ قُطْنِيُّ فِي الْمُجْتَبِيْ.

تو جمه: حصرت ابوحره رقاشي برواست عم خودروايت كرتے بين انہوں نے فرمايا كدرسول الله الله الله الله الله الله الم كرو، خبر دار! كدائسان كامال حلال نبيس محراس كي طرف سے خوش دلى كے ساتھ - (بيهافي، دارتطني)

طب نفس: قلبی رضامندی، مقصد بیان یہ بے کھن زبانی اجازت بھی (بعض مرجہ) کفایت جبیل کمات حدیث کی انشر کے اس مقتلی کمات حدیث کی انشر کے اس مقتلی مناس مندی ند ہو، با اوقات اکراہ اور جرا کوئی شیا کر دی جائے اس وقعلی

رضامندی نموی حالات ہے جی اس کا اندازہ ہوسکتا ہے۔

﴿ صريت نبر ٢٨٢٣﴾ وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ خُصَيْنِ عَنِ النِبِيِّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ قَالَ: لَا جَلَبَ وَلاَجْنَبَ وَلاَ شِغَارَ فِي الْإِسْلَامِ وَمِنْ انتَهَبَ نُهْبَةً فَلَيْسَ مِنَّا رَوَاهُ التَّرْهِ لِذِي.

قوجهد: حفرت عمران بن حقين جي اكرم ين كارشاد فقل كرتے بين كرآ پين في مايا: اسلام مين بكب ، بحب اورشفار مين بهت اور جو مفر اور ماركر يا وه جم ينس ب - (ترندي)

رورو سارت و المراد المراد المراد و المراد و المراد و المراد و المراد و المراد المراد المراد و المرد و

منہوم یہ ہے کہ جس وقت صدقات وزکو ہ وصول کرنے والا آئے وہ کی ایک جگہ پرآ کرتیام کرے اور بستی والوں کو تھم دے کہ وہ اپنے امنہوم یہ ہے کہ جس وقت صدقات وزکو ہ وصول کرنے والا آئے کہ کی ایک جگہ پرآ کرتیام کر جس ہے کہ جن لوگوں پرصدقہ اور ذکو ہ فرض اپنے اموال زکو ہ نے کہ جن لوگوں پرصدقہ اور ذکو ہ فرض ہے وہ اموال اپنی رہائش گا ہوں سے دور اموال کو لے کر چلے جا کیں تاکہ مقصداتی جگہ آئے ،اس کی تفصیل کتاب الزکو ہ میں مطوم ہو چکی ،اس کی بھی اجازت جس مار شفار ۔ نکاح کے لیے اول ، بدل والی صورت اختیار کرنا اور مہر ندہ ونا ، ذمان جا بلیت میں میصورت رائے میں ہے۔
میں انسیل کتاب النکاح میں ہے۔

وادنی شنی بھی غصب ھے

﴿ صديت نُمِر ٢٨٢٣﴾ وَعَنِ السَّائِبِ بَنِ يَزِيدَ عَنْ آبِهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا يَأَخُذُ آحَدُكُمُ عَصَا آخِيْهِ لَا عِبَا جَادًا فَمَنْ آخَذَ عُصَا آخِيْهِ فَلْيَرُدُهَا إِلَيْهِ رَوَاهُ النَّرْمِذِيُ وَٱبُوْدَاؤَدَ وَرِوَايَتُهُ اللَّى

فرله جادًا.

قوجهد: حضرت ما يب بن يزيد بروايت والدخود ني اكرم الله كاارشاد قل كرت بين آب الله فرمايا : تم من كوني مخص اين بمائي كى اللهى قداق كاعداز مين بدير حقيقت ندل، الركس فنص في اين بمائى كى اللهى لى موتو اس كو جاسي كدوه اس كو داليس كر وے۔(ترقری ابوداؤر اور ابوداؤر کی روایت جادا تک ہے)

کمات حدیث کی تشری حقیق طور پرلیا۔ کمات حدیث کی تشری حقیق طور پرلیا۔

مقصید بیان بہ ہے کہ بعض اشخاص کی بیادت ہوا کرتی ہے کہ اگر کسی کی کوئی ہی لینا (اورغصب کرنا) ہے تو بظاہر وہ اس هی کوہنی اور نداق کی (صورت میں) اٹھا تا ہے! نیکن تصدیہ ہے کہ وہ واقعی اس کو لے کر جائے ،اگر مالک کی نظر میں ہوگئی تو یہ کہتا ہے کہ میں از روئے ندات اشار ہاتھا اور پھر چھوڑ دےگا ، بہر حال بیغصب ہے نا جا تزہے آگر جدو مکم تیت ہی کی کوئی ہی ہو۔

علنده: عصاكا تذكره تمثيلا بكدادني في كوبعي ال صورت ساخذكرنا درست نيس، ظاهرب كدزائد قيت والى اشيار بدرجد اولى نا جائز ہوں گی ؛ لبندالا زم ہے کہ ما لک کودہ ہی واپس کردے۔

﴿ایناغصب شده مال اگر...﴾

﴿ مِدِيثُ بُهِ ٢٨٢٥﴾ وَعَنْ سَمُرَةً عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ وَجَدَ عَيْنَ مَالِهِ عِنْدَ رَجُل

فَهُوَ أَحَقَى بِهِ وَيَعْيِعُ الْمَيْعُ مَنْ بَاعَهُ رَوَاهُ أَحْمَدُ وَ أَبُو دَاؤِ دَوَ النَّسَائِيُ. قوجعه: حضرت مرة ني اكرم الله كارشاد الله كرت بي آب الله فرمايا: جس فض في اينامال بينه كى ياس موجود بإيا تووه

عین مالہ، اپنائی مال کی شخص کے پاس ہونا مقصد بیان بہ ہے کہ اگر غصب کردہ اور چوری شدہ اپنا کلمات حدیث کی تشریح مال کی شخص کے پاس موجود ہے اور مالک نے اس کواس کے پاس موجود پایا ہے تو مالک اپنا مال کا

متحق موكا اورده اس يرقبعنه كركاء وينبع المبيع، اوراكروه الشخص كى خريدكرده في تقى تواس كوجاي كروه اس معالبه كراي رقم كاجس مو وخريد كرلايا تها واصل ما لك اس في كى قيت كاكوكى ذمه دارنه وكار

حاصل كلام: چورى كامال فروخت كرنے سے اصل مالك كى مكيت سے فارج نه موگا، يرتيع باطل موگ _

ہلی هوئی شئ کو واپس کرنا هوگا_گ

﴿ مِدِيثُ بُهِ ١٨٢٧﴾ وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: عَلَى الْيَدِ مَا أَخَذَتْ حَتَى تُودِّي دَوَاهُ التَّرْمِلِيُّ وَأَبُوْ دَاؤدَ وَابْنُ مَاجَةً.

قوجهد: حعرت سرة تى اكرم الله كارشاد تقل كرت بن آب الله في مايان اتحد برايين لازم بوتى ب)وه جز جواس ني لى ب يهال حك كدوه اداكرد ، در ترزي ، ايوداؤر ، اين باج)

كلمات حديث كي تشريح على اليدِ ، ذمدارى برب ، تركيب من خرمقدم ، امومول ، مبتدامو فريعي ما احلقه الد صان معسد بیان بیب کہ جوفی کی سے لے گئ ہو، عاریۃ ہواور یا کی جی صورت پر ہوجب تک اس کوواپس ندی جائے گی لینے والے مروالی کرنالازم ہا کرونی شی موجود مولوونی اے والی کی جائے گی۔اکروہ موجود بند مولواس کا منان لازم ہوگا، بعض مرتب

ما لک کومعلوم نبیس یا اس کو یا دنیس تب محی ادا کرنالا زم ہے۔

﴿ اگر حَيوان سے نقصان پھونچا ھو﴾

﴿ صديثُ مُرك اللهِ وَعَنْ حُوام أَنِ سَعْدِ أَنِ مُحَيَّصَةَ أَنَّ مَاقَةٌ لِلْسَوَاءِ أَنِ عَاذِبٍ دَحَلَتْ حَائِطًا فَافْسَدَتْ فَقَضَىٰ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ عَلَى آهُلِ الْحَوَائِطِ حِفْظَهَا بِالنَّهَارِ وَإِنَّ مَا أَفْسَدَتِ الْمَوَاشِي بِالْلَيْلِ ضَامِنٌ عَلَى آهُلِهَا رَوَاهُ مَالِكٌ وَآبُو دَاؤَدَ وَأَبْنُ مَاجَةً.

تو جعه: حفرت حرام بن سعد بن محیصه نے نقل کیا کہ حفرت برار بن عازب کی اوٹنی ایک باغ میں داخل ہوگئی اور اس نے (باغ کو) خراب کر دیا، پس رسول الشفاف نے فیصلہ فرمایا کہ باغ کے مالکوں پر دن میں ان کی حفاظت کی ذرمدداری ہے اور رات کے وقت جو پائے اگر باغ کوخراب کردیں توجو پایوں کے مالک پرضان لازم ہوگا جوانہوں نے خراب کیا ہے۔ (مالک ،ایوداؤر ،این ماجہ)

ا المات حدیث کی تشری کے انظا، باغ، درخوں بادیواروغیرہ سے اس کا احاط کیاجا نا ہے؛ اس لیے اس کوحا لط کہا گیا ہے۔ کلمات حدیث کی تشریکی مقصد بیان یہ ہے کہ اگر کسی شخص کے حیوان نے کسی کے باغ اور کھیت دغیرہ میں داخل ہو کرنقصان

پو نچادیا ہے تو حیوان کے مالک پراس کا صاب نقصان لازم ہوگا۔

مسئله دوم: آپ الله فی میناندن ارشادفر مایا کددن کے حصہ میں ہاغ (وغیرہ) کے مالک پر حفاظت کرنااا زم ہے اور رات کے حصہ میں حیوان کا مالک اس کی حفاظت رکھے کہ باند رہ کرر کھے؛ للبذاا گررات میں نقصان ہوا ہے تو حیوان کے مالک پر ضان ہوگا۔ خسرودی و خداجت: (ا) دراصل از روئے عرف بیمقرر شدہ ہے کہ دن کے اوقات میں باغ وغیرہ کی حفاظت کی جاتی ہے ان کی محرانی ہوتی ہے اور اس طرح حیوان کی گرانی اور حفاظت رات کے اوقات میں ہواکرتی ہے۔

را) اورا گرحیوان کے ساتھاس کا مالک ہے تو بہر صورت دن ہویارات ، نقصان کا ضان مالک حیوان پرلازم ہوگا ، بیقول ہے امام مالک اورا امر شافع کی کا مادرات کے ساتھ اس کا مالک ہے تو بہر صورت دن ہویارات ، نقصان کا مالک ساتھ میں ند ہوتو ضان واجب ندہ وگا۔ (از تعلیق) اورامام شافع کی کا ماورا حنان کے خزد کید دن اور رات دونوں وقت میں اگر حیوان کا مالک ساتھ میں ند ہوتو ضان واجب ندہ وگا۔ (از تعلیق) ہنا ہدہ: ایک تفصیل آئندہ دروایت میں آر بی ہے۔

وغيراختياري نقصان پرضمان نهيي

﴿ صدیث نبر ۱۸۲۸﴾ وَعَنْ أَبِی هُرَيْرَةً أَنَّ النَّبِی عَلَیْ قَالَ الرِّجُلُ جُبَارٌ وَقَالَ النَّارُ جُبَارٌ رَوَاهُ أَبُوْ دَاؤَ دَ. قوجهه: حضرت ابوبريمٌ نبي اكرم اللَّهِ كاارشاد فقل كرتے بين آپ آلي فرمايا (جانوروں كے) بيروں (ے نقصان شده) معاف باورفرمايا آگ مواف بے۔ (ابوداؤر)

معاف جاور رمایا استوں ہے۔ المرخل: باؤل اوراس جگہ مطلب یہ ہے کہ جانور کے باؤل سے روندا ہوا، باؤل سے نقصان پہونچا کلمات حدیث کی تشریکی ہوا، جُباز جمعنی المهدر ، یعنی کوئی مثمان ندہوگا۔

وضرورتِ شدیدہ کے وقت

و مديث بمر ٢٨٢٩ و عَنِ الْحَسَنِ عَنْ سَمُرَةَ أَنَّ النِّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَالَ إِذَا آتَى أَحَدُكُمْ عَلَى

مَاشِيَةٍ قَانَ كَانَ فِلْهَا صَاحِبُهَا فَلَيْسَتَاذِلْهُ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ فِيْهَا فَلْيُصَوَّتُ ثَكَانًا قَانَ اَجَابَهُ اَحَدٌ فَلْيَسْتَاذِنْهُ وَإِنْ لَمْ يُجِبُهُ اَحَدٌ فَلْيَحْتَلِبْ وَلْيَشْرِبْ وَلَايَحْمِلْ رَوَاهُ اَبُوْ دَاؤِدَ.

خوجهه: صرّت حسن بعری برولسعه حفرت سمرة روایت کرتے ہیں کہ نی اکرم تلک نے فرمایا: اگرتم میں ہے کوئی شخص کی جانور کے پاس پنچے (اور دود دور کی بوجہ شدت بھوک ضرورت ہے تو)اگراس میں اس کا ما لک موجود ہے تو پھراجازت حاصل کرے اور اگر ما لک اس میں موجود نیس تو پھر تین مرتبہ آواز لگائے ، اگر کوئی اس کو جواب دے تو پھر اس سے اجازت حاصل کرے اور کوئی جواب نہ دے تو پھر دود ہو تکا لے اور کی لے اور سراتھ نہ لے ۔ (ابوداؤر)

ماشیدة ، دود دو الا جانور ، بکری وغیره ، فلیصوت ، امر کا میخه ، نصویت ہے بھتی بلند آ واز کرتا۔
کلمات حدیث کی تشری مصبح بیان سے کہ اگر ضررت شدیدہ ہو ، فاقہ والی صورت ہو ، دود دو کا جانور ہے ، مالک موجود نہیں ہے بھوک کی شدت ہے تو احتال ہے کہ بکری کا مالک آس پاس ہوگا ؛ اس لیے بلند آ واز کے ساتھ آ واز لگائے ، اگر موجود ہوگا تو جواب دے گا اور اگر جواب نہ آئے تو اب اس کے لیے مباح ہے بفتر صروت بکری کا دود داکال کروہ فی لے اور ساتھ لے کر جانے کی اجازت نہ ہوگا ، اور اگر اور استان کے لیے مباح ہے ابتدر ضروت بکری کا دود داکال کروہ فی لے اور ساتھ لے کر جانے کی اجازت نہ ہوگا ، اور اگر از روے عرف مید معردف ہے کہ عام حالت میں بھی دود داکال کر پینے کی اجازت ہوتو علی الاصطلاح مباح ہے۔ (ارتعابی ہوگا ، اور اگر اور اگر اور اگر عرف اباحت شدہ ہوں

﴿ صِدِيثُ بُهِرِ ٣٨٣﴾ وَعَنْ ابنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ دَحَلَ حَائِطًا فَلْيَا كُلْ وَلَا يُعْجِذُ خُبْنَةً رَوَاهُ التَّوْمِلِينُ مَاجَةً وَقَالَ التّوْمِلِينُ هَذَا حَلِيْتٌ غَرِيْتٍ.

قوجمه : حفرت عبدالله بن عرقنی اکرم الله کاارشاد قل کرتے ہیں آپ الله نے فرمایاً: جوفنی باغ میں داخل ہوتو وہ کھالے اور کپڑے کے اعد ندلے۔ (ترفدی، ابن ماجہ، اورامام ترفدیؓ نے یہ فرمایا بیصدیٹ غریب ہے)

کلمات حدیث کی تشریح اگر کسی علاقہ کا بیم ف (اور معروف) ہے کہ باغ میں جو پھل درخت سے زمین پر گراہوا ہے اس کو لے کلمات حدیث کی تشریح کے کرکھانے کی اجازت ہے تواب بیمباح ہوگا۔ لاین خد خبند کیڑا (وغیرہ) میں نہ بھرے۔

اورا گرعلی الاطلاق باغ والوں کی جانب سے اس کی بھی اجازت نہ ہوتب اٹھا کر باغ ہی میں کھانا جائز نہ ہوگا ؛اس لیے کہ اصلِ تھم شری یک ہے کہ اجازت کے بغیر کوئی ٹھی لیٹا ، کھانا حرام ہے اگر چہوہ قلیل مقدار ہی میں ہوجیسا کہ قر آن وحدیث ہے معلوم شدہ ہے۔

﴿عارية امانت بھی ھے اورواجب الضمان بھی ﴾

﴿ مديث تُمِرا ٢٨٣ ﴾ وَعَنْ أُمَيَّةَ بْنِ صَفُوانَ عَنْ آبِيْهِ آنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ السَّتَعَارَ مِنْهُ آذْرَاعَهُ يَوْمَ حُنَيْنٍ فَقَالَ آغَصْباً يَا مُحَمَّدُ قَالَ بَلْ عَارِيَةً مَضْمُوْنَةً رَوَاهُ آبُوْدَاؤَدَ.

متوجعه: حضرت اميه بن صفوال بروايت والد فقل كرت بين كه باليقين ني اكرم تفظ في ان سے غزوة حتين كون چندزر بين عاريث طلب كيں، پس ان كے والد صفوان نے كہا يا محمد! كياتم مجھ سے جھين كرلينا جائج ہو؟ (ابھى تك يەمسلمان نبيس ہوئے تھے) آپ ملك نے فرمايا نبيس! بلك عاريث ليتا ہوں جوكروا پس كردى جائے كى _ (ابودارُد)

کلمات عدیث کی تشریح استعاد ،باب استفعال سے، عاریة طلب کیا، اضی ادر اعد، در ع کی جمع ا برائے استفہام۔
کلمات عدیث کی تشریح عصباً بعورت غصب، عاریة مضنو نذ، ازروئے عاریت جس کی واپسی ہونے والی ہے۔

هافده: بعض روايات ين اس جكه "مؤدة" بعنى اداكرنا؛ للذادونون كامفهوم يى بواكه عاريت يركينا جس كى دالى بوكى ،كيا

عاريت من منان لازم عي؟ اس مسئله من اختلاف عاد رتعميل محل-

(الف) اصل بیہ ہے کہ جوفی عاریت پر لی کی ہو وہ امانت ہے اور امانت ہوئے ہوئے تن امانت کی رعایت واجب اور لازم ہے؛ اگر اس کی حفظ وحفاظت میں لا پروائی کی گئی ہو، اور وہ ہلاک ہوجائے ،کوئی نقصان پیرا ہوجائے (تو) اس صورت میں منان لازم آئے گا، حد مید ذکورہ میں آپ تالئے نے (غالبًا) اس امر کی جانب اشارہ کرتے ہوئے "مضمونة" فر مایا ہے کہ اگر دوران آبال ان کونقصان لاتن ہوگا تو اس کا حال دیا جائے گاس لیے کہ بیم صورت تلف کئے جانے کے ہم معنی ہوگا تو اس کا حال دیا جائے گاس لیے کہ بیم صورت تلف کئے جانے کے ہم معنی ہوگا۔

(ب)اورا گریق امانت کی رعایت کی گئی اس کے باوجو دلف ہوگئی تو امام ما لک وامام شافی وامام احمد کے نزویک بہر صورت منان واجب ہے،البتہ (مثلاً) حیوان ہے اور وہ قدرتا مرجائے تب منان نہ ہوگا،ان حضرات کا استدلال آئ حدیث تمبر (۳۱۲۸) ہے ہے جس میں آپ تالیق نے منان کی صراحت فرمائی ہے جس میں کو کی تفصیل نہیں ہے۔

احتاف یک خزد یک امانت بے لہذااس پر تلف بوجانے پر صان واجب ند ہوگا، استدلال میں ابوداؤد کی روایت ہے جواس طرح بے ا بے اعاریق مضمونة اور عاریة مؤداة "آپ تالئے نے ارشاوفر مایا"عاریة مؤداة "اس میں صان کی نمی ہے اور ایک روایت میں

"قال العادية و ديعة لا ضمان عليها الا ان يتعدى "اسروايت فدكوره من تفصيل كرمطابق صراحت باور فدكوره على على العادية و ديعة لا ضمان عليها الا ان يتعدى "اسروايت فدكوره من تفصيل كرمطابق صراحت بالواس باحق صديث فبر (١٨٣١) من منان كر جمل السام ما لك كويت في اوراطمية ان دلايا حما المحال الهابي بحرك المنان كرا المحال المحمد الما من وافل ند بوئ تفاس ليا انهول في اس انداز ساوال المنافرة المركبا كرا معاديت بركرة بعد كاحق ند بوجائد استفصيل ساتمام دوايات كرورميان ساتعارش فتم بوحميا -

وكفيل ضَاعِنُ هي ﴾ وحديث نبر ٢٨٣٢) وعَنْ آيِي أَمَامَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ الْعَادِيَةُ مُودًاةً وَالْمِنْحَةُ مَرْدُودَةٌ وَالدَّيْنُ مَقْضِى وَالزَّعِيْمُ عَارِمٌ رَوَاهُ التَّرْمِلِيُّ وَآبُوْدَاؤدَ.

المنحة كردياجائ المنحة المنحة المنحة ووهوالاحوان عطية ديا موكه جبتك دوده بالصمباح كردياجائ اوريا كلمات حديث كي تشري كيل دارورخت دي؛ تاكراس كيل كها سكى بهرحال بيعطيه بديري ايك صورت ب؛ البنداس من من من كاعطيه اور بديد به وگا؛ اس لي فرمايا: مو دودة ما خوذ به اده منحول يعن واپس من من كا معليه اور بديد به وگا؛ اس لي فرمايا: مو دودة ما خوذ به اده منحول يعن واپس كياجائي الدين مقضى: قرفه اداكرتا به وگا - اكن عيم منحل الكفيل، و فخص جس في كي مناخت لي موتى به وتى به عادم جو ماخوذ به المعرف به منافق به م

م المراحد المراحد المراجد الم

﴿نقصان پھونچاناظلم ھے﴾

﴿ مديث بْهِر ٢٨٣٣﴾ وَعَنْ رَافِع أَنِ عَمْرِ وَالْفِفَارِيِّ قَالَ: كُنْتُ عُلَامًا اَرْمِيْ نَخَلَ الْاَنْصَارِ فَاتَى بِي النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا غُلَامُ ا لِمَ تَرْمِيْ النَّخَلَ قُلْتُ اكُلُّ قَالَ فَلَا تَرْمٍ وَكُلْ مِمَّا سَقَطَ فِي ٱسْفَلِهَا ثُمَّ مَسَحَ رَأْسَةُ فَقَالَ: اَللَّهُمُّا اَشْبِعُ بَطْنَهُ رَوَاهُ التَّرْمِلِيُّ وَاَبُوْدَاؤُدَ وَابْنُ مَاجَةَ. وَسَنَذُكُرُ حَلِيْتُ عَمْرِو بِنِ شُعَيْبٍ فِي بَابِ الْلَقْطَةِ اِنْشَاءَ اللَّهُ تَعالَىٰ

ال روایت میں (۱) دضاحت اور مراحت ہے کدورخت پرے پھل تو ٹر کھانا جائز نہیں ہے بالا یک ماکت جدیث کی تشرق کی تشرق کی مراحت کیساتھ اِ جازت ہو،اور (۲) اگر درخت سے ٹوٹ کر زمین پر پھل کرا ہوا ہے قواسکی اجازت اور

ا باحث فرمانی ہے، بہر حال بیاباحت از روئے عرف تھی ،اس وقت اس کی عام اجازت تھی ،اگر کسی علاقہ میں آج بھی اس کی اجازت ہو تب کوئی حرت نہیں والا چھراس کی بھی اباحث ندرہے گی ،کسی کا مال اگر چنگیل مقدار ہی میں ہو،طبیب نفس کے ساتھ ہی حلال ہوگا۔

الفصل الثالث

﴿ زمین پرغاصبانه قبضه کرنے پروعید﴾

﴿ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ اَبِيْهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ اَخَذَ مِنَ الْاَرْضِ شَيْعًا بِغَيْرِ حَقَّهِ خُسِفَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى سَبْعِ اَرْضِيْنَ رَوَاهُ الْبُخَارِئُ.

مر جعه : حفرت سالم برولست والبدخود فل كرت بين ان كوالد فرمايا كدرسول السُّلَقَة في ارشاد فرمايا: الركسي فن بلاق كسي زيين كوغصب كرليا تووه بروز قيامت اس زيين كرساته سائوين زيين تك دهنسايا جائے كا_(بناري)

﴿ صديث بُهِ ٢٨٣٥﴾ وَعَنْ يَعْلَىٰ بْنِ مُرَّةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَنْ آخَذَ ارْضًا بِغَيْرِ حَقِّهَا كُلُفَ اَنْ يُحْمِلُ تُرَابَهَا الْمَحْشَرَ رَوَاهُ آخْمَدُ.

موجعه : حضرت يعلى بن مرة في بيان كيا كه ميل في رسول التعليقة سا آب تلكة فرمار به تعرض في بلا استحقاق كسى كى زمين كوغصب كرليا تو بروز يحشروه مكلف كياجائ كاكهاس كي منى كوا شائد _ (احرة)

﴿ زمین پرغاصبانه قبضه اگرچه قلیل هو﴾

﴿ صَدَيَ بَهِ ٣٨٣٦﴾ وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّهِ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: آيُمَا رَجُلِ ظَلَمَ شِيْراً مِنَ الْآرْضِ كَلَّفَهُ اللّهُ عَزَّ وَجَلَّ اَنْ يَخْفِرَهُ حَتَّى يَبْلُغَ اخِرَ سَبْعِ اَرْضِيْنَ ثُمَّ يُطَوِّقُهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ حَتَى يُقْطَى بَيْنَ النَّاسِ رَوَاهُ اَحْمَدُ.

خوجمہ: حضرت یعلیٰ بن مرڈ نے بیان کیا کہ میں نے رسول اللہ اللہ کے سا آپ تھے فر مار ہے تھے جس شخص نے ایک بالشت بحرز مین ظلماً لی ہوگی تو اللہ تعالیٰ اس کوظم دے گا کہ اس کی کھدائی کرے یہاں تک کہ ساتویں زمین کے آخری (حصہ) تک پہونچ جائے اور پھر قیامت کے دن کے آخر تک اس کے ملے میں ہار بنا کرڈ الی جائے گی یہاں تک کہ لوگوں کے درمیان فیصلہ ہوجائے۔(احریہ)

کلمات حدیث کی تشریخ کی این گزر چکا ہے۔ (ب) ان روایات ، (۳۸۱۳ میں بعن "غصب کرده زین" پرعذاب آخرت کا علیات کرد کا ہے۔ (ب) ان روایات ، (۳۱،۳۵،۲۸۳۳)، یم کلمات وعید مختلف ارشاد فرمائے

ہیں، البتہ ان سب میں ایک نوعیت مشترک ہے کہ دہ عذاب زمین ہی کے ساتھ ہومج، خواہ کلے میں'' طوق'' بنا کر ڈالا جائے اور یاز مین میں اس کو'' دھنسا دیا جائے'' اور یا اس کو زمین کی مٹی افعانے پر مکلف کیا جائے، یہ عذاب کی مختلف انواع بھی ہو سکتی ہیں، اشخاص کے اعتبار سے نوعیت مختلف ہوں گی۔ (والتّداعلم بالصواب)

باب الشفعة

﴿ حَلِّ شفعه كابيان ﴾

المشفعة: لغة مشتق ب شفع بي بمعنى المانا الضم اوراس جگر مفعول في عنى بين ايك معنى جووَتر كى ضد بور نه بونا الم الم اله اله والهونا ، جفت بهونا اورشر عا وعرفا حق شفه كامفهوم بيب كرشركت اوريا پزوس كى دجه سر يك يا پزوس كى فروخت كرده اور فروخت بوك و وخت كرده اور فروخت بوك و الى جائيداد من فريدارى كاحق وابسته بونا اوراختهار كراس هي بيتريف بحى بوكتي بين ده مليك صخصوص "شريعت كيان كرده طريقه پرما لك بوجانا ، بصورت شفعه كراس هي كواپن زيين كراته ها ناب ، جس كويتن حاصل بوگاده شفيج بوگا مندودى و ضعاحت: يدي شفعه زيين ، جائيدادى كراس هي كواپن زيين علاء طابرشانا اين حزم ظاهري كردي برخى مي ميروت بين بيان كرده الم و يا غير منقول بوء اوراس پرامت كالجاع به اختلاف نهيس -

علی شفته کی طرح ماصل ہے؟ اولا تونی نفر حق شفعہ ابت اور جا کز ہے ، شروع ہالبت اسبابِ تن بی تفصیل اور اختلاف ہے۔
حضر است انکہ اللہ فی اور جما ہیر علماء کے نزدیک بیحق فظ شریک تونی ہوگا جوشریک فی انہی ہوگا ، اور ان حضر ات کے نزدیک پڑوس کی وجہ ہے جی بیا سخقات ہے؛ البت وہ جا بر ملاصق ہو ، اور اگر حقوتی ارض پڑوس کی وجہ ہے جی بیا سخقات ہے؛ البت وہ جا بر ملائ سے موجہ کی میش کر کت ہے (مثلاً) جی طریق اور حق شرب (بالکسر) شرکت ہے جب بھی بیت بر قر اردے گا اگر چراصل ملکست اوض بی تقسیم ہو چی میں شرکت ہے؛ کیونکہ من مرر اور حرج ہے محفوظ بید کی بناد پر بیش شریعت نے دیا ہے وہ ان مذکورہ تیز ل صور تول میں موجود ہے۔

دلاخل چید ضفاد : حضر ات ایک الله شفعة "بنا اہر اس میں موجود ہے اور حضرت مثان ہے بھی (موتوفاً) مروی ہے "افا وقعتِ الحدود فی الار حق فلا شفعة "بنا ہر اس میں موجوم ہے اس لیے شرکت ہی میں بیت ہوگا۔

استدلال احناف: بروامت ابی رافع مدیث نمبر (۲۸۳۹) ش آپ مافع کا ارشاد به المجاد احق بسقبه (الخ) اور سقب (سین اورق برفتی به بخی شفی به بنیز مدیث نمبر (۲۸۳۹) اور مدیث نمبر (۲۸۳۹) ش بحی بهراحت جارکا تذکره به النال المال سین اورق برفتی به بار بحی سبب به اورجن روایات ش بظایر نمی به ان روایات سے اس کی تغییر به وجائے گی اور بیر (بحی کها جاسک به بیشتر به وجائے گی اور بیر (بحی کها جاسک به بیشتر به وجائے گی اور بیر (بحی کها الاطلاق نمی بیشتر به وجائے گی اور بیر (بحی کها الاطلاق نمی به بیشتر به وجائے گی اور بیر ایمان کی بیشتر کمی بیشتر کمی بیشتر کمی بیشتر کمی الاطلاق نمی به بیشتر کمی بیشتر کم

الفصل الاول

﴿حق شفغه اورتقسيم﴾

و من بمبر ٢٨٣٧) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: فَصلَى النَّبِي صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بِالشَّفْعَةِ فِي كُلِّ مَا لَمْ يَفْسَمْ

فَإِذَا وَقَعَتِ الْحُدُودُ وَصُرِفَتِ الطُّرُقُ فَلَا شُفْعَةَ رَوَاهُ الْبُخَارِيُ.

قوجهه: حضرت جابرٌ ني بيان كيا كرسول التُعَلَّقُ ني براس في مِن جَوْتِيم ندكي كَن شغه كا فيعل فرمايا ب (يعني آميس شغه جارى موسكا من جنب عدودوا قع موجا كي (كدون ميم كراي ك) ادرواسة جمير لي (ادر برايك ني خاص كرايا) تو جرأيس شفه يس المنائي

راستہ بھی بدل جائے گا،فلا النع فی شفعہ مندالا حناف اس کا مطلب یہ ہے کہ فی شرکت والی صورت فتم ہوگئ ہے نہ کہ دوسری وجو ہات جس کی تفصیل گذشتہ سطور میں معلوم ہو چکی ہے (ازتعلق دغیرہ)

﴿ مِدِيثُ مُبِر ٢٨٣٨﴾ وَعَنْه قَالَ: ۚ قَطْنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالشُّفْعَةِ فِي كُلُّ شِوْكَةٍ لَمْ تُقْسَمْ رَبْعَةٍ أَوْحَاتِطٍ لَايَحِلُ لَهُ أَنْ يَبِيْعَ حَتَّى يُؤْذِنَ شَرِيْكُهُ فَإِنْ شَاءَ أَخَذَ وَإِنْ شَاءَ تَرَكَ فَإِذَا بَاعَ وَلَمْ

يُؤْذِنَهُ فَهُوَّ أَحَقُّ بِهِ رَوَّاهُ مُسْلِمٌ.

قوجهه: صرت جابر في بيان فرما يا كدرسول الله الله في في في الفيد فرمايا بم مشتر كه چيز من جوكه تقسيم نه بهوني بوء مكان بويا باغ، اس کے لیے جائز نہیں ہے فردخت کرنا یہاں تک کہا ہے شریک سے اجازت لے، پھراگروہ شریک چاہے تو خرید کرے ادر آگر جا ہے جھوڑ دے (یعنی شفعہ کا مطالبہ نہ کرے) اور اگر فروخت کر دیا اور شریک سے اجازت نہ لی ہوتو پھروہ اس کا زیادہ حق دار ہے (کہ بطورِ

بعل، مقصد بیان بیہ کا گرایک شریک اپنا حصر فروخت کرتا ہوتو وہ دوسرے شریک سے دریافت رے اگر وہ خریداری سے الکار کرتا ہے اب دوسرے کوفروخت کرسکتا ہے، اطلاع اور اجازت سے قبل مناسب نہ ہوگا ؛ کیونکہ وہ مقدم

ہے خریداری کے لیے اور ای وجہ سے حل شفعہ دیا گیا ہے۔

عادد: اس روایت سے میر معلوم ہوا کے زمین اور جائیدادہی میں بیتم ہے، اور جماہیرعلار کا قد بہتم میں میں ہے۔

﴿ حَقَّ شَفْعَهُ بِرَانِي يِرُّوسٍ ﴾ ﴿ صديث بُهِ ٣٨٣٩ ﴾ وَعَنْ آبِيْ وَافِعٍ قَالَ: قَالَ وَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ٱلْجَادُ اَحَقُ بِسَقَبِهِ

رَوَاهُ الْهُخَارِيُ.

قوجهد: حفرت ابورافع في الكرسول المنطقة فرمايا يروى (شفعه) زياده فق دار بافي قربت ونزد كي كيوجد (بخاري) اس روایت میں بھراحت بیان ہے کہ فل شفعہ پڑوں کے لیے بھی ہے اور احناف کی بیددلیل ہے کلمات حدیث کی تشریق ہے۔ کلمات حدیث کی تشری ہے۔ بسقیہ سقب بمعنی القرب، پڑوں اور بابرائے سپیت ہے۔

وكفده: شريعت في يروى كربهت حقوق بيان ك ين اورآب الله في اس كى بهت تأكيد فرمانى م اس ليدي شفعه مى بروس کے لیے ہونا ضروی معلوم ہوتا ہے، حدیث نمبر (۲۸۳۹) میں جع جار کا تذکرہ ہے ای مناسبت سے اس کے بعد رہمی حق ویا حمیا ہے، جیسا کروریث نمبر(۲۸۴۰) ش ارشادے۔

<u> چپڑوسی کا حق ہ</u>

﴿ صِدِيثُ مِهِ ١٨٨٠ ﴾ وَعَنْ آبِي هُوَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : لاَ يَمْنَعُ جَارٌ جَارَهُ أَنْ يَغْرِزُ خَبْسَةً فِي جِدَارِهِ مُتَّفَقَّ عَلَيْهِ.

قوجمه: حضرت الوجريرة في تقل كيا كدرسول التعلية في فرمايا: كوئى بروى من ندكر اين يروى كواجي ديواري ككرى كارف س

(کیڑاوغیرہ ڈالنے کے لیے)۔ (بخاریؓ وسلمؓ)

ر پرورورور المسلم المرادي الم المريد المريدي الم المريدي المريدي الكائري (جيسي في) الكائرة وق بروس كى رعايت كرتي بوئر عن ند كلمات حديث كي تشريح كي الما جائد علاء كى ايك جماعت كيزديك بدام برائد وجوب ب اور حعزات ائد ثلاث ك

زويك يدهم استحابي ہے، وجو لي نبيل ہے،

مدودی وضاحت: اگر کی بھی تم کا ضرر اور حرج کا اندیشہواس وقت منع کیا جاسکتا ہے۔

﴿اگرراسته میں اختلاف هو﴾

﴿ صِرِيتُ تَهِر ٢٨٣١﴾ وَعَنْه قَالَ: كَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: إِذَا نُحَتَلَفْتُمْ فِي الطَّرِيْقِ جُعِلَ عَرْضُهُ سَبْعَةَ اَذْرُع رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

توجمه: حضرت ابو ہریرہ فی نیفل کیا کررسول السّنظاف نے فر مایا کہ جبتم راستہ میں اختلاف کرنے لگوتو راستہ کی چوڑ ائی سات ذراع کردی جائے۔(مسلم)

کلمات صدیث کی تشری اگرند یم راسته مقررشده ندمو، جدیدراسته چالوکرنا بادراتل محلّه کے درمیان اختلافی صورت پیدامو کلمات صدیث کی تشری جائے ، باہم اتفاق ندمو، تب سات ذراع کی بقدر راسته عرضاً موکا ، اور اگرفته یم راسته ہے تو ای

ر است جس مقدار پر تجویز ہورہے ،اس میں ہے کی مخض کوئی ندہوگا کہ اس میں ہے کی جزر پر بھند کرے۔

الفصل الثاني

﴿جانیدادکی فروختگی مناسب نھیں﴾

﴿ ودیث بُر ۲۸۳۲﴾ عَنْ سَعَیْدِ بْنِ حُرَیْتٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ: يَقُولُ مَنْ

ہَاعَ مِنْكُمْ دَاراً اَوْ عَقَاراً قَمِنَ اَنْ لَا يُبَارَكَ لَهُ إِلّا اَنْ يَجْعَلَهُ فِيْ مِثْلِهِ رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ وَالدَّادِمِيُّ.

قوجعه: حعرت سعید بن حریث نے بیان کیا کہ میں نے رسول الشَّنَا اُللَّهُ سے شاآپ تَنْظَةُ فرماد ہے تھے آم میں سے جوشش کوئی مکان یا زمن فروخت کرے تو وہ اس لائق ہے کہ اس کو برکت نہ دی جائے گریہ کہ اس (کی قیمت) کوای طرح کی چیز میں لگا دے (یعنی فروخت کرے تو وہ اس لائق ہے کہ اس کو برکت نہ دی جائے گریہ کہ اس (کی قیمت) کوای طرح کی چیز میں لگا دے (یعنی اُرون اُرتِی اُرتِی اُرتی)

کلمات حدیث کی تشریح کے فین بمعن هی مناسب، مقصد ارشادیہ ہے کہ صاحب جائیدادکویہ ہدایت ہے کہ وہ جائیداد فروخت کلمات حدیث کی تشریح کے دومری جائیداداس کلمات حدیث کی تشریح کے دومری جائیداداس رقم ہے خرید کرے اور اگر کی وجہ نے کہ ای طرح کی کوئی دومری جائیداداس رقم ہے خرید کرے ، اگر کسی اور مصرف بیاجائے گا تو برکت نہ ہوگی ۔

ز مین جائد ادوغیره پر بلاکت اورضررتقر یا لاحی نیس بواکرتا ہے وہ محفوظ رہتی ہے، اور دیگر اشیار محقولات میں بلاکت اور نقصان کے امکا تات زائد ہوتے ہیں، نقدر قم میمی جلد خرج ہوجاتی ہے، فالاولیٰ ان لا تباغ (ارتعیق مح الوضاحت)

دِپڑوس بھی سبب ھے برانے شفعہ ک

﴿ صديث بمبر ٢٨٣٢ ﴾ وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: أَلْجَارُ اَحَقُ بِشُفْعَتِهِ يُنْتَظَرُ لَهَا وَإِنْ كَانَ غَائِبًا إِذَا كَانَ طَرِيْقُهُمَا وَاحِداً رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتُّرْمِلِيُّ وَابُوْ ذَاؤذو ابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِمِيُّ. قوجهه: حضرت جابرٌ نِقَل كيا كرسول السُّلَا في ارشاد فرمايا: بروى الناه مَن دارياده في دارياى كي وجد (فرونت کرنے کے وقت) انظار کیا جائے گا گروہ موجود نہ ہوبشر طیکہ دولوں کا راستہ ایک بن ہو۔ (احمد، مزند کی ابدداؤر ، ابن ماجہ، داری)

اس روایت ہے می مراحنا معلوم ہو کیا کہ دقی شفعہ پڑوس کے لیے بھی ہے؛ لہٰذاا گروہ پڑوی حاضر نہ کمات حدیث کی تشریح کی اور کری کوفرو دنت کرنا ہے اواس کی آمہ تک انظار کیا جائے گا۔

اذا المع ،اس من يرتمر ع كريدوس موفي من 'راسة' كالجي اعتبار مواكرتا -

﴿ حَقَّ شَفْعَهُ كَسِ شَنَّى مِينِ هِي ؟ ﴾

﴿مَنَادِعَامَّهُ كُونتُصان بِهُونْچِانابِهِي حَرَامُ هِي﴾

﴿ صَلَى اللَّهُ وَعَنْ عَبْدِاللَّهِ بَنِ حُبَيْشٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ قَطَعَ سِدْرَةً فِي سِنْرَةً صَوَّبَ اللَّهُ رَأْسَةً فِي النَّارِ رَوَاهُ آبُوٰ دَاؤَدَ وَقَالَ: هَذَا الْحَدِيْثُ مُخْتَصَرٌ يَغْنِي مَنْ قَطَعَ سِدْرَةً فِي سِنْرَةً فِي اللَّهُ رَأْسَةً فِي النَّارِ. فَلَا إِيسْتَظِلُ بِهَا ابْنُ السَّبِيْلِ وَالْبَهَائِمُ غَشْماً وَظُلْماً بِغَيْرِ حَقَّ يَكُونُ لَهُ فِيْهَاصَوَّبَ اللَّهُ رَأَسَةً فِي النَّارِ.

متوجهه: حفرت عبدالله بن حيش في نفل كيا كدرسول الله الله في أرشاد فرمايا: جس فخص في بيرى كا درخت كاف ديا تو الله تعالى دوزخ كي آگ يس اس كيمركوالله كرے كا۔ (ابوداؤر الله الله الله واؤر في فرمايا كه بيروريث مختص بيرى كا درخت كون كر جس فخص في جنگل كه بيرى كه اس درخت كونات ديا جس سے جو يائے سابير حاصل كرتے تے بطور ظلم جس جس اس كاكوئى حق بھى ندتما تو الله تعالى اس كمركودوزخ كي آگ بيس الناكردے كا۔

الغصل الغالث

﴿حَقِّ شَفْعه كس ميں هے؟ ﴾

 تر جمعہ: حضرت عثمان بن عفال نے ارشادفر مایا جب کہ زمین میں معدود قائم ہوجا کیں تو پھراس میں حق شفید بیس ہے اور کئو ہی میں اور نہ مجور کے در خت میں حق شفعہ ہے۔ (امام مالک)

مديث المستوحديث كي تشريح الكركاجز واول"اذا وقعت النع" كي تفصيل كذشة روايات كے تحت معلوم او چك ب، كلمات حديث كي تشري و اجزار" و لاشفعة النع" النعن على شفعه ندكوي بن بن باور ندر فتول بن ب-

بات الغصاقات والحزارقة

﴿عقدِ باغبانی اور کاشتکاری کابیان ﴾

بیدد عقد ہیں، اور کسب معاش کی بید دسری ہوی صورت ہے(۱) باغات کی شرمعالم کرنا۔ (۲) زیمن شرکا شکاری کا مقد کرنا، اور بیدونوں عقد بھی قرآن وصدیث سے ایس بین بھٹا قرآن کریم ہیں ہے: قال الله تعالیٰ "افراً ایشم مَا تَحُوسُونَ النّم نَوْرَعُونَ النّم وقال تعالیٰ "وفی الارْضِ قِطَع مُنتَجَاوِرَاتٌ وَجَنّاتُ النّم "اورا آیت ہی جرث (کاشکاری) کا تذکرہ ہاور دوسری آیت ہی برث باغات (جنات) کا بھی تذکرہ ہے، المساقاة، یعنی ان یعامل انسانا علی شجوۃ النے کدوختوں کو سراب کرتا، ان کی دیکی رکور کی، (اور) تربیت کرنا اوراس برمعالم اور معالم ورمعالم ورمعالم ورمعالم ورمعالم ورمعالم اور معالم اوران کی والوں کے درمیان اجزام میں کہتم برمعالم وہ ونا۔ اور المعین اور کے الک اور باغ کے اللہ المن برمعالم وہ ہوا ہو گئی اللہ کے اللہ المناق کی معالم وہ اور معالمہ اور معالمہ اور میاں کے باقات اور وہاں کی ارائنی ہی کا شت (حرارمت) کے تی معالم وہ مواتھ اور محملاً وہی کرتے ہی تھی کی سنت ہے، اور امت کا اس پراتھاتی اور وہاں کی ارائنی ہی کا شت (حرارمت) کے تی ہی معالم وہ مواتھ اور محمل کی کرتے ہی تھی کی سنت ہے، اور امت کا اس پراتھاتی اور ایمان بی قائم ہے۔

اوربعض روایات میں بعض امحاب سے جوعدم موافقت مروی ہوده در اصل مغہوم کے اختبارے اختلاف ہوا ہے، فی نفس سے مقد جا تزہے۔ جن روایات سے دومرامغہوم معلوم ہوتا ہے اس کی وضاحت ان روایات کے تحت معلوم ہوگی انشار اللہ۔

(ب) آپ الله كايبود شير كرماته يدمعاطات كرنا اور معرات محابرًا الى يرحمل كرنا، جيسا كدهديث تمبر اهم المل بيان بين هجرة الا يزرعون الغ.

خلاصة كلام: مساقات، سقى سے اخوذ ہے، بمعنى پائى دینا، سراب كرنا، اور مزادعة، ذرع سے اخوذ ہے بمعنى يكئى۔ اور بہد دولوں باب مفاعلة كوزن پرايك مصدر بين، بهر حال آخرى منهوم كاعتبار سے دولوں كا مقصدا يك بى ہے اور فرق اس قدر ہے كہ ايك كاتعلق درخت كے ساتھ اور دوسر كاتعلق زين كے ساتھ ہے (خلاص انتظيق بحوائ بلي اور قرق ازاسدى) هافده: جب دولوں قريق كے درميان بي معابده ہوكيا توزين اور باغ ايك فريق كے حوالہ ہوں كے تاكده عمل كرے۔ عقد صفاد عة اور القوال هنقهد: (الف) مساقات (في الا شجار) اور مرارعت (في الا راضي) امام اعظم كرزد يك قاسد ہے اورایام عظم کااستدلال باب کے تحت لد کورہ مدیث نبر (۲۸۴۹) سے بروایت من عبداللہ ا

(ب) حضرات ائمه والث اورامام ابو بوسف وامام محرّ نیز جمامیرابل علارسلفا وخلفا کے نزدیک شرائط کے ساتھ درست ہے اور مبائز ہے،ان معزات کا استدلال ہاب کے تحت نہ کورہ روایات ہیں جن کا اشارہ گذشتہ سطور میں بھی ہوا ہے۔

مزارعت اور کرار ارض کی تفصیل (۱) زین کا مالک، زین کوایک نقدر قم کے بعوض کرایہ پردے اور یایہ کرایک مقدار غلہ کرایہ پر مزارعت اور کرار ارض کی تفصیل دے میں الاتفاق جائز ہے جس طرح مکان وغیرہ کرایہ پردیا جاتا ہے، بہر حال یہ عمول یہ ہے

(٢) اگرزین کا مالک کاشتگارکوزین اس شرط کے ساتھ وے کہ زمین کے فلاں حصہ پرجو پیدادار ہوگی وہ مالکِ ارض کی اور باتی کاشکاری بیصورت بالاتفاق نا جائز ہے۔

(٣) زمین کے مالک اور کاشتکار کے درمیان معاہدہ ہوکہ پیداوار ہے مشتر کہ طور پرایک تہائی (اور یا جومقدار) طے ہوتو اس میں اختلاف ہے، کمامر ، مزیر تفصیل آئندہ، اراضی خیبر کے معاملہ سے متعلق ایک تحقیق بدے کہ آپ تلک کا جومعاہدہ اور معاملہ ہوا تھا وہ حرارمة ندتها؛ بلكدوه ازروع جزيدتها كه پيداواركا نصف اى جزيه ب: اس ليے كه آيت جزيد كے موتے موتے موع بحى ابل خيبر سے نه آپ اور نیا اور ندآ پ اور ندآ پ اور ندآ پ الله کے بعد حفرت ابو بکر صد این اور حفرت عرف نرید وصول نبیس کیا ، ظاہر ہے کدا کر یہ جرب والی نوعیت ہوتی تو بالصرور جزیدلیا جاتا بھی محی روایت ہے جزید لیٹا ایل خبیرے ٹابت نہیں ہے، واللہ اعلم۔

معدودی وضعاصت: ببرمال متأخرين فقهار احناف في جمابيرعلار اورحضرات صاحبين كول اورخين كرمطابق جواز كافتوى دیا ہے کے عقد مزارعت جائز ہے ادرآج تک بیمعمول ہے۔ (ماخوذ از ایسناح) تعامل کی تفصیل صدیث نبر ۲۸ میں ہمی ہے۔

الغصل الاول

﴿ ارضِ هَيبر پر عقد هونابرائيے مزارعت ﴾

﴿ مَدَيَثُ مُرِكِ ٢٨١٧﴾ عَنْ عَبْدِاللَّهِ بْنِ عُمَرَ آنٌ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَفَعَ إِلَى يَهُوْدٍ خَيْبَرَ تَغْلَ خَيْبَرَ وَٱدْضَهَا اِلَى آنْ يَعْقِيلُوهَا مِنْ آمُوَالِهِمْ وَلِوَسُوْلِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَطْرُ تُعَرِهَا رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَفِيْ رِوَايَةِ الْبُحَارِيِّ أَنَّ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْظَى حَيْبَرَ الْيَهُوْدِ أَنْ يَعْمَلُوْهَا وَيَزُدُعُوهَا وَلَهُمْ شَطُومًا يَغُورُ جُ مِنهَا.

ترجمه ومعلب: حعرت عبدالله بن عراس مردى م كم بالتقين رسول التعلية نيبرك يبود يول كونيبر كم مجورول كرباغ اورد ال کی زیمن اس شرط پردی کدوہ این اموال سے ان مس محنت کریں کے اور رسول النظاف کے لیے ان کے مجلوں (اور پیداوار) کا نعف حديوگا_(سلة)

اور تخاری کی روایت میں ہے کہ بیشک رسول السَّمالی نے خیبر کے یہود بول کو (باغ اور زمین) اس شرط پردیے کہ وہ ان می محنت كري اورز راهت كري اوران كى پيداوار من سے نصف حصدان (يبود) كے ليے ہے۔

کلمات حدیث کی تشریح کے من امو المهم جب الل خیبر یعنی بهودے معاہدہ ہوگیا تو آپ اللے نے وہ اراضی ، باعات ان کے حوالہ کلمات حدیث کی تشریح کے دریاء اور اصل معالمہ بیتھا کہ بہود ہی کام کریں مے اور اخراجات و مالی بھی انہیں کے ہوں مے اور

پداوار می سے نعف آ یہ اللہ کے لیے اور نعف ان کے لیے (چنانچددوسری روایت میں تقری کے)۔

ضوودی وضماحت : اگرچدوایات مل مدتر عقد کا تذکر نہیں ہے، اور عندالا حناف و بیشروری ہے کدرت عقد بھی معلوم ہواور

مقدارا جزار كي محليمين بوسعا ينحو جُ منها من الزرع كالثلثِ والربع وغير ذلك. (انطيق)

﴿مَفَايِرِهُ دَرِسَتُ نَهْيِنِ﴾

﴿ صريت بْمِر ٢٨٣٨ ﴾ وَعَنْه قَالَ: كُنَّا نُنَحَابِرُ وَلَا نَرِى بِلَالِكَ بَاساً حَتَّى زَعَمَ رَافِعُ بْنُ حَدِيْجِ آنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهِى عَنْهَا فَتَرَكْنَا مِنْ آجَلِ ذَلِكَ رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

نوجهه: حفرت عبدالله بن عرص مروى ب كهانهول نے بیان كیا كه بم مزارعت كیا كرتے ہے اوراس ش كوئى مضا نقة بیل بھتے تے يہال تك كروافع بن خدی نے كہا كه نبي اكرم اللغ نے اس منع فر مایا ہے تو ہم نے اس وجہ سے چھوڑ دیا۔ (مسلم)

ے کی تھری کی تھری کے اس روایت میں بیتذکرہ ہے کہ ابتداء حضرات محابہ عقد مخابرہ (مزارعہ) کرتے تھے ، مرحضرت مانغ نے خردی کہ آپ تھے نے اس مقدے منع فرمایا ہے؛ اس لیے (سحابہ کی ایک جماعت نے) از

روے اصلال اس کورک کردیا تھا۔ زعم بمعن قال، من اجل ذ لك يعنى اس مماندت (كى خر) كى دجه۔

خدودی و خداحت: عقد ش عراج از کا ایک پہلویہ کہا گیا ہے کہاس عقد ش جوزشن کے مالک کو پیداوار کا ایک جزدیا جائے گا (گویا کہ بید معاوضاور) کرایہ ہوگا "بعجزی منبها" اور بیمنسوخ ہان روایات ہاستدلال کرتے ہوئے جن ش زشن کو کرایہ پر دیا"بعوض ما یعنوج "کے ٹی واردشدہ ہے ... اور چونکہ بیاجارہ ججولہ ہوگا کہ بیمکن ہے کہ کی وقت زشن سے کچو بھی پیدا نہ ہواور مدین نہر ۱۲۸ ۲۸ کا احتاف کی جانب ہے جواب بیہ کہ آپ تا ہے ہے اہل خیبر سے جومعا ملہ فر ایا تھاوہ بھورت مسا قات اور حرارمت نیس تھا؛ بلکہ وہ بھورت خراج تھا کہ خراج کی مقدار مقرر کی گئی ، اور اہل خیبر سے (گویا کہ) مسلح ہوئی تھی ، اور خیبر کی اراضی پر فیمت کے طور پر (مالکانہ) می محکیت نہیں ہوا تھا، واللہ اعلیہ۔

چکسی خاص جگہ کی پیداوار کے ساتھ عقد کرنا پ

﴿ مديث بُمِر ٢٨ ٣٩﴾ وَعَنْ حَنْظَلَةَ بْنَ قَيْسِ عَنْ رَافِع بْنِ عَدِيْجِ قَالَ: أَغْبَرَيْنَ عَمَّاىَ أَنَّهُمْ كَانُوا يَكُرُونَ الْاَرْبَعَاءِ أَوْ هَيءٍ يَسْتَثْيِبُهِ صَاحِبُ الْاَرْضَ عَلَى عَهَا النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بِمَا يُنْبِتُ عَلَى الْآرْبَعَاءِ أَوْ هَيءٍ يَسْتَثْيِهُ صَاحِبُ الْاَرْضَ فَنَهَا نَا النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَنْ ذَلِكَ فَقُلْتُ لِرَافِع فَكَيْفَ هِي بِالنَّرَاهِمِ وَالدُّنَانِيْرِ؟ الْاَرْضَ بَهَا بَاسٌ وَكَانَ الَّذِي نَهِي عَنْ ذَالِكَ مَا لَوْ نَظَرَ فِيْهِ ذَوُوْ الْفَهُم بِالْحَلَالِ وَالْحَرَامِ لَمْ يَجِيزُوهُ لِهَا فَهُمْ بِالْحَلَالِ وَالْحَرَامِ لَمْ يَجِيزُوهُ لِهَا فِيهِ مِنَ الْمُنْعَاطُرَةِ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجهد: حضرت حظلہ بن قیس برولیت رافع بن خدت مروی ہے کہ انہوں نے بیان کیا کہ جھے کو بھرے دو پہانے خروی ہے کہ حضرات معاب تھی اگر مظاف کے دیانہ میں اگر مظاف کے دیانہ میں دیا کرتے تے بعض اس پیداوار کے جو کہ نالیوں پر ہویا کہ حصرصاحب زمین مستقی کر دیا کرتا تھا (کہ جو اس حصر پر پیدا ہوگا وہ زمین کی اجرت ہوگی) نی اگر مظاف نے ہم کواس سے منع فرما دیا، میں نے معزمت رافع ہے موال کیا کہ ذمین کو کرایہ پر دراہم اور دنانی کے وض دینا کیا ہے؟ انہوں نے جواب دیا کوئی مضا نقد نیس ، اور جس صورت سے منع کیا میا ہے دہ ایک صورت ہے کہ اگر اس میں کی جم مطال وحرام کے متعلق فور اگر کریں تو اس کواجرت جائز بی قرار ندوی ؛ کول کہ کیاس صورت ہے کہ اگر اس میں کی جم مطال وحرام کے متعلق فور اگر کریں تو اس کواجرت جائز بی قرار ندوی ؛ کول کہ کاس صورت ہے کہ اگر اس میں کی جم میں مطال وحرام کے متعلق فور اگر کریں تو اس کواجرت جائز بی قرار نے میں ؟

اس کومنع فرمایا ہے، اور ای طرح مالک زمین نے ایک صدر زمین کومشنی کر دیا ہو کہ جو پیدا وار اس جگہ ہوگی وہ زمین کا کرایہ ہوگا، یہ صورت بھی اول بی کےمثل ہے، لہذا یہ بھی درست نہیں ہے۔

هافله و الكر شير سطور مل بحى اس صورت كو بالا تفاق نا جائز قرار ديا كميا ب اكيونكدان دونول صورتول مي ايك تسم كاغر را در هو كه ب-تيسرى صورت به كه نقذر قم طے كى جائے كرايہ كے ليے ، فليس بها بالس (اس ميں كوئى حرج نبيس) كيونكه بيصورت خوب واستح غرروفيرونيس _ (ازتيلق)

﴿ مديث ُمْرِهُ ٢٨٥﴾ وَعَنْ رَافِع بْنِ خَدِيْجِ قَالَ: كُنَّا ٱكْثَرُ آهُلِ الْمَدِيْنَةِ حَقْلًا وَكَانَ آحَدُنَا يُكُوعُ أَرْضَهُ فَيَقُولُ هَذِهِ الْقِطْعَةُ لِنَى وَهَادِهُ لَكَ فَرُبَّمَا آخُرَجَتُ ذِهْ وَلَمْ تُخْرِجُ ذِهْ فَنَهَا هُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجمه: حضرت رافع بن خدت فرماتے ہیں کہ اہم اکثر اہلِ مدیندکا شکارلوگ تصاورہم میں سے کوئی ایک مخص اپنی زمین کرایہ پر دینااور (اس کی صورت یہ ہوتی کہ زمین کا مالک ہوں) کہتا ہیز مین کا حصہ جو میرے نیے خاص ہے (لہذا اس پر جو پیدا وار ہوگی وہ میری)اور یہ تیرے لیے، پس بعض مرتبہ ای حصہ میں پیداوار ہوتی اور دوسرے حصے میں پیداوار نہ ہوتی تو نبی اکرم اللے نے اہلِ مدید کو منع فرمادیا۔ (بخاری وسلم)

کلمات حدیث کی تشری حصالاً ،کاشتکار ،اخوجت،اس روایت میں اس وجه ممانست کو بیان فرمایا ہے کہ بیا اختال ہے کہ جس حصد کلمات حدیث کی تشری حصد کو مالک زمین نے خارج کیا ہوا ہے اس حصد پر پیداواری ہواور باتی پر پیداوانہ ہو، بسی پر خطر صورت ہےاور کرایدوار کے لیے اس میں ضرر ہے۔

﴿ افضل هے که زمین بغیر اجرت دی جانے برانے کاشت﴾

﴿ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهِنَى عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ لِطَاؤُ سِ لَوْ تَرَكْتُ الْمُخَابَرَةَ فَانَّهُمْ يَزْعُمُوْنَ اَنَّ اللَّهِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهِنَى عَنْهُ قَالَ اَئَى عَمْرِ وَإِنِّي أَغْطِيْهِمْ وَأُعِيْنُهُمْ وَإِنَّ آغْلَمَهُمْ آخْبَوَنِيْ يَعْنِي إِبْنَ عَبَّاسٍ اَنَّ النّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلِّمَ لَمَ يَنْهَ عَنْهُ وَلَكِنْ قَالَ اَنْ يَمْنَحَ آحَدُكُمْ آخَاهُ خَيْرٌ لَهُ مِنْ اَنْ يَاخُذَ عَلَيْهِ خَرْجًا مَعْلُوماً مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجهد: حضرت عرق نے بیان کیا کہ بیل نے حضرت طاؤس ہے کہا اگرتم مزارعت کو چھوڑ دیتے تو بہتر تھا؛ کیونکہ اکثر لوگ یہ خیال

کرتے (اور کہتے) ہیں کہ نجی اگر م اللے نے اس ہے منع فرمایا ہے، حضرت طاؤس نے جوابافر مایا اے عرو! بیس اکوز بین و بتا ہوں اور اکلی
اعانت کرتا ہوں، اور اکئے بڑے عالم نے مجھکو خبر دی ہے؛ یعن حضرت عباس نے کہ نبی اگر م اللی نے اس ہے منع نبیس فرمایا؛ لیکن (یہ)

فرمایا ہے اگر کوئی خص اپنے بھائی کوز بین برائے کا شت عطا کرد ہے تو اس کیلئے اس سے بہتر ہوگا کہ امیر معین کراید وصول کر ہے (بخاری وسلم)

فرمایا ہے اگر کوئی خص اپنے بھائی کوز بین برائے کا شت عطا کرد ہے تو اس کیلئے اس سے بہتر ہوگا کہ امیر معین کراید وصول کر ہے (بخاری وسلم)

کلمات حدیث کی تشریح کے تو سے ہے ہوئی معاوضہ نہ ہو اس معلی کوئی معاوضہ نہ ہو، اور

میمار عادیا موگا جووالی د عائے گا؛ چنانچاس کے بعد بحی تنصیل آئدہ مدیث میں ہے۔

﴿ وَصِينَ عَارِيةَ بِيرِ دَينًا ﴾ وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ كَانَتْ لَهُ ٱرْضَ

فَلْيَزْرَعْهَا أَوْ لِيَمْنَحْهَا أَخَاهُ فَإِنْ آبِي فَلْيُمْسِكْ أَرْضَهُ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

من جمه: حضرت جابر فقل كيا كدرسول الشمالية فرمايا كهجس كے پاس زمين ہوتو وہ اس ميس (خود) كاشت كرے يا اپنے ہما كى كوعطا كردے اور اگراس سے انكار كرے تو اپني زمين كور كھلے، (يه بطور تنبية فرمايا)_ (بناري وسلم)

کلمات صدیث کی تشری کی اگری وجہ سے خود نہ کرسکتا ہوتو اپنے مسلمان بھائی کو عاریہ دے بیزیادہ بہتر ہے اس سے کہ کوئی

معاوضہ لے مگراس سے میہ ہر گزمطلب نہیں ہے کہ عقد مزادعت کی ممانعت ہے؛ بلکہ نخاعاریہ دینے کی ترغیب ہے۔

﴿اگرفرائضِ جھادسے مانع ھوتو...﴾

﴿ صديث تُمِر ١٨٥٣﴾ وَعَنْ اَبِي أَمَامَةَ وَرَا يَ سِكُةً وَشَيْنًا وَمِنْ آلَةِ الْحَرْثِ فَقَالَ: سَمِعْتُ النَّبِي صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: لَا يَذْخُلُ هَذَا بَيْتَ قَوْمِ إِلَّا آذْخَلَهُ الذُّلُّ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُ.

قوجمه : حضرت انی امام سے مروی ہاں حالت میں گرانہوں نے ال اور کا شنکاری کے آلات دیجے تو فر مایا کہ میں نے ہی اکرم علی ہے سنا آپ قر مارے تھے بید چیز کسی قوم کے گھر میں داخل نہیں ہوتیں مگر اللہ اس میں ذکت داخل کر دیتا ہے۔ (ابخاری)

کمات حدیث کی تشری کے اسکة: وه آلات جو برائ کاشت ہوں؛ چنانچ من برائے بیان ہادر آلهٔ المحوث بیتشری اور آلهٔ المحوث بیان بید ہم وقت تیارد ہنا ہوا

کرتا تھا، کس وقت غزوات میں جانے کی ضرورت پیش آجائے!اس لیے آپ اللہ عالات اور وقت کے مقتضی کے بیش نظریہ ارشادفر مایا کہ کا شکاری میں مصروف ہوکر جہا دنہ ترک ہوجائے جوذلت کا سبب ہوگا، یہ ہرگز مقصد نہیں کیمل کا شکاری ناجا تزہے۔

<u>الفصل الثاني</u>

وغصب کردہ زمین پر کاشت کرنا ہ

﴿ صدیت نبر ۱۸۵۳﴾ عَنْ رَافِعَ بْنِ خَدِیْجِ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللَّهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ زَرَعَ فِی آرْضِ قَوْم بِغَیْرِ
اِذْنِهِمْ فَلَیْسَ لَهُ مِنَ الزَّرْعِ شَیْ وَلَهُ نَفْقَتُهُ رَوَاهُ التَّوْمِذِی وَابُوْ دَاؤَدَ وَقَالَ التَّوْمِذِی هَذَا حَدِیْتُ عَرِیْبٌ.

توجمه: حفزت رافع بن خدی فی اکرم آیش کاار ثان اللَّ کرتے ہیں آپ آیٹ کے فرمایا: جس تخص نے کی قوم کی زمین میں ان کی اجازت کے بغیرکاشت کی تو اس کا شت کرنے والے کے لیے (پیداوار میں سے) کچھ نہیں اور اس کو اپنا فرچہ کیا ہوا ہے گا، (اور تمام پیداوار مالک زمین کی ہوگی) (تر ذی کے ابوراؤر فی اور تر فی کی فرمایا بیرحدیث فرمایا ہے۔

عصد بیان یہ کہ اجارت کی ملک میں تعانی کا اختار کی نام کا است کرنا، کاشت کرنا، کا جائز ہے ؛ البذا کر کمی استحقاق نہ ہوگا؛ البتہ جواس نے خرج کیا ہے وہ اس کو دیا

جائے گاعلار کی ایک جماعت کا بھی تول ہے ، دوسرا قول ہے کہ کاشت شدہ (پیدادار) اس کو ملے گی البتہ زمین کا معادضہ دینا ہوگا۔

النصل الثالث

﴿عقد مزارعت مباح شیے ﴾

﴿ مديث نَبر ١٨٥٥﴾ عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِم عَنْ آبِي جَعْفَرٍ قَالَ: مَا بِالْمَدِيْنَةِ آهُلُ بَيْتِ هِجْرَةٍ الْا يَزُرَعُونَ عَلَى الثُّلُثِ وَالرُّبُعِ وَزَارَعَ عَلِيٌّ وَسَعْدُ بْنُ مَالِكٍ وَعَبْدُاللَّهِ بْنُ مَسْعُوْدٍ وَعُمَرُ بْنُ عَبْدِالْعَزِيْزِ وَالْقَاسِمُ وَعُرْوَٰةً وَالْ آبِيْ بَكْرٍ وَالُ عُمَرَوَالُ عَلِيٌّ وَابْنُ سِيْرِيْنَ وَقَالَ عَبْدُالرَّحْمَٰنِ بْنُ الْآسْوَدِ كُنْتُ أَشَارِكُ عَبْدَالرَّحْمَٰنِ بْنَ يَزِيْدَ فِي الزُّرْعِ وَعَامَلَ عُمَرُ النَّاسَ عَلَى إِنْ جَاءَ عُمَرُ بِالْبَذْرِ مِنْ عِنْدِهِ فَلَهُ الشَّطُرُ وَإِنْ

جَاءُ وَا بِالْبَلْرِ فَلَهُمْ كَذَا رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ.

قوجهه: حعرت قيس بن مسلمه بروايت الي جعفر روايت كرتے إين انہوں نے بيان كيا مدينه بين كوئى مها جركا مكان ايسانہيں تعامروہ (اہل مکاں) ایک تہائی ادرایک چوتھائی ہرز راعت کرتے تھے،حضرت علی ،حضرت سعد بن مالک ،عبداللہ بن مسعود ،حضرت عمر بن عبد العزيز، حضرت قاسمٌ وصفرت عروه ،حضرت اولا دِاني بكرصد اين ،آل عمر ،آل على اورابن سيرين (ان سب حضرات) نے زراعت كى ب ،اور حضرت عبدالرحن بن اسود فرماتے ہیں کہ میں عبدالرحن بن یزیدگوز راعت میں شریک کرتا تھا ،اور حضرت عمر نے لوگوں کے ساتھ باہم اس طرح معاملہ کیا کہ حضرت عمرتواہے یاس ہے جج دیں گےاور کا شت کرنے والا نصف حصہ بیدا دار کا حق دار ہوگا ،اورا گر کا شکار ا پنائ دي تو پران کا تناحصه موگا؛ مثلاً ايك تهائي، يا يك چوتھا كي ـ (بخاريّ)

اس روایت میں تقریباً حضرات صحابہ اور کبارِ تا بعین کاعمل مزارعت پراتفاق ہونا معلوم ہوا، اگریہ کہا کمات حدیث کی تشریح جائے کہیا جماعی مسئلہ ہے تو بھی درست ہوگا اور اس میں بعض شرائط کا بھی تذکرہ ہے۔

عامده: الم بخاري في تعليها الروايت كفل كيا م- البدر ، في - السطر ، نصف-

ياب الاجارة

﴿اجاره كابيان

کسب معاش کی ایک تذبیر بصورت اجارہ بھی ہے، ہر مخص تجارت نہیں کر سکتا ، اور نہ ہر مخص زراعت وباغبانی کر سکتا ہے ، اور اسباب معاش میں ضروری ہے کہ مختلف ضروریات کے لیے انسانی ضرورتوں کو پورا کرنے والے اور انجام دینے والے بھی ہوں ، باہم تعاون بھی ضروری ہے،اور ہر محض دوسرے کی ضرورت اوراعانت کرے،تدن ان تمام امور کا متقاضی ہے، بہر حال شریعت نے اجارہ کو بمی مباح قرار دیا ہے اور اس کی اصلاح کرتے ہوئے برائے اجارہ احکام ،مسائل اور ہدایات کو تفصیل کے ساتھ بیان فر مایا ہے اور عقد اجاره بھی کتاب اللہ اور سنت رسول اللہ سے ثابت ہے اور امت کا اس پر اجماع ہے، ہر دور میں اجار ہ معمول مدر ہاہے۔

قَالَ تِعَالَىٰ: قَالَتُ اِحْدَاهُمَايَا اَبَتِ اسْتَأْجِرْهُالآية. وقال تعالىٰ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَأْ تُوهُنَّ الْجَوْرَهُنَّ (الآية) وقال تعالىٰ لَوْ شِئْتَ لَاتَّخَذْتَ عَلَيْهِ ٱجْراً.....

ان ہرسہ آیات میں اجرت کے عمل کے جواز کی بھی دلیل ہے اور پہلے دور میں بھی اس پرعمل جاری تھا، اور قر آن کریم میں اس کو مان فرمایا ہے اور اس کے خلاف کوئی دوسرا تھم نہیں ہے جس کی وجہ سے اس کومنسوخ بھی نہیں قرار دیا جاسکتا ہے ؛ بلکہ بیاس اباحت محکم ہادراس برعمل برقرارے آپ اللہ کی شریعت میں بھی۔

ضروری وضاحت: بظاہرازردئے تیاس اس کامتقاضی ہے کہ عقد اجارہ درست نہ ہو؛ اس لیے کہ صنعت (کی شرط) پر عقد اجارہ ہوتا ہے دہ منفعت اس وقت معدوم ہوتی ہے اور معدوم فی پرعقد کیے ہو (؟) کیکن شریعت نے اس قیاس کی تقریر کا اعتبار نہ کرتے موئے انسانی ضرورت کے پیشِ نظرمباح قرار دیا ہے اور اگر چہ منفعت فی الحال معدوم ہے ؛ کیکن شرائط کے ساتھ وہ اس انداز پرمقرر

ہوتی ہے کویا کہ معلوم ہے۔(فاقیم ،اسعدی)

الغصل الأول

﴿ مَدَيَثُ مُبِرُ ١٨٥٧﴾ عَنْ عَبْدِاللَّهِ بْنِ مُعَقَّلٍ قَالَ زَعَمَ فَابِتُ بْنُ الصَّبِحَاكِ أَنَّ رَمُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَصَلَّمَ نَهَى عَنْ الْمُؤَارَعَةِ وَامَرَ بِالْمُوَ اجَرَةِ وَقَالَ لَا بَأْسَ بِهَا زَوَاهُ مُسْلِمٌ.

قوجهه: حضرت عبدالله بن معظل نے نقل کیا کہ ثابت بن ضحاک نے قربایا (خیال کیا) کہ بیشک رسول اللہ اللہ نے حرارعت (بعن بٹائی پرزمین ویئے) ہے منع فرمایا اور باہم اجرت پرمعاملہ کرنے کی اجازت (اباحت) فرمائی اور ارشاد فرمایا: اس میں کوئی مضا کھنہ نہیں۔(مسلم)

کلمات حدیث کی تشری کے گذشتہ باب کے تحت تفصیل معلوم ہو چی ہے کہ بعض صور تیں مزارعت کی شرعاً درست نہ ہونے کی وجہ سے دہ نبی کے تشریخ سے دہ نبی کے تحت ہیں ،اور جن شرائط اور ہدایات کیسا تھ شرعاً مباح ہے دہ اس نبی سے خارج ہوگی،

الندا المزارعة برالف لام برائع عبرب؛ لين ما علم عدم جوازه (ارتطن) اورعقد اجاره ك آپ سال في اجازت ارشاد فرمانى ب

﴿ صِرِيثُ مُبِرِكُ ١٨٥٧﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِخْتَجَمَّمَ فَأَعْطَىٰ الْحَجَّامَ آجْرَهُ وَاسْتَعَطَّ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

قوجمه : حضرت عبدالله بن عبال سے مروی ہے کہ نبی اکرم علی کے نسینگی لکوائی اور سینگی لگانے والے کو اجرت عنایت کی اور آپ سین نے ناک میں دواڑلوائی۔(بناری وسلم)

آپ ﷺ نے جب تجام کواجرت عنایت فرمائی ہے قومعلوم ہوا کہ اجرت پرکام کرنا اور کرانا مباح ہے، کلمات حدیث کی تشری کے چیشہ سے متعلق اول باب کے تحت تفصیل گزر چک ہے۔ (اسعدی)

﴿ حضراتِ انبياءِ كرامٌ اور بكريوں كا چُرانا﴾

﴿ صِرَيَتُ مُبِر ١٨٥٨﴾ وَعَنْ آبِي هُوَيْوَةَ عَنِ النَّبِيّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَابَعَتُ اللَّهُ نَبِيًّا إِلَّا رَعَىٰ الْفَنَمَ فَقَالَ اَصْحَابُهُ وَٱنْتَ؟ فَقَالَ: نَعَمْ! كُنْتُ ٱزْعَىٰ عَلَى قَرَادٍ يُطَ لِآهُلِ مَكَةَ رَوَاهُ الْبُحَادِيُ

قوجهد: حصرت الوجريرة ني اكرم الله كارشافقل كرت بي فرمايا: الله تعالى في كومبوث نبيس فرمايا مكر بول كو (ضرور) چرايا ب، آب الله كصحابة في عرض كياا ورآب الله في ارشاد فرمايا: بال إيس بحي ابل كمدى بكريال قيراطول كوش چرا تا تعا- (بخاري)

کلمات حدیث کی تشری (اجرت) رج ان بین اورآب میاند نے میں ، علی قرار بط: قیراط کی جمع ہوادا کی مقدار نصب

دائن؛ یعنی درہم کا چینا حصہ عالباً بیابک ماہ کی اجرت ہوگی ،اور آپ منطقہ کا بیل منصب نبوت کا زمانہ شروع ہوئے ہے قبل کا ہے۔ هافته ہ: خاص کر بیمل اس لیے بھی ہوگا کہ بکر یوں کے ساتھ رہ کر توت علم میں اضافہ ہو؛ اس لیے کہ ان کے ساتھ خوب مشقت برداشت کرنا ضروری ہواکرتا ہے۔ (ماخوذ) داهرت نه د ينے جانے پر وعيد ﴾

﴿ مديث مُبِر ١٨٥٩﴾ وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّه عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قَالَ اللّهُ تَعَالَىٰ : ثَلَالَةٌ آنَا عَصْمُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَجُلَّ آغطىٰ بِى لُمُ عَدَرَ وَرَجُلٌ بَاعَ حُرَّا فَآكُلَ لَمَنَهُ وَرَجُلٌ اسْتَاجَوَ آجِيْراً فَاسْتَوْفَىٰ مِنْهُ وَلَمْ يُعْطِهِ آجْرَهُ رَوَاهُ الْبُخَارِيُ.

قوجهه: صغرت ابو ہریرہ نے قال کیا کہ دسول الشعافی نے فرمایا: اللہ تعالی ارشاد فرماتے ہیں: تعن مخص ہیں بروز قیامت میں ان سے جھڑ وں گا: (۱) و فضی جس نے میراواسطہ دیااور مجرعہ دلکنی کی (۲) اور جس آ دمی نے کسی آزاد کوفروخت کیااور اس کی قیمت (وصول کی ہور) کھائی (۳) اور وقت میں اور درکوا جرت پر لیااور اس سے کام پورالیااور اس کی اجرت اس کونددی۔ (بخاری)

انا خصمهم الله تعالى فرمات بين كه ين ان تين فخصول سے مطالبه كروں گا اليعن اپندول كلمات حديث كى تشرق كى جانب سے ان كاحل طلب كروں گا۔

"بی" بعنی میرے نام (کے واسط کے ساتھ) عہد کیا، میرے نام کے ساتھ تم کھائی ،غدر بعن عبد عنی کی، شم کے خلاف کی، آزاد خص کو جر آغلام بنا کراس کوفروخت کیا ہو،استاجو ،اجرت پراجیرےکام کمل لیا ہو۔

مقصدیہ ہے کہ دنیا میں بعض بندے کمزور ہوتے ہیں اور انکی کمزوری کیوجہ سے ان پرظلم کیا جاتا ہے اور وہ کمزور تسم کے لوگ دنیا میں اپناحی وصول کرنے پر قادر نہیں ہوتے ؛ اس لیے خاص طور پر ان کمزور انسانوں کی جانب سے اللہ تعالیٰ بذات خود حق طلب کریں ہے۔

﴿ هِائز رُقْنِه بِر أَهِرت لينا ﴾

﴿ مديث بُرِ ١٨٦٥ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ آنَ نَقَوًا مِنْ أَصْحَابِ النّبِيِّ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ مَرُّوا بِمَاءِ فِيهِمُ لَدِيْعً آوْ سَلِيْمٌ فَعَرَضَ لَهُمْ رَجُلٌ مِنْ آهُلِ الْمَاءِ فَقَالَ هَلْ فِيكُمْ مِنْ رَاقِ إِنَّ فِي الْمَاءِ رَجُلًا لَدِيْعًا أَوْسَلِيْمًا فَانْطَلَقَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَقَرَا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ عَلَىٰ شَاءٍ فَبَرَا فَجَاءَ بِالشَّاءِ إلَىٰ أَصْحَابِهِ وَسَلِيْمًا فَانْطَلَقَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَقَرَا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ عَلَىٰ شَاءٍ فَبَرَا فَجَاءَ بِالشَّاءِ إلى أَصْحَابِهِ فَكُوهُ وَاذَلِكَ وَقَالُوا الْمَدْنِيَةَ فَقَالُوا : يَا رَسُولَ اللّهِ الْحَذَ عَلَىٰ كِتَابِ اللّهِ الْجُوا حَتَىٰ قَلِمُوا الْمَدِيْنَةَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللّهِ الْحَارِيُ وَفِى كَتَابُ اللّهِ رَوَاهُ اللّهِ مَلَىٰ اللّهِ مَا اَحَذْتُمْ عَلَيْهِ اَجْراً كِتَابُ اللّهِ رَوَاهُ اللّهِ مَا أَخَذَتُمْ عَلَيْهِ اَجْراً كِتَابُ اللّهِ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَفِي

قوجمه: حضرت عبداللہ بن عبال سے مروی ہے کہ نبی اکر مہتا ہے کے صحابہ کا ایک جماعت (ایک قبیلہ) کے پاس سے گزر ہوا (جو کہ) پائی (کے پاس نازل شدہ تھا یاان کی ستی نہرہ فیرہ کے قریب آبادتی) ان لوگوں میں ایک شخص ججھو یا سانپ کا ڈسا ہوا تھا۔ اس بستی موااہ رسوال کیا کہتم لوگوں میں کوئی شخص ججھو یا سانپ کا ڈسا ہوا ہے یہاں بستی میں ایک شخص بچھو یا سانپ کا ڈسا ہوا ہے (اس میں راوی کو شک ہوا ہے) چنا نچہان حضرات میں سے ایک صاحب (یعنی حضرت ابوسعید معرفی کے اور سورہ فاتحہ پڑھ کردم کردیا اس شرط پر کردہ چند بجریاں دیں، دہ آدی شدرست ہوگیا، یس میصحابی ان بریوں کو لے کراپ ساتھیوں کے پاس یہو نچ تو انہوں نے اس کو نا پند کیا، اور انہوں نے بیاب کی کہتم نے کتاب اللہ پراجرت کی ہے بہاں تک کدوہ صفرات کے بیار بول اللہ اللہ تعالی کی کتاب پراجرت کی ہے، رسول اللہ اللہ بین جی جس چیز پر معروات کے اور انہوں نے وال اللہ اللہ بین کر اور اس کو کا تعلیم کرو، اور اس کو، اور اس کی کتاب اللہ ہے کہ دور اور اس کو کا تعلیم کرو، اور اس کو، اور اس کی کا آب اللہ ہے (بخاری)، اور ایک روائے میں ہور دور سے کیا تم نے (اور اس کو) تعلیم کرو، اور اس کو، اور اس کی کتاب اللہ ہے (بخاری)، اور ایک روائے میں ہور دور سے کیا تم نے (اور اس کو) تعلیم کرو، اور اس کو کو کا کو سے کو کو کیکھوں کو کھوں کی کو کھوں کو کھو

م لوگ اے ساتھ مراہی حداقتم کرنا۔

المعاء يعن اس علاقه من جوتبيلة بادتها، ووتبيلة يعن إدتها كوم إلى إلى (حوض ياكنوال على علاق من المدين المروك الموادي ا

سأنب يا يجموكا كالامواموزق واسم فاعل والموظية وجماز ، يجونك كرنا_

مقعبد بیان بیہ کر قید کے ساتھ علاج کرنا یکل ہواجس طرح دوائی (وغیرہ) کے ساتھ کرنے پراجرت کی جاتی طرح یہ جم عمل کی اجرت ہے: اس لیے آپ تھا ہے اس کومباح فرمایا، بہر حال بیآ یات قرآن کو گون قلیل کے بعوش فروخت کرنے (والی صورت اوراس کے علم میں انہیں ہے، نیزاسی طرح بیتی ہم القرآن پراجرت لینے کے علم میں نہیں ہے؛ اس لیے آپ تھا ہے نے بعراحت ارشاد فرمایا 'ان احق المنے ''جن کا موں پراجرت لیتے ہوان تمام کا موں میں سے بیٹل عمدہ ترین ہے برائے اجرت میں ماد فرآن پراجرت لینا اوراس پرمعاوف لینا کہ کہ معاش بنا تا اوراس پرمعاوف لینا کسی محمل طرح درست نہ ہوگا جس کی تفصیل فضائل قرآن کے تحت معلوم ہو چکی ،اور قرآن کو کھنا بھل کرتا، بیٹل ہے،کسب ہے،اس پراجرت لینا مباح ہوادران دونوں کے درمیان فرق بھی خوب کا ہرہے۔

ضووری وضاحت: بدواقد دومری دوایات میں اس طرح مجی مردی ہے کہ جب بدعفرات صحابی علاقہ میں قیام پذیر ہوئے، علاقے کے لوگوں نے بوی بے مردتی کی کرفن ضیافت نہ کی تو ان حضرات نے اس دقیہ پرمعاوضہ لیا؛ چنانچد دوایت میں (بدیمی) ہے ''فصالحو هم علیٰ قطیع المعنم ''اس عبارت سے دومری نوعیت معلوم ہوگی گویا کہ فٹی ضیافت کا بیکر یول کا وصول کرنا ، سلح کرنا ، بدل ہوا، فا آبیح لهم اخلہ ذلك، (انتقیق)

<u>الفصل الثاني</u> ﴿ناجائز رُقيه﴾

دور جمع : حفرت خارجہ بن صلت بروایت عم خود تقل کرتے ہیں انہوں نے بیان کیا کہ ہم لوگ رسول الشفاق کے پاس سے اپ شہرکو روانہ ہوئے ، دور ان سفر عرب کے ایک قبیلہ پر ہمارا گزر ہوا تو اس قبیلہ کے لوگوں نے کہا کہ ہم لوگوں کو فبر لی ہے کہ تم اس مخص (یعنی رسول اللہ علیہ) کے پاس سے خیر (یعنی قرآن کر بم کی تعلیم) لے کر آرہے ہو، کیا تم لوگوں کے پاس کوئی علاج یا کوئی جماڑ ہے؟ چونکہ ہمارے یہاں ایک پاگل (اور دیوانہ) زنجے دول میں بند صابوا ہے ،ہم لوگوں نے کہا ہاں! چنا نچہ دولوگ ایک پاگل شخص کوزنجے دول میں جگڑا ہوا لے کرآئے، پس میں نے اس پرسورہ فاتح بین دن تک می اور شام (اس طرح) پڑھی (کہ) تھوک منہ ہیں (بوقت قراءت) جمع کرتااور پھراس پرتھ کارتا (ہوادم کرتا) راوئ بیان کرتے ہیں گویا کہ وہ ری ہے کھولا گیا (بعنی اس قد رجلد تندرست ہو گیا کہ بندھی ہوئی رک سے کھول دیا گیا) پھر ان لوگوں نے جھے کو مزدوری دی ، ہیں نے کہانہیں (لوس کا) یہاں تک کہ جس نی اکرم تھے ہے سوال کرلوں ، (چنانچ یہ میں نے ماضر خدمت ہو کرسوال کیا تو) آپ تھائے نے فر مایا: کھاؤا جھے کوانی زندگی کی تنم ابعض وہ لوگ ہیں جو کہ باطل منتر (جھاڑ) کے میں نے ماضر خدمت ہو کرسوال کیا تو) آپ تھائے نے فر مایا: کھاؤا جھے کوانے اور اجرت لی) ہے۔ (احدواؤد)

کار است مدیث کی تشریح الوجل یعنی آب الله ، جب شهرت موجاتی به اسطرح اشاره کرنے میں رجل مشہور کی جا ب کلمات حدیث کی تشریح این فران کے مرض میں جالا ہوتا،

فی القبود نین بائدها بوا، انشط مجول، کول دیا گیا، عقال ،ری فیدوة ، بوقب شاع، بوقب شام، بینی شخ اور شام کے وقت،
اجمعُ بزاقی، پڑھتے ہوئے بزاق کونوک زبان پرجع کرنا اور پڑھ کراس طرح پھونک لگانا کہ بیج عشدہ بزاق اس پر پھونک کے ساتھ
آئے، سی طریقہ بی ہے، رقیہ، کالفظی ما دور ہی ہے، لینی بزاق، لعاب وہن ؟ اس لیے کہ اصل رقیہ بین ہے، بہر حال اس علاج سے وہ
محتوہ تکررست ہوگیا۔

مقصدِ بیان بیے کرقیددواقسام پرہے: ایک باطل جوظاف شرع ہواور محرِشری ہو؛ للذائیرقیرام اوراس کے ذریعہ آ مربھی حرام ہے، اور دوسری تمری میری حیات کی تم ، جواب تیم عرام ہے، اور دوسری تمری میری حیات کی تم ، جواب تیم محذوف ہے لین 'من الناس من یا کل ہوقیة باطل''

موال: آي الله فيراللك مركول كانى؟

جواب: آپ کایر کلام بصورت تنم ندتها؛ بلکه عرب محاوه کا عتبارے تھا یا بدوا تعداس دور کا ہے جب کہ غیر اللہ کی تنم پرنہی وارد ند مولی تھی واللہ اعلم ،اور بیمی احمال ہے کہ آپ تا تھا کے لیے اجازت ہو۔

﴿ اجرت وقت پر دی جانبے ﴾

﴿ مديث مُبِر ٢٨ ١٢ ﴾ وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلْىً اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : اَعُطُوا الْآجِيرَ اَجْرَهُ قَبْلَ اَنْ يَجفَ عَوْقُهُ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ.

توجعه: حفرت عبدالله بن عمر فق كيا كدرمول الله الله في ارشادفر مايا: مزدوركوا كي اجرت اسكے پيدمو كفتے يقبل دو (ابن مائة)

كلمات حديث كي تشريح كان معجف عوفه: جب انسان محنت اور بھارى كام كرتا ہے تو بالضرور پيد بدن سے برآ مربوتا ہے،
كلمات حديث كي تشريح كان من محمد بيان مد ہے كہ كام سے فراغت پر فوراً بلاتا خير مزدوركى اجرت دى جائي ، اس ہدايت نبوك الله عن من من حكمت ہاورم النظ بدار شاد ہے جلداداكرتے كے ليے۔

﴿ صِهِ عَنْ بُهِ ٢٨ ٢٣﴾ وَعَنِ الْمُحسَيْنِ بُنِ عَلِي قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَصَلَمَ: لِلسَّائِلِ حَقَّ وَاللهِ عَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَصَلَمَ: لِلسَّائِلِ حَقَّ وَإِنْ جَاءَ عَلَى فَرَسِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَٱبُوٰ دَاؤَهُ وَفِي الْمَصَابِيْحِ مُرْسَلٌ.

قوجعه : حضرت حسين بن على في المرسول الشعقية في مايا: سائل كاحق ب(كراس كوضرور ديا جائے) اگر چدوه محوث ير مور (احمد الاداؤة وورمعائ من مرسل مردى ب) کلمات حدیث کی تشری کے اللسائل حق ... سوال کرنے والے کا بھی حق ہے، اجر کی اجرت کے استحقاق کے تحت یہ بیان از روئے تشہیہ ہے کہ سائل آیا ہے اس نے بھی ایک عمل کیا ہے؛ لہٰذااس کا اس اختبار سے حق ہو گیا۔

خدودی و خداحت: بکثرت روایات ش سوال کی اجازت نبیس دی گئی ہے، اور اس روایت سے سوال کی اباحت معلوم ہور ہی ہے؟ حالات کے اعتبار سے عظم ہوا کرتا ہے، نی نفسہ جو مخص ضرورت مند ہے اس کوسوال کی اجازت دی گئی ہے؛ لہٰذا حسن ظن رکھتے ہوئے کہ بیسوال کنندہ ضرورت مند ہوگا؛ اس لیے اس نے سوال جیسی صورت کو اختیار کیا ہے؛ لہٰذا اس کوضرور دیا جائے گا۔

الفصل الثالث

﴿حضرت موسى اور اجرت پر كام كرنا﴾

﴿ صِرِينَ مُهِ ١٨ ٢٨﴾ عَنْ عُنْهَ أَنِ الْنُدَرِقَالَ: كُنَّاعِنْدَ رَسُوْلِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَا طَسَمَ حَتَى بَلَغَ قِصَّةَ مُوْسَى قَالَ: إِنَّ مُوْسَى عَلَيْهِ السَّلَامُ اجَرَ نَفْسَهُ ثَمَانَ سِنِيْنَ اَوْ عَشَراً عَلَى عِفَّةِ فَرْجِهِ وَطَعَامِ بَلَغَ قِصَّةَ مُوْسَى قَالَ: إِنَّ مُوْسَى عَلَيْهِ السَّلَامُ اجَرَ نَفْسَهُ ثَمَانَ سِنِيْنَ اَوْ عَشَراً عَلَى عِفَّةِ فَرْجِهِ وَطَعَامِ Website:MadarseWale.blogspot.com بَطْنِهِ. رَوَاهُ اَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَةً. Website:NewMadarsa.blogspot.com

قوجهه: حضرت عنبرابن ندر في بيان كياكهم لوگ رسول الشين كياس بينه بوئ ته آپ الله في طسم كالاوت، يهان تك كه حضرت موى كافسه تك يهو في تو آپ الله في فرمايا: بالينين حضرت موى في اين شرك آشه يادس سال اجرت (يعنی نوكري) يرديا اين فرج كى محافظت اوراين بيد كهاف كى بناد بر-(احرد ابن ماجد)

اس سورت میں حضرت مویٰ کا واقد تفصیل کے ساتھ ہے اوراس میں بیان ہے کہ حضرت مویٰ نے آٹھ کمات حدیث کی تشریح کے اور سے میں کا معاوضہ ہو جائے ،

المات حدیث کی تشریح کے اور سمال کے لیے اپنی ذات کواجرت پراس لیے لگا دیا تھا کہ وہ عمل نکاح کے مہر کا معاوضہ ہو جائے ،

اور کسب طلال کے ذریعیہ'' خوردونوش'' کا انتظام ہو، عفتِ فوجہ: بھراحتِ نکاح فرج کی حفاظت کرنا اور زنا ہے بچاؤ کی تدبیر کرنا۔ خسرودی و خداحت: زوجہ کے مہر کے لیے خدمت کرنا ،کام کرنا کیا درست ہے؟ علاء کی ایک جماعت کے نزدیک مباح اور گنجائش ہے اور علاء کی دوسری جماعت کے نزدیک مہر میں نفذرقم ہو تفصیل کتاب النکاح کے تحت احادیث میں معلوم ہوگی۔ (اسعدی)

﴿كيا تعليم القرآن پر اجرت مباح هيے؟﴾

﴿ صريت ثَمِر ١٨ ٢٥﴾ وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّا مِتِ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللَّهِ! رَجُلَّ آهُدَىٰ إِلَى قَوْساً مِمَنْ كُنْتُ أَعَلَمُهُ الْكِتَابَ وَالْقُوْانَ وَلَيْسَتْ بِمَالٍ فَارْمِى عَلَيْهَا فِى سَبِيْلِ اللَّهِ قَالَ إِنْ كُنْتَ تُحِبُ اَنْ تُطَوَّقَ طَوْقاً مِنْ نَادٍ فَاقْتِلَهَا. رَوَاهُ آبُوْ دَاوُ دَوَ ابْنُ مَاجَةً.

توجهد: حفرت عباده بن صامت نے بیان کیا کہ میں نے عرض کیایارسول اللہ! ایک شف نے جن کو میں اللہ تعالیٰ کی کتاب اور قر آن
کی تعلیم دیتا ہوں ، جھے کو ایک کمان ہرید دی ہے ، اور کہا مال (بھی) نہیں ہے ، اور میں اس کمان سے اللہ کی راہ میں تیرندازی کروں گا
آپ بیانی نے ارشاد قر مایا: اگرتم پند کرتے ہو کہ آگ کا طوق بنا کر مللے میں ڈال دیا جائے تو پھراس کوقیول کرلو۔ (ابوداؤر ، ابن اجبّ)

ال روایت بھراحت معلوم ہوا کے تعلیم القرآن پراجرت لیناجا تزنیس ،اورامام اعظم کاندہب بھی کمات حدیث کی تشریح کی تشریح کے اراز تعلیق)، البتہ بعض عالات میں علاءِ متاخرین نے اس کے جواز کا فتویٰ دیا ہے ،علاء کے

فآوي مين اس كي تفصيل معلوم جوكى _ (اسعدى)

باب احياء الخوات والشرب

﴿ بنجرز من كوزنده كرنادر بانى كي تقسيم كابيان ﴾

اس عنوان (باب) کے تحت دوا دکام پر مشتل اعاد ہے لقل کی ٹی (۱) اِحیام الموات۔(۲) شوب العواث میم برنتی ، غیر آباد زمین ، نا قابل کاشت، بنجر۔اور اس کے بالقابل عامر (آباد)، قدیم زمانہ سے وہ زمین غیر آباد ہے، اور کسی کی ذاتی اور شخص ملکیت نہ ہو،اور شہراوریستی کی ضروریات میں سے نہ ہو۔اوراحیار لیعنی آباد کرٹا، قابل کاشت بنانا، باغ کے قابل کرٹا۔

الشوب ،سین پر کسرہ بھتیم ہونے کے بعد پانی کا دہ حصر اگر پانی مشتر کہ ہے، من حیث الما لک اور یامن حیث الاستحقاق ، اس شر تقتیم ہونے کے بعد یانی کا حقد ارہونا ، ذہن ، باغ کوسیر اب کرنے کے لیے اور اپنے حیوانات کو بلانے کے لیے۔

پانی اللہ تعالیٰ کا آئی گلوق ہے کے زندگی کے تمام شعبوں میں اس کی ضرورت لائق ہوا کرتی ہے، قال تعالیٰ "وَ جَعَلَنَا مِنَ الْمَاءِ

کُلُّ مُنَّیَءِ حَیْ" قرآن اور احادیث میں پانی سے متعلق احکام وہدایات ارشاد فریائے ہیں، اس عنوان کے تحت احادیث میں ان

ہرایات اور احکام کی تفصیل معلوم ہوگی، اولاً پانی کے متعلق دوصور تیں ممکن ہیں ۔(۱) پانی اپنی کو اس کے بخزن اور معدن میں ہو، (مثلاً) نہر،

سمندر، کوال، چشر، تالاب، اور اس نوع کی جو بھی صورت ہو۔(۲) ایک فض نے اس پانی کو اس کے بخزن اصلی سے اپنے برتن

(وغیرہ) میں لیا ہوا ہے، یہ دوسری صورت صاحب ظرف کی مکلیت ہوگیا ہے، اس کی اجازت کے بغیر دوسر انحض اس میں تصرف نہیں کر

سکتا اور اول صورت میں وہ کسی کی ملک نہیں ہے؛ اس لیے ہرفض کو ہروقت اس میں سے اخذ کرتے اور فائدہ حاصل کرنے کا استحقاق

ہر منح کرنے کا کوئی تی نہ ہوگا۔

﴿ احیاءِ اموات میں نقعاء کے اقوال ﴾

جن زین پرکی شخص کاحق ملکت نه بوادروه حکومت کے زیرانظام ہے توسلطان اور یااس کے قائم مقام نے اگراعلان کیا ہوا ہے کہ ، من اَعمَو المنح جس نے اس زین کوآباد کرلیاوہ اس کے لیے ، تو الی صورت میں بالا تفاق عامر مالک ہوگا، اور اگرا جازت اور اعلان کے بغیر کی نے اس کوآباد کیا ہوا ہے تو اس صورت میں اختلاف ہے۔

جماہیر،امام شافتی اور صاحبین حضرات کے نزدیک اجازت اور اعلان کے بغیر بھی وہ مالک ہوجائے گا اور امام اعظم ،امام مالک اور امام بخی نیز دوسرے اہلِ علم کے نزدیک وہ مالک نہ ہوگا۔

قول اول کے اہلِ علم نے باب کے تحت ندکورہ حدیث نمبر (۲۸۶۷) سے استدلال کیا ہے کہ آپ کا ارشاد ہے 'من عمو النع'' جس جس اف ان سلطان کا کوئی تذکرہ نہیں ہے۔ اس کا جواب یہ (ہوسکتا) ہے کہ اس کو دوسری روایات کے پیشِ نظر مقید کیا جائے ، جن روایات سے اجازت کے ساتھ مقید ہونا معلوم ہوتا ہے اور آپ ملک نے اس روایت میں جوارشاد فرمایا ہے وہ اس اعتبار سے (مجمی ہوسکتا) ہے کہ آپ ایام الا کبر تھے؛ لہٰ ذاوہ اعلان ، اجازت کے تم میں ہوا۔

اور ظاہرہے کہ اگرامام اور سلطان کی اجازت کے ساتھ اس کو مقید کیا گیا، آئندہ لوگوں کے درمیان نزاع کا سبب ہوسکتا ہے، اس لیے بھی ضروری ہے کہ بیاجازت بی کے ساتھ ہواور بہت ہے عطاءِ قطعات کے واقعات بھی اس امرکو ثابت کرتے ہیں، ان تمام امور پر نظر کرتے ہوئے امام ابو حنیفہ ارشاد فرماتے ہیں ''لیسٹ للمرءِ الا ما طابت بدنفس امامد،'' (ارتطبق اورتقریروتشری تحات)

النصل الأول

﴿ اهياء أس وقت معتبرهي ... ﴾

﴿ مديث تَبِهِ ٢٨٢٧﴾ عَنْ عَائِشَةً عَنِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ عَمَرَ أَرْضاً لَيْسَتْ لِآحَدِ فَهُواَ حَقَى قَالَ عُرْوَةُ: قَطْى بِهِ عُمَرُ فِي خِلَاقَتِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُ.

موجهه : معرت عائش می اکرم الله کاارشانق کرتی بین کرآب الله نفر مایا: جوهنم کسی (بنجر) زهن کوآباد کرے کدوه زهن کسی کی مملوک نبیس ہے تو وہ فض زیادہ سنتی ہے (اس زمین کا) معرت عروہ نے بیان کیا کہ معرت بھڑنے اپنے زمانہ خلافت میں اس کے مطابق فیملے فرمایا تھا۔ (بناری)

كلمات حديث كي تشريح المتشريد، اور عمور تشديد كراته) نيز بعض معازع كينول ين أغمَر ب- ليست لا المات حديث كي تشري المحديدي ووزين كي كرملك ندمو، اورموات (ينجر) مو-

قضی به حضرت عرقے ای ارشاد نبوی تلاق کے مطابق اپنے عہد خلافت میں فیصلہ صادر فر مایا تھا، یددلیل ہے کہ بیر حدیث منسوخ نہیں ۔اور یکی روایت جما ہیراللِ علم کی دلیل بھی ہے۔

خسرودی وخساحت: اگرچه بظاهریکم علی الاطلاق ہے اذن سلطان اور ایام کا اس میں کوئی تذکرہ نہیں، اور اگراس کا یہ مغہوم لیا جائے کہ آپ الله نے بیاطلان اور اجازت فر مائی ہے اس سے اذن ایام گوٹا بت کیا جائے تو یہ می ایک احتال ہے، ایام قول ٹائی کی دلیل موگ ۔ (والشّائلم، اسعدی)

﴿ صِرِيتُ بِمِرِكُ ٢٨٧﴾ وعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ الصَّغْبَ بْنَ جَفَّامَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: لَاحِمَىٰ إِلَّا لِلْهِ وَرَسُولِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ .

قوجعه: حفرت عبدالله بن عبائ سے مروی ہے کہ حفرت صعب بن جثامہ نے بیان کیا کہ میں نے رسول النّعَلَيْقَة سے سنا آپ اللّهُ فرمار ہے تھے چراگاہ مرف الله اوراس کے رسول کے لیے ہے۔ (بناریؓ)

حمی (حمی رسی کی تشریکی افران کی کر کرره) چراگاه، وه زین جسی شیخودرو گھاس پیدا ہوتی ہے، اور اصطلاحی معنی وه فاص کلمات حدیث کی تشریکی زین (چراگاه) جس کو بور نوگوں نے، بادشاه نے شاہی حیوانات کے لیے محفوظ کیا ہو؛ یعنی شاہی چراگاه اور زمان جا بلیت میں بور نوگ اپنے حیوانات کے لیے مخصوص چراگاه رکھتے تھے اور وہ محوام الناس کے لیے نہ ہوتی تھی، آپ مالی نے یہ محمادر جایت جاری فرمائی کہ لا جمعی الخ۔

الہذا آپ آگئے کاس ارشاد کے مطابق بیری نہیں ہوگا، اور ہرفض کواس سے فائدہ اٹھانے کاحق ہوگا، اور اس صدیث پاک سے
میکم بھی معلوم ہواکہ جب وہ اللہ تعالٰی کی ہے اور اللہ تعالٰی کے رسول علیہ السلام کے اختیار میں ہے تو تمام مسلمانوں کاحق اس میں شرکت
کا ہوگیا؛ اس لیے ضروری ہے کہ اگر کوئی قطعہ ارض دیا جا سکتا ہے تو دو مرے شرق تھم کے مطابق بی حاصل ہوسکتا ہے لین امام وقت کی

اجازت كے ساتھ

وپانی کی تقسیم ﴾

ومديث بمر١٨٧٨) وَعَنْ عُرُوةَ قَالَ: خَاصَمَ الزُّهَيْرُ رَجُلًا مِنَ الْاَنْصَادِ فِي شِوَاجِ مِنَ الْحَوَّةِ أَقَالَ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: آسْقِ يَا زُهَيْرُ لُمُ اَرْسِلِ الْمَاءَ الِي جَادِكَ فَقَالَ الْاَنْصَادِيُّ. اَنْ كَانَ ابْنَ عَمَّتِكَ

فَتَلَوَّنُ وَجُهُهُ ثُمَّ قَالَ: أَسْقِ يَا زُهُمُ لُمُّ الْحِيسِ الْمَاءَ حَتَّى يَرْجِعَ اللَّى الْجَدْرِ ثُمَّ أَرْسِلِ الْمَاءَ اللَّي جَارِكَ فَاسْتَوَىٰ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلزُّبَيْرِ حَقَّهُ فِي صَرِيْحِ الْحُكْمِ حِيْنَ أَحْفَظَهُ الْأَنْصَارِئُ وَكَانَ أَشَارَ عَلَيْهَا بِأَمْرِ لَهُمَا فِيْهِ سَعَةً. مُعْلَقٌ عَلَيْهِ .

موجعه : صرت عروة نے بیان کیا کہ معزت زبیر کا ایک انساری فنس سے مقام حرویس پانی سے بہنے کی جگہ کے سلسلہ میں جنگز اہو مير (بب يمقدمه آپ وقت كي فدمت يس بنجانو) بي اكرم الله في فرمايا الدر بيرام تم اين زين كويراب كراواور بعراب بروى كي طرف پانی کوچموڑ دو،اس انصاری مخص نے کہا (یہ فیصلہ ان کے جن میں اس وجہ سے کیا ہے کہ) دوآ پ ایک کی بھو بھی کا لڑکا ہے۔ پس آپ تائے کا چیرہ متغیر ہو گیا، اور آپ تالئے نے فرمایا: اے زبیرا زبین کوسیراب کراور پھر پانی کوروک لے یہاں تک کہ پانی (زمین کی) وُولوں (کے کتاروں) تک پیوٹی جائے اور اس کے بعد اپنے پڑوی کی طرف پانی چھوڑ وے ؛ چٹانچی آپ تلفظہ نے زبیر کے حق کو م م الم رویا۔ (اور محفوظ فرمادیا) حکم صرح میں جس وقت کہ اس انصاری نے آپ ایک کو غصر دلایا حالاں کہ آپ آپ آگئے نے ان دونوں کو اس قتم كامشوره دياتها كرجس بيس مخيائش تقى _ (بناري دسلم)

كلمات حديث كي تشريح المي شواج من المحروة ، واحد (شوجة) وه نالى جس ك ذريعه باني كهيت من يهو نجايا جائے من برائے بیان ہے اور البحر و بعن بہاڑی علاقہ، ارض ذات الجارہ، خاصم بعن اختلاف موا،

جمكرا ہوا۔ صورت مسئلہ يہ ہے كہ حضرت زبير كى زبين پہلے تھى ، اور انصاري كى زبين ان كے بعد تھى ، يانى كى سيرانى پربيا ختلا ف ہوا، آ پینا افعاری کی در میر استور معزت زبیر اوا جازت دی که ده حسب ضرورت اینی زبین میں پہلے یانی پیونیا کر پھر یانی انساری کی زمین کی جانب چھوڑ دیں۔آپ ایک کا یفرمان بالمروت تھا جس سے کہ بڑوی کے لیے سہولت اور فری اور حسن برتاؤ کی صورت ہے حالانکہ ہر ایک صاحب ارض کو یانی کا اتحقاق "کھیت کی کیار ہوں کو بحرفے تک" ہوا کرتا ہے۔

ابتدائی امریس آپ عظف نے کمال استحقاق نہیں فرمایا تھا؛ بلکہ درمیانی راستہ بیان فرمایا، اور ظاہر ہے کہ اس صورت میں معزمت ز بیرها کوئی نقصان بھی نہتھا کہ بقدر ضرورت یانی لے کرآ مے کے لیے جھوڑ دیا جائے ، اور وہ انصاری من کی نوعیت کوند جائے تھے ؛ اس لية بالله في مانى فرمايا، "احبس المعاء النع" المجدر، يعنى كيت من جوكياريال موتى بين ان كوبورا بحرنا، عرف بهي يبي ب اور عرف کے مطابق یہی شرع مجی ہوا؛ چٹانچرروایت کے آخریس اس کی وضاحت ہے،"فاستوعی النے".

﴿پانی کے متعلق ہدایت﴾

﴿ صَارَتُ مُبِهِ ٢٨٢٩﴾ وَعَنْ أَبِي هُرَيْوَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا تَمْنَعُوا فَصْلَ الْمَاءِ لِتَمْنَعُوا بِهِ فَضْلَ الْكَلاءِ. مُتَّفَقَ عَلَيْهِ .

من جمه: حضرت ابو ہرية في تقل كيا كدرسول التعلق في مايا: ذائد بإنى كوندردكوجس سے كد (پر) تم روك لوز الد كماس كو (چونك ذا كديانى كرد كف ع كماس كارد كنالان موتاب)_ (بخاري وسلم)

کلمات صدیث کی تشری الماء، زائد پانی، فضل الکلاء، زائدگاس خودر و کھاس، زائداز ضرورت مقعبد بیان به کلمات حدیث کی تشری کے اس منع نہ کیا جائے۔ (اور ای طرح) جو كھائ قدرتى پدا موتى إلى اس مى منع ندكيا جائے !اس ليے كه الله تعالى في تمام انسانوں اور ان كے حيوانات كے ليے

بدافر الياب انسان كيمل كواس من وفل بيس ب "كم بعمل بدرك" البته جوكماس بذريد كاشت پدا موتى بوه اس كى ملك ب

الميس كون نيس به كوتنفيلات كذشة باب (المنهى عنه من البيوع) كتحت معلوم بوچكى ب (انطق تشريح كماته اسعدى)

﴿تین عمل پروعیدشدید﴾

﴿ صديث مُبر ٢٨٤ ﴾ وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ثَلاَثَةً لَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ رَجُلٌ حَلَفَ عَلَى سِلْعَةٍ لَقَدْ أَعْطِى بِهَا أَكْثَرُ مِمَّا أَعْطِى وَهُوَكَاذِبٌ وَرَجُلٌ حَلَفَ عَلَى يَمِيْنِ كَالِبَةِ بَهْدَ الْعَصْرِ لِيَقْتَطِعَ بِهَا مَالَ رَجُلٍ مُسْلِمٍ وَرَجُلٌ مَنَعَ فَصْلَ مَاءٍ فَيَقُولُ اللَّهُ: الْيَوْمَ امْنَعُكَ فَصْلَىٰ كَمَا مَنَهُتَ فَضَلَ مَاءٍ مَالَمْ تَعَمَلْ يَدَاكَ مُتَّفَقُّ عَلَيْهِ . وَذُكِرَ حَدِيْتُ جَابِرٍ فِي بَابِ الْمَنْهِي عَنْهَامِنَ الْبَيُوعِ

مرجمه: حصرت ابو بريرة في نقل كيا كرسول التُعالِيّة في فرمايا: تين فض بي جن على بروز قيامت الله تعالى كام نبيل فرما كي على على اور ندان کی طرف (رحت کی) نظر فرمائیں گے: (۱) و وقف جس نے قتم کھائی کہ اس کواس کے سامان کی قیمت اس سے زائد دی جار ہی تقی جو (نی الوقت) دی گئی ہے حالانک وہ جھوٹا ہے (۲) اور دہ مخص جوعصر کے بعد جھوٹی شم کھائے تا کہ وہ اس شم کے ذریعہ ایک مسلمان کا مال لے (٣) اور ایک وہ چص جوز اکد پانی کوروک دے (اورانکار کردے) کس اللہ تعالی بروزِ قیامت فرمائیں کے: یس ایخ نفنل کو آج تحصے روکتا ہوں جس طرح تونے زائد یانی کوروکا تھا حالا نکہ تیرے ہاتھوں نے اس کونیس بنایا تھا۔ (بخاری وسلم)

اورحضرت جابر کی حدیث باب المنهی عنها من البيوع ش گزرچی ب-

کلمات حدیث کی تشری کی مام مے، خلاف واقعہ پرتم کھانا (بڑا جھوٹ اور) بعداع بھی ہے جس پرشد یدوعید آئی ہے:

"من غش فليسا منّا"

مقصد بیان سے کے دیرتمام امور بدر مین اخلاق، فساق اور فجار کے طریقہ کا رہیں ؛ اس لیے اللہ تعالی ایے لوگوں سے بہت ناراض موں مے؛ یانی درحقیقت تمام محلوق کے لیے ہے اور مفادعامہ کی وجہ سے علی الا طلاق تمام کے حق میں مباح ہے البتہ جوشر عا استحقاق والی صورت ہے ہوگا د وخصوص ہوگا۔

الفصل الثاني

﴿ احاطه کرنے کا حکم ﴾

﴿ صِدِيثُمُ رِاكِ ١٨٧﴾ عَنِ الْمُحَسَنِ عَنْ مَسْمُرَةً عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ أَحَاطُ حَائِطاً عَلَى الْأَرْضِ فَهُوَ لَهُ. رَوَاهُ أَبُوْدَاؤَدَ .

قرجمه: حضرت حسن بعريٌ بروايب حضرت سمرة ني اكرم الله كاارشاد قل كرتے بين آب الله في فرمايا: جس مخص في (غير آباد) ز من برد بوار بنائی (اور) گیرلیا تووه زمین ای کی ہے۔ (ابوداؤر)

کلمات حدیث کی تشریکی آمن احاط: اگر کسی فخص نے (ارض موات) قطعہ برحد بندی کردی مو، دیوار (وغیرہ) سے گھراؤ کرلیا کلمات حدیث کی تشریکی میں مدیث (کی اس عبارت) سے بید معلوم ہوا کہ بید حد بندی کر لیما ملکیت کو ٹابت ، كرنے كون ي كانى ب؛ چنانچهام احر اور علاء كى ايك جماعت كاند ب يى ب اور ائد ثلاث كے ليے احياء كر نا استحقاق كے ليے

لازم باوراحياء ارض كالفعيل كذشته روايت كتحت معلوم مويكى-

جواب حديث مذكور: احاطر تالين برائ سكون (برائ مكانب) دود يواري كي بوجب كدووز عن كي كراملك ند كي اور

وه زين موات "تقي والله اعلم (ارتعلق)

﴿عُطهُ ارض كا عطيه ﴾

﴿ مِرِيثُ تَبِرُ ٢٨٤ ﴾ وَعَنْ أَسْمَاءَ بِنْتُ آبِي بَكْرِ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ أَفْطَعَ لِلزَّبَيْدِ مَعِيْلًا. رَوَاهُ أَبُوْدَالِدَ.

موجهد: صرب الاه بنت الى برصدين مروى م كرسول السائلة ن حفرت زير الوجورك وردت كازين (بلور) جاكير عنايت فرمائي _ (ابوداؤر)

نبخیلا، منعوب از روئے تمیز، اقطع، ماضی، بمعنی عطار کیا، از الاقطاع، قطعهٔ ارض، عطار کرنا، جو کلمات حدیث کی تشری کلمات حدیث کی تشریک زین بیت المال کے تحت ہو، اس میں سے قطعهٔ ارض بصورت ملک عطار کرنا اور تحویل میں آ مدہ اموال (اور اراضی) کی مختلف صورتی ہوں ہو گئی ہیں، آپ آگئے معرات سے البوز طام افر ماتے تھے، بہر حال اس سے معلوم ہوا کہ جواراضی حکومت کی تحویل میں شرعاً آئی ہوئی ہوں ان کو تشیم کرنا درست ہے، البدة ظالم اتصرف کرنا جائز نہ ہوگا۔

﴿ زمین اوریلات کاعطیه ﴾

﴿ مديث تُمِر ٢٨٤٣﴾ وَعَنِ ابِنِ عُمَرُ آنَ اللَّهِي صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفْطَعَ لِلرُّامَيْدِ حُضْرَ فَرَسِهِ فَاجْرَىٰ فَرَسَهُ حَتَّىٰ قَامَ ثُمَّ رَمِىٰ بِسَوْطِهِ فَقَالَ: اَعْطُوٰهُ مِنْ حَيْثُ بَلَعَ السُّوْطُ. رَوَاهُ آبُوْدَاؤَدَ .

خوجهد: حضرت عبداً الله بن عمر السي عمر وى بي كه نبى اكرم اللي في المراح الله و الله و

کمات حدیث کی تشری کی میدونی میدان برار ساکن یعن ان کا گور اجهال تک دور ، بعد ان کا محور اجهال تک کمات حدیث کی تشری میدونی ان بیست کی آب مقالی نے اس نوعیت پرزین کا قطعه عناید فرمایا۔

﴿ مَدَيَثُ مِن اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهِ عَنْ عَلْقَمَةَ ابْنِ وَائِلَ عَنْ آبِيْهِ أَنَّ النَّبِيّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اقْطَعَهُ اَزْضاً بِحَضْرَ مَوْتَ قَالَ: فَازْسَلَ مَعِيَ مُعَاوِيَةَ قَالَ: اَعْطِهَا إِيَّاهُ. زَوَاهُ التّرْمِذِيُّ وَاللَّادِمِيُّ.

کلمات صدیث کی تشریکی تفریک تعند کا مقد کا تعلیم ارض عنایت فرمایا ، اور صفرت معادیدواس پر مامور فرمایا که وه اس جا گیر پر المعنات می است صدیث کی تشریکی تعند کرادیں۔

هامنده: معلوم مواجوعلاقه اورزین بیت المال اورامیرے ماتحت ہے اُس کاعطیه کرناجا تُزہے مگرنات اورظام) کسی کی زیمن کادیاجانا حرام ہے اگر چدمرکاری طریقه پرموب

هامنده: حعرت علقه علالة ارض "حضوموت "كيو الوكون من سي متحر

﴿ مديث نُبر ١٨٤٥﴾ وَعَنْ آبَيَصَ بْنِ حَمَّالِ الْمَادِبِيّ آنَّهُ وَلَمَدَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

فَاسْتَفْطَعَهُ الْمِلْحَ الَّذِي بِمَارِبَ فَافْطَعَهُ إِيَّاهُ فَلَمَّا وَلَى قَالَ رَجُلَّ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّمَا اَفْطَعْتَ لَهُ الْمَاءَ الْعِلَّ قَالَ وَجُلَّ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّمَا اَفْطَعْتَ لَهُ الْمَاءَ الْعِلَّ قَالَ وَمَالَهُ مَاذَا يُحْمِيٰ مِنَ الْآرَاكِ مَالَمْ تَنَلَّهُ اَخْفَاتُ الْإِيلِ. زَوَاهُ التَّرْمِذِي وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِيعُ. وَقَرَّهُ التَّرْمِذِي وَابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِيعُ.

ترجمہ: صرت ابیض بن تمال مار بی ہے مردی ہے کہ دہ رسول اللہ اللہ کی فدمت میں عاضر ہوئے اور انہوں نے آپ اللہ علی ہوئی کے برق میں کہ بہتا م مارب جونمک کی کان ہے بطور جا کیرد ہے دی جائے؟ پس آپ آگئے نے ان کو دہ جا گیرعنا ہے فر مادی ، پس جب دہ دائیں ہوئے تو ایک مخض نے کہایا رسول اللہ ا آپ تائے نے اس کو منقطع نہ ہونے والا پائی (لیمنی پائی کا مخزن) دے دیا۔ روی نے بیان کیا کہ آپ تائے نے وہ اس سے واپس لے لیا۔ راوی نے بیان کیا کہ انہوں نے آپ تائے ہے سوال کیا کہ پہلو کے درختوں والی ذھن کس قدرز مدہ بنا کر گھری جا سمج ہوئے فر مایا جہاں تک اونٹوں کے پاؤں نہ پرونچیں۔ (اس لیے کہ مجروہ جراگاہ ہوگی جو عامة السلمین کاحق ہے جے مخصوص جا گیزئیں بنایا جاساتک اونٹوں کے پاؤں نہ پرونچیں۔ (اس لیے کہ مجروہ جراگاہ ہوگی جو عامة السلمین کاحق ہے جے مخصوص جا گیزئیں بنایا جاسکا)۔ (ترزی ، ابن ماجہ، داری)

کہ جا گراعتا یہ فرمادی ؛ چنا نچرآ پٹانٹے نے عنایت فرمادیا ، آ پٹانٹے نے اس کومنطور فرما کرعنایت فرمادیا

المعاءَ المعدّ – وہ پانی جو بمیشہ (اس) مخزن میں رہتا ہے اور وہ بمی منقطع نہ ہونے والا ہو، کو یا کہ اس میں نمک تیار شدہ ہے جس میں کی منظم کی خرورت نہ ہوگی۔ آپ تالئے کو اس صورت حال کاعلم نہ تعااور جب آپ تالئے کواس کی لوعیت کاعلم ہوا تو آپ نے وہ تھم منسوخ فرمادیا باس کے لیے قابل انتقاع ہے؛ لہذا اے کی جمی محض منسوخ فرمادیا باس کے لیے قابل انتقاع ہے؛ لہذا اے کی بھی محض کونیس دیا جاسکتا ہے؛ اس کے کے اس میں سب کا استحقاق ہوگا۔

البتہ جومعادن (کان، مخزن) الی ہے کہ وہ خوب متور ہے اور اس میں سے بدی مشقت کے ساتھ حصول ہوگا، اس کوتو گویا وہ موتا کی تم میں شامل ہونے کی وجہ سے کمی مخض کے لیے خصوص کیا جاسکتا ہے، ملکا دیا جاسکتا ہے، اولاً آ، پہنچنے نے اس خیال کی وجہ سے اس کو دیا جاتا منظور فرمالیا تھا۔ (ماخوذار تعلق وغیرہ)

﴿عامة النَّاسِ كي ليهـ﴾

﴿ مديث بُر ٢٨ ٢٨ ﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: الْمُسْلِمُونَ شُوكَآءُ فِي اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: الْمُسْلِمُونَ شُوكَآءُ فِي الْمَآءِ وَالْكَارِ . رَوَاهُ أَبُوْ دَاؤَدَ وَابْنُ مَاجَةَ .

کلات ودیث کی تشریح اللاث، مبدل منداوراس کے بعد فی الماع سے آخرتک بدل ہے۔

اللاث، مبدل منداوراس کے بعد فی الماع سے آخرتک بدل ہے۔

خسووری و خداحت: وه پانی مراد ہے جوکسی خاص کی مملوکٹی میں ندہوں تنصیل گذر پی آئے جوجل رہی ہے البتہ جس جی و (حلا کوئری) میں آئے ہے تو کلڑی کاحق ندہوگا۔ کھاس ہے بھی وہی مراد ہے جو قدرتی طور پر پیدا ہو، کسی نے کاشت ندکی ہو۔

﴿ مِعِياح السَّمَاء كَمَا حَكُم ﴾ ﴿ مِدِيثُ بِرِعَهِ إِلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَهَا يَتَعُهُ فَقَالَ مَنَ سَبَقَ إلىٰ مَاءٍ لَمْ يَسْبِقْهُ إِلَيْهِ مُسْلِمٌ فَهُوَ لَهُ. رَوَاهُ آبُوْ دَاؤِدَ .

قوجهد: حفرت اسمرین مفرل نے بیان کیا کہ میں نبی اکرم الله کی خدمت میں حاضر ہوا اور میں نے آپ الله سے بیعت کی ، آپ ملک نے ارشاد فرمایا: جس مخص کا ہاتھ اس پانی کی طرف سبقت (اور پہل) کر جائے کہ اس کی طرف (اب تک) کسی مسلمان ہاتھ نے سبقت نیس کی ہے تو وہ یانی اس کاحق ہو کہا۔ (ابوادؤر)

کلمات حدیث کی تشریح اس مسبق، جس نے پہل کی ہو، مقصر بیان یہ ہے کہ جواشیار مباح الاصل ہوں اور وہ کسی کی ملک نہ موں اس برتمام انسانوں کا استحقاق برابر ہے، اور اس کے لیے ایک قانونِ شرعی بیار شادفر مایا ہے کہ

جس نے اس شیء پر بہل کی اور اس کوا خذ کرلیا ہے وہ اس کا مالک ہو گیا مثلاً یانی، شکار، وغیرہ۔

﴿ هقوق کی حفاظت ضروری هیے ﴾

﴿ صِدِيثُ بُهِ ٨٨ ﴾ وَعَنْ طَاوُسٍ مُوسَلًا أَنْ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ: مَنْ آخَى مَوَاتاً مِنَ الْاَرْضِ فَهُوَ لَهُ وَعَادِي الْآرْضِ لِلْهِ وَرَسُولِهِ لُمَّ هِى لَكُمْ مِنَى رَوَاهُ الشَّافَعِي وَرُوِى فِى شَرْحِ السَّنَّةِ أَنَّ النَّيِّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَصَلَّمَ الْحُورَ لِللهِ فَرَسُولِهِ لُمْ مِنَى لَكُمْ مِنَى رَوَاهُ الشَّافَعِي وَرُوِى فِى شَرْحِ السَّنَّةِ أَنَّ النَّيِّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَصَلَّمَ الْحُطَعَ لِعَهْدِ اللهِ بْنِ وَهُو الدُّورَ بِالْمَدِيْنَةِ وَهِى بَيْنَ ظَهْرَانِي عِمَارَةِ النَّيِّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْحُولِ فَقَالَ بَنُو عَبْدِ بْنِ زُهْرَ ةَ نَكُبُ عَنَا ابْنَ أُمْ عَبْدٍ فَقَالَ لَهُمْ وَسُولُ اللهِ اللهِ لَا يُقَدِّسُ أُمَّةً لَا يُوْخَدُ لِلصَّعِيْفِ فِيْهِمْ حَقَّهُ.

قوجهه: حضرت طاؤس مرسلًا نقل کرتے ہیں کدرمول الشقائلة نے ارشادفر مایا: جس فض نے مردہ زمین کوزندہ کیا تو وہ زمین ای کی ہے اور قدیم زمین (جومعروف بالملک شہوء اور بینست توم عاد کی طرف ہے) الشداوراس کے رسول کی ہے اور پھر وہ میری طرف ہے کو گول کے لیے ہے جس کو جس دے دول امام شافئ اور شرح سند جس مردی ہے کہ بیشک نبی اکرم تنظیفہ نے حضرت عبد اللہ بن مسعود کو حدید میں زمرہ حدید میں نہرہ کی چندمکان (بطور) جا گیرعنا ہے فرماے تھے جو کہ حضرات انصار کے مکانات اور مجود کے درختوں کے درمیان تھے ،عبد بن زہرہ کی اولاد نے کہا کہ عبداللہ بن الم عبدکو ہم سے دوررکھا جائے ، آپ تنظیف نے ان سے فرمایا: اللہ تعالی نے جھے کو پھر رسول بنا کر کیوں مبعوث کی اولاد نے کہا کہ عبداللہ بن الم عبد کرمیوں میں کروراور ضعیف کواس کا حق نددیا جائے۔

عادی الارض عبرقدیم کی زمین جسوان می نددیاجائے۔ کلمات حدیث کی تشریح عادی جانب نسبت اس اعتبارے معروف ہے کدہ گویا کان دورے ایسی بی ہے۔ لکم منی،

لین اس میں ہے۔ میں جس کوعطیہ کردوں وہ میری جانب ہے مالک ہوگیا، للہ لین وہ گلوق کی ملک نہیں ہے، اور آپ تھا تھ اللہ تعالی کے طیفہ ہیں، اور بھی اللہ کا کو کوں نے ان کی طیفہ ہیں، اور بھی اللہ عطاء کرنے پر مجاز ہیں۔ نکب (تشدید کے ساتھ) بمعنی البعد، دور کھئے، کویا کہ اس قبیلہ کے لوگوں نے ان کی رہائش قریب ہونے پر اعتراض کرتے ہوئے ہیں کہا۔ ہلم البعثنی (از انفعال) اللہ تعالی نے پھر کس وجہ ہے جھے کورسول کی حیثیت ہے کیوں مامور فرمایا ہے؟ اخدا ہتوین (کیساتھ) یعنی اگر میں کن ور اور تو کی کے درمیان عدل وانصاف کے ساتھ ممل نہ کر اور اور کر ور کاحق مددلا دی اور معاشرہ میں جوفساد ہاس کی اصلاح نہ کروں؟ تو پھر میری بعثت سے انسانیت کوکیا قائدہ ہوگا۔

مقصد بیان سے کرای تم کے فسادی اصلاح کرنا بھی اللہ تعالی کے دمول علیا اسلام پرلازم ہے، اگر کرور کے حقوق ضائع ہوں کے قودہ قوم پاکیزگی عاصل نہیں کر کئی، گنا ہوں اور عیوب سے منزہ نہ ہوسکے گی، صاحب قوت پرلازم ہے کہ کمزوروں کے حقوق کی حفاظت کریں۔ ﴿ پانی کا ایک حکم ﴾

﴿ صَدَيَثُ بِهِ ٢٨٤٩ ﴾ وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شَعْيب عَنْ آبِيه عَنْ جَدَّهِ أَنْ وَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَصَى فِي السَّيْلِ الْمَهْزُورِ آنْ يُمْسَكَ حَتَى يَبْلَغَ الْكَعْبَيْنِ ثُمَّ يُرْسِلَ الْآعْلَىٰ عَلَى الْآسْفَلِ. وَوَاهُ آبُوْدَاوُدَ وَابْنُ مَاجَةً .

قوجمه: حضرت عمروین شعیب برولست والدخودازجة روایت کرتے ہیں کہ بالیقین رسول الشکافی نے فیصلہ دیا کہ مہر ور (بنوقر بینسر کی وادی کے نالی اس میں الشکافی نے دیا جائے) جب تک کروہ کنوں اور کی کالی کی نالی) کے سلسلہ بیں کروہ روک دی جائے (لینی اس کا پانی اس وقت تک آ کے نہ جانے دیا جائے) جب تک کروہ کنوں تک میرو نج جائے اور اس کے بعداو پر کی جانب والا نیجے کی طرف جانے کے لیے چھوڑ دے۔ (ابوداؤر این ماج)

السيلُ المهزودِ ،أيكوادى كانام بمرور، السيلَ، بإنى كىنال معديث كى تشرح مقديث كى تشرح مقدم المان المعدود ، المديث كى تشرح مقصد ميان بيب كه باغات اور كهيت شريانى بحرف كالتحقاق ، وكاكراتى مقداريانى

ہرزمین والاسراب کے لیے بحرسکتا ہے اور بحرنے کے لیے یانی روک سکتا ہے۔

﴿اگرکونی نقصان پھونچایاجانے﴾

﴿ صِدِيثُ بُسِ ١٨٨﴾ وَعَنْ سَمُرَةً بَنْ جُنْدُ بِ آنَهُ كَانَتْ لَهُ عَضْدٌ مِنْ نَخُلِ فِي حَائِطِ رَجُل مِنَ الْانْصَارِ
وَمَعَ الرَّجُلِ آهْلُهِ فَكَانَ سَمُرَةً يَذْخُلُ عَلَيْهِ فَيَتَأَذِّى بِهِ فَاتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ
فَطَلَبَ اِلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيَهِيْعَهُ فَابَىٰ فَطَلَبَ آنُ لِنَا قِلَهُ فَابَىٰ قَالَ: فَهَا أَمُوا كَذَا أَمُوا رَعِّهُ فِيْهِ فَابَىٰ فَقَالَ آنْتَ مُصَارً فَقَالَ: لِلْالْصَارِي: اذْهَبْ فَافُطَعْ نَخْلَهُ رَوَاهُ آبُوْدَاؤَدَ وَذُكِرَ حَدِيْتُ رَعَّهُ فِيْهِ فَابَىٰ فَقَالَ آنْتَ مُصَارً فَقَالَ: لِلْالْصَارِي: اذْهَبْ فَافُطَعْ نَخْلَهُ رَوَاهُ آبُوْدَاؤَدَ وَذُكِرَ حَدِيْتُ وَلَكَ جَدِيْتُ ابِي صُرْمَةً "مَنْ ضَارً جَابِرٍ مَنْ آخَى آرُضًا فِى بَابِ الْفَصْبِ بِرِوَايَةٍ سَعِيْدِ بْنِ زَيْدٍ . وَسَنَذْكُو حَدِيْتَ آبِى صُرْمَةً "مَنْ ضَارً اللّهُ بِه" فِي بَابِ مَا يُنْهَىٰ مِنَ التَّهَاجُرِ.

تو جهد: حضرت سمره بن جندب سے مروی ہے کہ ان کے ایک افساری کے باغ بیں چند مجود کے درخت تھاور اس افساری مخص کے ساتھ اس کے اہلِ خانہ (مجمی) رہتے تھے اور حضرت سمر ڈباغ بی اس فیض پروائل ہوتے تھے (بینی آ مدود فت رہتی تھی) جس کی وجہ سے اس افساری فیض کو اذبت پہو چی ؛ چنا نچہ وہ افساری فیض نی اکرم اللہ کے پاس حاضر ہوااور آ پ اللہ ہے اس بات کا تذکرہ فرمایا: لیس نی اکرم اللہ نے سمرہ کو ان بی ہی میں طلب فرمایا تا کہ وہ ورخت آ پ ماللہ کو فروخت کردیں انہوں نے انکار کردیا، آپ ماللہ نے کھران کے بتادلہ کو طلب فرمایا، انہوں نے اس کو ہمی انکار کردیا، آپ ماللہ نے ارشاد فرمایا: تو پھر تم جھے کہ بہر کردواور تہارے لیا اس فیر ہوگا جس کی آپ ماللہ نے ان کو ترغیب دی ، پھر بھی انکار کردیا تو پھر آپ میں نے ارشاد فرمایا: تو بھر بھی انکار کردیا تو پھر آپ بھی نے دار الوداؤد کی احضرت جا بھی نے دالا فضر سے، پھر آپ بھی نے دالوداؤد کی صدیت تھی اس کے درختوں کو کاٹ دو۔ (ابوداؤد کی حضرت جا بھی کی دریت سعید بن ذید اور صدیث افی سرمہ تعن صادا آخو اللہ بھی باب ما بنہی من التھا جو بھی من البی من التھا جو بھی من التھا جو بھی من التھا جو بھی الی من من التھا جو بھی من البی من البیدی من التھا جو بھی من البیدی من البیدی من من البیدا من من البیدا من من البیدا من من من البیدا من من من من البیدا من من من من من من ا

کل ت حدیث کی تشریح بعضد (عادر فر برفتر) نیز شم بھی فن براور ساک بھی پڑھ سکتے ہیں معن منحل ایسی مجود کے چندور فت صورت واقعہ یہ ہے کہ مالک باغ کی رہائش بھی ای باغ میں تھی ، ایک دوسرے محالی کے چندور فت اس باغ میں تے جس کی وجہ سے باغ میں ان کی آ مدور فت ہوا کرتی تھی جس کی وجہ سے صاحب بستان کواڈیت یہو پھی ، اس لئے انہوں نے آپ تھے سے اس صورت وال کا تذکرہ کیا،آپ تھا نے محورہ دیا کرصاحب در دست اپنے در دست فرودت کروے یا پھر ہبرکردے یا پھر تناور پھر تزاع نہ کرنے اس مورت والی انکار کر دیا، در اصل آپ تھا کا یہ محم شری، وجو بی نہ تھا؛ بلکہ از راو محورہ تھا جس سے کہ شکایات اور پھر نزاع نہ ہوو لک الناد کر ایک انکار کردیا، در اصل آپ تھا کا یہ محم شری ارشاد فر مایا کہ اگرتم اس کو قبول کرلو گے تو تم کو بیاور میں فوائد اور اجر حاصل مولا، مگر (نہ صلوم) انہوں نے کیوں انکار ہی کیا، اس کے بعد آپ تھا نے تھم صادر فر مایا کہ ان درختوں کو کا ث دیا جائے اور آپ نے محسوس فرمانے ہوئے ہوئے اور آپ نے مصورت ہوگئی سے درخ دانے اور دفع ضرر کی بی محسوس فرمانے ہوئے درخوز انتیاق محالات مصادر فر مایا کہ اس لیے ایک حالت میں دفع فساد اور دفع ضرر کی بی صورت ہوگئی ہے۔ (اخوذ ارتبیات معاشری)

الغصل الثالث

ونمک اور آگ کا حکم ب

﴿ وَالْمِلْحُ وَالنَّارُ قَالَتُ: قُلْتُ: يَارَسُولَ اللّهِ اللّهِ اللّهَ اللّهَ اللّهَ اللّهِ اللّهَ اللّهِ اللهِ اللّهِ اللّهُ اللّهُ وَالنّارُ قَالَ اللّهِ قَالَ اللّهُ وَالنّارُ قَالَ اللّهُ وَالنّارُ قَالَ اللّهُ وَالنّارُ قَالَ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ

قوجهد: حفرت عائشة سے مردی ہے کہ انہوں نے عرض کیا کہ یارسول الله باللہ اکون ی چیز ہے جس کوئے کرنا حلال (اور درست)

دیس؟ آپ تاللہ نے فرمایا: یائی، نمک اور آگ، حضرت عائش قرماتی ہیں کہ جس نے عرض کیا یا رسول اللہ! یہ پائی جس کی (حقیقت ق)

ہم کو معلوم ہوگی اور نمک اور آگ کی کیا توجیت ہے؟ آپ تاللہ نے ارشا وفر مایا: یا حمیرار! جس محف نے کسی کوآگ دی ہس کو یا کہ اس نے

ہم کو معلوم ہوگی اور نمک اور آگ کی کیا توجیت ہے؟ آپ تاللہ نے ارشا وفر مایا: یا حمیرار! جس محفی نے کسی کوآگ دی ہس کو یا کہ اس نے

ہم کو معلوم ہوگی اور جس فی کیا توجیت ہے بائی گئی ہو۔ اور جس نے نمک ویا کہ اس نے اس تمام چیز کا صدقہ کیا ہے جو اس نمک سلمان کوا کے گھونٹ پائی بلادیا اس جگہ جس جہاں پائی ملک ہوتو کو یا کہ اس نے ایک خلام آزاو کر

دیا (لیعنی اس قدر تو اب حاصل ہوگا) اور جس فیص نے پائی کا ایک گھونٹ اسی جگہ بلایا جہاں پائی ملک نہ ہوتو کو یا کہ اس نے نفس مسلم کو زندگی دے دی۔ (این مائی۔)

کلمات حدیث کی تشری کا بعدل، لین بیک طرح بھی مناسب نبیں ہادراگر پانی تالاب وغیرہ کا ہے تو بہ مائز نبیں ہے کہ مخ کلمات حدیث کی تشری کے اور اس کی ضرورت کا حال تو ہم

سی کے اس کوئے ہیں کیا سی اسکا ہے اگر بیکها جائے کہ عرف عام کی حیثیت اس پردلالت کرتی ہے کہ ع نہ کیا جائے ، فعما مال الع، اسلام اللہ العام کی انسان کاعل ہے دواس کوبصورت کسب حاصل کرتا ہے۔

آپ الله کا ارشاد جوبصورت اجروثواب (جواباً) ہے اور اس کوعلی اسلوب اٹھیم ہے تجیر کیا جاتا ہے کہ جس نوعیت کا خیال تمہارے افہان میں ہے اس کونظرا نداز کرتے ہوئے اس کے اجروثواب پرنظری جائے کے تمک اورآگ جیسی اشیار نے نفع کس قدر ہوتا ہے اور نفع کے اختیار ہے بھی اجروثو اب بڑھتا ہے اور فعنیات ہوا کرتی ہے اور پھر آپ تھاتے نے ان اشیار اللائدی فعنیات ارشاد فرمائی ، والشماعلم ۔ (ماخوۃ ارتباق مع الشرح اسدی)

ياب العطايا

﴿ عطيات اور ہدايا كابيان ﴾

عطیات کی بہت کی اقسام اورصور تیں اس لیے اس کوجع کے ساتھ فر مایا ہے اور یہ جمع ہے عطید تی بہمعنی بلا معاوضہ الی بسلک والی ثی روسرے کوریتا، دوسرے کے حق میں خطل کرنا۔

اورایک مغیوم عطیدگایی ہے کہ امراه اور سلاطین اور مغیوم بیں پیخصوص ہوگا۔ امام غزائی نے ان عطایا کے سلسلہ بس بہت تغصیل کے ساتھ'' منہاج العابدین' میں کلام کیا ہے، الہٰ دائر کا مطالعہ مغید ہوگا۔

اس باب کے تحت عام اور خاص دونوں کا تذکرہ ہے کہ آپ ملک ہے نے حضرات صحابہ وعطایا عنایت فرمائے ہیں ،ای کے پیش نظر امراد اور سلاطین کے انعامات دعطایا کی بحث بھی اس میں کی گئی ہے۔ خلاصۂ کلام بیہ ہے کہ اگر امراد اور سلاطین جوعطیات دیں اگروہ شریعت کے حدود کے مطابق آئے ہوئے اموال میں سے عطاء کریں تو پھرکوئی حرج نہ ہوگا اور اس کے علاوہ ہبداور عطید، ہدیدو فیرہ کی اور بھی صور تیں ہیں جوشر عاً درست ہیں ،صاحب محکلو ہے نے ''باب'' کے تحت بعض اقسام اور انواع کا بیان فرمایا ہے۔ (اسعدی)

الغصل الأول

خوقف اور اس کا حکم ہ

﴿ مديثُ بُهِ ٢٨٨٢ ﴾ عَن أَن عُمَرَ أَنْ عُمَرَ أَصَابَ أَرْصَابِ عَنْهَ فَاتَى النّبِيّ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللّهِ إِنّى أَصَبْتُ أَرْصَا بِخَيْهَوَ لَمْ أُصِبْ مَالاً قَطَّ أَنْفُسَ عِنْدِى مِنْهُ فَمَا تَأْمُرُنِى بِهِ قَالَ: إِنْ شِشْتَ حَبُّ اللّهِ اللّهِ اللّهِ عَمْدُ أَنّهُ لَا يُهَاعُ آصُلُهَا وَلَا يُوْهَبُ وَلَا يُوْرَثُ وَتُصَدَّقْ بِهَا عَمْدُ أَنّهُ لَا يُهَاعُ آصُلُهَا وَلَا يُوْهَبُ وَلَا يُوْرَثُ وَتُصَدَّقْ بِهَا عَمْدُ أَنّهُ لَا يُهَاعُ آصُلُهَا وَلَا يُوْهَبُ وَلَا يُوْرَثُ وَتُصَدَّقْ بِهَا فِي الْفُعْرَاءِ وَفِي الرَّقَابِ وَفِي سَبِيلِ اللّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَالطَّيْفِ لَاجْنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهَا أَنْ يُعْرَبُهُ مَا مِنْ عَيْرَهُمَ عَيْرَ مُتَمَوّلٍ قَالَ إِنْ سِيْرِيْنَ غَيْرُمُنَا مَلِ مَالاً. مُتَفَقَّ عَلَيْهِ .

الم أو وكن في الم مديث ساستدال كرت بوع فرمايا ب "وفيه دليل على صحة اهل كلمات حديث كي تشريح الوقوف" بهر حال الله برتمام امت كا اجماع (بحى) ب كرشر عاً وقف معتبر ب اور جب وتف بو چكا ب اسكا موكا به الله على دوفرونت أبيل موكا به بحى شهو سكم كا ماده فرونت أبيل موكا به بحى شهو سكم كا ماده فرونت أبيل موكا به بحى شهو سكم كا ماده

الميس ورافت مجى نه دوكى ، اور دومرائهم بيه "وانها بنافع النع" واقف كى شرائط كے مطابق على اس وقف سے منافع عاصل كيا هاسكي ہاورونف کی فضیات خاص یہ ہے کہ ووصد قد جاریہ ہے تنعیل دیکھتے سائل اوقاف میں۔ (ارتعاق بس ١٣٥١مدي)

﴿ممریٰ اوراس کیے احکام ﴾

﴿ صديث بر ٢٨٨٣ ﴾ وعَنْ أبِي هُوَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُمْوىٰ جَائِزَةٌ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

کلمات حدیث کی تشری کا دوایات میں چند کلمات کے ساتھ مخصوص تنم کاعطیہ جس کو "عمریٰ" اور "رقی" کیماتھ اہل عرب تجیر کرتے تھے، (بروزن حبلی) جس کامغہوم ہیہ کہ مدت عمریٰ کے لیے برائے سکونت مکان دیا۔

برلفظ دیمن " بی سے ماخوذ بھی ہاوراس میں لفظ عربھی آتا ہے، کسی کی زندگی مراد ہے واہب کی یا موہوب لدی ،اس کی چند صورتم اوسكتى ب

(الف)على الاطلاق أغمرتك هذه الدار كهاجائ (ب)معمّر له كورثاركى وراثت كرماته بهوه فاذا مت فھی لود ثنك تيرے مرنے كے بعدور ثاء كے ليے۔ (ج) واليسى كى تصرت جود، فاذا مت عادت الى والى ورثنى. احوال صفعه : جمابيرابل علم اورائمة اللث كنزديك ان تيون صورتول بين معمرلد كے ليے تمليك بوگ البداواليي كى شرط باطل مولی : اس لیے معمراند کے درانا داس کے حق دار ہوں گے۔اورامام مالک کے فزد کیک تینوں صورتوں میں محض تملیک منافع (سکونے کاحق) ى موكا، كويا كدده عارية دينا مواء مرف كے بعدوالي موكاراس باب كتحت روايات (بظاهر) مختف بي جس وجه سے اہل علم كے درمیان اختلاف مواہے۔

ظلامة كلام يب كرحديث نمبر (٢٨٨٣) ي يصورت بهداورعطيدك ثابت بجوما تزب_

﴿ صديث تُمِرُ ١٨٨٢ ﴾ وَعَنْ جَابِرِ عَنِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ الْعُمْرِئ مِيْرَاتٌ لِا هْلِهَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. قوجهه: حعرت جابر ني اكرم تعلية كاارشاد قل كرتے بين آپ تالية نے فرمایا: بيشك عمري اس كوارث كى ميراث ب- (مسلم)

کمات صدیث کی تشریک اس روایت ش صراحت ہے کہ معمو لدی میراث ہوگ،اس کے مرنے کے بعداس کے ورثار کا کمات صدیث کی تشری

المنده: جس كوده بداورعطيدديا كياباس كومعمرلدكها جائے كا_

﴿ اس عَطِيّه خاص کی میراث ﴾

﴿ مديث بُرِه ١٨٨٥﴾ وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: آيُّمَا رَجُلِ أُعْمِرَ عُمْرَىٰ لَهُ وَلِعَقَبِهِ فَانُّهَا لِلَّذِيْ أَعْطِيْهَا لَا يَرْجِعُ إِلَى الَّذِي أَعْطَاهَا لِآلَهُ أَعْظَى عَطَآءٌ وَفَعَتْ فِيْهِ الْمَوَارِيْتُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ .

قوجهه: حضرت جاير عمروي ب كرسول التعليك في مايا: جوفض كداس كادراس كي اولا د كے ليے عمري كيا كيا بوتو وه ال مخص مے لیے ہے جس کودیا گیا ہے واپس تیس ہوگا اس محض کی جانب جس نے وہ دیا ہے؛ کیوں کہ اس نے دی ہے اسی چیز جس میں میراث جارى موكى_(جاري وسلم)

کلمات صدیث کی تشریح اُغیر ، جمول اور اس کے بعد عمری ، مفول مطلق لایعنی الموجل، جس شخص کو برعطید اور بر کیا ے۔ لعقبہ ایعن اس کے مرنے کے بعد۔

خلاصة كلام يد ب كه جما مير علاد كول كى اس دوايت ، مى تائيد موتى ب كمعمرلد كرم نے كے بعد بحى اس كے ورثادى مالك بول كے! اس ليے كروه بيدكى ايك اصطلاحي صورت تمي

﴿ اگرتاهیات هی دیاهانے تو﴾

﴿ صِيثُ بُرِ ٢٨٨٧﴾ وَعَنْهُ قَالَ: إِنَّمَا الْعُمْرِي الَّتِي آجَازَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ آنْ يَقُولَ: هِيَ لَكَ وَيُعَقِبِكَ فَأَمًّا إِذَا قَالَ: هَلِيَ لَكَ مَا عِشْتَ فَإِنَّهَا تَرْجِعُ إِلَى صَاحِبِهَا. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

توجمه: حفرت جابر في روايت كى كدرمول التعليق في جس عرى كوجا تزقر ارديا (اس كى صورت بيب كدوية والايول) كميد تیرے لیے اور تیرے ور ا کے لیے ہے اور اگر یوں کہا یہ تیرے لیے ہے جب تک تو زندہ ہے تو پھر وہ اس کے مالک کی طرف واپس لوث جائے کی (مرفے کے بعد)_(بخاری وسلم)

كلمات وديث كي تشريح الروايت عن دوصورتون كابيان ب،عطيه كرنے والا (وابب) نے كها (ا)هي لك الخ، (٢) اهى لك ماعشت، جب تكتم زنده مو، تهارے ليے ب، (٢) فانها النع اور مرفے كے بعد

والیں ہوجائے گی اس کے مالک کی جانب الینی تمعیر (م پر تسرہ فعال) بظاہر بیدوایت جماہیر اہلِ علم اور ائمہ ثلاث کے خلاف ہے نیز گذشته رواست جابر کے بھی خلاف ہے؛ لہذا اس کا جواب بید یا گیا ہے کہ از روئے محتیق یہ بعد کا جملہ مرفوعاً نہیں ہے؛ بلکہ راوی امام زہری کا (اندراج) ہے جس کی تقری اور تحقیق اعلاء اسنن میں کی گئی ہے، اور حدیث نمبر (۲۸۸۴) میں حضرت جابر بھراحت مقل فرمائے ہیں کمامر مفیز اس کے علاوہ اور روایات ہے بھی بہی فابت ہے۔

الغصل الثاني

﴿ صِدِيثُ مُبِرِ ٢٨٨ ﴾ عَنْ جَابِرِ عَنِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : لَا تُرْقِبُوا وَلَا تُعْمَرُوا فَمَنْ أُرْقِبَ شَيْمًا أَوْ أَغْمِرَ فَهِيَ لِوَرَثَتِهِ .رَوَاهُ ٱبُوٰدَاوُدَ .

ترجمه: حضرت جابر عدوايت ب كدني اكرم الله في ارشادفرمايا: ندرتي كروادرندعرى سوجوفض رقى ياعرى كيا كيابى وواس كاور الديك ليے بالينى وه مبدمو چكا بالداموموب لذك وارث بى حقدار مول كـ (ابوداؤة)

الروایت می دوامر بین (۱) اولاً تو آب ما در در استان که عموی اور دُفی ند كرو_(٢)اوراكركس نے كيا باتو وہ واجب كى مكيت سے جب نكل چكا باتو موجوب لدكى مكيت ہوئی اور وہ بحد ؤاس کے ورثار کاحق ہوگا۔

دور جالمیت می (شاید) اسکوملک ندجائے ہوں مے ؛ اسلے آپ اللے نے اسکی دضاحت فرمادی کدشر عاملک فتم موجاتی ہے۔ فلنده: رُفِي بِي مثل عُمري بن كَعَم ش إوروه ما خوذ إلى قاب" على معنى انظار اورنگاه برموت.

ضدوری وضعاحت: بهرحال ممر ال اور دقی فی نفسه جا تزئیس ؛ چنانچداس کے بعد کی روایت میں اس کی صراحت موجود ہے۔ ﴿ مِدِيثُ بُهِ ١٨٨٨﴾ وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الْعُمْرِي جَائِزَةٌ لِآهُلِهَا وَالرُّفَيْي جَائِزَةٌ لِا هَلِهَا. رُوَاهُ أَحْمَدُ وَالتُّرْمِلِينُّ وَأَبُوْدَاؤُدَ .

توجمه: حضرت جابر سے دوایت ہے کہ تی اکرم اللے نے فرمایا: عمری جا تزہاں کے مالکوں کے لیے اور قی جا تزہاں کے الكول كے ليے _(احتريز فدي ابوداؤر)

گذشتہ روایت نبر (۲۸۸۸) یم آپ تافی کا مشورہ ارشاد ہے کہند کیا جائے کہ بعد مس کی شم کا نزاع نہ پدا ہو، واہب اور موہوب لہ کے در ثار کے در میان کہ برایک ش مکیت کا مدی ہوجائے اور

كلمات مديث كي تشريح

فى نفسدىددونو ل مورنى صليداور بسك جا تركيس إلى -

النصل الثالث

﴿مال کی هفاظت کی جانے ﴾

﴿ مديث بْهِ ١٨٨٩ ﴾ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهُ صَلَى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلْمَ: أَمْسِكُوا آمُوَالَكُمْ عَلَيْكُمْ لَا تُفْسِدُوْهَا قَالَةُ مَنْ آعْمَرُ عُمْرِى فَهِيَ لِلّذِي أَعْمِرَ حَيّاً وَمَيّاً وَلِعَقِيهِ. وَوَاهُ مُسْلِمٌ.

موجعه: حضرت جابر نے روایت کی کدرسول اللہ اللہ نے فر مایا جم نوگ اپ اموال کواپنے پاس بحفاظت رکھوان کوضائع ندکرو، جو مخص کمی کوعمری دیتا ہے وہ ای مخض کے لیے ہے کہ جس کے لیے عمر کی کیا گیازندگی میں (بھی) اور مرنے کے بعد بھی اوراس کے بعد وراہ کے لیے ہے۔ (مسلم)

رجد دیے ہے۔ (سم)
احسکوا النع، سے (بمی) ہی امر معلوم ہوا کہ آپ تھا کے مشورۃ یہ ہدایت فر مائی ہے کہ 'اپنے کمات حدیث کی تشریح النع، سے (بمی) ہی امر معلوم ہوا کہ آپ تھا کہ است حدیث کی تشریح النا کو اپنے ہی قبضہ میں رکھا جائے ؛ اس لیے کہ اگر صاحب مکان نے '' بھورت عمریٰ' بہد کردیا

ہاور جب ہبرکردیا کیا ہے تو زندگی اور مرنے کے بعد بھی موہوب لہ ہی کلیت رہے گی اور وراجت جاری ہوگی ،علامہ تو وی فرائے جی کر آپ تھا ہے کہ اور جب ہبرکردیا کی ملیت رہے گی اور وراجت جاری ہوگی ،علامہ تو وی فرادر جی کہ آپ تھا اور جب کہ اور کہ ارشاد سے امت کو ہا خبر کیا ہے کہ عمر او عطیہ کرنا دراصل ہبہہ ہا اور موہوب لہ اس کا ما لک ہوجائے گا اور وصلاب تام اور ملک مجے ہوگی ؛ للزااب کسی بھی وفت واجب کی جانب والی نہیں ہوگی اور آپ تھا ہے نے اس تصریح اور وصاحت سے اس امر کھی بیان فرمادیا کہ یہ عمر کی اور وضاحت سے اس

باث

اگرچاس باب کاکوئی عنوان نہیں ہے الیکن بیگذشتہ ہی باب (کا ایک حصداوراس کا) محملہ ہے۔

الغصل الاول

﴿خوشبوكاعطيه﴾

﴿ مديث تُبر ١٨٩٠﴾ عَنْ آبِي هُوَيُوةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ عُوضَ عَلَيْهِ وَيُحَانَّ فَلاَ يَوُدُهُ فَإِلَّهُ خَفِيْكُ الْمَحْمِلِ طِيْبُ الرَّيْحِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ.

قو جعه: حطرت الوبريرة في نقل كيا كدرسول الشفائلة في فرمايا: جم فض كو پيش كيا جائة وه ال كووايس شرك إكول كدوه الهائة جائے على إكاب (اور) خوشبودار بر رسلم)

مقعید بیان یہ کہ دریجان کمول جس کی خوشبو بہت محدہ ہے، ہدیدادر عطیہ ہے اس کو قبول ہی کرایا علمات حدیث کی تشری علی ہے جس کے قبول کرنے والے یرکوئی (احسان کا) یوابو جدنہ ہوگا۔

> وريث بمبرا ٩٨٩ وعَنْ أنْسِ أنَّ النَّبِي صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ كَانَ لَا يَرُدُّ الطِلْبَ. رَوَاهُ الْبُحَارِيُ . عَرِجه : حَرِت الْسُّ عِروايت مِ كَهِيْكَ بِي الرَّمِ اللهُ عَلَيْهِ وَسُلِم كُلُ لَا يَرُدُّ الطِلْبَ. رَوَاهُ الْبُحَارِيُ .

آپ ملک کی سنت ہے کہ خوشبوآ پ ملک تبول فر ماتے تھے، واپس نہیں کرتے تھے، صدیث نمبر (۱۸۹۰) کامفہوم اور مقصدایک بی ہے (اسعدی)

كلمات حديث كى تشرت

﴿هدیه دیے کرواپس لینا ﴾

﴿ صَرِيثُ مُمِرُ ١٨٩١﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبًا مِن قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْعَائِدُ فِي هِبَتِهِ كَالْكُلْبِ يَعُودُ فِي قَيْتِهِ لَيْسَ لَنَا مَثَلُ السُّوٰءِ. رَوَاهُ الْبُخَارِئُ .

کلمات حدیث کی تشریح کے مقصد بیان بہ کہ مدیداور ہدکرنے کے بعداس کووائی لینا بہت مرموم اور بری خصلت ہاور کلمات حدیث کی تشریح کے اس کی بیعادت ہے کدوہ اپنی تی

كرده كو پحرائي بى پيت يك وائي كرتائي يعنى اس كو كهاليتائي الله الله الله ما ورشر فاد اس نصليد بدكو بركز اختيار ندكريل السوء، مين ان دونول پرضمه آستے بيں جن انسانوں كا آخرت پرايمان بيس بان كئ يس فرمايا ب، قال تعالى"الذين لا يؤمنون بالآخوةِ مثلُ المسوءِ"

حاصل كلام: الى عديث معلوم بواكه بديد كروالس ليناحرام ب(ياكروة تحريف ب) جس كى تدري تفصيل عديث فمبر (٢٨٩٥) كے تحت معلوم بوگی انشار الله (اسدى)

التوال منقهد: حعرات المرهلات كنزديك والس ليناناجائز، بباسديا كياب وهالك موكيا-

استدلال احناف: برولس حفرت الومريرة آپ آياته كاارشادي الواهب احق بهبته ما لم يُشب منها "اوراى مغيوم كى روايت حفرت اين عرف عانقل كي ب (اخوجهما الدار قطني في سننه)

هامنده: حدیث نمبر (۱۸۹۰) بی جونمثیل ب بلاشده و نهایت کرده مونے برولالت کرتی ہے تا ہم بیشناعت (شرعاً) عندالاحناف کراہت برمحول بےندکہ حرمیت شرعید بروالله اعلم۔

اس کیے ضروری ہے کہ جن روایات سے (ضرورۃ) واجب کوئی دار ہونا فر مایا ہے ادر دولیت زیر بحث کو بھی پیش نظر رکھتے ہوئے ایک تطبیق ہوجس سے تعارض نہ ہو، تا ہم عندالا حناف بھی بیروایس کا تھم علی الاطلاق نبیس ہے؛ بلکدا گروایسی کے لیے (شری) مواقع ہوں تو واپسی درست نہ ہوگی ،اور وہ مواقع سات ہیں ...

﴿اولاد سب برابر هے﴾

﴿ وَدِيثُ بُرِ ١٨٩٣﴾ وَعَن النَّعْمَا نَ بْنِ بَشِيْرِ آنَ آبَاهُ آتَى بِهُ إِلَىٰ رَسُولِ اللَّهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ إِنِّى نَحَلْتُ ابْنِي هَلَا عُلَاماً فَقَالَ: آكُلُ وَلَدِكَ نَحَلْتَ مِثْلَهُ قَالَ: لَا قَالَ: فَارْجِعْهُ وَلِيْ وَوَايَةٍ آنَّهُ قَالَ آيَٰ مُعْلَقًا ابْنَى هَالَ: فَلَا إِذَا وَلِيْ وَوَايَةٍ آنَهُ قَالَ: اعْطَا فِي آيَّهُ قَالَ ايَسُوكَ آنَ يَكُونُوا اللَّهِ عَلَيْهِ وَايَةٍ آنَهُ قَالَ: اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَآتِي وَسُولَ اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَآتِي وَسُولَ اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَآتِي وَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَآتِي وَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَآتَى وَشُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: اللهِ آلَى آغَطَيْتُ البَيْ مِنْ عَمْوَةً بِنْتِ وَوَاحَةً فَامَوَتُنِي آنَ اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَآلَ: اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الْعَالَ اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ: اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ: اللهُ عَلَيْتَ سَائِرَوَلَذِكَ مِثْلَ هَلَا قَالَ: لَا قَالَ: قَاللهُ وَاللهُ وَاعْدِلُوا وَاللهُ وَالْهُ وَاللهُ وَاللهُ وَالْدِلُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ قَالَ: الْهُ عَلَيْتُ سَائِورَ لَذِكَ مِثْلَ هَلَا قَالَ: لَا قَالَ: قَالَةُ وَاللّهَ وَاعْدِلُوا

يَيْنَ أَوْلَادِكُمْ قَالَ: فَرَجَعَ فَرَدْ عَطِلْتُهُ وَفِي رِوَايَةٍ أَنَّهُ قَالَ: لَا أَشْهَدُ عَلَى جَوْدٍ. مُتَّفَقَ عَلَيْهِ.

قوجمه: حضرت نعمان بن بشر سروايت بكريشك ان كوالدان كورسول السين كى خدمت بس كرحاض بوع اورانبول نے عرض کیا کہ وشک میں نے اپنے اس اڑے کو تحفہ دیا ہے ، آپ اللہ نے در یافت فر مایا: کیا تم نے اپنے سب اڑکوں کو اس طرح تحفہ دیا ہے؟ انہوں نے کہائیس آپ کا نے فرمایا: تو پھراس کووالی او۔

اورایک روایت س ب کرآپ اللے نے دریافت فرمایا: کیاتم کویہ بات پندے کہ تمام اولاد تمہارے ساتھ بمطالی کرنے میں برابر مو؟ انبول نے کہائی ہاں! آپ میکافٹ نے فرمایا: مجرتو (مصورت محمک) نبیل۔ (کہتم ایک کوتھندو)

اورایک روایت میں ہے کے حضرت نعمان نے بیان کیا کہ مجھ کومیرے والد نے ایک عطیہ عنایت فرمایا تو عمرہ بنت رواحہ (والد ف نعمان) نے کہا میں خوش میں ہوں۔ تا دفتیکہ رسول الشعائظ کو کواہ نہ بنا دیا جائے ، چنانچہ دہ رسول الشعائظ کے پاس آئے اور کہا کہ میں نے عرة بنت رواحد کی (اولاد) سے اپنے اور کو ایک تخد دیا ہے اور اس نے جمع سے بدکھا کہ میں رسول الشمالی کو اس بر) گواہ مناؤں۔آپ تھے نے دریافت فرمایا کیاتم نے اپی تمام اولا دکوائ طرح دیا ہے؟ انہوں نے کہانیس آپ تھے نے ارشادفر مایا تم اپن اولاد کے درمیان انصاف (اور برابری) کرو حضرت نعمان نے بیان کیا کہ بس وہ واپس آئے اور انہوں نے اپنا تخدوا پس لے لیا۔اور ایک روایت میں ہے،آپ تھا نے ارشادفر مایا میں ظلم پر کواوٹیس بنول کا۔ (بناری)

کلمات حدیث کی تشریع مقصد بیان ب که اگر والدین اولا دکو بهداور عطید دین قوتمام اولا دکاحتی برابر ب، ایک کو بهد یا جائے کلمات حدیث کی تشریع اور دوسرے کو ضد یا جائے تو درست نہیں ہے؛ بلکد آ پ تاکے کا تھم ہے ' اغد لو ۱ المنح '' برابری کرو۔

علامالووي قرات بن "فيه استحباب السوية بين الاولاد في الهبة"

التوالي عنقهد: المام اعظم والم مالك معرت المام ثانعي كزديك بديرابرى ندكرنا مروه بي وليس بعوام "البداا كرعدم برابرى كى رعايت مذكرتے موسة ديا كيا توبيدورست بوكا (مع الكرابت)

اورامام احد کے زویک حرام ہے: اس لیے کوآ پہناتے نے اس عمل کوفر مایا کہ وہ ظلم ہے۔

هافده: حضرت الوبكر صديق في حضرت عائشة ودوسرى اولا دك بمقابله ذا كدعطيه عنايت فرمايا تحااور مضرت عمر في اي صاحبزاده عاصم كوجى ذائدادر حضرت عبدالرمن بن عوف في في الدام كلتوم "كوزائد عطيه فربايا ب، ادراس بركوني اعتراض واشكال ثابت نبيس فيكون اجماعاً _(العلق)

الغصل الثاني

وهبه کرنے کے بعد پ

﴿ حديثُ بُهِ ١٨٩٣﴾ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بُنِ عَمْرِ وقَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا يَرْجِعُ آحَدٌ فِي هَبَتِهِ إِلَّا الْوَالِدَ مِنْ وَلَدِهِ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاحَةً

قو جمه: حضرت عبدالله بن عمرونے روایت کی که رسول الله مالیا که کی مخص مبهکودا پس ندیے مگر والدایئے ولدے واپس لے مكتاب-(نالااناجة)

كلمات حديث كاتشرك الدوايت من بمى فرمايا بكدوالي ندى جائ البت استثار ب إلا الوالد النع باستثار منقطع ے والد اپ دیے ہوئے سے اپن اولاد سے واپس اگر لے تو اس کی اجازت ہے مالانکہ

م ذشتہ سطور میں بیمعلوم ہوا ہے کہ قر امید محرم سے ہدکو والی نیس لیا جاسکتا ہاس لیے اس دوایت میں بیا سنتار ہوا ہے تا کہ معلوم ہو جائے کہ والعداور اولا دکا تھم دوسرے اقرباء کے اعتبارے فرق ہے ، اور و چفر ق کیا ہے (۲)

دوسری نفوش سے معلوم ہوا کہ 'الت و ما لك الأبيك' والد كے پکوخاص حقوق ہوا كرتے ہيں اپنی اولاد كے اموال ميں جو دوسر سے اقرباد كے حق ميں نيس البذاعند العرورت والد اپنی اولا د كے اموال ميں حب ضرورت شرعاً تصرف كرسكا ہے جس كی تفصیل سرب فقہ ميں ہے۔

والد كا اولاد كے مال ميں سے تقرف كرنا كويا كه وه صورتا عطيه كرده ميں سے واپس ليما ہے ؛ ليكن في الحقيقت بدرجوع نہيں ہے۔ (ماخوذ)

بلكي ضرورت شديده كودت ادني ضروريات كيلي ايناب-والله اعلم (اسدى)

﴿واپسی کسی طرح مناسب نھیں ﴾

﴿ صَابَتُ مُمْ مَا لَهُ وَعَنِ أَبْنِ غُمَرَ آبْنِ عَبَّاسٍ آنَّ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَا يَجِلُ لِلرَّجُلِ

اَنْ يُعْطِى عَطِيَّةٌ ثُمَّ يَرْجِعُ فِيْهَا إِلَا الْوَالِلَهُ فِيْمَا يُعْطِى وَلَدَهُ وَمِثْلُ الَّذِي يُعْطِى الْعَطِيَّةَ ثُمْ يَرْجِعُ فِيْهَا

كَمِثْلِ الْكَلْبِ أَكُلْ حَتَى إِذَا شَبِعَ قَاءَ ثُمَّ عَادَ فِي قَلْيِهِ. رَوَاهُ آبُوْدَأُودَ وَالتَّوْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ

مَاجَةً وَصَحَّحَةً التَّوْمِذِيُّ .

قو جعه: حفرت عبدالله بن عر اورحفرت عبدالله بن عماس بدوایت که بینک نی اکرم الله نے ارشاد فر مایا: آدی کے لیے یہ بات طلال نہیں کہ وہ (کسی کو) کوئی ہر بیدے اور پھراس کو والیس لے، مگر والداس ہی میں رجوع کرسکتا ہے جواس نے اپنے وَلدکو دیا ہے اور اس کی مثال جو کہ ہرید ہے ہوئے کو پھر والیس کرے کتے ہے شل ہے کہ اس نے کھایا یہاں تک کہ جس وقت پید بھر کیا تو تی کردی اور پھرائی تی کوچا شالیا۔ (ابو واوُر وَمِرَ فَدِیِّ ،ابن ما چہ اور امام تر فری نے اس صدیث کوچے فر مایا)

کلمات مدیث کی تفری کررچی ہے۔

چھدیہ کا بدلہ دینا بھی مندوب ھے ہ

﴿ صِهِ مِنْ مُهِ ١٨٩٧ ﴾ وَعَنْ أَبِي هُوَيْرَةَ أَنَّ أَعْرَابِيًّا آهْدَىٰ لِوَسُولِ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ بَكْرَةً فَعَوْضَهُ مِنْهَا مِنتَ بَكُواتٍ فَتَسَخَّطَ فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيِّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَمِدَ اللهَ وَاثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: إِنَّ فَلَا نَا آهْدَىٰ إِلَى نَاقَتَقَعَوَّضْتُهُ مِنْهَا سِتَ بَكُرَاتٍ فَظَلَّ سَاخِطًا لَقَذْ هَمَمْتُ أَنْ لَا أَفْبَلَ هَدِيَّةً إِلَا مِنْ قُوشِيٍّ أَوْ دَوْ سِيَّ رَوَاهُ التَّرْمِذِي وَآبُودَاوَدَ وَالنَّسَائِيُّ.

قو جعه: حفرت الوجرية عن روايت بكراكي الرالى في رسول النفظة كوايك جوان او ثنى بدير كاتو آب الكافة كوية فريه و في ، آب

على في الشرتوالى كاحدوثا بيان فرما كي اور محرفر ما يا كدفلال فض في مجملو بدية اليك او ثنى دي هي ، يس في اسكوا يك او ثنى يحوض جهد
او شخيال و مي تو وه خوش ند جواس في اداده كيا به بدية بول ندكرول كا محرفر يش يا انسارى يا تعنى يا دوى سه رز قدي ، ابوداؤة ، نما كي)

او الف) اس روايت سے معلوم مواكر آب مالله كي بديت مي كدو فض آب مالله كو مبداور مديد في السوارى الله كي كروفض آب مالله كو مبداور مديد في السواري الله كي مات مي كارت آب مالله السواري من عنايت فرمات ،

بكرآب كلك زياده مقدار منايت فرمات تق

وهدیه پر دعاء پ

﴿ صِرِيثُ مِّرِكِ ٢٨٩﴾ وَعَنْ جَابِرٍ آنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ أَعْطِى عَطَاءً فَوَجَدَ فَلْيَجْزِبِهِ وَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَلْيُشْنِ فَإِنَّ مَنْ آثْنَى فَقَدْ شَكَرَ وَمَنْ كَتَمَ فَقَدْ كَفَرَ وَمَنْ تَحَلَّى بِمَا لَمْ يُعْطَ كَانَ كَلَابِسِ ثَوْبَى زُوْد.رَوَاهُ التَّوْمِذِيُّ وَآبُوْدَاوُدَ.

قو جعه : حضرت جابر سے روایت ہے بیٹک ہی اکرم اللے نے فرمایا: جس کوکوئی ہدید دیا گیا ہوتو اگر وہ گنجائش رکھتا ہے تو اس کا بدلہ
دید ہے اور اگر موقع نہ پائے تو چر وہ ہدید دینے والے کی تعریف (لیتی شکریدادا) کردے ؛ کیوں کہ جس شخص نے تعریف کی اس نے شکریدادا کیا اور جس شخص نے کمی کے احسان کو چمپایا تو اس نے گفر ان فعت کیا اور جس نے آرائٹی کی ایس چیز کے ساتھ جو کہ اس کوئیس دی گئی۔ (لیعنی خلاف حقیقت فلاہر کرتا ہے) تو وہ جموٹ کے دو کیڑے میننے والے شخص کے ماند ہے۔ (ترفی ، ابوداؤر)

کلمات صدیث کی تشریکی ایران بیدے کہ اگر کوئی فض وسعت رکھتا ہے کہ وہ بدیکا بدلہ (بصورت) مال بدیة دے سکیا بوتو ایرام شخس ہے اور اگریہ ندہو سکے تو چر بہداور بدید دینے والے کے تن میں دعا کی جائے اور اس کا

حسن كلام كماته شكريداداكياجات، تاشكري أرى خصلت ب-

و من تحل المع، اور الركم فض في خودكوالى حالت كم ما تحد آراسته كيا بو، جواس كومن جانب الله عطانه بوئي بوتواس كي مثال سيب" كان كلابس المع "كروه ال فض كمثل ب جس في جموث (اوردهوكدوى كے ليے) لياس زيب تن كيا بوا ب جس سے لوگون كودهوك بواورده اس كام كام لياس سے متاثر بوكراس كام زار كريں حالانكدوه اس كامستحق نبيس بے۔

﴿ احسان کرنے والے کے لیے دعا کرنا﴾

﴿ صِدِيثُ مُهِرِ ١٨٩٨﴾ وَعَنْ أُسَامَةَ بُنِ زَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: مَنْ صُنِعَ اللّهِ مَعْرُوثَ لَقَالَ لِفَاعِلِهِ: جَزَاكَ اللّهُ خَيْراً فَقَدْ آبِلَغَ فِي النَّنَاءِ. زَوَاهُ التّرْمِذِيُّ .

قو جمع : حضرت اسامہ بن زید ہے روایت ہے کدرسول النہ اللہ فی ارشاد فرمایا: جس مخص کے ساتھ کوئی بھلائی کی گئی ہوتو (اگر)اس بھلائی کرنے والے کواس نے جزاک اللہ خیرا کہددیا تواس نے ثناء کرنے (اورشکریداد اکرنے کا کھمل حق اداکردیا)۔ (ترندی)

کمات مدیث کی تشریح الله" کائل دعا م اور کمال درجہ کی ادائی ہے؛ اس لیے کہ جو جزار اس کو منجانب الله عطا ہوگی

بلاشبدانسانی عوض کے بمقابلہ و واعلی درجہ پر ہوگی اور کو یا کہ اس مخص نے بیاعتر اف کیا ہے کہ میں اس کا بدلہ اور عوض دینے پر قادر نہیں موں ، قاصر بول _ (ما خود از تعلق مع الشرح ، اسعدى)

﴿ مِدِيرُ عُنْ مِهِ ٢٨٩٩ ﴾ وَعَنْ أَبِي هُوَيُوهَ قَالَ: قَالَ وَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم : مَنْ لَمْ يَضْحُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُواللَّهُ. رُوَاهُ أَحْمَدُ وَالنُّومِدِيُّ .

قد جمه: حفرت ابو ہريرة عدوايت ب كدرسول الله مالية فرمايا: جوفض لوكوں كاشكريداد البيس كرسكا وه الله تعالى كاشكريه مي ادا نبیں کرسکتا۔ (احد، ترندیؒ)

کلمات صدیث کی تشریح اس ارشاد نبوی میلی میں اس امر پر تنبیہ ہے کہ جوفض ایک انسان کاشکریدادا کرنے میں بخیل ہے وہ بلاشبهالله تعالیٰ کے احسانات کثیرہ بربھی شکریہ کرنے میں بخیل ہوگا، اور انسانی احسان بھی دراصل الله

تعالی کی عنایت بی کی وجہ سے ہوا کرتا ہے، وہ صرف طاہری ذریعہ اور سبب ہے

دخضرات مهاجرين كاايثاري

﴿ صِدِيثُ تُمِر ٢٩٠٠﴾ وَعَنْ أَنَسِ قَالَ: لَمَّا قَدِمَ ﴿ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ آتَاهُ الْمُهَاجِرُونَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ! مَارَايْنَا قَوْماً آبْذَلَ مِنْ كَثِيْرِ وَلَا أَحْسَنَ مُوَاسَاةً مِنْ قَلِيلِ مِنْ قَوْمٍ نَزَلْنَا بَيْنَ اَظْهُرِهِمْ لَقَدْ كَفَوْنَا الْمُؤْنَةَ وَاشْرَكُونَا فِي الْمَهْنَا حَتَّى لَقَدْ خِفْنَا انْ يَذْهَبُوا بِالْا جُرِ كُلَّهِ فَقَالَ: لَا مَادَعَوْلُهُ اللَّهَ لَهُمْ وَٱلْنَيْدُمْ عَلَيْهِمْ. رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ وَصَحَّحَةُ.

قوجمه: حفرت انس في بيان فرمايا كه جس وقت رسول التعليق مدينة تشريف لائة وسي الله كان خدمت من مهاجرين حاضر ہوئے اورعرض کیا یا رسول اللہ! ہم نے کسی تو م کوان سے زیادہ خرج کرنے والی نہیں دیمی اور نہ تھوڑے ماجل سے معاونت و بھلائی كرنے ميں اس قوم سے كى كو بہتر ويكھا كہ جس قوم كے درميان ہم لوگ مقيم ہوئے (ليني ججرت كے بعد قوم انصار كے پاس قيام پذمي ہوئے) ان لوگوں نے محنت ومشقت ہے ہم لوگوں کو کفایت کیا اور منفعت میں شریک بنایا یہاں تک کہ ہم نے اندیشہ کیا کہ وہ تو تمام اجروثواب ماصل كرليس مع اليعن بم اس درجيثواب ماصل ندر حكيس ك) آي الله في ارشاد فرما يانبيس! جب تك تم لوك ان كحن می الله تعالی ہے دعا کرتے رہو گے ،اوران کی تعریف (اورشکریہ) کرو گے۔ (ترندی ٌروایت اور سیح کیا ہے)

کلمات حدیث کی تشریح احترات محابدانصار نے اپنے اسلامی بھائی مہاجرین محابہ کے ساتھ بہت زیادہ حسن سلوک والا احمان حدیث کی تشریح معاملہ کیا تھا، جس کی کوئی مثال اور نظیر نہیں ہو عتی۔ اس روایت میں حضرات مہاجرین کا ای احسان

جزیل کا اعتراف ہے اور ای کے ساتھ اس کا بھی احساس ہے کہ ہماری جانب ہے ان حضرات کواس کا کوئی بدلہ اور عوض نہیں دیا گیا ہے تو آسين في إراراوفر مايد المادعوتم الله الخ.

اليانبيں ہے (كرتم كوكوئي اجروثواب ندملے، بلكه اس كي صورت يدہے كه) جب تكتم ان كے حق يس الله تعالى سے وعاكرتے رہو گے، تم بھی اس دعا کے ذریعہ اجروثواب حاصل کرلو گے اوران کے احسانات کا بدلہ اواکرتے رہو گے دعا کے ذریعے۔

﴿هدیه کی برکت﴾

﴿ صِينَ مُمِرا ٢٩٠ ﴾ وَعَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسُلَّمَ قَالَ: نَهَا دُوا قَانَ الْهَدِ يُهَ تَلْعِبُ الْطُّهَالِنَ رَوَاهُ. (1) (۱) درامل نفيش ال جكم عاض عدب ضابطة مصنف : اس لي كدمصنف اس روايت كي خرج كومعلوم ندكر يات سعه قال الشيخ الدوري ، رواه المتومذي (ماخوذ از حاشيه فكلوة - اسعدى)

الصفائ ، جمع ہے صفینة کی مکینده حد بغض بعن قلی امراض جوآئی میں بیدا ہوتے ہیں۔ بدید دینا بیطامت ہے عبت کی البذاجب دونوں جانب سے بیسلسلہ ہوگا تو قلب صاف ہوں گے۔

﴿كونى هديه حقير نهين﴾

﴿ مِدِيثُ مُبِرَ ٢٩٠١﴾ وَعَنْ آبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: تَهَا دُوْا فَإِنَّ الْهَدِيَّةَ تُلْهِبُ وَحُرَالصَّدْرِ وَلَا تَحْقِرَنَّ جَارَةٌ لِجَارَتِهَا وَلَوْشِقُ فِرْسَنِ شَاةٍ. رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ

تن جمه: حضرت آبو ہریرہ نی اکرم تا ہے ۔ نقل کرتے ہیں آپ تالیہ نے فر مایا: باہم ہدیرکالین وین کرو۔ کول کہ ہدیرسین کے عیف وفضب کودورکرتا ہےاورند تقیر جانے کوئی پڑوی مورت اپنی پڑوئن کو ہکری کے کلڑے کے ہدید بیسینے سے۔ (ترندی)

لا تحقر فى جقير اور كمتر ندخيال كرنا ، اورعبارت مي مفول "هدية" كذوف ب-مقصد بيان سه كلمات حديث كي تشرت على الم محكولي بدية على الم الم محكولي بدية على الم الم محكولي بدية على المحتوى بدوس كي جانب ساتواس كو كمتر تصور ندكيا جائے-

فوسٹ کریا کھرکے نیچوالا کوشت جو نظام بہت کمترشی ہے الکین جذبہ محبت میں دی ہوئی کیل ٹی رہمی بڑی ٹی مے اور بعض اہل علم نے ''جادہ'' سے سوکن بھی مرادلیا ہے۔

﴿ وَمَدِينَ ثُمِرُ ٢٩٠٣﴾ وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلَّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَلاتُ لَا تُرَدُّ الْوَسَائِدُ وَاللّهُ وَ وَاللّهُ وَلَا لَا اللّهُ وَاللّهُ وَالّهُ وَاللّهُ واللّهُ وَاللّهُ وَالَّاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ واللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَال

قو جعه : حضرت عبدالله بن عرف نقل کیا که رسول الله الله الله تین چیزیں ہیں (جو)واپس ندی جا کیں۔ ایک تکمیداور دوسری تیل اور تیسری چیز دودھ۔ (تر فدی) اورامام تر فدی نے فرمایا بیرحدیث غریب ہے۔ بعض حضراب نے فرمایادھن سے مرادخوشبو ہے۔

کل ت حدیث کی تشری اور از واکرام اور جذبہ محبت کے ساتھ ہواکرتی ہے۔ اعزاز واکرام اور جذبہ محبت کے ساتھ ہواکرتی ہے۔

﴿پھول بھی بڑا تحفہ ھے﴾

﴿ صديث تُمِرٌ ٢٩٠١﴾ وَعَنْ آبِي عُثْمَانَ النَّهُدِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا أَعْطِى الحَدْكُمُ الرَّيْحَانَ فَلَا يَرُدُهُ فَإِنَّهُ خَرَجَ مِنَ الْجَنَّةِ. رَوَاهُ التَّرْمِذِي مُرْسَلًا.

قى جعه: حعرت الدعثان نهدي في نقل كيا كدرسول النهاي في فرمايا: جبتم كو پيول (خوشبو) پيش كيا كيا جائي واس كورد ندكرو كول كدوه جنت سے فكلا (اور نازل) مواہے۔ (تر ندي مرسلا)

کلمات حدیث کی تشریک اگرچہ بظاہر پھول ادنی شیء ہے مگر وہ معنوی اعتبارے بھی بڑا مدیا ورتخفہ ہے، کدوہ جنت ہے آیا ہوا میں است حدیث کی تشریک ہے۔ بیاس کی معنوی قبت اور درجہ ہے اور خوشبوجواس پھول کی ہے وہ قلب اور دیاغ کومر وروفرحت

پيونيائے کا۔

النصل الثالث

دِناهق برشهادت ناجانزهیے﴾

﴿ مديثُ بُهِ ٢٩٠٥ ﴾ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَتْ إِمْوَاهُ بَشِيْرٍ: الْحَلُ الْبَيْ عُلَامَكَ وَاشْهِدْ لَيْ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم فَقَالَ: إِنَّ الْبَنَةَ فَلَان سَالَتْنِي اَنْ الْمُحَلَ الْبَهَا عُلَيْهِ وَسَلَم فَقَالَ: إِنَّ الْبَنَةَ فَلَان سَالَتْنِي اَنْ الْمُحَلَ الْبَهَا عُلَيْهِ وَسَلَم فَقَالَ: إِنَّ الْبَنَةَ فَلَان سَالَتْنِي اَنْ الْمُحَلَ الْبَهَا عُلَيْهِ وَسَلَم فَقَالَ: إِنَّ الْمُعَالَةُ فَالَ: اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم فَقَالَ: آلَهُ الْحُوقَ قَالَ: نَعَمْ ا قَالَ: اَلَّهُ كُلُهُمْ عَلَيْهُمْ مِثْلَ مَا اعْطَيْتَهُ قَالَ: لَا قَالَ: لَا قَالَ: فَلَيْسَ يَصْلُحُ هَذَاوَ إِنِّي لَا اللهِ عَلَى حَتَّى رَوَاهُ مُسْلِمٌ .

تو جعه: حعزت جابڑنے بیان کیا کہ بشرگی زوجہ نے کہا کہ میرے بیٹے اپنے لڑکے (نعمان بن بشیر) کوعطیہ دے دوادر رسول النسکانی کو (اس پر) میرے تن میں گواہ بناؤ۔ چنانچہ وہ نبی اکرم آگئے کے پاس حاضر ہوئے اور عرض کیا فلانیہ کی بٹی (بینی میری زوجہ) نے جھے سے سوال کیا ہے کہ میں اپنے لڑکے (بینی) اس کے بیٹے کو تھنہ دوں اور اس نے یہ بھی کہا ہے کہ میرے تن میں رسول النسسائی کو گواہ بناؤں ،آپ آگئے نے دریافت فرمایا کیا اس کے اور بھی بھائی ہیں؟

حصرت بشرط نے عرض کیا جی ہاں! آپ تھا نے فر مایا کیا تم نے اپنی تمام اولا دکواس کے مثل دیا ہے جوتم نے اس کودیا۔انہوں نے جوایا عرض کیا نہیں، آپ تھا نے فر مایا پھر تو بید درست نہیں اور میں توحق (خالص جس میں کسی تشم کی کراہت بھی نہ ہو) کے علاوہ پر گواہ

نهيں بنوں گا۔ (مسلم)

حل لغات: انحل ، ہمزہ وصل کے ساتھ ، ن ساکن اور ح برفتہ ، ماضی کا صینہ ہے ، عطید، ہدید؛ لینی عطید اور ہدید دیا ہے۔ اِلّا حق:
اورا یک روایت میں اس کی ضد' جور' ہے مطلب یہ ہے کہ جوتی ہواورظلم نہ ہؤ۔
کمات حدیث کی تشریح حدیث نبر ۱۸۹۵ مرکے تحت اس کی تفصیل گزریجی ہے۔

﴿ آپ ملیالله کی سنت

﴿ صَمَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى هُرَيْرَةً قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَتِيَ بِبَاكُورَةِ الْفَاكِهَةِ وَضَعَهَا عَلَى عَيْنَيْهِ وَعَلَى شَفَتَيْهِ وَقَالَ : اَللَّهُمَّ كَمَا اَرَيْتَنَا اَوَّلَهُ فَارِنَا احِرَهُ ثُمَّ يُعْطِيْهَا مَنْ يُكُونُ عِنْدَهُ مِنَ الصَّبْيَا نِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي الدُّعْوَاتِ الْكَبِيْرِ.

قوجهه: حضرت ابو ہرمرہ فی نقل کیا کہ جس وقت آپ کے پاس نیا کھل (کدورختوں رآنے پراقل اور پہلا کھل) لایا جاتا تو یس نے رسول اللہ ہوں کھا ہے کہ وہ اس کوا بی آنکھوں اور اپنے لیوں پرد کھتے (نعت ِ الٰہی کی تعظیم کرتے ہوئے) اور حکمات دعائے ارشاد فرماتے یا اللہ جس طرح آپ نے ہم کواس کھل کی ابتداد و کھلائی ہے ، ای طرح اس کی انجار بھی دکھلا اور پھر وہ پھل ان بچوں کوعنایت فرمادیے جو کرآپ میں ہوتے ، (پیمی)

ر ادیے بور اپ علقہ ے پال ہوے، رین) باکور 8، ہراول ٹی رکو باکورہ کہتے ہیں اور اس جگہ پولوں کا اول اور نیا پھل مراد ہے، بو کت اور کلمات حدیث کی تشریح برائے دعا حضرات محابہ اباعات کے اول پھلوں کو آپ ملک کی خدمت میں چیش کرتے تھے اور

آپ عظان کئن ش دعافر مائے۔ سفت نبوی ﷺ: اور پرآپ تا وہ میل بی ں کومنایت قرماتے جس طرح بہل باکورہ ہیں ای طرح یے بھی ۔ ثمر او المؤاد اور باکور والانسان ہیں، لہذاان محلوں کوان بچوں کے ساتھ مجل کے باکورہ ہونے میں مناسبت طاہر ہے، ای دجہ ہے آپ ہو کے بچوں کوعنایت فرماتے اور بچوں کور غبت اور میانا ن زیادہ ہوتا ہے؛ اس لیے بھی آپ تاب اس کی رعایت فرماتے ہیں۔ (ارتعلق میں ۱۳۸۳)

باب اللقطة

﴿لقطه كابيان ﴾

لقطه - لام پرضمه اورقاف پرفتی نیز قاف پرسکون بھی آیا ہے مکرنقہاء اور محدثین نے ضمہ کے ساتھ استعمال کیا ہے، وہ تی جو کم شدہ ہوجس کا ما لک معلوم نہ ہواور اس کو کسی شخص نے املیۃ اٹھالیا اور قبضہ کرلیا ہو، قرآن کریم میں ہے جس دقت کنویں سے معزت بوسٹ کو مسافروں نے نکالاتھا اس دقت معزت بوسٹ کے تن میں میلفت استعمال ہوئی تھی۔' بلتفیظة بعض السیّارة''۔

اگرقاف پرسکون ہے "امسم لمعالِ المعلقوطِ" لین جس ٹی رحم شدہ کواٹھالیا گیاوہ لقط (بالسکون) ہے جمعنی اَلمَلقوط وا جس شخص نے اس کواٹھایا ہے وہ ملتقِط (اسم فاعل ہے)

المضطه كا حكم: اگرضائع بو نيكا نديشه بنواسكوا فالينا ضروري ب اورعام حالات بين مستحب ب اوراس كه پاس بيامانت ب جس كى حفاظت اوراس كا اعلان لا زم وضروري ب اوراس كے ساتھ ضروري ہے كه اس پركسي كوگواه بناليا جائے تا كه آئنده الزام نه آئے۔ اورا گرفاسدنيت كے ساتھ اٹھاليا ہے تو اس پرحرام ہوگا اور غصب كے تم بيں ہے۔

اور چی حفاظت وغیرہ انجام دینے کی قدرت نہ ہوتب خود نہ اٹھائے کی امانت دارکواس پرمتو جدکردے جیسا کہ ایک عورت نے امام اعظم کواس پرمجود کردیا تھا ہوی حکمید عملی کے ساتھ ۔

جب کداونٹ مم شدہ کے ملاک اورضائع ہو نیکا احمال نہیں ہے؛ اسلے آپ تالئے نے اسکوا خذند کرنے کا حکم فر مایا ہے جیسا کہ ہاب کے تحت آمدہ صدیث نمبرے ۲۹ ش تفصیل ہے، ای کو حضرات انکمہ ٹلاشنے افتتیار فر مایا ہے اور عندالاحناف (اگر ضائع ہونے کا اندیشہ ہے) بکری پر قیاس کرتے ہوئے اس کوا خذکر نامجی درست ہے اور ندکورہ روایت میں وہ ہدایت اور مشورہ ہے ندکہ عدم جواز کے لیے۔

> <u>الفصل الاؤل</u> ﴿لَقُطُهُ كَبِي بِعض احكام ﴾

﴿ صَرَيَّ مُهُمُرِك ٢٩﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ قَالَ: جَآءً رَجلٌ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَسَأَلَهُ عَنِ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ قَالَ فَضَالَةً الْإِبِلِ قَالَ مَالَكَ وَلَهَا مَعَهَا سِقَاءً هَا وَخَذَاءُ هَا الْفَسَمِ قَالَ: فَضَالَةُ الْإِبِلِ قَالَ مَالَكَ وَلَهَا مَعَهَا سِقَاءً هَا وَخَذَاءُ هَا تُوبِلُ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ وَاللهُ لَهُ اللهُ وَلَهَا مَعَهَا سِقَاءً هَا وَخَذَاءُ هَا تَوْدُ الْمَاءَ وَتَاكُلُ الشَّجَرَ حَتَّى يَلْقَا هَا رَبُّهَا مُتَّفِقٌ عَلَيْهِ . وَفِي وَايَةٍ لِمُسْلِمٍ فَقَالَ عَرِّفُهَا سَنَةً ثُمَّ آعُرِ قُ وَكَاءً هَا وَعَذَاءُ هَا وَعَلَاهُ وَلَا اللهُ عَلَيْهِ وَايَةٍ لِمُسْلِمٍ فَقَالَ عَرِّفُهَا سَنَةً ثُمَّ آعُرِ قُلْهِ وَكَاءً هَا وَعَقَاصَهَا ثُمَّ الْسَتَعْفَى عَلَيْهِ . وَفِي وَايَةٍ لِمُسْلِمٍ فَقَالَ عَرِّفُهَا سَنَةً ثُمَّ آعُرِ قُ اللهُ اللهُ عَامَ اللهُ عَلَى اللهُ عَالَمُ اللهُ عَلَيْهِ . وَايَةٍ لِمُسْلِمٍ فَقَالَ عَرِّفُهَا سَنَةً ثُمَّ آعُرِ قُلْ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَمَ هَا ثُمُّ الْمُنْ عَلَى اللهُ عَلَيْهِ مَا عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهِ الْمَا عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللّهُ الْعَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ اللّهُ اللّهُ الْمُعَالِلَهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ الْمُهُ اللّهُ الل

قوجه : حضرت ذید بن خالد سے دوایت ہے کہ رسول اللہ اللہ کی خدمت میں ایک شخص حاضر ہوا۔ اور اس نے آپ اللہ سے اللہ اللہ اللہ اللہ کی خدمت میں ایک شخص حاضر ہوا۔ اور اس نے آپ اللہ سے متعلق سوال کیا ، آپ اللہ نے فر بایا (اوّلُا خود) اس کے برتن اور اس کے تعمہ کو بہچان اور پھر آیک سمال تک اس کی تشہیر کر ۔ اگر اس کا الک آجائے (اوّاس کو دیدو) ور نے اس کے متعلق بااختیار ہے (جو مناسب خیال کر لے اس پھل کر) اس شخص نے سوال کیا ہم شدہ مرک کا کیا تھم ہے (؟) آپ ملی نے فر بایا وہ بحری تیرے لیے ہا تیرے بھائی یا بھیز یے کے لیے ، اس شخص نے سوال کیا ہم شدہ اونٹ کا کیا تھم ہے (؟) آپ ملی نے فر بایا تجمکو (اونٹ سے متعلق) کیا ؟ اس کے ساتھ تو اس کی مشک ہے (یانی کی) اور اس کے اونٹ کا کیا تھم ہے (؟) آپ ملک نے فر بایا تجمکو (اونٹ سے متعلق) کیا ؟ اس کے ساتھ تو اس کی مشک ہے (یانی کی) اور اس کے اونٹ کا کیا تھم ہے (؟) آپ ملک ہے (یانی کی) اور اس کے ساتھ تو اس کی مشک ہے (یانی کی) اور اس کے اس کی ساتھ تو اس کی مشک ہے (یانی کی) اور اس کے ساتھ تو اس کی مشک

موزے (كرزين برچل كرتا ہے) يانى بروارد بوتا ہے (كدازخود في ليكا) اور درفت كے بنول كوكھا تا ہے يہاں تك كداس كاما لك ال كو كرا لهذا ال كوتيرى مرورت الى نه يزي كي (بناري مسلم) اورمسلم كى ايك روايت مي بي تبي في في مايا ايك سال تك اس کااعلان کرواور پھراس کاتسمہاوراس کابرتن بہوان لواور پھراس کونزج کرنو۔ بعد میں اگراس کا مالک آجائے تو پھراس کوادا کردیا۔ علم اول اعرف، لین اٹھانے والا ،اس کے ظرف کوشنا شات کرلے کہ وہ تی مکس چیز میں ہے وہ کلمات صدیث کی تشریح کی اور جس سے وہ بندھا ہوا ہے اس کود کھے لو، پہنچان لو، عفاص (عین پر کسرہ) ظرف، برتن-

جس میں کوئی چیز رکمی جائے۔وکاء -وہ شی رجس سے سی ٹی رکامنہ ہا ندھا جائے ،مثلاً ڈوری ہنمہ تا کہاس کی علامت اس کومعلوم ہو۔

حكم قانى: غَرُّف، اس كَنْشيركرنا، اعلان كرنا، لقط کی شمیری دت کیا ہے؟

(الغ) امام احد كنزديك على الاطلاق مدت ايك سال ب؛ اكر جدوه في ربهت اى كم قيت كى مو-اورامام مالك اورامام شافعي كاتول مشهوريد بكراس شيء كي قيت كاعتبار كرت بوع مدت موكى-

عندالاحناف اگردس درہم ہے کم میں تو چند ہوم اور اگروس کے برابریا اس سے زائد ہے ایک سال تک اور بعض فقہا و احناف نے المان والي رائي رائي يرموقوف كياب فان المنع: اكر ما لك آجائ اورعلامات وغيره سے يقين موكيات اس كوديد ياجائے۔ تيسوا حكمة والا اعلان اورتشيرك بعديمي مالك نه آئة توتم كوافتيار بجوتم (الى عالت اورائي رائح يس)مناسب خيال كمع التوال عقهد: (الف) حضرات المداللة كنزديك على الاطلاق اب المحاف والي كوحق بكدوه خوداستعال كرد أكر جدوه بالدارموياد وصدقه كرد اختيار ب-

(ب) جماهير المل علم اور عند الاحناف أكروه فقير بي واستعال كرنا مباح ب اوراكر مالدار بي وصدقه كرنالازم ب-ضووري وضاحت: اس مديث اول بس على الاطلاق اس كوافتيار ديا كمياب؛ اس ليه ايك جماعت في اس كريش نظريه افتيار فرمايا ہے كما قال الاؤلون _اور ووسر _قول كے ليے استدلال حديث الى جريرہ ہے جس ميس تمم ہے صدقد كرنے كا-

وتشهير كي بغير لقطه

﴿ مِدِيثُ بُهِ ٢٩٠٨﴾ وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ اوى ضَالَّة فَهُوَ صَالُّ مَالَمْ يُعَرِّفُهَا رَوَاهُ مُسْلِمٌ .

تک اس کا اعلان ندکرے۔(مسل

اگراعلان اورتشبیرکوترک کردیا ہے تو بداخذ صلالت، محرای اور ناجا تزموگی، بهر حال تشمیر اور اطلان کلمات حدیث کی تشری الراعلان اور بیروس سردیب رید می اس پرتیمت اور الزام آسکا ہے۔ کلمات حدیث کی تشری میں اور واجب ، نیز بلا اعلان والی صورت میں اس پرتیمت اور الزام آسکا ہے۔

﴿هرم شريف كالقطه﴾

﴿ صِدِيثَ بِهِ ١٩٠٩﴾ وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَٰنِ بْنِ عُثْمَانَ التَّيْمِيُّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَهَى عَنْ لْقُطَةِ الْحَاجُ رَوَاهُ مُسْلِمٌ .

مترجمه: حضرت عبد الرحمن بن عمّان مي سروايت ب كريكك رسول الله ملك في العلول منع فرمايا ب- (مسلم)

اس کیے کہ جان کرام چند ہوم کے لیے آتے ہیں اگراس کواخذ کیا گیا تو بظاہر مالک تک پہونچا نادشوار ہوگا اور اگر اس کوندا ٹھایا جائے تو مالک تلاش کرتا ہوائیو نچے سکتا ہوہ خود تلاش کرےگا۔

مدودی و مساحت: اوراگراع بشه ب سالع مونے اور ناحل کی کے ہاتھ میں کنینے کا تب عندالاحتاف اس کو مجی اٹھالیا جائے، تعمیل کاب الح میں معلوم ہو چی ہے۔

الغضل الثاني

ودرغت يريهل كاهكم؟﴾

﴿ صَمَتُ مُبِرِ ٢٩١﴾ عَنْ عَمْرِو إَنِ شُعَيْبٍ عَنْ آبِيْهِ عَنْ جَدَّهِ عَنْ رَسُوْلِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ آنَّهُ سُئِلَ عَنِ الشَّمَرِ الْمُعَلَّقِ فَقَالَ: مَنْ أَصَابُ مِنْهُ مِنْ ذِي حَاجَةٍ غَيْرَ مُتَّخِلٍ خُبْنَةً فَلَا شَنَّى عَلَيْهِ وَمَنْ خَرَجَ بِشَفِّي مِنْهُ فَعَلَيْهِ غَرَامَةُ مِثْلَيْهِ وَالْعُقُوٰبَةُ وَمَنْ سَرَقَ مِنْهُ شَيْئًا بَعْدَ اَنْ يُؤْوِيَهُ الْجَرِيْنُ فَبَلَغَ ثَمَنَ الْمَجِنَّ فَعَلَيْهِ الْقَطْعُ وَذَكَرَ فِي صَالَةِ الْإِبِلِ وَالْعَنَجِ كَمَا ذَكَرَ غَيْرُهُ قَالَ: وَسُئِلَ عَنِ اللَّقَطَةِ فَقَالَ مَا كَانَ مِنْهَا فَي الْطُرِيْقِ الْمَيْنَاءِ وَالْقَرْيَةِ الْجَامِعَةِ فَعَرِّفْهَا سَنَةً فَإِنْ جَاءَ صَاحِبُهَا فَادْفَعْهَا إِلَيْهِ وَإِنْ لَمْ يَاتِ فَهُوَ لَكَ وَمَاكَانَ فِيْ الْخَوَ ابِ الْعَادِيْ فَفِيْهِ وَفِي الرِّكَازِ الْمُحْمْسُ رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَرُوِيَ ابُوْدَاوْدَ عَنْهُ مِنْ قَوْلِهِ وَمُسِّلَ عَنِ اللَّفَطَةِ اللَّي احِوِمِ .

موجهد: حفرت عروبن شعيب برولمو والدخوداز مدخودرسول السنطان يفل كرت بين كرآب التفاق ع (درخول ياادر جكدي) معلق معلق معلق علول سے متعلق سوال کیا گیا (کدا تا تھم کیا ہے؟) آپ تا تھ نے ارشادفر مایا: اگر کمی ضرورت مندفض نے اسمیل سے محولیا ہے در المحاليك باندهكر بيجائے والا ند موقواسير كوئى تاوان بيس اور جوض أسميس ساتھ لے كيا تو پھراسپر اسكا دو گنامنان موكا اورسز إ (بھي)اور جس من نے ان کالوں میں سے کھلیان میں جگہ یا لینے کے بعد چوری کرلی اوروہ پھرایک ڈھال کی قیمت کے برابر پیو کچے ٹی تو اس پر ہاتھ کے کا شنے کی سز اہو کی اور کم شدہ اونٹ اور بکر یوں ہے متعلق (مجمی) راوی نے بیان کیا جس کو دوسرے راویوں نے بیان کیا ہے۔ مديث كراوى معزب عرق كعبد المجدن فل كيا-اورآب ملك ساقط سامتعلق سوال كيا ميا أب ملك في ارشاوفر مايا: جولقط عام راستدیا آبادی بستی میں پایاجائے ، تواس کا اعلان ایک سال تک کیاجائے چراگراس کا مالک آجائے تواس کو دیدیا جائے اوراكر ما لك ندآ ي تووه تير ب لي ب (العنى جس نے اس كوا تھايا ہے) اور جولقط غير آباد جكد سے طا موتو اس لقط اور كان يس يا نجوال حصدب (نمائی ،اورام ابوداوُر في بروايم عمروبن شعيب وسنل عن اللقطة سي خرحديث تك روايت نقل كي ب) الروایت میں بے چندا حکام کابیان ہے۔ (الف) ٹم مطل - وہ پھل جودر شت پر ہول ،ان کا تھم ہے کما ت صدیث کی تشریح کے ایک ضرورت (شدید بھوک کے ایک ضرورت (شدید بھوک

كونت) يورى كى بوء باغده كرند لي جائ

خبيقة: خ پرضمه، باساكن، ذخره مناكر، جمع كرك كرار يس بانده كرفلا شيء - يعني اس پرگناه نه دوگا، ضان نه دوگا، يتكم إبتداء اسلام كاب اوراب منسوح بالبدااب عم بكراس براس كى قيت لازم بوكى

ا ما احد کے فرد کی فا ہر صدیث بر عمل کرتے ہوئے بلا مغان اس کے لیے مباح ہے، نیز بلا ضرورت بھی اجازت ہے۔ (ب) من خوج المع علم اوراكر ضرورت سے ذاكدنيا كيا موراس پراس كا ضان اور قيت لازم موكى ، اور دوكى قيت بياز روية ز جرفر مایا ہے اور وعید سنائی مئی ہے۔ اور بعض اہلِ علم کا قول ہے کہ ابتداء یہی عکم تھا جومنسوخ ہو گیا ہے۔

(ج) من مسوق المن في المعاداور جب اس كو كفوظ جكر (مثلًا كالميان اور جمير) سے چورى كى كى موادر دومقد ارتصاب موجس مقدار رتم ہے ہاتھ کا ث دیا جائے ، حد سرقہ نافذ کی جائے۔اس کے بعد معزت راوی نے ممشدہ اونٹ وغیرہ کا تذکرہ فر مایا کہ جس طرح ان كى علاده دوم مدواة فى كياب-

(ح)اوراس كے بعدآب ملك سے لقط كاسوال كيا كيا۔

الطويقُ الميناء -وه راسته جوعام مواور دوسر براسة مجى ملته مول، بكثرت آمد ورفت ربتي مو القريضةُ الجامعه-وه عكر بري آبادى مو لك-اس كي تفسيل معلوم مو يكل اوراكر النحواب العادى- اوروه علاقه غير آباد مواوروه قديم و وراندند مواس ك لقط من شمس برائ بيت المال كوياية مي ركاز كي من موكا

﴿ اگر ما لک آجائے ﴾

﴿ مديث تمبر ٢٩١١) وعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِي أَنَّ عَلِيٌّ بْنَ آبِي طَالِبٍ وَجَدَ دِيْنَارًا فَاللي بِهِ فَاطِمَةَ فَسَالَ عَنْهُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَلَا رِزْقُ اللَّهِ فَآكُلَ مِنْهُ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَكَلَ عَلِيٌّ وَفَاطِمَةُ فَلَمَّاكَانَ بَعْدَ ذَلِكَ آتَتْ اِمْرَأَةٌ تَنْشُدُ الدُّيْنَارَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا عَلِيُّ! أَدَّالدَّيْنَارَ رَوَاهُ أَبُوْدَاؤُدَ .

قوجمه: حفرت ابوسعید خدریؓ ہے روایت ہے کہ حضرت علی بن ابی طالب کو ایک دینار طاء اس کو حضرت فاطمہ کے پاس لاتے اوراس كمتعلق معزت على في رسول الله علي عدريانت كياتوآب الله في في ارشادفر مايا: بدالله تعالى كا (عطاء فرموده) رزق م چنانچاس سے رسول الله علی نے بھی کھایا اور حضرت علی وحضرت فاطمہ نے بھی کھایا، پھر جب ایک عورت اس دینارکو تاش کرتی ہوتی آئي تو آب الله في الدادة)

اس روایت معلوم ہوا کہ اگر لقطر کو استعال کرلیا گیا ہواوراس کے بعد مالک آجائے تو اب اس کو کمات حدیث کی تشریح کی بعد مالک نہ ہوگا، اگر شرعاً بدلہ دینا واجب اور لازم ہے، ای معلوم ہوا کہ اٹھانے والا کی بھی وقت مالک نہ ہوگا، اگر شرعاً

استعال کی اباحت والی صورت میں تو وہ صان کے ساتھ استعال کرے گا۔

واگر نیت میں نساد ھے ﴾

﴿ صِرِينَ مُهِرِ ٢٩١٢﴾ وَعَنِ الْجَارُودِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ضَالَةُ الْمُسْلِمِ حَوَقُ

النَّارِ رَوَاهُ اللَّارِمِيُّ. قوجمه: حضرت جارود في كياك رسول السين في فرمايا: مسلمان كي ممشده چيز آك كاشعله به، (الداري) جب بیامرمعلوم ہو چکا ہے کہ لقط امانت ہے اور اس کی تفاظت اور مالک تک میرونچانے کی کوشش کلمات حدیث کی تشریح لازم ہے اگر فاسدنیت کے ساتھ اس کو اٹھایا ہے تو اس پر بیدوعید ہوگی: اس لیے کہ وہ فصب کردہ جی م

كم على موكى المدااكرة المانت كى ادا يكى برقادرند موتب ندا فعائد (اسعدى) ﴿لقطه پر گواه هونا ضروری هے﴾

﴿ مِدِيثُ بُرِ ٢٩١٣ ﴾ وَعَنْ عَيَاضِ أَنِ حِمَادِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ وَجَدَ لَقُطَةً

قَلْيُشْهِدُ ذَاعَدُلُ ٱوْذَوَى عَدْلُ وَلَا يَكُتُمُ وَلَا يُعِيَّبُ قَانَ وَجَدَ صَاحِبَهَا قَلْيَرُدُهَا عَلَيْهِ وَإِلَّا قَهُوَ مَالُ اللهِ يُوْلِيْهِ مَنْ يُشَاءُ رَوَاهَ آحْمَدُ وَٱبُوْدَارُدَ وَالدَّارِمِيُّ .

قوجهه: حضرت عماض بن حمار فلقل كيا كدرسول الله منظفة في فرمايا: جمع محض كوكو كى لقطه لما بهوتوه و (اس پر) ايك عادل يا دوذى عدالت كوكواه بنالے اوراس كو چمپائے نبیس (كداس كا اعلان ندكرے) اور ندعا ئب كرے، پھرا كراس كا ما لك ل جائے تو اس كودے وے اور اگر مالك ندآئے تو ساللہ تعالى كا مال ب جس كو جا بتا ہے وہ عنايت كرتا ہے۔ (احرد ، داري)

کل ت مدیر می تا می نام است مدیر می ایک عادل اور قابل اعتاد فیدی عدلی ایجنی دو عادل و لایغیب ایجنی اس کو کل ت م عام نیس ندکردیا جائے ، کوئی ایس صورت ندکر ہے جس سے کہ مالک اس سے لا پندرہ جائے ؛ بلکہ اس کو ایس میں اس میں اس

ملاہر وباہرر کے اعلان وشہر کرتا رہے۔دراصل آپ علیہ کی یہ ہدایات اس لیے ہیں کہ اس پر عادل کی شہادت ہوجائے گی تو پھر محفوظیت بھی ہوجائے گی مال الله المنع، درحقیقت ہرشی رکا ما لک اللہ تعالیٰ ہی ہے جب مالک نہ آیا تو اب بحکم البی اس میں تعرف درست ہوگیا جس کی تفصیل معلوم ہو بھی۔

دِاگر وہ شیء حقیر هو پ

﴿ صِهِ يَصُهُمُ ٢٩١٣﴾ وَعَنْ جَابِرِ قَالَ: رَخُصَ لَنَا رَسُولُ اللّهِ صَلَّى الْلَهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْعَصَا وَالسُّوٰطِ وَالْحَبْلِ وَاضْبَاهِهِ يَلْتَقِطُهُ الرَّجُلُ يَنْتَفِعُ بِهِ رَوَاهُ آبُوْدَاؤَدَ . وَذَكِرَ حَدِيْثُ مِفْدَامِ ابْنِ مَفْدِيْكُرَبَ الَالاَيَحِلُ فِيْ يَابِ الإِغْتِصَامِ.

قو جعه: حضرت واير في بيان كيا كدرسول النُستان في بم كوعماد اوركور ااوري اورجواس كمثل (كم فيتى چزي بول ان) كى اجازت دى هيك آدى اس كوا فعالے اوراس سے فائده اشحائ (ايوداؤر) اورمقدام بن معد يكرب ك مدرث الا يعمل في باب الاعدمام شد ، وكور ســ

اندازه ندکوره فی الروایت اشیاد پرقیاس کیاجائے۔(اسعدی)

وذُكِرَ حَدِيْتُ الْمِقْدَامِ بْنِ مَعْدِيْكُوبَ الْالْايَحِلْ فِي بَابِ الْاغْتِصَامِ (اوردعرستِ مقدام بن معد يكربُ كل حديث "الالايحل" في باب الاعتمام من كذر يكل بـــ

عَابُ الْفَرَانِضِ

﴿ فرائض كابيان ﴾

الفوانعن - واحد فويضة - حدائق ، حديقة بروزن فعيلة - بوبمعنى مفروضة باوراس كا باده فوض ب جس كمعنى معروضة باوراس كا باده فوض ب جس كمعنى معده الفوات بي المورث فعيد عده المربي الماراي معده المربي كا المورث المعروض المربي معروض المربي المورث المربي المورث المربي المورث المربي ال

چونکہ اس علم کے ذریعہ حقوق مالیہ کی تفسیلات معلوم ہوتی ہیں اسلئے اس فین فرائنس کو شریعت میں بہت زیادہ اہمیت ہے اورای
اہمیت اور ضرورت کیوجہ سے احادیث میں آپ تلک نے اسکے حصول کی خاص تاکید فرمائی ہے اور حکم فرمایا ہے "تعلموا الفرائض".

بوی اہمیت اور شدت کے ساتھ علم الفرائنس کو بیان کیا گیا ہے اور قرآن وحدیث میں اس پر ہوے تاکیدی احکامات ہیں ؛ اس لیے
کہ دور قدیم میں تمام اقوام نے بندوں کے اس حق کو ضائع کیا ہے ، حق دار کواس کا حق بھی دیا گیا، آپ تالئے نے اس امت کوتاکید
فرمائی ہے اور جس کا جوجی تھااس کی تصریح فرمائی ہے۔

شر بعت نے قدیم ظالمانہ تبضہ کور دکرتے ہوئے قرآئی آیات میں تقسیم فرائض کو خاص طور پربیان فر مایا ہے؛ اس لیے بھی کہاس کی تقسیم میں انسانی مالی حرص ظالمانہ تقسیم پر مائل نہ کر دے ، فرائض اور شرع حصص کقطعی صورت دی گئی ہے۔

جب تک آیات میراث نازل ند ہوئی تھیں، ابتدائی دورِ اسلام میں بھی بعض ایسے واقعات پیش آئے کہ قدیم رسم اور رواج کے مطابق ہی بعض اصحاب نے مال میراث پرتصرف بیجا کیا اور یہی واقعات آیات میراث کے نازل ہونے کا سب ہوئے جس کی تفعیل آئند واحادیث میں معلوم ہوگی۔

الخصارالاول

خقرضه اورتقسيم ميراثه

﴿ صَدَيَ ثُمْرِ ٢٩١٥﴾ عَنْ آبِي هُوَيْرَةً عَنِ النِّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: آنَا آوُلَي بِالْمُوْ مِنِيْنَ مِنْ ٱنْفُسِهِمْ فَمَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ وَلَمْ يَتُوكُ وَفَاءً فَعَلَى قَضَاوُهُ وَمَنْ تَرَكَ مَالاً فَلِوَرَائِيّهِ وَفِي دِوَايَةٍ مَنْ تَوَكَ دَيْنًا ٱوْضَيَاعًا فَلْيَاتِنِي فَآنَامُولَاهُ وَفِي دِوَايَةٍ مَنْ تَرَكَ مَالاً فَلِوَرَئِيّهِ وَمَنْ تَوَكَ كَلَّا فَإِلَيْنَا مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ .

قوجمہ: حضرت ابو ہریرہ نی اکرم اللہ سے نقل کرتے ہیں کہ آپ اللہ این ایل ایمان کے نفول سے زیادہ قریب (اور تعلق رکھنے والا) ہوں، جو شخص مر کیا ہواور اس پر قرضہ ہواور اس نے قرضہ کی ادائیگی کے مطابق مال نہیں چھوڑ اتو اس کی ادائیگی میرے ذمہ ہے اور ایک روایت میں ہے جس شخص نے قرض چھوڑ اتو اس (کے قرض یا ورکس یا ورکس کی اور ایک روایت میں ہے جس شخص نے قرض چھوڑ اتو اس (کے قرض یا ورکس کا ویل) کوچاہے کہ وہ میرے پاس آئے میں اس کا ولی ہوں۔اور ایک روایت میں ہے جس شخص نے مال چھوڑ اوہ اس کے ورثار کے لیے ہے اور جس نے عیال کوچھوڑ اوہ ہمارے ذمہ ہے۔ (بخاری و سال کے اور ایک روایت میں ہے جس شخص نے مال چھوڑ اوہ ہمارے ذمہ ہے۔ (بخاری و سال کے درثار کے لیے ہے اور جس نے عیال کوچھوڑ اوہ ہمارے ذمہ ہے۔ (بخاری و سال کے درثار کے لیے ہے اور جس نے عیال کوچھوڑ اوہ ہمارے ذمہ ہے۔ (بخاری و سال کی درثار کے ایک ہمار ہے در بخاری و سال کی درثار کی درثار کے لیے ہمار ہمارے دمہ ہمارے دمہ ہمارے دمہ ہمارے دمہ ہمار ہمار کے دمہ ہمار ہمارے دمہ ہمارے دمہ ہماری کی درثار کی دمہ ہمارے دمہ ہماری کی درثار کی دمہ ہمارے دمہ ہمارے دمہ ہمارے دمہ ہمارے دمہ ہمارے دمہ ہماری دمہ ہمارے دمہ ہمارے دم ہمارے دمہ ہما

موں تمام دنیوی اور اخروی امور میں اور ای شفقت ورافت کی وجہ ہے آپ آگائی نے انسانیت کووہ ہدایت عطار فرمائی ہے کہ اس **کوالمتیار** کرنے پر دارین کی فلاح حاصل ہونے والی ہے جب کہ انسان خود پر بہت زیادہ ظلم کرتا اور نقصان وخسارہ اختیار کرتاہے۔

فعلی النع آپ الله نے قرضہ کی اوا یکی اپنے ذمہ لی اگر اوا یکی کے اسباب نہ ہوں ، اور ای طرح ضباعاً عظام کی پر کسرہ اور فتہ دونوں سنتمل ہوئے ہیں" اللصنیا ع" ہراس تی رکے لیے ہے (اور اسم ہے) کہ اگر اس کی دیکہ بحال نہ ہوتو وہ قریب ہے کہ ضائع ہو جائے بہعنی عیال – اولا دکا خرچہ ہمی آپ مانات فرما کیں گے ؛ اس لیے کہ جس کے کوئی ولی نہ ہو آپ ایک اس کے وئی ہوں مانے بہعنی عیال – اولا دکا خرچہ ہمی آپ مانات فرما کیں گے ؛ اس لیے کہ جس کے کوئی ولی نہ ہو آپ ایک اس کے وئی ہوں مانے بہعنی عیال – اولا دکا خرچہ ہمی آپ مانات فرما کیں اور اس میں المدر میں میں المدر میں میں المدر میں میں المدر م

ے "فانا مولاهٔ یعنی ولیه و کامل الموظ" (التعلیق مع التشریح) ضعروری و ضعاحت: بیال دور می اطلال مواجب کرنز حات کی کثر ت مولی اور بیت المال می وسعت آگی کی۔ خِذُو الفروض مقدم هوں گھے

﴿ صِرِيثُ بُهِ ١٩١٧﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ٱلْحِقُواالْفَرَائِسَ بِٱهْلِهَا قَمَا يَتِي قَهُوَ لِآوْلِي رَجُلٍ ذَكْرٍ مُتَّلَقٌ عَلَيْهِ.

کہ'' دجل ذکو عصبات'' میں رجال کا اعتبار ہوگا اور ان اقارب میں جوموجود ہوگا وہی اقربترین ہوگا چنا نچدارشاد ہے: للاولیٰ لین محوزیادہ قریب ہواور بیا قربیت میت کیساتھ ہو، اور برائے تاکید جل کے ساتھ ذکر بھی فرمایا ہے حالا نکدر جل ندکر ہی ہوتا ہے۔ اولیٰ جوشتن ہے اَلوَلیُ سے اور اس کے معنی القر [کے ہیں۔

موال: عمييت من رجال اور ذكور كا اعتبار كيون إ (؟)

جواب: اس میں میر محکت ہے کہ بہت ہے مواقع عرفا اور شرعاً ایسے ہیں کہ مصارف کا بو چور جال پر ہوتا ہے عورتوں پرنہیں ؛ اس لیے ہر صورت میں رجال کا حصہ ذا کد جمویز ہوا ہے (ماخوذار تعلیق)

﴿ملت کا اختلاف سبب هرمان هے﴾

﴿ صِهِ عَنْ بَهِ ٢٩١٤ ﴾ وَعَنْ أَسَا مَةَ بُنِ زَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لاَ يَرِثُ الْمُسْلِمُ الْكُا فِرَ وَلَا الْكَا فِرُ الْمُسْلِمَ مُتَّفَقَ عَلَيْهِ .

﴿ آزاد شدہ غلام کی میراث﴾

وحدیث بر ۲۹۱۸ کو عَن آنس عَن النّبِی صَلّی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ فَالَ: مَوْلَی الْقُوْمِ مِنْ آنْفُسِهِمْ دَوَاهُ الْبُحَادِی . هوجهه : حضرت السّ نی اکرم آلی سے نظر کرتے ہیں، آپ آلی آلی نے فرمایا: قوم کا آزاد کردہ غلام آنیں ہی ہے ہے۔ (بخاری) مولی القوم المنح آزاد شدہ غلام، مقصد بیان ہے کہ جس قوم نے غلام آزاد کیا ہوا ہوہ آزاد شدہ ای قوم میں ہوگا حکم ؛ لہذا ای کی میراث آزاد کنندہ کو بیو نچ گی؛ اگر ای مولی کے دارث شہول کے۔ کویا کہ اس آزادہ شدہ کا قبیلہ اور تو می تعلق آزاد کنندہ کی قوم کے ساتھ ہوگا۔

﴿ماموں کی میراث ﴾

﴿ صريتُ بْرِ ٢٩١٩ ﴾ وَعَنْه قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ابْنُ أَخْتِ الْقَوْمِ مِنْهُمْ مُتَّغَقَّ عَلَيْهِ

وَذُكِرَ حَدِيْتُ عَائِشَةَ اِنْمَاالُولَاءُ فِنِي بَابِ قَبْلَ بَابِ السُّلَمِ وَسَنَلْكُو حَدِيْثَ الْبَرَاءِ الْخَالَةُ بِمَنْزِلَةِ الْأُمُّ فِي بُلُوعَ الصَّعِيْرِ وَحَضَالَتَهِ إن شَاء اللَّه تَعَالَىٰ.

ترجمه : حضرت انس سے روایت ہے کہ رسول الشنگان نے فرمایا : قوم کی بہن کا بیٹا (لیٹی بھانجا) انہیں میں ہے ہے (لیٹی وہ ذوی الارمام مس سے بحس كوورافت بيو عجتى ہے)_(بخارى سلم)

ابنُ اختِ القوم الطابرة وم كا ابن اخت القوم الطابرة وم كا ابن اخت (بمانجه) اى قوم بن شال بي يعنى حق ورافت عل م خلاصة كلام يب كراكرميت كي ذوى الفروش اورعمبيات بن سيكوكي موجود ند بوتواب تركية وى

الارحام كى جانب نعمل موكا؛ للبذا" بھانج،" ابن افت " ذوى الارحام ميں سے ہے، ماموں كى ميراث كا (ابوه) حقدار موگا۔ اقتوال عنقهد: الم العظم اورالم احد كاندب ين ب مريد تعميل كب نقيس ما خطه بو (اسعدى)" وذكو حديث عائشة انعا الاولاء في باب السلم" ع يهل باب من كرر يكل باس لياس جكد ذكورتيس باور بروايت حفرت براه (بدهديث) "الخالة بمنزلة الام" باب بلوغ ش يركور -

> تا انشاء الله تعالیٰ ومنذكر حديث البراء

اورصيب عاكثة "انما الولاء" "باب السلم" - يهل باب شركزر على باورصديث برارة"الخالة بمنزلة الأم" با ب بلوغ الصغير وحضانته شرعقريب ذكركري كـــ

﴿ احْتَلاف مِلْت كَى وَجِه مِيراتُ نَمْيِن هِي هُ

﴿ صِرِيتُ بُمِر ٢٩٢﴾ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو قَالَ: قَا لَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لَا يَتَوَارَتُ آهُلُ مِلْتَيْنِ شَتَّى رَوَاهُ ٱبُوْ دَارُدَ وَابْنُ مَاجَةَ وَرَوَاهُ التُّومِذِيُّ عَنْ جَابِرٍ،

توجمه: حضرت عبدالله بن عمرة في القر كيا كدرسول الشقالية في ما يا: دومتفرق الل فرجب ايك دوسرے كے واث نبيس مول محم (ابدواؤر این ماجة) امام ترفدی فے برولیت جابر مید مدروایت کی ہے۔

كلمات حديث كى تشريح: حديث نبر (٢٩١٩) كتت تفصيل معلوم بوكل ب-

﴿قاتل میراث سے محروم ﴾

﴿ صِرِيثُ مُبِرِ ٢٩٢١﴾ وَعَنْ آبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: القَاتِلُ لَا يَرِثُ رَوَاهُ التُّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةً .

قوجمه : حفرت الوبرية في روايت كي كرسول التُعلَيُّ في مايا: قاتل وارشنيس موكار (تذيّ، ابن ماجة) الایو ک الخ ،مقعبد بیان بے کہ جس دارث نے اپنے مورث کول کیا ہے دواس کی میراث میں اللہ علی میراث میں اللہ میں ال

ے حروم ہوگا میب ہے حرمان ادث کا۔

دِدادی کی میراث ہ

﴿ صريت مُبِر٢٩٢٢﴾ وَعَنْ بُرُيْدَةَ أَنَّ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَعَلَ لِلجَدَّةِ السُّدْسَ إِذَا لَمْ تَكُنْ دُوْنَهَا أُمُّ رَوَاهُ أَبُوْ ذَاوُدَ . موجمه : معرت بريدة عدوايت م كم في اكرم الله في دادى كي لي جمنا حصر مقرر فرمايا بشرطيكاس (عمقدم حصددار) والده شهور (ايرداؤد)

مقصد بیان بدے کرا کرمیت کی والد و زنده ند مواور داوی موجود ہات الده کی جگددادی کوحق ميراث يعنى جمنا حصراس كويرو في كا_

كلمات ومديث كي تشرت

مروري وهماحت: جدّة العِيْرُلاب (دادي) وَلام (يعني ناني جدّه فاسده دونون مرادين) البته ناني كي ميراث كودريانت كيا مائے (اسعدی)_(انتلق)

﴿زنده پیدا هوا تو وه وارث هوگا﴾

﴿ مديث مُبر ٢٩٢٣﴾ وعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا اسْتَهَلَّ الصَّبِيُّ صُلَّى عَلَيْهِ وَوُرَّتُ رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ وَالدَّارِمِيُّ .

تر جمه: حطرت جابر في روايت كى كررمول الله الله في كرمول الله في كرمول الله في كرمايا كرجب (بوقيد ولادت) بجروع واس كى نماز جنازه برحى جائ ك اوروه وارث بنايا جائك كا_(ائن ماجر، داري)

اذا الغ: ولادت كونت الريجة وازبلندكرتا يعنى روتا بالذاجو بجدنده بيدا بواب (اكرچداس كالت حديث كي تشريح كے بعد فورانى مرجائے) وہ وارث بوگا۔ نيز اس كے علاوہ جو بھى علامت بوزندہ بيدا مونے كى۔

اس برتمام احکام زندگی جاری موں کے ، نام رکھا جائے جنبیر وسلفین اور نماز جنازہ (وغیرہ) پڑھی جائے۔ ضووري وضاحت: اكرهل إدر بيرم مادر من موجكا إقر كويا كرده بحى) زنده كي من إلبته بوقع والادت كااعتبار نفاذ تحم كيلي موكا اكروه زنده بدا مواسية دوران حمل اكركوكي وارث انقال كرجائية اسكاحت في الحال ركها جائيكا تاولا دت (تعليق اس ١٩٩٠)

وعلیف کا حکم پ

﴿ مِدِيثُ مُبِر ٢٩٢٣﴾ وَعَنْ كَثِيْرِ بْنِ عَبْدِاللَّهِ عَنْ آبِيْهِ عَنْ جَدُّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَمَـلَّمَ:مَوْلَى الْقَوْمِ مِنْهُمْ وَحَلِيْفُ الْقَوْمِ مِنْهُمْ وَابْنُ أُخْتِ الْقَوْمِ مِنْهُمْ رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ .

قوجهه: حعرت کثیر بن عبدالله بروایت والدخوداین واوا (عمرو بن عوف مزنی) سے روایت کرتے ہیں انہوں نے فرمایا که رسول الله ارداری این قوم کا آزاد کردہ غلام انہیں میں سے ہادرقوم کا حلیف انہیں میں سے ہادرقوم کی بہن کالڑ کا انہیں میں سے ہے (داری) كلمات حديث كي تشريح ال مديد ياك ين تين بات كاتذكره ب، دوكاتذكره اوراس كي تفيل معلوم بوجى باورتيسرى صورت وحليف القوم النع" توم كاحليف بيهم ابتداد اسلام بس تفاء آيات ميراث في استمكو

منسوخ اورختم كرديا بـــالى عرب عبد جاليت من ايك معابده كرتے جس كوحلف كتے تھے؛ جس كى صورت يتى كه دوخض باہم بعورت حم معاہدہ کرتے کہ ہم دونوں ایک دوسرے کے حق میں بہر حال شریک ہوں مجے موت دحیات کے تمام پیش آمدہ حالات میں ال معاہدہ اور اقر اور کے بعدوہ مخض ای توم کا فر د ہو گیا جس توم کے فرد کے ساتھ معاہدہ ہوا ہے، ابتدائے اسلام میں وہ عقی میراث میں مجی شریک ہوتے ہتھے۔.

رحق میراث ماموں کے لیے پ

﴿ مَدَيَثُ بُرِ٢٩٢٥﴾ وَعَنِ الْمِقْدَامِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: آنَا ٱوْلَي بِكُلِّ مُوْمِنٍ مِنْ

نَّهْسِهِ فَمَنْ تَوَكَّ دَيْنًا أَوْ ضَيْعَةً فَالِيْنَا وَمَنْ تَوَكَ مَالاً فَلِوَرَقِيْهِ وَأَنَا مَوْلَى مَنْ لَا مَوْلَى لَهُ آرِثُ مَالَهُ وَٱلْكُ عَانَهُ وَالْخَالُ وَارِثُ مَنْ لَا وَارِثُ لَهُ يَرِثُ مَالَهُ وَيَفُكُ عَالَهُ وَلِيْ رِوَايَةٍ وَآنَا وَارِثُ مَنْ لَا وَارِثُ لَهُ يَعْقِلُ عَنْهُ وَيَوْلُهُ وَإِنَّهُ وَالْهُ أَبُوْدَاؤُدَ . عَنْهُ وَارِثُهُ وَالْخَالُ وَارِثُ مَنْ لَا وَارِثُ لَهُ يَعْقِلُ عَنْهُ وَيَرِثُهُ رَوَاهُ آبُوْدَاؤُدَ .

توجهه: حضرَت ومقدامٌ مروی ہے کہ رسول الله بیاتی نے فر مایا بین ہر مومن کے لئس ہے ذیادہ قریب ہوں ، جس فخف نے قرضہ چھوڑ ایااولا دچھوڑی تو وہ ہمارے ذمہ ہاور جس فخص نے مال چھوڑ اوہ اس کے ورثا ہے لیے ، اور بیں اس کا و لی ہوں جس کا کوئی و لی نہ ہو کہ اس کے مال کا میں وارث (یعنی بیت المال کے لیے بمز لہ وارث) ہوں اور میں اس کی قید کو چھڑا دُن گا۔ اور ما موں وارث ہوگا جس کا کوئی وارث (ذوی الفروض اور مصبات میں ہے) نہ ہواس کے مال کا۔ اور وہ اس کی ذات کو چھڑا اے گا ، اور ایک روایت میں ہے ۔ آپ تا تی تعلق نے فر مایا میں وارث ہوں جس کا کوئی وارث نیس اس کی طرف سے میں دیت اوا کروں گا اور میں اس کا وارث بنون گا ، اور ایواور قربی اس کا وارث بنون گا ، اور ایواور قربی اس کا وارث بنون گا ، اور جس کا کوئی وارث بنون گا ، اور ایواور قربی اس کا وارث بنون گا ، اور جس کا کوئی وارث نیس سے بی دیت اوا کروں گا اور میں اس کا وارث بنون گا ، اور ایک وارث شہوتو ما موں اس کا وارث ہے ، وہ اسکی دیت (بھی) اوا کر ریگا اور اسکا وارث بھی ہوگا۔ (ابوداؤر قربی)

کلمات حدیث کی تشری کی این الغ: جس کاکوئی بھی دارث نہو، میں اس کا دارث ہوں لینی آپ اللے اس میراث کو بیت المال علمات حدیث کی تشری کی منتقل فر مادیں گے۔

افک عانهٔ: یعنی اگراس محفی نے کوئی جنایت کی ہوئی ہاوراس کے پاس جنایت اداکر نے کے لیے مال نہ ہوتو بیت المال سے اداکر کے اس کو نجات دلا کو سے اللہ نہ ہوتو بیت المال سے اداکر کے اس کو نجات دلا کو سے اللہ خال المنع: جس طرح ابن اخت (بھانچہ) ذو الا رحام میں ہوا کرتا ہے ای طرح ما موں بھی ذو الا رحام میں سے ہوگا؛ لہٰذا بھانچہ کی میراث اس کو ملے گی اگر اس کے ذوالفروض اور عصبات میں سے کوئی بھی موجود نہ ہو۔ یوٹ المنع ، تقریراً در ایس کے دوالفروض اور عصبات میں سے کوئی بھی موجود نہ ہو۔ یوٹ المنع ، تقریراً (یہ تکرار) ہے اورا ثبات بھی مقصود ہے۔ (تقریح کا خوذار تعلیق وغیرہ - اسعدی)

﴿عورت کے لیے حق میراث﴾

﴿ مديث بمبر ٢٩٢٧﴾ وَعَنْ وَ اثِلَةً بُنِ الْاسْقَعِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: تَحُوزُ الْمَرْأَةُ لَا حَدَثَ عَنْهُ رَوَاهُ التُرْمِدِيُّ وَٱبُوٰ دَاوَّدَ وَابْنُ مَاجَةً . قَلاتَ مَوْارِيْتَ عَتِيْقَهَا وَلَقِيْطَهَا وَوَلدَهَا الَّذِي لا عَنَتْ عَنْهُ رَوَاهُ التُرْمِدِيُّ وَٱبُوْ دَاوَدَ وَابْنُ مَاجَةً .

کیا ہے۔ (تر ندئی۔ابوداؤر۔ابن اجّ)

ابتدائر باب معلوم ہو چکا ہے کہ بل از اسلام میراث اور ترکہ پرظلم وجور کا قانون مسلط تھا اور خاص کلمات حدیث کی تشریح

کلمات حدیث کی تشریح

کرعورت بالکلیہ میراث ہے محروم رہتی تھی ، جن وراشت کے علاوہ بھی اہلِ و نیا نے عورت پر بہت ہی فیرانسانی رسم ورواج کو مسلط کیا ہوا تھا، آپ تالیہ نے زندگ کے تمام شعبوں میں اصلاحی پیغام پہو نچایا اور صرف پیغام کی حد تک نہیں ؛

بلکہ عملاً تمام اصلاحات کو بذات خود آپ تالیہ نے نافذ فر مایا ہے ، بہر حال عورت کو مختلف صور توں سے اس کا جن میراث اس کو پہنچایا ہے ،

اس حدیث پاک میں آپ تالیہ نے اس کو تین صور توں سے میراث طنے کی تفصیل فر مائی ہے ، یعنی ذوالفروض وغیرہ کے علاوہ۔(۱) اپنے

آزاد کر دہ غلام کی میراث (حق ولار)۔(۲) لاوارث جس بچہ کو اس نے اٹھالیا (اور گودلیا) ہے۔(۳) شوہر کے ساتھ لعان کے بعد جو

بچرکلیہ اس کی جائب منسوب ہوا ہے۔

پہید، بان باب رب رب رب المارت بیکوا خالیا اور اس کی پرورش بھی کا اس بیک کی براث میں اس مورت کا استحقاق ہے یا نہیں

اس میں اختلاف ہاور وجدا ختلاف دوسری روایت ہے، آپ آلی کا ارشاد ہے الاولاء لها الاولاء المعتاقة" اس رویت میں ولار عمّاقہ کی خصیص ہے اور باقی کی نفی ہے! اس لیے حدیث مشکو قاکو جما ہیر علار نے منسوخ قرار دیا ہے البتہ امام آختی ابن راہو سیگا مسلک یکی ہے کہ وہ ستی ہے۔ (واللہ اعلم)

البتد لعان والی صورت میں جب بچہ تورت کے ساتھ شرعاً لائن ، و چکا ہے بیراث کے استحقاق میں بھی لائن ہوگا اس میں کوئی اختلاف نہیں ہے؛ کیونکہ بورت کے ساتھ اس بچہ کا نسب ثابت شدہ ہوا شرعاً ، اور جب عورت کے شوہر نے اس بچہ کی نفی کر دی ہے تو گویا اس مختص ہے اس بچہ کا نسب شاہوا اس لیے وہ وارث نہ ہوگا و لا بعکسہ لاں التو ارث بسبب النسب ۔ (ازتعلی) عامدہ: لعان اور لقطی تفصیل مزید ہردوا بواب کے تحت معلوم ہوگی انشار الند (اسعدی)

﴿ حق میراث میں ولدِ زنا کا کیا حکم ھے؟ ﴾

﴿ صريت تُمبر ٢٩٢٧﴾ وَعَنْ عَمْرِ وَبْنِ شُعَيْبٍ عَنْ آبِيْهِ عَنْ جَدَّهِ آنَّ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ايَّمَا رَجُلُ عَاهَرَ بِحُرَّةٍ آوْ آمَةٍ فَالْوَلَدُ وَلَدُ ذِنَالًا يَرِثُ وَلَا يُوْرَثُ رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ .

قوجعه: معزت عَمَو بن شعیب بروایت والدخوداً زجة خودروایت کرتے ہیں کہ بینک نبی اکرم بینے نے فرمایا: جس مخص نے کسی آزادیا باندی سے زنا کیا تووہ بچه ولدالز ناہے نہ تووہ (باپ کا)وارث ہوگا اور نہ)باپ اس کاوارث بنایا جائیگا۔ (ترنی ٹی)

ن میں کے اور اس کا تھم ہیے کہ میں بیان کے ساتھ بی کی ولا دت ہوئی ہے وہ ولد الزنا ہے (حرامی بی بی) اور اس کا تھم ہیہ ہے کہ میں بی بی ذائی کا میں سے کہ میں بی است کی میر اث زانی کو نہ بہو نیچے گی اور جب مید وارث نہ موں گے تو اس کے اقربار بھی اس کے حقد ار نہ ہول گے البتہ عورت (زانیہ) کے ساتھ وہ بی منسوب ہوتا ہے اس لیے ان میں سے ہرا یک

دوسرے کی میراث کے حق دار ہوں گے۔

﴿ آزاد شدہ غلام کی میراث ﴾

﴿ صديت مُبر ٢٩٢٨ ﴾ وَعَنْ عَائِشَةُ اَنَّ مَوْلَى لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَاتَ وَتَرَكَ شَيْئاً وَلَمْ يَدَغَ حَمِيْماً وَلاَ وَلَداً فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَعْظُوا مِيْرَاقَهُ رَجُلاً مِنْ أَهْلِ قَرْيَتِهِ . رَوَاهُ ابُوْدَاؤُدَ وَالتَّرْمِذِيُّ .

قو جمه : حضرت عائش سے روایت ہے کہ رسول اللہ عظی کے غلام (آزاد شدہ) کا انتقال ہو گیا اور کچھ مال جھوڑ ااور نہ تو کوئی قریبی رشتہ دار چھوڑ ااور نہ اول اللہ عظی نے فر مایا اسکی میراث اس کی بستی دانوں میں سے ایک شخص کودے دو۔ (بوداؤر آرندی) کہ مارت دار کہ دہ غلام کی میراث (حق دلار) آزادہ کہ نندہ کو پہو نیچ گی اگر کلمات حدیث کی تشریح کی دارث نہ ہو۔

کلمات حدیث کی تشریح کی وارث نہ ہو۔

واقعه: آپ ای کے ایک آزاد شدہ غلام کا انقال ہوا تو آپ آلی نے اس کی بیراث ندلی اس کے کد حفرات انبیاء کرالم کسی کے وارث نبیں ہوا کرتے۔ ارشاد نبوی آئی انامعاشو وارث نبیں ہوا کرتے۔ ارشاد نبوی آئی "انامعاشو الانبیاء من اهل قریته النح" اور جب آپ آئی نے اس کی میراث ندلی تو آپ آئی نے یہ ہمایت فرمائی کہ جس ستی کا وہ رہنے والا تعالی کے کئی فض کودے دیا جائے۔ حضرات انبیاء کرالم منصب نبوت پرفائز ہونے کے بعد حصول دنیاد کے تمام فاہری اسباب اور وسائل سے العلق کردیے جاتے ہیں۔

﴿اگر کسی کا وارث معلوم نه هو ﴾

﴿ وَمِدِ يَثُمُ بِهِ ٢٩٢٩﴾ وعن بُوَيْدة قال: مات وَ لَحلٌ من لَحزاعة فَأْتِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْه وَسَلَّمَ بِمِيرَائِهِ فَقَالَ ٱلْتَمِسُوا الَّهُ وَارِقًا أَوْذَا رَحْمَ فَلَمْ يَحِدُوا لَهُ وَارِثًا وَلَا ذَا رَحْمٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. أَعُطُوهُ الْكُبْرَمِنُ خُزَاعَة رواهُ أَبُو داؤ د وفي روايةٍ لهُ قَالَ أَنْظُرُوا الْحَبر رجل مِنْ خُزَاعةً.

موجعه : حضرت بريده بروايت ہے انہوں نے بيان كيا كرقبيله فزاير من سے ايك تخص كا انقال ہوگيا، بى اكرم في كے پاس اس کی میراث لائی گئی۔ آپ علی نے ارشادفر مایا: اس کے وارث کو تااش کر واوریاذی رحم (وارث حقد ارکو تلاش کرو)او گول نے اس کے سمسی وارٹ کونہیں پایا اور نہ کسی ذی رحم کو _آ پ نے ارشاد فر «یا. قلبیله خزاعہ میں جو بڑا تخفس ہے اس کو دے ۱۰ _ (او داو ز) اور ابو داو د کی ایک روایت میں ہے آپ میلائٹ نے فر مایا: فلبلہ فرزاعہ میں جو محض سب سے ہز سے اس کو تلاش کرو۔

گذشتہ روایت کے تحت معلوم ہو گیا کہ اگر کسی میت کا کوئی دارث نہ ہواس کا ترکہ (میراث) بیت کمات حدیث کی تشریح کا المال میں جمع کر دیا جائے گا،اوراس روایت میں ہے کہ آپ نے اس کے قبیلہ کے اکبررجل کودیئے

جانے کا تھم دیا ہے، اس میں ایک احمال یہ ہے کہ صدقہ کی صورت میں دیا گیا ہواور یا اس اعتبارے کہ بیت المال کے مصارف اہل اسلام،ي مول كم، اى اعتبار عربي مي آب علي قد إن كورب و تجايا "لما رأى من المصلحة" (از تعليق مع التشريح)

چقرضہ کی ادائیگی مقدم شے پ

﴿ صِدِيثُ مُبِر ٢٩٣٠﴾ وَعَنْ عَلِيٌّ قَالَ: إِنَّكُمْ تَقْرَوُنَ هَذِهِ الْآيَةَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُونَ بِهَا أَوْدَيْنٍ وَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَطْى بِالدُّيْنِ قَبْلَ الْوَصِيَّةِ وَإِنَّ اعْيَانَ نَنِي الْاُمْ يَتَوَارَثُوْنَ دُوْنَ نَنِي الْعَلَّا تِ الرُّحُلُ يَوِثُ آخَاهُ لِآسِٰهِ وَأُمَّهِ دُوْنَ آخِيْهِ لابِيْهِ رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ وابْنُ مَاجَةَ وَفِيْ رِوَايَة الدّارِمِيِّ: قَالَ الإخوَةُ مِنَ الْأُمِّ يَتَوَارِثُونَ دُوْنَ بَنِي العَلَّاتِ إِلَىٰ احِرِهِ.

قوجمه : حضرت على عدوايت إنهول في ارشادفر مايا: يقيناتم لوك اس آيت كو من بعد المختلاوت كرتے مو جس ميس وصیت کا تذکرہ مقدم ہے) حالا تکدرسول التمانية قرض کی ادائيل وصیت ے مقدم کرتے سے اور آپ تابی نے فرمایا کہ حقیق جمائی وارث ہوتے ہیں سوتیلے بھائی نہیں ،اور آ دمی وارث ہوتا ہےا ہے بھائی کا جو کہا ہے والداورا پنی والدہ ہے ہو (لیعنی حقیقی بھائی ہو) نہ کہ (صرف باب شریک) سوتیلے بھائی۔ (ترندی ،ابن ماجہ) اور دارمی کی ایک روایت میں ہے حضرت علی نے فرمایا: سکے بھائی (جومال شريك بول) دارث بوتے بين ندكر سوتيك (لعني بھائي) _آفر حديث تك _

حفرت من وصبت كا تذكره مقدم ما الماس كا الماس كا

البت اولى ب-

ہ حق میراث کے لیے حقیقی برادر ہونا∢

هوسوا مسئله: "وان اعيان بدي الام الخ" ليني وراثت مين اخوت حقيق كا اعتبار بوگا اور اس كا معيار بدب"الاخوة والاخوات لاب واحدا وام واحدة" ايكنى والداوروالده دونون كى بون مقصد بيان يه كداكرميت كاولا ديس علالى اور اعیانی دونوں موجود ہوں تو اعیانی اولا دمقدم ہوگی ، والد بھی اور والدہ بھی ایک ہو، ان کوحقیقی بہن اور بھائی کہا تمیا ہے اگر والدہ کے اعتبار

سے مختلف ہوئے تودہ موتیلے ہوں مے۔

﴿ آیت میراث کا واقعهٔ نزول ﴾

قو جعه : حفرت جابر ني بيان كيا كرسول الشكالية كي پاس حفرت سعد بن رئي كى زوج سعد بن ربيدكى دولز كيول كوساته ليكر حاضر بوئيس اورع فن كيا كه يارسول الله ايد دفول لزكيال سعد بن رئي كى بين ان كوالد آپ آي كي كساته وغزوه احد ش شهيد بو كئ شحاوران كے پچان في ان كاتمام مال ليا ہے اوران كے ليے بحوجي فيس تجوز ااوران كا نكاح بغير مال كنه وسكى كار آپ آي نے فرمايا: الله تعالى اس سلسله من فيصله فرمائيس كے (لبدائم انظار كرو) چنانچ آيت ميراث تازل بوئى ، رسول الله الله كان رما وه تمهارا پچاك پاس (قاصد) بهيجا، اور قرمايا سعدكى دونول لؤكيول كو دو ثلث اور ان كى والده كو آشوال حصد دو اور جو باتى رما وه تمهارا ہے۔ (احرار ترفری ، ابوداد ان ماج، اور) ترفری نے فرمايا بيحد يث سن غريب ہے۔

ال روایت میں واقعہ ہے کہ ابتداء اسلام میں قدیم رسم اور رواج کے مطابق میراث (ترکه میت) کلمات حدیث کی تشریع کی مطرح تبعنه کر لیاجا تا تھا اور بیوہ اور بیٹم بچیوں کو بالکلیدمحروم کردیاجا تا تھا۔

بهر حال بيوه في آپ الله في خدمت مين حاضر موكر عرض حال كيا ،اس وقت تك كوئى آيت بميراث كم تعلق نازل شده نيقى ؛اس ليے فى الوقت آپ الله فى ذكك تكم نيس فرمايا ،عكم ربانى كے نزول تك موقوف فرمايا: اور ارشا دفرمايا" يقصنى الله فى ذلك "اور بهت جلد آيب ميراث نازل موئى اور جمله تعلقين كوطلب فرمايا اور حكم اللى كے مطابق آپ نے تقسيم كاتھم فرمايا۔

تقسیم کی نوعیت: اس لیے کرمیت کے ورثار میں دو(یا تین) لڑکیاں اور ایک زوجہ (بیوہ) تمی اور میت کے عصبات تمیں؛ اس لیے آپ نے لڑکی لودو مکث (دونہائی) عطار کے اور زوجہ کو آٹھواں حصہ اور اصحاب فروش کے بعد مابقیہ عصبہ کودیا؛ یعنی میت کے بعد کی اولاد) کو۔

﴿میراث کی ایک صورت﴾

﴿ صديث مُبِر ٢٩٣٢﴾ وَعَنْ هُزَيْلِ بْنِ شُرَحْبِيلٍ قَالَ: سُئِلَ آبُوْ مُوْسَىٰ عَنِ ابْنَةٍ وَبِنْتِ ابْنِ وَأَخْتِ فَقَالَ: لِلْبَنْتِ النَّصْفُ وَلْلَاخْتِ النَّصْفُ وَأْتِ ابْنَ مَسْعُوْدٍ فَسَيْتَابِعْنِى فَسُئِلَ ابْنُ مَسْعُوْدٍ وَأَخْبِرَ بِقَوْلِ آبِي لِلْبَنْتِ النَّصْفُ وَلِلْلَاخْتِ النَّصْفُ وَلَّا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ آفْضِى فِيْهَا بِمَا قَضَىٰ النِّبَى صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ مُوْسَىٰ فَقَالَ: لَقَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا آنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ آفْضِىٰ فِيْهَا بِمَا قَضَىٰ النِّبَى صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ لِلْمُؤْتِى النَّصْفُ وَلِابْنَةِ الْإِبْنِ السُّدُسُ تَكْمِلَةُ للتَّلْفَيْنِ وَمِا بَقِى فَلِلْلَا خُتِ فَآتَيْنَا آبَا مُوسَى فَآخَهَ لِللَّهُ عِقَوْلِ الْمُعْودِ فَقَالَ: لَاتَسْأَلُونِي مَا وَامَ هَذَا آلْحِبْرُ فِيكُمْ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ .

قوجمه : حفرت بزيل بن شرصيل ني بيان كيا كد حفرت ابوموي سوال كيا ميابي، بوتى اور بهن كى ميراث معلق ، حفرت ابو

موی نے فرمایا بیٹی کیلئے نصف اور بہن کیلئے نصف میراث ہے، اور حضرت ابوموی نے فرمایا کہتم حضرت عبداللہ بن مسعود کے پاس (بھی) جاؤہ وہ میری موافقت کریں گے؛ چنانچہ (سائل انئے پاس آیا اور) عبداللہ بن مسعود ہے سوال کیا اورا کو ابوموی کے قول کی خبر بھی دی گئی ، حضرت عبداللہ نے فرمایا (اگریس نے ابوموی کے فیصلہ کی اتباع کی) تو پھر میں گراہ ہوجا و نگا اور میں راہ مستقیم پر ندر ہوتگا۔ میں قو اس سوال میں وہ فیصلہ دوں گا جو نبی اکرم ہو ہے نہیں کے لیے نصف اور بوتی کے لیے چسٹا حصد دو تہائی پورا کرتے ہوئے اور جو باتی رہاتو وہ بہن کے لیے ماس کے بعد پھر سوال کنندہ حضرت ابوموی کے پاس آئے اور ہم نے ان کو حضرت عبداللہ کے فیصلہ کی خبر اور کی موجود ہے تو بھے سوال ندکیا کرو۔ (بخاری) دی مصرت کی محضرت ابوموی نے فرمایا: تم لوگوں کے درمیان جب تک سے ماہر عالم موجود ہے تو بھے سوال ندکیا کرو۔ (بخاری) کی مسلم کی موجود ہے تو بھے سوال ندکیا کرو۔ (بخاری) کی میں تشریح کی میں تشریح کی میں اس کو سک دیا ماس طرح دو گلہ بھو کی میں گئی سے کہ کوئی بھائی وغیرہ عصبات میں نہ کہ کا کھی جو مصبات میں نہ کہ کوئی بھائی وغیرہ عصبات میں نہ کھی تھے جھے ہوئے۔

﴿میراث جدّردادا کی میراث ﴾

﴿ صديث بُر ٢٩٣٣﴾ وَعَنْ عِمْراًن بْنِ حُصَيْنِ قَالَ: جَآءَ رَجُلَّ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَقَالَ إِنَّ ابْنِي مَاتَ فَمَالِي مِنْ مِيْرَافِهِ قَالَ: لَكَ السُّدُسُ فَلَمّا وَلَى دَعَاهُ قَالَ: لَكَ سُدُسٌ آخَرُ فَلَمّا وَلَى دَعَاهُ قَالَ: لَكَ سُدُسٌ آخَرُ فَلَمّا وَلَى دَعَاهُ قَالَ: لِكَ سُدُسٌ آخَرُ فَلَمّا وَلَى دَعَاهُ قَالَ: إِنَّ السُّدُسَ الْأَخِرَ طُعْمَةٌ رَوَاهُ آخُمُدُ وَالتَّرْمِذِيُّ وَآبُوْ دَاوَدَ وَقَالَ التَّرْمِذِيُ هَذَا حَدِيثَ حَسَدٌ مَدَدُ مَدَدً وَالتَّرْمِذِي مَدَدُ مَدَدً وَالتَّرْمِذِي وَاللهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَم مَدَدُ وَاللهُ اللهُ عَلَيْهِ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَاللّهُ وَقَالَ التّرْمِذِي وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَلَا اللّهُ عَلَهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَقَالَ السّرُولَ اللّهُ اللّهُ وَلَا اللّهُ وَعَالَ اللّهُ وَلَا لَاللّهُ وَلَا لَا لَلْهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَلَا لَاللّهُ وَاللّهُ وَالل

قوجمه: حضرت عمران بن صين في بيان كيا كرسول الشفائية كي پاس ايك فخص آيا، اس نے كہا كد مير ب يوت كا انقال ہو كيا ب (اوراس كے دولا كياں ہيں) تو اس كى ميراث ميں مير ب ليے كس قدر حصہ ہے؟ آپ آن في نے فرمايا: تير ب ليے چھٹا حصہ ہاور پھر جب وہ واپس ہوا تو اس كو پھر بلايا اور فرمايا: تير ب ليے ايك اور دوسرا (بھی) چھٹا حصہ ہوا در ہوا تو اس كو پھر بلايا اور فرمايا: آخر كا چھٹا حصہ (بوجہ عصبہ ہونے ك) تير ب ليے بطور رزق ہے (چونكہ ذوالفروش كي تعداد زائد نيس) احد ، ترفي امام ترفي في فرمايا بير حديث حسن سيح ہے۔

کلمات صدیث کی تشریک دادا (جذ) کوسدس صدیلی جودالد کا حصد ہوتا ہے۔ دادا (جد) باحیات ہو والد کی جگہ دادا کی جگہ

دوسرا مسئله: دوسری مرتبه بلا کرآب فی نے پھر ارشاد فرمایا"لك سدس اخر" لينى دوسراسدى اور ہوگا عصبہ مونے كى حيثيت كاعتبارے، پہلا ازروئے ذوالفروض تھا۔

مسئله موم: اور پر آپ این نظری مرتبدار شادفر مایا "طعمة لك" باقی مانده سدس چونكداور مزیدا صحاب فروض نیس سے اس لیے یہ تحری" تمہار ارز ق" ہے اور ده من حیث الفرض نہیں۔

ضروری وضاحت: صورت مسئلہ ہے کہ میت کی دولا کیال تھی اورایک دادا؛ اسلے لاکوں کو حب آیت قرآند دوہ انی 'پرونچا اورایک تارا کی سے داوانی ایک سدی ذی فرص ہونے کیوجہ اورایک سدی عصبہ ہونے کیوجہ اورای سدی ای آئر - آئر ایر ایک تمالی میں سے (اولا) ایک سدی ذی فرص ہونے کیوجہ اورایک سدی عصبہ ہونے کیوجہ سے اورای سدی ای (آئر - آئر بالغتم اور بالکسرہ) کی وضاحت کرتے ہوئے آپ آئے نے (جد) کوفر مایا بیسدی ٹانی دراصل عصبہ کی حیثیت پر سے جو گویا کر در قابوا ۔ بالغتم اور بالکسرہ) کی وضاحت کا دادا سے دراوا سے

فرمایا۔اور "طعمة" عمرادتصیب بی بےلیس بفوض البتداول سدس فریضہ ب (ازتعلق بس ۱۳۹۳، مع التشریج،اسعدی)

چجدہ (دادی) کا حکم ک

﴿ مديث بُمِر ٢٩٣٧﴾ وَعَنْ قَبِيْصَة بْنِ ذُويْبٍ قَال: جاءَ تِ الْجَدَّةُ إِلَى ابى بَكُو تَسْا لُهُ مَيْرَاتُهَا فَقَالَ لَهَا: مَالَكِ فِي كِتَابِ اللّهِ شَنِّى وَمَا لَكِ فِي سُنَةٍ رَسُولِ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ شَنَّى فَارْجِعِي حَتَى اَسْالُ النَّامَ فَسَالَ فَقَالَ الْمُعِيْرَةُ بْنُ شُعْبَة حَصَرْتُ رَسُولَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اعْطَاهَا السّدُ سَ فَقَالُ النَّامَ فَسَالً فَقَالَ الْمُعِيْرَةُ بْنُ شُعْبَة حَصَرْتُ رَسُولَ اللّهِ صَلّى اللّهُ عَلَيْهِ وسَلّمَ اعْطاهَا السّدُ سَ فَقَالُ النَّهُ بَنُ مُسْلَمَة مِثْلَ مَا قَالَ الْمُعِيْرَةُ فَانَفَذَهُ لَهَا ابُو بِكُو ثُمَّ جَاءَ تِ الْبَحَدُةُ اللّهُ عَمْرَ تَسْالُهُ مِيْرَاتُهَا فَقَالَ هُو ذَلِكَ السّدُسُ فَإِنِ الْجَتَمَعْتُمَا فَهُو بَيْنَكُمَا وَايَتُكُمَا وَايَتُكُمَا وَايَتُكُمَا وَايَتُكُمَا وَايَتُكُمَا وَايَتُكُمَا وَالنَّوْمِيْقُ وَابُو دَاللّهُ وَالْمُ وَالْمُولِي وَالْمُولِي وَاللّهُ وَالنّهُ وَالْمُولِي وَالْمُولِي وَالْمُولِي وَالْمُولِي وَالْمُولِي وَالْمُولِي وَالْمُ اللّهُ مَعْمَلُ عَلَى مَا فَهُو بَيْنَكُمَا وَايَتُكُمَا وَالنّهُ وَالْمُ اللّهُ مَا فَلُولُ مَا فَهُو اللّهُ وَالْمُ مُعَلّى وَالْمُ وَالْمُ وَالْمُ وَالْمُ وَالْمُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَالْمُ وَاللّهُ وَاللّهُولُولُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَال

کمات صدیث کی تشریخ معرات ابو بکر صدیق نے (اولاً) عدم علم کی وجہ سے بیدارشاد فرمایا تھا؛ اس لیے کہ بھراحت آیات کمات صدیث کی تشریخ میراث میں جدہ کا تذکرہ نہیں اور حدیث بھی ان کومعلوم نہتی ،بہر حال تحقیق کرنے پر حدیث مرفوع

بروایت حضرت مغیر قمعلوم ہوئی جس میں بصراحت مروی ہے کہ آپ تھائے نے جدہ (دادی) کوسدس (والدہ کی جگہ) جمویز فر مایا، اس کے بعد حضرت ابو بکرصد بن نے اس کو تافذ کر دیا، اور اس روایت کی وجہ سے حضرت ہڑئے عبد خلافت میں جدہ (دادی) کے لیے بھی (والدہ کی جگہ) سدس کا تکم تافذ ہوا جس کی تفصیل حدیث نمبر (۲۹۲۲) کے تحت معلوم ہو چکی ہے۔

ضووری وضاحت: حدیث نبر (۲۹۳۳) میں حضرت ابو بکر صدیق نے جو فیصلہ فرمایا تھاوہ جدہ (لینی نانی) کے حق میں تھا۔ اور حضرت عمر کے عہد کا واقعہ جدہ (وادی) کا واقعہ تھا اور اس کی تقریح دوسری روایت میں ہے۔ (ماخوذ ازتعلیق میں ۴۹۳ء مع التشریح) مسئلہ سوم: فان المن: اگر ایک سے زائد جدات ہوں تو بھران کے درمیان ایک ہی سدی تقسیم ہوگا ، اور ایک ملے تو ای ایک کے لیے ، ذلک (بالکسرہ) خطاب خاص جوسوال کنندہ تھی ، اور (بالقتح) خطاب عام ہوگا (ابینا)

﴿ صَدَيَثُ مُرِ ٢٩٣٥﴾ وَعَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ: فِي الْجَدَةِ مَعَ اِبْنِهَا آنَهَا أَوَّلُ جَدَّةِ ٱطْعَمَهَا رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُدُسًا مَعَ ابْنِهَا وَابْنُهَا حَيِّ رَوَّاهُ التَّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَالتَّرْمِذِيُّ صَعَفَهُ.

قوجمه: حضرت عبدالله بن مسعود في فرمايا: دادي كي ميراث كي سليل من بي كي ساته جمع موني كي صورت من وه مبلي دادي تعي

كه جس كورسول النهين في حمث صريفي كساته دلايا كه اس كاجيًا زنده تها (اوراس كي والده زنده نيمي) ترندي ، داري اورامام ترندي نے اس مدیث کوضعف قرار دیا ہے۔

کمات صدیث کی تشریح اس دوایت میں صورت واقعدیہ ہے کہ دادی اور اس کا لڑکا (بھی) باحیات تھا، اس کے باوجود آپ نے اس جدہ کو حصہ عطار فر مایا ہے۔

ضروری و ضاحت: اکثر الل علم نے اس روایت کواس لیے متر وک قرار دیا ہے کہ وہ روایت ضعف ہے! کیونکہ اگراڑ کا زندہ ہے ای وقت دادی کا حصہ نہ ہوگا اور روایت میں "طعم" کے ساتھ ہے جس ہے اشارہ ملتا ہے کہ وہ کی خاص وجہ کے پیش نظر عنایت فرمایا_(والله اعلم، ماخوذ ارتعلق:ص ۱۳۵۸)

﴿مسئلةُ ديت اور ميراث﴾

﴿ صِرِيثَ تَمِر ٢٩٣٦﴾ وَعَنِ الصَّحَاكِ بْنِ سُفْيَانَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَتَبَ الَيْهِ أَن وُرُّتَ إِمْرَاةَ أَشْيَمَ الطَّبَابِي مِنْ دِيَةِ زَوْجِهَا رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ وَأَبُوْ دَاوُدَ وَقَالَ التّرْمِذِي هَذَا حَدِيثٌ حَسَلٌ صَحِيْحٌ.

قوجمه: «هزت ضحاك بن سفيانٌ مروى ب كدرسول الله ينافي في ان كوتر يرفر ما يا كداشيم ضابي كي زوجه كواس يح شوهر كي ديت مس ميراث دي جائے۔ (ترندي ابوداؤر اورام مرندي فرمايا يه مديث من سيح ب

کی تشریح مقصد بیان بیہ ہے کہ شوہر مقتول کی اگر دیت حاصل ہوئی ہے تواس کی زوجہ کا بھی اس میں حق میراث ے جس طرح ترکہ میں ہوا کرتا ہے۔

ضروری و ضاحت: حضرت عراو (اولاً) پروایت نہیں پہونجی تھی اور جب پروایت ان کومعلوم ہوئی تو آپٹ نے اس کے مطابق تھم نافذ کردی<u>ا</u>۔

﴿ اگر کوئی شخص کسی کیے ذریعہ مسلمان هوا ﴾

﴿ صِرِيث مُبر ٢٩٣٧﴾ وَعَنْ تَعِيْمِ الدَّارِمِيُّ قَالَ: سَالْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا السُّنَّةُ فِي الرُّجُلِ مِنْ أَهْلِ الشُّرْكِ يُسْلِمُ عَلَى يَداى رَجُلِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ؟ فَقَالَ هُوَ أَوْلَى النَّاسِ بِمَحْيَاهُ وَمَمَاتِهِ رَوَاهُ التُّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَةً وَالدَّارِمِيُّ .

كرے تواس كاكيا تھم ہے؟ آپ اللے نے فرماي: وہخص اس كى زندگى بيس (بھى) اوراس كے مرنے كے بعد بھى تمام لوگوں بيس زيادہ ولى بونے كولائق ب_ (ترفق الن اجرادك

مقصد بیان یہ ہے کہ جو تھی کی تھی کے ذرید (اوراس کے ہاتھ پر)اسلام قبول کرے ،اس کے حق کلمات حدیث کی تشریکی میں یہ فغی اسلام کنندہ مولی (سر پرست) ہوتا ہے اور ابتداءِ اسلام میں میراث باہم تعتیم ہوتی تھی اور جب آیات میراث نازل ہوگئیں وہ تھم منسوخ ہوگیا، اس روایت ہے ای کو بیان کرنا ہے کہ (ابتداء) حیات اور ممات میں

شريك مواكرتے تھے۔ احوال عنقها كرام: يريحم عندالاحناف عاور معزت المام الك اورالم شافع كزديك فق ميراث اب بحى ب اكراس ك مسلمان دارث نه دب_(انتيق)

حِکیا آزاد غلام وارث هوگای

﴿ مديث تُمِر ٢٩٣٨﴾ وَعَنِ ابْنِ عَبُّاسِ أَنَّ رُجلًا مَاتُ وَلَمْ يَدَعْ وَادِنًا إِلَّا عُلَامًا كَا نَ أَعْتَفَهُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَالْمُنْ مَاجَةً .

قوجهه: حضرت عبدالله بن عهائ ہے روایت ہے کہ ایک شخص کا انتقال ہو گیا اور اس نے کوئی وارث نہیں چھوڑ ابجر ایک غلام کے جس کواس نے آزاد کیا تھا۔ آپ تھا ہے فرریافت فرمایا: کیا اس مرنے والے شخص کا کوئی کوئی وارث ہے؟ اسحاب نے کہا بجر اس کے ایک آزاد کروہ غلام کے اور کوئی نیس تورسول اللّمة تالیہ نے اس کی میراث اس غلام کودے دی۔ (ابوداؤر برندی ابن ماجہ)

کلمات صدیث کی تشری کی تشریک کا سے معلوم ہوا کہ جب میت کا کوئی بھی وارث موجود ندتھا تو آپ آیا ہے نے میت کے آزاد کلمات صدیث کی تشریک کے کردہ غلام کومیراث دیتے جانے کا تھم فر مایا ، بہر حال بدیمراث کا عنایت فر مانااز روئے میراث ندتھا ؟

بلكه ازروئ تيم عيم مواجبيا كه حديث نمبر (٢٩٢٨) كے تحت تفصيل معلوم موچكى_

دمستلة ولاءه

﴿ مديث ثمر ٢٩٣٩﴾ وَعَنْ عَمْرِوبْنِ شُعَيْبٍ عَنْ آبِيهِ عَنْ جَدَّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَرِثُ الْوَلَاءَ مَنْ يَرِثُ الْمَالَ رَوَاهُ التَّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيْثُ السَّادُهِ لَيْسَ بِالْقُويُّ.

قوجهه: حعرت عمروبن شعیب بروایت والدخود از جازخود روایت کرتے ہیں کہ نبی اگرم آبائی نے فرمایا: جو محض مال کا وارث ہوگا ویں ولا ا کا بھی وارث ہوگا۔ (ترندی اورامام ترندی نے فرمایا اس حدیث کی اسنا د تو کنہیں)

کلمات حدیث کی تشریح اروایت میں از روئے اصول بیضابطہ بیان فرمایا ہے کہ "بیوٹ الولاء من بوٹ الممال ایعنی جو

تحق مال كا دارث موتا ہے وہى دلار كا بھى دارت موكا، يعنى من العصبات الذكور، تا بم اگر عورتوں نے كسى غلام كوآزادكيا موتوحق ولار عورتوں كوبھى حاصل ہے كما المشهور فى حديث بويرةً.

خلاصة كلام: يه ب كمعمد وال بى بول معودت عصر بنف دبوكى (انقلق: ص ١٩٩٧)

الفصل الثالث

وگذشته تقسیم شده میراث کاحکم پ

﴿ صريت تُبر ٢٩٣٠﴾ عَنْ عَبُدِاللهِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا كَانَ مِنْ مِيْرَاثٍ قُلْبِهِ وَسَلَّمَ اللهُ عَلَيْهِ وَمَا كَانَ مِنْ مِيْرَاثٍ آذُرَكَهُ الْاسْلَامُ فَهُوَ عَلَى قِسْمَةِ الْاسْلَام رَوَاهُ ابْنُ مَا جَة.

قوجمه : حضرت عبدالله بن عمر ادايت ب كدرسول التنطيط في مايا جو مال ميراث زمانة جابليت مير تقسيم كردى كى ، وه ميراث نبيس ب (يعنى اب اس ميس كى كاحل ارث جارى نه موگا) وه تو جابليت كي تقسيم پر بى برقر اررب كى _اور جو مال ميراث موجود ب (تقسيم نبيس موكى) اسلام نے اس كو پاليا (يعنى ورثار مسلمان موسكة) تواب وه اسلامی تقسيم كے مطابق موگى _ (ابن ماج) مصد میان بید ہے کہ جب تک آیات مراث نازل نہ ہوئی تعین اوراحکام مراث میان بین ہوئے سے تواس وقت تک عهد جا بلیت کے رسم ورواج کے مطابق بی تقیم ہور بی تی ، آپ تھا نے اس امر

كلمات حديث كي تشريح

کی وضاحت فرمائی کداس وقت جونشیم ہو چکی تھی وہ اس پر برقرار ہے کی ،اور جب سے بیاحکامِ اسلام نازل ہوئے اس وقت ان کا نظافہ ہوگا؛ لہٰذاا کرکوئی ترکیفتیم شدہ نہ تھا ،اس پراسلام کا عہد شروع ہو چکا ہے تو اب بیاس اسلامی تا نون کے مطابق تفتیم ہوگی۔

دپھوپھی کے لیے مکم میراث

﴿ مديث بْمِر ٢٩٣١ ﴾ وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي بَكْرِبْنِ حَزْمِ اللهُ سَمِعَ آبَاهُ كَثِيْرًا يَقُولُ: كَانَ عُمَرُ بْنُ الْحَطَّابِ يَقُولُ: كَانَ عُمَرُ بْنُ الْحَطَّابِ يَقُولُ: عَجَبًا لِلْعَمَّةِ تُوْرِثُ وَلَا تَرِثُ زَوَاهُ مَالِكُ ،

قو جعهد: حضرت محرین الی بکرین حزم سے روایت ہے کہ انہوں نے اپنے والد سے سنا ہے کہ وہ اکثر فریاتے تھے کہ حضرت محرقاں وق فرماتے تھے بھو بھی کیلئے تعجب ہے کہ وہ (اپنے بھتیج کو) وارث بناتی ہے اور (خود بھتیج کی میراث میں) وارث نہیں ہوتی (رواہ امام مالک تا) مقصد بیان یہ ہے کہ بھو بھی کا بھتیجہ اپنی بھو بھی کا وارث ہوگا لیعنی اگر اس کے کوئی ذوالفروش اور کلمات حدیث کی تشریح عصبات نہوں! کیکن خود بھو بھی اپنے بھتیجہ کے مال میں وارث نہ ہوگی۔

﴿علم الفرائض كي تعليم كي تاكيه﴾

﴿ مِدِيثُ مُهِ ٢٩٣٧﴾ وَعَنْ عُمَرَ قَالَ: تَعَلَّمُوا الْفَرَالِضَ وَزَادَ الْبُنُ مَسْعُوْدٍ وَالْطَلَاقَ وَالْحَجَّ قَالَا فَإِنَّهُ مِن دِيْنِكُمْ رَوَاهُ الدَّارِعِيُّ.

قو جعه : حضرت عرف أرشاد قرما فرائض (كا حكام ومسائل) سيكهو اور حضرت عبدالله بن مسعود في مريد (يهجى) فرما فاطلاق اور ج كا حكام (بهى) سيكهو حضرت عرفا ورحضرت ابن مسعود وولول حضرات في فرما يا كيول كدوه تهار دوين (كم اجم ترين امور ش س) ب- (داري)

فاند من دینکم - یم الفرائض یا فدوره دوسرے ایم ترین مسائل، طلاق، چی، (خاص کر) اہم ترین مسائل، طلاق، چی، (خاص کر) اہم ترین کم است حدیث کی تشری ادکام اور مسائل میں ہے ہیں؛ اس لیے خصوصیت اور اہتمام کے ساتھ الن کے احکام کو حاصل کیا جائے بیا اوقات اس تم کی تاکیدات حالات پر نظر رکھتے ہوئے بھی اسلا فیدامت فرماتے تھے بعض دوایات میں ہے ''فاند نصف المعلم'' اس لیے کے علم الفرائض کا تعلق حالیت حیات اور حالیت بعد الموت ہے جی متعلق ہے۔ (واللہ اعلم، ارتیاتی، ص ۱۹۷۷)

ياب الوصايا

﴿ وصيتوں كابيان ﴾

وصایا وصیة کی جمع مرح نطبیة کی تع خطایا ہاور دصیّت کا بدلفظ اسم بمعن معدر (الایصار) ومیت کرنا۔وصی م یصی وصیاً بعنی اتصل اور وَصَلَ بیو نچنا اور ومیت (کے ذریعہ چونکہ) موسی لاتک پیو نچنا ہے؛ اس لیے اس کو ومیت کہا گیا،البت بیدیو نچنا

الماس برنے کے بعد کول کروس مرنے کے بعد کی جاتی ہے۔ فاص برنے کے بعد کول کروس مرنے کے بعد کی جاتی ہے۔

البداشرعاً وميت كاتريف يه "عهد حاص مصاف الى مابعد الموت "ينى ووعيد (اوراقرام) يومنوس ع (اور)

جس کی نسبت سرنے کے بعد کی جاتی ہے۔

اس تعریف سے بیمطوم ہوا کہ وضیت کا نفاذ وصیت کرنے والے کوم نے کے بعد ہی ہوگا، زندگی میں نفاذ نہ ہوگا، (مثال) ایک مخص نے وصیت کی میرے مرنے کے بعد فلال کام کیا جائے ، اور وصیت کی چندا قسام ہیں۔ لازم اور واجب وفرض ، نیز احسال وتمرع خواوا بیے جق میں اور یا دوسروں کے حق میں جس کی شریعت نے بندہ کوا جازت دی ہے۔

ومیت کی مشروعیت قرآن وسنت سے ثابت ہاور بمیشدوہ معمول بدرت ہے؛ چنانچ قرآن کریم میں وصایا کا تذکرہ ہے قال الله تعالى: "وَوَصِيْ بِهَا إِبْرَاهِيْمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُونُ "

(الف) اگر كمي فخص برنماز مروز و فرض اور ج فرض ہاور وہ ادانه كر سكے تو عندالموت لازم وفرض ہے الى ادائيكى كى دھيت كرنا

(ب) نیزاگرامانت ہے یا قرض وغیرہ کوئی حق لازم ہے اس کی بھی وصیت کرنام لازم ہے۔

(ج) بیخواہش ہے کہ وہ کسی کو تبریا اپنی ملک میں سے پھھد ہے و ایک تہائی تک اس کی اجازت ہے نیز۔

(ح) اس کی خواہش ہے کہ وہ بعد الموت اس کے قل میں کوئی کا مصدقة جاریہ کی صورت میں ہو، اس کی بھی شرعاً اجازت ہے کہ تما کی ملک تک کرسکتا ہے وغیرہ ذلک۔

(خ) اوروصیت جمعی علم بھیجت بھی مستعمل ہا اور میدوصیت زندگی میں ہو علق ہا اور عندالموت بھی حصرت ابراہ علم اور حصرت یعقوب کا وصیت کرنا اپنی اولا دکوائی مفہوم پر ہے کہ وہ اسلام اور حق پرقائم رہیں۔

(د) ابتداء اسلام میں جب تک آیات میراث کا نزول نہ ہوا تھا مالدار پر داجب وٹرض تھا کہ وہ بعد الموت کے لیے دمیت کرلے کیمس کوکٹنا مال دیا جائے اور کس کوکس قدر دیا جائے؟ اور آیات میراث کے نزول کے بعد پیچم منسوخ ہو چکاہے۔

(ذ)اى وجد عشريعت في جس كاحل ميراث بيان كيابوا بان ميس سيكى كي من وميت كرناجا تزند بوگاء آپكاارشاد ب"ان الله قد اعطى كل ذى حق حقه فلا و صيت لوارث " (ابو داؤد)

القعيل فقد من موجود ب(اسعدى ماخوذ ارتطيق وغيره)

الفصل الاول

﴿وصيَّت تحرير كرناهِ

﴿ مديث بْبِر ٢٩٣٣﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ: مَاحَقُ امْدِهِ مُسْلِمٍ لَهُ حَنْى يُوْصِي فِيْهِ يَبِيْتُ لَيْلَتَيْنِ الْآ وَوَصِيَّتُهُ مَكْتُوْ بَةٌ عِنْدَهُ مُتَفَقَّ عَلَيْهِ .

ر بھاری ہے کہ است حدیث کی تشریح کے مقصد بیان یہ ہے کہ جو تقوق کی پرلازم ہوں ان کو دھیت نامہ کی صورت بی ترکز کرکے رکھ لیا جائے کہ است حدیث کی تشریح کے کہ کس وقت موت آجائے معلوم نہیں اور اس وقت وہ وصیت ندکر سکے، اور از روئے تاکید یہ محم ہے جس قد وجلد مواسکو کر کے کہ دورات برائے تعید نہیں ہے؛ بلکہ اشارہ ہے جلد کرنے کی جانب، تا خرکر نامنا سے نہیں ہے

الموال عنقها. كوام: علاء فابر كزريك بدوميت تحريركرناواجب إورجمابيرعلاد كزريك يظم الحباب بالبنة جوهوق واجبہ ہیں ان کی وصیت کر نالازم اور واجب ہے جس کی تفصیل معلوم ہو چکی۔

﴿ ایک تھائی تک وصیّت کرسکتا ھے ﴾

﴿ صديث تُمِر ٢٩٣٣﴾ وَعَنْ سَعْدِبْنِ أَبِي وَلَاصِ قَالَ: مَرِضْتُ عَامَ الْفَتْحِ مَرَضًا أَشْفَيْتُ عَلَى الْمَوْتِ فَاتَانِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُ بِي فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ الذي اللهِ عَلَيْ مَالًا كَثِيراً وَلَيْسَ يَرِلُنِي إِلَّا إِنْتِيلَ آفَاُوْصِيلَ بِمَا لِيْ كُلُّهِ؟ قَالَ: لَا قُلْتُ: فَعُلْفَى مَالِيْ؟ قَالَ: لَا قُلْتُ: فَا لَشَطْرَ؟ قَالَ: لَا قُلْتُ: فَالثُّلُكُ؟ قَالَ النُّلُكُ كَثِيْرٌ اِنُّكَ اَنْ تَلَرَ وَرَ ثَتَكَ اغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ اَنْ تَذَرَهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ وَإِنَّكَ لَنْ تُنْفِقَ نَفَقَةً تَبْتَغِيْ بِهَا وَجْمَ اللَّهِ إِلَّا أَجِرْ تَ بِهَا حَتَّى اللَّقْمَةَ تَرْفَعُهَا إلى في المواتِكَ مُتَّفَقّ عَلَيْهِ .

قو جعه : حضرت سعد بن ابی وقاص نے بیان کیا میں ^{فتح} مکہ والے سال میں بیار ہو گیا ایساسخت بیار کہ موت کے قریب ہو **گیا (بعنی** موت کود کھنے لگا) میرے پاس رسول الشائل میری عیادت کے لیے تشریف لائے ، میں نے کہایا رسول اللہ! بیک میرے پاس بہت زائد مال ہےاور میری ایک بیٹی کے علاوہ اور کوئی میراوارث نہیں ہے، کیا میں اپنے تمام مال کی وصیت کردوں؟ آپ ایک نے فرمایا نہیں۔ میں نے کہا تو پھرا بے مال کی دوتھائی (کی وصیت کردوں؟) آپ تھے نے فرمایانہیں۔ میں نے کہا نصف؟ آپ تھے نے فرمایا نہیں۔ میں نے کہااکی تہائی؟ آپ تھا نے فر مایا ایک تہائی (کی وصیت کردو) اور ایک تہائی بہت زیادہ ہے، بیٹک تمہارے اپنور جام کو مالدار چیوڑ نا بہتر ہے اس سے کہتم ان کومفلس اور نا دار چیوڑ و کہ (پھر) وہ لوگوں سے سوال کرتے ہوں۔اور بیشک تم جو بھی خرج کرتے ہوجس ہے تمہاری غرض اللہ تعالیٰ کی رضا مندی حاصل کرنا ہوتو تم اس پراجردیے جاؤے یہاں تک کہوہ لقمہ جوتم نے اپنی زوجہ ك منه كي طرف الفاياب (تاكمتم اس كوكلاؤ) - (بخاري مسلم)

یث کی تشریح مقصد بیان بیے کرا گرفیل از وفات دصیت کرتا ہے اور اس کے ورثار بھی ہوں تو زائد از زائد ایک تہائی تک ہی وصیت کی جا سکتی ہے؟ اس لیے کہ اب ور ٹار کاحتی شرعی منجانب الله مقرر ہو چکا ہے جس

می مزید تصرف کااستحقاق نہیں رہا،علادہ ازیں۔

امر دوم جواس روایت ش آ پ الله ف ارشادفر مایا بوه بید "انك ان تلد الخ"كمر ف ك بعدور ا، كوير كه بنج جس ے ان کی مالی حیثیت مشحکم ہو، زیادہ بہتر ہے اس سے کہ در ٹار دوسروں کے دستِ تگر ہوں، بہر حال در ٹار کو بہو نچتا بھی باعثِ اجر وثواب ہوگا۔اور بیمسئلہ تمام اہلِ علم کامتفق علیہ ہے،اختلاف نہیں ہے۔

ضدوری و ضماحت: اگرتمام در دار بخوش اس پررضا مند بول تو پر ایک تهائی سے زائد کی بھی دصیت کی جاسکتی ہے۔

﴿ مديث نُبر ٢٩٢٥ ﴾ عَنْ سَعَدِ بْنِ أَبِي وَقَاصِ قَالَ: عَادَيِيْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَّا مَرِيْضٌ فَقَالَ أَوْصَيْتَ؟ قُلْتُ: نَعَمْ اقَالَ بِكُمْ؟ قُلْتُ بِمَالِي كُلَّهِ فِي سِبِيلِ اللَّهِ قَالَ: فَمَا تَرَكْتَ لِوَلَدِكَ؟ قُلْتُ: هُمْ آغْنِيَا ءُ بِخَيْرٍ فَقَالَ: آوْصِ بِالْمُشْرِ فَمَا زِلْتُ أَنَا قِصْهُ جَتَّى قَالَ آوْصِ بِالثُّلُثِ وَالنُّلُكُ كَثِيْرُووَاهُ النَّرْمِلِيُّ .

قوجهد: صعرانی این دقاص مروایت بانبول نے بیان کیا کررسول الشکاف نے میری هیادت قربانی اور یس (اس وقت کیار تھا۔ پھرآپ تھا گائے نے دریافت قربایا کیا تم نے ومیت کی ہے؟ یس نے کہا بی بال آپ تھا نے دریافت قربایا کئی مقدار کی وہیت کی؟ یس نے کہا اپنے تمام مال کواللہ کے راستہ یس (دے رہا ہوں) آپ تھا نے دریافت قربایا بی اواد دے لیے تم نے کیا مجاوز اہے؟ یس نے کہا وہ (تو) مالدار ہیں ، مال رکھتے ہیں۔ آپ تھا نے ارشاد فربایا وہویں حصر کی وصیت کردو۔ (یس نے اس کو کم فیال کرتا رہا یہاں تک کدآپ تھا نے فربایا کی تمالی کی خیال کیا ، آپ نے پھر اور زیادہ کی تو آپ تھا فربائے) تو بس اس کو برابر کم خیال کیا ، آپ نے پھر اور زیادہ کی تو آپ تھا فربائے) تو بس اس کو برابر کم خیال کرتا رہا یہاں تک کدآپ تھا نے فربایا کی تمالی کی وصیت کردواور ایک تبائی بہت زیادہ ہے۔ (ترین)

کل ات صدیث کی آشریکی فرق ہے، دراصل بیا جادیث کی اور یہ نمبر (۲۹۳۵) ایک بی واقعہ سے متعلق ہے، دونوں حدیث بی قدر سے کل ات حدیث کی آشری فرق ہے، دراصل بیا جادیث کی کل ات کا فرق روایت بالمعنی کی وجہ ہے ہوا کرتا ہے، نیز ایک وجہ فرق کو بید بھی ہوا کرتی ہے کہ بعض راوی اختصار کے ساتھ اور ابعض تفصیل کے ساتھ (اور یہ بھی روایت بالمعنی بی کی ایک صورت ہے) اس روایت بی بیتذ کرہ بھی ہے کہ اولا آپ آباتی نے فقاعش (رسویں حصد) کی وصیت کا مشورہ دیا تھا تا کہ وارث کوزیادہ سے نیادہ ترکہ بیو نے اور اس بی اشارہ ہے کہ وصیت زائد مال کی نہو، بالآ شرآ پہلے تھے نے ایک مشت کی اجازت دیتے ہوئے یہ بھی اور ای میں اشارہ ہے کہ وصیت زائد مال کی نہو، بالآ شرآ پہلے تھے نے ایک مشت کی اجازت دیتے ہوئے یہ بھی اور ایا تھی اور اس میں اشارہ ہے کہ وصیت زائد مال کی نہو، بالآ شرآ پہلے تھے نے ایک مشت کی اجازت دیتے ہوئے یہ بھی

﴿ وَارِثُ كَي لَيتِ وَصَيْتَ نَهْيِنِ ﴾

قوجهد: حضرت الوامات في بيان كياكمين في رسول الثقافية المسانة المنظمة المارة الوداع كرال المختلفة المواكرة المن ماجة الوداع كرال الموداؤة المن ماجة الودائة المحالة المودائة المحالة المودائة ال

کلمات وریار کافن براث تجویز کردیا ہے مریدان کی است حدیث کی است حدیث کی است حدیث کی تشریح کی تشریح کی است مریدان کی ت عن اگر کو کی و میت کر براہ و درست نہیں ہے اس لیے کہ "ان الله قد اعطیٰ کل ذی حق حقه "
البت اگر تمام وریار (بالغ) اس بات کومنظور کرلیں تب درست ہو کتی ہے (نا بالغ کی اجازت کا اعتبار ندہوگا) چنانچہ بروایت معزت ابن عمل مردی ہے"الا ان بیشاء المورقة". ضدودی وضاحت: عبد جاہلیت میں وصیت کے ذریعہ دوسرول کونفسان (بھی) پیونچاتے تنے اس لیے شریعت میں وہیت کی قید لگائی گئی ہے۔ و زاد العو ملٹ اسی روایت میں بروایت (اسادام مرزئی) یہ بھی ہے کہ بصورت زناحت میراث تابت شاد کا کمامر اور زناکاری کی حدلازم ہواکرتی ہے، رجم اور یا ۱۰۰ کوڑے جس کی تفصیل کتاب الحدود میں معلوم ہوگی انشار اللہ تعالی۔

عامده: منقطع صاهب مصافح فرمات بي كروايت ابن عبال سندامقطوع ب. (افوذارتيل بمرام التشريح اسعى)

﴿ورثاء کو ہذریعہ وصیّت نقصان پھونچانا درست نھیں﴾

﴿ مديث تُمركُ ٢٩٣٤﴾ وَعَنْ آبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ وَالْمَرْأَةُ بِطَاعَةِ اللهِ مِنَّيْنَ سَنَةً ثُمَّ يَخْضُرُهُمَا الْمَوْتُ فَيْضَارًان فِي الْوَصِيَّةِ فَتَجِبُ لَهُمَا النَّارُ ثُمَّ قَوْأَ الْمَوْتُ الْمَوْتُ فَيْصَارًان فِي الْوَصِيَّةِ فَتَجِبُ لَهُمَا النَّارُ ثُمَّ قَوْأَ الْمَوْتُ الْمَوْتُ الْمَوْتُ الْمَوْتُ الْمَوْتُ اللهُ وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْمَوْلُمُ رَوَاهُ آخْمَهُ وَالتَّوْمِذِيُّ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللهُ وَاللّهُ وَالّهُ وَاللّهُ وَلّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَال

قوجهد: حضرت ابو ہریرہ نی اکرم علی نظر تے ہیں آپ تا نے فرمایا: پیشک مرداور مورت اللہ تعالی کی اطاعت (وعبادت)
ما تھر سال تک کرتے ہیں، پھر ان کوموت آئے وہ دونوں وصیت میں نقصان پیو نچاتے ہیں جس کی وجہ سے دونوں کے تن میں دونر آئے
کی آگ لازم ہوجاتی ہے، اسکے بعد حضرت ابو ہریرہ نے آ یہ تا ادات فرماتی "من بعد و صیة یوصی بھا المنے " ترجمہ آ یتکی آگ لازم ہوجاتی ہے، اسکے بعد حضرت ابو ہریرہ نے آ یہ تا ادات فرماتی "من بعد و صیة یوصی بھا المنے " ترجمہ آ یت-

مقصد بیان برے کر شرع کے اس کے خلاف کرنا صاحب میں اسٹی کو ضائع کرنا ہے، بالخصوص حقوق العباد میں خلاف شرع تعرف کرنا ہور ہے ہیں کرنا اور بھی خلاف شرع تعرف کرنا ہے، بالخصوص حقوق العباد میں خلاف شرع تعرف کرنا ہور بھی شدید تر محنا اور وہ بھی آخری عمر کرنا اور ہوگی خلاف درزی کرنا اور وہ بھی آخری عمر میں سر آخرے کے خریس ارشاد ہے "فتحب لھما النادُ" تنم قوءَ المنے: میں سر آخرے کے قریب شدید ترین اپنی ذات برظلم ہے جیسا کہ حدیث کے آخریس ارشاد ہے "فتحب لھما النادُ" تنم قوءَ المنے:

س کے بعد حضرت ابو ہرمی فی نے یہ آیت تلاوت فرمائی جس میں اس امر کو بیان فرمایا ہے کہ جو وصیت کی جائے وہ "ورثار" کونقصان پیو نیاتے ہوئے ندکی جائے ،وصیت کرتے ہوئے نیت بھی درست ہواور شریعت کی صدود ش ہو۔

الفصل الثالث

﴿وصيَّت اورتقويٰ﴾

﴿ مديث بمر ٢٩٢٨﴾ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ مَنْ مَاتَ عَلَى وَصِيَّةٍ مَاتَ عَلَى سَبِيْلٍ وَسُنَّةٍ وَمَاتَ عَلَى تَصَيَّةٍ وَمَاتَ مَغْفُورٌ اللهُ زَوَاهُ ابْنُ مَاجَةً .

قوجمه: حطرت جائز فقل فرمایا که رسول النه الله فق ارشاد فرمایا: جس فخص نے وصیت پروفات پائی تواس نے راوستقیم اورسنت (کے مطابق) وفات پائی اور اس نے تقوی اور شہادت پروفات پائی اور اس نے وفات پائی اس حال میں کہ اس کی منفرت کروی۔ مطابق) وفات پائی اور اس نے دفات پائی اس حال میں کہ اس کی منفرت کروی۔ میں این ماجید)

ں۔ درن اجب علی سیل: لین علی وجد السنّت مزید ارشاد فرمایا"علی تقی" لین حقوق واجبری رعایت کرتے کی است حدیث کی تشریح الم است حدیث کی تشریح است کے اور اس کے ذریعے مقام شیادت پر قائز ہوا

اوراى كے بعد آپ ملك نے بثارت فرمال "و مات معفوراً" يرآخرت كاعتبارے مقامات عاليه كا آخرى درجه بكم مغفرت كا مقام حاصل بواب، لان الغفران غايد الطلب و نهاية المقصد (اخود القياق)

رایصال ثواب کا حکم ہ

﴿ صديث بُمر ٢٩٣٩ ﴾ وَعَنْ عَمْوِو بْنِ شُعَيْبِ عَنْ آبِيهِ عَنْ جَدَّهِ آنَ الْعَاصَ بْنَ وَائِلِ آوْ صلى آن يُعْتَقَ عَنْهُ مِائَةً رَقَبَةٍ فَاغْتَقَ إِبْنَهُ هِشَامٌ خَمْسِيْنَ رَقَبَةٌ فَارَا دَابِنَهُ عَمْرُ وَآنَ يُعْتِقَ عَنْهُ الْحَمْسِيْنَ الْبَاقِيَةَ فَقَالَ: حَتْى اصلى اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَقَالَ يَارَسُولَ اللهِ إِنَّ أَبِي اَسُألَ رَسُولَ اللهِ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَاتَى النَّبِيّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَاتَى النَّبِيّ صَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ فَقَالَ يَارَسُولَ اللهِ إِنَّ أَنِي السَّالَ وَسُولَ اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَنْهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ عَنْهُ خَمْسِيْنَ وَبَقِيَتْ عَلَيْهِ خَمْسُونَ رَقِبَةً آفَاعْتِيلَ عَنْهُ؟ وَانَ هِ شَاماً آغَتَقَ عَنْهُ خَمْسِيْنَ وَبَقِيَتْ عَلَيْهِ خَمْسُونَ رَقِبَةً آفَاعْتِيلُ عَنْهُ؟ وَسَلَمَ وَابَدُهُ مَنْ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَمَ وَابَدُهُ لَوْ كَانَ مُسْلِمًا فَاعْتَقْتُمْ عَنْهُ أَوْ تُصَدَّقُتُمْ عَنْهُ أَوْ تُصَدِّقُتُمْ عَنْهُ أَوْ تُحَجِّخُهُمْ عَنْهُ أَوْ تُحَجِّخُهُمْ عَنْهُ أَوْ تُصَدِّقُ وَعَنْ عَنْهُ أَوْ خَجَجْمُ عَنْهُ أَوْ تُصَدِّقُونَ وَاللهُ وَسَلَمَ وَسَلَمَ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَاللّهُ وَلَا عَنْهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَلَوْ كَانَ مُسْلِمًا فَاعْتَقْتُمْ عَنْهُ أَوْ تُصَدِّقُتُمْ عَنْهُ أَوْ تُصَدِّقُونَ وَاللّهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَاللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَلَوْلَ وَاللّهُ وَلَاكُ وَوَاهُ ٱلللهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ وَلَا لَهُ عَلَيْهِ وَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَلَا عَنْهُ اللهُ عَلَيْهِ وَلَا لَاللهُ عَلَيْهِ وَسُلّمَ اللهُ عَلَيْهِ وَلَا عَلَيْهُ وَلِكَ وَوَاهُ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ اللهُ عَلَيْهِ وَلَا عَلَاهُ وَلَا عَلَيْهِ وَلَا لَاللهُ عَلَيْهِ وَلَا عَلَيْهُ وَلِكَ وَوْلُولُ وَاللّهُ اللهُ عَلَيْهِ وَلَا لَاللهُ عَلَيْهُ وَلَا عَلَاهُ وَلَا عَلَى اللهُ عَلَيْهِ وَلِكَ وَلَا لَاللّهُ عَلَيْهِ وَلَا عَلَاهُ وَلَا عَلَالَهُ عَلَيْهُ وَلَا لَاللّهُ عَلَيْهُ وَلَا عَلَالُهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ وَلَا عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ وَلَا لَاللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ مُعَلّمُ وَاللّهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَا لَا لَاللهُ عَلَيْهُ وَالَا لَاللهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ وَلَا لَا لَاللهُ عَلَيْهُ

قوجه : حضرت محروین شعیب بروایت والید خود از جلاخود روایت کرتے ہیں کہ بیشک حضرت عاص بن واکل کا انقال ہوگیا، انہوں نے وصیت کی می کدان کی طرف سے ایک سوغلام آزاد کئے جا نیں؛ چنانچان کے ایک لڑکے ہشام ؒ نے بچاں ہوگئے غلام آزاد کردیے ہیں اوران کے دوسر کڑکے حضرت محرّف باتی بچاں غلام آزاد کردیے کا ارادہ کیا ہے، حضرت محرّف کیایا رسول اللہ! بیشک میرے والد وقتیکہ میں رسول اللہ ایشک میرے والد فقیکہ میں رسول اللہ ایشک میرے والد نے وصیت کی ہے کدان کی طرف ہے آزاد کردیے جا نیں، ہشام نے تو بچاں غلام ان کی طرف ہے آزاد کردول (اوران کو اور اب بہونے گا؟) رسول اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ واللہ ان کی طرف ہے آزاد کردول (اوران کو اور اب بہونے گا؟) رسول اللہ اللہ اللہ اللہ واللہ ان کی طرف ہوئے گا۔ (ابوداؤیّ) کی طرف ہے آزاد کردویاان کی طرف ہے تم صدقہ کرویا تم ان کی طرف ہے آزاد کردویاان کی طرف سے تم صدقہ کرویا تم ان کی طرف سے تم کردوان انگال کا اجرد اور اب ان کو بہونے گا۔ (ابوداؤیّ) کی مان سے مرف والوں کو ہدیۃ اور (ایصال اور اب کا ایصال مقصود ہو وہ مسلمان ہو، آپ عرفی کا یہ ارشاد: کی مان سے مرف والوں کو ہدیۃ اور (ایصال اور اب کا ایصال مقصود ہو وہ مسلمان ہو، آپ عرفی کا یہ ارشاد: کی مان کی میں میں آپ عرفی کا یہ ارشاد: کی میں میں کرفی کے کہ جس کو اور ب کا ایصال مقصود ہو وہ مسلمان ہو، آپ عرفی کا یہ ارشاد:

"انه لو كان مسلماً "اس كى واضح اورصرت وليل ہے كہ جو بھى عمل صالح ہواس كا ثواب پہو نچتاہے 'بلغهٔ ذلك''۔ هائده: آپ الله نے جواب میں 'لا' بنہیں فرمایا؛ بلكه آپ نے تشریح كے ساتھ بيان فرمایا، غالبًا اس ميں پہ حكمت ہو كتى ہے كه اگر شرط مونے كى وجہ ہے ثواب نہ پہو نچا ہوگا؛ ليكن عمل كرنے والے كووہ ثواب حاصل رہے گا۔ والنداعلم بالصواب۔ (ارتعلیق)

﴿ورثاء کا حق نه دیئے جانے پر وعید ﴾

وصدیت نمبر ۱۹۵۰ و عَنْ آنس قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّهِ صَلّی اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلّمَ: مَنْ قَطْعَ مِيْرَاتُ وَارِيْهِ قَطْعَ اللّهُ مِيْرَافَهُ مِنْ الْمَجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ وَرَاوْهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيْمَا نَ عَنْ آبِي هُوَيْرَةً ﴾ قَلْمَ اللّهُ مِيْرَافَهُ مِنَ الْمَجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ وَرَاوْهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيْمَا نَ عَنْ آبِي هُوَيْرَةً ﴾ قو الله مَنْ اللهُ مَيْرَاتُ كَاصَدَ قَطْع ادانه كر يَوَاللهُ تَعَالَى برونَ قَلْمُ عَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مُنْ اللهُ مَنْ اللهُ مِنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مِنْ اللهُ مَنْ اللهُ مُنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَا اللهُ مُنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مُنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مُنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مُنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مُنْ اللهُ مَا اللهُ مُنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ الل

حق وقطع كرنا، قانون الني كوقطع كرنے كمترادف باس لياس لياس پريشد يدوهيدفر مائى بكر جنت كى ميراث سے يرموم ركھاجائ كا۔ الله تعالى نے قرآن كريم ميں الل ايمان كى وراهت جنت كا تذكره فرماتے ہوئے ارشاد فرمايا ب-"وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الْتِي اُوْرِ فَتُمُوْهَا" بهر حال اس حديث پاك ميں اس پريشد يدوعيد بـ

(ب) محروم کرنا اور حق کوضائع کرنے کی متعدد صورتیں ہو سکتی ہیں ، (مثلاً) بصورتِ ناجائز دمیت کر دینا اور کوئی خلاف شرع متحد کے مصرفت کے مسابقت میں کا مسابقت میں میں مسابقت ہیں ، (مثلاً) بصورتِ ناجائز دمیت کر دینا اور کوئی خلاف شرع

ومیت نامتر ریر دیناجوسب ہو کی کے حق ضائع ہونے کا۔

(٢) كى اولا دكو عاق "كردينا اوراس كا اعلان كردينا_ (ببرحال اس عاق "عدوار في حروم نه يوكا)

(٣) خلاف واقعمى كے ليے قرض وغيره كا قراركرنا۔

(٣) خلاف شرع كوئي دقف يا مبدوغيره كردينا ـ

(۵) کی دارث کاحق نددینا اگر چه بصراحت اس کا تذکره اس روایت مین نبیس به الیکن به بھی ظلم ہے اور حق العباد پر قبعنه کرنا

- 173.c

عوض خدودی: آج کل میصورت حال عالب ہوگئ ہے کہ معاشرہ میں حق میراث کی ادائیگی میں بہت زیادہ خفلت اور بظری ہے اورا کشر و بیشتر میراث کا اجتمام جس قدر صروری اور لازم وفرض ہے اس میں بہت زیادہ کوتا ہی ہے اور جس کا قبضہ ہے وہ اس پر قابض رہتا ہے اور خاص کراڑ کیوں اور بہنوں کا حق تو تقریباً نددیتے جانے کے ہی برابر ہے ، دور جاہلیت کی بیرسم اہلِ اسلام میں بھی بہت صد تک پائی جاتی ہے ، نیزصحرائی اور کا شت کی اطاک میں غیر شرعی قانون کا سہارا لے کرغیر اسلامی طریقہ کو ہی عملاً اختیار کئے ہوئے ہیں ، شاید اور باید ہی اس میں جق شرعی پڑھل کرتے ہوں گے ، بیصورت بھی محروم کرنے کے ہم معنی ہے ، اللہ تعالی استِ اسلام کو قرآن وسلت کے اصولوں پر فائز رہنے کی تو فیق عطافر مائے اور صراط مشتقیم پراستقامت عطافر مائے ۔ (آمین)

﴿ الحمد لله فيض المشكوة كتَّابُ البُيُّوعِ، اور جلد پنجم كى تكميل مونى ﴾

چار جليل القدر صحابه

ا حضرت ابوهريره محضرت ابن عباس محضرت ابن عباس محضرت ابوذر غفاری و حضرت سلمان فارسی محضرت ابوذر غفاری و حضرت سلمان فارسی محضرت ابن عباس محضورا کرم الله کی حیات مبارکداورا عمال صالح بهارے لئے مشعل راہ بیں مسلمان کوزندگی کی گذارنی چا ہے اس کے مربر شعبے اور کوشے میں آپ علی کی مدایات موجود ہیں۔

اس نمونے کے بہتر ترین بیروکار صحابہ کرام رضی اللہ عنبم تھے جنہوں نے آنحضور کی مبارک صحبت سے بحر پورفیف حاصل کیا

اور قیامت تک آنے والے مسلمانوں کے لئے اسلام کا اعلیٰ نمونہ پیش کیا۔

اس کتاب ہے ہمیں نہ صرف ان صحابہ کی خد مات اور کارناموں سے واقفیت حاصل ہوتی ہے، بلکہ ہر ہرقدم (معاملات، اس کتاب ہے ہمیں نہ صرف ان صحابہ کی خد باہ والدین کے حقوق، منافق ومومن کی پہچان اور فرمانبرداری، گھر کے فرائغی وعدے کی اہمیت، حق گوئی، اسلام پر مرشنے کا جذب، والدین کے حقوق، منافق ومومن کی پہچان اور فرمانبرداری، گھر کے فرائغی سے کیکر جہادتک) غرض کمل اسلامی زندگی گذارنے کا ایسا سلیقہ ملتا ہے جسکی نذیر ناممکن ہے۔

پته: مكتبه فيض القرآن ديوبندضلع سمارنپور (يو پی)Mobile No.09897576186

تفسير فيض الامامين

﴿ اردوشرح تفسيرجلالين ﴾

شارح: علامه محموعتان صاحب سابق فيخ الحديث مظا برعلوم (وقف)

طلبه کے لئے نہایت می آب و تاب ،

آفسیت کی عمدہ طباعت و پائدار کاغذ کے ساتھ علی تحفہ

ای تغییری زبردست اجمیت اور متند ہونے کاعظیم ترین جوت یہ ہے کہ کی سوسال سے بیتغییر جربڑے مدر سے میں وافل نصاب ہے اور ہرطالب علم کوعالم وفاضل کی سندھاصل کرنے کے لئے دیگر کتب کے ساتھ اس تغییر کودرسا درسا پڑھ کر استحان دینا ضروری ہے، چنا نچہ جملہ مدارس کے طلبار کے لئے بھی یہ تغییر انتہائی اہم ہے۔ آخراس تغییر میں الی کیا خاص چیز ہے کہ بے شارتھا سے ہوئے ہوئے بھی بہی تغییر سیکڑوں سال سے داخل نصاب ہے اور قدیم دور سے آئ تک کے جملہ علار نے ای تغییر کونصاب کے لئے لازم قرار دیا ہے؟

اب الحمد للداس كاجديداردوترجم وتشريح نهايت آسان اردويس علامه محمد عثمان صاحب شخ الحديث مظامر علوم (وقف) في انتهائي كاوش وعرق ريزي سے كر كے عوام الناس كے لئے سېل كرديا ہے۔

. د ونسير كى اضا فه شده خصوصيات:

ا-ترجمه وتغييراتن آسان اردويس كي في ب كه جرغاص وعام اس كويكسال مجهيكيس-

- ٧- تغيري ربط آيات كنام عنوان لكاكرسابقة يات سربط قائم كرديا ب-
 - ۳- تحقیق وتشری کاعنوان لگا کر برآیت کی جامع تحقیق وتشری کردی گئی ہے۔
- ۳- شان نزول كي تحت قرآن شريف كي تنول كي نازل بون كاسب اور يس منظر بيان كرديا كيا ب_
- ۵- مشکل عربی الفاظ کی شخین کے ساتھ ساتھ توی و صرفی ترکیب کا بھر پورا ہتمام کیا ہے جس سے عام طبقہ کو بھی قرآن مجید سمجھنے میں بھر پور مدول سکے۔

كالسيث كلدة جلد من تيار برجلد من يانج يار ، برجلدا لك الك بحى حاصل كر كے بير -

جمله علمي ديني كتب ملنه كايته

مكتبه فيض القرآن زدمجد جهد ديوبنطلع سهار نبور (يولي) بن٢٢٢٥٥٢

Mobile No.09897576186, Phone No.01336-222401

كشف الاسران

ترجمه وشرح اردو (درمخار)

ترجماردومولا نامفتی ظفیرالدین صاحب مرتب قادی دارالعلوم دیوبند
اداره فیض القرآن نے موجوده دور کی اہم ضرورت کے پیش نظر
فقد خفی کی نہایت مفید متنداور معتبرترین کتاب در مختار مح اردوتشری کے
صاف ولیس اردوبیں شائع کی ہے مسلم پرسٹل لا (بیعی مسلمانوں کے
قانون کی معتبرترین کتاب) کی طباعت بقینا آیک بوی خدمت ہے
جس میں پاکی ، نماز ، روزه ، تج ، ذکو ق ، نکاح وطلاق غرض روز مره کی
زندگی میں پیش آنے والے ہر مسئلہ کا شری حل موجود ہے اسلئے اس
کتاب کا ہر مسلمان کے گھر میں ہونا وقت کی شدید میرورت ہے۔

کتاب کی اهم خصوصیات

ہ ترجمہ کے ساتھ ساتھ متن کی عربی عبارت بھی باتی رکھی گئی ہے تاکہ الل علم اس سے پورے طور میستفید ہوں اور اتکوکوئی اشکال پیش نہ آئے۔

ہ عموماً ہر باب کے آخریش مصنف نے ''فروع'' کے نام سے ایک عنوان قائم کیا ہے اور اس کے نیچے ضروری جزئیات کے بیان کا اہتمام کیا۔

ہے۔ ہ شامی اور طحطا وی کا خلاصہ سمیٹ لینے کی سعی کی گئی ہے۔

تفسير ابن كثير اردو رمع حواشي واضافات

(مع اختصار تفسید بیان القرآن)

تمام مفرین اس پر شفق بین کرسب سے زیاده قرآن کوبطریق سلف صالحین سمجھانے والی تغییر "تفییر ابن کیئر" ہے اورا سکے بعدی تمام اردوع بی تفاسیر اس سے ماخوذ ہیں، یہی وجہ ہے کہاں تغییر کوام التفاسیر کالقب دیا گیا ہے۔

جدید نسخے کی ابضافه شدہ خصوصیات ہے تی بیاں جہاں جہاں خی مسلک سے کراؤ پیدا ہوا وہاں حضرت مولانا سید انظر شاہ صاحب شمیری کے قیمتی حاشیہ نے چارچا ندلگا دیے ہیں۔ ہے قدیم تغییر ہیں ترجمہ قرآن پاک عیرمقلد عالم کا تفااس لئے اس ترجمہ کی جگہ جنفی مسلک کا مستدتر جمہ غیرمقلد عالم کا تفااس لئے اس ترجمہ کی جگہ جنفی مسلک کا مستدتر جمہ حضرت مولانا اشرف علی صاحب تفانوی شامل کتاب کیا گیا ہے۔

حضرت مولانا اشرف علی صاحب تفانوی شامل کتاب کیا گیا ہے۔

ہے تفسیر تھانوی عنوان کے تحت تفسیر بیان القرآن کا اختصار شامل کتاب کیا گیا ہے۔

ہے تھے مقانوی عنوان کے تحت تھیر بیان القرآن کا اختصار شائل کتاب کیا گیاہے۔
کیا گیاہے اس طرح میں کتاب دو تفاسیر کا چموعہ بن گئی ہے ادر عوام کواب اس کتاب کے بعد تفییر بیان القرآن حاصل کرنے کی ضرورت نہیں رہی۔ ہے جدید نیزنے فاغذ پرآفسیٹ

ک دیدہ زیب طباعت کے آراستہ کیا گیا ہے۔ قمت کامل سٹ محلدہ جلد

Website:MadarseWale.blogspot.com Website:NewMadarsa.blogspot.com تفهيم البخاري

عربی متن مع اردو شرح صحیح بخاری شریف

مسلت دیووسند کا پھلا اور واحد بطاری شریف کا اردو ترجمه فخر دوعالم کا سکات صنورا کرم فیلی کے ارشادات مبارکہ کا گرال قدر چنویرقر آن کریم کے بعدد نیا کی وہ متندر بن اور لا ثانی کتاب ہے جس میں قطعی کچی احادیث کاعظیم علمی خزانہ پوشیدہ ہے۔

ر بخاری شریف کا مسلک دیوبرند کا عمل کوئی ترجمہ ند ہونے کی وجہ سے
علامہ وحید الزبان (غیر مقلد عالم) کا ہی ترجمہ بازار میں دستیاب تھا اور
مجبوراً بجی ترجہ ہوام وغوائل تک بہتے رہا تھا اب الحمد للہ تفہیم ابخاری کمل
شائع ہونے پر تقریم ترجمہ کی چندہ ضرورت نہیں رہی اس لئے کتاب
ترید تے وقت سرڈ یہ فہیم انفادی ہی طلب فرما کیں۔

الم فصوصيات

المعینان بیش رین اور عام قیم شرح اس زماند کی دونی سطح کے مطابق کی گئی ہے۔ اور عام قیم شرح اس زماند کی دونی سطح کے مطابق کی گئی ہے۔ اور حال اللہ اللہ بھاری شریف کے لطائف موجودہ شارطین سے پہلے تاری شریف کے لطائف وخصوصیات کی گائل رعامت ہے افغان ندا ہمب کی ترجمانی معتدل لب ولہجہ میں اور محدثین ولئے ہا ہے ایک کالم میں ترجمہ وتشریح سے کالل سیٹ مجلد الا جلد

قاده مر فيفي الاهامين اردو شرح تفسير جلالين

اس تغییر کی زبردست اہمیت اور متند ہونے کاعظیم ترین جوت سے
ہے کہ ہرطالب علم کو عالم وفاصل کی سند حاصل کرنے کے لئے دیگر
کتب کے ساتھ اس تغییر کو درسا درسا پڑھ کرامتحان دینا ضروری ہے،
چنانچے جملہ مدارس کے طلباء کے عالئے بھی بیانتہائی اہم ہے۔اب الحمد للد
اسکا جدید اردو ترجمہ وتشریح نہایت آسان اردو میں علامہ محمد عثمان
صاحب شخ الحدیث مظاہر علوم نے کر کے وام الناس کیلئے ہمل کر دیا ہے۔

اردو تفسیر کی اضافہ شدہ خصوصیات اردو میں کی گئے ہے کہ ہر خاص وعام اس کو کہ ترجہ وقسیر اتنی آسان اردو میں کی گئے ہے کہ ہر خاص وعام اس کو کیساں ہمھ سکیں ہلا تقسیر میں ربط آبات کے نام سے عنوان لگا کر سابقہ آبات سے ربط قائم کر دیا ہے۔ ہلا تحقیق وتشریح کا عنوان لگا کر ہر آبت کی جامع تحقیق وتشریح کردی گئی ہے۔ ہلا شان نزول کے تحت ہر آبان شریف کی آبنوں کے نازل ہونے کا سبب اور لیس منظر بیان مردیا گیا ہے۔ ہلا مشکل عربی الفاظ کی تحقیق کے ساتھ ساتھ ساتھ میں تھوی کی وصرفی ترکیب کا بجر بورا ہتمام کیا ہے۔ قیمت کال سید مکمل ۲ جلد

بينة: _ مكتبه فيض القرآن، ديوبند، شلع سهار نپور (يو پي) نون: 222401-336